अमृतसागरकी भूमिका ॥

जोकि बहुत दिन ब्यतीत हुये कि जयपुर के महाराजा श्रीयुत सवाई प्रतापसिंह जिनकाप्रताप और ऐश्वर्य्य सम्पूर्णदेशों में विख्यातहै उन्होंने अपने बड़े २ विद्वान् वैद्य लोगोंके द्वारा वैद्यकके चरक सुश्रुत बागभट्टआदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थोंसे सार सार बातें निकालकर अमृतसागरनाम ग्रन्थ रचा उसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न नानाप्रकार से अन्य बहुतसे आर्ष ग्रन्थोंके प्रमाण सहित लिखी हैं परन्तु वहजयपुर की बोलीमें रचा गया था इसकारण सबका उपकारी न हुआ क्योंकि उस बोलीके जाननेवाले जयपुरके सिवाय और कहीं नहीं हैं उसको अब सब छोटे बड़े और खासकर अवधके सब ताल्लुक़ेदार और पण्डित लोगोंको इसी ग्रन्थके द्वारा वैद्यककी सर्व चिकित्सामें प्रवीण होनेके निमित्त अयोध्याके स्वामी स्वर्गबासी महाराजा मानसिंह कायमजङ्ग प्रतापी जोकि वैद्यकादि सब शास्त्रोंमें अत्यन्त कुशल बुद्धि थे उनकी अनुमतिसे पंडित कालीचरण के द्वारा अवध अख़बारके सम्पादक मुंशी नवलकिशोर ने उसकी सब बोलियों को सुधार और दिल्ली आगरेकी खड़ी भाषामें जिसको सब देशके मनुष्यजानें तैयार कर अपने शीशाक्षरके यंत्रालयमें छपवाया यह ऐसा ग्रन्थहै कि मनुष्य इसीएकग्रन्थको पढ़कर डाक्टरी और मंत्रयंत्रतंत्र और सब रसोंके शोधनमारण खानेका प्रमाण और अनोपान सहित विधि और अनेक भूत प्रेत पिशाचादि बालग्रहोंके नानारोगोंकी

अनेकनविधी ज्ञातकरसक्ताहै औरआदिसेही नाड़ीमूत्र आदिसे रोगीकेरोगकीपरीक्षाउत्पत्ति लक्षण और यत्नसहित ऐसीलिखी हैंकिथोड़ासाभीबुद्धिमान्होय वहइसकोजानकरवैद्यहोसक्ताहै॥

इससे पहिले यह पोथी कईवेर इस यंत्रालय में मुद्रित हुई और विद्वज्जनोंने इसे ग्रहणकिया अन्तको बड़े २ विद्वान्वैद्यों की यह इच्छाहुई कि और पुस्तकोंमें जोइससे विशेषबातें लिखी हैं वहभी इसविचित्र पुस्तक में छापीजावें और सम्पूर्ण वैद्यक के आशय इसीदिव्य पुस्तक में संग्रह कियेजावें ॥

यह अमृतसागर अब ऐसीपुस्तक होगई कि जैसा नाम है तैसाही गुणहै हमने इसके बनवाने और दुरुस्त कराने और छपवानेमें जो परिश्रम किया वह हमारा मनही जानताहै तिस परभी ऐसी सस्तीहै जिसेलोग सुगमतासे मोल ले सक्ते हैं—यह वैद्यककी पुस्तकके होते हुये दूसरीकिसी पुस्तकके अवलोकनकी कुछआवश्यकता नहीं है ॥

कोई रोग अथवा कोई रोगका ऐसा लक्षण नहींहै जो इस पुस्तकमें न होवे जोलोग इसहमारे परिश्रमको देखकर प्रसन्न हों हमको आशीर्वाद दें और यह भी हमको आशा है कि यह दिव्यपुस्तक शीघ्रही बिके और संसारका उपकार हो—ईश्वर हमारा अभीष्ट सिद्ध करे ॥

नवलकिशोर

अवधअखबारसम्पादक ॥

अमृतसागर का सूचीपत्र ॥

प्रकरण	पृष्ठ
रोगविचार	१
सर्व्वरोग परीक्षा	१
नाड़ी परीक्षा	२
मूत्रपरीक्षा	४
रोगीकीपरीक्षा	५
स्वप्नपरीक्षा	५
दूतपरीक्षा	६
शकुनपरीक्षा	७
कालज्ञान	७
औषधविचार	८
देशविचार	८
कालविचार	९
अवस्थाविचार	९
अर्थविचार	९
कर्मविचार ...	१०
अग्निबल विचार	१०
रोगीकी असाध्य परीक्षा	११
रोगीकी साध्य परीक्षा	११
रोगोंका भेद	१२
रोगोंका पृथक् २ लक्षण	१२
चौदह वेगोंके रोकनेका विचार	१३
ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१६
ज्वरमात्रका सामान्य लक्षण	१७
ज्वरका पूर्वरूप	१७
वातज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१७
पित्तज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१८
कफज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	२०
वात पित्त ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	२२
वात कफ ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	२३
कफ पित्त ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	२४
सन्निपात ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	२५
आगंतुक ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	३६
शस्त्रादि से उपजेज्वरकी उ० ल० य०	३६
भूतादिके आने से उपजे ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	३७
भूतादिके उतारने का नास अंजन	३८
क्रोधज्वरका लक्षण यत्न	३८
मानस ज्वरकी उ० ल० यत्न	३८
कामज्वरकी उत्पत्ति लक्षण य०	३९
भयज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	३९
विषमज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४०
जीर्णज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४१
अजीर्णज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४३
दृष्टिज्वरका लक्षण	४३
दुष्टरक्तसे उपजेज्वरकी उ० ल० य०	४३
मलज्वरका लक्षण यत्न	४४
गर्भिणी के ज्वरका यत्न	४४
प्रसूतिका ज्वरका लक्षण यत्न	४४
बालक ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४५
पेटमें कृमि पड़िजाने के ज्वर की उत्पत्ति लक्षण यत्न	४५
कालज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४५
ज्वरके १० उपद्रव	४६
ज्वरातीसार के यत्न	४६
ज्वरकी तृषा खांसी श्वास नींद वमन के नाशका यत्न	४६
ज्वर उतरजानेका लक्षण	४८
अतीसारकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	४८
आमातीसार का और लक्षण यत्न	५१
शोफातीसार का यत्न	५२
अतीसारका असाध्य लक्षण	५५
संग्रहणी की उत्पत्ति लक्षण यत्न	५५
ववासीरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	६०
ववासीरके मस्से दूरकरनेकी औषध	६४
ववासीरका असाध्य लक्षण	७०
अजीर्ण की उत्पत्ति लक्षण यत्न	७०
विशूचिका रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	७३
आलस विलम्बिकाकी उत्पत्ति ल० य०	७३

प्रकरण	पृष्ठ
क्रिमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	८२
पांडुकामलाहलीमककी उ० ल० य०	८४
रक्त पित्त रोगकी उत्पत्ति ल० यत्न	८८
राजरोग शोषरोगकी उत्पत्ति ल० य०	९१
खांसीरोगकी उत्पत्ति लक्षण य०	१०१
हिचकी रोगकी उत्पत्ति लक्षण य०	१०५
श्वासरोगकी उत्पत्ति लक्षण य०	१०८
स्वरभेदरोगकी उत्पत्ति ल० य०	११२
अरोचक रोगकी उत्पत्ति ल० य०	११४
छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	११७
तृषारोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	११९
मूर्च्छा मोह भ्रम तन्द्रा निद्रा संन्यास की उत्पत्ति लक्षण यत्न	१२२
मदात्ययरोगकी उत्पत्ति लक्षण य०	१२६
दाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१३१
उन्मादरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१३३
भूतादिकके उन्मादका ल० य० तंत्र मंत्र	१३५
डाकिनी साकिनी निवारणोपाय	१४१
प्रत्यक्ष हाजरायत यंत्र	१४३
मिरगी रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१४४
सम्पूर्ण वातव्याधि की उ० ल० य०	१४७
अल्पकेशी की चिकित्सा	१४९
ऊरुस्तम्भरोग की उ० लक्षण य०	१७७
आमवात की उत्पत्ति लक्षण यत्न	१७८
पित्तव्याधि की उ० लक्षण यत्न	१८४
कफव्याधि की उत्पत्ति लक्षण य०	१८७
वातरक्तरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न	१८७
शूलरोगकी उ० लक्षण यत्न	१९०
उदावर्तरोगकी उ० ल० यत्न	१९९
आनाहरोग की उ० ल० यत्न	२०५
गुल्मरोग की उ० ल० यत्न	२०५
यकृत्प्लीहरोग की उ० ल० यत्न	२१३
हृद्रोग की उ० ल० यत्न	२१७
मूत्रकृच्छ्ररोगकी उ० ल० यत्न	२१९
मूत्राघातकी उ० ल० यत्न	२२४
अश्मरी रोगकी उ० ल० यत्न	२२९
प्रमेहरोगकी उ० ल० यत्न	२३२
प्रमेहपिडिका का ल० यत्न	२४५
मेदरोग की उ० ल० यत्न	२४५

प्रकरण	पृष्ठ
कार्श्यरोग की उ० ल० यत्न	२५०
उदररोग की उ० ल० यत्न	२५१
शोथरोग की उ० ल० यत्न	२५८
अंडवृद्धिकी उ० ल० यत्न	२६२
वर्ध्म वा वदरोगकी उ० ल० यत्न	२६५
गलगंडादि रोगकी उ० ल० यत्न	२६६
श्लीपदरोगकी उ० ल० यत्न	२६७
विद्रधिरोगकी उ० ल० यत्न	२७१
व्रणशोथरोगकी उ० ल० यत्न	२७७
व्रणरोगकी उ० ल० य०	२७९
अग्निदग्ध की उ० ल० यत्न	२८३
व्रणग्रंथिरोगकी उ० ल० यत्न	२९१
भग्नरोग की उ० ल० यत्न	२९२
नाडीव्रणकी उत्पत्ति ल० यत्न	२९५
भगन्दररोगकी उ० ल० यत्न	३००
उपदंशरोग की उ० ल० यत्न	३०३
शूकरोगकी उ० ल० यत्न	३०५
कुष्ठरोगकी उ० लक्षण य०	३०८
शीतपित्त उदर्दादिकी उ० लक्षण य०	३२५
अम्लपित्त की उ० लक्षण य०	३२७
विसर्परोगकी उ० लक्षण य०	३२०
स्नायुरोग की उ० लक्षण य०	३३३
विस्फोटक रोगकी उत्पत्ति लक्षण य०	३३४
फिरंगरोग की उत्पत्ति लक्षण य०	३३७
मसूरिका नामशीतलाकी उ० ल० य०	३४१
क्षुद्ररोगोंकी उ० लक्षण य०	३४६
शिरनाम मस्तकरोगकी उ० ल० य०	३५७
नेत्ररोगकी उ० लक्षण य०	३६४
कर्णरोग की उ० लक्षण य०	३९२
नासिका रोगों की उ० लक्षण य०	३९८
मुख रोगोंकी उ० लक्षण य०	४०४
स्थावरजंगम विषरोगकी उ० ल० य०	४२३
स्त्रियोंकेप्रदरादिसर्वरोगोंकीउ० ल० य०	४३४
बालक के रोगों की उ० लक्षण य०	४५२
बालक ग्रहका लक्षण य०	४५३
वाजीकरण की औषध	४६९
धातुपुष्टके य०	४८८
शरीर की पुष्टाई का यत्न	४९५
धातु उपधातु मारने की विधि	५६२

प्रकरण	पृष्ठ	प्रकरण	पृष्ठ
आसव करने की विधि	५४०	ऋतुके सेवनका आहार विहार	६७२
मूसली पाक करनेकी विधि	५४२	दिनचर्य्या अर्थात् दिनका	
शिलाजीत शोधने की विधि	५४२	आहार विहार	६७३
जवाखारादिखार बनानेकी विधि	५४३	स्नान का गुण	६७४
स्नेह विधि	५४४	शिखरन करने की विधि	६७५
स्वेद विधि	५४७	मट्ठा करनेकी विधि	६७५
बमन विधि	५४८	रात्रिचर्य्या की विधि	६७६
गंडूक विधि	५४९	६ ऋतुमें स्त्री सम्भोग करनेकी विधि	६७६
विरेचकनाम जुलाबकी विधि	५५१	शारीरक	६७७
ऋतुमें जुलाब लेनेकी विधि	५५३	सृष्टि उपजाने का कथन	६८३
छओंऋतुमें हड़खाने की विधि	५५५	आहारऔरपरिपाकऔरगर्भकीउ०ल०	६८४
वस्तिकर्म्म की विधि	५५५	बालक को औषध देनेकी मात्रा	६८६
हुक्का आदिसे धूमपानकी विधि	५५९	वायुकी प्रकृति का लक्षण	६८६
रुधिर छुड़ानेकी विधि	५६१	पित्तकी प्रकृति का लक्षण	६८७
छओं ऋतुके वर्णन	६७०	कफकी प्रकृति का लक्षण	६८७
वातपित्तकफका६ऋतुमेंसञ्चयप्रकोप	६७१	मेदकी प्रकृति का लक्षण	६८७
वातादिके कोप का आहार विहार	६७१	इति	

इसग्रन्थमें अनेक औषध हैं उनमें से प्रसिद्ध २ की सूची लिखते हैं ॥

रस ॥

शीतभंजी रस २१ उन्मत्तरस २७ भैरवांजनरस २७ पंचवक्ररस २७ स्वच्छन्दभैरव र० २८ चिन्तामणि र० ३५ कालारि र० ३५ त्रिपुरभैरव र० ३६ संज्ञाकरण र० ३६ ब्रह्मास्त्र र० ३६ ज्वरांकुश र० ४१ वसन्तमालनी र० ४१ गन्धार र० ५५ संग्रहणी कपाट र० ५९ बीजबोलवद्ध र० ६५ कुठार र०, ६७ शिवमतेन लोहसार र० ६७ पर्पटी र० ६९ क्रव्यादि र० ७६ ज्वालानल र० ७६ रामबाणर० ७७ क्षुद्रबोध र० ७७ अजीर्ण कंटक र० ७८ क्षुधासागर र० ७८ अमृतहरीतकी र० ७९ अग्निकुमार र० ८१ पुनर्नवादि मंडूर र० ८६ राजमृगांक र० ९४ कुमुदेश्वर र० ९४ कपर्दिकेश्वर र० ९६ शुद्ध शिलाजीत ९६ पंचामृत र० ९९ आनन्दभैरव र० १०५ श्वासकुठार र० १११ सूर्य्यावर्त्त र० १११ महोदधि र० १११ अमृतार्णव र० ११२ मेघडम्बर र० ११२ अग्निकुमार र० ११७ चन्द्रकला र० १३३ महानाराच र० १५७ विजयभैरव र० १७३ वातारि र० १७४ समीरपन्नग र० १७४ समीरगजकेसरी र० १७४ वृद्धचिन्तामणि र० १७५ राक्षस र० १७५ बंगेश्वर र० १७६ आमवातारि र० १८१ वातेश्वर र० १८४ तालकेश्वर र० १९० शूलगजकेसरी र० १९६ गन्धकरसायन र० १९६ तारामंडूर र० १९७ शूलगजकेशरी र० १९८ अग्निमुख र० १९८ शंखवटी र० १९८ शूलदावानल र० १९९ नाराच र० २०४ विद्याधर र० २११ गुल्मकुठार र० २११ बंगेश्वर र० २१३ तक्रसन्धान र० २१३ कूष्मांड र० २२२ लघुलोकेश्वर र० २२३ बंगेश्वर र० २४३ मेघनाद र० २४५ हरिशंकर र० २४५ मेहकुठार र० २४५ तालक र० २४६ वड़वानल र० २४८ उदरारि र० २५७ उदयभास्कर र० २५७ रूपराज र० ३०२ रविसुन्दर र० ३०२ गलत्कुष्ठादि र० ३२५ फिरंगगजकेसरी र० ३४० मृगांकरस ४०५ रूपरस ४९६ नागेश्वर र० ४९८ नागेश्वर रस ५०२ वंगेश्वर रस ५०३ साररस ५०४ अभ्रकरस ५१७ चंद्रोदयरस ५१३ कनकसुन्दर र० ५२० वड़वानल र० ५२० वह्नि र० ५२१ शंखली र० ५२१ शंखद्राव र० ५२१ शीतारि र० ५२१ ज्वरांकुश र० ५२५ ज्वरारि र० ५२५ शीतज्वरारि र० ५२६ त्रैलोक्यनाथ र० ५२६ मृगांकपोटली ५२८ हेमपोटली र० ५२८ हेमगर्भ र० ५२९ आनन्दभैरव र० ५२९ लघुसूचिकाभरण र० ५३० जलबुंद र० ५३० पंचवक्र र० ५३० उन्मत्त र० ५३१ नाराच र० ५३१ इच्छाभेदी र० ५३१ राजमृगांक र० ५३१ स्वच्छन्दभैरव र० ५३२ स्वयमग्नि र० ५३२ सूर्यावर्त्त र० ५३२ द्वितीयस्वच्छन्दभैरव र० ५३२ त्रिविक्रम र० ५३२ महाद्रवतालेश्वर र० ५३३ कुष्ठकुठार र० ५३२ उदयादित्य र० ५३३ सर्वेश्वर र० ५३४ मेहबद्ध र० ५३४ वह्नि र० ५३५ विद्याधर र० ५३५ त्रिनेत्र र० ५३५ गजकेसरी र० ५३५ अग्नितुण्डी र० ५३६ अजीर्णकंटक र० ५३६ पापानभैरव र० ५३६ वातनाशक र० ५३६ कनकसुन्दर र० ५३७ भैरव र० ५३७ ग्रहणीकपाट र० ५३८ वज्रकपाट र० ५३८ मदनकामदेव र० ५३८ कन्दर्पसुन्दर र० ५३९ लोहरसायन र० ५३९ ॥

गुटिका ॥

मृतसंजीवनी गुटिका ३५ अभ्रकगु० ५८ बृहत्सारणमोदक गु० ६३ प्राणदा गु० ६६ लवंगामृत गु० ७९ संजीवन गु० ८१ एलादि गु० ९० शृंगाराभ्रक गु० ९७ कर्पूरादि गु० १०४ अमृतनाम गु० १७५ हरताल गु० १७६ आमवातारि गु० १८२ चित्रकादि गु० १९५ शूलनाशिनी गु० १९५ कूठादि गु० १९५ शूलगजकेशरी गु० १९६ सौवर्च-लादि गु० १९७ हिंग्वादि गु० १९७ कांकायन गु० २१० चंद्रप्रभा गु० २४१ पंचानन गु० २४४ संप्रसारणी गु० ३३८ लेखनी गु० ३८३ रोपणी गु० ३८४ स्नेह गु० ३८४ रसांजन गु० ३८५ नयनामृत गु० ३८९ चंद्रोदय गु० ३९० चंद्रप्रभा गु० ३९० व्योषा-दि गु० ४०२ भद्रमुस्तादि गु० ४०८ वानरी गु० ४७२ मदनमंजरी गु० ४७३ लिंगार्जुन गु० ४७३ ज्वरघ्न गु० ५२६ इन्दारु गु० ६४९ मरिचादि गु० ६५० गुड़ादि गु० ६५० संजीविनी गु० ६५० मंडूर बटी ६५१ चंद्रप्रभा गु० ६५२ कांकायन गु० ६५२ अज-मोदादि गु० ६५७ ॥

चूर्ण ॥

षोडशांग चूर्ण ४० निम्बादि चू० ४२ सुदर्शन चू० ४२ लघुगंगाधर चू० ५२ ला-हीचू० ५६ कपित्थाष्टक चू० ५९ विजयनाम चू० ६६ हिंग्वष्टक चू० ७४ अग्निमुख चूर्ण ७४ वैश्वानर चू० ७५ बड़वानल चू० ७५ लवणभास्कर चू० ७५ क्रव्यादि चूर्ण ७८ राजवल्लभ चू० ७९ जीरकादि चू० ८० अजमोदादि चू० ८० कर्पूरादि चू० ९४ महातालीसादि चू० ९६ शुंठ्यादि चू० ९६ लवङ्गादिक चू० ९६ द्वितीयएलादि चू० ११० चव्यादि चू० ११४ दाड़िमादि चू० ११६ बृहदेलादि चू० ११६ सारस्वत चू० १३८ विश्वाद्य चू० १३९ अजमोदादि चू० १८१ कूष्मांडक्षार चू० १९४ पंचसम चू० १९४ शूलनाशन चू० १९४ नारायण चू० २०४ हिंग्वादि चू० २०८ वजूक्षार चू० २०८ हिंगुद्वादशक चू० २१२ वचादि चू० २१२ हरीतक्यादि चूर्ण २१९ न्यग्रोधादि चू० २४१ प्रमेहारि चू० २४२ कूटादि चू० २५४ नारायण चू० २५५ उदरामयहर चू० २५६ पि-प्पल्यादि चू० २७४ अम्लपित्त चू० ३२९ पीनस दूरहोनेका चू० ४०३ प्रतिसारण चू० ५५१ अनेक रोगोंपर सर्व प्रकारके गुणकारी चू० ६१९ से ६४९ तक ॥

क्वाथ ॥

पंचभद्र क्वाथ २२ बृहत्क्षुद्रादि क्वा० ४० पंचक क्वा० ४४ दशमूल क्का० ४४ शंख बटी क्का० ९९ महारास्नादि क्का० १७१ द्वितीय महारास्नादि क्का० १८० कणादि क्का० २१२ गोक्षुरादि क्का० २२१ हरीतक्यादि क्का० २२२ तृणपंचक क्का० २२२ शुंठ्या-दि क्का० २३० एलादि क्का० २३१ पथ्यादि क्का० २६१ पुनर्नवादि क्का० २६२ लघुमं-जिष्ठादि क्का० ३१७ मध्यमंजिष्ठादि क्का० ३१७ बृहन्मंजिष्ठादि क्का० ३१८ अनेकरोगों पर सर्वप्रकार के गुणकारी क्का० ५९३ से ६१४ तक ॥

अवलेह ॥

कूष्मांडावलेह ९० च्यवनप्रास अ० ९५ अदरकअ० ९८ कटेलीअ० १०४ भारंगी अ० ११० कल्पका अ० १५२ गुड़ादि मंडूर १९६ तारामंडूर १९७ क्षाराष्टक २०८ ग्वारके पठेका आसव २०९ सीपप्रयोग २०९ बाणादिगुडका अ० २३१ भटकटैया अ० ५६५ द्वितीयच्च्यवनप्रास अ० ५६५ कफज्वर अ० ५६७ श्वासनाश अ० ५६७ ॥

तैल ॥

लाक्षादि तैल ४१ प्रसारणी तैल १५० माषादि तैल १५६ महाबलतैल १६३ ग्रंथ

का तेल १६६ नारायण तेल १६९ अष्टांग तेल १७१ विषगर्भतैल १७१ लक्ष्मीविला-स महासुगन्ध तैल १७२ विजयभैरवतैल १७३ बृहत्सैंधवादि तैल १८१ अमृतादि तैल २७० चक्रमर्दन तैल २७० गुंजातैल २७० चंदनादि तैल २७१ शुंठ्यादि तैल २७१ नि-र्गुंडी तैल २९८ लघुमरिचादि तैल ३१८ मरिचादितैल ३१९ अर्कतैल ३२१ क्षक्षराक्षस नाम तैल ३२१ मूषक तैल ३५३ षणबिंदुतैल ३६० बिल्वतैल ३९५ व्याधितैल ४०३ शिग्रुतैल ४०३ सहचरादि घृत तैल ४०८ चंदनादि तैल ४७१ अनेकरोगोंपर औरबहुत से अमृत सदृश गुणकारी तैल ५८० से ५८९ तक ॥

घृत ॥

कल्याण घृत १३९ सारस्वत घृत १५१ शुष्कमूलकाद्यघृत २०४ महारोचक घृत २१६ धान्य गोक्षुर घृत २२७ चित्रकाद्यघृत २२७ कुलत्थाद्य घृत २३२ नाराचघृत २५६ बिंदुघृत २५७ जात्यादिघृत २८९ सिक्थादि घृत २९१ खर्जिका घृत २९७ भूनिम्बादि घृत ३०५ मृत्युपाश छेद घृत ४३० फलघृत ४४२ क्षारघृत ४७४ अनेकरोगोंपर अनेक प्रकारके आनन्ददायक घृत ५७५ से ५८० तक ॥

गूगल ॥

त्रयोदशांग गूगल १५८ योगराज गूगल १७१ व्याधिशार्दूल गूगल १८१ द्वात्रिंश-नि गूगल १८२ सिंहनाद गूगल १८२ किशोर गूगल १८९ गोक्षुरादि गूगल २२२ अ-मृत गूगल २४८ कचनार गूगल २७० अमृतादिगूगल २९० नवकार्षिक गूगल ३०१ स्वायम्भुव गूगल ३१५ द्वितीय किशोर गूगल ३१५ ॥

पाक ॥

लहसुनपाक १७६ शुंठीपाक १८० मेथीपाक १८१ हिरनकी सींग का पुटपाक २१८ सुपारीपाक २४३ गोखुरूपाक २४३ सौभाग्य शुंठीपाक ४५१ रतिवल्लभ पूगीपाक ४७० मूसलीपाक ५४२ कुरैया पुटपाक ५०२ अन्यपुटपाक ५०२ बिजौरा पुटपाक ५०२ बासा पुटपाक ५०३ भटकटैया पुटपाक ५०३ बिभीत पुटपाक ५०३ शुंठीपुटपाक ५०३ सूरन पुटपाक ५०३ हरिणशृंग पुटपाक ५०३ ॥

गोली ॥

अग्नितुण्डावती गोली ७७ गन्धकवटी ८० मधुपक्व हड़ ९७ अगस्त्य हड़की विधि ९० लवङ्गादिगोली १०२ शूलदावानल गोली १०५ शंखद्राव १०५ बीजपूरादि योगः १०७ हिंग्वादि फलवर्तिः २०३ मदनफलवर्तिः २०४ गुडाष्टक २०४ हरिद्राखण्ड ३२१ मनहर मलहम ३३० बिच्छूका मंत्र ४३१ सन्निपातनाशगोली ६५५ द्राक्षादि अजीर्ण नाशगोली ६५६ लीलावतीगोली ६५६ जपालगोटाकी गोली ६५७ क्षुधावृद्धि गोली ६५६ चित्रकादि गोली ६५८ खंगारादिगोली ६५८ पाचकगोली ६५८ संजीवनी ६५९ गन्धकवटी ६५९ ॥

लेप ॥

रक्त पित्त वायुकी सूजन दूर करनेका लेप २८४ व्रणकेशोथ दूरकरनेका लेप २८६ उपदंश के घाव दूरकरनेका लेप २८८ दशांगलेप ३३२ स्तनकलेप ३३९ लेपन विधान जिस में अनेक प्रकारके रोगोंपर लेप हैं ६५० से ६५२ तक ॥

अनेक रोगोंपर कपूरके फाहे पौंडर मरम और कल्क ६१४ से ६१८ तक ॥ इति ॥



अथ अमृतसागर ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजेन्द्र महाराजश्रीसवाई प्रतापसिंह जिन्होंने मनुष्योंके रोग दूरकरनेके अर्थ संसारका हितविचारअत्यंतकरुणाकरके चरक सुश्रुत वाग्भट्ट भावप्रकाश आत्रेय आदि वैद्यकके सम्पूर्णग्रंथोंको विचार उनकासार निकालकर सबरोगोंके निदानपूर्वक संक्षेपतासे अमृतसागरनाम ग्रन्थरचा उसको सरल हिन्दीभाषामें उल्थाकरके अनेकप्रकार की अनुभूत औषधियोंके विचारपूर्वक यत्न लिखते हैं ॥

अथ प्रथमरोगविचार ॥

अनेक प्रकार की पीड़ाको रोग कहते हैं वे रोग दो प्रकार के हैं एककायिक दूसरा मानसिक कायामें रहै सो कायिक उस का नाम व्याधिहै मनमें रहै सो मानसिक उसका नाम आधि है सो ये दोनों शरीरमें किसीप्रकारके कुपथ्यसे वात पित्त कफ रूप दोष और मिथ्याहार मिथ्याविहारके होनेसे सब रोगोंको उपजावैं हैं और यह वात पित्त कफ कई प्रकारके कुपथ्यसे बिगड़कर देहको बिगाड़े हैं और येही अच्छेप्रकार पथ्यके सेवन से शरीरको पुष्ट भी करे हैं ॥

अथ प्रथम सर्वरोगों की परीक्षा ॥

नाड़ीपरीक्षा १ मूत्रपरीक्षा २ और रोगोंके वृत्तान्त आदि से

रोगोंकी परीक्षा तीनप्रकारकी है और रोगोंके निदानसेभी इन तीनोंप्रकारके रोगोंका ज्ञान होता है ॥

अथ नाड़ीपरीक्षा ॥

पुरुष रोगीहोय तो उसके दाहिने हाथकी और स्त्रीरोगिणी होय तो उसके बायेंहाथकी नाड़ी देखे परंतु वैद्यको उचित है कि एकाग्र और प्रसन्नचित्तहोकर विचारपूर्वक रोगीके हाथको हिलने न दे इसीप्रकार अंगूठेके समीप धमनीनामक जीवकी साक्षी नाड़ी है वह नाड़ी जीवके सबदुःख सुखको बतातीहै उसको वैद्य अच्छेप्रकार अपने तीनअंगुलियोंसे देखे जैसे राग के जाननेवाले को वीणाकी तांतसे सबराग विदित होजाते हैं इसीप्रकार नाड़ीभी शरीरके सबदुःख सुखको बतावैहै और तत्काल स्नानकरके आयाहो अथवा तत्काल भोजन किया हो अथवा शरीरमें तैल लगायाहो या सोतेसे उठाहो अथवा दौड़ता आयाहो और भूखा प्यासा कामातुर मलमूत्रआदिसे वेग युक्तहो इतने पुरुषोंकी नाड़ी ग्रन्थकेमतसे देखनी नहीं चाहिये और जो देखे तो वैद्यको रोगीके रोगका यथार्थ ज्ञान नहींहोता और जैसे वैद्य रोगीके हाथकीनाड़ी देखे तैसेही रोगीके पैरकी भी नाड़ी देखे शास्त्रकी परिपाटी और अपनी बुद्धिके प्रभावसे जैसे जौंहरी अपने अभ्यासके बलसे हीरा आदि रत्नोंके सच्चे झूठे और मोलको कहदेताहै तैसेही सद्वैद्यभी शास्त्रके अभ्यास के बलसे रोगीके रोगकी साध्यता और असाध्यता और शरीरके दुःख सुखकी चेष्टाको जानलेता है ॥

अथ नाड़ी की पहिचान ॥

अंगूठेसे लगीहुई तीन अंगुलियोंमें पहिली अंगुलीके नीचे वायुकी मुख्य नाड़ी चलती है बीचकी अंगुलीके नीचे पित्तकी और पिछली अंगुलीके नीचे कफकी नाड़ीचलती है जैसे सर्प जोंकआदि जीव टेढ़ेचलते हैं तैसेही वायुकीनाड़ीभी बांकी और

तिरछी चलती है और जैसे काक कुलंग मेढक आदि फुदकते और शीघ्रतायुक्त चलतेहैं तैसेही पित्तकीनाड़ी उतावली और फुदकती चलतीहै और जैसे राजहंस मोर बतक मुर्गा कबूतर आदि जीवमन्दमन्द चलतेहैं तैसेही कफकी नाड़ीभी मन्दमन्द चलतीहै और बारबार सर्प्प और मेढककीसी गतिचलै उसको बातपित्तकी नाड़ी जानिये और जिस नाड़ीकी सर्प्प और हंसकीसी गतिहो उसको बातकफकी जानिये और बानर मेढक हंस इन तीनोंकीसी गतिहो उसको पित्तकफकी जानिये और जैसे खाती चीरेहुये काष्ठको अत्यन्त वेगसे काटता है तैसेही जिस पुरुषकी नाड़ीचलै और चलनेसे रहजाय और फिर चलनेलगे उस नाड़ी को सन्निपातकी जानिये और मन्द मन्द टेढ़ीमेढ़ी व्याकुलता पूर्व्वक स्थिर अस्थिरहो वह धमनी नाड़ी जीवकीहै वह नाड़ी सूक्ष्म होजानेसे पुरुषको मारैहै उसीनाड़ी को सन्निपातकी जानिये और जिस पुरुषके ज्वरका कोपहोय उसकीनाड़ी बहुत गरम और जल्दीजल्दी चलैहै और जिस रोगीकी नाड़ी एकढंगसे अपने स्थानपर चले वह रोगी नहीं मरता और कामातुर पुरुष की नाड़ी शीघ्रतायुक्त चलती है क्रोधीकी और चिन्तावान् पुरुषकी नाड़ी क्षीणचलतीहै और कईप्रकारसे भयभीतहुये पुरुषकीनाड़ी महाक्षीण चलैहै और मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले पुरुषकीनाड़ी महामन्द चलती है और रुधिरके विकारवाले पुरुषकी नाड़ी कुछएक गरम और भारी चलतीहै और जिस पुरुषके पेटमें आंवका विकारहोय तिसकी ना ड़ी अत्यन्तभारी चलतीहै और जिसपुरुषको भूख बहुत लगीहोय उसकी नाड़ी चपल होती है और जो पुरुष आहार बहुत करता हो उसकी नाड़ी हलकी और उतावली चलतीहै और जिस पुरुष ने भोजन कियाहोय उसकी नाड़ी धीरीचलतीहै और जिसपुरुषके मलका उत्पातहुआहो उसकी

रोगोंकी परीक्षा तीनप्रकारकी है और रोगोंके निदानसेभी इन तीनोंप्रकारके रोगोंका ज्ञान होता है ॥

अथ नाड़ीपरीक्षा ॥

पुरुष रोगीहोय तो उसके दाहिने हाथकी और स्त्रीरोगिणी होय तो उसके बायेंहाथकी नाड़ी देखे परंतु वैद्यको उचित है कि एकाग्र और प्रसन्नचित्तहोकर विचारपूर्वक रोगीके हाथको हिलने न दे इसीप्रकार अंगूठेके समीप धमनीनामक जीवकी साक्षी नाड़ी है वह नाड़ी जीवके सबदुःख सुखको बतातीहै उसको वैद्य अच्छेप्रकार अपने तीनअंगुलियोंसे देखे जैसे राग के जाननेवाले को वीणाकी तांतसे सबराग विदित होजाते हैं इसीप्रकार नाड़ीभी शरीरके सबदुःख सुखको बतावैहै और तत्काल स्नानकरके आयाहो अथवा तत्काल भोजन किया हो अथवा शरीरमें तेल लगायाहो या सोतेसे उठाहो अथवा दौड़ता आयाहो और भूखा प्यासा कामातुर मलमूत्रआदिसे वेग युक्तहो इतने पुरुषोंकी नाड़ी ग्रन्थकेमतसे देखनी नहीं चाहिये और जो देखे तो वैद्यको रोगीके रोगका यथार्थ ज्ञान नहींहोता और जैसे वैद्य रोगी के हाथकीनाड़ी देखे तैसेही रोगीके पैरकी भी नाड़ी देखे शास्त्रकी परिपाटी और अपनी बुद्धिके प्रभावसे जैसे जौहरी अपने अभ्यासके बलसे हीरा आदि रत्नोंके सच्चे झूठे और मोलको कहदेताहै तैसेही सद्वैद्यभी शास्त्रके अभ्यास के बलसे रोगीके रोगकी साध्यता और असाध्यता और शरीरके दुःख सुखकी चेष्टाको जानलेता है ॥

अथ नाड़ी की पहिचान ॥

अंगूठेसे लगीहुई तीन अंगुलियोंमें पहिली अंगुलीके नीचे वायुकी मुख्य नाड़ी चलती है बीचकी अंगुलीके नीचे पित्तकी और पिछली अंगुलीके नीचे कफकी नाड़ीचलती है जैसे सर्प जोंकआदि जीव टेढ़े चलते हैं तैसेही वायुकीनाड़ीभी बांकी और

तिरछी चलतीहै और जैसे काक कुलंग मेंढक आदि फुदकते और शीघ्रतायुक्त चलतेहैं तैसेही पित्तकीनाड़ी उतावली और फुदकती चलतीहै और जैसे राजहंस मोर बतक मुर्गा कबूतर आदि जीवमन्दमन्द चलतेहैं तैसेही कफकी नाड़ीभी मन्दमन्द चलतीहै और बारबार सर्प्प और मेंढककीसी गतिचलै उसको बातपित्तकी नाड़ी जानिये और जिस नाड़ीकी सर्प्प और हंसकीसी गतिहो उसको बातकफकी जानिये और बानर मेंढक हंस इन तीनोंकीसी गतिहो उसको पित्तकफकी जानिये और जैसे खाती चीरेहुये काष्ठको अत्यन्त वेगसे काटता है तैसेही जिस पुरुषकी नाड़ीचले और चलनेसे रहजाय और फिर चलनेलगे उस नाड़ी को सन्निपातकी जानिये और मन्द मन्द टेढ़ीमेढ़ी व्याकुलता पूर्वक स्थिर अस्थिरहो वह धमनी नाड़ी जीवकीहै वह नाड़ी सूक्ष्म होजानेसे पुरुषको मारैहै उसीनाड़ी को सन्निपातकी जानिये और जिस पुरुषके ज्वरका कोपहोय उसकीनाड़ी बहुत गरम और जल्दीजल्दी चलैहै और जिस रोगीकी नाड़ी एकढंगसे अपने स्थानपर चले वह रोगी नहीं मरता और कामातुर पुरुष की नाड़ी शीघ्रतायुक्त चलती है क्रोधीकी और चिन्तावान् पुरुषकी नाड़ी क्षीणचलतीहै और कईप्रकारसे भयभीतहुये पुरुषकीनाड़ी महाक्षीण चलैहै और मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले पुरुषकीनाड़ी महामन्द चलती है और रुधिरके विकारवाले पुरुषकी नाड़ी कुछएक गरम और भारी चलतीहै और जिस पुरुषके पेटमें आंवका विकारहोय तिसकी ना डी अत्यन्तभारी चलतीहै और जिसपुरुषको भूख बहुत लगीहोय उसकी नाड़ी चपल होती है और जो पुरुष आहार बहुत करता हो उसकी नाड़ी हलकी और उतावली चलतीहै और जिस पुरुष ने भोजन कियाहोय उसकी नाड़ी धीरीचलतीहै और जिसपुरुषके मलका उत्पातहुआहो उसकी

नाड़ी बहुत उतावली चलतीहै सुखी मनुष्यकीभी नाड़ी धीरी और बलयुक्त चलतीहै और नाड़ीकी परीक्षा अनेकप्रकारकी हैं सोबुद्धिमान् सद्वैद्य अपनी बुद्धिसे नाड़ीकेद्वारा शरीरकासब दुःख सुख विचारले जैसे योगीको योगकेअभ्यासकरके ब्रह्मका साक्षात्ज्ञानहोजाताहै तैसेही सद्वैद्यकोनाड़ीकेअभ्यासकरकेश-रीरकेसबरोगऔरसुखदुःखकाज्ञानहोजाताहै-इतिनाड़ीपरीक्षा।

अथ मूत्रपरीक्षा ॥

वैद्य को उचितहै कि चारघड़ी के तड़के रोगीको उठाकर कांचके सुपेद बासनमें अथवा कांसीके पात्रमें प्रथम धारछोड़ कर मुतावै पीछे उस बासनको कपड़े से ढककर रक्खे सूर्यो-दय होनेके पीछे वैद्य उसकी परीक्षा करै अगर रोगी का मूत्र पानीके सदृशहो और बहुतहो और कुछ एक नीलाभी होय तो वायुके बिकारकामूत्र जानिये और जो मूत्र लाल कुसुमके सदृशहोकर गरम अथवा पीला टेसूकेफूलके रंगकेसदृश और थोड़ा उतरे तो गरमीके रोगकामूत्र जानिये और जिस रोगी का ठण्ढा और सुपेद और चिकनामूत्र उतरै उसेकफका रोगी जानिये और चारघड़ीके तड़केका रोगीका मूत्र चारघड़ीतक धूपमें रखनेके पीछे वैद्य उसमें तेलकीबूँदडाले जो तेलकीबूँद मूत्रके ऊपर फैलजाय तो उस रोगी को साध्य जानिये और वह अच्छाहोजाय और जो तेलकी बूँद मूत्रके ऊपर न फैलै और स्थिरहोकर रहजाय तो उस रोगीको कष्टसाध्य जानिये और जो वह बूँद मूत्रमें डूबजाय अथवा चक्रके सदृश घूमने लगे तो वह रोगी अवश्यमरै और जिसरोगीके मूत्रमें तेलकी बूँदपड़तेही छिद्रहोजाय अथवा खड्ग व दण्ड व धनुषके सदृश तेलकीबूँदका आकारहोजाय तो वह रोगी अवश्यही मरै और रोगीके मूत्रकेऊपर तेलकीबूँद तालाबकेआकारहोजाय अथवा हंसकेआकारहोय वा पद्म वा हस्ती वा छत्र वा चमर वा तोरणके

आकार बंद होजाय तो वहरोगी निरोगहोय और जिसका मूत्र सरसोंके तेलकेसदृशहोय उसको बातपित्तका रोगजानिये और जिसकाकाला और बुदबुदे लियेहुये होय तिसको सन्निपातका रोगजानिये और मूततेहुये जिसरोगीकी लालधारउतरे उसको महारोगी जानना और जिसकीधार कालीनिकले वहरोगी मर-जाय और जिसके मूत्रमें बकरीके मूत्रकीसी बास आवै उसको अजीर्ण का रोग जानिये और जिसका मूत्र गरम और लाल अथवा केसरसा पीलाहोय तिसको ज्वरका रोग जानिये और जिसका कुयेंकेपानीके सदृश मूत्रउतरे उसके लिंगरोग जानिये इति मूत्रपरीक्षा—अब रोगोंका अहवाल और प्रसंग कहतेहैं॥

अथ रोगीकीपरीक्षा॥

रोगीकी परीक्षा इतनेप्रकारों से होतीहै देखने स्पर्श करने और पूछने और स्वप्न और दूत और शकुन और कालज्ञान और औषध देशकाल अवस्था और अग्निबल के बिचारसे और साध्यअसाध्य आदिप्रकारोंसे रोगीकीपरीक्षाकरनी उचि-तहै सो क्रमपूर्वक लिखतेहैं पीलियाआदि कईएकरोग तौरोगी के देखने सेही वैद्यको विदितहोते हैं और ज्वरआदि कईएक रोग रोगी के स्पर्शकिये बिन नहींजानेजाते और उदरशूल म-स्तकपीड़ा बवासीर उपदंश अर्थात् गरमी और सोज़ाक हौ-लादिल और भूतादिकका लगना प्रमेह आदिले कईएकरोग रोगीके बिना कहे वैद्य यथार्थ नहीं जानसक्ता॥

अथस्वप्न परीक्षा॥

रोगीकोऐसेस्वप्न देखने अच्छेनहीं होते अगर रोगीस्वप्नमें नङ्गा और मुण्डित और लाल और कालावस्त्र पहिरेहुयेमनुष्य देखे अथवा नकटा बूचा और कालेहाथियार और फांसीलिये हुये मारताहुआ पुरुष देखे तो वहरोगी असाध्यजानिये और

भैंसा ऊंट गधा इनपर चढ़ाहुआ दक्षिणदिशाको जाताहुआ स्वप्नमें मनुष्यदेखे तौ वहरोगी अच्छानहीं होय और ऊंचे से नीचेगिरे जलमें डूबजाय और अग्निभभकतीजाय और सिंह आदिलेकोईहिंसकजीव उसको खाताहोय दीपककोबुझता देखे तेल मदिरापीता देखे और पकवानखाय और कुयेमें गिरै ऐसा स्वप्न रोगीकोहोय तो वहरोगी असाध्यजानिये और ऐसास्वप्न देखे तो स्वप्न देखने वाला किसी से कहै नहीं और प्रातःकाल उठतेही भस्मादिक से स्नानकरे और उस स्वप्नकेसदृश हवन दान पाठ आदि करै तौ स्वप्नदोष दूरहोय और रोगीकोस्वप्नमें देवता राजा याचक मित्र ब्राह्मण गौ अग्नि तीर्थदीखें तौ वह रोगी जल्दी अच्छाहोय और स्वप्नमें कीचड़को उल्लंघजाय और शत्रुको जीते महल रथ पर्वत आदिके ऊपरचढ़े तौ वह रोगी जल्दी अच्छाहो और स्वप्नमें श्वेतवस्त्रधारै और मांस मीन फलखाय तौ वह रोगी जल्दी अच्छाहोय और स्वप्नमें अगम्यासे गमन और शरीर में विष्ठाका लेप करै और रोवै और अपनी मृत्यु देखे और कच्चा मांसखाय तो वहरोगीशीघ्र अच्छाहोय और जोंक सर्प भौंरा मक्खी जिसको स्वप्नमेंकाटें वह रोगीभी शीघ्र अच्छाहोय और जो यह स्वप्न अच्छे भले निरोगी मनुष्य कोभी होयँ तौ शुभजानिये॥

अथ दूतपरीक्षा॥

वैद्यके बुलानेकेलिये जो दूतभेजै वहकाणा खोवड़ा नकटा आदि न हो क्योंकि ऐसे के भेजने से वह रोग जल्दी अच्छा नहींहोता और जो निर्मल वस्त्र पहिरे और सुखपूर्वक घोड़ेरथ आदिपर चढ़कर वैद्यको भेंटकेलिये उत्तमवर्णका अच्छाचेष्टा-वान्चतुरपुरुष जिसका वायांस्वर चलताहोय वैद्यके पास अ-केला जाय तौ वहरोगी शीघ्र अच्छाहोय—इतिदूतपरीक्षा॥

अथ शकुनपरीक्षा ॥

जो वैद्य रोगीकी चिकित्सा करने को जाताहोय उसकोउस समय सन्मुख शीतल शकुन मिलैं तौ अच्छा और जोअग्नि आदि ले गरम शकुन मिलैं तौ रोगी अच्छा न होय और जो दूत वैद्यके बुलानेकोजाताहोय उसकोजलआदि शीतलशकुन सन्मुख मिलें तो रोगी अच्छा नहीं होय और अग्नि आदि गरमबस्तुमिलैं तोरोगी जल्दीअच्छाहोय--इतिशकुनपरीक्षा॥

अथ कालज्ञान ॥

जिस रोगीको रात्रिमें गरमी और दिनमें शीत लगे और कण्ठमें कफ बोले वह रोगी निश्चय मरै और जिस रोगी की नाकका अग्रभाग शीतल होयऔर उसके हाथपैर और हृदय भी शीतलहोयँ और शिरमें शूलहोय वहरोगीभी निश्चय मरै और जिसरोगीकी कांति और तेज और लज्जा जातीरहै और स्वभावमें अधिक क्रोध होजाय वहरोगी छःमहीनेमें मरै और जिसरोगी का अंग कांपताहोय और गतिभंगहोय और शरीर का रंग औरका और होजाय और सुगन्ध और दुर्गन्धकाज्ञान न रहै वहरोगी निश्चयमरै और वृक्ष और वृक्षकीडालियोंमें रोगीको अग्निसी दीखे वहरोगीभी छःमहीनेमें मरै और जो रोगी कामकरके हीनहोय औरप्रस्वेद नहीं आवै वहतीनमहीने में मरै और जो रोगी कानके छिद्रोंको बन्दकरै पीछे कानका घूंघूं शब्द न सुनै वह रोगी निश्चय मरै और जिस रोगीकी आंख देह और मुखका वर्ण औरका और होजाय वह रोगी भी निश्चयमरै और जिसरोगीको अपनी जीभ और नासिका का अग्रभाग और भृकुटी का मध्य दीखे नहीं वह रोगी निश्चयमरै और जिसरोगीके मुखका वर्ण औरका और होजाय और नाकका अग्रभाग टेढ़ा होजाय और नेत्र लालहोजायँ वह रोगीभी अवश्यमरै और जिस रोगीकी इन्द्रियां अपने २

विषयको ग्रहण नहींकरैं वह रोगीभी निस्संदेहमरै और जिस रोगीकी बोलनेसे वाणी थकजाय और सामर्थ्य घटजाय वह रोगीभी अवश्य मरजाय और जिस रोगीको कांच और जल में अपनी छाया दीखे नहीं वहभी अवश्य मरै और जिसका मुख लाल कमलके सदृश होजाय और जीभ काली होजाय और शरीर में पीड़ा उठआवै वहरोगी अवश्यमरै और जिस रोगीका हृदय और नाभि और कन्धा कांपने लगै वह रोगी निश्चयमरै और जिस पुरुषके श्लेषा शतभिषा आर्द्रा स्वाती मूल पूर्वाफाल्गुणी पूर्वाषाढ़ पूर्वाभाद्रपद भरणी इन नक्षत्रों में और रवि शनि मंगलवार और चौथ छठ द्वादशी तिथियों में रोग उत्पन्नहोय तो वहरोगी निश्चयमरै और जिस रोगी को दूसरेकीआंखकीपुतलीमें अपनास्वरूप नहींदीखे वहरोगी निश्चयमरै और जिसरोगीका सूर्य्योदयमें दहिना और सायं-कालको बायां स्वरचलै वह रोगी नहीं मरै--इतिकालज्ञान॥

अथ औषधविचार॥

वैद्यको उचित है कि औषध का गुणागुण विचार रोगीके रोगके प्रमाण सदृश औषधदे जो रोग थोड़ा होय तो अधिक औषध न दे और जो अधिक रोग होय तो थोड़ी न दे और जो कड़वी कषैली औषध रोगी न खाय और उससे द्वेष करै ऐसा रोगी जीवैनहीं—इति औषध विचार॥

अथ देशविचार॥

देश तीनप्रकारका है अनूप १ साधारण २ जंगल ३ जहां बहुतसा जल सदैव बहताहोय और जिसदेशमें कफकी आधि-क्यता होय जैसे पूर्वदेश उसको अनूप कहिये और इसीप्रकार के लक्षण जहां कहीं और देशमेंहोयँ उसको भी अनूप कहिये और जिसदेशमें वात पित्त कफ बराबर होयँ उसको साधारण

कहिये और जिस देश में बायु अधिक होय तिसको जागल कहिये और जिस देशमें जो मनुष्य उत्पन्न होय उसकी उसी देशके अनुसार प्रकृति होतीहै—इतिदेशविचार ॥

अथ काल विचार ॥

काल तीन प्रकार का होताहै शीतकाल १ उष्णकाल २ वर्षाकाल ३ सो इनका विचार लिखते हैं शीतकाल में शीत थोड़ा पड़े या बहुत पड़े तो रोग उत्पन्न हो और शीतकाल में गरमीका पड़नाभी विपरीत है यहभी अच्छानहीं इसमेंभी रोग होताहै इसीप्रकार उष्णकालमें उष्णताथोड़ी पड़े अथवा अधिक वा शीत पड़े तौ रोग की उत्पत्ति होय ऐसेही वर्षाकाल में वर्षा थोड़ी होय अथवा बहुत होय अथवा होय नहीं तो मनुष्योंको रोग पैदाहोय—इति कालविचार ॥

अथ अवस्था विचार ॥

अवस्था तो कई प्रकार की हैं परन्तु उन में तीन मुख्य हैं एक बाल दूसरी तरुण तीसरी वृद्ध तिनमें उत्तम मध्यम अधम मनुष्य होतेहैं उनके जो रोग उत्पन्नहोंय तिनकेही शरीर और अवस्थाके अनुरूपविचारकर औषधकरै--इतिअवस्थाविचार॥

अथ अर्थविचार ॥

अर्थ पांच प्रकारके हैं प्रथम शब्द १ दूसरे स्पर्श २ तीसरे रूप ३ चौथे रस ४ पांचवें गंध ५ शब्दका स्थान तौ कानमें और स्पर्शका स्थान त्वचामें रूपकास्थान नेत्रमें रसकास्थान जीभमें गंधका स्थान नासिकामें सो शब्दकी सामर्थ्य घटनेसे थोड़ासुने या अधिकसुने अथवा मिथ्यासुने वा कुछकाकुछसुने और स्पर्श की सामर्थ्य क्षीणहोनेपर थोड़ा स्पर्श करै अथवा मिथ्या स्पर्शकरै वा कुछ का कुछ स्पर्शकरै देखने की सामर्थ्य न्यूनहोनेपर थोड़ा देखे अथवा मिथ्या देखे वा कुछका कुछ देखे छहों रसके खाने की सामर्थ्य थकनेसे थोड़ाखाय अथवा बहुत

खाय अथवा मिथ्याखाय अथवा कुछका कुछ खाय और सूंघने की सामर्थ्य घटनेसे थोड़ा सूंघे अथवा बहुत सूंघे अथवा मिथ्या सूंघे अथवा कुछ का कुछ सूंघे तौ निश्चय रोगकी उत्पत्ति होय और इन पांचों के भली प्रकार साधन करने से मनुष्य सदैव नीरोग रहता है—इति अर्थ विचार॥

अथ कर्मविचार॥

कर्म्म तीनप्रकारका है एकतौ कायिक १ दूसरा मानसिक २ तीसरा वाचिक ३ कायामें रहै सो कायिक और मनमें रहै सो मानसिक वचनमें रहै सो वाचिक कायाकीकर्म सामर्थ्यथकनेसे थोड़ाकर्मकरै अथवा बहुत कर्मकरै अथवा कुछका कुछ कर्म्म करै और मनकी सामर्थ्य घटनेसे थोड़ी इच्छा होय या बहुत होय अथवा कुछकी कुछहोय और बोलने की सामर्थ्य घटने से थोड़ा बोलै अथवा मिथ्या बोलै वा कुछका कुछ बोलै तौ मनुष्यको रोगकी उत्पत्तिहोय और इन तीनों कर्मोंको मनुष्य सदैव अच्छे प्रकारसे एकसा बर्ततारहै तौ वह मनुष्य सदैवही नीरोगरहै—इति कर्म्म विचार॥

अथ अग्निबल विचार॥

अग्नि पांच प्रकारकाहै एकमन्दाग्नि १ दूसरा तीक्ष्णाग्नि २ तीसरा विषमाग्नि ३ चौथा समाग्नि ४ पांचवां भस्माग्नि ५ जिसकी कफ प्रकृति होतीहै उसके मंदाग्नि होतीहै वह कफके रोगको उत्पन्न करैहै सो अच्छानहीं १ और जिसकी पित्तकी प्रकृति होय उसके तीक्ष्णाग्नि होतीहै सो अच्छाहै खायाहुआ सब पचादेताहै परंतु वह भी गरमीके रोगको उत्पन्नकरै है २ और जिसकी वात प्रकृतिहोय उसके विषमाग्नि होय सो वह वायुके रोगोंको उत्पन्न करैहै कभी अन्नपचावै है औरकभीअन्न नहीं पचावैहै ३ चौथा समाग्नि है सो संपूर्ण अग्नियोंसे श्रेष्ठ है अच्छेप्रकार मनुष्य भोजनकरै उसको पचादेताहै और कोई

रोगको नहीं उत्पन्न करता ४ और ५ भस्माग्नि है वह भस्मक रोगको उपजावै है इसप्रकार कभी तो औषधके संयोगसे शरीरमें कफ घटजाय और पित्त का अग्निरूप बढ़नाही बायुके संयोगसे प्रेरित महातीव्र अग्निको उपजावै है तब वह भस्मक अग्नि होजायहै उस अग्निवाले को जब समयपर खाने को नहीं मिलै तो प्यास पसीना दाह मूर्च्छाआदि करके मनुष्यको मारडालता है इससे मनुष्य अग्निबलके बिचारपूर्वक यत्नकरै अथवा भोजनादिक करै तो उसके अवश्यही रोग होय और उसकी चिकित्सा सफल नहींहोती ५—इतिअग्निबलबिचार ॥

अथ रोगीकी असाध्य परीक्षा ॥

जिस रोगी को रात्रिमें निद्रा नहीं आवै और कण्ठमें कफ बोलै और शरीरमें दाहहो नाडीमन्दहोय बोलने में जीभथक जाय सब इन्द्रियां अपने २ धर्मोंको छोड़दें वह रोगी अवश्य मरै और जिस रोगी की मन्दाग्नि होकर प्रकृति बिगड़जाय उस रोगी को भी असाध्य जानिये और जिसकी आंखें लाल होजायँ और श्वास उठ आवै हृदयमें शूल होय और तन्द्रा और हिचकी और तृषा बहुतहोय और बहुत सोवै अत्यन्त दाहहोय पसीना अधिक और चिकनाआवै वह रोगी निश्चय मरै—इतिरोगीकी असाध्य परीक्षा ॥

अथरोगीकी साध्यपरीक्षा ॥

जिस रोगीकी प्रकृति ठिकानेपररहै और अग्नि तीव्रहोय और किसीभांतिके रोगकाउपद्रव न होय एकही दोषका कोई रोगहोय और उस रोगीकी चिकित्साके चारउपाय मिलैं एक तो अच्छासद्वैद्य दूसरे वैसाही रोगकी दूरकरनेवाली औषधी और वैसाही चतुर चाकर मिलै और वैसाही रोगी द्रव्यवान् जितेन्द्रिय और रोगके घटने बढ़नेका जाननेवालाहो वहरोगी साध्य जानिये-इति रोगीकी साध्य परीक्षा ॥

अथ रोगोंका भेद ॥

जोरोग कायामें रहै उसका नाम व्याधि है वह १४ प्रकार काहै सो लिखते हैं—सहज रोग १ गर्भज रोग २ जातजात रोग ३ पीड़ाजनित ४ कालजनित ५ प्रभावजनित ६ स्वभाव जनित ७ देशजनित ८ आगन्तुक रोग ९ कायिक रोग १० आन्तर रोग ११ कर्म्मज रोग १२ दोषज रोग १३ कर्म्म दोषज रोग १४॥

अथरोगोंका पृथक् २ लक्षण ॥

माता पिताके वीर्य्यके दोषसे उसकी सन्तान के भी वही रोग हो आवै है जैसे ववासीर कोढ़आदि य सहजरोग हैं १ गर्भ में ही कुबड़ा पंगुल छः अंगुली रावण खंजा आदि रोग होयँ उनको गर्भज रोग कहते हैं २ गर्भ में माता के मिथ्या आहार और बिहार के करने से बालक के रतुआ और बुरा शरीर गूँगापन आदिले जो रोग होय उनको जातजात कहिये ३ और शस्त्रादिकके प्रहारसे उपजे जो अस्थिभंग पीड़ा आदि रोग उनको पीड़ा जनित रोग समझना चाहिये ४ और शीतकाल में अधिक शीत और उष्णकाल में अधिक धूप और वर्षामें अधिकभीजना उनसे उत्पन्न जोरोग उनको कालज रोग कहते हैं ५ और देवता गुरु और बड़ोंके शापसे और ग्रहोंकी प्रतिकूलतासे जो रोग उत्पन्नहोय उसको प्रभावज कहिये ६ और क्षुधा तृषा जरा आदिसे उत्पन्न जोरोग हो उसको स्वभावजरोग कहतेहैं ७ और भूतादिक और काम क्रोध राग द्वेष लोभ मोहादिकने जिसके शरीरमें प्रवेश किया होय उससे उत्पन्न जो रोग उसको आगन्तुक रोग कहते हैं ८ और ज्वरादि विष पर्य्यन्त मुख्य रोग हैं उनको कायिक रोग कहते हैं ९ और होलदिली को आदिले अर्द्ध विक्षिप्त होजाय उसको अन्तररोगकहिये १० और जिसदेशमें कालेही काले और लालेहीलाले और भूरेहीभूरे मनुष्य उपजें उसको

देशज कहिये ११ और पूर्व जन्ममें अथवा इसजन्म में ब्रह्म-हत्यादिकपापसे जोरोग उपजे उसको कर्म्मजकहिये १२ और बात पित्त कफसे उपजा जोरोग उसको दोषजकहिये १३ और ब्रह्महत्यादिक जो पाप और बात पित्त कफादिक जोदोष इन दोनोंसे मिला हुआ उपजा जो रोग उसको कर्म्मदोषज कहते हैं १४ अबयही सम्पूर्ण रोग दो प्रकार के हैं एक साध्य दूसरा असाध्य वह साध्यभी दोप्रकारकाहै एक तो कष्टसाध्य जो बहुत यत्नसे जैसे तैसे अच्छा होता है और दूसरा थोड़ेही यत्न करनेसे अच्छा होताहै वह सुखसाध्य है २ और असाध्यरोग भी दोप्रकारका है एकयाप्य जो गम्भीरादिक बवासीर मिरगी अर्द्धांगक्षयी श्वासादिक और जिसमें अधिकरोग मिलेहों वह पुरुष औषधी खायाकरै पथ्यसे चले और सद्वैद्यके कहनेके अनुसारबर्ते जहांतक रोगका अन्तहोय इनरोगोंको याप्य कहते हैं और एकऐसा रोग उत्पन्नहो जिसकी चिकित्साही न हो वह मारहीडालै है और वह महाअसाध्य और अप्रतीकार है और रोगके भेद तो अनंतहैं जिनका पारनहीं उन रोगोंका ज्ञान तो ईश्वरहीकोहै परंतु सद्वैद्यभी शास्त्रबल और अपनी बुद्धिमत्तासे इन सबरोगोंको १४ वेगोंके अंतर्गतही जानलें॥ इतिरोगभेद॥

अथ प्रकारांतर से संपूर्ण रोगों के उत्पन्न होने की औरही बिधि॥

जो मनुष्य सबबातोंसे सावधान है और १४ प्रकारके वेगों मेंसे कोई वेग वृथा प्रगटकरै नहीं और स्वतः सिद्ध प्रगटहुआ है उसको रोकैनहीं और उसका कार्यकरै तो मनुष्यको रोग न होय और उनचौदहको वृथा प्रगटकरै और उनके प्रगटहोनेसे उनको धारणकरै तो रोग अवश्यहोय १४ वेग लिखते हैं॥

अथ १४ वेग॥

अधोबायु १ दिशाबाधा २ मूत्रबाधा ३ डकार ४ छींक ५ तृषा ६ क्षुधा ७ नींद ८ कास ९ खेदका श्वास १० जंभाई ११

आंशू १२ बमन १३ कामदेव ये १४ वेगहैं इनवेगोंको वृथा रोंकै और इनसे उत्पन्नहुयेवेगको धारणाकरै तौ निश्चयमनुष्य केरोग उत्पन्नहोयँ सोक्रमसे लिखतेहैं जो पुरुष अधोबायुको रोंकै उसके गोला और उदरमें अफरा और पीड़ा ये रोगहोयँ पीछे उसके अधोबायु अच्छेप्रकार से नहीं होतीहै और मूत्र-कृच्छ्र और बद्धकोष्ठ और नेत्ररोग और मन्दाग्नि और हृदय पीड़ा ये रोगहोयँ—इति अधोबायु रोंकने के रोग १ ॥

अथमलके रोंकनेके रोग ॥

जो पुरुष मलकी बाधा को रोंकै उसके ये रोग होते हैं हाथ पैरमें हड़फूटन और पीनस मस्तकपीड़ा और बायुकी ऊर्ध्वकी गति और अधोबायुकी प्रवृत्ति अच्छेप्रकारसे नहींहोती और हृदयपीड़ा उदावर्त और बायुगोला उदररोग उदरपीड़ा मूत्र-कृच्छ्र बद्धकोष्ठ नेत्ररोग मन्दाग्नि येभी रोग होआवैं--इतिमल के रोंकने के रोग २ ॥

अथ मूत्ररोंकनेके रोग ॥

जो मनुष्य मूत्रकी बाधाको रोंकै, उसके ये रोगहोवैं अंगमें हड़फूटन और पथरी और लिङ्गेन्द्री और कालेबालोंकी सन्धि में पीड़ा औ वायुगोला आदि मलके रोंकनेसे रोगकहे हैं सोभी इसमूत्रके रोंकनेसे उत्पन्नहोतेहैं—इतिमूत्र रोंकनेकेरोग ३ ॥

अथ डकाररोंकनेके रोग ॥

जो मनुष्य डकार आतीहुई को रोंकते हैं उनके इतने रोग होते हैं अरुचि शरीर कांपै हृदय रुके अफरा खांसी हिचकी इत्यादि —इति डकार रोंकनेके रोग ४ ॥

अथ छींकरोंकने के रोग ॥

जो मनुष्य छींकके वेगको रोंकै उसके येरोग उत्पन्न होते हैं मथवाय और शरीरकी सम्पूर्ण इन्द्री दुर्बलहोजांय और गर्दन मुड़ै नहीं औ मुख टेढ़ा होजाय—इति छींक रोंकनेके रोग ५ ॥

अथ तृषा रोंकने के रोग ॥

जिस पुरुषको तृषा लगीहोय उसको जो रोंकै तौ ये रोग होयँ मुख सूखै और सब अंगमें हड़फूटन और बधिरता और मोह भ्रम और हृदय दूखे—इति तृषारोंकनेके रोग ६ ॥

अथ क्षुधा रोंकने के रोग॥

जो पुरुष भूखकेवेगको रोंकै उसके इतनेरोगहोयँ सबअंगटूटनेलगै अरुचिहोय और सर्व्वबस्तुके ऊपर ग्लानि शरीरकृश शूलभ्रम और बिनाही श्रमकियेश्रम और सबइंद्री शिथिल और शरीरका बर्ण औरका और--इति क्षुधा रोंकनेके रोग ७॥

अथ नींद रोंकने के रोग ॥

जोमनुष्य आवतीहुई नींदको रोंकै उसके ये रोग उत्पन्न होते हैं मोह और मस्तक नेत्र भारी आलस्य उवासी अङ्गपीड़ा इत्यादि——इति नींदरोंकनेके रोग ८॥

अथ खांसी रोंकनेके रोग॥

जो मनुष्य खांसीको रोंकै उसके खांसी श्वास अरुचि हृदय रोग हिचकी आदिरोगोंकी वृद्धि होती है—इति खांसी रोंकने के रोग ९॥

अथ श्रमके श्वास रोंकनेके रोग॥

जो पुरुष श्रमके श्वासों को रोकै उसके इतने रोग होतेहैं बायुगोला हृदय रोगमोह प्रमेह--इति श्वास रोंकनेकेरोग १०॥

अथ उवासी रोंकनेके रोग॥

जो मनुष्य आवती उबासी को रोंकै उसके मस्तक पीड़ा इन्द्रियोंकी दुर्बलता और गर्दन मुखकीटेढ़ापन—इति उबासी रोंकने के रोग ११॥

अथ आंशू रोंकने के रोग॥

जोपुरुष आंशूरोंकै उसकेपीनस नेत्ररोग मस्तक हृदय और गर्दन में पीड़ा अरुचि भ्रम बायुगोला---इति आंशू रोंकने के रोग १२॥

अथ बमन रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य आवतीहुये बमनके वेगको रोंकै इसके रतुआ

पित्ती कोढ़ नेत्ररोग खाज पांडुरोग ज्वर खांसी श्वास हृदय शूल मुख कील अथवा मुखछाया ये रोग बमनके रोंकनेसे होते हैं--इति बमन रोंकने के रोग १३ ॥

अथ कामदेव रोंकने के रोग ॥

जो पुरुष कामदेवके वेगको रोंके उसके सुज़ाक प्रमेह लिंगेंद्रीमें पीड़ा और लिंगशोथ चिन्ता भोजनमें अरुचि इतनेरोग होतेहैं १४--इतिप्रकारांतरसे सर्व रोगोंके उत्पन्न होनेके हेतु ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहविरचितेअमृतसागरनामग्रंथे रोगविचारनाड़ीमूत्ररोगस्वप्नदूतशकुनकालज्ञानइत्यादिपरीक्षा और औषधविचारदेशकालअवस्था अर्थकर्म्मअग्निबल और रोगोंका साध्यासाध्यविचाररोगभेदतथारोगोत्पत्तिनिरूपणोनामप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

अथ कायिक रोगोंमेंसर्व रोगोंका राजा जो ज्वरहै उसका वृत्तांतपूर्वक लक्षण और यत्नक्रमसे लिखतेहैं ॥

अथ प्रथम ज्वरकी उत्पत्ति ॥

दक्षप्रजापतिके यज्ञमेंसतीकेतनुत्यागकरनेसे त्रिलोकीनाथ शिवजीने कोपकरके दक्ष और दक्षके सहायकों के मारने और यज्ञविध्वंस करनेको अपने तीसरे नेत्रसे एक वीरभद्र नामगण उत्पन्नकिया उस गणने शिवजी महाराज की आज्ञापाकर दक्ष प्रजापतिकोमार यज्ञ विध्वंसकर यज्ञकी सबसामग्री खाई तब शिवजीनेवीरभद्रकानाम ज्वररक्खा सोवह ज्वर मनुष्यकेमिथ्याहार मिथ्या विहार से नाभि और हृदयके मध्यमें जो आमका घरहै उसमें रहते जो वात पित्त कफ उनको रोगीके शरीर में आमाशयके स्थानपर दुष्टकरैहै और आमाशयकेस्थानमेंरहता जो आहार तिससे उपजा जो रस उसको भी विगाड़े है और आमाशयके स्थानमें रहती जो अग्नि तिसको उदरमें से बाहर

निकालकर रोगीके सम्पूर्ण शरीरको अग्निके स्वरूपको गरम करै है वही ज्वररूप होकर शरीरके पराक्रमको खायजाय है वह ज्वर आठप्रकारकाहै बातज्वर १ पित्तज्वर २ कफज्वर ३ बातपित्तज्वर ४ बातकफज्वर ५ कफपित्तज्वर ६ सन्निपातज्वर ७ आगंतुकज्वर ८ ये आठप्रकारके ज्वर हैं अब इनके पृथक्पृथक् लक्षणलिखते हैं ॥

अथ प्रथम ज्वरमात्रका सामान्य लक्षण ॥

जिसकेशरीरमें एकसाथही येलक्षणहोयँ उसके ज्वर कहना चाहिये—शरीर गरमहोआवे पसीना न आवे क्षुधा जातीरहै सब अंग जकड़ाहो मस्तकमें शूलहोय हाथ पैरों में हड़फूटन और कहीं मन नहींलगे ऐसा लक्षण जिस रोगीमेंहोय उसके ज्वर कहिये ॥

अथ ज्वरका पूर्वरूप ॥

हाथपैरोंमें हड़फूटन और मस्तक भारीहोय और जंभाईआवे बिना शूलके शरीरमेंखेदहो ऐसालक्षण जिसमनुष्यकेहोय तो जानना कि ज्वरआवेगा—ये लक्षण वैद्यको जानने चाहिये ॥

अथ ज्वरके विशेष लक्षण ॥

(प्रथम बातज्वर के लक्षण) शरीर कांपे ज्वरका बिषम वेगहोय कण्ठ ओठ सूखें नींद और छींक न आवे शरीर रूखा होय माथभारी शरीरमेंपीड़ा मुखसे छओंरसोंका स्वाद जाता रहै दिशा न उतरै पेट में शूल और अफराहोय और उबासी बहुतसीआवैं तो बातज्वर जानिये ॥

अथ सामान्य ज्वरमात्रकायत्न ॥

गर्मपानी पिलावे और मल औ बलके सदृश हलका लंघन और लघुपथ्य करावे और निर्बातस्थानमें रक्खै अच्छे महीन बस्त्रपर सुलावे तौज्वरजाय और तीनदिनतक तौज्वरमें कड़वी कषैली जुल्लावआदि की कोई औषध न दे यही यत्न कीजिये

तदनन्तर २ मासे सोंठि १० मासे धनियां इनका क्वाथकर पिलावै तौ ज्वर जातारहै और भूखभी लगै १॥

अथ बातज्वरके यत्न॥

बातज्वरवालेको और तीक्ष्णजठराग्निवालेको और गर्भिणी स्त्री और दुर्बलमनुष्य औरबालक और वृद्ध औरभयभीतइतने मनुष्योंको लंघननहींकरावै लघुपथ्यदे और बातज्वरवालेको चिरायता। नागरमोथा। नेत्रबाला। दोनोंकटैया। गुरच। सोंठि। इन सब औषधियों को छदामछदामभर लेकै जवकुटकर पांच दिनतक क्वाथदे तौ बातज्वर जाय २॥

अथ बातज्वर दूरकरनेका दूसरा क्वाथ॥

सोंठि। नींबकीछाल।धमासा। पाढ़। कचूर।अडूसा।अरण्डकी जड़। पुष्करमूल। इनसब औषधियोंको जवकुटकर छदाम२भर लेकर क्वाथदे तौ बातज्वर दूरहोय ३ और हिंगुलेश्वर रससे बातज्वर तत्काल दूर होताहै शिंगरफ। पीपल। शोधा सिंगी मुहरा इन तीनों को बराबर ले महीन पीस पानी में आध २ रत्तीकी गोलीबनाकर प्रतिदिन एक २ खाय तौ पांच गोलियों में बातज्वर निश्चय जाय। और मूँग। मसूर। कुलत्थ। मोठ इन सबकी दालका पानी पथ्यमेंदे और शतावरि। गुरच यह दोनों छदाम २ भरले क्वाथकर उसमें छदाम भर पुराना गुड़ डालकर पांच दिनतक खाय तौ बातज्वर जाय और मुनक्का। किसमिस। पीपल। पित्तपापड़ा सौंफ। येसब छदामछदाम भर लेकर क्वाथ करकै दे तौ बातज्वर जाय ४ इतिबातज्वरकेयत्न॥

अथ पित्तज्वरके लक्षण॥

नेत्रोंमें दाहहो। मुख कडुआरहै। तृषा अधिकहो। चक्कर आवै। बहुतबकै। शरीरगर्मरहै। ज्वरका वेग बहुतहो। मलपतलाहो। और वमनहोय। नींद नहींआवै। मुखसूखै और पक

जाय पसीना आवै। नेत्र मलमूत्र पीलेहों ये लक्षण जिस पुरुष में होयँ उसको पित्तज्वर जानिये ॥

अथ पित्तज्वर का यत्न ॥

नागरमोथा॥धमासा॥पित्तपापड़ा। नेत्रबाला॥चिरायता। नींब की छाल। इनसब औषधियोंको छदाम २ भर लेकर जवकुटकर क्वाथदे तौ पित्तज्वर दूरहोय १ अथवा गर्मपानीके साथ खैरसार का चूर्ण छदामभर और दोमासे कुटकी और दोटंक मिश्री इनका चूर्णकरदे तौ पित्तज्वर जाय २ अथवा १ टंक चंदन १ टंक खस इनको महीनपीस फालसेके ४ पैसेभर शर्बतमें दोपैसे भर मिश्री डालके पिये तौ पित्तज्वर दूरहोय यह यत्न त्रिसती नामग्रन्थमें लिखाहै ३ अथवा चावलको खीलकेपानीमें मिश्री मिलाकर पियेतौ पित्तज्वरदूरहोय ४ अथवा कुटकी। अमिलतास कीगिरी॥नागरमोथा॥हड़कीछाल। पित्तपापड़ाइनसबको छदाम २ भर लेके कूटकरकाढ़ा दे तौ पित्तज्वर और तृषा। दाह। मूर्च्छा प्रलाप। घुमनी। इन सब रोगों को यह क्वाथ दूर करै है यह बैद्यबिनोदमें लिखा है ५ अथवागेहूँ के आटेको खूबभिजोकर उसमें मिश्रीडालकरपतला हरीराकर दे तौ पित्तज्वरदूरहोय ६ अथवा मीठेअनारका शर्बतदे तौ पित्तज्वर दूरहोय ७ अथवा महासुन्दरी सर्वगुणसम्पन्न १६ बर्षकीस्त्रीसे संभोगकरै तौ दाहकीव्यथा दूरहोय और तोता मैना और बालककीबाणी और मनोहरबागफूलोंकाहार कमलकाफूल मनोहर शृंगार की कथा कपूर का लगानासुन्दर स्त्रियोंका संग फुहाराआदि ये सबदाह की व्यथाको दूरकरैहैं ८ अथवा फालसे के शर्बतमें सेंधवनोन डालकर पिये तौ पित्तज्वर जाय ९ अथवा मूंगकीदालके पानी में मिश्रीमिलाकर पिये तौ पित्तज्वर दूरहोय १० अथवा मुनक्का किसमिसका शर्बत मिश्रीमिलाकर पिये तौ पित्तज्वर जाय ११ अथवा पित्तपापड़ा। नागरमोथा। चिरायता इन सबको ५ टंक

ले क्वाथकर ३ दिनपिये तौ पित्तज्वर जाय यह सब ज्वरके यत्न तिमिरभास्करमें लिखे हैं १२ अथवा रक्तचन्दन। पद्माक। धनियां। गुरच। नींबकीछाल। इनसब औषधियोंको छदाम२भर लेके जवकुटकर ५ दिन काढ़ा पिये तौ पित्तज्वर। दाह। तृषा। वमन सब दूरहोयँ यह यत्न लोलिम्बराजमें लिखाहै१३ और यही पित्तज्वर बहुत दाह कारक ज्वर हो तो कमलके फूलोंकी शय्यापर अथवा केलेके पत्तोंपर सुलावै तौ दाहज्वरदूरहोय१४ अथवा अच्छे सघन जंगलमें खसकी टट्टियों में खसकेही पंखे की बायुकरै तौ दाहज्वर दूरहोय यहयत्न लोलिम्बराजमें लिखा है १५ अथवा गुलाबके फूलकी पखुड़ीको तिलमें पांच सातपुट दे और उसका तेल चमेलीके सदृश निकाले उसको हकीम गुलाबरोगन कहते हैं और हिंदू गुलाबका तेल बोलते हैं उसके मर्दनसे दाहज्वर बन्दहोताहै १६ अथवा १०० या १००० बार का धोयाहुआ घी देहमें मले तो दाहज्वरकी व्यथा तत्काल दूर होय १७ अथवा नींबके कोमल पत्तों को पीसकर उसमें पानी डाल बिलोयकर झाग उठाय दाहज्वरवालेके शरीरमें लेपकरै अथवा उन झागोंमें बहेड़ेकी मींगी मिलाकर लेपकरै तौ दाह की व्यथा तत्काल दूरहोय १८ ये यत्न वैद्यजीवन और वैद्यविनोदमें लिखेहैं—इति पित्तज्वर औरदाहज्वरके लक्षणऔरयत्न॥

अथ कफज्वर का लक्षण और यत्न॥

अन्नमें अरुचि शरीरभारी और रोमांचहोय और जिसके मूत्र और नख सफेदहों नींद बहुत आवै शरीर ठंढा और मुख मीठाहोय ज्वरका वेगकमहो आलस्य। श्वास। खांसी। पीनस। आदि लक्षण जिसमें हों उसको कफज्वर जानिये॥

अथ कफज्वर के यत्न॥

नींबकीछाल। सोंठि। गुरच। कटैया। पुहकरमूल। कुटकी। कचूर। अडूसा। कायफल। पीपल। शतावरि। इन सबको छ-

दाम २ भरलेके जवकुटकर ७ दिनक्काथदे तौकफज्वर दूरहोय १ अथवा कायफल। पीपल। ककड़ासिंगी। पुहकरमूल इनसब औषधियोंको कपरछानकरके छदामभर शहतमेंचटावै तौ कफ ज्वर श्वासकासआदि दूरहोयँ २ यहयत्न वैद्यबिनोद में कहाहै और कफज्वरवाले को गर्म सेरभर का तीनपावपानी करकै थोड़ा २ पिलावै और १२ लंघनकरावै पीछे मूंग मोठ अथवा कुलत्थकेपानीका पथ्यकरावे और दिनमें सोनेनदे और बिजौराके भीतरकेजीरेमें सेंधवनोन अद्रक मिलाके दे पथ्यमें अथवा यहपाचनबस्तु दे सोंठि। मिरच। पीपल। चित्रक। पीपलामूल। दोनोंजीरे। लवंग। इलायची। भुनीहुई हींग। अजवायन। अजमोद। इनसबको समानलेकर चूर्णकरके छदामभर गर्म जल से दे तौ पाचनहोय कफज्वर जाय भूखलगे ३ अथवा कटेरी। गुरच। सोंठि। पुहकरमूल। अडूसा इनसबकोधेले २ भर लेकर जवकुटकर ७ दिनतक क्काथदेतो कफज्वरजाय यहक्षुद्रादिक्काथहै ४ अथवा कटेरी। पीपल। ककड़ासिंगी। गुरच। अडूसा इन सब औषधियों को २ टंक लैके क्काथकर १० दिन दे तौ कफज्वर श्वास कास मन्दाग्नि ये सब दूरहोयँ ५ अथवा अडूसेकाकाढ़ा छदामभर तौलके प्रमाण १० दिनदे तौ कफ ज्वर निश्चय तत्काल जाय ६ अथवा २ रत्ती शीतभंजी रस अडूसा और सोंठिकेक्काथके अनोपानसे ७दिनदे तौ कफज्वर निश्चय तत्काल दूरहोय॥

अथ शीतभंजी रस॥

शिंगरफ से निकालाहुआ शुद्धपारा ५ टंक शोधीगन्धक ५ टंक तामेश्वर ५ टंक सिंगीमुहरा २ टंक सोंठि ५ टंक मिरच ५ टंक पीपल ५ टंक शोधाहुआ सुहागा ५ टंक इनसबको महीन पीस चित्रकके रसकी ३ पुटदे पीछे अद्रकके रसकी ७ पुटदेकै पानके रसकी ३ पुटदेकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावै यह

शीतभंजीरसहै इससे कफज्वर शीतांग और सर्व्वबायुके रोग दूरहोतेहैं ७—इति कफज्वरके लक्षण और यत्न॥

अथ वात पित्तज्वरके लक्षण यत्न॥

जिस मनुष्य के बात पित्तज्वर मूर्च्छा घुमनी दाहहोय और निद्रा न आवै मस्तक पीड़ाकरै कण्ठ मुख सूखे वमन रोमांच अरुचि और अँधेराहोजाय सब अंगमें पीड़ाहोय और जंभाई और बकवाद यह लक्षण जिस ज्वरमें होय उसको वात पित्त ज्वर कहिये॥

अथ वात पित्तज्वरके यत्न॥

खरैटी। गुरच। अरण्डकीजड़।नागरमोथा। पद्माक। भारंगी पीपल। खस। रक्तचन्दन इन सब औषधियोंको ५ माशे के प्रमाणले पीछेजवकुटकर छदाम २ भरका क्काथ १२ दिनतकदे तौ बात पित्तज्वर दूरहोय १ अथवा गुरच नागरमोथा। पित्त-पापड़ा।चिरायता।सोंठि इनसबको बराबरले जवकुटकरछदाम२ भरकाक्काथ प्रतिदिन १२ दिनदे तौ बात पित्तज्वर दूरहोय २ यह पंचभद्रनाम क्काथहै अथवा गुरच।पित्तपापड़ा।सोंठि।नागर मोथा। अडूसा।इनको बराबरले जवकुटकर छदामभरका क्काथ दे तौवात पित्तज्वर जाय ३ अथवा परवरकेपत्ते। नींबकीछाल। गुरच। कुटकी इन सब को बराबर ले छदाम भर क्काथ १२ दिनतकदेतौ बातपित्तज्वर दूरहोय ४ अथवा महुआ। मुलह-टी। लोध। गौरीसर। नागरमोथा। अमिलतासकी गिरी इन सबको बराबरलेके जवकुटकर छदामभरका क्काथ १२दिनतकदे तौ बातपित्तज्वरजाय ५ अथवा चावलके खीलकेपानीमें मिश्री और शहद मिलाकर १०दिनदेतौ बातपित्तज्वरजाय ६ अथवा सोंठि। मिरच पीपल। इनको बराबरलेके सबकीबराबर मिश्री मिलाय चूर्ण करप्रतिदिन धेलेभर शहदकेसाथ १० दिनतक खाय तौ बात पित्तज्वर दूरहोय—इति बातपित्तज्वर केयत्न॥

अथ वात कफज्वरकेलक्षण यत्न ॥

खांसी अरुचिसन्धि २ और मस्तकमें पीड़ा पीनससन्ताप अंगकम्प शरीरमेंभारीपन और निद्राआवैनहीं पसीना श्वास और उदरमें शूलहोय और नाड़ीसर्प अथवा हंसकी गतिचलै धूसर अथवाश्वेत और चिकना सुरमेंके सदृशमूत्र और काला और चिकनामल होय आंखें धूसरी औरमुख कषैला अथवा मीठा और जीभकाली अथवा श्वेत कंठमें कफ और भारीबोल शरीरठंढा ये लक्षण जिसमें होयँ उसको बातकफज्वर जानिये यह लक्षण ज्वर तिमिरभास्करमें लिखे हैं १ ॥

अथ बातकफज्वर का यत्न ॥

इस ज्वरवालेको १० लंघनकरावे और अधौटा पानी पिलावे और१०दिन पीछे चिरायता। नागरमोथा। गिलोय। सोंठि ये सब बराबर लेकर जवकुटकर छदामभरका क्वाथदे पीछे उसको पथ्य देतौ कोई उपद्रव नहींउठे और तीनदिन पीछे कायफल। देवदारु। भारंगी। नागरमोथा। धनियां। पित्तपापड़ा। हड़ की छाल। सोंठि। कंजाकीजड़ ये सब औषध बराबरले जवकुट कर २टंकका काढ़ाकरके देतौ बातकफज्वर खांसी सूजन श्वास इन सबको दूरकरै १ अथवा नागरमोथा। पित्तपापड़ा। सोंठि गुरच। धमासा। इन सबको बराबर लेकै जवकुटकर छदाम भर का क्वाथ १० दिनतक दे तौ बातकफज्वर बमन। मुखशोष इत्यादि दूर होयँ २ अथवा छोटीकटैया। सोंठि। पीपल। गुरच यहसबछदाम २ भरले काढ़ाकर दे तौ बातकफज्वर जाय ३ अथवा सरवन। पिथवन। दोनोंकटैया। गोखुरू। बेलगिरी। सोनापाढ़ा। अरलू। खम्हारि। पाढ़ यह दशमूलहैं इनकोकूटकर क्वाथकरै और पीपल मिलाकर १० दिनतक दे तौ बातकफज्वरदूरहोय ४ अथवा ज्वरमेंमुख और तालूसूखजाय जीभ लठराजाय तौ बिजौराके जीरे में सेंधवनोन और मिरच

लगाय जीभके लेपकरै तो मुख और तालूकाशोष और जीभ की लठरता दूरहोय ५ अथवा चिरायता । गिलोय । देवदारु कायफल । वच । यहबराबरले छदामभरका काथ करदे तो बातकफज्वरजाय ६ यहयत्न ज्वर तिमिरभास्कर में लिखाहै इति बात कफज्वर यत्न ॥ अथ कफपित्तज्वरके लक्षण ॥

मुख और जीभ कफसे लिपीहों तंद्रा। मोह । खांसी । अरुचि तृषा । अधिकहो वारंवार शरीरमें दाह और शीत और पीड़ा हो हृदयदूखे घूमनी आवे क्षुधा नलगे शरीर जकड़ासा होजाय नाड़ी हंसकी अथवा मेंढककी गति चलै मूत्र श्वेत ललाईलिये चिकनाहो और मलभी ललाई लियेहो और नेत्र मेंढकके रंग के सदृशहों मुखमीठा अथवा कडुवारहै जीभललाई लिये श्वेत हो जिस मनुष्यके ये लक्षणहों उसके कफपित्तज्वर जानिये यह लक्षण ज्वर तिमिरभास्करमें लिखाहै १ ॥

अथ कफपित्तज्वर को यत्न ॥

इस ज्वरवाले को १४ लंघन करावै और अष्टावशेष जल पिलावे और गुरच।रक्तचंदन।सोंठि। नेत्रबाला। दारुहल्दी इन औषधियों को बराबर लेके जवकुटकर छदाम भर का काढ़ा १० दिनतक दे तो कफ पित्तज्वर दूर होय १ अथवा नींबकी छाल। रक्तचन्दन। पद्माक। गुरच। धनियां। इन औषधियोंका काढ़ा १० दिनदे तो यह ज्वर और दाह। तृषा। बमन सब दूर होयँ २ अथवा गुरच। इन्द्रयव । नींबकी छाल। परवरके पत्ते। कुटकी। सोंठि। सफ़ेदचन्दन। नागरमोथा। पीपल। इन सबको बराबरले महीन चूर्णकर ४ माशे अष्टावशेष जलके साथदेतो ज्वर श्वास गरमी हृदय शूल अरुचि खांसी आदि रोगोंको यह चूर्ण दूरकरै ३ अथवा गुरच। दोनोंकटैया। कचूर। दारुहल्दी। पीपल। अडूसा। परवरकेपत्ते। नींबकीछाल। चिरायता इनसब औषधियोंको समान लेकै जवकुटकर छदामभरका काढ़ा दोनों

समय १० दिनतक देतो पित्तकफज्वर दूरहोय ४ अथवा कि-समिस। अमिलतासकीगिरी। धनियां। कुटकी। नागरमोथा। पिपलामूल। सोंठि। पीपल। इन सबको बराबरलेके ११ दि-नतक काढ़ा दे तो शूलभ्रम मूर्च्छा अरुचि छर्दि पित्त कफ ज्वर इतने रोगोंको दूरकरे ५ अथवा शिंगरफका निकालाहुआपारा ५ टंक शोधी गन्धक ५ टंककालीमिरच ५ टंकशोधाहुआसु-हागा ५ टंकइनसबकोमहीनपीस अदरखके रसकी ७ पुटदे फिरपानके रसमें ७ पुटदे तदनन्तर ४ रत्तीप्रमाणकी गोली-बांधे एक गोली प्रति दिन दोनों समय ७ दिनतकखाय तो कफपित्तज्वर निश्चय दूर होय ६ इति पित्त कफ ज्वरकायत्न॥

अथ सन्निपात ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जोमनुष्य बहुत चिकना और खट्टा और अधिकगर्मचरफरा मीठा रूखा भोजनकरै और विरुद्ध वस्तु खाय अथवा अधिक भोजनकरै और बुरापानीपिये और क्रोधवती रुगैलीस्त्रीकेसाथ प्रसंगकरै और दुष्ट और कच्चामांसखाय और शीतलतामड़ा देश ऋतुग्रह इनके बिपरीत होनेसे मनुष्यके सन्निपातरोगहोता है॥

अथ सन्निपातका लक्षण॥

अकस्मात् कभी दाह कभी शीतलगै स्वभाव बदलजाय और सब इन्द्रियां अपने २ धर्म्मको छोड़दें शरीर के हाड़ २ और सन्धि २ और माथे में अधिक पीड़ाहोय और नेत्रन में जल आवै और काले और लालहोजायँ कानोंमें शब्द और पीड़ाहो कण्ठमें कांटे पड़जायँ तन्द्रा।मोह। श्वासा।कासा।अरुचि भ्रम यहभी होयँ और जीभ काली और खरखरीहोकर लठरा जाय और रुधिर मिलाहुआ कफथूके दिनमेंसोवे रात्रिमेंजागै पसीना बहुतआवै अथवा नहींआवै अकस्मात्गावै नाचैहँसै रोवै माथाधुनै तृषा अधिकलगै हृदय दूखै मलमूत्र उतरै नहीं और जोउतरै तो थोड़ाउतरै शरीरकृशहोजाय कण्ठमें कफघर

घराय गूँगाहोजाय ओष्ठआदि अंगपकजायँ पेटभारीहो नाड़ी की गति महासन्द शिथिल सूक्ष्म टूटीसीहोय और मूत्रहल्दी साया काला या रुधिरके समान और मल काला श्वेतता लिये होय अथवा शूकरकेमांस सदृशहोय इतने लक्षण जिसमेंहोयँ तिसके सन्निपातज्वर कहिये जो वैद्य औषध रस और यंत्रमंत्र तंत्रकरके सन्निपातज्वरको दूरकरै उसवैद्यसे धनदेकरभी रोगी उऋण नहींहोता—इति सन्निपातज्वर लक्षण॥

अथ सन्निपातज्वरका यत्न॥

सन्निपातज्वर वालेको अर्द्धावशेष अच्छे कुयेंके जलमें १ टंक सोंठिडालकर दिनका औटा दिनमें और रात्रिका औटा रात्रिमें पिलावे और चतुरमनुष्य पासरहै और निर्व्वातस्थानमें रक्खे शीतलयत्न कभीनकरै और शिवआदिका पूजन और हवनमंत्र मणिधारण दानादिककरै अथवा सातदिनपीछे कायफल। पिपलामूल। इन्द्रयव। भारंगी। सोंठि। चिरायता। कालीमिरच। पीपल। काकड़ासिंगी। पुहकरमूल। रास्ना। दोनोंकटैया। अजमोद। बालछड़। बच। पाढ़। चव्य। इन सब औषधियों को समानले जवकुटकर २ टंकका क्वाथ दोनोंसमयदे तौ सन्निपात और सर्ववस्तुकी अज्ञानता और अधिक प्रस्वेद शीतांग और विक्षिप्तता उदरशूल अफरा वात और कफके रोग और सुआ-रोग इन सब रोगोंको यह क्वाथदूरकरैहै अथवा आककीजड़। जवासा। चिरायता। देवदारु। रास्ना। निर्गुण्डी। बच। अरणी। सहँजना। पीपल। पिपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। अतीस। जल भांगरा इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंक प्रमाणका काढ़ा दोनोंसमयदे तौ महासन्निपातज्वर धनुर्वात और जबड़ासिचगयाहो तिसको और सुआकारोग श्वासखांसी और वायुके रोगों को यह काढ़ा दूरकरैहै यह यत्न लोलिम्बराजमें लिखाहै२सन्निपातमें जीभ जड़होगईहो तौ बिजौरा

की केसरमें सेंधानोन और मिरचमिलाके लेपकरै तो जीभकी जड़ता दूरहोय ३ अथवा जिस सन्निपातमें ज्ञान जातारहाहो तिसकायत्न यहहै बच महुआ सेंधानोन मिरच पीपल यह सब बराबरलेकै महीनपीस गर्मजलमें नासदे तो ज्ञानहोआवै ४ ॥

अथ सन्निपात के दूरकरनेको और नास ॥

पारा ५ टंक गन्धक ५ टंक इन दोनोंकी कजली खरलमें करै पीछे दोनोंकीबराबर सोंठि मिरच पीपल महीनपीस इनपांचों को मिलाय धतूरेकेफलके रसकी ३ पुटदेके एकादिन खरलकरै यहउन्मत्तनाम रसहै इसकी नासदे तो सन्निपात दूरहोय ५ ॥

अथ सन्निपातदूरकरने का अंजन ॥

जमालगोटेकी मींगी १० टंक कालीमिरच १ टंक पिपलामूल १ टंक इन तीनोंको जंभीरीनींबूके रसमें ७दिनतकखरल करै पीछे इसका अंजनदे तो सन्निपातदूरहोय ६ अथवा पारा। गन्धक। कालीमिरच। पीपल।येसब बराबरले और इनचारों का चतुर्थांश जमालगोटालेके खरलमें पारा गन्धककी महीन कजलीकरै पीछे इनदोनोंकोकजलीमेंमिलाय सबको जंभीरीके रसमें आठदिनतक खरलकरै फिरइसकाअंजनदे तो सन्निपात दूरहोय ७ इसअंजन का नाम भैरवांजन है यह वैद्यरहस्य में लिखाहै अथवा सिरसके बीज। पीपल। कालीमिरच। सेंधवनोन। लहसन। मैनसिल। बच। इनको बराबरलेके महीन पीस गोमूत्रमें एक दिनतक खरल करै पीछे इसको अंजनकरै तो सन्निपात दूरहोय ८ ॥

अथ सन्निपात दूरहोनेकापंचवक्त्रनामरस ॥

शिंगरफका निकालाहुआ पारा ५ टंक शोधीगन्धक ५ टंक शोधासिंगीमुहरा ५ टंक शोधा सुहागा ५ टंक पीपल ५ टंक कालीमिरच ५टंक पारा और गन्धककी कजली करपीछेसे कजलीमें इनसब ओषधियोंको मिलाके धतूरेके बीजके तेलमें ४

घड़ी खरल करिके १ रत्तीके प्रमाण गोलीबांधे एकगोलीअद-रखके रसमें दे तौ सन्निपात जाय इसके ऊपर दहीभात खवावै यह यत्नवैद्यरहस्यमेंलिखाहै ९॥

अथ सन्निपातदूरकरनेका स्वच्छन्दभैरवरस ।

शिंगरफका निकाला हुआपारा ५ टंक शोधीगंधक ५ टंक शोधाहुआसिंगीमुहरा ५ टंक जायफल २ टंक पीपल १० टंक पारा और गन्धककी कजलीकरे पीछेइनसबओषधियोंको इसमें मिलाय और अदरखके रसमें १ दिनतक खरलकरै पीछे १ रत्तीकेप्रमाण देतौ सन्निपातज्वरशीतज्वर बिशूचिकाविषमज्वर मंदाग्निमाथेका रोग इनसबको यहरस दूरकरैहै यह वैद्यरहस्य में लिखाहै १०॥ अथ सन्निपातमें शीतउत्पन्न हुआहो उसका उबटना ।

मिरच । पीपल । सोंठि । हड़ का छिलका । पठानीलोध । पुहकर मूल । चिरायता । कुटकी । कूटा कचूर । इन्द्रयव । इनसबकोबराबर लेके महीनपीस मर्दन करै तौ पसीना और शीतांगदूर करै ११ अथवा पारा ५ टंक सिंगीमुहरा ५ टंक मिरच १० टंक धतूरे के फलकीराख ४० टंक इनसबको महीन पीसकर शरीर में मर्दन करै तौ पसीना शीतांगसन्निपात दूरहो १२॥

अथ महासन्निपातदूर करने का यत्न ।

पारा । सिंगीमुहरा । कालीमिरच । नीलाथोथा । नौसादर । इन सबको बराबरले महीनपीस धतूरे और लहसनके रसमें रोटी करै वहरोटी क्षौरकराके रोगीके शिरपर एकपहरतक रक्खेजब शरीरमें तापहोआवै और चैतन्य होजाय तौ वह पुरुष जीवै और जो तापयुक्त और चैतन्य नहोय तौ निश्चय वह मनुष्य मरै १३ अथवा लहसन । राई । सहँजने की जड़ इन सबको गौकेमूत्रमें महीन पीस रोटीकरे वहरोटी दोपहर तक क्षौर क-राके मस्तक पर रक्खै जो चैतन्यता और ताप न हो तौ वह न जीवै यहयत्न वैद्यविनोद में लिखाहै १४॥

॥ अथ सन्निपात दूरकरनेका यत्न ॥

महाभयंकर सन्निपातवाले को बिच्छूसे कटवावै तौ सन्निपात दूरहोय १५ और सन्निपात वालेको सर्पसे भी कटाना लिखा है परन्तु लोकविरुद्धहै इससे यह चिकित्सा न करै १६ अथवा सन्निपात वालेको लोहेकी सलाका अत्यन्त गरमकर उसके पगथली और भौंह और ललाट के मध्यमें दागदे तौ सन्निपातजाय यह वैद्यविनोदमें लिखाहै और मंत्रयंत्र आदि के साधनसेभी सन्निपात दूरहोताहै और सुश्रुत चरक वाग्भट्ट के मतसे तौ सन्निपातज्वर एकहीप्रकारकाहै परन्तु अन्य ऋषियोंके मतसे५२ प्रकारकाहै उनमें१३मुख्यहैं उनका पृथक् २ नाम और लक्षण और यत्न लिखतेहैं १७॥

॥ अथ १३ सन्निपातके नाम ॥

सन्धिग १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ शीतांग ५ तन्द्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलाप ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ अब इनकी आयुर्बल लिखते हैं सन्धिग ७ दिनरहै अन्तक १० दिन रुग्दाह २० दिन चित्तभ्रम ११ दिन शीतांग १५ दिन तन्द्रिक २५ दिन कण्ठकुब्ज १३ दिन कर्णक ३० दिन भग्ननेत्र ८ दिन रक्तष्ठीवी १० दिन प्रलाप १४ दिन जिह्वक १६ दिन अभिन्यास १५ दिन इति आयुर्बल ॥ परन्तु इनमें जो कुछ उपद्रव उठ आवै तौ मनुष्य तत्कालही मरजाय और सन्निपातज्वरवाले का शीतल यत्न न करै और दिनमें सोने न दे अर्द्धावशेष जल पिलावै और आंव कफ घटै ऐसा यत्नकरै और सन्निपात के दोषसहश लंघन करावै ॥

अथ सन्धिगसन्निपातका लक्षण ॥

शरीरकीसन्धि २ में शूल और सूजनहोय पेटभारीरहै अङ्ग शिथिल परजाय बलजातारहै वात कफका कोप बहुत होय

नींद आवै नहीं ये लक्षण सन्धिग सन्निपातके जानिये १ ॥

अथ सन्धिगसन्निपातका यत्न ॥

रास्ना। हड़कीछाल। गुरच। सहजना। चित्रक। लजालू। सोंठि। देवदारु। कुटकी। कचूर। अडूसा। बायबिडंग। सरवन। पिथवन। दोनोंकटैया। बेलगिरी। अरणी। अरलू। खंभारि। पाढ़। पीपल। येसब बराबरले जवकुटकर २ टङ्कका काढ़ाकर दोनोंसमयदे तौ सर्वलक्षणसंयुक्त सन्धिगसन्निपातदूरहोय १॥

अथ अंतक सन्निपातका लक्षण ॥

शरीरमें दाह और कम्प और मस्तकपीड़ाहोय खांसी और हिचकीआवै बकैबहुत ज्ञानजातारहै और श्वासहोय येलक्षण जिसमें होयँ उसके अन्तक सन्निपात कहिये इसकी औषध नहींहै इस सन्निपात का मनुष्य जीतानहीं २ ॥

अथ रुग्दाहसन्निपात का लक्षण ॥

शरीर में दाह और व्याकुलता होय उदरमें शूलचलै तृषा अधिक लगै ये लक्षण जिसमें होयँ उसके रुग्दाह सन्निपात जानिये यह भी असाध्यहै ३ ॥

अथ रुग्दाह का यत्न ॥

हड़कीछाल। पित्तपापड़ा। नींबकीछाल। कुटकी। देवदारु। अमिलतासकी गिरी। मुनक्का। किसमिस। नागरमोथा ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काथ दोनों समय १५ दिनदे तो रुग्दाह सन्निपात जाय ३ ॥

अथ चित्तभ्रम सन्निपातका लक्षण ॥

भ्रम मद ताप मोह श्वास ये होयँ और विक्षिप्त के से नेत्र होजायँ और हँसै गावै नाचै ये लक्षण जिसकेहोयँ उसके चित्तभ्रम सन्निपात जानिये ४ ॥

अथ चित्तभ्रम सन्निपातका यत्न ॥

ब्राह्मी। बच। लजालू। त्रिफला। कुटकी। खरैटी। अमिल-

तासकीगिरी। नींबकीछाल। नागरमोथा। कडुवीतोरईकीजड़। मुनक्का। किसमिस। सरवन। दोनों कटैया। गोखुरू। बेलगिरी। अरणी। अरलू। खंभारि। पाढ़ ये सब बराबरले जवकुट कर २ टंकका काढ़ा दोनों समय ११ दिनदे तौ चित्तभ्रम सन्निपात दूरहोय ४॥

अथ शीतांगसन्निपातका लक्षण॥

सम्पूर्ण शरीर शीतल ओलासा होजाय और कांपे हिचकी आवे अंग शिथिल होजाय श्वास खांसी और बमनहोय मुखमें से लार पड़े ये लक्षण जिसमें होयँ उसके शीतांग सन्निपात जानिये यह भी महाअसाध्यहै यह सन्निपातवाला जीता नहीं तथापि यत्न लिखते हैं इस सन्निपातवालेको बिच्छू से कटावे और सिंगीमुहरा तेल में मिलाय अच्छेप्रकार मर्दन करै और सिंगीमुहरा लहसुन राई इनको गोमूत्रसे पीस रोटीकर रोगीके क्षौरकराय उसके माथेपरधरै जबतक शरीर गरम न होय तब तक रोटी माथेपर रक्खे जो ताप न आवे तौ वहरोगी मरजाय अब उसका उबटनालिखते हैं पारा ५ टंक सिंगीमुहरा ५ टंक कालीमिरच ५० टंक धतूरेके फलकीराख ४० टंक इनको महीन पीस शरीर में मर्दनकरै तौ शीतांग दूरहोय ५॥

अथ तंद्रिकसन्निपातका लक्षण॥

तन्द्रा होय ज्वरकाबेग और तृषा अधिक होय जीभकाली और खरखरीहोय श्वास अतीसार दाह कान में पीड़ा येलक्षण जिसके होयँ उसके तन्द्रिक सन्निपात जानिये ६॥

अथ तंद्रिकका यत्न॥

भारंगी। गुरच। नागरमोथा। कटैया। हड़कीछाल। पुहकर मूल इनको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा १५ दिनतक दे तौ तन्द्रिक सन्निपात दूरहोय ६॥

अथ कंठकुब्ज सन्निपातका लक्षण॥

माथा बहुत दूखे दाह और डाढ़में पीड़ाहोय शरीर बहुत

गरम रहै मूर्च्छा होय गला रुके और पकजाय बात से शरीर में पीड़ा होय और बकै ये लक्षण जिसके होयँ उसके कण्ठकुब्ज सन्निपात जानिये यह कष्टसाध्य है ७॥

अथ कंठकुब्जका यत्न॥

काकड़ासिंगी। चित्रक। हड़कीछाल। अडूसा। कचूर। चिरायता। भारंगी। दारुहल्दी। कटैया। पुहकरमूल। नागरमोथा। कुड़ाकी छाल। इन्द्रयव। कुटकी। कालीमिरच इनसबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दोनों समय ८ दिनतक दे तौ कण्ठकुब्ज सन्निपात जाय ७॥

अथ कर्णक सन्निपात का लक्षण॥

कंठसें पीड़ा और शरीर खेदयुक्त और अतिगरमरहै खांसी श्वास और कर्णमूलमें सूजन और बहुत पीड़ा ये लक्षण जिस किसीमें होयँ उसके कर्णक सन्निपात जानिये ८॥

अथ कर्णक सन्निपात का यत्न॥

रास्ना। असगन्ध। नागरमोथा। दोनों कटैया। भारंगी। काकड़ासिंगी। हड़की छाल। बच। पुहकरमूल। कुटकी इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दोनों समय २० दिन तक दे तौ कर्णक सन्निपात जाय ८॥

अथवा दूसरा यत्न॥

हल्दी। हिंगणबेटकी जड़। कूट। सहजनेकी जड़ सेंधानोन। दारुहल्दी। देवदारु। इन्द्रायणकीजड़ इन औषधियोंको बराबरले जवकुटकर आकके दूधमें महीन खरलकरै और कर्णमूल में ठंढाही लेपकरै तौ कर्णमूल बैठजाय और कर्णमूलका रोग दूरहोय १० अथवा कर्णमूलके उठतेही जोंकलगावै और कर्णमूलके माफिक रुधिरकढ़ावै तौ कर्णमूल निश्चय अच्छाहोय ८॥

अथ भग्ननेत्र सन्निपातका लक्षण॥

जिसरोगीका स्मरण जातारहै ज्वरका वेग होय बांकै और

चंचल नेत्र होजायँ भ्रम और कम्पहोय बकनेलगै ये लक्षण जिसमें होयँ उसके भग्ननेत्र सन्निपात जानिये यहभी लक्षण असाध्य है ९ ॥

अथ भग्ननेत्र सन्निपातका यत्न ॥

दारुहल्दी। परवरकेपत्ते। नागरमोथा। कटैया। कुटकी। हल्दी नींबकी छाल। त्रिफला इन सबको बराबरले ३ टङ्कका काढ़ा दोनों समय १५ दिनतक दे तौ भग्ननेत्र सन्निपात दूरहोय ९ ॥

अथ रक्तष्ठीवी सन्निपातका लक्षण ॥

लोहूथूकै तृषा अधिकहो मोह श्वास उदर शूल भ्रम वमन अफरा येलक्षण जिसमेंहोयँ उसके रक्तष्ठीवी सन्निपात जानिये यह महाअसाध्यहै १० ॥

अथ रक्तष्ठीवी का यत्न ॥

नागरमोथा। पद्माक। पित्तपापड़ा। रक्तचन्दन। महुआ। नेत्रबाला। शतावरि। सफेदचन्दन। बकाइनकी छाल इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टङ्कका काढ़ा १५ दिनतक दे तौ रक्तष्ठीवी सन्निपातजाय १२ अथवा दूबकारस और अनार के फूलोंके रसकी नासदे तौ रक्तष्ठीवीसन्निपात दूरहोय १० ॥

अथ प्रलापसन्निपात का लक्षण ॥

शरीरकांपै और बहुतगरमरहै और बकै दाह होय ज्वरका बेग अधिकहो संज्ञाजातीरहै सब अंग बिकलहोजाय येलक्षण प्रलाप सन्निपात के जानिये ११ ॥

अथ प्रलाप का यत्न ॥

नागरमोथा। नेत्रबाला। सरवन। पिथवन। दोनों कटैया। बेलगिरी। अरलू। खम्हारि। पाढ़। सोंठ। पित्तपापड़ा। सफेद चन्दन। अडूसा इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टङ्क का काढ़ादोनोंसमय १० दिनतकदे तौ प्रलापसन्निपातदूरहोय ११ ॥

अथ जिह्वकसन्निपात का लक्षण ॥

श्वास कास और तापहोय जीभ लठराजाय और कांटेभी

पडजायँ गूँगा और बहराहोजाय बलजातारहै येलक्षण जिह्वक सन्निपातके जानिये यहभी कष्टसाध्यहै १२ ॥

अथ जिह्वककायत्न ॥

खुरासानीबच।कटैया। जवासा। रास्ना। गुरच। नागरमोथा। सोंठ।कुटकी। काकड़ासिंगी।पुहकरमूल। ब्राह्मी। भारंगी। नींब की छाल। अडूसा। कचूर ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिनतकदे तौ जिह्वक सन्निपात दूरहोय १२॥

अथ अभिन्यास सन्निपात का लक्षण ॥

नींद आवै नहीं श्वास बहुतशीघ्रचलै शरीरकांपै सबचेष्टा जातीरहै घोंघोंबोलै काष्ठवत् जड़होजाय ये लक्षण अभिन्यास सन्निपातके हैं सो महा असाध्य और मृत्युरूप है १३ ॥

अथ अभिन्यास सन्निपात का यत्न ॥

भारंगी। रास्ना। परवरकेपत्ते। देवदारु। हल्दी। सोंठ। मिरच। पीपल। अडूसा। इन्द्रायणकी जड़। चिरायता। नींब की छाल। नेत्रबाला। कुटकी। वच। पाढ़। सोनापाठ। दारुहल्दी। कटैया। गुरच। निसोत। झाऊकीजड़। पुहकरमूल। सपेदकटैया। नागरमोथा। जवासा। इन्द्रयव। त्रिफला। कचूर इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा १७दिन तक दे तो अभिन्यास सन्निपात दूरहोय १३॥

अथ सन्निपात दूरकरनेका अंजन ॥

लहसुन। पीपल। मिरच। बच। अरलूकेबीज। सेंधानोन इन सबको बराबरलेके गोमूत्रमें महीनपीसकर नेत्रोंमें अंजन करै तो सब सन्निपात दूरहोयँ १४॥

अथ सन्निपातकी नास ॥

कालीमिरच। महुआ। सेंधानोन। चित्रक। कायफल। पीपल इन सबको बराबरले महीनपीस गरम पानीमें नास दे तौ सन्निपात दूरहोय १५॥

अथ आठोंज्वरके दूरकरनेका चिन्तामणि रस ॥

शिंगरफका निकालाहुआ पारा। शोधागंधक। अभ्रक। तामेश्वर। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। हडकीछाल। बहेडेकी छाल। आमला। शोधाजमालगोटा इन सबको बराबरले दद्घलके पत्तोंके रसमें खरलकर दोपहरपीछे धूपमें सुखाय १ रत्तीकेप्रमाण गोलीबांधे १ गोलीदे तो आठोंज्वर दूरहोयँ और उदरशूल। अजीर्ण। आमबात येभी सब दूरहोयँ यहवैद्य रहस्य और वैद्यविनोदमें लिखा है १६॥

अथ मृत संजीवनी गुटिका ॥

शिंगरफका निकालाहुआ पारा २ टंक शोधीगन्धक३ टंक तामेश्वर ४ टंक शोधासुहागा २ टंक शोधासिंगीमुहरा १ टंक कालीमिरच ४ टंक पहलेपारे और गन्धककी कजलीकरै पीछे यह सब औषध मिलाय सबको ब्राह्मीके रसमें १ पुटदे पीछे २ पुट अदरककेरसकीदे फिर सोंठ। मिरच। पीपल इनतीनों को औटाय १ पुटदे फिर चित्रककी १ पुटदे तदनन्तर इसकी १ रत्तीके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली अदरकके रसमेंदे तो सन्निपात और मूर्च्छाको दूरकरै यह रसमृतकपुरुषको जिवावै है और आमबात। बायुशूल। स्याहदाग। बिषमज्वर। मन्दाग्नि। सन्निपात इन सबकोभी यह मृतसंजीवनी गुटिका दूरकरै है यह रसमंजरी में लिखा है १७॥

अथ कालारिरस।

शोधापारा १२ माशे शोधीगन्धक २० माशे सिंगीमुहरा १२ माशे। कालीमिरच २० माशे पीपल ४० माशे लवंग १६ माशे। धतूरेके बीज १३ माशे शोधासुहागा २० माशे। जायफल २० माशे अकरकरा १२ माशे पहलेपारे और गन्धक की कजली करै पीछे उसकजलीमें ये सब औषध महीनपीस कर मिलावै तदनन्तर ३ दिन अदरक के रसमें खरलकरै

फिर३ दिन नींबूके रसमें खरलकरै फिर केले के रसमें खरलकर सबके पीछे १ रत्तीके प्रमाण गोली बांधे एक गोली खाय तौ वायु और सन्निपात रोग दूरहोय यह रसयोग चिन्तामणि में लिखा है १८ ॥

अथ त्रिपुर भैरवरस ॥

सोंठ ४ पैसेभर कालीमिरच ४ पैसेभर शोधा तेलिया और सुहागा ३ पैसे भर शोधा सिंगीमुहरा १ पैसे भर इन सबको महीन पीस ३ दिन नींबूके रसमें और ५ दिन अदरकके रसमें फिर ३ दिन पानों के रसमें खरल करै तदनन्तर १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एकगोली अदरकके रसमेंदे तौ सन्निपात दूर होय १९ ॥

अथ संज्ञाकरण रस ॥

शोधा सिंगीमुहरा।सेंधानोन। कालीमिरच। रुद्राक्ष। कटेली। कायफल।महुआ।समुद्रफेन ये सब बराबरले महीनपीस आक के खारकी ३ पुटदे पीछे १ या २ या ३ रत्ती कान या नाकमें रखकर फूंकदे तौ संज्ञा होआवै और सन्निपात दूरहोय २० ॥

अथ ब्रह्मास्त्र रस॥

पारेकीभस्म ३ टंक शोधीगन्धक ३ टंक इन दोनोंके समान शोधा सिंगीमुहरा और इनके बराबर कालीमिरच ले सबको एकरसकर करिहारीके बकले और ज्वालामुखीजडी के रस में और अदरकके रसमें २१ पुटदेकै यहरस तैयारकरै फिर१रत्ती के प्रमाण दे तौ सन्निपात दूरहोय २१ इतिसन्निपातकायत्न ॥

अथ आगन्तुकज्वरके नाम उत्पत्ति लक्षण ॥

शस्त्रादिकके आघातसे और भूतादिकके लगनेसे और विष आदिकेखानेसे और आधि अर्थात् मानसीव्यथासे और राजा गुरु मातापिता आदिके तिरस्कारसे औरकाम,क्रोध,शोक, भय, स्नेहद्वेषजइनसबसेउत्पन्नजोज्वरउसकोआगन्तुकज्वरकहेहैं १

अथ शस्त्रादिकके आघातसे उत्पन्नहुये ज्वर का लक्षण ॥

शस्त्रादिकके लगनेसे उत्पन्नहुई जो पीड़ा तिसमें हुआ जो

वायुका कोप वह रुधिर को बिगाड़ेहै फिर उसके पीड़ा और सूजन और शरीरका वर्ण औरका और होजाय है तदनन्तर वह वायु शरीरमें ज्वरकरै है २ ॥

अथ शस्त्रादिके घाघातसे उत्पन्न हुयेज्वरका यत्न ॥

इस ज्वरवालेको लंघन न करावे कषैली और गरम बस्तु खानेको न दे मधुर और सचिक्कण बस्तु या शोरआ खिलावे और सेंक और पट्टीबन्धन आदि यथायोग्य यत्न करै २ ॥

अथ भूतादिकके लगनेसे उत्पन्न ज्वरका लक्षण ॥

शरीरमें उद्वेगहोय कभीरोवे कभीहँसे कभीकांपे चित्तस्थिर न रहे उसके भूतादिका प्रवेश जानिये ३ ॥

अथ भूतादिकका यत्न ॥

जिसके भूतलगाहो उसको बन्धन ताड़नादिक करके मन्त्र यन्त्र तन्त्रकरै और नासदे ३ ॥

अथ भूतादिक दूरहोनेके थोड़े २ सबअनुभूत उपाय लिखतेहैं ॥

प्रथमभूतादिके झाड़नेका मंत्र ॥

ॐनमोॐह्रांह्रींह्रूं नमोभूतनायकसमस्तभुवनभूतानिसाधय साधयहुंफट्स्वाहायहमंत्रपढ़कैमोरपंखसे झाड़देतौभूतादिकभा गजायँ॥ अथ दूसरा मंत्र ॥ ॐनमोनारसिंहायहिरण्यकशिपुबक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकायभूतप्रेत पिशाचशाकिनी कीलो न्मूलनायस्तंभोद्भवसमस्तदोषान्हन २ सर २ चल २ कम्प २ मथ २ हुंफट् ठह २ महारुद्रो जयपतिस्वाहा इसनृसिंहरक्षामंत्र को पढ़कर मोरपंखसे झाड़दे तौ भूतादिक नहींरहैं ४ ॥

अथ भूतादिकके बकुरानेका मन्त्र ॥

ॐनमोभगवते भूतेश्वरायकिल २ तरवायरौद्रदंष्ट्राकराल बक्त्रायत्रिनयनभूषितायधगधगितपिशंगललाटनेत्राय तीव्रको पानलायामिततेजसेपाशशूलषट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गरभू पदण्डत्रास मुद्रा व्यग्रदशदोर्दण्डमण्डितायकपिलजटाजूटकूटा

ईचन्द्रधारिणे भस्मराग रंजितविग्रहाय उग्रफणिपतिघटाटोप मण्डितकंठदेशायजय २ भूतडामरस आत्मरूपं दर्शय२नृत्य२ सर २ चल २ पाशेनबन्ध २ हुंकारेण त्रासय २ वज्रदंडेन हन २ निशितखड्गेनछिन्धि २ शूलाग्रेणभिन्धि २ मुद्गरेणचूर्णय २ सर्व्वग्रहाणांआवेशाय २ इसमंत्रसे गौके घृतमें गुग्गुल मिलाय बहुतसी धूपदे और इसीमन्त्रसे उर्द्दोंको अभिमंत्रित करके उसके मारे तो वह मनुष्य निश्चय बकुरकर जैसा होय वैसाकहै पीछे उसीमन्त्र से लिखकर नींबकेपत्ते और सर्पकी कांचली मिलाकर धूपदे ५ ॥

अथ भूतादिकके उतारनेकोनास और अंजन ॥

हींगको लहसनके पानीमें पीसकर नासदे तथा अंजनकरै तौ भूतादिक दूरहोयँ ६ यह तन्त्रोपचार में लिखा है ॥

अथ भूतादिक उतारनेका तंत्र ॥

तुलसीपत्र ८ कालीमिरच ८ सहदेईकीजड रविवारको पवित्र होकरले इन तीनोंको मिलाके कण्ठमें बांधे तौ भूतादिक दूरहोयँ ७ ॥

अथ क्रोधज्वरका लक्षण ॥

शरीरकांपै मस्तक पीडाकरै और पित्तज्वरका लक्षण मिले उसको क्रोधज्वर जानिये ८ ॥

अथ क्रोधज्वर का यत्न ॥

अच्छे शीतल वचनोंसे चित्तविनोदक लोभ दिखावै तौ यह ज्वर दूरहो ८ ॥

अथ मानसज्वरकी उत्पत्ति और लक्षण ॥

इष्टमित्र पुत्र स्त्री धनआदि जिसका नष्टहोगयाहो अथवा राजा और बडोंका तिरस्कार करै उसको अतीसार और सर्व वस्तुमें ग्लानि चित्तभ्रम श्वास और अश्रुपात आदिकहों ये सब लक्षण मानसज्वरके जानिये ६ ॥

अथ मानसज्वरका यत्न ॥

इस ज्वरवालेको ज्ञान और धैर्यता रखनी उचितहै मिष्ठान्न

और नानाप्रकारके रुचिकारी भोजन और व्यंजन खाय तो यह ज्वर दूरहोय ९॥

अथ कामज्वरका लक्षण॥

जिसके कामज्वर प्रकटहोय उसको भोजनादिकमें अरुचि और मनमें दाहहोय और लज्जा निद्रा बुद्धि धैर्य्य ये सब जातेरहैं हृदयदूखे संभोगही में ध्यानरहे श्वास होआवे यह लक्षण जिसके होयँ उसको कामज्वर जानिये १० ॥

अथ कामज्वरका यत्न॥

अत्यन्त सुन्दरी सर्वगुण सम्पन्न नवयौवना १६ वर्षकी स्त्रीसे अच्छेप्रकार संभोग करै तौ कामज्वर दूरहोय १० ॥

अथ स्त्रीकेकामज्वरका लक्षण॥

मूर्च्छा और सर्वशरीरमें मरोड़ाहोय प्यासलगे नेत्रचपल होजायँ कुचमर्दन करानेकी मनमेंइच्छाहोय पसीना औरहृदय में दाह और भोजनमें अरुचिहोय लज्जा निद्रा धैर्यता जाती रहै जिस स्त्रीके यह लक्षणहों उसके कामज्वर जानिये ११ ॥

अथ स्त्रीकेकामज्वरका यत्न॥

जिस स्त्रीको कामज्वरहो वह अच्छे प्रकारसे सर्व अलंकार युक्तहोकर अपनेपति से रमणकरै तौ कामज्वर दूरहोय ११ ॥

अथ भयज्वरका लक्षण॥

भयज्वर वालेके प्रलाप अतीसार और भोजनमें अरुचि होय और चित्त स्थिर न रहै ये लक्षण जिस में होयँ उसको भयज्वर जानिये १२ ॥

अथ भयज्वरका यत्न॥

आनन्दकी बातें कहकर उसके भय को दूरकरै तो भय-ज्वर जाय १३ ॥

अथ विषमज्वरका लक्षण॥

जिस मनुष्यके ज्वरआने के पीछे किसीप्रकारके कुपथ्य से रस धातुको छोड़ रुधिरआदि धातुको प्राप्तहुआ जो पित्तकफ

वह विषमज्वरको करैहै अथवा ज्वरआये विनाभी जिसपुरुष के ज्वरहोकर शीत और दाह होआवै और तृषा अथवा दाह के थोड़े बहुतका नियम और समयकाभी नियम न रहै किसी समय आजाय उसके विषमज्वर कहिये वह विषमज्वर चारप्रकारकाहै एक सन्तत जो प्रतिदिन आवै १ दूसरा एकान्तरा जो एकदिन वीचदैके आवै २ तीसरा तिजारी जो तीसरेदिन आवै ३ चौथा चातुर्थिक जो चौथेदिन आवै ४ विषमज्वरके भेद तौ बहुतहैं परन्तु चारमुख्य हैं वेही लिखे हैं ॥

अथविषमज्वरका यत्न ॥

विषमज्वरवालेको मूँग अथवा मोठकी दालका पानी दीजै हलकारक्खे औटाजलपिलावै और परवरकेपत्ते। हड़कीछाल। नींबकी छाल । इन्द्रयव । गुरच । जवासा इन औषधियों को वरावरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७ दिनतकदे तौ सन्तत ज्वरजाय १५ ॥ अथवा शीतज्वरवालेको वृहत्क्षुद्रादिक्काथदे तौ शीतज्वरजाय सो लिखते हैं—कटैया । धनियां । सोंठि। गुरच। नागरमोथा। पद्माक। रक्तचन्दन।चिरायता। परवरकेपत्र। अडूसा। पुहकरमूल । कुटकी । इन्द्रयव । नींबकीछाल । भारंगी। पित्तपापड़ा इन सबको वरावरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दोनों समय १० दिनतकदे तौ शीतज्वर दूरहोय १६ ॥ अथवा षोड़शांग चूर्णसेभी विषमज्वर दूरहोता है सो लिखते हैं—चिरायता । नींबकी छाल । कुटकी । गुरच । हड़की छाल । नागरमोथा । धनियां । अडूसा । सपेदकटैया । भटकटैया । काकड़ासिंगी। सोंठि । पित्तपापड़ा । शीतलमिरचकेफूल । परवर केपत्ते। पीपल। कचूर इनसबको बराबरलेमहीनपीस कपड़छान कर १ टंकभर शीतलजलसे ८ दिनतकखाय तौ विषमज्वरजाय १७॥ अथवा चिरायता । कुटकी । निसोत । नागरमोथा। पीपल । बायविड़ंग । सोंठि । नींबकी छाल । हड़की छाल इन

सबको बराबरले महीन पीस चूर्णकरिकै १ टङ्क गर्म जलसे ७ दिनतक दे तौ बिषमज्वर दूरहोय और भूखलगे १८॥ अथवा शीतदाह एकान्तरा तिजारी आदिको ज्वरांकुश रस दूरकरै है सो लिखतेहैं सुम्बुलको मारूबैंगन के पेटमें १४ बारपकाकर भुरत्ता करै पीछे उसके बराबर पीपल और शिंगरफ़ले इन तीनोंको राईके बराबर गोलीबांध १ गोली बताशेमें ३ या ५ दिनतक दे तौ शीतज्वर एकान्तरा तिजारी इनसबको दूरकरै ॥

अथ जीर्णज्वर का लक्षण ॥

२१ दिनके पीछे जिसके शरीरमें सूक्ष्महोकर ज्वररहै और भूख जातीरहै शरीर दुर्बल होजाय पेटमें फिया होय उसके जीर्णज्वर कहिये ॥

अथ जीर्णज्वर का यत्न ॥

प्रथम तो बसन्तमालनी रस जीर्ण ज्वरादिकको दूरकरै है सो लिखते हैं सुवर्णके वरक़ १ माशे। बूकेमोती २ भाग। शिंगरफ़ ३ भाग कालीमिरच ४ भाग गोमूत्रमें शोधी खपरिया ८ भाग इन सबको खरलमें महीन पीस पीछे से इसके माफ़िक गोके मक्खनमें खरलकरै फिर नींबूके रसमें जबतकचिकनाई न मिटै तबतक खरलकरै इसप्रकार इसको तैयारकरिकै १रत्ती या२रत्ती पीपल और शहतकेसाथदे तौ जीर्णज्वरजाय धातुका बिकार और गरमीका रोग संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र श्वासकास प्रदर अनोपानके संयोगसे इन सब रोगोंको दूरकरै२०॥ अथवा कटैली। गिलोय। सोंठि इन तीनोंका काढ़ा १० दिन तक दे तौ जीर्णज्वर जाय २१॥ अथवा कचूर। पित्तपापड़ा। सोंठि। नागरमोथा। कुटकी। कटैया। चिरायता इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दोनों समय ११ दिन तक दे तौ जीर्णज्वर बिषमज्वर जाय २२॥ यह वैद्यबिनोद में लिखा है ॥

अथ लाक्षादि तैल॥

पीपलकी लाख पावसेर। मीठापानी ६सेर। पठानीलोध १०

टंक इनको मधुरी आंचसे औटाय इनका चतुर्थांश करिके निकाले पीछेसे इस रसमें गौका मट्ठा १ सेर। मीठातेल १ सेर। सौंफ २ टंक। असगन्ध २ टंक। हलदी २ टंक। देवदारु २ टंक। सेमर २ टंक। पित्तपापड़ा २ टंक। कुटकी २ टंक। मुरहरी २ टंक। मुलहठी २ टंक। नागरमोथा २ टंक। रक्तचन्दन २ टंक। रास्ना २ टंक इन सब औषधियोंको महीन पीस इस तेलमें डालकर पीछेसे सबको एकरसकर मधुरी आंचसे औटावे जब रस जल जाय और लस आजाय तब उतारले फिर इस तेलका मर्दन करे तो जीर्णज्वर विषमज्वर दोनों दूरहोयँ और शरीरमें बल होय २३॥ अथवा ३ पीपलसे एक२ प्रतिदिन २१ तक बढ़ावे और एकहीएक घटावे जब फिर तीनपर आजाय इसको वर्द्धमान पिप्पली कहते हैं इससे भी जीर्णज्वर विषमज्वर रोग दूर होते हैं और पथ्यसे रहे २४॥ अथवा बकरीके दूधके झागसे भी जीर्ण ज्वर जाता है २५॥ अथवा नींबकेपत्र। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल। अजमोद। सैंधवनोन। सोंचरनोन। बिड़नोन। जवाखार। चित्रक। चिरायता। पित्तपापड़ा इन सब औषधियोंको बराबर ले महीनपीस कपड़छान कर १ टंक प्रातःकाल जलसे ले तो विषमज्वर जीर्णज्वर दूरहोय २६॥ यह निम्बादिचूर्ण है॥ अथवा॥ त्रिफला। दारुहल्दी। दोनोंकटैया। कचूर। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। पिपलामूल। मुरहरी। मुरच। धनियां। अडूसा। कुटकी। सपेदकटैया। पित्तपापड़ा। नागरमोथा। नेत्रबाला। नींबकीछाल। पुहकरमूल। मुलहठी। अजवाइन। इन्द्रयव। भारंगी। सहजनेके बीज। फिटकरी। बच। तज। कमलगट्टा। पद्माक। चन्दन। अतीस। खरेटी। वायबिड़ंग। चित्रक। देवदारु। परवरकेपत्ते। चव्य। लवँग। वंशलोचन। पत्रज इनसब औषधियों का आधा चिरायता लेके महीनपीस कपड़छानकर ६ माशे शीतल जल

से लेय तो बिषमज्वर जीर्णज्वर और सर्व्वज्वरमात्रको दूरकरै है यह सुदर्शन चूर्ण है २७॥ अथवा किसीप्रकार बिषमज्वर जीर्णज्वर जातादीखै नहीं तो रोगके माफिक जुलाब और बमन करावै तब बिषमज्वर और जीर्णज्वर दूरहोय २८॥

अथ अजीर्णज्वरका लक्षण॥

बारम्बार ढीलादस्त और खट्टीडकार आवै बमनकीइच्छा रहै। उदरमें पीड़ा। और अफरा और गुड़गुड़ाहट शब्द होय तौ अजीर्णज्वर जानिये॥

अथ अजीर्णज्वरका यत्न॥

अजमोद। हड़कीछाल। सोंचरनोन। कचूर इन सब को बराबर ले महीन चूर्णकर १ टंक गर्मपानीके साथले तौ अजीर्णज्वर जाय २९॥

अथ दृष्टिज्वरका लक्षण॥

जमुहाई बहुतआवै। उदरमें पीड़ा। और हाथमें हड़फूटन हो शरीरसे शक्ति जातीरहै तो दृष्टिज्वर जानिये ३०॥

अथ दृष्टि ज्वर का यत्न॥

भुनीहुईहींग। कालीमिरच। पीपल। सोंठि इनको महीन पीस गर्मपानीके साथ १ टंक ले तौ दृष्टिज्वर दूरहोय ३१॥ अथवा जहरमुहरा आदिका जलपिलावै तौ दृष्टिज्वर दूरहोय ३२॥

अथ बिगड़े रुधिरके ज्वरका लक्षण॥

अंगमें हड़फूटनहो। मुखसे श्वास आवै। शरीर शिथिल और नेत्रलाल होयँ। तृषा। मूर्च्छा। अफरा ये लक्षण जिस में होयँ उसके रुधिर का ज्वर जानिये ३३॥

अथ रुधिरके ज्वरका यत्न॥

किसमिस। अडूसा। कटैया। हलदी। गुरच। हड़कीछाल इनसबको बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा करै जब शी-

तेल होजाय तब धेलेभर शहत मिलाय ७ दिन तक पिये तौ बिगड़े रुधिरका ज्वर जाय ३४॥

अथ मल ज्वरका लक्षण॥

मुखशोष। दाह। भ्रम। मूर्च्छा। मस्तक पीड़ा। हिचकी। वमन। पेटमें शूल ये लक्षण जिसमें होयँ उसके मलज्वर जानिये ३५॥

अथ मल ज्वरकी औषधि॥

कुटकी। पीपलामूल। नागरमोथा। हड़कीछाल। अमिलतासकी गिरी ये सब औषधि बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दे तौ मलज्वरजाय यह आरारबधपंचकहै ३६॥

अथ गर्भिणी के ज्वरका यत्न॥

रक्तचन्दन। किसमिस। गौरीसर। खस। मुलहठी। महुआ। धनियां। नेत्रबाला। मिश्री इन सबको बराबरले काढ़ाकर ७ दिन तक पिये तौ गर्भिणीका ज्वर जाय ३७॥

अथ प्रसूतिकाके ज्वरका लक्षण॥

अंगमें हड़फूटन शरीर भारी और गर्मरहै कम्प तृषा सूजन अतीसार ये लक्षण जिस स्त्री में होयँ उसके प्रसूतिका ज्वर कहिये ३८॥ अथ प्रसूतिका ज्वरकी औषधि॥

अजमोद। सपेदजीरा। बंशलोचन। खैरसार। विजयसार। सौंफ। धनियां। मोचरस इनसबको बराबरले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिनतकदे तौ प्रसूतिका ज्वरदूरहोय ३८॥ अथवा दशमूलका काढ़ादे तौ प्रसूतिका ज्वरजाय सो लिखते हैं सरवन। पिथवन। दोनों कटैया। गोखुरू। वेलकीगिरी। अरणी। अरलू। खम्भारि। पाढ़ा। पीपलयेसब बराबरले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिनतकदे तौ प्रसूतिका रोगजाय ३९॥

अथ बालकके ज्वरकी उत्पत्ति और लक्षण॥

बालककी माता अथवा धाय कुपथ्यकरे और गरिष्ठ वस्तु

खाय तौ बालकके नानाप्रकारके रोगहोयँ और बालकके रोने से ज्वर प्रत्यक्ष विदित होताहै ॥

अथ बालकके ज्वरका यत्न॥

बालककी माता अथवा धायको पथ्यसे रक्खे और हलका भोजनदे और जो माताके दूध नहोय तौ बकरीका दूधदे अथवा नागरमोथा। हड़कीछाल। परवरकेपत्ते। मुलहठी इनसबकोबराबरले १माशेभरकाकाढ़ा७ दिनतकदे तौ बालककाज्वरजाय १॥ अथवा खील। मुलहठी। बारछड़। महुआ इनको महीन चूर्ण कर १ माशे शहतके साथदे तौ बालकका ज्वरजाय २॥ अथवा बालकके अतीसारलियेज्वरहोयतोअतीस।बेलगिरी। इन्द्रयव। धायकेफूल। पठानीलोध। धनियां। नेत्रबाला इनका २ माशे भरका काथकर दे तौ ज्वरातीसार दूरहोय ३॥ अथवा बालक कीनाभी पकगईहो तौ घृतके सेकनेसे अच्छीहोय४ अथवापेटमें कीड़ेपड़गयेहों उससेउत्पन्नहुआजोज्वर उसकालक्षणज्वरहोय। शरीरकावर्ण और का और होजाय। पेटमें शूल और हृदयमें पीड़ा। बमन। भ्रम। भोजन में अरुचि। अतीसार सब येहों तो उस के उदरके कीडोंसे हुआ ज्वर जानिये॥

अथ यत्न॥

पलाश। पित्तपापड़ा। नींब कीछाल। सहजनेकीजड़। नागरमोथा। देवदारु। बायबिडंग इन को बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ पेट के कीड़े दूर होयँ १॥

अथ कालज्वरका लक्षण॥

ज्वरका अधिक बेग। और ऊर्ध्वश्वास होय। शरीरकी कान्ति जातीरहै। पसीना आवै। शरीर शिथिल होय। नाड़ीहाथ न लगै। सर्व इन्द्रियों के धर्मजाते रहैं तौ कालज्वर जानिये॥

अथ कालज्वरका यत्न॥

गौ पृथ्वी आदिक श्रद्धा पूर्वक दान और विष्णु का स्म-

रण और सन्निपात का यत्न जो पीछे लिखा है वह करै ।

अथ ज्वरके १० उपद्रव ॥

तृषा १ खांसी २ श्वास ३ हिचकी ४ वमन ५ अतीसार ६ अरुचि ७ बद्धकोष्ठ ८ अफरा ९ मूर्च्छा १० येज्वरके उपद्रवहैं ॥

अथ उपद्रवोंके लक्षण ॥

प्रथम ज्वरहोय फिर अन्यरोग होयँ और वह ज्वरकायत्न करने नहींदे उसीको ज्वरका उपद्रवकहिये ॥ क्षुधातृषातौज्वर की स्त्री हैं । और कास श्वास बेटे । हिचकी और वमन बेटी । अतीसार ज्वरकाभाई । अरुचिबहिन । बद्धकोष्ठभानजा । अफराश्वशुर । मूर्च्छाबांदी इनमें जोबलवान्होय उसकायत्नकरै ॥

अथ ज्वर अतीसार इकट्ठे होयें उनका यत्न ॥

सोंठि । अतीस । नागरमोथा । चिरायता । गुरच । कुड़ाकीछाल इनकोबराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७ दिनतक दे तौ यह रोग दूर होय १ अथवा पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठि । बेलकी गिरी । नागरमोथा । चिरायता । कुड़ाकी छाल । इन्द्रयव इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ ज्वरातीसार । मुखशोष । हिचकी । तृषा । वमन । श्वास । कास ये सब दूर होयँ २ ॥

ज्वर में तृषा अधिक लगे उसका यत्न ॥

धनियां । नागरमोथा । पित्तपापड़ा इनको बराबरले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ३ दिन तक दे तौ तृषा । दाह । अतीसार येसब दूरहोयँ ३ ॥ अथवा बरगदकी कोंप । चावलकी खील । कमलगट्टा इन सबको बराबर ले महीन पीस शहत में गोली बांधि एक मुख में रक्खे तौ तृषा दूर होय ४ ॥

अथ ज्वरमें खांसी होजाय उसका यत्न ॥

पीपल । पीपलामल । सोंठि । भारंगी । खेरसार । कटैया ।

अडूसा। कुलींजन। बहेडा इनसब को बराबर लेय १ टंकका काढ़ा ७ दिनतक दे तौ खांसिजाय ५ ॥

अथ ज्वर में श्वासहोय उसका यत्न ॥

सोंठि। मिरच। पीपल। नागरमोथा। काकड़ासिंगी। भारंगी। पुहकरमूल इन सबको बराबरले १ टंकका काढ़ा ७ दिन दे तौ ज्वरका श्वास दूरहोय ६ ॥

अथ ज्वर में हिचकी आवै उसका यत्न ॥

जलमें सेंधवनोन महीनपीस नासदे तौ हिचकीदूरहोय ७॥ अथवा मोरकेपंखकी राख। जलीहुई पीपल शहतमें चटावै तौ हिचकी और बमन दूरहोय ८॥

अथ ज्वरमें बमनहोय उसका यत्न ॥

१ टंक गिलोयका काढ़ाशहतमिलायकै दे तौ ज्वरकाबमन दूरहोय ९ ॥ अथवा दोरत्ती मक्खीकी बीट शहतमें चटावै तौ बमन दूरहोय १०॥ अथवा चांवल की खील पीपल और शहत में चटावै तौ भी बमन दूर होय ११ ॥

अथ ज्वर मे मूर्च्छा होय उसका यत्न ॥

अमिलतासकीगिरी। किसमिस। पित्तपापड़ा। हड़कीछाल इनको बराबरले २ टंकका काढ़ा दे तो मूर्च्छा दूरहोय १२॥

अथ ज्वरमें बद्धकोष्ठ या अफराहोय उसका यत्न ॥

साबुनकी वत्ती बनाके गुदामें रक्खै तौ बद्धकोष्ठ और अफरा यह दोनों दूर होयँ १३ ॥

अथ ज्वरमें मुखशोष और जीभमें विरसता होय उसका यत्न ॥

मिश्री और अनारके दानों के कुल्ले करै अथवा किसमिस और अनार के दानोंका कुल्ला करै तौ मुखशोष और जीभ की विरसता दूर होय १४ ॥

अथ ज्वरमें निद्राजातीरहै उसका यत्न ॥

आलूबुखारा १ सिकीभंग १ रत्तीभर शहतमें चटावै तौ

निद्राआवै और अतीसार। संग्रहणी दूरहोय भूखलगै १५॥ अथवा १ टंक पीपलामूल। गुड़मेंखाय तौ अवश्य निद्रा आवै १६॥ अथवा अरण्ड। और अलसी के तेलको कासीकीथाली में घिस अंजनकरै तौ अवश्य निद्रा आवै १७॥

अथ ज्वर उतरगयाहोय उसका लक्षण॥

सब शरीर हलका मस्तकमें खुजली ओठमें पपड़ीपडै सब इन्द्रिय अपने २ विषयोंको ग्रहण करनेलगैं शरीरकी सम्पूर्ण व्यथा जातीरहै सब शरीरमें पसीनाआवै क्षुधालगै छींकआवैं मलकी प्रवृत्तिहोय ये लक्षण जबहोयँ तबनिश्चय ज्वरगया जानिये बुद्धिमान् पुरुष ज्वर आनेकेपीछे भी जबतक शरीरमें बल न आवै तबतक पथ्यसे रहै मैथुन व्यायाम बोझ उठाना अतिभोजन इत्यादि न करै—इति आठों ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण॥

इतिश्रीमन्महाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहविरचिते अमृतसागरनामग्रन्थेसर्वज्वरोत्पत्तिलक्षणनिरूपणोनाम द्वितीयस्तरंगः २॥

अथ अतीसार रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

मैदा आदि गरिष्ट वस्तु और शीतल पतली वस्तु और विरुद्ध वस्तु खाने और भोजनके ऊपर भोजन करने और विष खाने और मलकी बाधा रोकने और अधिक चिकनी और रूखी और गरम वस्तुके खाने आदिसे मनुष्योंको अतीसार रोग उत्पन्न होताहै॥

अथ अतीसार का स्वरूप॥

मनुष्यके शरीरमें इन कुपथ्यों से जल धातु बढ़े तो उदर की अग्निको शान्तकरै और वह जल पवनका प्रेरित विष्ठासे मिल गुदाके मार्गसे पतला होकर नीचे अधिक उतरे उसको अतीसार जानिये॥ वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शोक ५ आम ६ इन भेदोंसे यह अतीसार छःप्रकारका है॥

अथ अतीसार का पूर्व्व रूप॥

प्रथम हृदय नाभि गुदा उदर पेड़ इनमें पीड़ा और सब अंगमें हड़फूटनहोय और गुदाकी पवन रुकजाय बद्धकोष्ठ और अफरा होय अन्न पचेनहीं तो जानिये कि मनुष्यके अतीसारहोगा॥

अथ बात के अतीसार का लक्षण॥

कुछ एक ललाईलिये मलउतरे और मलमें झागमिलेहों और रूखा और थोड़ा बार २ आम सहितआवै और दिशा के समय पेडूमें पीड़ाहोय तो बातका अतीसार जानिये १॥

अथ बातके अतीसारका यत्न॥

खुरासानी। बच। अतीस। नागरमोथा। इन्द्रयव। सोंठि येसब बराबरले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो बातका अतीसार दूर होय १ अथवा इन्द्रयव। नागरमोथा। पठानीलोध। बेलकीगिरी। आमकी गुठली। धवईके फूल इन कोमहीन पीस चूर्ण कर २ टंक भैंसकी छांछमें ७ दिनदे तो बायु का अतीसारदूर होय २॥

अथ पित्तके अतीसार का लक्षण॥

मलपीला लाल हरा और दुर्गन्धयुक्त पतलाहोय और गुदापकजाय शरीरमें पसीनाआवै प्यासलगै दाह और मूर्च्छा होय ये लक्षण जिसमेंहोयँ उसके पित्तका अतीसारजानिये २॥

अथ पित्त के अतीसारका यत्न॥

बेलकीगिरी। इन्द्रयव। नागरमोथा। नेत्रबाला। अतीस इनको जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ८ दिनदे तो पित्तका अतीसार जाय १ अथवा रसौंत। अतीस। इन्द्रयव। धायकेफूल। सोंठि इन सबको बराबरले महीन चूर्णकर चावलके पानी से २टंक शहत मिलाइकै ७ दिनदे तो भयंकरभी पित्तका अतीसार जाय २ और पित्तातीसारका रक्तातीसारभी भेदहै॥ अत्यन्त गरमबस्तु खाने से पित्तबढ़कर रुधिर को बिगाड़े है॥

तब रुधिर से मिलाहुआ मल उतरता है उसको रक्तातीसार कहते हैं ॥

अथ रक्तातीसारका यत्न ॥

कुड़ाकीछाल। अनारका छिलका इन दोनों को २ टंकभर ले काढ़ाकर ५ टंक शहत मिलाय ७ दिन दे तौ रक्तातीसार जाय १ अथवा कुड़ाकीछाल। अतीस। नागरमोथा। नेत्रबाला। पठानीलोध। रक्तचन्दन। धवईके फूल। अनारका छिलका। पाढ़ इन सबको बराबरले जवकुटकर ३ टंकका काढ़ा कर उस में २ टंक शहतमिलाय ७ दिनदे तौ दाह और शूलसंयुक्त रक्तातीसार दूर होय २ अथवा सफेद चन्दन १ टंक महीनपीस कै २ टंक शहत और २ टंक मिश्री मिलाय ८ दिन चाटै तौ रक्तातीसार दूर होय ३ अथवा मीठे अनार का पुटपाक १ टंक शहत मिलाय कर चाटै तौ रक्तातीसारजाय ४ अथवा बकरी के दूधमें मक्खन मिश्री और शहत मिलायकैपियै तौ रक्ताती-सार जाय ५ ॥

अथ गुदापकगईहोय उसका यत्न ॥

परवरकेपत्ते। मुलहठी। महुआ इनकोपानीमें औटावै और ठंढाकर उसपानीसे गुदाधोवै तौ गुदाका पकनाजाय १ अथवा बकरीके दूधमें। मिश्री और शहत मिलवाइकैधोवे तौभीगुदा का पकनाजाय २ अथवा गेहूँके आटेमें घृत मिलाय पानी से उसन उससे सुहाता २ सेंकै तौ गुदाका पकना अच्छाहोय ३॥

अथ श्लेष्माके अतीसार का लक्षण ॥

जिसकामल चिकना और सफ़ेद गाढ़ा दुर्गन्धलिये शीतल थोड़ी पीडासहित उतरै और शरीर भारीरहै भोजनमें अरुचि होय येलक्षण जिसमें होयँ उसके श्लेष्मातीसार जानिये ३ ॥

अथ श्लेष्मातीसारका यत्न ॥

कफातीसारवाले को दो चार लंघन करावै अथवा मूँगका थोड़ासापथ्यदे पीछेचव्य। अतीस। कूट। कुटकी। बेलकीगिरी। सोंठि। कुड़ाकी छाल। तज इनको जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७

दिनदे तौ श्लेष्मातीसारजाय १ अथवा सिकीहुई हींग। काला नोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। अतीस इन सबको बराबरले चूर्णकर १ टंक ७ दिनदे तौ श्लेष्मातीसार जाय २॥

अथ सन्निपातातीसारका लक्षण॥

जिसका मलशूकरके मांसके सदृशहो और अनेक रूपका दीखै और तन्द्रा। तृषा। मुखशोष। भ्रम। मोह ये सबबातेंबालक वा वृद्ध वा स्त्रीके होय तौ असाध्य जानिये ४॥

अथ सन्निपातातीसार का यत्न॥

पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। खरेटी। बेलगिरी। गुरच। नागरमोथा। पाढ़। चिरायता। कुड़ाकी छाल। इन्द्रयव इनको जवकुटकर २टंकका काढ़ा १०दिनदेतौ सन्निपातका अतीसार जाय १ अथवा जंगीहड़। सोंठि। नागरमोथा इनसबको बराबर ले महीन पीस पुराने गुड़ में २ टंक ७ दिन खाय तब त्रिदोषका अतीसार दूर होय २ अथवा कुड़ा की छालका पुटपाक कर रस निकाल ५ टंक शहत मिलाके १० दिनतकदे तौ सन्निपात का अतीसार जाय ३॥

अथ शोक के अतीसार का लक्षण॥

पुत्र मित्र स्त्री धन आदिके नाशसे उपजा जो शोक वहउदर की अग्निको मन्दकरै है और शरीर के बाहर का तेज उदरमें जाकै रक्त बिगाड़ै है वह रक्त बिष्ठासे मिलकै अथवा न मिलकै गुदा के द्वारा गुंजा के सदृश निकलै तौ उसको शोकातीसार जानिये वह शोक दूरहोनेहीसे जाताहै और इसी तरह किसी प्रकारके भयसे उपजा जो भयातीसार उसको भी जानले ५॥

अथ आमातीसार का लक्षण॥

जिस पुरुषके प्रथम भोजनका अजीर्णहोय और वह पीछे गरिष्ठवस्तु खाय तौ उसके कोष्ठ में वात। पित्त। कफ ये तीनों जाकर धातुके समूह और मलको बिगाड़ै हैं और वह मल शूल

संयुक्त दुर्गन्धलिये अनेक रंगका गुदाकेद्वारा निकलताहै उसको वैद्य आमातीसार कहते हैं और जो मल जलमें तिरे आम है और जलमें डूबजाय अथवा दुर्गन्धता युक्त सफेद चिकनाई लिये होय यहभी इसका लक्षण है ६ ॥

अथ आमातीसार का यत्न ॥

धनिया । सोंठि । बेलकीगिरी । नागरमोथा । नेत्रबाला येसब बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७ दिन अथवा रोगकेसदृश १० दिन तथा १५ दिनदे तौ आमातीसार और शूल ये दूर होयँ १ यह धान्यपंचकहै ॥ अथवा जंगीहड़ । मोथा । सोंठि । अतीस । दारुहल्दी इनसबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७ दिनदे तौ आमातीसार दूरहोय २ अथवा जंगीहड़ । अतीस । सिकीहुईहींग । सोचरनोन । सेंधानोन इनको बराबरले महीन पीस २ टंक गरमपानीसेले तौ आमातीसार जाय ३ ॥

अथ पक्वातीसारका यत्न ॥

पठानीलोध्र । धवईकेफूल । बेलकीगिरी । मोथा । आमकी गुठली । इन्द्रयव ये सब बराबरले महीनपीस २ टंक भैंसकी छांछसे अर्थात् मट्ठाले तौ पक्वातीसार दूरहोय ४ अथवा अजमोद । मोचरस । सोंठि । धवईकेफूल । जामुनकीगुठली । आमकी गुठली इन सबको बराबरले महीनपीस २ टंक गौकी छांछके साथ दे तौ पक्वातीसार जाय यह लघु गंगाधर चूर्ण है ५ ॥

अथ शोफातीसार का यत्न ॥

साठीकीजड़ । इन्द्रयव । पाढ़ । वायबिडंग । अतीस । नागरमोथा । कालीमिरच इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिनदे तौ शोफातीसार जाय ६ ॥

अथ अतीसार में वमन होय उसका यत्न ॥

आमकीगुठली । बेलकीगिरी इनदोनों को २ टंकले काढ़ा कर उसमें २ टंक शहत और २ टंक मिश्रीमिलाके ७ दिनदे तौ

बमन सहित अतीसारजाय ७ अथवा सिकीहुईमूंग। चांवल की खील इन दोनोंको औटाय शहत मिश्रीमिलाय ५ दिनपिये तो बमन अतीसार दाह ज्वर दूरहोय ८॥

अथ अतीसारका भेद मोढ़ानिबाहीहै उसका लक्षण॥

कुपथ्यके करनेवाले मनुष्यके बातबढ़कर कफ से मिलके मोढ़ानिबाही को करैहै जब पुरुष के क्षण २ में मड़ोरा होकर थोड़ा अथवा अधिक गुदाकेद्वारा मल निकलै उसको मोढ़ानिबाही कहतेहैं सो बात। पित्त। कफ। रुधिरके भेदसे चार प्रकारकाहै जिसमें बहुतपीड़ाहोकर मलउतरै उसको वायुका कहिये और जिसमें दाह अधिकहोय उसकोपित्तका और जिसमें कफसंयुक्त मलजाय उसको कफकाकहिये और जिसमें रुधिर संयुक्त मलउतरै उसको रुधिरका जानिये॥

अथ इन चारोंका यत्न॥

बेलकीगिरी। पठानीलोध। कालीमिरच इनतीनों को दो पैसेभरले महीनपीस १ टंक शहतमें चाटै तो मोढ़ा निबाही दूरहोय १ अथवा धायकेफूल २ टंक महीनपीस दहीके साथ ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही जाय २ अथवा कैथका रस ५ टंक शहतमें ७ दिन खायतो मोढ़ानिबाही दूरहोय ३ अथवा २ टंक पठानी लोधदहीकेसाथ ७ दिनखाय तो मोढ़ानिबाही जाय ये सब लक्षण और यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ४॥

अथआमातीसारका यत्न॥

हड़कीछालमहीनपीस २ टंकशहतमें ५ दिनखाय तो आमातीसार जाय १ अथवा भांगरेका रस ५ टंक दहीकेसाथ ७ दिन खाय तो सब प्रकार के अतीसार दूरहोयँ २ अथवा २ टंक रालमें १० टंक मिश्री मिलाय १० दिन खाय तो बहुत कालकाभी अतीसारजाय ३ अथवा बेलकीगिरी २टंक बकरीकेदूध के साथ ७ दिन पियै तो रक्तातीसार जाय यह वैद्यविनोद में

लिखाहै ४ अथवा धनियां।सोंठि।पीपल। सेंधानोन। अजमोद। सिकीहींग। सपेदजीरा इन सबको बराबरले महीन पीसमट्ठे के साथ पियै तौ अतीसार। आमशूल इत्यादिजायँ भूखलगै और रुचिहोय यह वृन्दनाम ग्रन्थमें लिखाहै ५ अथवा सोंठि को जलसे पीसकर गोलाबनाय गोलेको अरण्डके पत्तोंसे लपेट डोरोंसे बांध कपरौटीकर मधुरीआंचमें पकावै फिर उसकी मट्टीदूरकर सोंठि काढ़ले ठण्ढीकर२ टंक शहतसे ७ दिनखाय तौ अतीसारजाय ६ अथवा एकभाग अफीम दो भाग हींग तीनभाग लवँग चारभाग मोचरस तीनभाग मिश्री इनको महीनपीस १ या२रत्ती साठीके चांवलके पानीमें अथवा छांछके साथखाय तौ भयंकरभी अतीसार जाय ७ अथवा नागरमोथा। मोचरस। पठानीलोध। धायकेफूल। बेलकीगिरी। इन्द्रयव। अफीम। शोधापारा। शोधीगन्धक इन सबको बराबरले पहिले पारे और गन्धककी खरलमें कजलीकरै पीछे इन सब औषधियोंको उसकजलीमें मिलाय३रत्तीके प्रमाणछांछमें खाय तौ अतीसार। मोढ़ानिबाही। संग्रहणी येसब दूरहोयँ ८॥ यह गन्धार रसहै॥ अथवा सोंठि। जायफल। अफीम। कच्चे अनार कागूदा इनसबको बराबरले इकट्ठी कर कच्चे अनार में भरै पीछे उसकी पुटपाक कर उसकी गोली घुँघचिल के प्रमाण बनाकर एक गोली गौकी छांछ में ७ दिन खाय तौ पक्कातीसार दूरहोय ९ अथवा अफीम को ठीकरेमें मधुरी आंच से सेंककर प्रमाणसेदे तौ अतीसार निश्चय दूरहोय १० अथवा जायफल। लवंग। धवईके फूल। बेलकीगिरी। नागरमोथा। सोंठि। मोचरस। शिंगरफ। अफीम इन औषधियोंको बराबर ले महीनपीस पोस्ता के छिलके के पानी में १ या २ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली चांवलके पानी या छांछके साथ खाय तौ निश्चय सब अतीसार जायँ ११॥ अथवा जायफल।

छोहारा। अफीम इन तीनों को बराबरले पीछे पानके रसमें एकरत्ती प्रमाण गोली बांधे एक गोली छांछ के साथ ७ दिन खाय तौ भयंकर भी अतीसार दूरहोय १२ और जिसके अतीसारहोय वह नवीन अन्न गरम बस्तु भारी और चिकना भोजन धूप खेद। मैथुन। स्नान। चिन्ता आदि न करै यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै १३॥

अथ अतीसारका असाध्य लक्षण॥

शूकरके मांस सदृश मलहोय और प्यास। दाह। अरुचि। श्वास। हिचकी। पसलीमें शूल। मूर्च्छा इत्यादि होयँ और किसी बातमें मन न लगे गुदा पकजाय अग्नि मन्द होजाय ज्वरभी रहै मूत्र बन्दहोय शरीर निर्बलहोजाय ये लक्षण जिस पुरुषमें होयँ वह पुरुष मरजाय १४॥

अथ अतीसारजातारहाहो उसका लक्षण॥

जिसके दिशा आये बिना मूत्र उतरे गुदा की पवन अच्छे प्रकारसे चलै और कोठा हलकाहोय ये लक्षणहोयँ तौ अतीसाररोग दूरहुआजानिये--इतिअतीसारकीउत्पत्तिलक्षणयत्न॥

अथ संग्रहणीरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

प्रथम मनुष्यके अतीसार होकै जातारहाहो फिर उस मनुष्यके कुपथ्यकरने से मन्दहुई जो अग्नि सो पुरुषके उदरमें रहनेवाली जो छठीकला जिसकानाम संग्रहणी है और वही कला अग्निका स्थानहै और खायेहुये अन्नादिकको ग्रहणकरै है वह मन्दाग्नि उस कलाको बिगाड़कर कच्चेअन्नको ग्रहण कर पकेअन्नको गुदाकेद्वारा निकालतीहै इसीहेतु से वैद्यलोग उसकानाम संग्रहणी कहते हैं इस संग्रहणी कलामें अग्निही का बलहै सो वह कला अग्निकोही बिगाड़ै है॥

अथ संग्रहणी का लक्षण॥

प्रथम। वात। पित्त। कफ। सन्निपात इन भेदोंसे संग्रहणी

४ प्रकारकीहै ये जो बात। पित्त। कफहैं सो अधिक कुपथ्यसे और अधिक भोजनकरनेसे कच्चेही अन्नको गुदाकेद्वारा निकालैंहैं अथवा पक्के अन्नको निकालैं तौभी कभी पीड़ा और कभी मल पतला और कभी बँधा उतरै यही संग्रहणीका लक्षणहै॥

अथ बातकी संग्रहणी की उत्पत्ति समेत लक्षण॥

जोपुरुष बादीबस्तुको अधिक सेवनकरै और मिथ्याआहार और मैथुनादिक अधिककरै तिस पुरुष के बात कुपित होकर जठराग्निको बिगाड़ बातकी संग्रहणीको करै है सो जिस पुरुष के अर्द्धपक्क अन्न पचे और कण्ठ सूखे क्षुधा तृषालगै कानोंमें शब्दहोय और पसली जंघा पेड़ और कांधोंमें पीड़ाहोय और कभी २ विशूचिका भी होआवै हृदय दूखै शरीर दुर्बल होजाय जिह्वा का स्वाद जाता रहै मीठे आदि रसों के खाने की इच्छारहै और भोजनकरै तौ जिह्वा आनन्द पावै और उदर में गोला फियाका आकार होय पैर दुखनेलगैं और थोड़ासा शीघ्रतासमेत पवनसरै बारम्बार दिशाजाय और श्वास कास भी होय ये सब लक्षण बातकी संग्रहणीके हैं १॥

अथ बातकी संग्रहणी का यत्न॥

सोंठि। गुरच। नागरमोथा। अतीस इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा १५ दिन दे तौ आम समेत बात की संग्रहणीजाय और भूखबढ़ै १ अथवा गौके मट्ठेमें सोंठि। पीपलामूल। पीपल। चित्रक। चव्य इन सबको बराबरले चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन मट्ठेमें मिलाकै पिये और मट्ठेकाही खूब सेवनकरै तौ बातकी संग्रहणी अवश्य जाय २ अथवा शोधी गन्धक २ टंक। पारा १ टंक दोनों की कजलीकर पीछे से सोंठि १० माशे कालीमिरच २ टंक पीपल पांचोनोन १० माशे। भुना अजमोद ५ टंक। भुना जीरा ५ टंक। भुनीहींग ५ टंक। भुनासुहागा ५ टंक। भुनीभंग ४ पैसे भर इन सबको

महीनपीस पारे और गन्धककी कजलीसें मिलावै फिर उससब मिलेहुयेको २ दिन खरलकरै तौ यह लाही चूर्णहोय इसको २ तथा ४ माशे गौके मट्ठेमें दे तौ बातकी संग्रहणी। मन्दाग्नि। अतीसार। बवासीर। पेटके कृमि और क्षयी इनको यह लाही चूर्ण दूरकरै ३॥

अथ पित्तकी संग्रहणी की उत्पत्ति लक्षण॥

जो पुरुष मिरच आदि गरम वस्तु और तीखी खट्टी खारी अधिक खाय उसका पित्त बिगड़कर जठराग्निको बुझादेताहै और नीला पीला पतला जल सहित कच्चा मल निकलै और खट्टी डकार आवे हृदय और कंठमें दाह और अन्नमें अरुचि होय तृषा लगै ये लक्षण जिसमें होयँ उसके पित्तकी संग्रहणी जानिये २॥

अथ पित्तकी संग्रहणी का यत्न॥

रसौत। अतीस। इन्द्रयव। तज। धायकेफूल इनसबको बराबरले महीनपीस चूर्णकर २ टंक गौ के मटे से अथवा शहतसे। वा चावलके पानीकेसाथ १५ दिन खाय तौ पित्तकी संग्रहणी जाय १ अथवा। जायफल। चित्रक। सफेदचन्दन। बायबिड़ंग। इलायची। भीमसेनीकपूर। वंशलोचन। जीरा-सपेद। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। तगर। पत्रज। लवँग इन सबको बराबरले महीनपीस सबकी दूनी अथवा बराबर मिश्री और बिनासेंकी भंग मिलाकर सबको महीनपीस ४ या ६ माशे गौके मटेके साथ १५ दिन ले तौ पित्तकी संग्रहणी जाय २ यह वैद्यरहस्यमें लिखा है॥

अथ कफकी संग्रहणी की उत्पत्तिलक्षण॥

भारी अति चिकनी और शीतल वस्तुको जो मनुष्य भोजन करकै सोजाय उस पुरुषके कफके कोपहोनेसे अन्नआधा पचै। हृदयदूखै। और वमन और अरोचकताहोय। मुखमीठा रहै। खांसी और पीनस होय पेटभारीरहै। मीठीडकारआवै।

ची प्यारी न लगै आम सहित मल उतरै बल बिना शरीर पुष्ट दीखै आलस्य अधिक आवै जिसमें ये लक्षण होयँ उसके कफ की संग्रहणी जानिये ३ ॥

अथ कफकी संग्रहणी का यत्न॥

हड़कीछाल। पीपल। सोंठि। चित्रक। कालानोन। काली मिरच इन सबको बराबरले महीनपीस चूर्णकर २ टंक प्रति दिन मटेके साथ १५ दिन खाय तौ कफकी संग्रहणी जाय॥

अथ सन्निपात की संग्रहणी का लक्षण॥

जिसमें बात पित्त कफ इन तीनोंके सब लक्षणमिलैं उसको सन्निपातकी संग्रहणी जानिये ४॥

अथ सन्निपातकी संग्रहणी का यत्न॥

बेलकीगिरी। मोचरस। नेत्रबाला। नागरमोथा। इन्द्रयव। कुड़ाकीछाल इन सबको बराबरले महीनपीस २ टंक बकरी के दूधके साथ २५ दिन पिये तौ सन्निपातकी संग्रहणी जाय १ अथवा अनारदाना ८ टकेभर कालानोन १ टकेभर जीरा १ टकेभर धनियां १ पैसेभर सोंठि १ टकेभर कालीमिरच १ टकेभर मिश्री १ टकेभर इनसबको महीनपीस २ टंक गौकेमट्ठे के साथ १ महीने पिये तौ सन्निपातकी संग्रहणी और आमा-तीसार। पसलीकी पीड़ा। अरुचि गोला ये सबरोग दूरहोयँ २ अथवा शोधापारा। शोधी गन्धक। सिंगीमुहरा। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। भुना सुहागा। कांतीसार। अजमोद। अफीम इन सबको बराबरले और सबकी बराबर अभ्रकले फिर इन सबको चित्रकके काढ़े के रस में १ दिन खरल करे पीछे कालीमिरच के बराबर गोली बांधे १ गोली प्रतिदिन १ महीने तक खाय तौ सन्निपातकी संग्रहणीजाय ३ यह अभ्रक गुटिकाहै॥ अथवा शोधीगन्धक। पारा। अभ्रक। शिंगरफ।

कातीसार। जायफल। बेलकीगिरी। मोचरस। शोधासिंगीमुहरा। अतीस। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। धायकेफूल। घृतमें सिकीहुई हड़कीछाल। कैथ। अजमोद। चित्रक। अनारदाना। इन्द्रयव। धतूरेके बीज। कंजा। अफीम ये सब बराबरले प्रथम पारे और गन्धककी कजलीकरे फिर इस कजली में ये औषधियां महीनपीस मिलावै पीछे मिरचके प्रमाण पोस्तके छिलके के रसमें गोलीबांधे १ गोली नित्य १५ दिन तकदे तौ सन्निपातकी संग्रहणी। अतीसार। बिशूचिका इन सबको दूरकरै ४ यह संग्रहणी कपाटरसहै और वैद्यरहस्यमें लिखाहै॥

अथ त्रिदोषकी संग्रहणीके भेद और आमवातकी संग्रहणीके लक्षण॥

पतला सफेद चिकना और आमसहित मलहोय औरकटि में पीड़ा और बात अधिकसरै कभी अच्छा होजाय और कभी महीने पन्द्रह दिन पीछे फिर होआवै अथवा सदैव बना रहै आंत बोलाकरै आलस्य आवै शरीर दुर्बल होजाय पेटमेंपीड़ा रहै दिनमें पीड़ा और रात्रिमें अच्छा होजाय ये लक्षण जिसमें होयँ उसको आमवातकी संग्रहणी कहिये यह असाध्यहै इसका और सन्निपात की संग्रहणी का एकही यत्न है॥

अथ संग्रहणीका भेदघटीयंत्रहै उसका लक्षण॥

शरीर सुन्नरहै पसली में शूल होय पेट बोला करै और पूर्वोक्त संग्रहणी के लक्षण भी होयँ उसको घटीयंत्र कहिये यह भी असाध्यहै औरजो अतीसारके असाध्य लक्षण और अच्छे यत्न पीछे लिखे हैं सोई इस संग्रहणी के भी जानने चाहिये॥

अथ संग्रहणीका और विशेष यत्न॥

कैथ ८ भाग। मिश्री ६ भाग। अजमोद ३ भाग। पीपल ३ भाग। बेलकीगिरी ३ भाग। धायकेफूल ३ भाग। अनारका गूदा ३ भाग। तंतरीक ३ भाग। कालानोन १ भाग। नागकेसर १ भाग। धनियां १ भाग। तज १ भाग। पत्रज १ भाग।

मिरच १ भाग। अजवाइन १ भाग। पीपलामूल १ भाग। नेत्र-बाला १ भाग। इलायची १ भाग इन सबको महीन पीस गौ के मठे के साथ २ टंक ले तौ संग्रहणी गोला इन सबको यह चूर्ण दूर करै यह कपित्थाष्टक है और संग्रहणीवाला इतनी वस्तु नहीं खाय भारी वस्तु जो आम करै और भूख बन्द करै और अतीसारमें जो वस्तु वर्जितकी हैं वे न करै और जिन वस्तुओं से भूख लगे वे खाय तौ संग्रहणी जाय—इति संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ ववासीर रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मनुष्य की गुदामें शंखकी भितरली नाभिके सदृश ४ अंगुलके ३ चक्रहैं एक ऊपर का दूसरा बीचका तीसरा नीचेका ऊपर के चक्रका नाम प्रवाहिनी वह मल पवन आदि को बाहर निकालै है और बीचका चक्र मल पवन आदिको छुटाता है और तीसरा नीचेका चक्र उस मल पवनके छोड़ने के पीछे गुदाको ज्यों की त्यों ढक देता है इन तीनों चक्रों में ववासीर उत्पन्न होती है यह ववासीर का स्थान है पहिले में ववासीर होय तौ साध्य और बीचके में होय वह कष्टसाध्य और भीतरके में होय वह असाध्य सो ववासीर वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ और एक वह जो शरीरके साथ-ही उत्पन्नहो ६ इनभेदों से छःप्रकारकी है और बादी अथवा गरम कफकारी चिकनी मीठीवस्तु जो पुरुष बहुत खाय और बात पित्त कफके करनेवाले मिथ्या आहार मिथ्याविहार कर के कोपको प्राप्त जो बात पित्त कफ दोष वह गुदाके तीनों चक्रों के ऊपर त्वचा। मांस। मेदाको बिगाड़कर नानाप्रकारके मांस के अंकुरोंको मस्सेके आकार गुदाके ऊपर करै हैं उसको वैद्य ववासीर कहैहैं सो छःप्रकारकी है परन्तु लौकिकमें दो प्रकार की प्रसिद्धहैं एक खूनी दूसरीबादी जिसमें बहुतसा रुधिरजाय

वह खूनी और जिसमें रुधिर तो नहींजाय परन्तु पीड़ाचिमचिमी और खुजली आदि होय वहवादी ये दोनों उन्हींछः के भेद में हैं ॥

अथ संपूर्ण बवासीर का पूर्व रूप ॥

अन्नका परिपाक अच्छेप्रकार होयनहीं और कोखहीमेंरहै बद्धकोष्ठ और मन्दाग्निहोय डकार बहुतआवै शरीर कृश हो जाय कोषमें अफराहोय अंगमें पीड़ारहै ये लक्षण जिसकेहोयँ उस पुरुषके जानिये कि बवासीर होगी ॥

अथ बातकी बवासीरका लक्षण ॥

जिसकी गुदाके मस्से चिमचिमी और ललाईलिये खरदरे कठोर बांके तीक्ष्ण फटेमुखके गुदाके ऊपर होयँ और छोटेबेर अथवा कपास अथवा कदमके फूलके सदृशहोयँ और शिर पसली। कन्धे। कटि। जंघा। पेडू इनमें व्यथाहोय छींकऔर डकारआवैनहीं हृदयदुखे भूखलगे नहीं कासश्वास मन्दाग्नि कर्णमें शब्द। भ्रम। वायुगोला। फिया उदररोग जिस में ये लक्षणहोयँ उसके बातकी बवासीर जानिये ॥

अथ बात के बवासीरका यत्न ॥

जिमीकन्दको मिट्टीमें लपेट भाड़में खूब भरताकर तेल या घृतसे लपेट १ टकेभर नित्य ३१ दिन खाय तो बातकी बवासीर अवश्य दूरहोय १ यह भावप्रकाशमें लिखाहै ॥ अथवा आकके नवीनपत्रोंमें पांचोंनोन और तेल खटाई प्रमाणसे लगावै और उन्हेंजलाय राखकरै पीछे गरम पानीसे वह राख १ टंक या २ टंक १५ दिन खाय तो बातकी बवासीरजाय २ यह वैद्य विनोदमें लिखाहै॥ अथवा गौके मट्ठेमें सेंधानोनप्रमाणसे मिलाय अच्छेप्रकार बहुतदिन सेवनकरै तो बातकी बवासीर जाय और शरीर पुष्टरहै ३ यह भावप्रकाशमें लिखाहै ॥ अथवा हड़कीछाल ५ टकेभर चित्रक १ टकेभर सोंठि १ टकेभर शोधा भिलावां ५ टकेभर कालीमिरच १ टकेभर पीपलामूल १ टके पी-

पल १ टकेसपेदजीरा १ टके चाव्य १ टके पकाया जिमीकन्दपाव-भर जवाखार ४ टकेभर इन सबकोले महीनपीस सबसे दूना गुड़ मिलाय १ टकेभरके प्रमाणकी गोलीबांधे एकगोली प्रतिदिन खाय तौ बातकी बवासीर निश्चयजाय ४ यहगुण कांकायन मुनिनेकहाहै ॥ अथवा बन्दालकेपत्तोंको औटाय उसकेपानीसे शौचले तौ बवासीरके मस्सेजायँ अथवा बन्दालके ढूँढ़ोंकी धूनीदे तौ मस्सेदूरहोयँ ५ ॥ अथवा सेंधानोन और बन्दाल के ढूँढ़ोंको कांजीमें पीस बवासीरके लेपकरै तौ मस्सेजायँ ६ अथवा नींबके पत्ते और कनेरकेपत्ते गुड़ कड़वीतोंबीकीजड़ । इन सबको कांजीके पानीमें पीस मस्सोंके लेपकरै तौ मस्सेदूर होयँ ७ अथवा हल्दी । कड़वीतोरईकीजड़ । आककेपत्ते । सहँ-जनेकीजड़ इनको कांजीकेपानीमें महीनपीस लेपकरै तौमस्से दूरहोयँ ८ अथवा अरण्डकीजड़ । मुलहठी । रास्ना । अज-वाइन । महुआ इनको कांजीमें पीस गरमकर लेपकरै अथवा इससे सेंककरै तौ मस्सेकी चिमाचिमी जाय और मस्से झड़ पड़ें ९ यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोदमें लिखा है ॥ अथवा हीराकसीस । सेंधानोन । पीपल । सोंठि । कूट । करिहारी की जड़ । पाषाणभेद । कनेर की जड़ । बायविड़ंग । दारूणी । चित्रक । हरताल । सत्यानासीकी जड़ इन सबको बराबरले महीन पीस इनका तिगुना तेल लेकै थूहर और आकके दूध और गोमूत्र तीनों तेल से चौगुने ले इन सबको इकटा कर पकावै जब वे जलजायँ और तेलऊपर आ रहै तब उतारकर तेलनिकाल मस्सोंके मर्द्दनकरै तौ मस्से दूरहोयँ बवासीरजाय और बली दूखै नहीं १० यह क्षारतैल वैद्यरहस्यमें लिखाहै॥ अथवा १६ भाग पकायाजिमीकन्द । ८ भाग चित्रक । ८ भाग सोंठि । ४ भाग कालीमिरच । २ भाग त्रिफला । ८ भाग पी-पलामूल । ८ भाग शोधा भिलावां । ८ भाग शतावरि । १६

भाग बिधारा। ८ भागभंग। ४ भाग इलायची। ८ भागबाय-
बिडंग इनसबको महीनपीस सब औषधियोंसे दूनागुड़मिला-
य १६ माशेके प्रमाण गोलीबांधे नित्य १ गोली ३० दिनतक
खाय तौ बवासीर। हिचकी। श्वास। कास। राजरोग। प्रमेह।
फिया इन सब रोगों को यह वृहत् सूरण मोदक दूरकरै ११
यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै॥

अथ पित्तकी बवासीरका लक्षण॥

मस्सोंका मुहँ नीला और लाल पीला सफेदाई लियेहोय
और उन मस्सोंमेंसे गरम २ महीनधारसे रुधिर निकलै और
महीन कोमल मस्सेहोयँ और उन मस्सोंका मुंह जोंककासाहो
और शरीरमें दाह। ज्वर। मूर्च्छा। और अरुचि होय। और
नीला पीला लाल मलउतरै और त्वचा नख नेत्र जिसके पीले
होयँ येलक्षण जिसमें होयँ उसके पित्तकीबवासीर जानिये २॥

अथ रुधिरकी बवासीरका लक्षण॥

गुदाके मस्से घुँघचिल के रंग के सदृश होयँ और मस्सों
से रुधिरकी धार गरम और बहुत गिरै और गाढ़ा कच्चालोहू
निकलै और रुधिर के बहुत जानेसे उसका शरीर ढाकके फूल
सदृशहोजाय और उसकाबल बरण उत्साह पराक्रम सबजाता
रहै शरीर सूखजाय अधोवायु अच्छेप्रकार नहींसरै मस्सों में
सेरुधिरनिकलतेहुये झागहों और कटि जंघा और गुदामेंपीड़ा
होय शरीर दुर्बल होजाय तौ रुधिरकी बवासीर में बायुकाभी
मेल जानिये और जिसका मलचिकना भारी और ठण्ढाहोय
और मस्सोंमें से रुधिरकी धार मोटी और गरमपड़ै औरगुदा
मेंकफसाही लगारहै तौ रुधिरकी बवासीर कफसंयुक्त जानिये॥

अथ बवासीरकेरुधिरथंभनेकीऔषध॥

बड़केपत्ते। और सूखे आमले। चार २ पैसेभरलेकै पावभर
गौके मक्खनको लोहकी कढ़ाईमें खूब तलकरै फिर इन दोनों

वस्तुओंको घृतमेंडाले जबयेतीनों जलजायँतब उतारठंढीकर धातुकेबासनमें भररक्खे फिर इन सबको खरलमेंडाल महीन पीस एकरसकरे पीछे बवासीरवाले रोगीको १ माशे प्रतिदिन प्रातःकाल २१ दिनदे फिर पानीकाकुल्लाकरे कुल्लेकापानीपीवे नहीं और गरमवस्तु। बाजरा।करेला।मिरच।पेड़ा।अचार।बैं-गन।टींड़।उर्द आदिखायनहींतौबवासीरकारुधिरथँभिजाय १॥

अथ रुधिररुकनेका दूसरायत्न॥

निबौलीकी मींगी। एलुआ इन दोनों को बराबरले खरल में पानीसे महीनपीस १ रत्तीप्रमाण गोलीबाधे १ गोलीरसौत के पानी में प्रति दिन प्रातःकाल ११ दिनदे तौ बवासीरका रुधिर निश्चय थँभे २॥

अथ बवासीरके मस्से दूरकरनेकी औषध॥

रसौत। चीनियांकपूर। निबौलीकी मींगी इन तीनों को पानीसे महीनपीस लेपकरे तौ मस्से दूरहोयँ ३॥

अथ पित्त और रुधिरकी बवासीरकायत्न एकहीहैसोलिखतेहैं॥

रसौतको महीनपीस २ टंक पानीमें चारघड़ी भिजोकर फिर उस पानीको छान प्रतिदिन २ महीने पिये तौ पित्त और रुधिर की बवासीर अवश्यजाय ४ अथवा पीपल की लाख। हल्दी। मुलहठी। मंजीठ। कमलगट्टेकी मींगी इन सबको बराबरले म-हीन पीस १ टंक नित्य ४९ दिनतकले तौ दोनों बवासीर जायँ ५ अथवा नागकेसर। मक्खन। मिश्री ५ टंक प्रतिदिन बकरी के दूधमें ४९ दिनले तौ दोनों बवासीर जायँ ६ अथवा नाग-केसर मिश्री ५ टंक ४९ दिनले तौ दोनों बवासीर जायँ ७ अ-थवा १०० टकेभर कुड़ाकी छाल पीसकै १६ सेर पानीमें औ-टावै जब उसका आठवांभाग रहै तब उतार रस छानले फिर उस रसमें नागरमोथा १ टकेभर। सोंठि १ ट०। कालीमिरच १ ट०। पीपल १ ट०। त्रिफला ३ ट०। रसौत २ ट०। चि-

त्रक २ ट०। इन्द्रयव २ ट०। बच १ टकेभर इनसबको महीन पीस गुड़की चासनीमें मिलावै फिर उसमें पावभर गौकाघृत मिलावे फिर उसेपावभर शहतमें मिलाके १ टकेभर प्रतिदिन खाय तौ दोनों और सब प्रकारकी बवासीर। अम्लपित्त। अतीसार। पांडुरोग। संग्रहणी। क्षीणता। सूजन पृथक् २ अनोपानसे और ऊपर मटेके सेवनसे इन सबरोगोंको दूरकरै है यह कुड़ाकी छालका अवलेहहै ८ अथवा बकायनकेफल ६ तथा ८ प्रतिदिन मिश्रीकेसाथ १ महीनेतकले तौ दोनोंप्रकार की बवासीरजायँ ९ अथवा सतगिलोय। शोधापारा। शोधी गन्धक। बीजबोल। मोचरस ये सब बराबरले सब औषध मिलायके ३ माशेप्रतिदिन शहतकेसाथ २१ दिनले तौ दोनों बवासीर। अतीसार। प्रमेह। प्रदर। भगंदर ये सबरोगजायँ १० यह बीजबोल बद्धरस है॥ अथवा बसन्तमालनी रस २ रत्ती पीपल २ तथा ४ शहत और मिश्रीके साथ २५ दिनले तौ दोनों बवासीर और संग्रहणी जायँ ११ यह यत्नवैद्यरहस्य में लिखाहै॥ अथवा बवासीरसे बद्धकोष्ठ होकर मस्सा ऊँचाहो- आवै और खुजली और रुधिरबहै उसमस्सेमें जोंकलगाकर रुधिर निकलवाडालै तौ बवासीरजाय इसके समान और कोई यत्न नहींहै १२ यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै॥ पित्त और रुधिर की बवासीरको खूनी बवासीर जानिये और सबको बादी॥

अथ कफकी बवासीरका लक्षण॥

गुदाका मस्सा मोटा और मन्द २ पीड़ा सहित ऊँचा और भारी कफसे लिपटाहो खुजली अधिक और प्यासलगै पेडू में अफरा और गुदामें खाज बहुतहो और कास। श्वास। हृदयपीड़ा। अरुचि। पीनस। मूत्रकृच्छ्र। मन्थवायु। मंदाग्नि ये सबहोयँ और शीतलगै और कफसेलिपटा मल उतरै और गुदाके मस्से से रुधिर नहीं निकले और शरीरका रंग पीला

और चिकना और आमबात युक्तहोय ये लक्षण जिसकेहोयँ उसके कफकी बवासीर जानिये ३॥

अथ कफकी बवासीर का यत्न॥

१ टकेभर अदरखका काढ़ा २१ दिनले तौ कफकी बवासीरजाय १ अथवा हल्दीमें थूहरके दूधकी ७ पुटदेकै मस्सेके लेपकरै तौ मस्से दूरहोयँ २ अथवा त्रिफला। दशमूल। चित्रक। कालानिसोत। दात्यूणी ये पांचो सेरभर लेकैकूटकर.२० सेर पानीमें २१ दिन रक्खे और औषधियोंके साथ ७ सेर गुड़भी जलमें डालै फिर यन्त्रकेद्वारा मदिराके सदृश अर्क निकालै पीछे १ टंकभर प्रतिदिनले तौ कफकी बवासीर जाय ३ यह दात्यूणीका अर्कहै और वृन्दनाम ग्रन्थमें लिखा है॥

अथ सन्निपातकी बवासीर का लक्षण॥

बात। पित्त। कफके मिलेहुये जो लक्षण हैं वही इसकेभी लक्षण जानना ४॥

अथ सन्निपात की बवासीरका यत्न॥

अदरख ३ट०कालीमिरच १ ट० पीपल पावभर चव्य१ट० नागकेसर १ट० पीपलामूल१ट० चित्रक१ट० इलायची १ट० अजमोद १ ट० जीरा १ ट० इनसब औषधियोंको महीन पीस ३० टकेभर गुड़में २ टंक के प्रमाण गोली बांधे प्रातःकाल १ गोली खायकै भोजनकरै और पथ्यसे रहै तौ सन्निपात की बवासीर।मूत्रकृच्छ्र। बातकारोग। विषमज्वर। पांडुरोग। गोला। क्रिया। कास। श्वास। बमन। अतीसार। हिचकी इन सबरोगों को पृथक् २अनोपानसे तत्काल दूरकरैहै जैसेतेलमें जलडालतेही क्षणभरमें फैलजाय है तैसेही औषधभी अनोपानके बलसे फैलजाय है यह प्राणदा गुटिका सर्व्वसंग्रह में लिखीहै १ अथवा त्रिफला। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। तज। पत्रज। इलायची। बच। भुनीहींग। पाढ़। सज्जी। जवाखार। दारु-

हल्दी। चव्य। कुटकी। इन्द्रयव। सौंफ। पाचोनोन। पीपलामूल। बेलकीगिरी। अजमोद इन सबको बराबरले महीन पीस गरम जलसे २ टंक प्रतिदिनले तौ सन्निपात की बवासीर। श्वास। शोष। हिचकी। खांसी। भगन्दर। पसलीका शूल। गोला। उदररोग। प्रमेह। पांडुरोग। अन्त्रवृद्धि। संग्रहणी। बिषमज्वर। जीर्णज्वर। उन्माद इन सब रोगों को पृथक् २ अनोपानसे यह विजयनाम चूर्ण दूरकरैहै २ और भावप्रकाश में लिखा है॥ अथवा शोधापारा १ टकेभर शोधी गन्धक १ट० तामेश्वर ३ ट० कान्तीसार १ ट० सोंठि २ ट० कालीमिरच २ ट० पीपल २ ट० शोधासिंगीमुहरा १ ट०दात्यूणी १ ट० चित्रक २ ट० सुहागा २ ट० बेलकीगिरी १ ट० जवाखार १ ट० सेंधानोन ५ ट० गोमूत्र ३२ ट० थूहरकादूध ३२ ट० इन सबको इकट्ठाकर कढ़ाई में मधुरीआंचसे पकावै जब उसकी पिण्डीबँधजाय तब २ माशे के प्रमाण गरमपानी से ले तौ असाध्य भी सन्निपातकी बवासीर जाय ३ यहकुठार रसहै और योगतरंगिणी में लिखाहै॥

अथ शिवजीके मतसे बनाहुआ लोहसार॥

जिससे बवासीर आदि सर्व्वरोगजायँ सो लिखते हैं॥

बवासीरको महा असाध्य रोगजानिकै मनुष्योंके रोग दूर करनेके अर्थ नारदजीने श्रीमहादेवजी से पूँछा कि महाराज सुम्बल आदिके लगानेसे गुदाके मस्से दूरहोते हैं परन्तु उससे मनुष्य मर २ कर नीठबचे हैं इसकारण इससे अन्य कोई सुगम उपाय जिससे बवासीर जाय सो बताओ तब महादेवजीने बहुत करुणाकर नारदजीको इन सबके बनानेकी क्रिया बताई उसके करने से बवासीर आदि अनेक रोग जाय हैं सो लिखते हैं कान्तीलोह अथवा गजवेलका लोह ले उसके पत्र कराकर उनको तैल। तक्र। गोमूत्र। कांजी। त्रिफला इनमें

सात २ बार पहिलेशोधे पीछे उसको रितवाथ उसकीबराबर मैनसिल सोनामक्खीले फिर इनदोनोंको रेतेहुयेलोहके शरवे में रखकर चित्रककी छालके रससे उन दोनोंको उसमेंसानिके प्रमाण सदृश रेतेहुये लोहमें उनदोनों को डाल शरवेकोबन्द कर लुहारी कोयलों में खूब धौंकनीसे फूँके जब वहदोनों जल जायँ और बास आनीबन्द होजाय तब उनको निकालै इसी प्रकार उसको १०बार फूँके फिर त्रिफलेके रससेपारे और उस रेतेलोहेके आठवेंभाग को चरावै इसविधिसे चारबार और भस्मकरै तदनन्तर उन सबको खरलमें महीनपीसे जब वह लोहसार पानीमें तिरनेवाला होजाय तब उस लोहके शरवेमें उससारको विषखपरेके रसकी १पुट उसीविधिसेदे फिर त्रिफले की १पुटदे फिर अद्रककी १०पुट फिर जिमीकन्दकी १०पुटदेफिर छीलेकेरसकी १०पुट फिर थूहरकेदूधकी १० पुट फिर साठीकेरस की १०पुट फिर शतावरिकी १०पुट फिर गिलोयके रसकी २०पुट फिर जामुनके बकलेकी ७पुट फिर गूलरके छिलकेकी ७पुट फिर ग्वारके पट्ठेकी १० पुट फिर तंदूकी ७पुट फिर आमलेके रस की २० पुट फिर नींबूके रसकी २० पुट फिर छीलेके बकलेके रसकी १० पुट फिर सारका १२ भाग शिंगरफ डालकर उसको ग्वारके पट्ठेके रस में मिलावै और उसकी पुट दे फिर उसमें घृतकी १० पुट फिर शहतकी १० पुट और हरएक पुटमें खरल करता जाय इसीप्रकार इस सारको सिद्धकरै पीछे इस सारको १ रत्तीके प्रमाण शहत और पीपलके साथले और शिवजीका पूजनकरै ॥ और ॐ अमृतंभक्षयामिस्वाहा ॥ इसमंत्रसे खाय और इसकी परममात्रा चढ़ती बलसाफिकले तो ३ रत्तीप्रभात कीलहीले और इसकेऊपर खरैटीका काढ़ाले इसीप्रकार तीन महीनेतक इसकासेवनकरै तो ववासीरमात्र दूरहोकर वहपुरुष तरुणहोजाय और मन्दाग्नि। श्वास। कास। पांडुरोग। बात।

रक्त। मूत्रकृच्छ्र। अण्डवृद्धि आदि असाध्य भी रोग जायँ और बल बर्ण बहुतबढ़े पुष्टता शरीरमेंहोय आयुर्बलबढ़े सर्व रोगमात्र जायँ ४ और इसका सेवन करनेवाला पेठा। तेल। उर्द। राई। मदिरा। खटाई इतनीबस्तु न खाय यहविधि आत्रेय और भावप्रकाश में लिखी है॥ अथवा बड़ी हड़की छाल २ टंक। पुरानागुड़ २ टंक इनदोनों को मिलाय जलसे प्रतिदिनले ऊपरसे गौकेमट्ठेका सेवनकरै तौ बवासीर जाय ५ अथवा आंधीझाड़ा। नीलोफलकी जड़। खरैटी। दारुहल्दी। पिथवन। गोखुरू। इन्द्रयव। सारिवाकेफूल। बड़का अंकुर। गूलरकाअंकुर। और पीपलकेकोमलपत्र इन सब औषधियों को दो २ टकेभरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ाकर छानले फिर जीवन्तीकीजड़। कुटकी। पीपलामूल। कालीमिरच। सोंठि। देव-दारु। शतावरि। चन्दन। रसौत। कायफल। चित्रक। मोथा। प्रियंगु। खरैटी। सरवन। कमलगट्टेकीमींगी। मंजीठ। कटेली। बेलकीगिरी। मोचरस। पाढ़ इनसबको धेले २ भरले महीनपीस चारसेरइनकेकाढ़ेका रसले उसमें गौकाघृत १सेरडाल दोनोंको कढ़ाईमें चढ़ाकर औटावै जबकाढ़ा जलजाय और घृतरहजाय तब उतार छानकर टकेभर प्रतिदिन खाय तौ बवासीर जाय ६ अथवा शोधापारा। शोधीगन्धक दोनों को बराबरले कज-लीकरै फिर कजली को घृतसे चुपड़े फिर उन दोनों से दूना बीजबोल कजलीमें डाल रगड़कर टिकड़ीबांधे फिर टिकड़ीको लोहेके पात्रमें आंचदेकर पतलीकरके केलेके पत्तेपर डालकर उसकी पपड़ीकरै इसका नाम परपटी रसहै इस रसका सेवन ३ रत्ती नित्य १५ दिनकरै तौ सन्निपातकी बवासीर जाय ७ यह वैद्यविनोदमें लिखाहै॥ और गुदाके मस्सेके सिवाय और शरीरमें किसीठिकानेपर मस्साहोय जिसको चर्मकीलकहतेहैं॥ उसको अग्निसे और क्षारसे दूरकरै॥

अथ मस्सेक यत्न ॥

खानेकाचूना। सज्जी । सुहागा । नीलाथोथा इन सब को बराबरले नींबके रसमें ३ दिनतक भिजोवै फिर मस्सेके लगावै तौमस्साअवश्य दूरहोय ८ अथवा शीशेकी गोलीको गौकेघृत में घिसिकै बवासीरके मस्सेपर १० दिनलगावै तौ बवासीर दब जाय अथवा विष्णुकान्तजड़ी २टंक। कालीमिरच २० टंक। भंग आधमाशे प्रतिदिन घोटकर पिये तौ बवासीर दबी रहै १० ॥

अथ बवासीर का असाध्य लक्षण ॥

जिसकीबवासीरमेंसूजन। अतीसार। बमन। अंगमें पीड़ा। तृषा। ज्वर। अरुचि। मन्दाग्नि। गुदाकापकना। हृदयमेंशूल येलक्षणहोयँ वहनिश्चय मरजाय और बवासीरवाला मलमूत्र का रोकना स्त्रीसे अधिक प्रसंग घोड़ेकी सवारी उकड़ बैठकर करेला बाजराआदि गर्म्म वस्तुका खाना इतनी वस्तुको नहीं करै-इतिबवासीरकी उत्पत्ति लक्षण यत्नसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थे अतीसारसंग्रहणीबवासीरकीउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणोनामतृतीयस्तरंगः ॥

अथ अजीर्णज्वरकी उत्पत्ति ॥

प्रथम मनुष्य के मन्दाग्नि १ तीक्ष्णाग्नि २ बिषमाग्नि ३ समाग्नि ४ इनभेदोंसे चारप्रकारकी जठराग्निहोतीहै जिसपुरुषकी कफप्रकृति होय उसके मन्दाग्नि १ और जिसकी पित्त प्रकृतिहोय उसके तीक्ष्णाग्नि २ और जिसकी बात प्रकृतिहोय उसके बिषमाग्नि ३ और जिसकी बातपित्तकफ तीनोंसे मिली प्रकृति होय उसके समाग्नि ४ ॥

अथ मन्दाग्नि का लक्षण ॥

मन्दाग्निवाले को थोड़ा हितकारी भी खायाहुआ भोजन

अच्छे प्रकार पचता नहीं और उसकाशिर और उदर भारी रहे अंगमें हड़फूटन रहे १॥

अथ तीक्ष्णाग्नि का लक्षण॥

अत्यन्तभी भोजन कियाहुआ अच्छे प्रकार पचजाय, यह अग्निअच्छी होतीहै २॥

अथ विषमाग्निका लक्षण॥

कभी अच्छेप्रकार और कभी बुरे प्रकार भोजनपचे और अफरा। पेटमेंशूल। उदरभारी। अतीसार। पेटबोलाकरै यह लक्षणहोयँ तौ विषमाग्नि जानिये ३॥

अथ समाग्निका लक्षण॥

जिसके समाग्नि होतीहै उसकेप्रमाणका भोजन और अजीर्णमेंभी बहुतखाया भारीअन्नपचै यहसमाग्नि तीनोंअग्नि से श्रेष्ठहै इस अग्निसे किसीप्रकारका विकार होतानहीं और लगीभूखको किसीकारणसे रोकै तौ भी तत्काल रोगको नहीं उपजावैहै और तीक्ष्णाग्नि भूखको रोकतेही तत्काल पित्तके रोगको उत्पन्नकरै है इसहेतुसे समाग्नि श्रेष्ठहै ४ और मन्दाग्निसे कफका रोग और तीक्ष्णाग्निसे पित्तका रोग और विषमाग्निसेवायुकारोग और समाग्निसे कोईभीरोगनहींहोताहै॥

अथ भस्मक रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

तीखी वस्तुको आदिले जो रूखाअन्नखाय उसके कफघटै और वातपित्त बढ़ै है तब पित्तपवन से प्रेरित होकर भस्मक अग्निको रोगरूप उत्पन्न करैहै उससमय जो खाय सो एक क्षणमात्रमें भस्म होजाताहै इसको भस्मक रोग कहते हैं॥

यहतृषा। दाह। मूर्च्छाको प्रकटकर कियेहुये भोजन और सब धातुओंको खाकर मनुष्योंको मारडालै है ५॥

अथ अजीर्णरोगकी उत्पत्ति॥

बहुत जलपिये विषमाशनसे अर्थात् समय कुसमयभोजन

करै मल मूत्रके वेगको रोकै दिनमेंसोवै रात्रिमेंजागै ऐसे पुरुष को पथ्यकाभी भोजन अच्छेप्रकार पचतानहीं अथवा अष्टप्रहर। ईर्षा। भय। क्रोध। लोभ अथवा कोई रोगदीनता अरुचिकारक भोजनकी अप्राप्ति इतनी बातोंसे मनुष्यको अच्छे प्रकार अन्न पचता नहीं॥

अथ अजीर्णका सामान्य लक्षण॥

मनमें ग्लानि। शरीरभारी। उदरमें अफरा। प्रमेहरहै। गुदाकीवायु अच्छेप्रकार बहै नहीं बद्धकोष्ठहोय अथवा बारम्बार पतले मलकी प्रवृत्तिहोय जिसमें यह लक्षणहोयँ उसके अजीर्ण जानिये १॥

अथ अजीर्ण का भेद॥

अजीर्णछःप्रकारकाहै एक तौ वह जोमीठा अर्थात् कच्चाही अन्न गुदाकेद्वारा जाय और कफप्रकृतिलिये मन्दाग्निहोय १ उसको आम कहते दूसरा जो कुछ खटाई लिये मलजाय और पित्तप्रकृति लिये तीक्ष्णाग्नि होय उसको बिदग्ध कहते हैं २ तीसरा वह जो खायाहुआ अन्न कोष्ठहीमेंरहै पचैनहीं उदरमें शूल और अफरारहै और कच्चाहीअन्न गुदाके द्वाराजाय और वायुकी प्रकृतिकर विषमाग्नि होय उसको विष्टब्ध कहते हैं ३ चौथा वह जो भोजनकरै और अच्छेप्रकार पचैनहीं मलपतला जाय उसको रसशेष कहते हैं ४ पांचवां वह जो भोजन एक दिन और रात्रिमें पचै दूसरेदिन भूखलगै यह अच्छा निर्दोष है इसको दिनपाक कहते हैं ५ छठा अजीर्ण जो स्वतःसिद्ध सदारहै उसको प्रतिवासर कहतेहैं ६ यह अजीर्ण बाईंकरवट सोने और गर्म पानीपीनेसे और श्रमकरनेसे और हड़के खाने से होजाता है॥

अथ आमाजीर्णकालक्षण॥

शरीरभारीरहै। वमनकी इच्छारहै। जैसा भोजनकरै वैसाही बनारहै। गर्मीके नानाप्रकारके रोगहोयँ धुयेंसहित खट्टीडकार आवै पसीना होय १॥

अथ विष्टब्धअजीर्णका लक्षण ॥

पेटमें शूल। अफरा और वायुकी नानाप्रकारकी पीड़ाहोय मल और अधोवायु रुकजाय शरीर जकड़ा बन्दहोय २ ॥

अथ रसशेषअजीर्णका लक्षण ॥

अन्नमें अरुचि। हृदयदूखे। शरीर भारी रहै ३ ॥

अथ अजीर्णका उपद्रव ॥

मूर्च्छा। प्रलाप। बमन। अङ्गमेंपीड़ा। भ्रम। यह उपद्रवहोयँ तौ वहमरजाय ४ मूर्खमनुष्य अजीर्णमें पशुकीभांति भोजनकरै तौ उसकीवायु स्वल्पआमदोषोंसे बन्दहोकर जब अग्निकेमार्गको नहीं रोकतीहै तब अजीर्ण में भी भूखलगै है उस कच्ची भूखमें जो पुरुषखाय वह अनेकरोगयुक्त होकर मरभीजाताहै ॥

अथ विशूचिका का लक्षण ॥

जिस पुरुषके मन्दाग्निमें प्रथम आमाजीर्णहुआ और पीछे वह पशुकीभांति अधिक गरिष्ठवस्तुखाय तो उसके विशूचिका मूर्च्छा। अतीसार। बमन। भ्रम। पीड़ा। हड़फूटन। जम्हाई दाह। और शरीरका वर्ण औरका और होजाय। कम्पहृदय। और मस्तकमें पीड़ा शरीरमें सुईके चभके जिसमें ये लक्षण होयँ उसके विशूचिका कहिये लौकिकमें इसको बासी कहे हैं इसके उपद्रव से नींदआवै नहीं सर्वत्र अप्रीति। शरीरकम्प। मूत्रकृच्छ्र होय संज्ञा जाती रहै यह उपद्रव जिसमें होयँ वह मरजाय १ ॥

अथ आलस्य का लक्षण ॥

विष्टब्धवायुके अजीर्णसे पेटमें अफराहोय। आंतमें शब्द होय पवननफिरनेसे रुककर कोखमें फिरै मलमूत्र और गुदाकी पवनभी रुकजाय तृषा अधिकहोय डकारैं बहुतआवैं जिसपुरुषमें ये लक्षणहोयँ उसके आलस्य जानिये २ ॥

अथ विलम्बिका का लक्षण ॥

भोजनकियाहुआ पचैनहीं ऊपर नीचेजायनहीं दांत ओष्ठ

नखकालेहोयँ। संज्ञाजातीरहै। बमनहोय। नेत्रबैठजायँ। स्वर घोंघोंबोले। शरीर शिथिलहोजाय जिसमें ये लक्षणहोयँ वह मरजाय ३॥

अथ अजीर्ण जातारहाहो उसका लक्षण॥

डकारैं शुद्धआवैं शरीरमें उत्साहहोय मलमूत्र और पवन की अच्छेप्रकार प्रवृत्तिहोय शरीर हलकाहोय भूख प्यास अच्छीतरह लगै तौ जानिये कि अजीर्ण दूरहुआहै॥

अथ मन्दाग्निको आदिले अजीर्ण बिषूचिका का यत्न॥

हड़कीछाल। सोंठि इन दोनोंको २ टंकले महीनपीस ४ टंक गुड़के साथ जलसे प्रतिदिनदे तौ आमाजीर्ण जाय क्षुधा बढ़ै १ अथवा हड़कीछाल। सेंधानोन। इनका सेवनप्रतिदिन करै तौ अजीर्ण जाय और भूखबढ़ै २ अथवा चित्रक। अजमोद। सेंधानोन। सोंठि। कालीमिरच। ये सब बराबरले महीन पीस २ टंक गौकी छांछकेसाथ १५ दिनले तौ क्षुधाबढ़ैमन्दाग्नि पांडुरोग और बवासीर जाय ३ अथवा आमाजीर्णहोय तौ खुरासानीबच और लवणकी बमनसे जाय। बिदग्धाजीर्ण होयतौ लंघनसे जाय। विष्टब्धाजीर्णहोय तौसेंकसेजाय। रस शेषहोय तौ सोनेसे जाय ४ अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। अजमोद। सेंधानोन। दोनोंजीरे। भुनीहींग। इनसब को बराबरले चूर्णकर १ या २ टंक खिचड़ीमें घृतसे मिलाय प्रथमग्रासके साथ प्रतिदिन खायतौ अजीर्णकभी न होय ५ यहहिंग्वष्टाकचूर्णहै अथवा जवाखार। सज्जी। चित्रक। पांचों नोन। इलायची। पत्रज। भारंगी। भुनीहींग। पुष्करमूल। अ० पुहकरमूल कचूर। निशोत। नागरमोथा। इन्द्रयव। डासरा। अ० ततरीक। अम्लवेत। जीरा। आमला। हड़की छाल। अजवाइन। पीपल। तिलोंकाखार। सहजनेका खार छीलेकाखार। सार। ये सब औषध बराबरले महीनपीसकपर छान कर बिजौरे के रसकी ८ पुट देकै सिद्धकर प्रतिदिन २

टंक जलके साथ ले तो बहुत भूखलगै और अजीर्ण। बायु गोला। उदरव्याधि। अण्डवृद्धि। बात। रक्त। इन सबरोगों को यह अग्निमुख चूर्ण दूरकरैहै ६ अथवा थूहर। आक। चित्रक। अरण्डकाखार। साठी। तिल। आंधीझाड़ा। छिला केला। डांसरा इन सबका पृथक् २ खार निकाल महीन पीस अदरखके रसकी ५ पुट देकै इस वैश्वानरचूर्णको सिद्धकरै पीछे १ टंक शीतल जलसे प्रात समय लेतौ अजीर्ण कभी न रहै भूख बहुत बढ़ै और पृथक् २ अनोपानसे अनेक रोगोंको दूर करै ७ अथवा सांभरनोन ४ पैसेभर कालानोन २ पैसे भर बायबिड़ंग ५ टंक सेंधानोन ५ टंक धनियां ५ टंक पीपल ५ टंक पीपलामूल ५ टंक पत्रज ५ टंक कालाजीरा ५ टंक नाग केसरि ५ टंक चव्य ५ टंक अमलबेत ५ टंक कालीमिरच ५ टंक जीरा २ टंक सोंठि २ टंक अनारदाना १० टंक तज १ टंक इलायची १ टंक इन सबको महीन चूर्णकर ४ माशेगौके मट्ठेसे अथवा कांजीसेले तौ गोला। फिया। उदररोग। बवासीर। संग्रहणी। बद्धकोष्ठ। शूल। सूजन। श्वास। कास। आमका बिकार। पांडुरोग। मन्दाग्नि। सब प्रकारके अजीर्ण इन सबको यह लवण भास्कर चूर्ण दूरकरैहै८ अथवा सेंधानोन १ टंक पीपलामूल २ टंक चव्य ३ टंक चित्रक ४ टंक सोंठि५ टंक हड़की छाल ६ टंक इनसेदूनी मिश्रीले पीछे इस तौलसे यह चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन ले तो अजीर्ण दूर होय क्षुधाबहुत लगे ९ यह बड़वानलचूर्णहै॥ अथवा शोधीगन्धक २टके पारा १ टके सार ५ टंक तामेश्वर ५ टंक पहले पारे और गन्धककी कजली करै फिर इन दोनोंको उस कजलीमें मिलावै तदनन्तर इन चारोंको लोहेके पात्रमें अग्नि पर चढ़ाकर पिघलावै फिर पिघलानेके पीछे चतुराई से अरण्डके पत्तों पर डालै फिर उसको महीन पीसके खरलमेंडाल १०० टके भर

जंभीरी निंबूकेरसमें सानै फिर उसमें बिजौरेकारस १०० टके भर सुखावै फिर इसमें पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। इनका काढ़ाकरै उसकाढ़ेके ५० पुटदे फिर जबयहसब सूख जाय तब इनसबकी बराबर भुनाहुआ सुहागा डालेऔर सुहागेसे आधा कालानोन मिलावै और सबकी बराबर काली मिरच डालै फिर इसमें चनेके खारकी ७ पुटदे फिरतैयारकर इस क्रव्यादिरसको अच्छेप्रकार सुन्दर पात्रमें रख छोड़े फिर इस रसमें से २ माशे ले और ऊपरसे सेंधानोन मिलाके गौ का मट्ठापिये तो अजीर्णमात्र तत्काल दूरहोयँ और अति गरिष्ठ भोजन कियाहुआ भी तत्काल पचजाय और शूल गोला अफरा फिया उदररोग आदि को भी यह रस दूरकरैहै १०— इतिक्रव्यादिरस॥

अथवा जवाखार। सज्जी। सुहागा। पारा। शोधी गन्धक। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि इनसबको बराबर ले और सबकी बराबर भुनीभंग। और भंगसे आधीसहजने कीजड़ले फिर इनको भंगकेरसमें १ दिन खरलकरै फिर सहजनेके रसमें एक दिन खरलकरै फिर चित्रकके रसमें एक दिन खरलकर धूपमें सुखावै फिर इसको सकोरेमें रख कपरोटी कर फूँकदे फिर निकालकर ७ दिन अदरखके रसमें खरलकर १ या २ रत्तीके प्रमाण शहतसे ले और ऊपरसे गुड़का काथले तो तत्काल सब अजीर्ण और अतीसार संग्रहणी कफ रोग। बमन। अरुचि। इनसबको दूरकरै और क्षुधाबढ़ावै यह ज्वालानल रस है और भावप्रकाशमें लिखा है॥ अथवा शोधीगन्धक। कालीमिरच। चूक। कालानोन इनको बराबरले महीन पीस २ टंक पानीकेसाथ ले तो बद्धकोष्ठ दूरहोय १२ अथवा पारा ५ टंक। शोधीगन्धक ५ टंक। शोधासिंगीमुहरा ५ टंक। कालीमिरच १० टंक। जायफल २ टंक। प्रथम पारे और गन्धक

की कजलीकरै फिर उस कजलीमें उन सबको मिलाके डांसरे अर्थात् तन्तरीक के रसमें ५ दिन खरलकरै फिर १ रत्ती प्रमाण ७ दिनखाय तौ भूखबढ़ै और अजीर्ण तत्कालमिटै यह रामबाण रसहै १३ अथवा शोधापारा। शोधीगन्धक। अजमोद। त्रिफला। जवाखार। चित्रक। सेंधानोन। सपेदजीरा। कालानोन। बायबिड़ंग। सांभरनोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। इन सबको बराबरले और सबकी बराबर बकायनके फल। प्रथम पारे और गन्धककी कजलीकरै फिर कजली में ये मिलावै फिर जंभीरीके रसमें ७ दिन खरलकरके एकरत्ती प्रमाण गोली बनाके प्रति दिन एक गोली खाय तौ भूख बहुत लगै इसकेऊपर हड़की छाल। सोंठि। गुड़ इनका काढ़ाले तौ सर्वरोगमात्र दूरहोयँ यह अग्नितुण्डावती गोलीहै १५ अथवा सोंठि १ भाग कालीमिरच २ भाग पीपल ३ भाग। सेंधानोन ४ भाग। शोधीगन्धक ५ भाग। इनसबको महीनपीस नींबके रसमें १० दिनखरलकरै फिर १ रत्तीके प्रमाण गोलीबांधै एक गोली प्रतिदिन खाय तौ क्षुधाबढ़ै यह क्षुद्रबोध रसहै १६ अथवा विड़नोन। कालानोन। अजवाइन। दोनोंजीरे। हड़कीछाल। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। चित्रक। अमलबेत अजमोद। धनियां। डांसरा। इनको बराबरले महीन चूर्णकर २ टंक प्रतिदिनले तौ पत्थरभी पचजाय तौ भोजन क्यावस्तु है १७ अथवाशोधीगन्धक। कालीमिरच। पीपल। सोंठि। सेंधानोन। जवाखार। लवंग। इन सबको बराबर ले महीन पीस निम्बूके रसमें १० दिन खरलकरै फिर १ रत्ती प्रमाण गोलीबांधै प्रतिदिन एकगोलीखाय तौ क्षुधा अधिकहोय १८॥ अथवा हड़कीछाल ६ भाग। पीपल ४ भाग चित्रक २ भाग सेंधानोन २ भाग। इनका महीन चूर्णकर २ टंक जलके साथ खाय तौ अजीर्ण जाय और क्षुधा लगै १९॥ अथवा भुनासु-

हागा २टंक पीपल २टंक। शोधा सिंगीमुहरा २ टंक हींग २टंक। कालीमिरच २ टंक इन सबको महीन पीसनींबूके रसमें १० दिन खरलकरै फिर मटरके प्रमाण गोलीबांधकर १ तथा २ गोली जल के साथ खायतौ अजीर्ण और बिशूचिका दूरहोयँ यह अजीर्ण कंटक रसहै २० ॥ अथवा शोधा सिंगीमुहरा २ टंक। भुना सुहागा २ टंक। कालीमिरच २ टंक सेंधानोन २ टंक इनसब को महीन पीस फिर इसमें अदरख का पावसेर रस डाल के सुखावै और दहीकोबांध उसकाजल १सेरले इसमेंडाल सुखा ले और निम्बूकाभी १ सेररस उसमें सुखावे फिर इसकीगोली २ रत्तीके प्रमाणबांधे एकगोली प्रतिदिन जलसेले तौ अजीर्ण अफरा। उदररोग। गोला। फिया। शूल ये सब जायँ और क्षुधाबढ़े यह क्रव्यादिरस है २१ अथवा दालचीनी १० टंक इलायची १० टंक लवंग १५ टंक भुनासुहागा १० टंक चित्रक १० टंक कालीमिरच ५ टंक सेंधानोन ३ पैसेभर इनकोमहीन पीस गरमजलसे १ टंकके प्रमाणले तौ अजीर्ण तत्कालजाय यहभी क्रव्यादिचूर्णहै २२ ये सर्व यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं॥ अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। पांचोनोन। भुनासुहागा। जवाखार। सज्जी। पारा। शोधागन्धक। शोधा सिंगीमुहरा। इनसबको बराबरले पारे और गन्धककीकजली कर उस कजलीमें इनसबको मिलाय अदरखके रसकी ७ पुट देकै १ रत्ती प्रमाणकी गोली बांधे १ या २ गोली लवंगके काथके साथले तौ अजीर्ण तत्कालजाय और क्षुधाबढ़ै यहक्षुधासा-गररसहै २३ अथवा १०० बड़ीहडलेके गौके मट्ठेमें औटावे फिर उनकी गुठलीनिकाल उन हडोंमें सोंठि। कालीमिरच। पीपल। चव्य। चित्रक। दालचीनी। पांचोंनोन। भुनीहींग। जवाखार। सज्जी। दोनोंजीरे। अजमोद। निसोत। इन सब को बराबरले महीनपीस निम्बके रसकी १० पटदे और इनके

समानचूक मिलाकै यह सब भरै पीछे उनको धूपमें सुखाय १ हड़ प्रतिदिनखाय तौ अजीर्ण। मन्दाग्नि। उदररोग। गोला। शूल। संग्रहणी। बद्धकोष्ठ। अफरा। आमबात। इन सबको यह दूरकर क्षुधाबहुत बढ़ावे है यह अमृत हरीतकी है २४॥ अथवा कालीमिरच ७ टंक अजवाइन २ टंक चित्रक २ टंक पीपल ७ टंक कालानोन २ टंक सांभरनोन २ टंक पारा १ टंक सेंधानोन २ टंक शोधागन्धक १ टंक पीपलामूल २ टंक सोंठि ५ पैसेभर हड़कीछाल ५ पैसेभर बहेड़ेकीछाल ५ टंक जीरा १ टंक चव्य ५ टंक इन सबसे आधी लवंगले पहिलेपारे और गन्धक की कजली करै फिर इन औषधियोंको महीनपीस कजलीमें मिलाय अदरखकेरसकी १० पुटदे और सबकी बराबर चूकमिला य२माशे प्रमाणकी गोलीबांधे १ गोलीजलसे खाय तौ अजीर्ण तत्कालजाय और इसका सेवन सदैव करै तौ क्षुधाबढ़ै और सब रोगमात्र दूरहोयँ और शरीर पुष्टिकरै यह लवंगामृत गुटिकाहै२५॥ ये सब वैद्यरहस्यमें लिखेहैं अथवा दालचीनी ५ टंक लवंग १० टंक दोनोंजीरे १० टंक सेंधानोन २० टंक सोंठि १० टंक कालीमिरच ५ टंक अजमोद ५ टंक हड़कीछाल ५ टंक पत्रज ५ टंक डांसरा अर्थात् तन्तरीक १० टंक कालानोन १० टंक निसोत १५ टंक सोनामक्खी पावभर। अनारदाना आधसेर। इन सबको महीनपीस निम्बूके रसकी १० पुटदे फिर इन सब के बराबर चूकमिलाय सुखाय अच्छेप्रकार अमृतबानमें धर रक्खे पीछे १ टंक जलसेले तौ अजीर्ण। बद्धकोष्ठ। मन्दाग्नि उदररोग। वायुगोला। फियाआदि सर्वरोगों को दूरकरैहै इस चूर्णकानाम राजवल्लभहै२६॥ अथवा हड़कीछाल। पीपल। कालानोन इनसबको बराबरले महीनपीस २ टंक गरमजलके साथ ले तौ अफरा आदि सर्वअजीर्ण जायँ२७॥ अथवा मुनक्का। दाख अर्थात् किसमिस। हड़कीछाल। मिश्री इनतीनोंको बराबरले शहत

मिलाकै २टंककीगोलीकरै पीछे एकगोली जलसेले तौ अजीर्ण जाय यह वृन्दनाम ग्रन्थमें लिखाहै २८॥ अथवा जीरा। काला नोन। सोंठि। पीपल। सेंधानोन। अजमोद। भूनीहींग। हड़की छालइनसबको घेले२भर और निसोत२टकेभर लेकैमहीन चूर्ण कर २ टंक गरमजलसेले तौ तत्काल अजीर्ण जाय और भूख लगै यह जीरकादि चूर्ण है और योगतरंगिणीमें लिखाहै २९ अथवा अजमोद। हड़की छाल। चित्रक। लवंग। दालचीनी। सेंधानोन इन सबको बराबरले महीन पीस२टंक पानीके साथ ले तौ अजीर्ण जाय और क्षुधा बढ़ै यह अजमोदादिक चूर्ण सर्वसंग्रह में लिखा है ३०॥ अथवा शोधागन्धक १ टकेभर चित्रक २ टंक कालीमिरच २ टंक पीपल ५ टंक जवाखार २ टंक सेंधानोन १ टंक कालानोन १ टंक सांभरनोन १ टंक इन सबको महीनपीस निम्बूके रसमें ७ दिन खरलकरै फिर १ टंक के प्रमाण गोली बांधकर एक गोली जलसेले तौ अजीर्ण। शूल। आमकादोष। गोला। अफरा। आदि सबतत्कालदूर होयँ यह गन्धकबटी सर्वसंग्रहमें लिखीहै ३१॥ इति मन्दाग्नि और अजीर्णका यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ विशूचिका का यत्न॥

एक लहसुनकी पोटीकी गुली। जीरा। शोधागन्धक। सेंधानोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। भुनीहींग इनसबको बराबरले खरलमें महीनपीस निम्बूके रसकी ५० पुटदे फिर इसकीगोली छोटेबेरके प्रमाणकरै एकगोली जलसे दे तौ विशूचिका और अजीर्ण मिटै क्षुधाबढ़ै यह जीरकादिकहै ३२॥ ये लोलिंबराजमें लिखाहै अथवा बायबिडंग। सोंठि। पीपल। हड़कीछाल। आमला। बहेड़ा। खुरासानी बच। गिलोय अर्थात् गुरच। शोधाभिलावां। शोधा सिंगीमुहरा अर्थात् सिंघिया इनसबको बराबरले महीनपीस गोमूत्रमें १दिनखरल

करके एकरत्ती प्रमाणगोलीबांधे १ गोली अदरखकेरसमें दे तौ अजीर्णजाय और दो गोलीदे तौ बिशूचिकाजाय तीनगोली देतौ सर्पका काटा अच्छाहो और चारगोलीदे तौ सन्निपातजाय यहसंजीवनीगुटिकाहै ३३॥ अथवा भुनासुहागा ५ टंकपारा ५ टंक शोधा गन्धक ५ टंक शोधा सिंगीमुहरा ॥ अर्थात् सिंघिया ५ टंक पीली कौड़ीकीराख २ टंक सज्जी २ टंक पीपल २ टंक सोंठि २ टंक काली मिरच २ टंक प्रथमपारे और गन्धककी कजली करै फिर इनसब ओषधियोंको जंभीरी निंबूके रसमें ८ दिन खरलकरै १ रत्तीके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली बिशूचिका वाले को दे तौ बिशूचिका तत्काल अच्छीहोय यहअग्निकुमार रसहै ३४॥ अथवा आककेपत्तोंकारस १ सेर धतूरेकेपत्तोंकारस १ सेर थूहरकादूध १ सेर सहजने की जड़कारस १ सेर कूट २ टकेभर सेंधानोन २ टकेभर तेल १ सेर कांजीकापानी ४ सेर इन सब को इकट्ठाकर कड़ाही में मधुरी आंचसे पकावै जब रसमात्र जल जाय और तेल रहिजाय तब इसतेलको मर्द्दनकरै तौ बिशूचिका और पक्षाघात जाय यह वैद्य रहस्यमें लिखाहै ३५॥ अथवा कणगच अर्थात् कंजाकीजड़। आधीझाड़ेकीजड़। नींब कीछाल। गिलोय। कुड़ाकीछाल। इन सबको बराबरले २ टंक काढ़ा ३ दिन देतौ बिशूचिका जाय ३६॥ अथवा हड़कीछाल। बच। भुनीहींग। इन्द्रयव। भांगरा। कालानोन। अतीस इनको बराबरले महीन पीस २ टंक जलके साथ ले तौ बिशूचिका जाय ३७॥ अथवा इलायची ४ मासे लवंग ४ मासे अफीम १ मासे जायफल १० मासे इनको महीन पीस ४ मासे गरम जलके साथ लेतौ बिशूचिका तत्काल जाय ३८॥ अथवा चूकको औटायके उसका १ सेर रस निकाल उसमें सेंधानोन ५ टंक कूट १ टंक तेल पावभर इन सबको इकटा कर मन्द अग्नि से पकावै जब रस जलजाय और तेलमात्र रहि

जाय तब उसको मर्दन करै तौ बिशूचिका दूरहोय ३९॥ अथवा जवका आटा ४ पैसे भर जवाखार ५ टंक इनको मटे में पकाकर गरम लेपकरै तौ पेटका शूल बिशूचिका दूर होय ४०॥ अथवा कडुवेतेल को गरम २ मर्दनकरै तौकोख का दर्ददूरहोय॥ अथवा बिशूचिकामें तृषा बहुतबढ़ै तौ लवङ्ग का काढ़ा देनेसे तृषा दूरहोय ४१॥ अथवा बिशूचिका बहुत बढ़ै तौ उसकी पसली दागदे तौ बिशूचिका दूरहोय ४२। अथवा बिजौराकी जड़। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। हल्दी कणगच अर्थात् कंजा के बीज इनको बराबर कांजीके पानीमें महीन पीस अंजन करै तौ बिशूचिका जाय ४३॥ यह सर्व संग्रहमें लिखाहै—इति विशूचिका का यत्नसम्पूर्णम्॥

अथ अलसविलंबिका का यत्न॥

साबुन ६ टंक नीलाथोथा १० टंक इनको जलसे महीन पीस गुदामेंलगावै तौ तत्काल बन्दछूटै और अलसबिलम्बिका जाय ४४॥ अथवा दारुहल्दी। चोख अर्थात् सत्यानासी की जड़। कूट। सौंफ। हींग। सेंधानोनइनको बराबरलेके कांजी के पानीमें महीन पीस गरमकर उदरमें लेपकरै तौ अलसबिलम्बिका दूरहोय ४५ अथवा जवका आटा आधपाव उसमें १ टकेभर सज्जीडाल पकाकर कूखमें गरम२ लेपकरै तौ बिशूचिका और अलसबिलम्बिका दूर होय ४६॥ इति विशूचिका और अलसबिलम्बिकाका यत्न॥

अथ कृमिरोगकी उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

प्रथम कृमि दोप्रकारके हैं एक बाहरके दूसरे भीतरके बाहर वालोंका जन्म तौ दोस्थानसेहै एक मलसे उपजे दूसरा पसीनेसे जैसे जूँ लीख जमजूं॥ अथ भीतरकेकृमिकी उत्पत्ति॥

अजीर्ण में भोजनकरै और प्रति दिन मीठा खट्टा पतला खाय और भोजन करके परिश्रम न करै दिनमें सोवै और वि-

रुद्ध भोजनकरै तौ पुरुषके पेटमें कृमिपड़जाते हैं ये कृमिगिड़ोला आदि भेदों से २० प्रकार के हैं॥

अथ उदरमे गिड़ोला आदि कृमि पड़गये होयं उसका लक्षण ॥

ज्वर हो आवै और शरीरका रंग और का और होजाय। पेटमें शूल होय। हृदयदूखै। बमन। भ्रम। भोजनमें अरुचि। अतीसार। ये लक्षण जिसके होयंउसके जानिये किपेटमेंकृमि गिड़ोलाहै १॥

अथ कृमिरोगके दूरकरने का यत्न ॥

खुरासानी अजवाइन २ टंक बासी पानी से ७ दिनलेतौ पेटके कृमि जायँ २ अथवा १ टंक पलाशके पापड़ाको पानीमें पीस २ टंक शहत डाल ५ दिन पिये तौ पेटके कृमिजायँ ३॥ अथवा २ टंक बायबिडंग महीन पीस शहतके साथ ७ दिन ले तौ पेटके कृमिजायँ ४॥ अथवा बायबिडंग। सेंधानोन। हड़की छाल। जवाखार। इन सबको बराबरले महीन पीस २ टंक मट्ठेके साथ ७ दिन पिये तौ पेटके कृमि झड़पड़ें ५ अथवा १० टंक नींबके पत्तांकेरस में १ टंक कालानोन मिलाकै ७ दिनपियेतौ पेटके कृमिजायँ ६॥ अथवा पारा १ टंकशोधा गन्धक २ टंक खुरासानी अजवाइन ३ टंक इन्द्रायनके फल ४ टंक पलाशकापापड़ा ५ टंक इन सबको महीन पीस २ टंक नित्य ५ टंक शहतके साथ ७ दिनखाय तौ पेटके कृमि जायँ यह सर्व संग्रहमें लिखाहै ७॥ अथवा नागरमोथा त्रिफला। देवदारु। सहजनेकीजड़। इनको बराबरले जवकुट कर ५ टंकका काढ़ा ७ दिनलेतौ पेटके कृमिजायँ ८॥ अथवा बायबिड़ंग सेंधानोन। सुनीहींग। पीपल। कबीला अर्थात् कमीला। कालानोन। इन सबको बराबरले महीन पीस २ टंक गरम पानीसे ७ दिनले तौ पेटके कृमिजायँ यह वैद्य विनोद में लिखा है ९॥

अथ शिरमें जूं लीख पड़जायं उनके दूरकरनेका यत्न॥

धतूरे के पत्तोंके रसमें। अथवा नागरबेल के पत्तोंके रसमें पारा मिलाकर बालोंमें लेपकरै तौ जूं लीख मरजायं॥

अथगुदामेंचुन्ने पड़गये हों उसका यत्न॥

हींगको जलमें पीस गुदामें लेपकरैतौ चुन्नेजायं १॥ अथवा काहूकेफेल। बायबिड़ंग। करिहारीकीजड़। सपेदचन्दन। राल। खस। कूट। भिलावां। लोबान। इन सबको बराबर मिलाकै धूनीदे तौ चुन्ने और घरके मच्छड़ खटमलभीजायं २॥ यह वैद्यरहस्य और वैद्यबिनोद में लिखाहै इति कृमि रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथपांडुकामला हलीमक रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

प्रथम पांडुरोग बात पित्त कफ सन्निपात मट्टी खाना इन भेदोंसे ५ प्रकारका उत्पन्नहोताहै॥

अथ पांडुरोगकी उत्पत्ति॥

अधिक खेद करनेसे खट्टी वा तिक्तबस्तु खाने अथवासोने से बात पित्त कफ पुरुषके रुधिरको बिगाड़ शरीरको त्वचाको पीली करदे हैं॥

अथ पाण्डुरोगके पूर्वरूपका लक्षण॥

त्वचाफटने लगै अंगमेंपीड़ाहोय मट्टीखानेकी इच्छारहैनेत्रोंपर कुछ सूजनहोय मलमूत्र पीले होय अन्न पचै नहीं ये लक्षण जिसमें होयं तौ वैद्य बतलादेकि तुम्हारे पांडुरोग होगा इस पांडुरोगको लौकिकमें पीलियाभी बोलते हैं॥

अथ वातके पाण्डुरोगका लक्षण॥

जिसकी त्वचा मूत्रनेत्र रूखेहोयं अथवा काले औरलालहोयं और शरीरमें कम्पपीड़ा अफरा और भ्रमादिक होयँ तौ बातका पांडुरोग जानिये॥ अथ पित्तके पाण्डुरोगका लक्षण॥

मल मूत्र नेत्र जिसके पीले होयं शरीरमें तृषा दाह ज्वर

होय और पतलामल शरीरकीत्वचापीली होय तौ पित्तकापांडु रोग जानिये ॥

अथ कफकेपाण्डुरोगका लक्षण ॥

मुखसे कफनिकलै शरीरमें सूजनहोय तन्द्रा आलस्यऔर शरीर भारीहोय त्वचा मूत्र नेत्र सपेदहोयं तौ कफका पांडुरोग जानिये ॥

अथ सान्निपात के पाण्डुरोगका लक्षण ॥

कषैलीमट्टी खानेसे बातका कोप होताहै और मीठी मट्टी खानेसे कफका कोप होताहै फिर वही मट्टी सातो धातुओं को और खाये हुये भोजनको रूखाकर डालैहै फिर वही मट्टीपेट में विगड़कर पकीहुई नसोंको फुलादेहै अथवा रसको बहने से रोंकदेतीहै तब सब इन्द्रियोंका बल जातारहै है और शरीर का बीर्य्य और पराक्रमभी जातारहता है फिर वही मट्टी शरीर की त्वचाको पीली करके बल बर्ण अग्नि इनका नाशकरै है तब उसको तन्द्रा आलस्य । श्वास । कास । शूल । बवासीर । अरुचि और नेत्र । पावं उदर । इन्द्री । इतने अंगोंपर सूजन होय पेटमें कृमि अतीसार मल कफ रुधिर आदिसे मिलाहोय ये सब लक्षण होयं तौ मट्टीखानेका पांडुरोग जानिये ॥

अथ पाण्डुरोगका असाध्यलक्षण ॥

शरीरका रुधिर जातारहै । शरीर सपेद होजाय । दांतनख नेत्र पीलेहोजायं और सब पदार्थ जिसको पीलेही पीलेदीखें और सब शरीरमें सूजन और अतीसार और ज्वर भीहोय ऐसा पांडुरोग होय तौ वहरोगी मरजाय ॥

अथ कामलारोग का लक्षण ॥

जोपांडुरोगी गरमवस्तु बहुतखाता है उसकापित्त रुधिर और मांसको दग्धकरै है और नेत्र । त्वचा । नख । मुख आदि अंग हलदीके सदृश पीले होजायं हैं और मलमूत्र रुधिरसा उतरै इन्द्रियोंका बल जातारहै दाहहोय अन्नपचै नहीं दुर्बलता और अरुचिहोय ये लक्षणहोयँ तौ कामलारोग जानिये ॥

अथ हलीमकरोगका लक्षण ॥

जिसपांडुरोगीकै। बात। पित्तबढ़ै और त्वचा। हरी। पीली। कालीहोजाय और बल उत्साह जातारहै और तन्द्रा। मन्दाग्नि। सूक्ष्मज्वर। दाह। तृषा। अरुचि। भ्रम येसर्व होयँ स्त्री का संगप्यारा नलगै अंगमें पीड़ाहोय तौहलीमकरोगजानिये॥

अथ पाण्डुरोगका यत्न ॥

सारको गोमूत्रमें ७ दिनपकावै फिर महीनपीस जल से १ टंक गुड़केसाथ ४ रत्ती प्रमाण १५ दिनतकले तौ पाण्डुरोग जाय १॥ अथवा मांडूरको गोमूत्रमें पकाय १ टंक गुड़केसाथ १५ दिन ले तौ पाण्डुरोग जाय २ अथवा सांठीकीजड़। निसोत। सोंठि। मिरच। पीपल। बायबिडंग। दारुहल्दी। चित्रक। कूट। हल्दी। त्रिफला। दातूणी। चव्य। इन्द्रयव। कुटकी। पीपलामूल। नागरमोथा। काकड़ासिंगी। खुरासानी अजवाइन। कायफल इनसबको टंक२भरले महीनपीसे और इनसबकादूनामांडूर मिलावै फिरइनसबको अष्टगुणित गोमूत्र मेंपकाकर१टंक प्रमाणकी गोलीबांधे१गोली गौके मट्ठेकेसाथ मिलाके १५ दिनले तौ असाध्यभी पाण्डुरोगजाय और कामला। हलीमक। श्वास। कास। राजरोग। ज्वर। सूजन। शूल फिया। अफरा। बवासीर। संग्रहणी। कृमिरोग। बातरक्त। कोढ़ इन सबरोगोंको यह दूरकरैहै यह पुनर्नवादि माण्डूररस है ३ अथवा हड़कीछाल ५ टंक बहेड़ेकीछाल ५ टंक आमला ५ टंक सोंठि ५ टंक कालीमिरच ५ टंक पीपल ५ टंक नागरमोथा ५ टंक बायबिडंग ५ टंक चित्रक ५ टंक मारा हुआ सार ९ पैसेभर इन सबको महीनपीसे फिर सार मिलाकर ९ रत्तीलेकै शहतके साथ अथवा घृतकेसाथ अथवा गौकेमट्ठेके साथ अथवा गोमूत्रकेसाथ ले तौ पाण्डुरोग। सूजन। मन्दाग्नि। बवासीर अरुचि इनसब रोगोंको दूरकरै और खानेका

यह प्रकारहै कि प्रथम दिन २ रत्तीखाय फिर प्रतिदिन २रत्ती के हिसाब १८ रत्तीतक बढ़ावे यह नवाशयचूर्ण है ४ अथवा अडूसा। गिलोय। नींबकीछाल। त्रिफला। चिरायता। कुटकी इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ाकर शहतमिलाय १०दिनले तो पाण्डुरोग। रक्त। पित्त। कामला। हलीमक ये सब दूरहोयँ ५ अथवा त्रिफला। गिलोय।दारुहल्दी। नींब इनके पृथक् २ रसोंमें शहतमिलाय १० दिनपिये तो पांडुरोग कामला। हलीमक ये सब जायँ ६ अथवा दड़घलके रस का नेत्रोंमें अंजन करै तो पाण्डुरोग। कामला। हलीमकजायँ ७ (यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै) अथवा चिरायता। कुटकी। देवदारु। नागरमोथा। गिलोय। पटोल अर्थात् परवरकेपत्ते। धमासा। पित्तपापड़ा। नींबकीछाल। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। चित्रक। त्रिफला। बायविडंग इनसबको बराबरले महीन पीस इनकी बराबर इनमें सारमिलाय १ टंक शहतके साथ अथवा मट्ठेके साथ प्रतिदिनखाय तो पाण्डुरोग। कामला। हलीमक। सूजन। प्रमेह। संग्रहणी। श्वास। कास। रक्त। पित्त। बवासीर। आमबात। गोला। कोढ़ ये दूरहोयँ यह अष्टादशांगावलेहहै८(यहभावप्रकाशमें लिखाहै) अथवा कड़वी तूँबीकी गिरीके रसकी नासले तो तत्काल पीलिया जाय ९ और पाण्डुरोगवाला यव। गेहूँ। चावल। मूंग। अरहर। मसूर ये नाज खाय ९॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थे अजीर्णमन्दाग्निभस्मकविशूचिकाअलसविलंबिकाकृमिरोगपाण्डुरोगोत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणंनामचतुर्थस्तरंगः ४॥

अथ रक्तपित्तकी उत्पत्ति का लक्षण॥

बहुत धूपमें रहने और खेदकरने और बहुत चलने और अधिक मैथुन और शोच करने और तीक्ष्ण। गरम। खारी। कड़वी वस्तु और नोन खटाई के खाने से पित्त दग्ध होकर शरीरके रुधिर को दग्धकरै है तब उसका रुधिर दो प्रकार से प्रवृत्त होताहै एक ऊपर दूसरा नीचे ऊपर तो नाक। नेत्र। कान। मुखमें और नीचे। लिंग। योनि। गुदामें होकर प्रवृत्त होताहै और अधिक तर जब रुधिर कुपित होताहै तो सब बालों में प्रवृत्त होताहै॥

अथ रक्तपित्तकापूर्वरूप॥

अंगों में पीड़ा और बमन होय। ठण्ढा अच्छा लगै और मुखसे धुआं निकलै रुधिरकी बास मुखमें आवै तौ जानिये कि रक्त पित्त होगा॥

अथ कफके रक्तपित्त का लक्षण॥

शीतल। पीला। चिकना मोरके पंखसदृश रुधिर होय तौ कफका जानिये॥

अथ बातकेरक्तपित्तका लक्षण॥

काला। झागसमेत महीन धारलिये सूखारुधिर होय तौ बात का जानिये॥

अथ पित्तके रक्त पित्तका लक्षण॥

कत्थेके काढ़ेके समान काला गोमूत्र और स्याहीके सदृश चिकना रुधिरहोय तौ पित्तका जानिये और ये सम्पूर्ण लक्षण रुधिरमें पायेजायँ तौ सन्निपातका जानिये नाक। मुख। आंख। कानमें होकर रुधिरजाय तौ साध्य जानिये और गुदा। लिंग। योनिमें होकर जाय तौ याप्य जानिये और दोनोंमार्गोंसेजाय तौ असाध्य जानिये॥

अथ रक्तपित्तका उपद्रव॥

जिसका शरीर रोगों से क्षीण और वृद्ध और दुर्बल होय और लंघन करता होय तौ असाध्य जानिये और श्वास।

कास। ज्वर। बमन। मदयुक्त। पाण्डुरोगीके सदृश। दाह। मूर्च्छा और अधैर्य्यवान् के सदृश। हृदयशूल। तृषा। और अतीसार वालेके सदृश भोजनमें अरुचिहोय तौ उपद्रवजानिये और रक्त पित्तवालेको आकाश लालदीखे और नेत्र लालहोयँ और रुधिरकी डकारआवे और सर्वत्र रुधिरसादीखै तौ असाध्यजानिये॥

अथ रक्तपित्तका यत्न॥

नकसीर वाले के मुख में रुधिर जाय तौ हड़। त्रिफला। निसोत। किरमाला इनका जुलाब दे तौ रक्त पित्त जाय १॥ और नीचे के मार्ग का रक्त पित्त बमन कराने से जाता है २ अथवा खस। कमलगट्टे। अडूसा। गिलोय। मुलहठी। महुआ। नागरमोथा। रक्तचन्दन। धनियां इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा शहतडालकर ले तौ रक्तपित्तजाय ३ अथवा प्रियंगुकेफूल। पठानीलोध। रसौत। चक्कीकीमट्टी। अडूसा इन सबको बराबरले ८ टंकका काढ़ा शहत मिश्रीमिलाय १० दिनले तौ रक्त पित्तजाय ४ अथवा दूबकेरसकी वा अनारके फूलोंके रसकी वा अमलतासके रसकी अथवा हड़ को शीतल जलमेंपीस उसकी नासदे तौ नकसीर बहनादूरहोय ५ अथवा दूब और आमलेको पीसकर मस्तकमें लेपकरै तौ नकसीर तत्काल बन्दहोय ६॥ अथवा पक्कागूलर वा छुहारा वा दाख अर्थात् किसमिस शहतसे खाय तौ रक्त पित्तजाय ७ (ये सम्पूर्णवैद्यविनोदमें लिखे हैं) अथवा धनियां। आमला। अडूसा। दाख अर्थात् किसमिस। पित्तपापड़ा इनसबकोबराबरले फिर ५ टंक शीतल जलमें भिगोय पानीसे पीस छानकर पिये तौ रक्तपित्त। ज्वर। दाह। तृषा ये सबजायँ ८ अथवा मुनक्का। दाख अर्थात् किसमिस। सपेदचन्दन। पठानीलोधकेफल। प्रियंगु इनको बराबरले महीनपीस शहतसे १० दिनचाटै तौ रक्त पित्तजाय ९ अथवा बसन्तमालिनीरस बोलबद्ध। परपटीरस

जो पीछे लिखे हैं उनसेभी नकसीर अच्छीहोती है १० अथवा प्याजके रसकी नासलेय तो नकसीर अच्छी होतीहै ११ अथवा १०० बारका धोया घी मस्तकमें लेपकरै तो नकसीर बन्दहोय १२ अथवा बड़ा पका पेठा लेके उसके बीज और छिलके दूरकर पानी में पकाय ठण्ढा कर गाढ़े वस्त्रमें उसका जल छानकर उस जल को जुदे बासन में रक्खे और पेठे को कड़ाही में घीसे भूनै जलने न दे फिर उस पेठे के रसमें मिश्री की चासनी करै उसमें पेठेको डाले और पीपल २ टंक सोंठि २ टंक जीरा २ टंक धनियां ५ टंक पत्रज ५ टंक इलायची५ टंक कालीमिरच ५ टंक तज ५ टंक बंशलोचन ५ टंक इन सबको महीनपीस पावभर शहतकेसाथ उस चासनीमें मिलावै फिर इसमेंसे १ टके या २ टकेभर प्रतिदिन खाय तौ रक्तपित्त। ज्वर। तृषा। दाह। प्रदर। क्षीणता। बमन। स्वरभंग। कास। क्षयी इन सब रोगों को यह कूष्माण्डावलेह दूरकर शरीर को पुष्ट करैहै १३ (इतिकूष्माण्डावलेह) अथवा इलायची। पत्रज। वंशलोचन। तज। दाख। अर्थात् किसमिस। पीपल इनसब को दो २ पैसे भर ले महीन पीस मिश्री। मुलहठी। दाख अर्थात् किसमिस। छुहारा। इन सबको टके २ भरले महीन पीस २ टंक शहतमें मिलायकर ६ मासेके प्रमाण गोली बांध एक गोली प्रतिदिन खाय तो। रक्तपित्त। कास। श्वास। पित्तज्वर हिचकी। मूर्च्छा। मन्दाग्नि। भ्रम। तृषा। पशुलीकाशूल। अरुचि। स्वरभंग। क्षयी। इन सब को यह एलादि गुटिका दूर कर देहको पुष्टकरै है १४ (यह एलादि गुटिका है और वैद्यरहस्यमें लिखाहै)—इति रक्तपित्तके यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ राजरोग और शोषरोगको उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

राजरोग पांचप्रकारका है वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ हृदय में चोटलगनेका ५ और शोषरोग छप-

कारकाहै एकतौ अत्यन्त स्त्रीसंगसे १ दूसरा बहुत शोचसे २ तीसरा गंभीर व्रण और हृदयमें बहुत चोट लगनेसे ३ चौथा बहुत मार्ग चलनेसे ४ पांचवां अत्यन्तखेदसे ५ छठावृद्धावस्थासे ६ इत्यादिक कारणोंसे छ प्रकारका है ॥

अथ राजरोगकी उत्पत्ति ॥

मलमूत्र और अधोवायुका रोंकना वीर्यकी क्षीणता बहुत साहस करना । सामर्थ्य से बाहर कामकरना कुसमय में अत्यन्त भोजनकरना । इत्यादि बातें रसकी वहनेवाली नाड़ीको रोंकके वीर्य को क्षीणकरती हैं इस कारण से इस रोगमें कफ प्रधान है और यह कफ बहुत स्त्री संगकरने से त्रिदोष रूप राजरोग होकर पैदा होताहै रस बहनेवाली नाड़ियों को रोंक के और वीर्य्य को क्षीणकर पीछे सातों धातुओंको क्षीणकरता है तब यह मनुष्य प्रतिदिन सूखता जाताहै (यह राजरोगकी उत्पत्ति है) ॥

अथ राजरोगकापूर्वरूप ॥

श्वास । अंगोंमें पीड़ा । खासीमें कफथूकना । तालूमें शोष । वमन । अग्निकी मन्दता । पीनस । खांसी । अत्यन्त निद्रा । नेत्रोंमें श्वेतता मांसखाने और मैथुनकरनेकी इच्छारहै येलक्षण मनुष्यके होयँ तौ जानिये कि राजरोग पैदाहोनेवाला है ॥

अथ राजरोगका लक्षण ॥

पसुली और कन्धों में सन्ताप हाथ पैरोंमें जलन सब अंग में ज्वररहै ये लक्षणहोयँ तौ राजरोग जानिये अथवा भोजनमात्रमें अरुचि और श्वास । कास होयं मुखमें रुधिर आवे स्वरभंग होय ये लक्षण होयं तौ राजरोग जानिये ॥

अथ वातसेराजरोगका लक्षण ॥

स्वरभेद और शूल होय । कन्धे और पसुलीमें संकोच ये बातें होयं तौ बातका राजरोग जानिये ॥

अथ पित्तके राजरोगकालक्षण॥

ज्वर दाह अतीसारहोय मुखमेंरुधिर आवै तौ पित्तकाराजरोग जानिये॥

अथ कफके राजरोगका लक्षण॥

माथाभारी रहै भोजनमें अरुचि। खांसीहोय। कंठसेबोल्या न जाय तौ कफका राजरोग जानिये। ये सम्पूर्ण मिले हुये होयं तौ सन्निपातका राजरोग जानिये॥

अथ हृदयमें चोटलगनेसे उपजा जो राजरोग उसका लक्षण॥

शिरमें पीड़ा। मुखसे रुधिरकी बमन। शरीरमें रूखापन होय वह राजरोगी असाध्य जानिये १ अथवा जिसके नेत्र श्वेत होयं अन्नमें अरुचिहोय। और श्वासकारोग और प्रमेह बढ़जाय और बहुत मूत्र करैवहराजरोग मृत्युबशहोताहै॥

अथ राजरोगीकी अवधि॥

अच्छा शास्त्रज्ञ यत्नकारक और सम्पूर्णक्रिया कुशल चतुर तौ वैद्य मिलै और रोगी तरुण और धनवान् और वैद्यका आज्ञावर्ती और जितेन्द्रियहोय वहभी १००० दिन तक जियै उपरान्त नहीं जियै॥

अथ साध्यराज रोगका लक्षण॥

जिसके ज्वर न होय और बलवान् होय वैद्यकी दीहुई कड़वी कषैली औषध खाजाय और क्षुधा उसकी तीव्रहोयऔर शरीर पुष्टहोय ऐसे रोगी का यत्न करनाचाहिये १॥

अथ अधिक मैथुनसे उत्पन्न जो शोषरोग उसका लक्षण॥

लिंगेन्द्रिय और पोतोंमें पीड़ाहोय और मैथुन करने की सामर्थ्य न रहै फिर हाड़ोंका नाशहोय और पीछे कहेहुयेराजरोगोंकेभी उपद्रव होयं शरीरपीला और चिन्ताग्रस्त होजाय और अंग शिथिल होयं ये लक्षणहोयं तब जानिये किइसके मैथुन करनेसे शोषरोग हुआहै और शोच करने से जो शोषरोगहोताहै उसकाभी यहीलक्षणहै इसमें वीर्य्यका क्षयनहींहै२॥

अथ जराशोषीका लक्षण ॥

कृशहोकर। वीर्य्य। बुद्धि। बल ये जातेरहैं शरीरमें कम्प भोजनमें अरुचिहोय। घों घों बोलै कफबहुत थूकै शरीरभारी पीनस। और रूखा शरीर होय ये लक्षण जिसमें होयं तो जानिये कि शोषी है ३॥

अथ मार्गशोषकालक्षण ॥

यहभी जराशोषीके लक्षणोंसे मिलताहै परन्तु जराशोषी के हृदयमें पीड़ा नहींहोतीहै और मार्ग शोषीके होतीहै ४॥

अथ गम्भीरादि व्रणसे उत्पन्न शोषरोगका लक्षण ॥

बहुततीरन्दाजीसे और भारके उठानेसे हृदयमें जोर आ-पड़े है और अत्यन्त मैथुन करके सूखाभोजन करै उसके भी हृदयमें यह रोग पैदा होताहै और हृदय दूखै पसुली और अंग सूखै शरीरमें कम्पहोय। वीर्य्य। बल। वर्ण। अरुचि। अग्निये सबघटि जांय और रुधिर थूकै रुधिरही बमन करै और रुधिरही दिशा और मूत्रमें जाय पसली और कमरदु-खे ज्वर होआवे सूखकर महा कंगालके सदृशहोजाय अती-सार और खांसी होय ये सब लक्षण होयँ तौ व्रणशोषकारोग जानिये॥

अथ राजरोग और शोषरोगकायत्न ॥

वंशलोचन ८ टंक पीपल ४ टंक इलायची २ टंक तज १ टंक मिश्री १६ टंक इनको महीनपीस शहत और मक्खनकेसाथ चाटैतौराजरोग। श्वास। पित्तज्वर। पसलीकाशूल। मन्दाग्नि। अरुचि। हाथपैरोंकीदाह। रक्त पित्त इन सबको दूरकरै है १ यह सितोपलादि अवलेह है अथवा गिलोय सतसार ये दोनों १ टंकले शहत और मक्खनके साथचाटै तो राजरोगजाय २ अथवा माराहुआ पारा ३ भाग सुवर्णकीभस्म १ भाग मैन-सिल १ भाग गन्धक १ भाग इनसबको इकट्ठाकर बड़ीपीली कौड़ीमेंभरे फिर बकरीके दूधमें सुहागेको पीस उस सुहागे से

कौड़ीका मुँह बन्दकरै फिर कौड़ीको एक कुल्हड़ेमें रखबन्दकर गजपुटकी आंचमें फूँकदे फिर शीतल करके निकालले यहराज मृगांकरसहै इसको ४ रत्तीप्रमाण १महीनेतक बर्द्धमानपीपल अर्थात् ३ पीपल से २१ तक शहत मक्खनामिलाके खाय तो राजरोग अवश्य जाय॥ यह राजरोग मृगांकरसहै ३ अथवा भीमसेनी कपूर ५ टं० तज ५ टं० कालीमिरच ५ टं० जायफल ५ टं० लवंग ५ टं० नागकेसर ७टं० पीपल ८टं० सोंठि ९ टं०इन सबको महीनपीस सब*सेदूनी मिश्रीमिलाय शहत आदि अनेक २ अनोपानसे १ टं० ले तो राजरोग। अरुचि। क्षयी। कास। श्वास। गोला। बवासीर। बमन। और कंठका रोग इनसबरोगोंको यह दूरकरै ४ यह कर्पूरादिचूर्णहै अथवा शोधापारा ५ टं० शोधीगन्धक ५ टं० अभ्रक ५ टं० शिंगरफ २ टं० मैनसिल २ टं० पहलेपारे और गन्धककी कजली करै फिर इसमें ये औषधियां मिलावै फिर इनसबका आधासार मिलावै तदनन्तर इन सबको खरलमें डाल शतावरिके रसकी १४ पुट देकर सुखाले फिर २ रत्ती तथा ३ रत्तीमिश्रीके साथ प्रातःकालखाय तो राजरोग। बातपित्त कफरोग और सब ज्वर को दूरकरैहै५ यहकुमुदेश्वररस वैद्यरहस्यमें लिखाहै॥ अथवा चौराई के सागको रांधकर खूबघृत मिलाके नित्य भोजन करै तो राजरोग और बहुत मूत्रतादूरहोय ६॥ अथवाबड़े २पके हरे ५००आमलोंको जलमेंपकाय उनकारस निकालै उसरस में ५० टकेभर मिश्रीकी चासनी चांदीके पात्रमें करै फिर इस चासनीमें ये औषधेडाले मुनक्का। दाख अर्थात् किसमिस। अगर। चन्दन। कमलगट्टे। इलायची। हड़कीछाल।*काकोली

* ८ चीनी अथवा मिश्री जितनी चूर्ण में मिलानाहोय तो दूना मिलाना चाहिये अगर गुड मिलाना होय तो बराबर चूर्ण के डाले ये प्रमाण आठमल्लोंका है॥

* २४ इनछः औषधियों के अभाव में क्रम से ये औषधियां छोडे शतावरि गुडुच असगन्ध वाराहीकन्द यह पाठ भावप्रकाशका है॥

क्षीरकाकोलीऋद्धि। वृद्धि। मेदा। महामेदा। जीवकऋषभक गिलोय। काकडासिंगी। पुष्करमूल अर्थात् पुहकरमूल। कचूर अडूसा। बिलारीकन्द। खरैटी। सरवन। पिथवन। दोनोंकटेली बेलगिरी। अरणी। अरलू खह्मारि। पाढ़। नागरमोथा इन सब ओषधियोंको एक २ टकेभर लेके अत्यन्त महीनपीसके आमलेकेसंयोगकी मिश्रीकी चासनीमें डाले फिर उसचासनी में ६ टकेभर शहतडाले फिरपीपल २ टं० तज २टं० पत्रज २टं० नागकेसर २ टं० इलायची २ टंक बंशलोचन २ टंक० येसब महीन पीसडाले फिर इनको एक रसकर १। टकेभर प्रतिदिन खाय तौ राजरोग शोषरोग को दूरकर बलकान्ति पुष्टता और वृद्धको तरुण यह च्यवनप्रास अवलेह करताहै ७ इतिच्यवनप्रास अवलेह सम्पूर्णम् ॥

अथवा अडूसेकारस और कटेलीकारस १। टकेभरले उस में शहत १टंक पीपल २ टं० मिलाइके प्रतिदिन खायतौराज रोग दूरहोय अथवाभ्रक१भाग पारा १ भा० अनबेधेमोती २ भा० शोधीगन्धक २ भा० प्रथम पारे और गन्धककी कजली करै पीछे सब ओषधि मिलाय कांजीमें १ दिन खरलकरै फिर इसकी गोली कर एक सरवे में धरकर कपरौटी करै उसकपरौटी किये हुये सरवे को एक लोनसे भरी हुई हँड़िया में धर एक दिनतक अग्निदेकै पकाले जब शीतलहोय तब काढ़कर १ या २ रत्तीके प्रमाण प्रातःकाल मिश्रीके साथले तौराजरोग जाय ८ यह कुमुदेश्वर रसहै ॥ वैद्यविनोदमें लिखाहै ४ अथवा बड़ीपीली कौडी और पारा गन्धक बराबर ले उसकी कजली कर उसको कौड़ीमेंभरै और उस कौडीके मुँहको भुनेसुहागेसे बन्दकरै फिर उस कौडीको सरवे में बन्दकर गजपुटसे फूँकदे जब शीतलहोय तब काढ़े इसमेंसे १ रत्ती प्रमाणखाय तौ राजरोग। कास। श्वास। संग्रहणी। ज्वरातीसार। इन सब रोगों

को दूरकरे यह कपर्द्दिकेश्वर रसहै और रुद्रदत्तनाम ग्रन्थ में लिखा है १० अथवा राजरोग शोषरोग वाले को दूध मीठा अनार ये गुणकारी हैं और वृन्दमें लिखाहै ११ अथवा शुद्ध शिलाजीतके सेवनसे राजरोगजाय १२ यह चरकमें लिखाहै॥ अथवा तालीसपत्र १० टंक चित्रक १० टंक हडकीछाल १० टंक अनारदाना १० टं० डांसरा अर्थात् तन्तरीक १० टं० अजमोद २॥ टं० गजपीपल २॥टं० अजवाइन २॥ टं० भाऊकीजड़ २॥ टं० जीरा २॥ टं० धनियां २॥ टं० जायफल२॥ टं० लवंग २॥ टं० तज २॥ टं० पत्रज २॥ टं० इलायची २॥ टंक इनसबकी बरावर मिश्रीमिलाकर महीनपीस २॥ टंक प्रतिदिन बकरीकेदूधमेंले तौराजरोग। क्षयीरोग। पीनस।फिया। अतीसार। मूत्रकृच्छ्र। पांडुरोग। वातपित्तकारोग। प्रमेह इन सबरोगोंको यह चूर्ण दूरकरैहै १३ यह महातालीसादि चूर्णहै और हारीतमें लिखाहै अथवा सोंठि। कालीमिर्च। पीपल और तज। पत्रज। इलायची। लवंग। जायफल। बंशलोचन कचूर।बावची। अनारदाना। इन सबको बराबरले महीनपीस इनकीबराबर इसमें चोखा अर्थात् उत्तम सार मिलावै फिर इन सबसे दूनी मिश्रीमिलाय २॥ टं० प्रतिदिन बकरीके दूधकेसाथ खाय तौ राजरोग मन्दाग्नि बीस प्रमेह यह दूरकरके शरीर को पुष्टकरै है ४ इतिसुंठ्यादि चूर्ण सम्पूर्णम् १४॥

अथवा लवंग। कङ्कोल। मिर्च। खस। चन्दन। तगर। कमलगट्टे। कालाजीरा। इलायची। अगर। नागकेसर। पीपल। सोंठि। चित्रक। नेत्रबाला। भीमसेनीकपूर। जायफल। बंशलोचन। इन सबको बराबरले और सब के बराबरमिश्री मिलाके १ टंक प्रतिदिनखाय तौ राजरोग। मन्दाग्नि। श्वास। हिचकी। संग्रहणी। अतीसार। भगन्दर। प्रमेह। इन सब को दूर करै है १५ इति लवंगादि चूर्ण॥ अथवा मारा

अभ्रक २। टके भीमसेनीकपूर ४ मासे। जावित्री ४ मासे। खस ४ मासे। तेजपात ४ मासे। लवंग ४ मासे। तालीसपत्र ४ मासे। दालचीनी ४ मासे। दालचीनीके फूल ४मासे। धवईकेफूल ४ मासे। हड़कीछाल ६ मासे। आमला ४ मासे। बहेड़ेकीछाल ६ मासे। सोंठि ६ मासे पहले पारे और गन्धक की कजलीकरै पीछे इन औषधियोंको महीनपीस एक रसकर उसमें मिलाय पानीसे चनेप्रमाण गोली बांधकर ४ गोली प्रतिदिन शीतल जलसेखाय तौ राजरोग। श्वास। खांसी। शूल। प्रमेह। बमन। आमपित्त। अरुचि। संग्रहणी। बातरक्त इन सब रोगोंको यह गोली दूरकरके शरीरको पुष्टकरै है १६ यह शृंगाराभ्रक गुटिका है ॥

अथ मधुपक्व हड़की क्रिया ॥

दशमूल। पीपल। चित्रक। कोंचकेबीज। बहेड़ेकीछाल। कायफल। कालीमिर्च। पीपलामूल। रोहिष अर्थात् रोहीड़ा। दात्यूणी। दाख अर्थात् किसमिस। दोनोंजीरे। हलदी। आमला। वायबिडंग। काकड़ासिंगी। देवदारु। सांठीकी जड़। धनियां। लवंग। किरमालकीगिरी। गोखुरू। बिधारा। कूट। इन्द्रायणये सब औषधिदोदोटंकलेकै जवकुटकर १६ सेर पक्केजल में इन औषधियांकोडाले और औषधियोंकेसाथचोखीमोटी ४सेरबड़ी पक्कीहड़कोडाल मधुरीआंचसे मटकेमें औटावै और पीछे उन हड़ोंको जलसे निकाल ठंढीकरे फिर चोखे शहतमें ५ दिनतक डालरक्खे फिर उनको उसशहतसे निकाल और शहतमें ऐसी डाले कि शहतमें हड़डूबीरहै फिर हड़ोंसमेत शहतके बासनमें तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। पीपल इनसबकोमहीन पीस ८ टकेभर चूर्ण डालकर १ हड़ प्रतिदिन खाय तौ राजरोग। शोषरोग। कास। श्वास। हिचकी। वमन। ज्वर। मूत्रकृच्छ्र। प्रमेह। वातरक्त। पथरी। संग्रहणी। रक्तपित्त। दाह।

बिभूति। व्योचा। कोच। मृगी। पांडुरोग इन रोगों को यह मधुपक्क हड़ दूरकरैहै १७-इतिमधुपक्क हड़कीविधिसम्पूर्णम्॥ यह धन्वन्तरी संहितामें लिखीहै॥

अथवा पुरानागुड़ १ पाव और अदरखकारस १ सेर इस रसमें मधुरी आंचसे गुड़की पतली चासनी करै फिर तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। लवंग। सोंठि। कालीमिर्च। पीपल इनसबको २ टके भर लेकै महीन पीस मिलाकर १ टकेभर प्रतिदिन खाय तौ राजरोग। मन्दाग्नि। कास। श्वास। अरुचि इन रोगोंको दूरकरे है १८-इति अदरखका अवलेह॥

अथवा बकरीके दूधमें बराबरकापानी डालकर ३ पीपल डालै और एक २ प्रतिदिन ३० दिनतक बढ़ावै फिर एकही एक घटावै जब पानी जलजाय और दूध रहजाय तबपहिले तौ पीपलखाय पीछे उस दूधको पिये तौ राजरोग। कास। श्वास यसबरोग जातेरहैं यह काशीनाथपद्धतिमेंलिखाहै १९॥

अथवा ४ सेर पक्का मुनक्का। दाख अर्थात् किसमिस। एक मन पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहजाय तब उसमें पुरानागुड़। बायविडंग। प्रियंगुके फूल। तज। इलायची। पत्रज। नागकेसर इन सबको २ टके भर डालके मदिरा के यन्त्रसे इनका अर्ककाढ़ १ टकेभर प्रतिदिनले तौ राजरोग। कास। श्वास दूरहोयँ २० यह दाखका अर्थात् किसमिस का आसवहै और योगतरंगिणी में लिखाहै १॥ अथवा मृगांक १ रूप रस २ तामेश्वर ३ पारेकी भस्म ४ अभ्रक ५ इनसबको एक १ भागले अर्थात् सब रसोंके बराबरले फिर इकट्ठा मिलाय इनमें पृथक् २ आगे लिखी हुई औषधियों के एक २ पुटदे प्रथम बायविडंगकी १ नागरमोथाकी १ कायफलकी १ निर्गुण्डीकी १ दशमूलकी १ चित्रककी १ हल्दीकी १ सोंठि की १ कालीमिर्च की १ पीपलकी १ देकर आधी आधीरत्ती

कीगोली बांधे एकगोली प्रतिदिन खाय तौ राजरोग । खां-
सी । फिया । गोला इत्यादि जायँ यह पंचामृत रसहै और
सारसंग्रह में लिखाहै ॥ अथवा बड़े शंखकी राखको गोमूत्रमें
सानकर बड़ी दोप्याली बनाकर उसमेंपारा ५ टंक गन्धक ५
टंक इनदोनों को कजली करके भरै फिर कपरौटीकर गजपुट
में फूंकदे फिर इस प्याली समेतको पीस १ रत्ती शहतकेसाथ
खायतौ राजरोग जाय २१ यह रसार्णवमें लिखाहै । अथवा
गीले थूहरकी लकड़ी पावभर सेंधानोन १। कालानोन १। सा-
म्हारिनोन १। बैंगन १ सेर चित्रक २। इनसबको इकट्ठा कर
महीनपीस बड़े सरवेमें रखकेगजपुटसे फूंकदे फिर इसमेंसे १
माशे भोजनके पीछे जलसेले तौ तत्काल भोजनपचै और
राजरोग । श्वास । बवासीर जाय और आम तत्काल भस्म
होय शूलजाय यह क्षुद्रादिक खारहै २२ यह रस राजलक्ष्मी
ग्रन्थमें लिखाहै ॥ अथवा शंखके राखको नींबूकेरसमें बुझा के
उस राखमेंसे १ टकेभर ले उसमें चव्य १० टंक जवाखार १०
टंक पांचोनोन १० टंक भूनीहींग १० टंक सोंठि १० टंक का-
लीमिर्च १० टंक पीपल १० टंक पारा १० टंक शोधी गन्धक
१० टंक शोधासिंगीमुहरा १० टंक पहिले पारे और गन्धक
की कजली करै फिर कजलीमें ये सब मिलावै फिर नींबूके रस
में चने के प्रमाण गोलीबांधे १ गोली प्रतिदिन लवंगके साथ
खाय तौ राजरोग संग्रहणी शूल गोला ये सब दूरहोयँ यह शंख
वटी योगतरंगिणीमें लिखीहै ॥

अथ अगस्त्यहड़कीविधि ॥

दशमूल । कौंचकेबीज । शंखाहूली । कचूर । खरैटी । गज-
पीपल । लटजीरा । पीपलामूल । चित्रक । भारंगी । पुष्करमू-
लय० पुहकरमूल ये सब औषधि दो २ टकेभर और बड़ीहड़
१०० लेके इन औषधियोंको जवकुटकर २० सेर पानीमें औ-

षधि और हड़ें मिलाके औटावै जब पानी चतुर्थांश रहे तब उसे उतार उसमेंसे हड़ निकालकर उनकी गुठली निकाल उन हड़ोंको पीसे और १०० टकेभर गुड़की चासनीकरै उसीचासनीमें हड़काचूर्ण मिलाके ८ टकेभर गौकाघृत मिलावे फिर १ टंक नित्यखाय तौ राजरोग। शोषरोग। खांसी। श्वास। हिचकी। विषमज्वर। संग्रहणी। बवासीर। अरुचि। पीनस इतने रोगोंको यह अगस्तहरीतकी दूरकरके शरीरको पुष्टकर क्षुधा को बढ़ाय कोष्ठको शुद्धकरै है यह अगस्त हड़कीविधि वृन्दमें लिखीहै--इतिअगस्तहड़ाविधिस २४ ॥

अथवा १०० टकेभर अडूसेका काढ़ाकर उसका चतुर्थांश जुदा छाने फिर उसकाढ़ेमें १०० टकेभर गुड़कीचासनी बनावे और उसमें ८ टकेभर तिलका तेल और आठ टकेभर गौका घृत मिलावै फिर उस चासनीमें १०० बड़ी हड़के बक्कलका महीन चूर्ण मिलावे फिर पीपल २॥ टंक पीपलामूल २॥ टंक काली मिर्च २॥ टंक पुष्करमूल अर्थात् पुहकरमूल २॥ टंक चव्य २॥ टंक चित्रक २॥ टंक सोंठि २॥ टंक इन सब को महीन पीस इस चासनीमें डाले फिर इनसबको इकट्ठाकर १। प्रमाण नित्यखाय तौ राजरोग निश्चय दूरहोय और बवासीर। खांसी। स्वरभेद। सूजन। आमपित्त। पाण्डुरोग। उदररोग। मन्दाग्नि। नपुंसकता ये सब इस औषधि से जाते हैं यह औषधि चरक में लिखीहै २५—इतिराजरोग शोषरोग क्षयीरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ कासरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मुखमेंधुआं और धूलजानेसे और रूखाअन्न खानेसे और भोजनके कुपथ्य से मलमूत्र और छींकके रोकने से चिकनाई और मूली आदि को खायकर ऊपर जलपीने से खांसी उत्पन्न होतीहै वहखांसी हृदयकी प्राणपवनसे मिलैहै और प्राणपवन

कण्ठके उदान पवनसे मिल उन दोनों पवनों को बिगाड़ै है तब बिगडीपवन उसके शब्दको कांसीके फूटेबासनके समानकरके मुखमेंसे वेग बिलम्बसे निकालै है तब मनुष्य उसको खांसी कहतेहैं वह खांसीका रोग ५ प्रकारका होताहै बातका १ पित्त का २ कफका ३ चोट लगनेका ४ क्षयीरोगका ५ और अनुक्रमसे एक २ की अपेक्षा दूसरा बलवान् जानिये॥

अथ खांसीका पूर्वरूप॥

कण्ठमें कांटेसे पड़कर खुजलीचलै भोजन किया न जाय तब जानना कि खांसी होगी॥

अथ बातकी खांसीका लक्षण॥

हृदय। कनपटी। माथा। उदर। पसली इन सबमें शूल होय मुख उतरजाय और बल पराक्रम स्वर ये क्षीणहोजायँ और ग्रासखातेमें कण्ठदूखे। सूखाखांसे। टूटास्वरबोलै येलक्षण बातकीखांसीके हैं॥ अथ पित्तकीखांसीकेलक्षण॥

हृदय में दाह। और ज्वरहोय। मुखसूखे और कडुआरहै तृषा युक्तहोय और कडुआ २ बमनकरै और शरीर पीलाहोजाय ये लक्षणहोयँ तौ पित्तकी खांसी जानिये॥

अथ कफकी खांसीके लक्षण॥

कफसे मुखलिपारहै। मस्तकदूखे। भोजनमें अरुचि। शरीर भारी। कण्ठमें खुजलीचलै। कफकीगांठें थूके ये लक्षण होयँ तौ कफकी खांसी जानिये॥

अथ क्षतजखांसीकी उत्पत्ति लक्षण॥

बहुतस्त्री संग करनेसे। बोझ उठानेसे। मार्गचलनेसे। युद्ध करनेसे। घोड़े हाथीके दौड़ानेसे। रूखाभोजन करने से। बात हृदयमें जाकर खांसीको प्रकटकरैहै॥ प्रथम रूखा खांसे फिर रुधिर थूके। कंठ बहुतदूखे। शूलहोय। सन्धि २ मेंपीड़ा होय। ज्वर। श्वास। तृषाहोय। स्वर घोघा बोलै और कब-

तरकी भांतिबोलाकरै ये लक्षणहोयँ तौ क्षतजकी खासी जानिये ॥

अथ क्षयीरोगसेउपजी जोखासी उसका लक्षण ॥

कुपथ्य और विषमाशन अर्थात् समय कुसमय भोजन आदि करै और बहुत मैथुनकर मलमूत्रको रोकै। बहुत सोवै उस मनुष्यके मन्दाग्निहोकर बात पित्त कफतीनोंके कोप से क्षयी रोगकी खांसी उत्पन्न होतीहै वह खांसी शरीरको क्षीण करके ज्वर। दाह। मोहको करैहै तब यहप्राणका नाशकरै है। सूखाखांसे। दुर्बल होताजाय। शरीरका रुधिर और मांस सूखजाय। राधथूकै तब असाध्य जानिये ॥

अथ खांसीका असाध्य लक्षण ॥

बात पित्त कफ इनतीनोंकी खांसीसाध्य और क्षतजरोग और क्षयीरोगकी खांसी असाध्य और बूढ़े मनुष्यकी भी खांसी असाध्य जानिये ॥

अथ खांसीरोग का यत्न ॥

लवंग ५ टं० कालीमिरच ५ टं० बहेड़ेकाछिलका ५ टं० खैर सार ५ टं० इन सबको महीनपीस बबूलके छिलकेकेकाढ़े में २ रत्ती प्रमाण गोलीबांधे १ या २ या ३ गोली ७ दिनतक खाय तौ खांसी जाय १ यह लवंगादिकी गोली लोलिम्बराज में लिखीहै ॥ अथवा पारा १ टं० शोधी गन्धक २ टं० पीपल ३ टं० हड़कीछाल ४ टं० बहेड़ेका छिलका ४ टं० काकड़ाशिंगी ५ टं० इन सबको महीन पीस बबूलकी छालके काढ़ेकी २ पुट देकै १। टके भरकी गोली बांधे १ गोली नित्यखाकर ऊपरसे सोंठिका काढ़ापियै तौ खांसी अवश्य जाय २ यह रस समूह ग्रन्थ और योगचिन्तामणि ग्रन्थमें लिखाहै ॥ अथवा कालीमिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० अनारकाछिलका १० टं० गुड़ २॥ टकेभर जवाखार १ टं० इन सबको महीन पीस चनेके प्रमाण गोलीबांधे २तथा ४गोली नित्यखाय तौ खांसीजाय३

अथवा पीपल । पुष्करमूल अ० पुहकरमूल । हड़कीछाल । सोंठि । कचूर । नागरमोथा इन सबको महीन पीस गुड़में ३ रत्ती प्रमाणकी गोली बांधे १ वा २ गोलीखाय तौ खांसीजाय ४ अथवा सोंठि के काढ़ेसे खांसी जाय ५ अथवा अदरक के रसमें शहत मिलायके खाय तौ खांसी जाय ६ अथवा कटेली। गिलोय।सोंठि । पुष्करमूल अ० पुहकरमूल इन सबको बराबर लेके इसमें अडूसा मिलाय काढ़ाकर पिये तौ खांसी जाय ॥ यह क्षुद्रादिक काढ़ा है ७ अथवा छोटी कटेली का भरताकर उसके रसमें पीपलका चूर्ण मिलाय प्रतिदिन पिये तौ खांसी जाय ८ अथवा हड़की छाल २॥ टं० सोंठि २॥ टं० कालीमिरच २॥ टंक पीपल २॥ टं० अमलबेत २॥ टं० चव्य २॥ टंक चित्रक २॥ टंक सपेदजीरा २॥ टंक डांसराअ० तंतरीक २॥ टंक तज ४ मा० पत्रज ४ मा० नागकेशर ४ मा० इनको महीन पीसऽ। गुड़में २॥ टंकके प्रमाण गोलीबांधे १ गोलीप्रभात खायतौ खांसी। श्वासजाय ९ अथवा लवंग २॥टं०पीपल२॥टं० जायफल२॥टंक कालीमिरच ५ टंक सोंठि ८ पैसेभर इनसबकी बराबर मिश्रीले फिरसबको महीन पीस २॥ टं० जलसे खाय तौ खांसी।ज्वर। प्रमेह । अरुचि । श्वास। मन्दाग्नि। संग्रहणी इनसबरोगोंकोयहचूर्णदूरकरैहै १०-इतिलवंगादिचूर्ण॥ अथवा शिंगरफ। कालीमिरच । नागरमोथा । शोधाशिंगी मोहरा इन सबकोबराबरले महीनपीस जंभीरीकेरसमें अथवा अदरकके रसमें मूंगकेप्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्यखायतौश्वास और खांसीजाय११ अथवा कालीमिरच। नागरमोथा। कूट। वच। शोधा शिंगीमोहराइनसबको बराबरले अदरककेरसमें महीन पीस मूँगप्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्यखाय तौ श्वास। शूल। कफके रोग। सूतिकारोग। संग्रहणी इनसब रोगोंको यह गोली दूरकरैहै १२ अथवा लंग १ टं० पीपल २ टं० हड़का

छिलका ३ टं० बहेडेका छिलका ४ टं० अडूसा ५ टं० भारंगी ६ टं० इनसबकी बराबर खैरसारले फिरसबको महीनपीस बबूलके बक्कलके काढ़ेकी २ पुटदे और शहतसे चने प्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्य खायतौ श्वास खांसी क्षयी येसब रोगजायँ १३—इतिकासकर्त्तरी गुटिका ॥ अथवा भीमसेनी कपूर १। टं० कस्तूरी १। टं० लवंग १। टं० मिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० बहेड़ेकीछाल २॥ टं० कुलींजन २॥ टं० अनार का छिलका १। टं० इनसबकी बराबर खैरसार इसमें मिलावै फिर महीन पीस पानी से चनेके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्य खायतौ खांसीजाय १४—इतिकर्पूरादि गुटिका ॥ ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखेहैं ॥ अथवा आकके फूलके मध्यकी फूली और उसकी बराबर मिरच इनदोनों को महीन पीस १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्यखायतौ खांसी जाय १५ अथवा आकके फूलके बीजकी फूली और उसकी बराबर लवंगलेके १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खायतौ खांसी जाय यह रुद्रदत्तमें लिखाहै १६ अथवा पसर कटेली के पंचांगमें ४ सेर पानीडाल काढ़ा निकाल उसकाढ़ेमें १०० बड़ीहड़ पकावैं जब उबलजायँ तब उतारके शीतलकर उनकी गुठली निकालपीस डाले फिर १०० टकेभर पुराने गुड़की चासनीकरै उसचासनीमें वह हड़ोंका चूर्णमिलावै पीछे ये औषधैंडालेसो लिखतेहैं सोंठि १ टकेभर कालीमिरच १ टं० पीपल १ टं० तज १ टं० पत्रज १ टं० नागकेसर १ टं० इलायची १ टं० इन सबको महीनपीस उस चासनी में डालै फिर आधसेर शहत मिलाकै एकरसकर १ टकेभर नित्यखाय तौ सब प्रकारकी खांसीजाय १७ यहभृगुहरीतकीहै ॥

अथ कटेलीकाअवलेह ॥

४ सेर कटेलीका काढ़ाकरै और उसकाढ़ेमें ४ सेर मिश्रीकी

चासनी कर ये औषधैं डालै गिलोय १ टकेभर चव्य १ टं० चित्रक १ टं० नागरमोथा १ टं० काकड़ाशिंगी १ टं० सोंठि १ टं० पीपल १ टं० धमासा १ टं० भारंगी १ टं० कचूर १ टं० इन सबको महीनपीस उस चासनीमें मिलावै फिर १ सेर शहत और ऽ। बंशलोचन डालकै १ टकेभर नित्य खाय तौ सबप्रकारकी खांसीजाय १८ इतिकटेलीका अवलेह यहभावप्रकाशमेंलिखाहै॥ अथवा अडूसेके काढ़ेमें शहतडालपिये तौ खांसीजाय १९ अथवा आकका पत्र।मैनसिल। सोंठि।कालीमिरच। पीपल इन सबको बराबरले गुड़में गुटिकाबनाकर हुक्केमें पिये तौ खांसी अवश्य दूरहोय २० अथवा पारा। शोधीगन्धक। शिंगरफ। शोधाशिंगीमुहरा। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। भुनासुहागा इनसबको बराबरले महीनपीस पारे और गन्धककी कजलीमें मिलाकर उसकजलीको भांगरेके रसमें १ दिन खरलकरै फिर बिजौरेके रसमें३दिन खरलकरै फिर इसकी आधरत्तीकी गोलीकरै १ गोली नित्य १० दिनतक खाय तौ खांसी। क्षयी।संग्रहणी। सन्निपात। मृगी इन रोगोंको यह रस दूरकरैहै २१ इतिआनन्दभैरवरस—इतिखांसीरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ हिचकी रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

गरम।बादी।भारीरूखी। सीली अर्थात् ठंढीआदिवस्तु खानेसे औरमुखमें रजकेजानेसे।खेदकरनेसे।मार्गचलनेसे। मलमूत्रके रोकनेसे। भूखेरहनेसे इतनी बातोंसे मनुष्यके हिचकी श्वास खांसी उत्पन्न होतीहै॥

अथ हिचकीका स्वरूप॥

वायु दोनों पसली और आंतोंको दुखदेतीहुई मुखमें होकर बड़े शब्द सहित प्राणोंका नाश करनेवाला मुखमेंसे भयंकर शब्द निकालैहै उसको मनुष्य हिचकी कहैहैं सो वह बात कफ

से मिलकर ५ प्रकारकी हिचकी को करै है एकतौ अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ ॥

अथ हिचकी का पूर्व्वरूप ॥

कण्ठ और हृदय भारीरहै। मुखकषैलाहोय। कोखमें अफर होय तौ जानिये कि इसके हिचकी पैदाहोगी ॥

अथ अन्नजा हिचकी का लक्षण ॥

अन्न बहुतखाय। पानी बहुत पिये। उस्से बात कोपित होकर ऊर्ध्वगामीहो मनुष्यके अन्नजाहिचकीको पैदाकरै है १॥

अथ यमला हिचकी का लक्षण ॥

ठहर२ कर दो२ हिचकी आवैं। शिर और कन्धोंको कँपावै उसको यमला हिचकी कहिये २ ॥

अथ क्षुद्रा हिचकी का लक्षण॥

ठहर २ कर मन्द कंठ और हृदयकी संधिसे चले उसको क्षुद्रा हिचकी कहिये३॥ अथ गंभीराहिचकीका लक्षण ॥

नाभिसे भयंकरउठे और पीड़ा बहुतहोय और अनेकउपद्रव करै उसको गंभीरा हिचकी कहते हैं ४॥

अथ महती हिचकी का लक्षण ॥

सर्व मर्म्म स्थानों में पीड़ा करतीहुई और सब शरीर को कँपातीहुई चलै उसको महती हिचकी कहते हैं ५ ॥

अथ हिचकीका असाध्य लक्षण ॥

हिचकी चलतेहुये जिसका शरीर कांपउठे और ऊंची दृष्टि होजाय और अँधेरी आजाय और भोजनमें अरुचिहोय छींक बहुत आवै येदोनों गंभीरा और महतीहिचकी असाध्यजानिये॥

अथ हिचकी का यत्न ॥

प्राणायामके करने से किसीप्रकारसे भयभीत होनेसे भयंकर वात के सुनने से बात और कफकी घटाने वाली वस्तु के खानेसे हिचकी दूरहोयहै १ अथवा बकरीके दूधमें सोंठि को

पकाय सोंठि सहित दूधपिये तौ हिचकी जाय २ अथवा बिजौरेके रसमें यवकासत्तू और सेंधानोन मिलाके खायतौ हिचकी जाय ३ अथवा सोंठि पीपल शहतसे चाटै तौ हिचकी जाय ४ अथवा मक्खी की बीठ दूधमें पीसनासले तौ हिचकी जाय ५ अथवा गुड़ और सोंठि पानीमें पीसनासले तौ हिचकीजाय ६ अथवा कासकी जड़के रसमें शहत मिलाय नासले तौ हिचकीजाय ७ अथवा मोरके पंखकीराख शहतसे चाटै तौ हिचकी जाय ८ अथवा बिजौरे की केसरको सेंधानोन मिलाकरखाय तौ हिचकी जाय ९ पुष्करमूल अ० पुहकरमूल । जवाखार । कालीमिरच ये सब बराबरले महीन पीस २॥ टंक गरम जल केसाथले तौ हिचकीजाय १० अथवा हल्दी और उर्दोंकोपीस निर्द्धूम अंगार पर रखहुक्केमें धुआं पिये तौ भयंकरभी हिचकीजाय ११ यह वैद्यविनोदमें लिखाहै ॥ अथवा सनकीछाल का चूर्णकर उसका हुक्का पिये तौ हिचकी जाय १२ अथवा सोंठि । कालीमिरच । पीपल । जवासा । कायफल । करेलण । पुष्करमूल अ० पुहकरमूल । काकड़ाशिंगी इनसबको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक शहत के साथ चाटै तौ हिचकी । खांसी । श्वासजाय १३ अथवा पितपापड़ा । पीपल ये दोनों २॥ टंक और गुड़ ५ टंक इनका काढ़ा दे तौ हिचकीजाय १४ अथवा १० टंक असालूके काढ़े को छानकर पिये तौ हिचकी तत्काल दूरहोय १५ यह वैद्य रहस्य में लिखा है ॥ अथवा मुलहठी १। टंक शहतके साथचाटै तौ हिचकी जाय १६ अथवा पीपल १। टंक मिश्रीके साथ खायतौ हिचकी जाय १७ अथवा दूधमें घृत डाल गरम २ पिये तौ हिचकी जाय १८ यह सुश्रुतमें लिखा है ॥ अथवा बिजौरे का रस । शहत और कालानोन मिलाकर खाय तौ हिचकी निश्चय दूरहोय १९ यह वैद्यसर्व्वस्वमें लिखा है ॥ अथवा कैथ और आम-

लेका रस शहतमिलाकर पिये तौ हिचकी और श्वास जाय २० यह काशीनाथ पद्धतिमें लिखा है ॥ अथवा इलायची १ दालचीनी २ नागकेसर ३ कालीमिरच ४ पीपल ५ सोंठि६ यह वृद्धिक्रमसे ले महीन पीस घृत मिलावै और इन सब से दूनी मिश्रीमिलाय २॥ टंक जलसेले तौ हिचकी। अजीर्ण। बवासीर। श्वास। खांसी इन सब रोगों को दूरकरै २१ यह एलादि चूर्ण वृन्द में लिखाहै ॥ इति हिचकीरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ श्वासरोगकी उत्पत्तिलक्षण यत्न ॥

जिन वस्तुओंके खानेसे हिचकी पैदाहोय उन्हींवस्तुओं के खानेसे श्वासरोग होताहै वह ५ प्रकारकाहै एकतौ महाश्वास १ ऊर्ध्वश्वास २ छिन्नश्वास ३ तमकश्वास ४ क्षुद्रश्वास ५ ॥

अथ श्वासरोगका पूर्वरूप ॥

हृदयदूखे। शूलहोय। अफराहोय। मलमूत्र उतरै नहीं। मुखमें रसोंका स्वाद आवै नहीं। कनपटी दूखे तौ जानिये कि श्वास रोगहोगा ॥ अथ श्वासरोगकीउत्पत्ति॥

सब शरीरमें फिरतीजोबात वहकफसेमिल सबनसोंकोरोकै है तब वह बात फिरने से बन्दहोकर श्वासको प्रकटकरै है ॥

अथ महाश्वासका लक्षण ॥

जब मनुष्य श्वासयुक्त होकर थकके ऊँचेप्रकार मस्तबैल के समान निरन्तर श्वासले और जिनकाज्ञान नष्ट होगयाहो और नेत्र तरतराटकरैं और श्वासलेतेमें मुख और नेत्र फट जायँ और मुखसे बोला न जाय और दुर्बलहोजाय और श्वासका शब्ददूरतक सुनाईदे येलक्षणहोयँ तौ महाश्वास जानिये यह श्वासवाला तत्काल मरजाय १ ॥

अथ ऊर्ध्वश्वासका लक्षण ॥

ऊर्ध्वश्वासले नीचेआवै नहीं कफसे मुखभरजाय ऊँचीदृष्टि

होय नेत्र तरतराट करैं इस श्वाससे दुखीहोकर नेत्र भ्रमता मोह ग्लानि होय यह लक्षण होयँ तौ ऊर्ध्वश्वास जानिये यह मनुष्यको मारडालै है २॥

अथ छिन्नश्वासका लक्षण ॥

सर्वशरीरके पांचों पवनसे पीड़ित मनुष्य टूटाश्वासले अथवा दुखितहोकर श्वास नहींले और जिसके मर्मस्थान टूटकर अफरा होआवे और प्रस्वेदहोकर नेत्रफटजायँ और श्वास लेतेसमय नेत्र लालहोजायँ चैतन्यता जातीरहै शरीर का वर्ण औरका और होजाय वह प्राणी तत्काल मरजाय ३॥

अथ तमकश्वासका लक्षण ॥

शरीरकी पवन उलटीचलै नासिकाको रोंकदे तब कन्धे और शिर पकड़कर कफको प्रकटकरै है तबयह शब्द कण्ठमेंजाकर घुरघुर शब्द करैहै फिर प्राणनाशकश्वास प्रकटकरै है तब मनुष्य श्वासके वेगसे ग्लानि को प्राप्त होताहै और जब उसकी अग्नि रुकजायहै तब वह मनुष्य श्वासलेतेसमय मोहको प्राप्त होयहै और कफभीछूटैहै तबदुखीहोकर मुखसे कफनिकलजाय तब वह दो एकघड़ी सुखपावैहै और उससे बोला भी तभीजाता है और जब वह सोवै तब श्वास होआवै नींद आवैनहीं बैठही चैन पड़ै औरगरमीसोहावै नेत्रोंपरसूजनहोय ललाटमें पसीना आवै मुखसूखे धौंकनी के सदृश श्वासले मेहकीपवन और शीतल वस्तुसे और मधुरखाने से बढ़ै ये लक्षणहोयँ तौ तमकश्वासका लक्षण जानिये—यहश्वास याप्यहै ४॥

अथ क्षुद्रश्वासका लक्षण ॥

रूखी वस्तु खानेसे खेदसे कोठेकी पवनसे क्षुद्र श्वासप्रकट होताहै तब वह मनुष्यको बहुत दुःख देयनहीं और मनुष्योंके खानपानकी गति रोकैनहीं और इन्द्रियोंको पीड़ाकरै नहीं ये लक्षण क्षुद्रश्वासके जानिये ५ यह क्षुद्रश्वास बलवान् पुरुष

के होय तौ साध्यहै और तमकश्वास कष्टसाध्य है और महाश्वास छिन्नश्वास ये प्राणके हरनेवाले हैं॥

अथ श्वासरोगकायत्न॥

नोनमें तेलडाल सुहाता २ हृदयको सेंके तौ श्वास दबै १ अथवा अदरखका रस शहतमें मिलाय चाटैतौ श्वासजाय २ अथवा अदरखका रस और शहत दोनों आधसेरमिलाय १। टके भर नित्य खाय तौ श्वास कास जाय ३ अथवा दशमूल। कचूर। रास्ना। पीपल। सोंठि। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। भारंगी। काकड़ाशिंगी। गिलोय। चित्रक ये सब बराबरले २॥ टंकभरका नित्य काढ़ाले तौ कास। श्वास। पसलीका शूल निश्चय जाय ४ अथवा पेठे की जड़का चूर्ण १ टंक गर्म जलसे ले तौ श्वास कास निश्चयजाय ५ अथवा हल्दी। कालीमिरच। दाख अ० किसमिस। पीपल। रास्ना। कचूर इन सबको बराबरले महीन पीस १ टंक गुड़ या तेलके साथ खायतौ श्वासका रोग निश्चय जाय ६ अथवा पावभरभारंगी को औटाके रस निकाले उसमें १०० टकेभर गुड़की चासनी करे उस चासनीके पकनेमें हड़कीछाल का पावभर चूर्णडालै फिर चासनी ठंढी होय तब ६ टके भर शहत फिर सोंठि १। तज १। पीपल १। पत्रज १। नागकेसर १। जवाखार २ टंक महीन पीस उस चासनीमें मिलावै फिर १ पैसेभर नित्यखाय तौ श्वास। खांसी। बवासीर। गोला। क्षयी। उदरके रोग ये सब जायँ ७ यह भारंगीका अवलेह है ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं अथवा पारा २॥ टंक शोधीगन्धक २॥ टंक शोधा शिंगीमुहरा २॥ टंक भुनासोहागा २॥ टंक मैनसिल २॥ टंक कालीमिरच २॥ टंक सोंठि २॥ टंक पीपल २॥ टंक पहिलेपारे और गन्धककी कजलीकरै उसमें ये औषधि मिलावै फिर अदरखके रसकी एक पुटदेके १ रत्तीनित्य खायतौ श्वासजाय ८-

इति श्वास कुठाररस ॥ अथवा धतूरे के बीज १ से बढ़ाकर ५ तक ३० दिन खायतौ श्वासरोगजाय ९ अथवा पारा १ भाग। गन्धक आधाभाग इनके बराबर तामेश्वरले फिर इन तीनों को ग्वारके पट्ठेके रसमें खरलकरै फिर इसको तांबेकीडिबिया में धर बालुकायंत्रमें १ दिन पचाकर सिद्धकर २ रत्ती प्रमाण पानमें रखकर खायतौ श्वासरोग जाय १०—इतिसूर्य्यावर्त्तरस यह वैद्यविनोदमें लिखाहै ॥ अथवा काकड़ा शिंगी। सोंठि। पीपल। नागरमोथा। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। कचूर। कालीमिरच इनसबकी बराबरले और सबकी बराबर मिश्री ले फिर महीन पीस २॥ टंक प्रमाण गिलोय। अडूसा। पीपल। पीपलामूल। चब्य। चित्रक। सोंठि इनके काढ़ेके साथ इसचूर्णको ले तौ श्वास रोगजाय ११ यह चक्रदत्तमेंहै ॥ अथवा पीपल। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। हड़कीछाल। सोंठि। कचूर। कमलगट्टा। इनसबको बराबरले चूर्णकर इनके बराबर गुड़में चनेप्रमाण गोलीबांधे १ या २ या ३ गोली नित्य खायतौ श्वासजाय १२ अथवा पारा। गन्धकशोधासार। सोंठि। कालीमिरच। पत्रज। नागकेसर। नागरमोथा। बायबिडंग। सम्हालू। कबीला। पीपलामूल ये सब पारा गन्धक सार इन तीनोंसे दूनी२ ले फिर इनसबको महीनपीस जल पीपलके रसमें ३ पुटदे फिर इसकी चनेके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्यखाय तौ श्वास। कास। बवासीर भगन्दर। हृदय और पसलीका शूल। संग्रहणी। उदररोग। प्रमेहमात्र इन सब रोगों को यह महोदधि रसदूरकरैहै १३—इतिमहोदधिरस यहसर्वसंग्रहसें लिखा है ॥ अथवा पारा। शोधीगन्धक का सार। सोहागा। रास्ना। बायबिडंग। त्रिफला। देवदारु। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। गिलोय। कमलगट्टा। शोधाशिंगी मुहरा पहिले पारे और गन्धककी कजलीकरै फिर इन सबको बराबर ले महीन पीस

कजलीमें मिलाके शहतसे १ तथा २रत्तीके प्रमाण गोलीबांधे १गोली नित्यखाय तौ श्वासजाय १४—इति अमृतार्णवरस यह वैद्यरहस्य में लिखाहै ॥ अथवा पारा और गन्धक बराबरले इसकी कजलीकर चौराईकेरसमें ५ दिन खरलकरै फिर बज्र-मूसीमें रखकर बालुकायन्त्रमें पकावै १ दिन पीछे इसमें से २ रत्ती पानमें खाय तौ श्वास हिचकी दूरहोय १५ यह मेघडम्बर रसहै और रुद्रदत्त ग्रन्थमें लिखाहै ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थे रक्त । पित्त । राजरोग। क्षयीरोग। शोषरोग। कासरोग। हिचकी। श्वासरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम पंचमस्तरंगः ५ ॥

अथ स्वरभेद रोगको उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मनुष्यके बहुत बोलनेसे विष आदि के खाने से उच्चस्वर के पढ़नेसे कण्ठमें किसी प्रकारकी चोट लगनेसे कोपको प्राप्त हुआ जो वात पित्त कफ सो कण्ठके स्वर की बहनेवाली जो नसें तिनमें रहकर स्वरभंगको करै हैं वह स्वरभंग छः प्रकार काहै वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ शरीर के भंगपने का ५ क्षयीरोगका ६ ॥

अथ वातके स्वरभंगका लक्षण॥

जिसके नेत्र । मुख । मल । मूत्र काले होयँ । टूटेशब्द बोले गधेकासा शब्दहोय तौ बातका स्वरभंग जानिये १ ॥

अथ पित्तके स्वरभंगका लक्षण ॥

जिसके नेत्र। मुख। मल। मूत्र। पीलेहोयँ और बोलने के समय गलेमें दाहहोय तौ पित्तका स्वरभंग जानिये २ ॥

अथ कफके स्वरभंगका लक्षण ॥

सदाही कंठ कफसे रुकारहै और मन्द २ आधा बोलाजाय रात्रिमें बढ़जाय तौ कफका स्वरभंग जानिये ३ ॥

अथ सन्निपातके स्वरभंगकालक्षण ॥

जिसमें। बात। पित्त। कफके सब लक्षण मिलैं उसको सन्निपातका स्वरभंगकहिये यह असाध्यहै ४॥

अथ क्षयीरोगके स्वरभंगका लक्षण ॥

बोलतेहुये मुखमें धुवां निकलै तौ क्षयीरोग का स्वरभंग जानिये यहभी असाध्यहै ५॥

अथ शरीरकेमोटेपनसे उपजाजो स्वरभंग उसका लक्षण ॥

गलेमें बोले शब्द सुनाई नदे और देरसे बोले गलाजलै तृषा अधिक लगै। जिसके ये लक्षणहों उसके शरीरके मोटेपनका स्वरभंग जानिये ६ यहभी अच्छानहीं २॥

अथ स्वरभंग का यत्न ॥

बातका स्वरभंग होय तौ नोन तेलकी बस्तु खानेसे जाय १ पित्तका स्वरभंग घृत और शहतके खाने से जाय २ कफका स्वरभंग खारी कड़ुवी बस्तु और शहत आदि के खाने से जाय ३ अथवा गलेका। तालूका। मसूढ़ेका। रुधिर निकालने से स्वरभंग जाय ४ अथवा। गर्म जल के पीने से बातका स्वरभंगजाय ५ अथवा। घृत गुड़ के खाने से बातका स्वरभंग जाय ६ गर्म दूध के पीने से पित्त का स्वरभंग जाय ७ अथवा कटेली १०० टकेभर ले और इससे आधा पीपलामूल और इससे आधी चित्रक और चित्रक की बराबर दशमूल ले इनको एक मन पानीमें औटावे जब ४ सेर पानी रहजाय तब छानकर उस पानीमें १०० टकेभर पुराने गुड़की पतली चासनी करै फिर उस चासनीमें ये सबऔषधि महीन पीसडालै और १ सेर शहतडालै फिर २। टके तथा ३। भर नित्य खाय तौ सब प्रकारका स्वरभंग श्वास। कास। मन्दाग्नि। गलेकारोग। अफरा। मूत्रकृच्छ्र इन सबरोगोंको यह दूरकरैहै यह कटेलीका अवलेहहै और भावप्रकाशमें लिखाहै इति ८॥

अथवा अजमोद। हल्दी। चित्रक। जवाखार। आमला ये सब बराबरले महीनपीस २ टंक घृत और शहतकेसाथले तो भयंकरभी स्वरभंगजाय ९ अथवा हड़कीछाल। बच। पीपल महीनपीस गर्मजलसे ले तो मेदके क्षयीरोगका स्वरभंगजाय १० यहवैद्यविनोदमें लिखाहै॥ अथवा बहेड़ेकीछाल। पीपल। सेंधवनोन। आमला इन सबको महीनपीसगौकेमट्ठेमें अथवा गोमूत्रमेंले तो स्वरभंगजाय ११ यहवृन्दमें लिखाहै॥ अथवा जायफल। पीपल। खील। बिजौरेकी केसर ये सब महीन पीस शहतकेसाथचाटै तो स्वरभंगजाय और स्वर अत्यन्त सुन्दर सूक्ष्म होजाय १२ यह जायफल का अवलेह है और सर्व्वसंग्रहमें लिखाहै॥ अथवा कुलींजन मुखमें रखकर उसका रस पिये तो स्वरभंग जाय १३ अथवा चव्य। अमलबेत। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। डांसरा अर्थात् तन्तरीक। पत्रज। तज। सपेदजीरा। चित्रक। इलायची इन सबको बराबरले महीनपीस २ टंक पुराने तिबरसे गुड़मेंले तो स्वरभंग। पीनस। कफरोग। अरुचि ये सबजायँ१४॥इति चव्यादिचूर्ण॥ अथवा पारेकी राख। तामेश्वर। सार इन तीनोंको बराबरले फिर इनमें कटेलीकेफलोंकेरसकी २१ पुटदे फिर उसकीगोली मूँगप्रमाण बांधे १ गोली मुखमें रक्खे तो स्वरभंग दूरहोय यह गोरखनाथजीकी गोली है १५ अथवा ब्राह्मी। वच। हड़कीछाल। अडूसा। पीपल ये सब बराबरले महीनपीस २ टंक शहत के साथ १४ दिनले तो स्वरभंग जाय और उसका स्वर किन्नर कासाहोय १६॥ यह यत्न वैद्यरहस्यमें लिखाहै—इति स्वरभंग रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ अरोचक रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

शोचसे। क्रोधसे। मोहसे। अतिलोभसे। डरनेसे। और चित्तके रोकनेवाले भोजनसे और बुरेप्रकारके रूप देखनेसे

और बुरीगन्धके सूँघनेसे मनुष्यके वात। पित्त। कफ ये तीनों अरुचिनाम रोगको उत्पन्नकरेहैं वह अरुचि पांचप्रकारकी है वातकी १ पित्तकी२ कफकी ३ सन्निपातकी ४ शोकादिककी ५॥

अथ वातकी अरुचिका लक्षण॥

खट्टा कषैला मुखहोय। हृदय में शूलहोय। भोजन से रुचि जातीरहै तौ बातकी अरुचि जानिये १॥

अथ पित्तकी अरुचिका लक्षण॥

कडुआ। खट्टा। गर्म। बिरस। सलोनापन अ० निमकीन जिसके मुखमें होय। और शरीर में दाह। और मुखमें शोष होय तौ पित्तकी अरुचि जानिये २॥

अथ कफकी अरुचिका लक्षण॥

मुख मीठा होय। अरुचिहोय। शरीर भारीरहै। बद्धकोष्ठ होय लार गिरे। शरीर में स्थान २ पर पीडाहोय तौ कफकी अरुचि जानिये ३ ये सब लक्षण मिलेहोयँ तौ सन्निपात की अरुचि जानिये ४॥

अथ शोकादिककी अरुचिका लक्षण॥

पेटमें क्षुधारहै और मुखसे खाया न जाय तौ शोककी अरुचि जानिये ५॥

अथ अरुचिका स्वरूप॥

मुखमें अन्नका ग्रासलेनेमें पुरुष को कुछभी स्वाद न आवै तौ जानिये कि अरुचि का रोगहै॥

अथ भक्तद्वेषका लक्षण॥

भोजनका चिन्तवन करै अथवा भोजनकेदेखनेसे अन्नरुचै नहीं तौ उसको भक्तद्वेष जानिये यह माधवमें लिखाहै॥

अथ भक्तद्वेषका यत्न॥

भोजनके पहिले सेंधवनोन और अदरख खायतौ क्षुधालगे और कंठ जीभ शुद्ध होजाय १ और शहत को अदरखका रस मिलाके पिये तौ अरुचि श्वास कासजाय २ अथवा पक्की

इमलीका शर्बत मिश्रीडालके करै उसमें इलायची लवंग भीमसेनीकपूरका प्रतिवासदे अर्थात् ऊपरसे भुरकी छोड़दे फिर उस शर्बत को पिये अथवा कुल्लेकरै तौ अरुचिजाय ३ अथवा राई। जीरा। भुनीहींग। सोंठि। सेंधवनोन इन सबको महीनपीस अनुमान माफिक गौके मट्ठेमें डालकर पिये तौ अरुचिजाय और क्षुधाबढ़ै ४ अथवा गौके दहीकोवस्त्रमें छान के उसमें मिश्री। इलायची। भीमसेनीकपूर +। लवंग। कालीमिरच अनुमान माफिक अ० समभाग महीनपीस मिला के पियेतौ अरुचि तत्कालजाय ५—इतिशिखरणीकीक्रिया॥ अथवा अनारदाना २ टंकभर मिश्री ८ टंक सोंठि १ टंक कालीमिरच १। टंक पीपल १। टंक तज २॥ टंक पत्रज २॥टंक नागकेसर २॥ टंक इन सबको महीनपीस २॥ टंक प्रमाणजल से नित्यलेतौ अरुचि जाय इति दाड़िमादि चूर्ण ६ अथवा लवंग। कंकोल। मिरच। खस। चन्दन। तगर। कमलगट्टे। कालाजीरा। नेत्रबाला। अगर। नागकेसर। पीपल। सोंठि। चित्रक। इलायची। भीमसेनीकपूर। जायफल। बंशलोचन ये सब बराबरले और इनसे आधी मिश्रीले फिर महीनपीस १टंक नित्य जलके साथलेतौ अरुचि मन्दाग्नि क्षीणता बद्धकोष्ठ खांसी हिचकी राजरोग संग्रहणी अतीसार प्रमेह इन सबरोगोंको यह लवंगादिचूर्ण दूरकरैहै ७यह सबयत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं अथवा बंशलोचन। डोंड़के बीज अर्थात् बड़ीइलायचीके दाना। अनारदाना। जीरा ये सब धेले २ भरले और पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। कालीमिरच। अजमोद। डांसरा अ० तंतरीक। अमलबेत। असगन्ध। अजवाइन। कैथकीगिरी येभी धेले २ भर और मिश्री ४। टंकभर ले इन सबको महीनपीस २॥ टंक प्रतिदिन जलके साथले तौ अरु-

+ जहांपर कपूर छोड़े तौ शुद्धकरके औषधोंमें मिलावै॥

चि श्वास खांसी शूल बमन रक्त पित्त इन सबरोगोंको यह दूरकरैहै-इति वृहदेलादिकंचूर्ण ॥ यह सारसंग्रहमें लिखाहै ८ ॥ अथवा जवाखार। सज्जी। भुनासुहागा। पांचोनोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। सार। भीमसेनीकपूर। लवंग। चव्य। चित्रक। अनारदाना। डांसरा अ० ततरीक। अदरख ये सब बराबरले महीन पीस अजवाइन के अर्ककी ३ पुटदे फिर नींबूके रसकी ५ पुटदे फिर अमलबेतके रसकी ३ पुटदे फिर इस रसकी चने प्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्य खायतो अरुचि मन्दाग्नि प्रमेह खांसी और कफके रोगों को नाना अनोपानसे यह अग्निकुमाररस दूरकरै है ९ ॥ इति अग्निकुमार रस ॥

अथ छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत चिकनी और दुर्गंधित बस्तुखानेसे पेटमें कृमि के पड़नेसे खेद करनेसे भयसे अजीर्णसे आमके दोषसे तृषा लगनेसे दुर्गंधिकी बस्तु देखनेसे स्त्रीके गर्भ रहनेसे अतिशीघ्र भोजन करनेसे बातपित्तकफ दुष्टहोकर अंगोंमें पीड़ाकरके मुख के द्वारा सबखाया पियानिकालदे है इसको मनुष्य छर्दि कहते हैं वहछर्दि पांचप्रकारकीहै बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ सूगली बस्तु आदि देखनेकी ५ ॥

अथ छर्दिका पूर्व्वरूप ॥

हृदयसे खारी और खट्टा २ प्रथमही गिरै और डकारनहीं आवै लारगिरनेलगे और खारीमुखहोजाय अन्नपानके ऊपर से रुचि जातीरहै तब जानना कि वमनहोगा ॥

अथ बातकी छर्दि का लक्षण ॥

हृदय और पसली में पीड़ाहोय। मुख शोष होय मस्तक और नाभि दूखे। श्वास और स्वरभेद होय। डकारकाशब्द

ऊंचाहोय । बमन में झागआवै बमन का रंग काला और कषैला होय और बहुत बेगसे बमन थोड़ी हो दुःख बहुतपावै ये लक्षण बातकी छर्दिके जानिये १ ॥

अथ पित्तकी छर्द्दिका लक्षण ॥

मूर्च्छा । तृषा । मुखशोषहोय । मस्तकगर्मरहै । तालू और नेत्रोंमें गर्म्मी रहै । अँधेरा और घूमनी आवै । और गर्म्म । हरा । लाल । वमन करैतौ पित्तकी छर्दिका लक्षणजानिये २॥

अथ कफकी छर्द्दि का लक्षण ॥

तन्द्रा और मुख मीठा होय । कफडाले । निद्राआवे । भोजन में अरुचि होय। शरीर भारीरहै । चिकना । मीठाठंढा । और कफयुक्त छर्दि रोमांचहोयँ ये लक्षणहोयँ तौ कफकीछर्दि जानिये ३ ॥

अथ सन्निपात की छर्द्दि का लक्षण ॥

शूलहोय । अन्नपचै नहीं । अरुचि । दाह । तृषा । श्वास । प्रमेह ये सब सदैव अधिकरहैं और सलोना । खट्टा । नीला । ठंढा गर्म लार वमन करै तौ सन्निपात की छर्दिजानिये ४ ॥

अथ सूगली वस्तुके देखनेसे उपजी जो छर्द्दि उसका लक्षण ॥

उत्क्लेदहोकर छर्दि करने लगजाय ५ ॥

अथ छर्द्दि रोगका यत्न ॥

धनियां । सोंठि । दशमूल इनका काढ़ाले तौ बातकी छर्दि जाय १ अथवा घृतमें सैंधव नोन डालकर पिये तौ बातकी छर्दिजाय २ अथवा मूंग । आमला इन दोनोंको औटाय रसनिकाल घृत और सेंधवनोन डाल पिये तो बातकी छर्दि जाय ३ अथवा उड़द । मूंग । मसूर । जव इनके आटे की राब कर उसमें शहतडालकर पियेतौ पित्तकी छर्दिजाय ४ अथवा आमले के रसमें चन्दन और शहत मिलाके पियेतौ पित्तकी छर्दिजाय ५ अथवा गिलोय । नींबकीछाल । पटोल अर्थात परवलकेपत्ते । त्रिफला इनकाकाढ़ाकर शहतडाल पियेतौ पित्त

की छर्दिजाय ६ अथवा पित्तपापड़े के काथमें शहत डालपिये तौपित्तकी छर्दिजाय ७ अथवा मक्खीकीबीट। मिश्री। चन्दन शहत मिलाके चाटैतौ पित्तकी छर्दिजाय ८ अथवा खीलोंका सत्तू घृत मिश्री शहत मिलाय खाय तौ पित्तकी छर्दिजाय ९ अथवा मसूर का सत्तू मिश्री मिलाय खायतौ पित्त की छर्दि जाय १० अथवा अनार के रसमें शहत मिलाय पिये तौ पित्तकी छर्दिजाय ११ अथवा चावलके पानीमें शहतमिलाय पिये तौपित्तकी छर्दिजाय १२अथवा इलायची। नागरमोथा। नागकेसर। चावल की खील। गौरीसर। सपेद चन्दन। बहुफली। बेरकी मींगी। लवंग। पीपल इन सबको बराबर ले महीन पीस १। टंक तथा २॥ टंकभर शहतसे चाटै तौ त्रिदोष की छर्दिजाय १३ अथवा पीपल की छालको जलाय पानीमें बुझाय वह पानी पिये तौ छर्दिजाय १४ अथवा बेरकी मींगी। आमलेकी मींगी। पीपल। मक्खीकी बीट इनका काढ़ा कर उसमें शहत मिश्री मिलाय पिये तौ छर्दि जाय १५ ये सब यत्न वैद्य विनोद में लिखे हैं अथवा जामुन और आमके पत्ते पानी में औटाय उस पानी में खील का आटा डाल शहत मिलाय पिये तौ भयंकर भी छर्दिजाय १६ अथवा सूगली वस्तुसे उपजी जोछर्दि सो अच्छीवस्तुके दिखानेसे जाय १७ और आम से उपजी जो छर्दि सो लंघन करने से जाय १८ ये यत्न भावप्रकाशमें हैं॥ अथवा केसर १ माशे इलायची २ माशे शिंगरफ ३ माशे इनको शहतसे चाटै तौ छर्दिजाय १९ इति छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

अथ तृषारोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

भयसे। खेदसे। निर्बलतासे। बढ़ा जो पित्त वह वात से मिल तालुमें जाकर रोगकी उत्पत्ति करताहै और जलकी ले जानेवाली नसोंको रोककर वात। पित्त। कफ यहतीनों ७प्रकार

की तृषाकोकरैहै। बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ शस्त्रादिक के चोटकी ४ निर्बलताकी ५ आमकी ६ भोजन करनेकी ७॥

अथ तृषारोगका स्वरूप॥

बारम्बार जलपिये और तृप्ति होय नहीं पानी पीनेकीमन में इच्छाही बनीरहै तब जानिये की तृषारोग है॥

अथ बातकी तृषाका लक्षण॥

मुख उतर जाय। कनपटी और शिरमें पीड़ा होआवै नासिका रुकजाय। मुखसे रसका स्वाद जातारहै। ठण्ढा पानी पीनेसे तृषा बढ़े तबजानिये कि बातकी तृषाहै १॥

अथ पित्तकी तृषाका लक्षण॥

मूर्च्छाहोय। भोजन प्यारा लगै नहीं। दाहहोय। शरीरमें तापहोय। मलमूत्र नेत्र पीले होयँ। ये लक्षण पित्तकी तृषाके जानिये २॥

अथ कफकी तृषाके लक्षण॥

जठराग्निको कफरोकै है तब वह अग्निकी गर्मी जलकी ले जानेवाली नसोंको सुखाय कफकी तृषाको उपजावै है तबमनुष्य इसतृषासे पीड़ितहोकर नींद और शरीरके भारीपनेको प्राप्तहोताहै और मुखमीठा और शरीर सूखताजाय तबजानिये कि इसके कफकी तृषाहै ३॥

अथ शस्त्रादिककी चोटसे उपजी तृषाका लक्षण॥

शस्त्रादिक के लगने से शरीरके रुधिर निकालने से अति पीड़ा होतीहै उससे तृषा लगै है ४॥

अथ क्षीणताकी तृषाके लक्षण॥

हृदय दूखे। कम्पहोय। मुखसूखे। शरीरमें शून्यताहोय। तृषा बहुतलगै। पीते २ तृप्ति न होय और यहीलक्षण आमकी तृषाके भी जानिये ५॥

अथ भोजन, उपरान्त तृषालगै उसका लक्षण॥

बहुत चिकना खट्टा सलोना अर्थात् निमकीन भारी अन्न खायाहोय तब तत्काल तृषालगैहै ६॥

अथ तृषाका उपद्रव ॥

मुखकास्वर बैठजाय। कण्ठ। गला। तालू सूखे और ज्वर। मोह। श्वास। खांसी ये होयँ तौ वह तृषावाला मरजाय ॥

अथ तृषारोगका यत्न ॥

बातकी तृषावाले को गर्म अन्न और अच्छा जलदे तो तृषाजाय १ अथवा दही और गुड़ मिलाकै खायतौ बातकी तृषाजाय २॥

अथ पित्तकी तृषाका यत्न ॥

सोने रूपेका बुझाया पानीपिये तौ पित्तकी तृषा जाय ३ अथवा मिश्री के ठण्ढे शर्बत से पित्तकी तृषाजाय ४ अथवा धनियेंको रात्रिमें भिजोकर प्रातःकाल घोट मिश्री मिलाकर पिये तौ पित्तकी तृषाजाय ५ अथवा अनारके शर्बतमें मिश्री मिलाकर पियेतौ पित्तकी तृषाजाय ६ अथवा शीतलस्थानमें रहने और भीगा वस्त्र पहिरनेसे पित्तकी तृषाजाय ७ अथवा कपूर। चन्दन। अगर ये लगानेसे पित्तकीतृषाजाय ८ ॥

अथ कफकी तृषाका यत्न ॥

तीखी कडुवी गर्म वस्तु खानेसे कफकीतृषा जायहै ९ ॥ अथवा जीरा। सोंठि। कालानोन इनका चूर्ण जलसे लेतौ कफकी तृषाजाय १० अथवा सुन्दर मद्य के पीनेसे कफकी तृषाजाय ११ ॥

अथ क्षीणताकी तृषा का यत्न ॥

सांठे के रससे तृषा दूरहोय है १२ अथवा वड़का अंकुर। मुलहठी। खील। कमलगट्टा इनको महीनपीस गोली कर मुखमें रक्खे तौ तृषाजाय १३ अथवा सेमर के गोंदको मुखमें रक्खे तौ तृषाजाय १४ अथवा बिजौरेकीजड़। कैथ। अनार कीजड़। सपेदचन्दन। पठानीलोधकीजड़ इनको जलमेंमहीन पीस शिरमें लेपकरे तौ तृषा दाह शोष ये सबजायँ १५ ॥

अथ अभ्याघातसे उपजी जो तृषा उसका यत्न ॥

बकरेका रुधिर पीनेसे यह तृषाजाय १६ अथवा बकरे के

शोरुवेमें शहत मिलाके खाय तो शस्त्रप्रहारकी तृषाजाय १७ अथवा खीरमें मिश्री मिलाके खाय तो यह तृषाजाय १८॥

अथ आमकी तृषाका यत्न ॥

खुरासानीबच । और बेलकेकाढ़ेसे आमकीतृषाजाय १९॥

अथ दुर्व्वल मनुष्यकी तृषाका यत्न ॥

दूधके पीनेसे इसकी तृषाजाय २० तृषा से दुःखितहो पुरुष मोहको प्राप्तहोकर प्राणछोड़ देहै इससे मनुष्य जलकी तृषाको रोकै नहीं थोड़ा २ सदैव पिये ये यत्न वैद्यविनोद और भावप्रकाश में लिखे हैं--इति तृषा रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥ अथ मूर्च्छा । मोहभ्रम । तन्द्रा । निद्रा । संन्यास रोगके उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

क्षीण पुरुषके बहुत कुपथ्य करनेवालेके मलमूत्र रोंकने से चोट लगने से पुरुष की बाहरवाली जो नेत्र कर्ण आदि इंद्रिय हैं उनमें बात पित्त कफ घुसकर संज्ञाकरनेवाली नसोंकोतत्काल अन्धकार प्राप्त करै हैं तब मनुष्यको काष्ठकी भांति पृथ्वी पर डाल देते हैं उसके कुछ सुख दुःखका ज्ञान नहीं रहता है उसको वैद्य मोह और मूर्च्छा कहैहैं वहमूर्च्छा छः प्रकारकी है। बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ रुधिरकी ४ मद्यकी ५ बिषकी ६ फिर उसी मूर्च्छामें पित्तहोताहै वह मुख्य और प्रधानहै ॥

अथ मूर्च्छाका सामान्य स्वरूप ॥

कुपथ्यके सेवन करनेवाले और हीन पराक्रम और क्षीण और मद्यादिकका पीनेवाला ऐसे पुरुष के अज्ञानका हेतु जो तमोगुण पित्त वह बढ़कर ज्ञानरूप जोसतोगुण और रजोगुण तिसको आच्छादनकर दशोंइन्द्रियोंके स्थानमें रहनेवाले जो बात पित्त कफ वे ज्ञानकी करनेवाली नसों को आच्छादनकर सुख दुःख और प्राणका हरनेवाला ऐसा अज्ञान कारण जो तमोगुण सोवढ़कर बेगसे मनुष्यको काष्ठकी भांतिपृथ्वीपरडाल देहै उसको वैद्य मूर्च्छा कहै हैं २ ॥

अथ मूर्च्छाका पूर्व रूप ॥

हृदय दूखे जँभाई आवे मनमें ग्लानिहोय संज्ञा घटजाय तब जानिये कि इस पुरुषके मूर्च्छाका रोगहोगा अथवा काला और लालदीखकर फिर अन्धकारमें प्रवेश होकर ज्ञान होय तदनन्तर शरीर कांपै अंगमें हड़फूटन होय हृदयदूखै शरीर कृश होजाय लाल और काली छाया दीखै ये लक्षण जिसके होयँ उसके बायुकी मूर्च्छा जानिये ॥

अथ पित्तकी मूर्च्छाका लक्षण ॥

आकाश जिसको लाल और हरा पीला दीखै फिर मूर्च्छा होकर पसीना आवै फिर ज्ञानहोकर तृषा लगे शरीर ठण्ढा प्रस्वेदोंसे युक्त होय और लाल पीले जिसके नेत्र होयँ मुखसे टूटे अक्षर निकलें शुद्ध बोला न जाय शरीर की कांति पीली होजाय तो पित्तकी मूर्च्छा जानिये २ ॥

अथ कफकीमूर्च्छा का लक्षण ॥

मेघकीघटायुक्त आकाशसा जिसकोदीखै फिर उसकोमूर्च्छा आवै और देरमें ज्ञानहोय और शरीर ठण्ढेपसीनेसे भरजाय और लार बहुत गिरै तो कफकी मूर्च्छा जानिये ३ और सब लक्षण मिले होयँ तो सन्निपातकी मूर्च्छा जानिये यह मूर्च्छा मृगीके तुल्य है सूगलीवस्तु देखेबिनाही होतीहै ॥

अथ रुधिरकी मूर्च्छाका लक्षण ॥

मनुष्यको रुधिरकी दुर्गन्धआकर पृथ्वी और आकाशअन्धकारयुक्त दीखै और सर्वत्र रुधिरकी बासआवै निश्चलदृष्टि होय और श्वास अच्छीप्रकार नहींआवै फिर मूर्च्छा होय तो रुधिरकी मूर्च्छा जानिये इसीप्रकार चम्पेके फूलआदिके सूँघने से भी मूर्च्छा होतीहै यह इसका स्वभावहै ॥

अथ मद्यकी मूर्च्छाका लक्षण ॥

अधिक मद्यपीकर मनुष्य बहुतबकै और पीछेसे सोजाय

फिर संज्ञा जाती रहै और पृथ्वी पर हाथ पैर पटकै जबतक शरीरमें मद्यकाअमलरहै शरीरकांपै बहुतसोवै प्यासअधिक लगै ये लक्षण मद्यकी मूर्च्छाके जानिये ॥

अथ विषकीमूर्च्छाका लक्षण ॥

जिसने विष खायाहोय उसका शरीर कांपै और नींदबहुत आवै। संज्ञा जाती रहै। मुख कालापड़जाय अतीसार होय भोजनमें रुचि जाती रहै ये लक्षण विषकी मूर्च्छाके जानिये ७ तमोगुण और पित्तकी आधिक्यतासे मूर्च्छा होतीहै ॥

अथ भ्रमका लक्षण ॥

रजोगुण और बात पित्त जब मिलै हैं तब भ्रमहोय है ॥

अथ तन्द्राका लक्षण ॥

तमोगुण और बात कफ जब मिलै हैं तब तन्द्रा होतीहै और आधे नेत्र खुले रहते हैं ॥

अथ निद्राका लक्षण ॥

तमोगुण और कफ मिलने से मनुष्य का चित्त खेद युक्त होताहै और दशोंइन्द्रियां भी खेदयुक्त होकर अपने २ विषय को ग्रहण नहीं करें तब पुरुष सोवैहै ॥

अथ संन्यासका लक्षण ॥

हृदय में रहते जो बात पित्त कफ ये तीनों दोषों से वाणी देह मनकी चेष्टा को ग्रहणकर निर्बल पुरुषको काष्ठ की भांति मूर्च्छित करैहैं उसको संन्यास कहिये ॥

अथ मूर्च्छा का यत्न ॥

तिल आदिके सेंकनेसे बातकी मूर्च्छा जाय १ ॥

अथ पित्तकीमूर्च्छा का यत्न ॥

शीतल शर्बतमात्रसे पित्तकी मूर्च्छाजाय २ चमत्कारीमणि के धारणसे मूर्च्छाजाय ३ कपूर चन्दन आदि शीतल बस्तुके लेपसे मूर्च्छाजाय ४ अथवा बेरकी मींगी। शीतलचीनी। खस।

नागकेसर ये चारों ५ टंक ले फिर शीतल जलमें भिगोय शर्बतकर इसमें शहत मिश्री मिलाय पिये तो मूर्च्छा जाय ५ अथवा मीठे अनारके शर्ब्बतमें मिश्रीमिलाकरपिये तो मूर्च्छा जाय ६ अथवादाखअर्थात् किसमिसकेशर्वतमें मिश्रीमिलाकरपियेतोमूर्च्छाजाय७अथवासाबुनजलमेंघोलकर अंजनकरै तो मूर्च्छाजाय ८अथवा सिरसकेबीज पीपलकालीमिरच सेंधानोन ये सब गोमूत्रमें पीस अंजनकरै तो मूर्च्छाजाय ९ अथवा मैनसिल वच लहसन इनतीनोंको गोमूत्रमेंपीस अंजनकरैतो मूर्च्छा जाय१०अथवा मैनसिल। महुआ। सेंधानोन। वच। कालीमिरच ये सब बराबरले जलमें महीन पीस नासदे तो मूर्च्छा जाय ११॥

अथ रुधिरकी मूर्च्छाका यत्न॥

सब शीतल यत्नों से यह मूर्च्छा जाय १२॥

अथ मद्यकी मूर्च्छाका यत्न॥

सर्व शीतल यत्नोंसे यह भी मूर्च्छा जाय है १३ मद्यकी मूर्च्छा में और थोडीसी मद्यपिये तो मद्यकी मूर्च्छा जाय १४॥

अथ विषकी मूर्च्छाका यत्न॥

विषकी मूर्च्छा वाले को मीडक की अथवा नीलेथोथे की अथवा फिटकरीकी व गरमपानी पीपल आदिकी किसीप्रकार बमन कराने से बिषकी मूर्च्छाजाय १५ अथवा पीपल। मारा पारा। तामेश्वर। खस। नागकेसर ये सब बराबरले इसमेंसे १ रत्तीके प्रमाण शीतल जलसे दे तो सर्वप्रकार की मूर्च्छा जाय १६॥

अथ घुमनीका यत्न॥

धमासे के काढ़ेमें घृत मिलाकर पिये तो घुमनीजाय १७ अथवा आमला हड़के काढ़ेमें घृतडालकर पिये तो घुमनी जाय १८ अथवा सोंठि। पीपल। सोंफ। हड़की छाल ये सब टके २ भरले और ६ टकेभर गुड़ लेके पांच २ टंककी गोलियांबनावै एकगोली नित्यखाय तो घुमनीजाय १९॥

अथ तन्द्रा का यत्न॥

सेंधानोन। कपूर। सरसौं। मैनसिल। पीपल। महुयेके फूल इनको घोड़े के झागसे महीन पीस अंजन करै तौ तन्द्रा जाय और अतिनिद्राभी दूरहोय २० अथवा सहजने के बीज। सेंधानोन। सरसौं। कूट इनको बकरेके मूतमें महीनपीस नास दे तौ तन्द्रा और अतिनिद्रा दोनोंजायँ २१ अथवाकालीमिरच। सहजने के बीज। सोंठि। पीपल येसब बराबरले अगस्तकेरस में महीन पीस नासदे तो तन्द्राजाय २२ ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं॥ अथवा सोंठिके रसमें शहत औरमिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छाजाय २३ अथवा किवांचकीफली लगाने से मूर्च्छाजाय २४॥ इतिमूर्च्छा भ्रम तन्द्रा संन्यासरोगकेउत्पत्ति लक्षण यत्नसम्पूर्ण॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजी बिरचितेअमृतसागरनामग्रन्थे स्वरभेद अरोचक छर्दि मूर्च्छा आदिभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणोनामषष्ठस्तरंगः६॥

अथ मदात्ययरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जो गुण विषभक्षणमें हैं वही मद्यपीने में भी हैं बुरेप्रकार अत्यन्त कुपथ्यके साथ जो पुरुष बहुत मद्यपिये उसके मदात्ययको आदि ले बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं इसलिये मद्य अच्छेप्रकार से पीना योग्य है इसको अच्छेप्रकार पिये तो अमृतकासा गुणकरै और बुरेप्रकार पियेतो रोगोंको उत्पन्न करै है और बिषके सदृश मारडालतीहै इसमें दृष्टांतहै कि जैसे मनुष्य समय पर अच्छे प्रकार प्रमाणका भोजनकरताहै वह भोजन अमृतकेतुल्य गुणदायकहै और शरीरको निरोग्य करताहै और उसीअन्नको पशुकी सदृश थोड़े बहुतका ज्ञान न रखकर खाय तो वहीभोजन उबासीको आदिले अनेकरोगोंको उपजावैहै औरतत्काल मारै है ऐसेही मद्य और बिष ये दोनों

प्राणके हर्त्ताहैं परन्तु इसको युक्ति पूर्वक सेवनकरै तो ये दोनों अमृतकीतुल्य गुणकरै हैं और सर्वरोगमात्रको दूरकर सदैव पुरुषको तरुण रक्खैंहैं॥

अथ विधि से मद्यपीनेका फल॥

प्रातसमय शौचादिक कर स्नान संध्यासे निवृत्तहो २ टके भर रीतिसे मद्यपिये और मध्याह्न समय सचिक्कण भोजनके साथ ४ टकेभरपिये और सायंकालको पहरभररात्रिको भोजन के समय ८ टकेभर मद्यपिये तो यह मद्य अमृतका सा गुण करिकै क्षुधाको अधिककरैहै रोगको समीपनहीं आनेदेतीऔर अच्छेभोजनके साथ प्रसन्न चित्तहोकर पिये तो जैसा मद्यमें गुणकहाहै वैसाही गुणकरै है सो वह लिखते हैं॥ काम बढ़ावे चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज। बुद्धि। पराक्रम। स्मृति। हर्ष। सुख। भोजन। निद्रा इन सबको मद्य बढ़ावे है और अन्यथा पिये तो मदात्ययको आदिले अनेक रोगोंको उत्पन्न करै है सोभी लिखते हैं॥ बकनेलगै स्मरण जातारहै बाणी और शरीरकी चेष्टा विक्षिप्त कीसी करनेलगै आलस्य आवै नहीं अनकहनेकी बातेंकहै और काष्ठके सदृश पड़ारहै अगम्यागमन करै बड़ोंको न मानै अभक्ष्य भोजन करै संज्ञा जातीरहै गुप्त बातको प्रकटकरदे और रोगोंको उपजाकर शरीरकी निर्बलता करैहै यह अयोग्य रीतिसे होता है और जैसे मनुष्य पिये हैं सो प्रकार लिखते हैं॥ भोजन बिनाकिये पिये बारंबार पियाही करै क्रोधकरपिये भयकर पिये तृषायुक्तहोकर पिये खेदयुक्तहो पिये मलमूत्रसे वेगयुक्तहोकर पिये बहुतखटाईके साथपिये निर्बलता में पिये किसीप्रकारकी गरमीसे पीड़ित होकर पिये तो उस पुरुषके मदात्ययको आदिले बहुत रोग होतेहैं॥

अथ वातके मदात्यय रोगका लक्षण॥

हिचकी और श्वासहोय। मस्तक कांपै। पसलीमें शूल

होय । निद्रा आवै । बहुत बकै ये लक्षण होयँ तौ बात का मदात्यय जानिये १ ॥

अथ पित्तके मदात्ययका लक्षण ॥

तृषा बहुत लगै। दाह और ज्वरहोय। पसीना । मोह। अतीसार होय। घुमनी आवे। शरीरका हरित बर्ण होजाय तौ पित्तके मदात्ययके लक्षण जानिये २ ॥

अथ कफके मदात्यय का लक्षण ॥

वमन और अरुचि होय। सलोना अ० निमकीन और खट्टा अच्छा लगै तन्द्राहोय। शरीर भारीरहै ये लक्षण होयँ तौ कफका मदात्यय जानिये ३ ॥ और यह लक्षण मिलेहोयँ तौ सन्निपात का मदात्यय जानिये ४ ॥ अथ परम मदका लक्षण ॥

पीनस। मस्तकमें दर्द। अंगोंमें पीड़ाहोय। शरीर भारीरहै। मुखकास्वाद जातारहै। मलमूत्र रुकजाय। तन्द्रा। अरुचि। तृषाहोय ये लक्षण होयँ तौ परममद जानिये ५ ॥

अथ पानाजीर्णका लक्षण ॥

अत्यन्त अफरा। वमन। दाह और अजीर्णहोय ये लक्षण होयँ तौ पानाजीर्ण जानिये ६ ॥

अथ पानविभ्रमका लक्षण ॥

हृदय दूखै। अंगोंमें पीड़ाहोय। कफथूकै। मुखसे धुआंनिकलै। मूर्च्छा। ज्वर। वमन। और मस्तकमें दर्दहोय। मिठाई और मद्यमें रुचि न होय येलक्षणहोयँ तौपानविभ्रमजानिये॥

अथ मदात्ययका असाध्य लक्षण ॥

नीचेका ओष्ठलटकजाय। शरीरऊपरसे ठंढालगै भीतरदाह होय और मुखमेंतेलकी वास आवै जीभ ओष्ठ दांत कालेहोयँ और नेत्र नीले पीले और लाल होजायँ हिचकी। ज्वर। वमन। पसलीमें शूल। खांसी। घुमनी ये लक्षण होयँतौमदात्यय असाध्य जानिये ॥

अथ मदात्यय परममद पानाजीर्ण पान विभ्रम आदिका यत्न ॥

दारूकी बिधिसे निकालेहुये सुन्दर आसवकेसेवनसे बात का मदात्यय जाय यहां यह दृष्टान्तहै कि अग्निके जलनेवाले को अग्निहीसे तपावे तो अच्छाहोय १ अथवा बिजोरेकीकेसर। अमलबेत। मीठाबेर। मीठाअनार। अजवाइन। जीरा। सोंठि इन तीनोंको महीन पीस बिजौरादिक के रसकी इनमें पुटदे फिर इस चूर्णको अनुमान माफिक सुन्दरमद्यमें डालकर विधिपूर्वक पिये अथवा इसमें सेंधानोन मिलावे अथवा सत्तू के साथमद्यपिये और पुरानी मद्यपिये अथवा कालानोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल इनको महीन पीस चूर्णकर अनुमान माफिक मद्य में मिलाय पिये तो बातका मदात्यय जाय २॥ अथवा चव्य। कालानोन। भुनी हींग। सोंठि। अजवाइन। इनको महीनचूर्णकर मद्यमें मिलाकेपिये तो बातकामदात्यय जाय ३॥ अथवा लवा, तीतर, मुर्गेकामांस भक्षण करने से बातका मदात्यय जाय ४॥ अथवा सर्व गुणसम्पन्न यौवनवती १६ वर्षकी स्त्रीसे सम्भोग करै तो बातका मदात्यय जाय ५॥ यह यत्न भावप्रकाशमें लिखाहै अथवा दाख अ० किसमिस। अनार। छुहारा। महुआ इनको दारू मिश्री मिलाके पिये तो बातका मदात्ययजाय ६॥ अथवा गौका मट्ठा मिश्री मिलाके पिये तो बातका मदात्ययजाय ७॥ यह सार संग्रहमें लिखाहै॥

अथ पित्तके मदात्यय का यत्न ॥

सर्वशीतल यत्नोंसे पित्तका मदात्यय जाय ८॥ अथवा शीतल जलमें मिश्री और शहत मिलाके पिये तो पित्तका मदात्यय जाय ९॥ अथवा मीठे अनारके रसमें मिश्री मिला के पिये तौपित्तका मदात्यय जाय १०॥ अथवा खरगोश। हरिण। लवाइनका मांसखायतौ पित्तकामदात्ययजाय ११॥ अथवाबकरे के शोरुवेमें साठीके चावल खानेसे पित्तका मदात्ययजाय १२॥

अथ कफके मदात्ययका यत्न ॥

चन्दन । खस इनके लेपसे कफका मदात्यय जाय १३ ॥ अथवा यव गेहूंका पथ्यखानेसे कफका मदात्यय जाय १४ ॥ अथवा बमन और लंघन करनेसे कफका मदात्ययजाय १५॥ अथवा कालानोन । जीरा । अमलबेत । तज । इलायची । कालीमिरच । मिश्री इन सब को महीन पीस जलके साथ ले तौ कफका मदात्यय जाय १६ ॥

अथ सन्निपातके मदात्ययका यत्न ॥

आमलेके रसमें पारे और गन्धककी १ टंक कजलीमिलाके पिये तौ सन्निपातका मदात्यय जाय १७॥

अथ पानविभ्रमका यत्न ॥

दाख अ० किसमिसके शर्बतमें अथवा कैथके शर्बत में अ० अनारके शर्बत में शहत मिलाके पिये तौ पान विभ्रम जाय १८ ॥ यह वृन्दमें लिखा है ॥

अथ धतूरेकेफलकेमदका यत्न ॥

पेठेके रसमें गुड़ मिलाके पिये तौ धतूरेका मद जाय१९॥ अथवा दूधमें मिश्री डालकर पिये तौ धतूरे और भंग का मद जाय २० ॥

अथ भंगके मदका यत्न ॥

कपासकी जड़का रस अथवा बैंगनकी जड़कारस अथवा पतला मट्ठा अथवा घृत अथवा नींबका रस मिश्रीके शर्बत में मिलाके पिये तौ धतूरे और भंगका मद जाय २१॥

अथ विषकेमदका यत्न ॥

निबौलीकी मींगी और नीलाथोथा १ मा० इन दोनों को पीसकर कांजीके पानी में मिलाय पिये तौ सर्ब्ब विषमात्र का मदजाय २२॥ यह यत्न वैद्योपचार ग्रन्थमेंहै—इतिमदात्यय परममदपानाजीर्णपान विभ्रम धतूराभंग विषमद इन सब की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ दाहरोगकीउत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

दाह ७ प्रकारका है पित्तका १ दुष्ट रुधिरके बढ़ने का २ शस्त्रादिक से निकला जो रुधिर उस्सेपूर्णहुआ जोकोष्ठ उसका ३ मद्यादिक के पीनेका ४ तृषाकेरोंकनेका ५ धातु क्षयका ६ मर्म्मकी चोट लगनेका ७ इति ॥

अथ पित्तकेदाहकालक्षण ॥

जिसमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलैं उसे पित्त का दाह जानिये १ ॥ अथ रुधिरके दुष्टपनेसे उपजा जोदाह उसका लक्षण ॥

सब शरीरमें दाह लगजाय और सब देहमें धुआंसा निकलै और शरीर की तामेकीसी आकृति होय और तामे के रंग सदृश नेत्र होयँ। मुखमें रुधिर कीसी गन्ध आवै और सब अंग अग्निकी भांति जलैं ये लक्षण होयँ तो दुष्टरुधिरका दाह जानिये २ ॥

अथ शस्त्रादिकसे निकला जो रुधिर उस्सेपूर्णहुआ जो कोष्ठउसकेदाहका लक्षण ॥

रुधिरसे कोष्ठ भरजाय और दाहलगजाय वहअसाध्य है और मरजाय ३ ॥

अथ मद्यादिकके पीनेके दाहका लक्षण ॥

हृदयकी पवन पित्त और रुधिर से मिल सबत्वचामें प्राप्त होकर सब शरीरमें भयंकर दाहकरैहै ४ ॥

अथ पित्तके रोंकनेके दाहका लक्षण ॥

तृषाके रोंकनेसे शरीरका जल और धातु क्षीण होनाहै तब शरीरमें गर्मी बढ़कर शरीरको दग्धकरैहै तबउसका चित्तमन्द होताहै और गला तालू सूखकर जीभको बाहर निकाल कर कांपने लगै है ५ ॥

अथ धातुक्षयके दाहकालक्षण ॥

धातुक्षयके दाहसे मूर्च्छा और तृषा होकर मुखकास्वर बैठ जाय शरीरकी सामर्थ्य जातीरहै तो यहदाह असाध्यहै ६ ॥

अथ मर्मकी चोटलगने के दाहका लक्षण ॥

शिरसे पेडूको आदिले मर्म्मस्थान में चोट लगनेसे जो दाह उत्पन्नहोय वह असाध्य जानिये ॥

अथ दाहकाअसाध्य लक्षण ॥

शरीर ठण्ढाहोजाय दाहभीतरहोय तौ वह मनुष्यमरजाय॥

अथ दाहका यत्न ॥

१००० बारका अथवा १०० बारका धोया घी शरीर में मर्द्दन करै तौशरीरका दाहजाय १ अथवा यवके सत्तमें मिश्री मिलाके खाय तौ दाहजाय २ अथवा आमलेके पानीमेंकपड़ा भिजोकर ओढ़ै तौ दाहजाय ३ अथवा खस और रक्तचन्दन घिसकर शरीर में लेपनकरै तौ दाहजाय ४ अथवा केले के पत्तोंकी वा कमलकी पखुरियों की सेजपर सोवै तौ दाहजाय ५ अथवा फुवारा चादर आदि जलक्रीड़ा करने से दाहजाय ६ अथवा खसखाने में रहने से भी दाह जातार है ७ अथवा शीतल जलके पीने से दाह जाता है ८ अथवा उपवन आदि शीतल स्थान में रहने से दाह जाता है ९ अथवा चन्दन। पित्तपापड़ा। खस। कमलगट्टा। धनियां। सौंफ। आंवला इनका २ टंक भर का काढ़ाकर उसमें शहत मिश्री मिलाके पिये तौ दाहदूरहोय १० ये सब भावप्रकाशमें लिखेहैं ॥

अथ रुधिरके बिगड़नें के दाहका यत्न ॥

उसके फस्त लगवादे तौ बिगड़े रुधिरका दाहदूरहोय ११ अथवा पारा। शोधीगन्धक। भीमसेनीकपूर। चन्दन। खस। नागरमोथा ये सब बराबरले पीछे पारे और गन्धककी कजलीकरै उस कजली में ये औषधडालै पीछे इसके जलसे गोलीबांधै १ गोली मुखमें रखकर चसै तौ शरीरके भीतरका दाहजाय यहदाहके दूरकरनेकारसहै १२ अथवापारा १ तोला तामेश्वर १ तोला अभ्रक १ तोला शोधी गन्धक १ तोला

प्रथमपारे और गन्धककी कजलीकरै फिर येसब औषधउसमें मिलावै फिर इसमें नागरमोथेके रसकी १ पुटदे फिर पीपलके रसकी १ पुटदे फिर मीठेअनारके रसकी १ पुटदे फिर बड़के अंकुरोंकी १ पुटदे फिर चन्दनके रसकी १ पुटदे फिर सहदेई के रसकी १ पुटदे पीछेदाखअ० किसमिसके रसकी ७ पुटदे फिर छायामें सुखाय चनेप्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्यखाय तौ दाह। अम्लपित्त। मूत्रकृच्छ्र। प्रदर। प्रमेह इन सबरोगों को यह चन्द्रकलारस दूरकरैहै १३— इतिदाहरोग॥

अथ उन्मादरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

विरुद्ध भोजनसे। अपवित्रभोजनसे। दुष्ट भोजनसे। और देवता। गुरू। ब्राह्मण। तपस्वी। राजाइनके तिरस्कारसे और किसी प्रकारकेभय और हर्षसेभी और धतूरा भंगआदिकेखाने से मनुष्योंका चित्त बिगड़ैहै फिर वह बिगड़ाहुआ चित्त बात। पित्त। कफ इनतीनोंसे मिलकर पुरुषको मदयुक्तकरदेहै अर्थात् मनुष्यकोगहलमें करदेताहै उसको लौकिकमें हौलदिली कहते हैं वह हौलदिली वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ मनके दुःखसे ५ बिषखानेसे ६ छःप्रकारसे होतीहै ॥

अथ उन्मादका स्वरूप ॥

क्षीणपुरुषके विरुद्धभोजन करनेके पीछे वात पित्त कफ दुष्ट होकर बुद्धिको नष्टकरैहैं फिर उसके हृदयमें पीड़ा करके मनके ले चलनेवाली नसोंको मोहितकरैहैं तब मनुष्यका चित्त डामाडोल होकर थिर नहींरहता इसको हौलदिली कहते हैं ॥

अथ उन्मादका पूर्वरूप ॥

बुद्धि स्थिररहैनहीं शरीरकापराक्रम जातारहै ये लक्षणहोयँ तौ जानिये कि पुरुषके उन्माद होगा ॥

अथ वातके उन्मादका लक्षण ॥

रूखी और ठंढी अधिकवस्तु खाने और अधिक जुलाब

लने और धातुकी क्षीणतासे वातबढ़े है फिर वहवात हृदयको बिगाड़कर बुद्धि और स्मरणको तत्काल नष्टकरैहै तब मनुष्य बिनाही कारण हँसै गावै नाचै अथवा हाथ मुखसेबन्दरकीसी चेष्टा करने लगजाय और रोनेलगजाय शरीर कठोर और काला लाल पड़जाय और भोजन पचनेके पीछे यहरोग अधिकबढ़े ये लक्षण होयँ तौ वातका उन्माद जानिये १॥

अथ पित्तके उन्मादका लक्षण॥

अजीर्णमें भोजन करनेसे और कडुवा खट्टा। गरमभोजन से पित्तबढ़कर मनुष्यके हृदयको बिगाड़कर उन्माद को करै है तब वह पुरुष किसीकीबातको मानेनहीं और नंगाहोकर सबको मारनेलगै और शरीर गरमहोजाय और शीतलवस्तु खानेकी इच्छारहै और शरीरपीला होजाय ये लक्षण होयँ तौ पित्तका उन्माद जानिये २॥

अथ कफके उन्मादका लक्षण॥

क्षुधामन्दहोय और बहुतखाय। कामकरनेमें आलस्यआवै। उसका पित्त कफसे मिलकर मर्म्मस्थानोंको बँधावैहै तब पुरुष की बुद्धि और स्मरणको नाशकरके उसके चित्तको बिगाड़उन्मत्तकरदेहै तब वह पुरुष कमबोलताहै और क्षुधाजाती रहै। स्त्रियां प्यारीलगैं एकान्तस्थान अच्छालगै। नींदअधिकआवै छर्दिहोय। बलजातारहै। नखादिक श्वेतहोजायँ। येलक्षणहोयँ तौ कफका उन्माद जानिये ३ और ये सम्पूर्ण मिले लक्षण होयँ तौ सन्निपातका उन्माद जानिये ४॥

अथ मनके दुःखके उन्मादका लक्षण॥

चोरोंके भयसे। राजाके भयसे। प्रबलशत्रुकेभयसे। और भयानक कर्म्मके भयसे। अथवा धन पुत्रादिकके नाशसे। अधिक मैथुनसे जब पुरुषके चित्तमें चोटलगैहै तब उस पुरुषके मनमेंचोटलगकर मनको बिगाड़कर उन्मत्त करदेहै तब वहपु-

रुष जो चाहताहै वही अस्तव्यस्त बकताहै और संज्ञाजाती-रहै। और गाने हँसने लगजाय। ये लक्षण होयँ तौमनकेदुःख का उन्माद जानिये ५॥

अथ विषखानेके उन्मादका लक्षण॥

लालनेत्रहोयँ शरीरकाबल और सबइन्द्रियोंकी कांति जातीरहै। गरीबहोजाय। मुखकाला पड़जाय। ये लक्षण होयँ तौ विषखानेका उन्माद जानिये यह उन्मादवाला मरजाय ६॥

अथ उन्मादमात्रका असाध्य लक्षण॥

कै तौ नीचा या ऊंचाही मुखरक्खै और शरीरका बलमात्र जातारहै निद्राआवै नहीं। जागाहीकरै ये लक्षणहोयँतौ वह पुरुषमरजाय ७॥

अथ भूतादिकके लगनेसे उपजा जो उन्माद उसका लक्षण॥

जिसपुरुषके भूतादिक लगाहोय उस पुरुषकी बाणी मनुष्यकीसी न होय किन्तु बिचित्रहोय और उसकापराक्रम औरशरीरकी चेष्टा और उसकेज्ञान विज्ञानभी बिचित्रहोयँ ये लक्षणहोयँ तौ भूतादिकके लगनेका उन्माद जानिये १॥

अथ जिसके शरीरमें किसीदेवताकाप्रवेशहुआहोय उसके उन्मादका लक्षण॥

सबबातोंसे वह संतुष्ट और पवित्र रहै और अच्छेपुष्पादिककी माला धारणकरै सुन्दर अतर सूंघाकरै और नेत्र बन्दनहोयँ और बिना पढ़ाहुआ। संस्कृतबोलै और शरीरमें तेजबढ़ै और जो मांगै उसको वरदे और ब्राह्मण बनजाय जिसमें ये लक्षण होयँ उसके देवताके प्रवेशका उन्माद जानिये २॥

अथ जिसके शरीरमें असुरनेप्रवेश कियाहोय उसके उन्मादका लक्षण॥

पसीना आवै और ब्राह्मण गुरू देवता इनमें दोष निकालै कुटिल दृष्टिहोय किसी प्रकारका भय न होय खोटेमार्गमें दृष्टि होय किसीप्रकार तृप्तिहोय नहीं भोजनादिक में दुष्टात्मा होय

ये लक्षण जिसमेंहोयँ उसके असुरलगाहुआजानिये ३ ॥

अथ गन्धर्व लगनेसे उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

दुष्टात्माहोय और पुलिनबन में रहने से चित्तप्रसन्न रहै आचार में मग्नरहै गाना और नाचनासुहावै थोडा बोलै ये लक्षण होयँ तौ गन्धर्व्वलगा जानिये ४ और यही यक्षग्रहका लक्षण जानिये ५ ॥

अथ जिसके शरीरमें पितृदोषहोय उसका लक्षण ॥

डाभके ऊपर पिण्ड २ धराकरै। सतोगुणी होय। तर्पण कियाकरै। मांसगुड और खीरके भोजनमें रुचिरहै ये लक्षण होंय तौ पितृ दोष जानिये ६ ॥

अथ सतीका दोष जिसके होय उसका लक्षण ॥

मन निश्चलरहै नहीं। सन्तानादिकका अवरोधकरै। सती कीबातोंसुहावै। बोलैनहीं। बोलैतौ वरदे औरपवित्ररहैअच्छी वस्तुओं में मनरहै येलक्षणहोय तौ सतीका दोषजानिये ७ ॥

अथ क्षेत्रपाल के दोषका उन्माद ॥

मुखनासिका में रुधिरचलै श्मशान कीभस्म मस्तकमें लगावै। खोटा स्वप्नहोय। उदरमें पीडारहै। और सन्धि २ में पीडारहै चित्तस्वस्थरहै नहीं ये लक्षणहोयँ तौ क्षेत्रपाल का दूषण जानिये ८ ॥

अथ बीजासणीदेवीके दोषसे उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

पक्षाघातहोय। शरीर और रुधिरसूखजाय। मुखऔर पैर टेढेहोजायँ। शरीर क्षीणहोजाय। स्मरणादिक जातारहै ये लक्षणहोयँ तौ बीजासणीका दोष जानिये ९ ॥

अथ कामण के दोषसे उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

कन्धा और मस्तक भारी होय। मनस्थिर न रहै सर्व्वअंग क्षीण होजायँ। नासिका औरहाथ पैरमें दाह होय। वीर्य्यनाश होय। शरीरके आठोंअंगमें सुईकेसे चमके चलतेरहैं शरीरसूख

जाय ये लक्षण होयँ तो कामणकेदोषका उन्माद जानिये १० ॥

अथ शाकिनी डाकिनीके लगनेसे उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

सब अंगों में पीड़ा होय नेत्र बहुत दूखें। मूर्च्छाहोय। शरीर कांपै। रोवै। बकै। भोजन में अरुचिहोय। हँसै स्वरभंग होय। शरीरका बल औरक्षुधा जाती रहै। घुमनीआवै। ज्वरभी होय ये लक्षण होयँ तो शाकिनी डाकिनीका दोषजानिये ११ ॥

अथ कुगतिसे मरापुरुष जो प्रेतहोय उससे उपजा जो उन्माद तिसका लक्षण ॥

सबेरेही घर में से उठ २ भागे। खोटा बचनकहै बहुतबकै। शरीरकांपै।रोवै।और खाय पिये नहीं।बुरेप्रकार श्वासलियाकरै। मनमेंआवै सोखाय ये लक्षणहोयँ तो प्रेतका दोषजानिये १२॥

अथ जिसके राक्षस लगाहोय उसके उन्मादका लक्षण ॥

मांसखाने और रुधिरपीनेमें जिसकीरुचिरहै। बहुतदुष्टता सेबोलै।बहुतसा शूरपनाचढ़जाय।क्रोधबहुतहोय। रात्रिमेंअकेला फिरै।अपवित्ररहै येलक्षणहोयँ तो राक्षसलगाजानिये १३॥

अथ ब्रह्मराक्षस जिसके लगा होय उसके उन्मादका लक्षण ॥

देवता ब्राह्मण गुरू इनसे शत्रुतारक्खै। वेद और वेदान्त काजाननेवालाआपहोजाय और अपनेशरीरकोआपहीदुःखदे और मारै नहीं येलक्षणहोयँ तो ब्रह्मराक्षसलगाजानिये १४ ॥

अथ पिशाच लगनेके उन्मादका लक्षण ॥

ऊंचेहाथ रक्खै। शरीरकृश होजाय। कुछका कुछ अर्थात् मिथ्याबकै। शरीरमेंदुर्गंधआवै। अपवित्ररहै। अतिचंचलहोजाय। बहुतखाय। उद्यानमेंमनरहै। भ्रमै। बहुतरोवै येलक्षण होयँ तो पिशाच लगा जानिये १५ ॥

अथ उन्मादका असाध्य लक्षण ॥

नेत्रकटेसेहोजायँ। डोलाकरै। मुखमेंझागआवै। निद्राबहुत आवै। गिरगिरपड़ै। कांपै येलक्षणहोयँ तो असाध्यजानिये ॥ और पूर्णिमामें अधिक रोगहोयँ तो देवताका दोष जानिये ॥

और सायंकालको कोईलगैतौ असुरका दोषजानिये॥ पडिवा को विकल होय तौ यक्षका दोषजानिये रात्रिमें येलक्षणहोयँ तौ पिशाचका दोष जानिये॥

अथ इन सबके लगनेका प्रकार लिखते है॥

जैसे मनुष्यादिकोंका प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेशकरैहै तैसेही प्राणीमात्र में शीतोष्ण घुसजायहै और जैसे आतशी शीशेमें सूर्य की किरण प्रवेशकर अग्नि को उत्पन्न करै है तैसेही मनुष्यादिकों के शरीरमें भूत प्रेतादिक प्रवेश करजाय हैं और दीखतेनहीं परन्तुचेष्टादिकोंसे जानपड़तेहैं॥

अथ उन्मादको आदिले इन सबका यथा यत्न॥

घृतादिक के पीने से बातका उन्माद जाय १ अच्छे जुल्लाबके लेनेसे पित्तका उन्मादजाय २ बमन के करने से कफ का उन्माद जाय ३ और लिंग और गुदा में पिचकारी देने से उन्माद जाय इसको बस्तिकर्म कहते हैं ४ अथवा लौनिये के रस में बराबर का गुड़ मिलाय गौका मट्ठा मिलाके पिये तौ उन्माद जाय ५ अथवा खरैटी की डालियों का रस निकाल पिये तौ उन्मादजाय ६ अथवा कडुये तेल का मर्द्दन करके धूपमें बैठे तौ उन्माद जाय ७ अथवा कोई अद्भुत वस्तु दिखावै या किसी इष्ट मित्रका नाम सुनावै तौ उन्माद जाय ८ अथवा गरमघृत वा गरमतेल या गरम जलको स्पर्शकरावै तौ उन्माद जाय ९ अथवा कौंच की फली का स्पर्श करावै तौ उन्माद जाय १० अथवा कोड़े की मार मारै तौ उन्माद जाय ११ अथवा शस्त्रसे। सर्पसे। सिंहसे। वा रोंकनेसे किसी प्रकारसे डरपावै तौ उन्माद जाय १२ जिसप्रकार से चित्त ठिकाने आवै सो सर्वदुःखसे प्राणका रखना भलाहै इसकारण ये यत्न अच्छेहैं अथवा कूट। असगन्ध। सेंधानोन। अजमोद। दोनोंजीरे। सोंठि। कालीमिरच। पीपलवड़ी। पाढ। शंखाहूली

सबको बराबरले और इन सबकी बराबर बचले फिर सब को महीनपीस उसमें ब्राह्मीके रसकी १० पुटदे फिर छायामेंसुखाय २॥ टंक प्रमाण घृत। शहतके साथ इस सारस्वतचूर्ण को १५ दिन ले तो सर्वप्रकार का उन्माद जाय और यह चूर्ण सर्व बातके बिकार और प्रमेह को दूरकर बुद्धि को बढ़ाके कविता शक्ति करैहै यह चूर्ण ब्रह्माजी का बनाया है—इति सारस्वत चूर्णम् १३ अथवा त्रिफला। पित्तपापड़ा। देवदारु। शालि-पर्णी अ० शरवन। जवासा। तगर। हल्दी। दारुहल्दी। इन्द्रा-यणकी जड़। गौरीसर। चन्दन। पद्माक। कूट। कमलगट्टे। इलायची। कटेली। मजीठ। पत्रज। निसोत। वायबिड़ंग। रुदन्ती। नागकेसर। मुलहठी। पृष्ठिपर्णी अर्थात् पिथवन। चमेलीके फूल ये सब औषध धेले २ भरले फिर इन औषधों को ४ सेर जलमें कूटडाले और इसमें १ सेरगौकाघृतडालकर मधुरी आंचमें पकावै जब वह जल भस्महोजाय और घृतमात्र रहजाय तब उतारले फिर ५ टंक प्रतिदिन भोजनके साथखाय तो उन्माद। मृगीरोग। पाण्डुरोग येसबजायँ—इतिकल्याणघृत १४ अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। हींग। खुरासानी बच। सिरसकेबीज। सेंधानोन। सरसों इन सबको बराबरलेके गो-मूत्रमें महीनपीस अंजनकरै तो उन्मादजाय १५ यहयत्न वैद्य-विनोदमें है॥ अथवा सोंठि। अजमोद। हल्दी। दारुहल्दी। सेंधानोन। बच। मुलहठी। कूट। पीपल। जीरा येसबबराबर ले गोमूत्रमें महीनपीस २॥ टंक ले घृतकेसाथ खाय तौउन्माद जाय॥ और उसकीजिह्वामें सरस्वती आयबसैं—इतिविश्वाद्य चूर्ण १६ यह भावप्रकाशमें लिखाहे॥ अथवा ब्राह्मीका रस पेठेकारस अथवा पीपलामूलका रस। अथवा शंखाहूलीका रस १० टंक पिये तो उन्मादजाय १७ अथवा खुरासानीबच। कूट। शंखाहूली। धतूरेकीजड़ येसब बराबरलेके इसमें ब्राह्मी

के रसकी ७ पुटदे फिर कालेधतूरेके बीजके तेलकी ५ पुटदे फिर इसकी नासदे तौ उन्माद दूरहोय १८ यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै ॥ अथवा सिरसकेफूल । मजीठ । पीपल । सरसों । खुरासानीबच । हल्दी । सोंठि इन सबको बराबरले बकरे के मूत्रमें महीनपीस गोलीबांधले फिर एकगोली घिसकर अंजन करै तौ उन्मादजाय १९ यह योगरत्नावलीमें है ॥ अथवा भुनी हींग । कालानोन । सोंठि । कालीमिरच । पीपल ये सबबराबर दो२ टकेभरले फिर ४ सेर गौकाघृत और घृतसेचौगुना गौका मूत्रले फिर इन सबको इकट्ठाकर मधुरी आंचसे पकावै जब उसमेंसे गोमूत्र जलजाय और घृतमात्र रहजाय तब उतार ५ टंक भोजनकेसमयले तौ उन्माददूरहोय २० इति उन्माद रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ भूतादिकके उन्मादके मन्त्र तन्त्र सर्व्वशास्त्रके अनुसार लिखते हैं ॥

प्रथम भूतादिकका जो यत्नकरै वह आप पवित्रहो अपनी रक्षाकरके यत्नकरै कालीमिरच । पीपल । सेंधानोन । गोरोचन इनको महीनपीस शहतमें अंजनकरै तौ भूत प्रेत जायँ १ ज्वर के प्रकरणमें भूतज्वरकेऊपर श्रीनृसिंहजीका दिव्यमंत्र लिखा है उससे भूत प्रेतादिकके सब उन्माद दूरहोयहैं सो देखलीजो अथ उड्डीसमें इनका साबरमन्त्र महादेवजीने लिखाहै सो लिखते हैं ॐनमोभगवते नारसिंहाय अतुलबीर पराक्रमाय घोर रौद्र महिषासुर रूपाय त्रैलोक्य डम्बराय रौद्र क्षेत्रपालाय ह्रो ह्रो० क्री क्री० कृमितताड़य २ मोहय २ द्रमि २ क्षोभय २ आभि २ साधय २ ह्रींहृदये आशक्तय प्रीतिललाटे बन्धयह्रीं हृदये स्तंभय २ किलि २ ईं ह्रीं डाकिनींप्रच्छादय २ शाकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ अभूति अदूतिस्वाहा राक्षसं प्रच्छादय २ ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय २ आकाशं प्रच्छादय २ सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय २ एते डाकिनीग्रहंसाधय २ शाकिनी

गृहंसाधय २ अनेनमंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूतप्रेत पिशाचादि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंचमिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक सन्निपात केसरी डाकिनी गृहादि मुंच २ स्वाहा गुरुकीशक्ति मेरीभक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच इस मन्त्र से २१ बार मोरपंखसे अथवा लोहेकीवस्तु से अथवा छप्परके पानीसे झाड़दे तौ भूतादिकके सब उन्माद दूरहोयँ २ ॥

अथ डाकिनीशाकिनीके वकुरानेकामंत्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरूको ॐ नमोजय २ नृसिंह तीनलोक चौदह भुवनमें हाथचाब होठचाब नयनलाल २ सर्ववैरी पछाड़मार भक्तनकी प्रणराख आदेश २ पुरुषको ॥ इसमंत्रकी क्रिया ॥ यहमंत्रपढ़ रोगीको बैठाय मंत्रसे पानीमंत्रि आपपवित्रहो उस रोगीको पिलावै फिर उससे पूछै तौ शाकिनी डाकिनी निश्चय बोले ३ ॥ अथ डाकिनीवकुरानेका मंत्र ॥

ॐनमो चढ़ो २ शूरवीर धरतीचढ़ पाताल चढ़ि पगपाली चढ़ा कौन २ वीरचढ़ा हनुमन्तवीरचढ़ा धरतीचढ़ी पगपाणा चढ़ी एंडीचढ़ी एंड़ीचढ़ी मुरवे चढ़ी मुरवे चढ़ी पिण्डुरी चढ़ी पिण्डुरीचढ़ी गोड़ाचढ़ी गोड़ाचढ़ी जांघचढ़ी जांघचढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेटचढ़ी पेट चढ़ी पेट से धरणि चढ़ी धरणि से पांसल्याचढ़ी पांसल्या से हिये चढ़ी हिये से छाती चढ़ी छाती से खवाचढ़ी खवा से कंठचढ़ी कंठसे मुख चढ़ी मुखसे जिह्वा चढ़ी जिह्वासे कानोंचढ़ी कानों से आंखों चढ़ी आंखों से ललाटचढ़ी ललाटसे शीश चढ़ी शीशसे कपालचढ़ी कपालसे चोटीचढ़ी हनूमान नारसिंह कर वारात्मा चल्यां वीर समदवीर दीठवीर अगियावीर सोसन्तावीर येवीर चल्या इस मंत्रसे वकुरावे तौ उसपुरुषमें वह निश्चय आयबोले ४ ॥

अथ डाकिनीके चोटलगानेका मंत्र ।

ॐनमो महाकाया योगिनी योगिनी पार शाकिनी कल्प

वृक्षीय दृष्टियोगिनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय २मारय२ चूरय २ अपहर २ शाकिनी सपरिवारंनमः ऊँ ग्रिं ६ ऊँह्रींटं ह्रूं ह्रौंटफट् स्वाहा ॥ इसमंत्रकी क्रिया पवित्र होकर ७ बार गूगलको मंत्रितकर ओखलीमेंडाल मूसलसे कूटे तौयहचोटैं डाकिनीके लगैं और इसमंत्रसे शिरमूड़े तौडाकिनीका माथा मूड़ाजाय और इसीमंत्रसे उर्द्दोंको पढ़कर डाले तो उसके घर आयबोले और जलनेलगे और उन्हीं उर्द्दोंको पढ़कर आंखोंपर छोंड़े तौ वह खेलउठै ५॥ अथ डाकिनीके दोष दूर होनेका झाड़ा॥

मोरके पंखसे अथवा लोहेकी छुरीसे दीजिये। ऊँ नमो आदेश गुरूका डाकिनी सिहारी किसने मारी यती हनुमन्तने मारी कहांजाय दबकी किन देखी यती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसे कौन पकड़लाया यतीहनुमन्त पकड़ लाया एक तालदे एक कोठअ तोड़ा दो तालदे दो कोठे तोड़े तीन तालदे तीन कोठे तोड़े चार तालदे चार कोठे तोड़े पांच तालदे पांच कोठे तोड़े छातालदे छा कोठे तोड़े सातवां कोठा तोड़ देखे तो कोनेमें खड़ीहै डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चला यतीहनुमन्त तेरे झाड़ेसे चला ऊँनमो आदेश गुरूकागुरूकी शक्ति मेरीभक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ६ ॥

अथ डाकिनीके दूरहोनेका यंत्र ॥

७	७	६	८
ऽ	५	४	६
४	॥।	ऽ	११
७।	५	१॥	॥

इसयंत्रको अच्छे पानीमें घोल पिलावे तो डाकिनी दूरहोय॥

१।ऽ	६६	१	५
७	४	७	६१
ऽ	=	०।	०।०
६	१	ऽ	४०

इसयंत्रको बालकके गले में बांधे ॥

अथ प्रत्यक्ष हाजरायत लिखते हैं॥

हाजरायतकामंत्र। ऊँ नमःकामाख्यायै सर्वसिद्धायै अमुक कर्म्म कुरु कुरु स्वाहा अस्यमंत्रस्यवह्निकंऋषिः जगती छन्दः कामाख्याःदेवताप्रणवःशक्तिःअठयक्रकीलकंअमुककर्मणिजपे बिनियोगः। ऊँ अंगुष्ठाभ्यांनमः कामाख्यायै तर्जनीभ्यांनमः स्वाहा सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट् अमुककर्म अनामिका भ्यांहुं कुरु २ कनिष्ठिकाभ्यांवौषट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्रायफट्। ऊँनमो हृदयाय कामाख्यायै शिरसे स्वाहा सर्व सिद्धिदायै शिषायैवषट् अमुककर्म कवचायहुं कुरु २ नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा अस्त्रायफट्॥

अथ ध्यानम्॥

योनिमात्रशरीराय कंगुवासिनिकामदा। रजस्वलामहातेजा कामाक्षीध्येयतांसदा॥ अस्यमंत्रस्य सहस्रंजपः गुड़हल के फूलोंकी १००० आहुतिमेढलकी राखकर रक्खे रुई में मिला के उसकी बत्ती करनी उस बत्तीको तेलके दीपक में धरै उस दीपककी पूजाकरै दीपकके आगे ८ बर्षका अथवा दश बर्षका बालक पवित्र शुद्धवंश देवतागणका स्थापन करना और आप भी पवित्र होकर मेढलकेफूलके ऊपर इस मंत्रके संकल्प का जलडालै और दीपकके आगेयह यंत्रलिखयंत्रकी पूजाकरैऔर

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	६	क्र	१०
०	४	५	४	लो

यहयंत्र बालकको दिखावै और उसकी हथेली में मेढल की राखको तेलमें सान कर मसले फिर उससे पूछै जो वह देखे सो सत्य २ समाचार सब कहै॥
यह यंत्र हाजरायत का है॥

अथवा आठ दशवर्षकी पवित्र कुलकी देवतागण कन्याको बैठावै उसे दीखै सो कहै दशांशआहुती दशांश तर्पण दशांश मार्जन ब्राह्मण भोजन इतिहाजरायत की विधि सम्पूर्णम् ७॥

यहसत्य हाजरायतहै सर्व्वउड्डीसमें लिखीहै॥ अथवा नींब केपत्र। खुरासानी बच। हींग। सांपकी कांचली। सरसों इनकी धूनीदे तौ डाकिनी भूतादिक सर्व्वदोष जायँ ८ अथवा कपास का काकड़ा मोरकीचन्द्रिका। कटेली। शिवकानिर्माल्य। मरुआ॥ तज। बालछड़। बैलका दांत। मार्जार की विष्ठा। तुष। बच। केश। सर्पकी कांचली। गौकासींग। हाथीकादांत। हींग। काली-मिरच इन सब को बराबरले कूटकर इसकी धूनी दे तौ सब प्रकारके भूतादिक के दोष दूरहोयँ। यह माहेश्वरधूपहै और चक्रदत्तमें लिखी है ९ अथवा पीपल। कालीमिरच। सेंधानोन। गोरोचन इनको शहत में पीस अंजनकरै तौ सर्व्व भूतादिक के दोष दूरहोयँ १० अथवा कणगचकी जड़। दारुहल्दी। सरसों कूट। हींग। बच। मजीठ। त्रिफला। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। प्रियंगु के फूल इनको बराबरले बकरेके मूत्रमें पीस नास दे अथवा अंजनकरै तौ सर्व्व भूतादिकके दोषजायँ ११ अथवा गोरख। गोखुरू। बिनौले अथवा काकड़े को अर्थात् बिनवर गोमूत्रमें पीस नासले तौ ब्रह्मराक्षसका दोष जाय १२ अथवा शंखाहूलीकीजड़को चावलके पानीमें अथवा घृतमेंपीस उसकीनासदेतौ भूतादिककादोषजाय १३—इतिभूतादिकके उन्माद की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ मृगीरोगकी उत्पत्ति लक्षण॥

चिन्ता और शोकादिकरिकै क्रोधकोप्राप्तहुआ जो बातपित्त कफ वह हृदयकी नसोंमें घुस स्मरणमात्र का नाशकर मृगीके रोगको प्रकट करैहै वह मृगीरोग वात पित्त कफ सन्निपात इन भेदोंसे चार प्रकारका है॥

अथ मृगीका पूर्वरूप और लक्षण॥

हृदयकांपै और शरीर सूनाहोजाय। पसीनाआवै औरध्यान लगजाय मूर्च्छाहोय ज्ञानजातारहै निद्राआवैनहीं येलक्षणहोयँ

तौ जानिये कि इसके मृगीरोगहोगा और उसको सर्व्वत्र अन्धकारहीदीखै स्मरण जातारहै और हाथ पैर आदि सब अंगों को पृथ्वीपर पटकाकरै तब जानिये कि मृगीरोग हुआ १ ॥

अथ वातकी मृगीका लक्षण ॥

कम्पहोय। दांतचाबै। मुखमेंझागआवै। श्वासहोय काला पीलादेखे ये लक्षण वातकी मृगीके हैं २ ॥

अथ पित्तकी मृगी का लक्षण ॥

मुखमें पीला झाग आवै और शरीरकीत्वचा और मुख पीला होजाय ये लक्षण पित्तकी मृगीके जानिये ३ ॥

अथ कफकी मृगी के लक्षण ॥

मुखमें श्वेतझागआवै। शरीरकीत्वचा मुखनेत्र येसबश्वेत पड़जायँ शीतलगै। रोमांचहोयँ और श्वेतही श्वेतदीखै येलक्षण कफकी मृगीके हैं ४ ॥

अथ सन्निपात की मृगी के लक्षण ॥

पीछेकहेहुये सबलक्षणहोयँ तौ सन्निपातकीमृगीकेजानिये५॥

अथ मृगीका असाध्य लक्षण ॥

जिसका शरीर बहुतफड़कै और क्षीणहोजाय भौंहचढ़ीरहैं नेत्रोंकी प्रकृति और होजाय वह मृगीवाला मरजाय ६ ॥

अथ मृगी का समय ॥

बारहवेंदिन आवै तौवायुकी जानिये और १५वेंदिनआवै तौ पित्तकी जानिये १ महीनेमें आवै तौ कफकी जानिये यहां दृष्टांत लिखतेहैं। जैसे इन्द्रके जलवरसानेसे सभीवस्तु उपजे हैं परन्तु जो गेहूँ चनाआदि पृथ्वीपर शरदहीऋतुमें उत्पन्न होतेहैं तैसेही शरीरमें ये रोग रहते तौ सदैवहैं परन्तु जब उनका समय आताहै तभी कोप करते हैं ७ ॥

अथ मृगीका यत्न ॥

तिलके साथ लहसन खाय तौ वातकी मृगीजाय १ दूधके

साथ सतावरखाय तौ पित्तकीमृगीजाय २ ब्राह्मीकारस शहत के साथखाय तौ कफकी मृगीजाय ३ अथवा राई सरसोंखाय वा गोमूत्रमेंपीस शरीरमें लेपकरै तौ मृगीजाय ४ अथवा तेल १ सेर सहँजनेका रस ४ सेर ग्वारके पट्ठेकारस ४ सेर चिड़-चिड़ेकारस ४ सेर नींबकी छालकारस १ सेर गोमूत्र ४ सेर इनसबमें तेल मिलाकर पकावै जबवह सबरस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब तेलको बासनमें जुदारक्खे उसतेलका मर्दन करै तौ मृगी जाय ५ अथवा मैनसिल और नीलकण्ठ नीलटाच की बीट अथवा कबूतर की बीट इनदोनोंको महीन पीस अंजनकरै तौ मृगीजाय ६ अथवा पारा। माराअभ्रक। सार। शोधीगन्धक। माराहुआ मैनसिल। माराहरताल। र-सौत ये सब बराबर ले फिर इनको गोमूत्रमें १ दिन खरल करै फिर लोहेके पात्रमें इनसे दूनीगन्धक मिलाय अधर धर कै अग्निसे पकाले १ पहरके पीछे उतारकर ठंढीकरै १ रत्ती प्रतिदिन ७ दिनतक खाय तौ मृगीजाय ७ अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। कालानोन। भुनीहींग इनको बराबर ले महीन पीस १॥टङ्क पेठेकेरसमें ७दिन पिये तौ मृगीजाय८ अथवा खुरासानी बच और कूटको महीन पीस २॥ टं०के प्र-माण ब्राह्मीके रसमें वा शंखाहूलीके रसके साथ अथवा पुराने गुड़के साथ १५ दिनपिये तौ मृगीजाय ९ अथवा गौका घृत १ सेर पेठेकारस १८ सेर मुलहटीके काढ़ेकापानी २ सेर इन तीनोंको पकावै जबदोनोंरस जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब इसघृतको खायतौ मृगीजाय १० अथवा सहँजनेकीछाल। कूट। नेत्रबाला। सपेदजीरा। लहसन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। हींग इनसबको पैसे२भरले और तेल ऽ॥ बकरेकामूत्र २ सेर इनसबको मधुरी आंचसे पकावै जबसब जलजाय और तेलमात्ररहजाय तब इसकी नासदे तौ मृगीजाय ११ यह सब

यत्नभावप्रकाशमें लिखेहैं॥ अथवा पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। त्रिफला। बायबिडंग। सेंधानोन। अजवाइन। धनियां। सपेदजीरा इनसबकोबराबरलेमहीनपीस २॥ टंकप्रमाणपानीकेसाथले तौमृगी। संग्रहणी। उन्माद। बवासीर इनसब कोयहदूरकरैहै १२ अथवापुष्यनक्षत्रकोदिनकुत्तेकापित्तानिकाल अंजनकरै अथवा घृतकेसाथ इसकीधूपदे तौ मृगीजाय १३ यह योगतरंगिणीमें लिखाहै अथवा खुरासानी बचकाचूर्ण २॥ टंक दूधकेसाथ अथवा शहतकेसाथ १ महीनेपिये तौ मृगीजाय १४ यहभी योगतरंगिणीमेंहै॥ अथवा नौलेकीबिष्ठा बिलावकी बिष्ठा कागलेकी बीट इनकीधूनीदे तौमृगीजाय १५ यह चक्रदत्तमें लिखाहै—इति मृगीरोग का लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजी बिरचितेअमृतसागरनामग्रन्थे मदात्ययउन्मादमृगीउनकेसर्व्वभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणंनाम सप्तमस्तरंगः ७॥

अथ वातव्याधिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

कषैली। कड़वी। तीखी बस्तुके खानेसे। खलके भोजनसे। रूखीबस्तुकेखानेसे। खेदसे। शीतलभोजनसे। अधिकमैथुनसे। धातुकेक्षीणपनेसे। मलमूत्रकेरोकनेसे। शोच और भयसे। अधिकरुधिरके निकलवानेसे। मांसके क्षीणपनेसे। अधिकवमन और बिरेचनसे। आमकेदोषसेवृद्धावस्थासे। मनुष्योंकेवर्षाऋतु में तृतीयपहर अथवा पहरभरकेतड़के मनुष्योंकी खालीनसों में बलवान्वायु घुसके कोपितहोकर सबअंगोंमें अथवा एक२ अंगमें नानाप्रकारके ८४ रोगोंको उत्पन्नकरैहै वह ८४ रोग लिखतेहैं॥ शिरोग्रह १ अल्पकेश २ अधिकजंभाई ३ चौहट मुंडैनहीं ४ जीमहलैनहीं ५ बकाई खानानालै ६ डोलेनालै ७ गूंगापनहोय ८ खोटाहीबोलै ९ बहुतबकै १० जीभका स्वाद जातारहै ११ बहराहोजाय १२ कानोंमेंघुन्नाटेका शब्दहोय १३

त्वचामें स्पर्शकाज्ञान जातारहै १४ अर्दितरोग १५ कन्धामुड़ै नहीं १६ भुजासूखजाय १७ भुजामुड़ैनहीं १८ चर्चितरोग१९ बिश्वाचीरोग २० ऊर्ध्वबात २१ और डकार वहुत आवै २२ अफराहोय २३ आध्मानरोग २४ अष्ठीलारोग २५ प्रत्यष्ठी-लारोग २६ तूनी २७ प्रतितूनी २८ अग्निकीविषमता २९ आटोपरोग ३० पसलीमेंशूल ३१ पीठमेंशूल ३२ बहुमूत्रता ३३ मूत्ररुकजाय ३४ मलगाढ़ाहोय ३५ मलउतरै नहीं ३६ गृध्रसीरोग ३७ कलाप खंजतारोग ३८ खोड़ापना ३९ पंगुता रोग ४० कोष्ठशीर्षकपैरकारोग ४१ खल्लीरोग ४२ बातकंटक रोग ४३ पैरकीसूजन ४४ पैरजलन ४५ आक्षेपरोग ४६ दं-डकरोग ४७ बाताक्षेपकरोग ४८ पित्ताक्षेपकरोग ४९ दण्डा-पतानकरोग ५० अभिबातकक्षेप ५१ अन्तरायाम ५२ बाह्या-याम ५३ धनुर्बात ५४ कुब्जक ५५ अपतन्त्र ५६ अपतान५७ पक्षाघात ५८ आखलागिक ५९ कम्प ६० स्तम्भ ६१ब्यथा ६२ लोद ६३ अस्फुरन ६४ रूक्षता ६५ कालापन ६६ क्षीण-पन ६७ शीतलपन ६८ रोमांच ६९ अङ्गम ७० अंगविभ्रम ७१ नसोंका संकोच ७२ अंकशोष ७३ डरपना ७४ मोहपना ७५ उन्मादपन ७६ नींदनहींआवै ७७ पसीना नहींआवै७८ बलकीहानि ७९ वीर्य्यकानाश ८० स्त्रीधर्म्मकानाश ८१ गर्भ का नाश ८२ विनाश्रमके श्रम ८३ श्रमनाश ८४ ॥

अथ वातव्याधिमें सब रोगोंका लक्षण और यत्न ॥

पहिले सामान्ययत्न लिखतेहैं ॥ मीठी सलोनी चिकनीगर्म वस्तु आमला। इनके खानेसे और तेलके मर्दनसे औषधोंके सेवनसे सामान्य बातरोग दूरहोताहै ॥

अथ शिरोग्रहका लक्षण ॥

बातरुधिर से मिलकर मस्तककी नसोंकोरूखीकरैहै फिर उन में बहुतसी पीड़ाकरके नसोंको कालीकरदेहै यहरोग असाध्यहै ॥

अथ शिरोग्रहका यत्न ॥

दशमूलका काढ़ा कर रसनिकालै और बिजौरे का रसनिकालै फिर इसरसमें तेल पकाकर उस तेलका मर्दन करै तौ शिरोग्रह दूर होय १ अथवाकूट। अरण्डकीजड़। धतूरेकीजड़। सहँजनेकीजड़। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। शिंगीमुहरा ये सब औषधि बराबरले काढ़ाकर अनुमान माफिक तेल डालकर मधुरी आंचसे पकावै जब तेलमात्र रहजाय तब उसको उतार मर्दन करैतौ शिरोग्रहजाय २ ॥

अथ अल्पकेशोंकी चिकित्सा ॥

देशीगोखुरू। तिलकेफूल इनको बराबरले और इनकी बराबर शहत और घृतले उसमें इनदोनोंको महीन पीस केशों में लेप करै तौ केश बहुत बढ़ैं १ अथवा मुलहटी। नीलेकमल कीजड़। मुनक्का। दाख। किसमिस। इनको तेल। घृत दूध में महीन पीस लेपकरै तौ केशबहुत लम्बेहोयँ २ और इनऔषधियोंसे छछूंदरका भी दोष दूरहोय ॥

अथ जंभाईका लक्षण ॥

मुखके एक श्वासको प्रथम मुखमें पीजाय फिर वह श्वास उलटा काढ़दे फिर आलस्य और निद्रा संयुत आवै उसको जंभाई कहतेहैं ॥

अथ जभाई बहुत आवै उसका यत्न ॥

सोंठि। पीपल। कालीमिरच। अजमोद। सेंधानोन इनको जुदा अथवा इकट्ठा महीनपीस गर्मपानीसेलेतौ जम्भाईकारोगजाय १ अथवा कड़ुवातेल मर्दनकरै अथवा मीठाभोजन करै अथवा ताम्बूल खायतौ जम्भाईका रोगजाय २॥

अथ हनुग्रहरोगकालक्षण ॥

दांतनकी फाड़से जीभको बहुत घिसै और चबेनाके खानेसे अथवा किसीप्रकार कीचोटसे डाढ़की जड़में रहती जो वायु सो कोपित होकर मुखको फटाही रक्खे अथवा बन्दही रक्खे

तब पुरुषको बोलने और खानेकी बड़े कष्टसे सामर्थ्य होती है उसको वैद्य हनुग्रह रोग कहते हैं २॥

अथ हनुग्रहरोगका यत्न॥

जिसका मुख मिचगयाहो उसको चिकनी बस्तुसे सेंककर पसीना लिवावै तौ मुख खुलआवै १ और जिसका मुखफटारह जाय उसको शीतलवस्तुसे आराम होताहै २ और जिसकी डाढ़ मुड़ैनहीं उसको पीपल। अदरख चबवा २ कर थुकवावे तौ रोग दूरहोय ३ अथवा गर्मपानीके कुल्लेकरवावै तौ रोग दूरहोय ४ अथवा तेलमें लहसनको तलकर सेंधानोन लगाके खायतौ हनुग्रह रोगजाय ५ अथवा उर्दके बड़ों में लहसन। सेंधानोन। अदरख। हींग मिलाकै तेलमें सेंककै खायतौ हनुग्रहरोग जाय ६ अथवा प्रसारणी तेलके मर्दन से इत ने रोगजायँ सो तेल लिखते हैं खीपका पंचाङ्ग १०० टके भरले कूटकर १६ सेर पानी में औटावै जब चतुर्थांश रहजाय तब उतार छान उस पानीमें तिलका तेल १०० टकेभर औरमट्ठा १०० टकेभर और कांजीकापानी १०० टकेभर और तेल से चौगुना गौकादूध डाले और चित्रक। पीपलामूल। महुआ। सेंधानोन। खुरासानीवच। सौंफ। देवदारु। रास्ना। गजपीपल। छारछवीला। रक्तचन्दन। अरण्डकीजड़। खरैटीकीजड़। सोंठि इन सब औषधियों कोटके २ भरले काढ़ाकर काढ़े का रस उस तेलमें डालै और १ सेर खीपका रस डालकर मधुरी आंचसे पकावै जब सब रस जलजाय और तेल रहजायतब तेलको उतारलेपीछे इसतेलको मर्दनकरै अथवा नासदे अथवा खिलावै अथवा इसका सेंककरै तौ सर्व वात विकार पंगुलता। जिह्वास्तंभ। अर्दितरोग। बकाईकारोग। स्कन्धस्तंभ। पीठशूल। गृध्रसी। खोड़ा। चापला। धनुर्वात इतने वातके रोगों को यह तेल दूरकरै है—इति प्रसारणीतैलं ७॥

अथ जिह्वा स्तम्भका लक्षण ॥

बाणीकी लेचलने वाली जो नसें उनमें रहती जो पवन सो कोपित होकर जीभको स्तम्भित करैहै तब वह जीभ जलके पीनेमें और बोलनेमें समर्थ नहीं होयहै इसको जिह्वा स्तम्भ रोगकहतेहैं ॥

अथ जिह्वा स्तम्भका यत्न ॥

मीठारस। नोन। खटाई चिकनी गर्म इनवस्तुओं सेजीभ को यथायोग्य मर्दन करै अथवा सुहाता २ गर्मपानी से कुल्ले करै तौ जिह्वास्तम्भका रोग दूर होय ॥

अथ गूंगापन गिनगिना बकाई खानेका लक्षण ॥

कफ करकै संयुक्त जो बायु वह धमनी नाड़ी की ले चलने वालीजो नसें उनको आच्छादितकर मनुष्यों के गूंगापन और नाकमेंही बोलना औरबकाईखाकर बोलना इतनेरोगोंकोकरैहै॥

अथ गूंगा और गिनगिना औरबकाईखाकर बोले इनसबका यत्न ॥

गौकाघृत १ सेर सहँजनेकीजड़ १ टके भर खुरासानी बच १ टके० सेंधानोन १ टके० धवईकेफूल १ टके० पठानीलोध १ टके० इनसबको पीसकै बकरीके४सेर दूधमें १ सेर घृतडालै फिर यह औषधि मिलाय मधुरी आंचसें पकावै जब दूध और औषधि जलजाय और घृत मात्र रहजायतब उसेकाढ़कै उस घृतको सरस्वती मंत्र से बिधि पूर्वक सेवन करै तौ गूंगापन गिनगिनापन बकाईखाना ये सब रोगदूरहोयँ और बुद्धिस्मृति मेधाकान्ति बहुत बढ़ै १ इति सारस्वतं घृतं ॥

अथ सरस्वतीमंत्र॥

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः यह सरस्वती मंत्र सिद्धि है उसको इनअक्षरोंकी बराबर सहस्र जपकरै तौ यहमंत्र सिद्धि होय इसमंत्र से यह घृत खाय अथवा मालकांगनी का तेल खाय तौ सर्वरोग जायँ और उसकी बुद्धि तत्काल चमत्कारी होजाय २ अथवा हलदी। कूट। पीपल। सोंठि। जीरा। अ-

जमोद। मुलहटी।महुआ। सेंधानोन इनको वरावरले महीन पीस २॥ टङ्क मक्खनके साथ नित्य २१ दिनतकले तो सर्व्व रोग दूरहोयँ और वहपुरुष श्रुतिधरहोय १००० श्लोकनित्य कंठकरे--इतिकल्पकाअवलेह ॥

अथ प्रलाप और वाचालरोग का लक्षण ॥

अपने कुपथ्यसे कुपित जो वायु सोअर्थ रहित कुछकाकुछ वचन वोले तो प्रलाप रोग जानना। और अर्थ सहित खोटा शब्द मुखसे वोले उसे वाचाल कहते हैं॥

अथ प्रलाप वाचालका यत्न॥

तगर। पित्तपापड़ा। कुटकी। नागरमोथा। असगन्ध। व्राह्मी। दाख अर्थात् किसमिस। अगर। दशमूल। शंखाहूली इनसबको वरावरले जवकुटकर इनका काढ़ादेतौ प्रलाप और वाचाल रोग दूरहोयँ॥

अथ जीभके रसाज्ञान का लक्षण॥

मधुर रस आदिले छा रसों के खानेमें जीभका यथार्थज्ञान जाता रहै उसको रसाज्ञानरोग कहते हैं॥

अथ रसाज्ञानरोगका यत्न॥

सोंठि। कालीमिरच। पीपल। सेंधानोन। अमलवेत। चूक इन औषधियोंको महीन पीस एकरसकरजीभके अच्छेप्रकार लेपकरै तौ रसाज्ञानका दोषदूरहोय १ अथवा व्राह्मी। पलास पापड़ा। राई। कालाजीरा।पीपल।पीपलामूल। चित्रक। सोंठि इनको महीनपीस जीभमें वारम्वार लेपकरै २ अथवा इनका काढ़ा कर कुल्लेकरै तौ रसाज्ञानदोष दूरहोय३ अथवा अदरख खाय तौ रसाज्ञान दोष दूरहोय ४॥

अथ शरीरकी त्वचा शून्यरोगहोय उसका लक्षण॥

जिस पुरुषको शीतोष्ण कोमल कठिनताकाज्ञान जातारहै उसके त्वचा शून्यपनेका रोग जानिये॥

अथ त्वचाशून्यका यत्न ॥

त्वचा शून्यवालेका रुधिर निकलवावै तौ यह रोग जाय १ अथवा नोन। धमासा इन दोनोंको तेलमें मिलायके शरीरमें मर्द्दनकरै तौ यह रोग जाय २ ॥

अथ अर्द्दितरोग का लक्षण ॥

ऊँचेसे गिरतीहुई भारीबस्तुको ऊँचा मुखकर हाथोंसे ग्रहणकरै अथवा कड़वीबस्तु बहुतखाय। अथवा बहुतहँसे जँभाईले अथवा माथेपै बहुत बोझ उठावै अथवा विषमस्थान अर्थात् ऊँचा नीचास्थानमें सोवे उस पुरुषके शिर नासिका और ओष्ठ डाढ़ नेत्र इन स्थानोंमें रहती जो वायु वह पुरुषके मुखमें अर्द्दित रोगको उत्पन्नकरैहै तब पुरुषका मुहँआधाटेढ़ा होजाय और कन्धामुड़ैनहीं और शिर हालाकरै अच्छेप्रकार बोला और देखा न जाय और कन्धे डाढ़ी दांतोंमें पीड़ारहै जिसमें ये लक्षणहोयँ उसको अर्द्दितरोग कहिये सो बात पित्त कफ इन भेदोंसे तीन प्रकारका है ॥

अथ बातके अर्द्दित रोगका लक्षण ॥

लार बहुतपड़ै। शरीरमें पीड़ा अधिकहोय। शरीरकांपै अत्यन्त फड़के। डाढ़ीमुड़ैनहीं। ओष्ठसूजजायँ ये लक्षणहोयँ तौ वायुका अर्द्दित रोग जानिये ॥

अथ पित्तके अर्द्दितरोगका लक्षण ॥

मुखपीला होजाय। ज्वरहोआवै। तृषा बहुतहोय तौ पित्तका अर्द्दित जानिये ॥

अथ कफके अर्द्दित रोग का लक्षण ॥

मोह बहुतहो। गला कन्धा और शिरमें सूजन होय और ये तीनों मुड़ैंनहीं तौ कफका अर्द्दित जानिये ॥

अथ अर्द्दितका असाध्य लक्षण।

क्षीण पुरुषके निमेष नहींलगै और उस पुरुषसे बोला न

जाय और शरीरकँपतेहुये तीनबर्ष होगये होयँ तौ अर्दितरोग असाध्य जानिये १ ॥

अथ अर्दितरोगकायत्न ॥

अर्दित रोगवालेको चिकनाखवावै और नारायणऔर विष गर्भतैल आदिका मर्दनकरावै और गर्म वस्तुका सेवनकरावै डाह दिवावै गर्म औषधियोंसे पसीनालिवावै । शिरमें वायुका तेल डाले इतनी वस्तुओंसे अर्दितरोग जाताहै ॥

अथ वायुके अर्दितरोगका यत्न ॥

दशमूल के काढ़ेसे वायुका अर्दित रोग जाय । बिजौरे के रससेवायुका अर्दित जाय २ अथवा खरैटी । पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठि इनके काढ़ेसे वायुकाअर्दितजाय ३ उर्दके बडोंमें हींग । अदरख । लहसन मिलायकै खाय और ऊपरसे मांसका शोरुआ पिये तौ वायुका अर्दित जाय ॥

अथ पित्तके अर्दितका यत्न ॥

घृत का बस्तिकर्म करै अथवा दूधका सेवन करै तौ पित्त का अर्दित दूरहोय १ ॥

अथ कफके अर्दित का यत्न ॥

वमन करानेसे कफका अर्दितजाय १ अथवा तिलके तेल में लहसन मिलाके खाय तौ सब प्रकार का अर्दित तत्काल जाय २ ॥

अथ मन्यास्तम्भका लक्षण ॥

दिनके सोने से बहुत बैठे रहने से विकार को प्राप्त हुआ जो कफ सो वात से मिल कन्धे को मुड़ने न दे उसको मन्यास्तम्भ कहते हैं ॥

अथ मन्यास्तम्भका यत्न ॥

दशमूलके काढ़े से । अथवा पंचमूल के काढ़ेसे मन्यास्तम्भ जाय १ अथवा तेल का मर्दन करकै ऊपर से अरण्ड के पत्ते बांधै तौ मन्यास्तम्भ जाय २ अथवा कुक्कुट के अण्डे के रसमें

संधानोन औरघृत मिलाय कन्धों में मर्दन करै तौ मन्यास्तम्भ जाय ३ ॥

अथ बाहुशोषका लक्षण ॥

कन्धों में रहती जो बायु वह कोपित होकर भुजाको सुखा कर स्तम्भित करदे उसको बाहुशोष कहते हैं १ ॥

अथ बाहुशोषका यत्न ॥

पीछे जो कल्याणघृत उन्मादरोगमें लिखाहै उसके सेवनसे बाहुशोष रोग जाय १ अथवा खरैटी के काढ़े में संधानोन मिलाकर पिये तौ बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग जायँ ॥

अथ अपबाहुकरोगका लक्षण ॥

कन्धों में रहती जो बायु सो कुपित होकर उसके बांधनेवाले कफको सुखाय नसोंकोखैंच अपबाहुकनाम रोगकोउत्पन्नकरैहै॥

अथ अपबाहुकरोगका यत्न ॥

शीतल जलकी नासदे तौ अपबाहुकरोग जाय १ अथवा गुग्गुल मोई जड़ी की जड़का काढ़ाकर उसमें गुग्गुल मिलाकर नासदे तौ अपबाहुक रोगजाय २ अथवा उर्दके पानीकीनास दे तौ अपबाहुक रोगजाय ३ अथवा उर्द। अलसी। यव। कूट। सेला। कटेली। गोखुरू। अरलू। कोंच की जड़। कपास। सनकाबीज। कुलत्थ। बेरकीजड़। सांठीकीजड़। खीपकीजड़। रास्ना। खरैटीकी जड़। गिलोय। कुटकी इनको तेलमें पका कर उसतेलका मर्दनकरै तौ अपबाहुकरोग जाय ४ इतिमाषतैलं ॥ ये भावप्रकाश में लिखाहै ॥

अथ विश्वाचीरोगका लक्षण ॥

हाथ की अंगुली के नीचे खुजली होय। और भुजाके पीछे खुजली होकर भुजा को निकम्मी कर दे उसको विश्वाची रोग कहते हैं १ ॥ अथ विश्वाची रोगका यत्न ॥

दशमूल। खरैटी। उर्द इनका काढ़ाकर उसमें तेल मिलाकै पिये तौ विश्वाची रोग जाय अथवा उर्द। संधानोन। खरैटी।

रास्ना। दशमूल। हींग। खुरासानीबच। सोंठि इनकोमहीनपीस पानीमें औटावै फिर पानीमें तेल डालकर तेलको पकावै जब पानीजलजाय और तेलरहजाय तब उतार तेलका मर्दनकरै तौ बिश्वाची। बाहुशोष। अपबाहुक। पक्षाघात इनकोयहमाषादितैल दूरकरै है २॥

अथ ऊर्द्धवातरोगका लक्षण॥

कुपथ्यके सेवन से अधोवायु कुपित हो मुखके कफसे मिल वारम्बार डकार बहुतले तौ ऊर्द्धवात रोग कहिये ४॥

अथ ऊर्द्ध वात का यत्न॥

सोंठि १० भा० बिधारा १० भा० हड़की छाल ५ भा० असगन्ध १ भा० भुनीहींग १ भा० सेंधानोन १ भा० निसोत ५ भा० इन सबकी बराबर चित्रकले महीन चूर्णकर २॥ टं० गरम जलकेसाथ ले तौ ऊर्द्धवात रोग जाय १॥

अथ आध्मानरोग का लक्षण॥

सम्पूर्ण पेटमें अफरा और पीड़ा अधिकहोय और अधोवायु रुकजाय उसको प्रत्याध्मान रोगभी कहते हैं॥

अथ आध्मानरोग का यत्न॥

इसरोगमें लंघनकरावै। पाचन और क्षुधाबढ़नेकी औषधि दीजे। बस्ति कर्म्मकरावै॥ अथवा पीपल २॥ टं० निसोत १० टं० मिश्री १० टं० इनको चूर्णकर २॥ टं० शहतके साथखाय तौ अफरा जाय १ यहनारायणचूर्ण है॥ वृद्धवाग्भटमेंलिखाहै अथवा वचखुरासानी। कूट। सौंफ। भुनीहींग। सेंधानोन ये सब बराबर ले इनको चूर्णकर कांजी से महीनपीस गरमकर सुहाता २ पेटपर लेपकरै तौ अफरा दूरहोय२ अथवा महानाराचरससे अफरा जाय सोलिखते हैं॥ हड़कीछाल १। टं० किरमाला की गिरी १। टं० आमला १। टं० दात्यूणी १। टं० कुटकी १। टं० निसोत १। टं० नागरमोथा १। टं० थूहरकादूध

२। टं० इन सबको महीनपीस ४ सेर पानीमें औटावै जब पानी का अष्टमांश रहजाय तब जमालगोटेका छिलका १। टं० भर उतार महीन वस्त्रमें बांध शनैः २ जमालगोटेको पचावै जब पानी जलजाय तब उसेकाढ़ले पीछे जमालगोटा ८भाग सोंठि १भा०कालीमिरच२भा० पारा१भा०शोधीगंधक १भा०पहिले पारे और गन्धक की कजलीकरै उसमें ये औषधि मिलाय १ पहर खरल करै फिर१ रत्तीप्रमाणकी गोलीबांधे१ गोली नित्य शीतल जलसे ले तौ अफरा। शूल। आनाह। प्रत्याध्मान। उदावर्त्त। गोला और उदर के रोगोंको यह महानाराच रस दूर करैहै इसके खानेसे दस्तहोचुकें तब मिश्री मिलाकर दही खवावै फिर चांवल दहीमिलाय अनुमान माफिक उसमेंसेंधा-नोन डाल थोड़ासा खवावै तौ आध्मान रोगजाय॥

अथ प्रत्याध्मानका लक्षण॥

पसली। और हृदयमें तौ अफरा न होय परन्तु नाभिसे लेके पेटतक अफराहोय उसको प्रत्याध्मान कहिये॥

अथ प्रत्याध्मानका यत्न॥

लंघनकरावै और पाचनादिक दीजिये बस्तिकर्म कराइये तौ प्रत्याध्मान जाय॥ अथवातष्ठीलाका लक्षण॥

नाभिकेनीचे पवनकीगांठि पत्थरसीबँधजाय वह गांठिमल मूत्रको रोंकदे उसको बातष्ठीला कहते हैं॥

अथ प्रत्याष्ठीलाका लक्षण॥

नाभिके नीचे पवनकी गांठि पाषाण के सदृश बँधकर मल मूत्रको रोंक दे और उस स्थानपर पीड़ा अधिक करै उसको प्रत्याष्ठीला कहते हैं॥ अथ दूनदोनों का यत्न॥

भुनीहींग। पीपलामूल। धनियां। सपेदजीरा। खुरासानी वच। चव्य। चित्रक। पाढ। कचूर। अमलवेत। कालानोन। सेंधानोन। सांभरनोन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। जवा-

खार। सज्जी। अनारदाना। हड़की छाल। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। डांसरा। झाऊकी जड़ इन सबको बराबरले महीन पीस अदरककेरसकी ३ पुटदे फिर इसचूर्णको छायामेंसुखाय २॥ टंक गरम पानी के साथ ले तौ बातष्ठीला प्रत्याष्ठीला सबजायँ १॥

अथ तूनीरोगका लक्षण॥

मलमत्रके स्थानमें रहनेवाली जो पवन वह गुदा लिंगमें पीड़ाकरैहै उसको तूनी कहते हैं॥

अथ प्रतितूनीका लक्षण॥

गुदा और लिंगमेंरहती जो पवन वहगुदा लिंगमें पीड़ाकर पेडूमें पीड़ा करैहै उसको प्रातितूनी कहते हैं॥

अथ इनदोनों का यत्न॥

इनदोनों को तेलकी बस्तिदे तौ दोनोंतूनी प्रतितूनी रोग जायँ१ अथवा सोंठि। पीपल। कालीमिरच। भुनीहींग। जवाखार। सज्जी। सेंधानोन इनको महीनपीस २॥ टं० गरमपानी सेले तौ तूनी प्रतितूनी रोगजायँ २॥

अथ त्रिकशूलका लक्षण॥

कमर के तीनों हाडोंमें और बांसेके हाड़में शूल होय उस को त्रिकशूल रोग कहते हैं॥

अथ त्रिकशूलका यत्न॥

बालूरेत से सेंक करावै अथवा अरने उपलेकी राखसे सुहाता २ सेंक करावै तौ त्रिकशूल जाय॥ अथवा गूल्ही गोली की जड़का छिलका। असगन्ध। झाऊकावक्कल। गिलोय। सतावर। गोखुरू। रास्ना। निसोत। सौंफ। कचूर। अजवाइन। सोंठि इन सबको बराबरले और सबकी बराबर शोधा गूगल और गूगल से चौथाई घृतले सबको एक रसकर ५ मासे नित्यदारूके अथवा गरमपानी वा मांसके शोरुवेके साथ खायतौ त्रिकशूल। जानुग्रह। भुजास्तंभ। सन्धिगत वायु।

हाड़ टूटगया होय । खोड़ापन । गृध्रसी । पक्षाघात इन सब रोगोंको यह त्रयोदशांगगूगल दूरकरैहै-इतित्रयोदशांगगूगल॥

अथ बस्तिवातका लक्षण ॥

पेडूकी पवन कुपित होकर मूत्रको अच्छे प्रकार उतरने न दे और रोगोंको उत्पन्नकरै उसको बस्तिबात रोगकहतेहैं १॥

अथ इसका यत्न ॥

खरैटीकी जड़काबक्कल और उसीकी बराबर मिश्रीमिलाय २॥टं० गौके दूधके साथखायतौ बारम्बार मूतनेका रोगजाय॥ अथवा त्रिफलेका चूर्णकरै उसके बराबर सारमिलाय ४ मा० शहतके साथले तौ मूत्रकारोगजाय २ ॥

अथ मूत्ररुकगयाहोय उसकायत्न ॥

जवाखार ५ मा० मिश्री के साथ ले तौ मूत्र बन्ध छूटै ॥ अथवा पेठेके बीज । तिवरसीके बीज इनदोनोंको पानीमें पीस २ माशे जवाखार डालकर मिश्री के साथ पिये तौ मूत्रबन्ध छूटै २ अथवा चीनिया कपूर की बत्ती लिंगमें दे वा भगमें दे तौ मूत्रबन्ध छूटै ३ ॥ अथ गृध्रसीरोगकालक्षण ॥

पहिले कूलेमें पीड़ा होय पीछे अंगमें पीडाहोय फिर पैरों को स्तम्भित करदे और पैरबहुत होले २ उठै उसको गृध्रसी रोग कहते हैं॥ वहदो प्रकारकाहै एक बातका दूसरा बातकफ का वातके में तौ पीड़ा अधिक होय और शिर टेढ़ा होजाय और पैर जंघा और सन्धि२फड़क२कर स्तम्भितहोजायँ और वातकफकी गृध्रसीमें शरीर भारीरहै अग्नि मन्दहोजाय तन्द्रा आवै लार बहुत पड़ै ॥ अथ गृध्रसी का यत्न ॥

वमन करानेसे वस्ति कर्म्मसे गृध्रसीरोगजाय २ शरीरको हड़के जुलाव से निराम कर फिर वस्ति कर्म्म करै ३ अथवा अरण्डका तेल और गोमूत्र मिलाकर १ महीने तक पिये तौ गृध्रसी रोगजाय ४ अथवा तेल । घृत । अदरकका रस । त्रि-

जीरेकारस। चूक। गुड़ ये अनुमान माफिक मिलाय १ महीने तक पिये तौ गृध्रसी रोगजाय ५ और इससे कटि और जंघा की पीड़ा। त्रिकशूल। गोला। उदावर्त्त ये भीरोग जाते हैं॥ अथवा अरण्डीकी मींगीको दूधमें खीरकर १ महीनेतक खाय तौ गृध्रसी रोग पोतेका शूल दूरहोय ७ अथवा अरण्ड की गिरी। कटेली इनका काढ़ा कर इसमें तेल मिलाय पिये तौ गृध्रसी पोतोंका शूल दूरहोय ८ अथवा बिड़नोन। कालानोन इनको महीन पीस गोमूत्र और अरण्डके तेलमें मिलाके पिये तौ कफवायुकी गृध्रसी जाय ९ अथवा अडूसा। दात्यूणी अर्थात् दतुइनि। किरमाला की गिरी इनका काढ़ा कर उसमें अरण्डकातेल मिलाकर पियेतौ गृध्रसी रोगजाय १० अथवा निर्गुण्डी के पत्तों के काढ़े से गृध्रसी रोगजाय ११ अथवा रास्ना ५ टकेभर गूगल इन दोनोंको पीसकर घृतमें ४ माशे की गोली बांधे १ गोली नित्यखाय तौ गृध्रसी रोगजाय १२ अथवा रास्ना। गिलोय। किरमालाकी गिरी। देवदारु। गोखुरू। अरण्ड। साटीकी जड़। सोंठि इनका काढ़ाकर दे तौ गृध्रसीरोग पेडू और पसलीका शूल इतनेरोगोंको यहरास्नादिक काढ़ा दूरकरैहै १३—इतिरास्नादिकक्काथः॥

अथ खोड़ा पंगुलारोग के लक्षण॥

कटिमें रहती जो बात वह जांघकी नसोंको पकड़ एक पैर कोस्तंभित करदे उसको खोड़ा कहतेहैं और कटिमें रहती जो वात वह जांघकीनसोंको ग्रहणाकरदोनोंजांघोंका नाशकरै और चलने न दे उसको पंगुता कहते हैं॥

अथ इनदोनोंका यत्न॥

जुलाबके लेनेसे और औषधोंके गरम पसीनेसे योगराज आदि गुग्गुलके खानेसे तैलादिकके मर्दनसे बस्ति कर्म्म से ये दोनों रोगजायँ॥

अथ कलापखंजरोगका लक्षण ॥

चलतेमें शरीरकंपे और लंगड़ासा दीखे तो जानना कि नसोंने अपनाठिकाना छोड़दियाहै उसको कलापखंज रोगकहते हैं ॥

अथ इसका यत्न ॥

* बिषगर्भादिक तैलकेमर्दनसे यह रोगजाय ॥

अथ क्रोष्ट शीर्षरोगका लक्षण ॥

बात और रुधिरकेबिकारसे पैरोंमें सूजनहोय पीड़ा अधिक होय और स्यारकेमस्तकके सदृश कठोरहोय उसको क्रोष्टशीर्ष रोग कहतेहैं ॥ अथ इसका यत्न ॥

गिलोय २॥ टंक त्रिफला १० टंक इनदोनोंका काढ़ाकर उस में २॥ टंक गुग्गुल मिलाय १ महीनेतक पिये तो यहरोगजाय १ अथवा ऽ। दूध १० टंक अरण्डकातेल डालकरपिये तो यह रोगदूरहोय २ अथवा बिधारेकाचूर्ण २॥ टंक गौके ऽ। दूध के साथपिये तो यहरोगजाय ३ अथवा किशोर गुग्गुल के सेवन से यहरोग दूरहोय ४ ॥ अथ पैरदूखने का यत्न ॥

तेलका मर्दन करकै ऊपरसेपिसी सोंठिकामर्दनकरै फिर उस केऊपर तेलचुपड़ अरण्डकेपत्ते गरमकर बांधदे तो पैरदूखनेसे बंदहोयँ अथवा कोंचकेबीज २॥ टंक दहीकेसाथ ७ दिन अथवा १४ दिनले तो पैरदूखना बन्दहोय ॥

अथ खल्ली का यत्न ॥

कूट। सेंधानोन इनकाकाढ़ाकरै इस काढ़ेकेरसमें तेल और अमलवेतके रसकोडालकर तेलको मधुरीआंचसे पकावै जब रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब इसतेलका मर्दनकरै तो खल्ली रोगजाय ॥ अथ वातकंटक रोगका लक्षण ॥

ऊंचे नीचे स्थानपर पैररखनेमें पीड़ाहोय पीछेटखनेमें पीड़ा होआवे उसकोवातकण्टकरोग कहते हैं ॥

* सिंगीमुहरा को टिकड़ी १ रुद्राक्ष को ऽ। भर तेलमें पका कर मर्द्दन करना ॥

अथ इसका यत्न॥

टखनेमें पछनेसे रुधिरनिकलवावे तौ वातकण्टक रोगजाय अथवा अरण्डका ५ टंकतेल १ महीनेतक नित्यपिये तौ यह रोग जाय २॥

अथ पाददाहका लक्षण॥

बात पित्त रुधिर ये तीनोंमिल पैरोंकेतलुओंमें दाहकरें उसको पाददाहरोगजानिये १॥ अथ पाददाहका यत्न॥

मसूरकीदालको महीनपीस औटावे फिर अत्यन्त ठंढाकर उसमेंआटासान पांचसातबार पतलालेपकरै तौ पाददाहजाय १ अथवा मक्खनको पैरों के तलुओं में मर्दन कर अग्निसे तपावे तौ यह रोग जाय २ अथवा अंडीको गौ के दूधमें लेप करै तौ अत्यन्त भी दाहजाय ३॥

अथ पादहर्ष का लक्षण॥

जिसके दोनोंपैर झंझनाहट करसो जायँ और कोई प्रकार दाबने से जाग उठें उसको पादहर्ष रोग जानिये १॥

अथ इसका यत्न॥

कफ और बातका दूरकरनेवाला यत्नकरै तौयहरोगजाय १॥

अथ पैरों की हड़फूटन का यत्न॥

तिल। साम्हरनोन। हल्दी ये बराबर ले इनको धतूरे के बीजके पानीमें पीसे और इनतीनों के बराबर गौ का मक्खन ले फिर इनको पकावे और पकतेहीमें चौगुना गौका मूत्रडाले ये सब जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब वह घृत पैरों के तलुओंके मर्दन करै तौ पैरों की फूटन जाय॥

अथ पित्तसहित वातके आक्षेपरोगका लक्षण॥

पित्तके स्थान जो उदरादिक उनमें रहती जो बात उसको स्तम्भितकर दण्डकी भांति करदे अथवा कफमें मिली जो वायु सो धमनी नाड़ीमें रहके शरीर को स्तम्भित कर दे वह कष्टसाध्य है॥

अथ केवलवायुके आक्षेपका लक्षण ॥

हाथ पैर मस्तक पीठ गांठ इनको स्तम्भित करदे और वायु इनमें पीड़ा भी करै तौ यह असाध्य है ॥

अथ चोट लगने से उत्पन्न जो वात उसके आक्षेपके लक्षण ॥

जिस स्थानमें चोट लगीहो उसमें उत्पन्न जोवायु वह उसके सदृश साध्य जानिये ॥

अथ इसका यत्न ॥

खरैटीकीजड़। दशमूल। यव। बेलकी जड़। कुलत्थ इनसब का अष्टावशेष काढ़ाकर तेल मिलाय मधुरी आंचसे पकाय तेल तैयार करै और ये औषधियां और मिलावै सो लिखतेहैं सेंधानोन। अगर। राल। देवदारु। मंजीठ। पद्माक। कूट। इलायची। बालछड़। पत्रज। तगर। गौरीसर। सतावर। असगन्ध। सौंफ। साठीकी जड़ यह तेलके प्रमाण माफ़िक डाल पकावै फिर इस महाबला तेलका मर्दन करै तौ सबप्रकारके आक्षेप के रोग हिचकी। श्वास। अंत्रवृद्धि। क्षीणता। टूटाहाड़। स्वेद इन सब रोगों को यह महाबला तेल दूरकरै है ॥

अथ अन्तरायां रोग का लक्षण ॥

पैरकी अंगुली। टखना। पेट। हृदय। गला इनमें रहती जो वात वह बड़ीनसों के समूहको शरीर के भीतर पकावै है फिर उसके नेत्रफटकर निश्चल से होजायँ हैं और डाढ़ मुड़े नहीं पसलीटूटीसीहोजाय कफयुक्त शरीर कमानकी भांति टेढ़ा होजाय जिसमें ये रोगहोयँ उसको अन्तरायां रोग जानिये ॥

अथ बाह्यायां रोगका लक्षण ॥

बहुतबादीवस्तु खानेसे कुपितहुआ जो वात सो शरीरकी सब नसें कन्धे पीठ इनको सुखाय शरीरको कमान के सदृश टेढ़ा करदे है और उसके हृदय और जांघ को वह वात तोड़ डालेहै ये जिसमें लक्षणहोयँ उसके बाह्यायां रोग कहिये और

जो अर्द्दित रोग का यत्न पीछे लिखा है वही इस रोग का भी जानना चाहिये॥

अथ धनु स्तंभका लक्षण॥

कमानके समान शरीर होजाय और शरीर का वर्ण और का और होजाय मुखमिचजाय देहशिथिल होजाय चैतन्यता जातीरहै पसीना आवै उसको धनुस्तम्भ रोग कहते हैं यह रोग वाला १० दिन जिये॥

अथ कुब्जकरोग का लक्षण।

कोप को प्राप्त जो बात सो हृदय को ऊँचा करके हृदयमें पीड़ा अधिककरै उसको कुब्जकरोग कहतेहैं॥ अथ इनतीनों रोगों का दूरकरनेवाला प्रसारणीतैल इसी प्रकरण में लिखा है उससे धनुस्तम्भ वाह्य अन्तरीय बात व्याधि सबै प्रकार की दूरहोय है॥

अथ अपतंत्र रोग का लक्षण॥

बादी बस्तुके सेवनसे कोपको प्राप्तहुई जो बात वह अपने स्थानको छोड़कर हृदयमें जाकर शिर और कनपटी में पीड़ा करैहै और कमानकी भांति शरीरको नवायदे है और वहमोह को प्राप्तहोकर बड़े कष्ट से ऊँचेको श्वासले और नेत्र फटे या मिच जायँ और कण्ठ कबूतर के सदृश होजाय संज्ञा जाती रहै जिसके ये लक्षण होयँ उसके अपतन्त्ररोग जानिये॥

अथ अपतंत्ररोगकायत्न॥

कालीमिरच। सहँजनेकेबीज। बायबिडंग। अफ़ीम। महुआ ये सब बराबरले महीन पीस नासले तो अपतन्त्ररोग जाय १ अथवा हड़कीछाल। खुरासानीबच। राल। सेंधानोन। अमल-बेत इनको महीन पीस २॥ टं० घृतके साथ अथवा अदरक के रसके साथ ले तो अपतन्त्र रोगजाय २॥

अथ अपतानकरोगका लक्षण॥

नेत्र फटेसे होजायँ संज्ञा जातीरहै कण्ठमें कफ बोलै संज्ञा

होआवै तब चैन पड़ै और अज्ञान आवै तब और भी मोह होय यह भयंकर रोग है और यह स्त्री के गर्भपात से होताहै और पुरुष के बहुत रुधिर निकलने से होय है अथवा भारी चोट लगने से होय यह रोग असाध्य है ॥

अथ इनका यत्न ॥

दशमूलके काढ़े में पीपल डालके पिये तौ अपतानक रोग जाय १ अथवा तेलके मर्द्दनसे जाय २ अथवा सूखी बस्तुकी नास ले तो यह रोग जाय ३ अथवा घृतके पीने से यह रोग जाय ४ अथवा स्नेहकी बस्तु लेनेसे यह रोगजाय ५ ॥

अथ पक्षाघातका लक्षण ॥

किसीकारण से कुपित बात होकर मनुष्य के आधे शरीर को पकड़ सब शरीर की नसों को सुखादे है और आधे शरीर की नसोंको तौ अत्यन्तही ढीलीकरदेहै अथवा सब शरीरकी नसोंको अत्यन्त ढीली और निकम्मीकरदेहै उननसोंकाज्ञान जाता रहै ये लक्षण होयँ तो उसको पक्षाघात रोग कहते हैं और दहिना अंग अथवा बायांअंग निर्जीवहोजाय वहपक्षाघात दोप्रकारका है एकतौ पित्तबात का दूसरा कफ बात का शरीरके बाहर और भीतरदाह औरमूर्च्छाहोय तौपित्तबातका पक्षाघात जानिये और शरीर के भीतर और बाहर शीतलगै सूजनहोय शरीर भारीरहै तो कफबातका पक्षाघात जानिये ॥

अथ पक्षाघात का साध्य लक्षण ॥

केवल बातसे पक्षाघात हुआहोय तौ कष्टसाध्य जानिये ॥

अथ पक्षाघातका असाध्य लक्षण ॥

गर्भिणी अथवा प्रसूता स्त्री के पक्षाघात होय तौ असाध्य जानिये अथवा बालक । वृद्ध । क्षीणपुरुष । घाववालेके जिसका रुधिर निकलगयाहो उसके शून्यशरीरवाले के पक्षाघात होय तौ असाध्य जानिये ॥

अथ पक्षाघातका यत्न ॥

उर्द । कौंचकेबीज । अरण्डकीजड़ । खरैटीकी जड़ इनका काढ़ा उसमें भुनीहींग । सेंधानोन मिलाकर पिये तौ पक्षाघात जाय १ अथवा पीपलामूल । चित्रक । पीपल । सोंठि । रास्ना । सेंधानोन । उर्द इनका काढ़ाकर इस काढ़ेके रसमें तेलपकावै जब रस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब मर्दन करै तौ पक्षाघात जाय २ इति ग्रन्थकादि तैल ॥ अथवा उर्द । कौंच के बीज । अतीस । अरण्डकी जड़ । रास्ना । सौंफ । सेंधानोन इनको महीनपीस काढ़ाकर इस काढ़ेमें तेल पकावै जब रस जलजाय और तेल रहजाय तब मर्दन करै तौ पक्षाघात रोग जाय ३ इतिमाषादितैलम् ॥ ये सबयत्न भावप्रकाश में लिखेहैं ॥ अथवा कौंच के बीज । खरैटीकी जड़ । अरण्डकी जड़ । उर्द । सोंठि । सेंधानोन इनका काढ़ाकर छान के पिये तो पक्षाघात जाय ४ यह वैद्यविनोदमें है ॥ अथवा महुयेका रस ५ टंक । गूगल ५ टंक बीजाबोला ५ टंक बकरीकी मींगनी अर्थात् बीट ५ टंक कटेलीका रस ५ टंक इनको महीनपीस शरीरमें लेप करै फिर कमर बराबर गढ़ा खोद गढ़ेमें अग्नि जलाय लालकरै और गढ़ेके आस पास और नीचे आकके पत्तेडाले फिर उस पक्षाघात के लेप किये हुये मनुष्यको उस गढ़ेमें बैठावे जब उसके पसीना आजायतौ पक्षाघात उसी दिन जातारहै ५ ॥ अथ निद्रा नाशरोग का यत्न ॥

भुनी भंग का चूर्ण महीनपीस रात्रि में अनुमान माफिक शहतसे चाटैं तौ निश्चय निद्रा आवै और अतीसारसंग्रहणी भी जाय और क्षुधा अधिक लगै १ अथवा पीपलामूल का चूर्ण गुड़के साथ लेतौ नष्ट हुई भी निद्रा आवै २ अथवाकागलहरीकी जड़ शिरसे बांधैतौ निद्रा आवै ३ अथवा कोमल हाथोंसे पैरकी पिंडली दाबै तौ निद्रा आवै ४ अथवा बैंगन

के भरतेमें शहत मिलायके खाय तो निद्रा तत्काल आवै ५ अथवा अरण्डका तेल और अलसी का तेल इन दोनों को बराबरले कांसीकी थालीमें खूब घिसकर अंजन करैतो निद्रा अधिक आवे ६ अथवा बकरीके दूधसे पैरके तलुये धोवै तौ निद्रा आवै और तलुओंका दाह अच्छाहोय ७ अथवा कस्तूरी को स्त्रीके दूधमें महीनपीस अंजन करैतो बहुत दिनकी गई हुईभी निद्रा आवै ८ अथवा सौंफ और भंगको महीन पीस बकरीके दूधमें गर्म सुहाता २ लेपकरै तो निद्रा आवे९ ये सब यत्न वैद्य रहस्यमें लिखे हैं ॥

अथ सर्वांगमें वातहोय उसका लक्षण ॥

सर्व अंगोंमें कोपको प्राप्तहुआ जो बात सो सम्पूर्ण अंगों में पीड़ा करै ॥

अथ इसका यत्न ॥

विष गर्भआदि तेलोंसे सर्वांग बात जाय १ ॥

अथ सातोधातुओंमें प्राप्तहुई जो वात उसका पृथक् २ लक्षण और यत्न ॥

त्वचाको शून्य और पीला करकै शरीरको कृश और पीड़ा करै १ ॥

अथ रुधिरमें प्राप्तहुई जोवात उसका लक्षण ॥

शरीरमें पीड़ा अधिकहोय । वर्ण औरसे और होजाय । शरीर कृश और भारीहोय । अरुचिहोय । मुखपर कीलहोय । भोजन पचै नहीं २ ॥

अथ मांसमें प्राप्तहुई जो वात उसका लक्षण ॥

शरीर भारीहोय । पीड़ाहोय । स्तम्भित होय ३ ॥

अथ मेदमें प्राप्तहुई जोवात उसका लक्षण ॥

शरीरमें फोड़ेकरै ४ ॥

अथ हाडोंमें रहनीजो कुपितवात उसकालक्षण ॥

संधि २ में पीड़ाहोय । मांसजलजाय । निद्रा आवैनहीं ५ और मज्जामें वात हाड़की वातके समान जानिये ६ ॥

अथ वीर्यमें प्राप्तहुईजो बात उसका लक्षण॥

स्त्रीसंगकरै तो वीर्य तत्कालगिरै गर्भको बिगाड़े अथवा न बिगाड़े ७॥

अथ इन सबका यत्न॥

रसमें बिगड़ी बात वालेके तेलका मर्दनकरै १ और रक्तमें बिगड़ी बायुवाले के शीतल लेपकरै २ अथवा जुलाब देके वा रुधिर निकलवाके शान्त करदे ३ मांस मेदामें रहती जो बात उसको जुलाबसे शान्तकरिये ४ हाड़ोंकी बिगड़ी बायु वालेको चिकनी बस्तु खिलाने से और लगानेसे शांत करिये ५ और मज्जामें बिगड़ी जो बात वहभी चिकनी बस्तुके खाने और लगानेसे अच्छीहोय ६ बीर्यमें बिगड़ी जिसकी बात वहपुष्टता की औषधी खानेसे अच्छा होय ७॥

अथ कोष्ठमें प्राप्तहुई जो बात उसका लक्षण॥

उदरमें रहती जो दुष्ट वायु वह मलमूत्र को रोककर हृदय रोग। गुल्म। ववासीर। पसलीका शूल इनसबको उपजावैहै॥

अथ इसका यत्न॥

पाचनादिक औषधीसे इसका यत्नकरना॥ अथवा दूधपिलाइये॥

अथ आमाशयमें रहती जो बात उसका लक्षण॥

हृदय। पसली। पेट। नाभिइनमें पीड़ा होय तृषा लगै डकार बहुतआवै। बिशूचिका और खांसीहोय। कण्ठमुख सूख जाय। श्वास होय॥

अथ इसका यत्न॥

दीपन और पाचनकी औषधिदीजै लंघन और बमन करावै जुलाव करावै खानेको पुरानी मूंगचावलदे अथवा रोहिष अर्थात् रोहीड़ा। हड़की छाल। कचूर। पुष्करमूल अर्थात् पुहकरमूल। बेलकी गिरी। गिलोय। देवदारु। सोंठि। खुरासानी वच। अतीस। पीपल। बायबिड़ंग ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकरदे तो आमाशय की वायुजाय॥

अथ पक्काशयमें रहनेवाली जो वायु उसका लक्षण ॥

आंतबोले । पेटमें शूल और अफरा होय । मलमूत्र कष्ट से उतरे । पीठमें पीड़ा होय ॥

अथ गुदामें रहै जो दुष्ट वात उसका लक्षण ॥

मलमूत्र पवनसे रुकजाय । पेटमें शूल और अफरा होय । पथरीका रोग होजाय । जांघोंमें पीड़ा होय ॥

अथ इसका यत्न ॥

बस्ति कर्म्मसे यह रोगजाय ॥

अथ हृदयमें प्राप्तहुई जो वात उसका यत्न ॥

गिलोय । मिरचं इनदोनोंको महीन पीस गुनगुने जलसे पिये तौ यहबात जाय १ अथवा देवदारु और सोंठिको महीन पीसगुनगुने जलसे पिये तौ यह बातजाय २ अथवा असगन्ध बहेड़ेकी छालको महीनपीस गुड़में मिलाय खाय तौ यह बात जाय ३ ॥

अथ कर्णादिकमें प्राप्त जो वात उसका लक्षण ॥

वह कर्णादिक इन्द्रियोंका नाश करै है ॥

अथ इसका यत्न ॥

सेंक और तैलादिक के मर्दन से यह बात जाय ॥

अथ शरीरकी नसोंमें प्राप्त जो वातउसका लक्षण ॥

नसोंमें शूल होकर नसें इकटी होजायँ ॥

अथ इसका यत्न ॥

फस्त खोलनेसे यह रोग जाय ॥

अथ सन्धिमें प्राप्तहुई जो वात उसका लक्षण ॥

सन्धि २ में पीड़ा होकर संधियोंको बिगाड़ दे ॥

अथ इसका यत्न ॥

सेंक और तेलके मर्दनसे यह बातजाय अथवा इन्द्रायण कीजड़ और पीपल २॥ टंकगुड़में खाय तौ सन्धिगतबातजाय॥

अथ वातव्याधिका सामान्य यत्न ॥

अथ नारायण तेलकी विधि ॥

असगन्ध । खैरैटीकीजड़ । बेलकी गिरी । पाटल । दोनों

कटेली। गोखुरू। गंगेरन की छाल। नींबकीछाल। अरलू। साठीकी जड़। खीप। अरणी इनसब औषधियों को १० टके भरले और १६ सेरपानीमेंडालधीरे २ पकावैजबचतुर्थांश काढ़ा रहजायतबउसमें४सेरतिलकातेल औरतेलसेचौगुनागौकादूध डालैफिरइसकोमधुरीआंचसेपकावैऔरपकतेहीमेंकूट१टकेभर इलायची२ट०भर रक्तचन्दन२ट०खुरासानीवच२ट०बालछड़ २ट० शिलाजीत २ट० सेंधानोंन २ट० असगन्ध २ट० खरैटी २ट०रास्ना २ट०सौंफ २ट०इन्द्रायण २ट० शालिपर्णीअर्थात् शरवन २ट० पृष्ठिपर्णी अर्थात्पिथवन २ट०माषपर्णी अर्थात् रानउड़ीद २ट०मुद्गपर्णी अर्थात् रानमूंग २ट०येसबबराबरले इसमें मिलाय मधुरीआंचसे पकावे जब सबरस जलकर तेल-मात्ररहजाय तब उतारछानले फिर इसतेलको मर्दनकरै अथवा वस्ति कर्मकरैतौपक्षाघात। हनुस्तम्भ। मन्यास्तम्भ। गलग्रह। बधिरता। गतिभंग। कटिग्रह। गात्रशोष। नष्टशुक्र। विषम-ज्वर। अंत्रवृद्धि। शिरोग्रह। पार्श्वशूल। गृध्रसी और संपूर्ण बातरोग इस नारायणतेलसे दूरहोतेहैं—इति नारायणतैलम्॥

अथ योगराज गूगल की विधि॥

सोंठि। पीपल। चव्य। पीपलामूल। चित्रक। भुनीहींग। अजमोद। सरसों। दोनोंजीरे। सम्हालू। इन्द्रयव। पाढ़। वायविडंग। गजपीपल। कुटकी। अतीस। भारंगी। खुरासानीवच। मरुआ। ये सब औषध चार २ माशेले औरसब औषधोंसे दूनात्रिफला ले फिर इनसबऔषधोंको एकरसकर चार २ माशेभरकी गोली बनावै और घृतके चिकने बासनमें धर रक्खे फिर रास्नादिक के काढ़ेसे एक गोलीले सो काढ़ा लिखते हैं रास्ना। साठी की जड़। सोंठि। गिलोय। अरण्डकी जड़ इनकेकाढ़ेसे योगराज गूगलले तोबातके सबरोगजायँ और किरमालापंचकके काढ़ेसे ले तो कफकेरोगजायँ औरदारुहल्दीके काढ़ेकेसाथलेतौप्रमेहके

रोगजायँ और गोमूत्रसे लेतौ पांडुरोगजाय शहतकेसाथले तौ बात और रक्तके रोगजायँ और पुनर्नवादि काढ़ेसे ले तौ सब उदरके रोगजायँ और गूगलका सेवन करनेवाला खटाईआदि खायनहीं॥ इतियोगराजगूगलकीबिधि॥ अथवालहसुनकारस १टकेभर उसमें बराबरका तेलमिलाय अनुमानमाफिक सेंधा-नोनडाल पिये तौ बायुके सब रोगजायँ अथवा दूधके साथवा घृतके साथ अथवा मांसके शोरुवेके साथलहसुन १४दिनतक खाय तो सबप्रकारकीबातजाय और बिषमज्वर। शूल। गोला। अग्निकीमन्दता। फिया। शिरकारोग। बीर्य्यरोग इनको यह लहसुन पूर्वोक्त औषधियों के योगसे दूरकरेहै इतिलहसुन कल्पः अथवा रास्ना। धमासा। खरैटीकीजड़। अरण्डकीजड़। देवदारु। कचूर। खुरासानीबच। अडूसा। हड़कीछाल। चव्य। ना-गरमोथा। साठीकीजड़। गिलोय। बिधारा। सौंफ। गोखुरू। असगन्ध। अतीस। किरमालाकी गिरी। सतावर। पीपलबड़ी। सहँजनेकाछिलका। धनिया। दोनोंकटेली ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकरै इसकेसाथ योगराजगूगल ले तौ सब प्रकार के बात बिकारजायँ॥ इति महारास्नादि क्वाथः यह भावप्र-काशमें लिखाहै॥ अथवा थूहर। अरण्ड। बकायन। सम्हालू। सहँजना। कनेर इनसबके पत्तोंकारस और रससे चौथाई तेल डालकरपकावै फिर इसमें सोंठिडाले जब ये सबजलजायँ और तेलमात्र रहजाय तबइसतेलका मर्द्दनकरै तौ सब प्रकारकी बा-तजाय-इतिअष्टाङ्गतैलम्॥ अथ विषगर्भतैलम्॥

धतूरेकीजड़। निर्गुण्डी। कड़वीतूंबीकीजड़। अरण्डकीजड़। असगन्ध। पँवाड़। चित्रक। सहँजने की जड़। कागलहरी। किरिहारीकीजड़। नींबकीछाल। बकायनकीछाल। दशमूल। सतावर। चिरपोटन अर्थात् मकोय। गौरीसर। बिदारीकन्द। थूहरकापत्ता। आककापत्ता। सनाय। दोनोंकनेरकीछाल। आं-

धीझाड़ा। खीपये सब औषध तीन २ टकेभरले और इन औषधियों कीबराबर कालेतिलकातेलले और इतनाही अरण्डका तेलले और इसमेंचौगुना पानीडालै फिरसब औषधकूटकर इसमें मिलाकरमधुरीआंचसे पकावै जब येसब औषध जलसमेत जल जायँ और तेलमात्र रहजाय तब उतार ले फिर इसमें सोंठि। मिरच। पीपल। असगन्ध। रास्ना। कूट। नागरमोथा। खुरासानी बच। देवदारु। इन्द्रयव। जवाखार। पांचौनोन। नीलाथोथा। कायफल। पाढ़। भारंगी। नौसादर। गन्धक। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। शिलाजीत। हरताल ये सब औषधले २ भरले और सिंगी मुहरा १ टकेभरले इनसबको महीनपीस तेलमें डालै फिर इस तेलको मर्दन करै तौ सबबातके रोगदूर होयँ और कुक्षि। भृकुटी। पीठ। जांघ। और सन्धि२कीसूजन और गृध्रसीरोग। शिरकारोग। हड़फूटन। कर्णशूल। गण्डमालाइनसबरोगोंको यहबिषगर्भतैलदूरकरै है-इतिबिषगर्भतैलम्

अथ लक्ष्मीविलास महासुगन्ध तैल॥

मजीठ। देवदारु। चीढ़। कटेली। बच। तज। पत्रज। शोधीगन्धक। कचूर। हड़की छाल। बहेड़ेकी छाल। आमला। नागरमोथा येसब टके२भरलेपीस औटाय रसकाढ़ले फिरइस रसमें १ सेरतेल डालकर मधुरी आंचसे पकावै जबरस जलकर तेलमात्ररहजाय तबइसतेलमेंबालछड़। मूर्वा अर्थात्मुरहठी। मेढ़ल। चम्पेकी जड़। तज। पीपलामूल। नेत्रबाला। काला नोन येसबदोदोटकेभरले और लोहबान। बेर। यव। असगन्ध। नखअङ्येसब दो२टकेभरले और इलायची। लवंग। सफेदचन्दन। जायफलकीकली। कंकोल। नागकेसर ये सब पैसे २भर और कस्तूरी २ टंक लेकरसबकोमहीनपीस तेलमेंमधुरी आंच से पकावै जब सबरस और औषध जलकर तेलमात्र रहजाय तब इसमें २ टंककपूर पीसकर डाले फिर इसका मर्दनकरै तो

सबप्रकारके बातके रोग और सबप्रमेह सूजन गोला इन सब को यहतैल दूरकरेहै—इति लक्ष्मीबिलास महासुगन्धतैलम्॥ यह चक्रदत्तकमें लिखाहै॥ अथवा सोंठि ७ टकेभर औरइसके बराबर एक लहसनकी पोटीले सोंठिको महीनपीस बराबरके घृतमें भूनले फिर लहसनकोपीस उसमें मिलाय चोखाशहत ७ टकेभर इसमेंडाले फिर इन सबको एक रसकर एकटकेभर नित्यखाय तौपक्षाघात। हनुस्तम्भ। कटिभंग। भुजोंकी पीड़ा और सबवायुके रोग इनको यह लहसन दूरकरैहै १॥

अथ विजयभैरव तैलकी विधि॥

मालकांगनी। असालू। कालाजीरा। अजवाइन। मेथी। तिल ये सब बराबरले और तेलकीघानीमें इनका तेल निकलवाके उस तेलका मर्दनकरै तौ सबबातके रोगजायँ ५ इति विजयभैरवतैलम्॥ अथवा पारा। गन्धक। हरताल। मैनसिल ये सब बराबरले तीन दिनतक कांजीमें महीनपीसे फिर एक हाथ कपड़ेमें इन चारोंका लेपकरै फिर उस कपड़ेकी बत्ती कर उसपरसूतलपेटे फिर उसपर चौगुना तिलकातेलडालकर उस बत्तीकोनीचीकरजलादे उसकेनीचे लोहेकापात्ररक्खे उसमेंजो टपकेका तेलपड़े उसे जुदे पात्रमें भरले फिर इस विजयभैरव तेलका मर्दनकरै तौसर्व्वप्रकारकी बातकारोगजाय—इति विजयभैरवतैलम्॥

अथ विजय भैरव रस॥

हड़कीछाल ३ टकेभर। चित्रक ३ टकेभर। इलायची। तज। पत्रज। नागरमोथा ये चारों पैसे २ भरले और सम्हालू ५ टं० नागकेसर २ टं० सोंठि १० टं० कालीमिरच १० टं० पीपल १० टं० पीपलामूल १० टं० शोधासिंगीमुहरा १० टं० सार १० टं० कालीमिरच १० टं० पारा १० टं० शोधीगन्धक ५ टं० पहले पारे और गन्धककी कजलीकरै फिर उस कजली में ये सब औषध डाले फिर इन सर्व औषधियोंमें पुराना तिव-

रसा गुड़ ५० टकेभर मिलाकै एक रसकरै फिर घृतमें इसकी बेरके प्रमाण गोली बनावै उनगोलियोंकोघृतके बासनमें रक्खे फिर १ तथा २ व ३ गोली नित्य दो महीने तक खाय तौ कफ के और पित्तके सब रोग जायँ॥ और इस रसको ४ महीनेतक सेवनकरै तौ बायुके सबरोग जायँ॥ और १ बर्ष सेवन करै तौ सर्व रोगजायँ और दोबर्ष सेवनकरै तौ वृद्धता दूरहोकर तरुण होजाय और तीनबर्ष सेवनकरै तौ आयुर्बल बढ़ै शरीर निरोग रहै इति—इति बिजयभैरवरस ॥

अथ वातारि रस ॥

पारा १ भा० शोधीगन्धक २ भा० त्रिफला ३ भा० चित्रक ४ भा० शोधागूगल ५ भा० इनसबको अरण्डके तेलमें १ दिन तक खरलकर फिर इसमें हिंग्वाष्टक चूर्णडाले और एकदिन खरलकर फिर इसकी गोली २॥ टंक प्रमाणबांधे फिर लवँग। सोंठि। अरण्डकी जड़के काढ़ेसे नित्यप्रति १ महीने तकले ब्रह्मचर्य्यमें रहै तौ सबप्रकारकी बातजाय और साधारणबात तौ इसके ७ दिन सेवन करनेहीसे दूरहोय—इतिबातारिरसः॥

अथ समीर पन्नगरसः॥

शोधीगन्धक। शोधासिंगीमुहरा। सोंठि। कालीमिरच। पीपलछोटी। पारा ये सब बराबरले फिर पारे और गन्धककी कजलीकरै कजलीमें ये सब औषधिडालै और भांगरेके रस की ७ पुटदे फिर इसकी १ रत्तीप्रमाण गोलीबांधे १ गोली अदरखके रससेले तौ सब प्रकारकी बातजाय १ इतिसमीर पन्नग रसः॥

अथ समीर गज केसरी रसः॥

नवीनचोखी अफीम। कुचला। कालीमिरच ये सब बराबर ले फिर इन सबको महीनपीस १ रत्तीप्रमाण गोलीपानकेरस में बांधे १ गोली प्रभातही खाकर ऊपरसे पानचबाय तौ सब प्रकारकी बात जाय और सूजन। बिशूचिका। मृगी ये सब

जायँ— इतिसमीरगजकेसरीरसः यहसबवैद्यरहस्यमें लिखे हैं ॥

अथ वृद्धचिन्तामणिरसः ॥

खुरासानी अजवाइन। सफ़ेदजीरा। अजमोद। काकड़ासिंगी। असगन्ध ये सब बराबरले महीनपीस १ माशेप्रमाण गर्म जलके साथले तौ सबप्रकारकी वात दूरहोय और श्वास। खांसी। प्रलाप। अतिनिद्रा। अरुचि ये सबजायँ इतिवृद्ध चिन्तामणि रसः ॥

अथ अमृत नाम गुटिका ॥

चित्रक ३ टकेभर हड़कीछाल ३ ट० पारा १ ट० गन्धक १ ट० सोंठि १ ट० मिरच १ ट० पीपल १ ट० पीपलामूल १ ट० नागरमोथा १ ट० जायफल १ ट० विधारा १ ट० इलायची ५ ट० अभ्रक ५ टंक शोधासिंगीमुहरा ५ टं० गुड़ ८टके भर प्रथम पारे और गन्धककी कजलीकरै फिर इन सब औषधियों को महीनपीस गुड़ समेत कजलीमें मिलावै फिर इस में जलभांगरेकी १ पुटदे फिर १ तथा २तथा ३ रत्तीकेप्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्यखाय तौ सब प्रकारकी वात। कोढ़। प्रमेह। मृगी। क्षयी। श्वास। सूजन। आमबात। पाण्डुरोग। बवासीर इनसब रोगोंको यह रस दूरकरैहै—इति अमृतनाम गुटिका। यह योगतरंगिणी में है ॥

अथ रसराक्षस रसः ॥

शोधी गन्धक। शोधापारा। इन दोनोंको बराबरलेकजली करै फिर इसमें दूधियाके रसकी १ पुटदे फिर तुलसी के रस की १ पुटदे फिर बावची के रसकी १ पुटदे फिर मोर शिखा के रसकी १ पुटदे फिर मुलहठी के रसकी १ पुटदे फिर वाराहीकन्द के रसकी १ पुट दे फिर बहुफली के रसकी १ पुट दे इसका रस सुखाय पारे और गन्धक की कजली को कुक्कुट के अंडेमें भर और अंडेको शोध ले फिर अंडेको कपड़ौटी कर

७६ अंडोंको सुखाले फिर उन अंडोंको गजपुटमें पकावे इसी प्रकार तीनबार करै फिर इसमेंसे १ रत्ती खाय तौ सबप्रकार की वातजाय और यह क्षुधाको बहुत करैहै--इति राक्षसरस॥ यह रसार्णवमें है॥

अथ वंगेश्वररसः॥

शोधापारा। शोधीगन्धक। इनकी कजली करै और दोनों से आधी शोधीहरताल डाले और इनसबकी बराबररांगडाले फिर इनको आकीके दूधमें ७ दिन खरलकरै फिरसुखायकांच के आतसी शीशेमें कपड़ौटी कर उसमें भरदे फिर शीशे को बालुका यन्त्रमें १२ पहर पकावै फिर शीतलकरकेकाढ़ै उसमें से आधीरत्तीप्रमाण पानमेंखाय तौसबप्रकार कीवात उन्माद क्षीणता मन्दाग्नि कोढ़ व्रणविषमज्वर ये सब जायँ॥ इति वंगेश्वर रस यह योगतरंगिणीमें है॥

अथ हरताल गुटिका॥

शोधीहरताल। शोधीगन्धक। शुद्धपारा। शिंगरफ। सुहागा। सोंठि। मिरच। पीपल। ये सब बराबरले पारे और गन्धककी कजली कर ये सब औषध मिलावै फिर अदरख के रसकी १ पुटदे फिर मूंग प्रमाण गोलीबांधे १ गोली प्रभातही खाय तौ सब प्रकारकी वात और सूतिका रोग। मन्दाग्नि। संग्रहणी। शीतज्वर। ये सबरोग जायँ—इतिहरताल गुटिका। यह रसरत्न प्रदीपमें है॥

अथ लहसनपाककी विधि॥

लहसन १ पैसेभर लेके उसको महीन जीरासा कतर ले फिर १ पैसेभरदूध और धेलेभर पानीमें चढ़ाकर आंचदे जब दूध लहसनमें सूखजाय तब उसको खरलकरै जब लुगदी बंध जाय तब धेलेभर घृतडाल आँचदे जब सुर्खीपनहो आवै तब उतारले और घृत अधिक रहै सो काढ़डालै फिर २ पैसे

भर मिश्रीकी चासनी करै उसमें कस्तूरी आधी रत्ती लवंग ४ रत्ती जायफल १ मा० दालचीनी १ मा० सुवर्णका तबक १ मा० ये सब औषध पीस चासनीमें मिलावै फिर वह लहसन डाल चार गोली बांधे १ गोली प्रभातही खाय और बहुत वातहोय तौ दूसरी गोली सायंकालके समय खाय तो वात जाय और पथ्यसे रहकर यह गोली २१ दिनतक खाय और अधिकखाय तौ ४९ दिनखाय और गोली सिवायबनानी होय तौ इसीहिसाब से उस लहसनकी तोल के माफिक औषध बढाले इस लहसन पाकके खानेसे सबप्रकारकी वात दूरहोयँ शरीर पुष्टहोय क्षुधाबढै इति लहसनपाक—इतिवात व्याधिरोगके ८४ भेदों समेत उत्पत्तिलक्षणयत्नसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेवातव्याधिके ८४ भेदोंसमेतउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणोनामअष्टमस्तरङ्गः ॥

अथ ऊरुस्तम्भ रोगकी उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

शीतल। गरम। पितलानी। सूखी। भारी। चिकनीइनवस्तुओं के खानेसे और दिनके सोने और रात्रि के जागने से अधिक क्षुधासे अथवा अजीर्णमें पीछे कहीहुई वस्तु खानेसे पुरुषकी वात कोपित होकर पित्तको बिगाड़ जंघाओंको स्तंभित और शून्य करदेहै मानों जंघाअंगमें हैं हीं नहीं हलने चलने न दे उसको ऊरूस्तम्भ रोग कहतेहैं॥

अथ ऊरुस्तम्भरोगका पूर्वरूप॥

निद्रा बहुतआवै। ध्यान लगजाय कुछज्वराश रोमांच छर्दि जंघाओंमें पीड़ा ये लक्षणहोयँ तौ जानिये कि ऊरूस्तम्भरोग होगा इसरोगको धन्वन्तरिजीने सुश्रुतमें महावातव्याधि रोग कहा है इसका लक्षण लिखते हैं दोनों पैर सूजजायँ और उनमें पीड़ाहोय बड़ेकष्टसे उठें दोनों जंघाओं में पीड़ादाह और

धरतीमें पैर धरतेही पीड़ाहोय शीतल स्पर्शको न जाने चला न जाय काष्ठ कीसी जंघाहोजायँ टूटीसी दीखें ये लक्षण होयँ तौ बातव्याधि रोगजानिये इसीको ऊरूस्तम्भ भी कहते हैं॥

अथ ऊरूस्तम्भ का असाध्य लक्षण॥

जिस ऊरूस्तम्भ रोगवाले के दाह और पीड़ाहोय शरीर कांपै वह मरजाय १॥ अथ ऊरूस्तम्भका यत्न॥

त्रिफला। पीपलामूल। सोंठि। कालीमिरच। पीपल इन को महीन चूर्णकर २॥ टंक नित्य शहतसेखाय तौ ऊरूस्तंभरोग जाय १ अथवा सोंठि। पीपल। शिलाजीत। गूगल ये सब ५ मासे गोमूत्र के साथ नित्य पिये तौ यह रोगजाय २ अथवा दशमूलके काढ़ेके साथ गूगल खाय तौ रोगजाय ३ यह भाव प्रकाशमें लिखाहै अथवा भिलावां १॥ टंक गिलोय १॥ टंक देवदारु १॥टं० सोंठि १॥ टं० हड़कीछाल १॥टं० सांठी कीजड़ १॥ टं० दशमूल २॥ टं० इनका काढ़ा ले तौ यह रोग जाय ४ अथवा १॥ टं० गूगलको गोमूत्र के साथ १५ दिनले तौ यह रोग जाय ५ अथवा शहत सरसों बामीकी मट्टी इन को महीन पीस मर्दन करै तौ ऊरूस्तम्भ जाय ६ अथवा बच का चूर्ण २॥ टंक गरम पानी से ले तौ यहरोग जाय ७ और ऊरूस्तम्भ वाला इतनी वस्तु न करै रुधिर कढ़ावे नहीं वमन विरेचन और वस्ति कर्म न करै यह वैद्य रहस्य में है अथवा खस। या नींबूकारस गुड़केसाथ अथवा शहतकेसाथ पिये तौ ऊरूस्तम्भ जाय ८ अथवा चव्य। हड़कीछाल। चित्रक। देवदारु। कचनारके फूल। सरसों इनका चूर्णकर २॥ टं० शहतके साथ ले तौ ऊरूस्तम्भ जाय ९ यह सर्व्व संग्रह में है--इतिऊरूस्तम्भ रोग॥

अथ आमवातरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

मन्दाग्नि वाला पुरुष कुपथ्य करकै चिकना अन्नखाय और

परिश्रम न करै ऐसा जोपुरुष उसके वातकरके प्रेरित जो कच्चे अन्नका रस वह कफका स्थान जोहृदय उसमें प्राप्तहोकर कच्चाहीरसवात करिकैनसोंमें जाय प्राप्तहोकर नसों के छिद्रोंको रोंकिकै अग्निको मन्दकर हृदयको भारीकरदेहै और कफवात कुपित होकर कोष्ठ और त्रिकसन्धिमें प्रवेशकर शरीरको स्तम्भितकरदेहै उसकोआमबातकहिये ॥ अथ लक्षण ॥

अंगमें हड़फूटन। अरुचि। तृषा। आलस्य। शरीरभारी ज्वर ये होयँ और अन्न पचेनहीं अंग सुन्न पड़जाय। जिसमें ये लक्षण होयँ उसको आमबात कहिये ॥

अथ वायु बढ़े हुयेका लक्षण ॥

कोपको प्राप्तहुआ जो आमबात वह सर्व रोगोंमें कष्टसाध्यहोताहै और इनका दोष लिखते हैं हाथ पैर शिर और टांगों मेंसे त्रिक और जंघाओंकी संधियों में प्राप्तहोकर पीड़ा युक्त सूजन करै है और उन स्थानोंमें बिच्छूके लगने कीसी बहुत पीड़ाहोय अग्नि मन्द होय लारपड़े उत्साह जातारहै मुखका स्वाद और का और होजाय दाहहोय। मूत्र बहुत उतरै कुक्षिमें कठिनता होकर शूलहोय निद्रा आवै नहीं बमन होय तृषा अधिक लगै भ्रम और मूर्च्छा होय मल उतरै नहीं। शरीरजड़ होजाय। आंत बोला करै। अफरा होय। और वातव्याधि के कहेहुये और भी उपद्रव होयँ और जिसमें पित्त अधिकहोय उसमें दाहहोय। पीलाई को लिये होय और वाताधिक्य में शूलहोय और कफाधिक्य होय। भारीपनहोय। खुजलीहोय। एक दोषका साध्य २ दोषका कष्टसाध्य और सर्वदेहमें विचरनेवाला सन्निपातका सोथ असाध्य जानिये ॥

अथ यत्न ॥

अरण्डके बीजको दूधमेंपकाय खीरखाय तो आमवात और गृध्रसी रोग जाय ॥

अथ महारास्नादि क्वाथ॥

रास्ना। अरण्डकी जड़। अडूसा। धमासा। कचूर। दारुहल्दी। खरैटी। नागरमोथा। सोंठि। अतीस। हड़की छाल। गोखुरू। सहजना। चव्य। दोनों कटेली इन को बराबर ले और रास्ना तिगुनी ले फिर इनको जवकुटकर ५ टंकका काढ़ा नित्यदे तौ इतनेरोग दूरहोयँ पक्षाघात। अर्दित। कम्प। कुबड़ापन। सन्धि २ की बात। पैरकी पीड़ा। गृध्रसी। हनुग्रह। ऊरुस्तम्भ। बातरक्त। बवासीर। वीर्य्यकादोष। स्त्रीका बन्ध्यापन इनसबरोगोंको यहकाढ़ादूरकरैहै इतिमहारास्नादिकाथः॥

अथ अजमोदादिक चूर्ण॥

अजमोद। कालीमिरच। छोटीपीपल। बायबिडंग। देवदारु। चित्रक। सौंफ। सेंधानोन। पीपलामूल ये सब औषध टके२भर ले सोंठि १० टकेभर विधारा १० ट० हड़कीछाल ५ट० इन सबको महीनपीस और सबकी बराबर गुड़ले फिर इसकी २॥ टंकभरकी गोलीबांधे और नित्य गरम पानी से ले तौ आमबात। शूल। गृध्रसी। गोला। प्रतूनी। कटि। पीठ। जंघा और हड़फूटन। सूजन इन सब रोगोंको यह चूर्ण दूरकरै है इतिअजमोदादि चूर्ण॥ और योगराज गूगल जो पीछे बातव्याधि में लिखाहै उसमें भी आमबातका रोग दूर होय है॥

अथ सोंठिपाक॥

सोंठि ८ टकेभर गौकाघृत १ सेर दूध ४ सेरले फिर सोंठि कोमहीनपीस घृतमें बकरीके दूधमें पकायके खोयाकरले फिर ५० टकेभर खांड़की चासनीकर उस चासनी में घृतसे अच्छे प्रकार से भुँजे फिर इसमें सोंठि १ टकेभर नागकेसर १ टके भरडाले फिर इसकी गोली १ टकेभर की बांधे एक २ गोली दोनों समय खाय तौ आमबातको दूरकर शरीर को पुष्टकर पराक्रम करै है ४—इति शुंठीपाकः॥

अथवा मेथी ८ टके भर सोंठि ८ टकेभर इनदोनों को स-हीन पीस गौके ४ सेर दूधमें पकावे और इनदोनों को घृतमें मकरोकर मावा करे फिर ४ सेर पक्कीमिश्रीकी चासनीकरै उस में यह मावाडाले और मिरच १ टकेभर चित्रक १ ट० पीपल १ ट० सोंठि १ ट० पीपलामूल १ ट० धनियां १ ट० सौंफ १ ट० जायफल १ ट० कचूर १ ट० तज १ ट० पत्रज १ ट० नागरमोथा १ ट० इन सबको महीन पीस चासनी में डाले फिरसबको एकरसकर टके २ भरकी गोलीबांधे १ गोलीनित्य खाय तो आमबात। बातव्याधि। विषमज्वर प्रदर इन सब रोगोंको दूरकर वीर्य्यकी वृद्धिकरैहै ५--इति मेथीपाकः॥

अथवा लहसनका रस २॥ टं० गौकाघृत २॥ टं० इनदोनों को मिलाय नित्यपिये तो आमबात जाय ६॥ अथवा सेंधा-नोन ५ टं० हडकीछाल ५ टं० पुष्करमूल अ० पुहकरमूल ५टं०महुआ ५टं०पीपल ५टं० इन सबको महीनपीस फिर अ-रण्डका तेल१सेर सौंफकाअरक१सेर कांजी२सेर दहीकामट्ठा ४सेर इनसबको औषधसमेत इकट्ठाकर कढ़ाईमें चढ़ाय नीचे मन्द २ आंचदे जब सबरस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब उतारले फिर २॥ टं० इसमेंसे नित्यखाय अथवा लगावे तो आमबातजाय॥ और क्षुधाकी वृद्धिहोय७-इतिवृहत्सैंधवादि तैलम्॥ अथवा पारा। शोधीगन्धक। सोंठि। कुटकी। त्रिफला। किरमालाकी गिरी ये सब बराबर ले और हड़की छाल अन्य औषधियोंसे तिगुनीले प्रथमपारे और गन्धककी कजलीकरै फिर ये सब औषधमिलावै फिर इसमेंसे १ मासे प्रमाणसोंठि और अरण्डकी जड़के काढ़ेसे ले तो आमबात रोग तत्काल जाय ८--इति आमवातारिरसः॥ और दही। दूध। गुड़। म-छली। मांस। उर्दकी वस्तु इतनी वस्तु आमबात वाला न खाय॥ यह भावप्रकाश में लिखा है॥ अथवा गूगल १ सेर

हड़की छालका चूर्ण १ सेर आमलेका चूर्ण १ सेर बहेड़े की छालका चूर्ण १ सेर ये सब औषध ४ सेर पानीमें डाल पीछे कढ़ाई में पकावे जब जलका चतुर्थांश रहजाय तब उतार ले फिर अग्निके ऊपर चढ़ाय कुछगाढ़ा करले पीछे इसमें सोंठि २॥ टंक मिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० त्रिफला २॥ टं० नागरमोथा २॥ टं० देवदारु २॥ टं० शोधी गन्धक २॥ टं० शोधा जमालगोटा १०० पहलेपारे और गन्धककी कजलीकरै फिर कजलीमें ये सब औषध मिलावै फिर ये सब गूगलके रस में मिलाकर १मासे गरमजलके साथलेतौ आमबातको तत्काल दूरकर क्षुधाकी वृद्धिकर धातुको बढ़ावै। मुखसूजै नहीं। और बातके रोग भगन्दर। सूजन। शूल। बवासीर इन सब रोगों को यह दूरकरै है—इति व्याधि शार्दूल गूगल ९॥

अथवा हड़की छाल। सेंधानोन। निसोत। इन्द्रायण की जड़। सोंठि। इन्द्रायणके फलकीमींगी इनसबको महीन पीस लोहेके पात्रमें जल भरकर उसमें ये औषधडाले फिर मधुरी आंचसे पकाय छोटे बेरके प्रमाण गोली बांधे १ गोली गरम पानीसे ले ऊपरसे बहुत घृतडाल चावल खाय तौ आमबात जाय--१०॥ इति आम बातारि गुटिका॥ ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं॥

अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। नागरमोथा। वायविडंग। चव्य। चित्रक। खुरासानीवच। इलायची। पीपलामूल। भाऊकी जड़। देवदारु। तुम्बुरु अर्थात् मीठे तोंबाके बीज। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल। कूट। दोनों हल्दी। सौंफ। सपेदजीरा। सोंठि। पत्रज। धमासा। कालानोन। जवाखार। सज्जी। गजपीपल। सेंधानोन ये औषध बराबरले फिर इन औषधियों को महीनपीस गूगलमें मिलावे फिर इस को २॥ टं० घृत अथवा शहतके साथ नित्य खाय तौ आम-

बात। उदावर्त्त। बवासीर। कृमिरोग। विषमज्वर। उन्माद। अफरा। कोढ़। सूजन। पांडुरोग इनसबको यह दूरकरै है धन्वन्तरिजीने इसका नाम द्वात्रिंशक गूगल धराहै ११ यहवीर सिंहावलोकन में है अथवा शोधागूगल १ सेर कडुवातेल ८ टकेभर त्रिफला ३ सेर २४ सेर पानी में त्रिफला डालकर औटावै जब पानीका चतुर्थांश ६ सेर रहजाय तब इस पानी को छान फिर अग्निपर चढ़ाके गाढ़ाकरले फिर इसमें गूगल। तेल। सोंठि २॥ टंक मिरच २॥ टंक पीपल २॥ टंक त्रिफला २॥ टंक नागरमोथा २॥ टंक देवदारु २॥ टंक गिलोय २॥ टंक निसोत २॥ टंक दात्यूणी २॥ टंक खुरासानीवच २॥ टंक जिमीकन्द २॥ टंक पारा २॥ टंक शोधीगन्धक २॥ टंक धतूरेकेबीज ४ टंक इन सबको महीनपीस उस त्रिफले के जलके जलमें मिलाकै एक जीवकरै फिर इसमेंसे १ मासे नित्य गरम जल से ले तो क्षुधा बढ़ै धातुको बढ़ावै शरीरको नीरोग करै और आमवात। मंथवाय। कटिकीवात। भगन्दर। पैरोंकी बात। जांघकी बात। पथरी मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह गूगल दूरकरै है--इति सिंहनाद गूगल १२ यह योगतरंगिणी में है॥

अथवा शोधीगन्धक ५ टंक तामेश्वर ५ टंक पारा २॥ टंक सार २ टंक इनसबको इकट्ठाकर अरंडके पत्तों के ऊपर डाले फिर इनको खरलमेंपीस पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि इनका काढ़ा कर उस काढ़ेकी १६ पुटदे और बहेड़े के रसकी २० पुटदे और गिलोयकेरसकी १० पुटदे और इनसब औषधियोंके बराबर भुनासुहागा डाले और सुहागसे आधा बिड़नोनडाले और बिड़नोनकी बराबर कालीमिरचडाले और सोंठि। पीपल। त्रिफला। लवंग ये सब मिरचके बराबरडाले फिर इन सबको महीनपीस एकरसकरै फिर १ मासे नित्य पृथक् २ अनोपानसे खाय तो सर्व्वरोगमात्र को यह रस दूर

कर क्षुधाको बहुत बढ़ावै है और आमबात को दूरकर स्थूल पुरुषको कृश और कृशपुरुषको पुष्टकरै है इसकी ४ रत्ती की मात्राहै जो कण्ठतकभी भोजन कियाहोय उसकोभी तत्काल पचादे १३ इति बातेश्वर रसः—यह सारसंग्रह में है॥

और दही। मछली। गुड़। दूध। उर्दकाआटा ये सबवस्तु आमबात वाला न खाय॥ इति आमबातकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

अथ पित्तव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

कडुवारस। खटाई। गरमंबस्तु दाहकरनेवालीबस्तु तीक्ष्ण इनके खानेसे और उपबासक्रोध और अधिक मैथुन करनेसे बहुत नोनके खानेसे और घाममें सोनेसे प्यास भूँखके रोकने से खेदकेकरनेसे इतनीबस्तुके करनेसे गर्मीका कोप होजायहै और भोजनकी जीर्णताके समय शरदऋतुमें। ग्रीष्मऋतुमें। मध्याह्नमें। अर्द्धरात्रिकेसमय पित्तकोपको प्राप्तहोकर ४० रोगों को पैदाकरैहै उनकानाम और लक्षण॥ तरुणाईमें श्वेतबाल होजायँ १ लालनेत्ररहैं २ मूत्रलालहोय ३ नेत्रपीलेरहैं ४ मूत्र पीलाउतरै ५ मल पीलाहोय ६ नख पीलेहोयँ ७ दांत पीले होयँ ८ शरीरपीलारहै ९ अँधेरीआवै १० सर्वत्र पीलादीखा करै ११ निद्राथोड़ीआवै १२ मुखसूखै १३ मुखमेंदुर्गन्धआवै १४ मुखतीखारहै १५ गरमश्वासानिकलै १६ मुखखट्टारहै १७ डकारमें धुआंनिकलै १८ घुमनीआवै १९ इन्द्री शिथिलहो-जायँ २० क्रोधबहुतहोय २१ दाहहोय २२ अतीसाररहाकरै २३ गरमी सुहावैनहीं शीतलता सुहावै २४ किसीबस्तुसेतृप्त हो नहीं २५ सर्वबस्तुसे अप्रीतिरहै २६ भोजनके पीछे जलन होय २७ क्षुधा बहुतलगै २८ नकसीर आदिहोय २९ मल पतलाहोय ३० मलगरमउतरै ३१ मूत्र गरमउतरै ३२ मूत्र-कृच्छ्रहोय ३३ वीर्यकी अल्पता होय ३४ शरीर गरमरहै ३५

पसीना बहुतआवै ३६ पसीनेमें दुर्गन्धआवै ३७ हाथपैरोंमें रोग बहुतहोयँ ३८ शरीरमें हड़फूटनहोय ३९ फोड़ा फुंसी बहुतहोयँ ४० ये ४० रोग गरमीके हैं ॥

अथ इन सब पित्तरोगोंका सामान्य यत्न ॥

नीमकीछालको आदिले तिक्त बस्तुके खाने से और मिश्री को आदिले मीठीबस्तु खानेसे । चन्दन को आदिले शीतल बस्तुके लगानेसे । शीतल पवनसे । शीतल छायाके रहनेसे । रात्रिमें सोनेसे । खसकेपंखेकी पवनसे । चन्द्रमाकी चांदनीसे । तहखानेके रहनेसे । दूधकेपीनेसे । जुलाबकेलेनेसे । रुधिर के निकलवानेसे इतनी बातोंके करनेसे पित्तरोग दूरहोयँ ॥ इति पित्तब्याधिकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

भारी । मीठी । बहुतचिकनी दहीआदि शीतल वस्तुओं केखानेसे । और दिन के सोने से । बहुत बैठे रहने से इतनी बस्तुओंसे कफका कोप होताहै प्रभात समय और भोजन के पीछे वसन्तऋतुमें कफका कोप होता है ॥

अथ कफके २० रोगोंका लक्षण ॥

मुख मीठारहै १ मुखकफसे लिपटारहै २ लारपड़ै ३ निद्रा बहुत आवै ४ कंठमें घूंघर शब्द होय ५ कड़वे रसकी इच्छा रहै६ गरम बस्तुकी इच्छारहै ७ बुद्धिकी जड़ताहोय८ चैतन्यता थोड़ीरहै ९ आलस्य बहुत आवै १० क्षुधालगे नहीं ११ मंदाग्नि होय १२ दिशा बहुत जाय १३ मल श्वेत होय १४ मूत्र बहुतउतरै १५ मूत्रश्वेतहोय १६ वीर्य्यकीआधिक्यताहोय१७ निश्चलहोय १८ शरीर भारी होय १९ शरीर ठंढा रहै २० ये कफके बीस रोग हैं ॥

अथ कफके २० रोगोंका सामान्य यत्न ॥

रूखी । कषैली । गरम । कडुवी बस्तुके खानेसे । खेद और कुस्ता और वमनके करनेसे । पसीना आनेसे । लंघनकरनेसे ।

तृषा रोकनेसे। हुक्का पीनेसे। कुस्ती लड़नेसे। जलक्रीड़ासे। चित्रकके खानेसे। नासलेनेसे। मार्ग चलनेसे। मैथुनकरनेसे। जागनेसे इतनीबस्तुके करनेसे कफके २० रोगजातेहैं॥ इति कफव्याधिकी उत्पत्ति लक्षणयत्न सम्पूर्णम्॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्र श्रीमहाराजसवाई प्रतापसिंहजीबिरचिते अमृतसागरनामग्रन्थेऊरूस्तम्भआम बातपित्तव्याधिकफव्याधिआदिरोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण यत्ननिरूपणंनामनवमस्तरंगः॥

अथ बातरक्तकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

नोन। गरमबस्तु। सड़ामांस। खरी। बड़ीमली। कुलथी। उर्द। बहुत तरकारी। मांस। मछली। दही। * बिरुद्धबस्तु इन सबकेखानेसे और आसव और कांजीके पीनेसे। क्रोधसे। दिन केसोनेसे। हाथी घोड़ा ऊंटके दौड़ानेसे इन बस्तुओंसे सुकुमार और सुखी पुरुषके बातरक्तका रोगकोपको प्राप्तिहोताहै॥

अथ बातरक्त का स्वरूप॥

सब शरीरमें रुधिर दग्धहोजाय फिर वह रुधिर दुष्टहोकर दोनों पैरोंमें इकट्ठा होनेलगे॥

अथ बातरक्त का पूर्वरूप॥

पसीना बहुत आवै। अथवा आवैनहीं। शरीरकालापड़जाय शरीरमें स्पर्शकाज्ञान होय नहीं। थोड़ीसी चोटमें पीड़ा बहुत होय। सन्धि २ शिथिल होजाय आलस्य बहुतआवै शरीरमें फुंसी होजायँ। घोंटू। जंघा। कटि। हाथ। पैरोंकीसन्धिमेंपीड़ा होय शरीरभारीरहै। सुन्नहोजाय। शरीरमें दाहहोय। वर्ण और का और होजाय। शरीरमें लालचटे पड़जायँ ये लक्षण होयँतो जानिये कि बातरक्त होगा॥

---

* बिरुद्ध भोजन। मांसके साथ दुग्ध अथवा तिलके साथ दुग्ध पीना॥

अथ वाताधिकवातरक्तका लक्षण ॥

पैरोंमें शूलादिक बहुत होयँ और फड़कैं। सूजनहोय रूखे और कालेहोयँ और २४ नाड़ी और अंगुलीके मध्यमें संकोच होय। शरीर जकड़ बन्दहो और कांपै और शरीर सूखासादी-खै ये लक्षण होयँ तो वाताधिकका वातरक्तजानिये॥

अथ रक्ताधिक वातरक्तका लक्षण ॥

जिसमें सूजन होय। पीड़ा बहुतहोय। ललाई सहित हो और चिमाचिमी और खुजलीहोय ये लक्षणहोयँ उसके रक्ता-धिकवातरक्तकहिये॥ अथ पित्ताधिकवात रक्तका लक्षण ॥

जिसमें दाह। मोह। सूजनहोय। पकजाय। गरम बहुतहोय ये लक्षण होयँ उसको पित्ताधिक वात रक्त कहिये॥

अथ कफाधिक वातरक्तका लक्षण ॥

शरीर शिथिल और भारी चिकनाहोजाय। शून्य औरठंढा होय। खुजलीचलै येलक्षण जिसमेंहोयँ उसको कफाधिकवात रक्तकहिये और जिसमें ये सब लक्षण मिले होयँ उसको सन्नि-पातका वातरक्त कहिये १॥

अथ वातरक्त हाथोंमें होय उसका लक्षण ॥

जैसेपैरके तलुवेमें होयहै तैसेही हथेलीके ऊपर फुंसीआदि होयहैं पीछे सब शरीरमें होय २॥

अथ वातरक्त का असाध्य लक्षण ॥

पैर के तालूसे लेके घोटू तक फुन्सी होयँ और बल मांस अग्नि ये सब नष्ट होजायँ तो वातरक्त असाध्य जानिये और इसको १ वर्षका साध्य कहिये॥

अथ वातरक्तका उपद्रव ॥

नींद आवै नहीं। रुचि जातीरहै। श्वास होय मांस गल जाय मस्तक पीड़ा। मूर्च्छा। तृषा। ज्वर। मोह। हिचकी ये होयँ। शरीरकांपै। अंगुली गलिजायँ। विसर्प होय। फुन्सीपक

जाय। पींड़ाहोय। घुमनी आवै। अंगुलियां टेढ़ी होजायँ। फोड़ा में दाह होय ये इसके उपद्रव हैं॥

अथ बातरक्त का यत्न॥

बातरक्त वालेके जोंक लगायकै अथवा शिंगी लगायकै अथवा पचका करिकै अथवा फस्तकरिकै रुधिर कढ़ाइये परन्तु रुधिर ऐसे अनुमान माफिक कढ़ाइये जहांताई बायु बढ़े नहीं और दिनमें सोना। क्रोध। खेद। मैथुन न करै। कड़ुवी। गरम। भारी। रूखी और खटाई इतनी बस्तु बातरक्त वाला न खाय। पुराना यव। पुराना गेहूं और पुरानाधान इतनी बस्तुखाय अथवा लवा। तीतर। बटेर। अरहर। चना। मूंग। मसूर। कुलत्थ। धनियां। चिरपोटन अथवा मकोय। बथुआ। लूणख्य। अनुनियां। चील व पक्षि विशेषः। बकरीकादूध और घृत इतनी वस्तुका खाना योग्यहै अथवा गूगल १। टं० गिलोयके काढ़े से ले अथवा अरण्डका तेल २॥ टं० गिलोय के काढ़े में डालकर पिये तौ बातरक्त जाय अथवा मंजिष्ठादिक काढ़ेसे बातरक्तजाय सो लिखते हैं। मंजीठ। त्रिफला। कुटकी। खुरासानी बच। दारुहल्दी। गिलोय। नींबकीछाल ये सब बराबरले जवकुटकर २॥ टं० का काढ़ा नित्यले तौ बातरक्त। कोढ़। पामा। फोड़ा इन सब रोगोंको यह दूरकरैहै १ एकमण्डल तक ले इति लघुमंजिष्ठादिक क्वाथः॥

अथवा गिलोय। बावची। पवाड़। नींबकीछाल। और हड़की छाल। हल्दी। अड़ूसा। शतावर। नेत्रबाला अथवा सपेद कटेली। खरैटी। मुलहठी। महुआ। गोखुरू। पटोल अर्थात् परवरकेपत्ते। खस। मंजीठ। रक्तचन्दन ये सब बराबर ले फिर जवकुटकर २॥ टं० काकाढ़ा नित्यले तौ बातरक्त। कोढ़। पामा। दाह इन रोगोंको यह काढ़ा दूरकरै है इति गुडुच्यादि क्वाथः। ये सब भावप्रकाशमें हैं॥

अथवा शोधाभैंसागूगल १सेर हड़कीछाल १ सेर बहेड़ेकी छाल १ सेर आमला १ सेर गिलोय ३२ टकेभर इन सबको जवकुटकर ६४ सेर पानीमें औटावै जब आधापानी रहजाय तब उतारकर छानले फिर कढ़ाईमें औटाके गाढ़ाकरै फिर पारा २॥ टं० बायबिडंग २॥ टं० निसोत २॥ टं० गिलोय २॥ टं० दात्यूणी २॥ टं० पहले पारे और गन्धककी कजलीकरै फिर कजलीमें ये औषध महीनपीस मिलाय उस गूगलमें डाले फिर सबको एक रसकर ४ मासे अथवा ८ मासे मंजिष्ठादिक काढ़ेसे नित्यले तौ बातरक्त। फोड़ा। फुंसी। व्रण। खांसी।गोला। कोढ़। सूजन। उदरकेरोग। पांडुरोग। प्रमेह। मन्दाग्नि इन सब रोगोंको यह दूरकरैहै। और इसकाखानेवाला खेद न करै धूपमें न रहै अग्निकेपासबैठेनहीं खटाईखायनहीं मैथुनकरैनहीं मार्गचलैनहीं नोन और तेलखायनहीं ३इतिकिशोरगुग्गुलः॥

अथवा १सेर भिलावे ऐसेभारीले जो जलमें डूबजायँ उनका मुँह खोरसेघिस १६ सेर पानीमेंडाल औटावे इस औटते पानीमें गिलोय २ सेर जवकुटकरडाले जब इस पानीका चतुर्थांश रहजाय तब इसमें गिलोय २॥ टं० बावची २॥ टं० नींबकी छाल २॥ टं० हड़कीछाल २॥ टं० आमला २॥ टं० हलदी २॥ टं० नागरमोथा ५ टं० तज ५ टं० इलायची ५ टं० सोंठि ५ टं० नागकेसर ५ टं० पित्तपापड़ा ५ टं० पत्रज ५ टं० नेत्रबाला ५ टं० खस ५ टं० सपेदचन्दन ४ टं० गोखुरू ५ टं० कचूर ५ टं० रक्तचन्दन ५ टं० इनको महीनपीसडाले भिलावे समेत एकजीवकर अमृतबानमें रक्खे। फिर इसमेंसे ५ टं०नित्यजलके साथले तौ बातरक्त। कोढ़। बवासीर। विसर्प। पामा। बात और रुधिरके सब विकार इतने रोगोंको यहदूर करैहै। इसका खानेवाला खेद धूपमेंरहना अग्निके पास रहना। न करै। और खटाई मांस न खाय तेल लगावै नहीं। ४ ॥

चलैनहीं इतनी वस्तु न करै ४ इतिअमृतभल्लातका अवलेह॥

अथवा अलसी वा अरंडीको दूधमें पीस हाथ पैरोंमें लेप करै तौ वातरक्त जाय ५ अथवा गौरीसर। राल। मोम। मंजीठ ये सब बराबरले तेलमें पकावै फिर इसका मर्दनकरै तौ वातरक्त जाय ६ अथवा अरण्डकीजड़। गिलोय। अडूसा इनका काढ़ाकर उसमें गूगल ४ मासे अरण्डका तेल २॥ टं० डाल के पिये तौ वातरक्त। मूर्च्छा। मथवाय। श्वास और फोड़ा इन सबको यह दूर करैहै यह वैद्यरहस्यमें लिखा है। अथवा हरतालके चोखे पत्रले उनको साठीके रसमें दो दिन खरल करे फिर उसको गाढ़ा कर टिकडी कर सुखाले फिर साठी के राखके बीचमें उस हरतालकी टिकड़ी को ठीकरेमें धरै फिर उस ठीकरेको चूल्हेपर चढ़ाय ५ दिनरात मधुरी आंचदे फिर स्वांगशीतल होजाय तब काढ़े जो वह हरताल श्वेत निकले और पूरीतोल उतरे तौ इसमेंसे १ रत्ती गुडूच्यादि काढ़के साथले तौ वातरक्त और १८ प्रकारके कोढ़। फिरंगबाय। विसर्प। पामा। फोड़ा इन सबको यह दूरकरैहै। और इसकाखाने वाला। नोन। खटाई। कडुआरस। धूपमें तथा अग्निकेपास बैठना इतनी बातें छोड़दे और सेंधानोन। मीठा रसखाय ८ इतितालकेश्वर रस यह हरतालकीक्रिया भावप्रकाशमें लिखी है। इति वातरक्तकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ शूलरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

वात १ पित्त २ कफ ३ सान्निपात ४ आम ५ वातकफ ६ कफपित्त ७ वातपित्त इन भेदोंसे शूल आठ प्रकारकाहै॥

अथ वातके शूलकी उत्पत्ति लक्षण॥

खेदसे। घोड़े आदिके दौड़ाने से। अति मैथुन करने से। बहुत जागनेसे। जलादिकके अत्यन्त पीनेसे। मटर। मूंग। अरहर। कोदों। और सूखीवस्तु इनके अधिक खानेसे अजी-

णीमें भोजन करनेसे। चोट लगनेसे कसैली तीखी कड़ुवी। भीजाअन्न। विरुद्ध वस्तु। सूखामांस। इनके खानेसे। और मलमूत्र मैथुनके रोकनेसे। अधोवायु और मलके रोकने से। लंघन करनेसे। बहुत हँसनेसे। इतनी वस्तुओंसे वायु बढ़कर हृदय दोनोंपसली मुख। सन्धि इनस्थानों में शूल चलावै। सन्ध्या समय बदली और शीतकालमें बहुत शूल होय बारम्बार थँभजाय और फिर होने लगे। मलमूत्र रुकजाय। शूलचलै। पीड़ाबहुतहोय इतिवायुशूलकी उत्पत्तिलक्षण॥

अथ पित्तके शूलकी उत्पत्ति लक्षण ॥

खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्णवस्तु। गरम वस्तु तिल खल। कुलत्थ। खटाई इनके खाने से क्रोध और खेद और मैथुनके करनेसे मदिरा और आसवके पीनेसे धूपके सेवन से इतनी वस्तुओंसे पित्त कुपित होकर शूलको प्रकटकरै है। तब तृषा। दाह। नाभि में पसीना। मूर्च्छा। भ्रम। क्रोध ये होयँ और मध्याह्न। अर्द्धरात्रि। ग्रीष्मऋतु। शरदऋतु इतने समयमें अधिकशूलहोय तौ जानिये कि पित्तकाशूल है॥

अथ कफके शूलकी उत्पत्ति लक्षण ॥

अनूपदेशके मांसमछली पेड़ाआदि दूधकीवस्तु मैदाकी वस्तु इन वस्तुओं के खानेसे। औ गांडेके चूसनेसे। मधुररसके पीनेसे इतनी वस्तुओं से कफ कोपको प्राप्त होकर शूलको उत्पन्न करैहै हृदयदूखे। वमनसी आवै। खांसी और पीड़ा। भोजनमें अरुचि पेटमें पीड़ा। मथवाय। शरीर भारी। भोजन करते में पीड़ा येसबहोयँ और मलउतरैनहीं और वसन्तऋतुमें प्रभात समय बहुतहोय तबजानिये किकफका शूलहै॥

अथ सन्निपातके शूलका लक्षण॥

जो लक्षण पीछे कहे वह सब मिलें तब सन्निपातकाशूल कहिये॥

अथ आमके शूलका लक्षण ॥

अफरा। और पेटमें गडगुड़ाशब्दहोय। हृदयकटाजाय बमन आवै शरीर भारीहोजाय। लार गिरै। कफकेशूल केसबलक्षण मिलैं तौ आमकी शूलकहिये ॥

अथ वायुकफके शूलका लक्षण ॥

पेडू। हृदय। कण्ठ। दोनोंपसलियोंमें शूलहोय उसको वात कफ का शूल कहिये ॥

अथ कफ पित्तके शूलका लक्षण ॥

कुक्षि। हृदय। नाभि इनमें शूलहोय तौ कफकाशूलजानिये॥

अथ शूलरोगश्डपद्रव ॥

पीडा। तृषा। मूर्च्छा। अफरा। शरीरभारी। अरुचि। कास श्वास ये होयँ तौ शूलका उपद्रव जानिये ॥

अथ शूलका भेदपरिणामशूलहै उसका लक्षण ॥

जितने भेद शूलके हैं उतनेही परिणाम शूलके हैं यही उस की उत्पत्तिहै इसमें इतना विशेषहै कि जो कुपित वातहै वह कफ पित्तसे मिल शूलको करै है ॥

अथ दूसकालक्षण ॥

भोजन पचेकेपीछे शूल उपजै उसको परिणामशूलकहिये ॥

अथ अंगद्रव शूलका लक्षण ॥

भोजनकिया हुआ कभी पचजाय और कभी न पचै ॥

अथ जरत्पित्त शूलका लक्षण॥

जो भोजन पचनेके समयशूलहोय उसको जरत्पित्तशूल कहिये ॥

अथ शूलरोगका यत्न ॥

शूल रोगवालेको वमन करावै और औषधियोंसे पसीना लिवावै पाचनदीजिये वस्तिकर्म कराइये सज्जीखार आदिका चूर्ण और क्व्यादरस दीजिये गरम १ कुलत्थका सेक करिये और रेतको गरमकर पानीडाल उसे सिझाय कपड़ेमें धर पो-

टरी बनाय सेक करावै अथवा काकड़ाशिंगी। कुलत्थ। तिल। जव। अरण्डकीजड़। अलसी। सौंठीकीजड़। लहसनकेबीज इनको कांजीमें गरमकर जहां शूलहोय वहां उसका सेककरावै तो शूल जाय १ अथवा तिलोंको पीस कांजीमें गरमकर थोड़ासा तेलडाल कपड़ेकी पोटरीसे उसका सेककरावै तो तत्काल शूलजाय २ अथवा मेढलको कांजी में पीस नाभिमें लेपकरै तौ शूलजाय ३ अथवा सोंठि। अरण्डकीजड़ इनका काढ़ा दे तौ शूलजाय ४ अथवा सोंठि। और हड़के काढ़ेमें। हींग। कालानोन। डालकर पिये तौ शूलजाय ५ अथवा गुड़कोऔटाय उसमें जवाखार डाल करपिये तौ शूलजाय ६ अथवा कांसा। रूपा। ताम्बा इनकेपात्र में जल भर तिसके ऊपर उस पात्रको फेरे तौ शूलजाय ७ अथवा पित्तका शूलहोय तौ जुलाबसे दूरहोय ८ अथवा गुड़ और हड़की छालको पीस घृतमिलाय खाय तो पित्तका शूलजाय॥

अथ कफके शूलका यत्न॥

आमलेका चूर्ण शहतमें चाटै तौ कफका शूलजाय ९ अथवा नींबकी छालका काढ़ाकर उसमें दारूडाल पिये तौ कफका शूलजाय १० अथवा जवाखार। सेंधानोन। कालानोन। साम्हरनोन। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। भुनीहींग इनको बराबरले चूर्णकर २॥ टं० गरम पानीसे ले तौ कफका शूलजाय ११ जो यत्न कफशूलकेहैं वेही आमशूलके जानलेना॥ अथवा राई और त्रिफला। शहत। घृतसे ले तौ सबशूल दूरहोयँ १२ अथवा दारुहल्दी। चोख अर्थात् सत्यानासीकीजड़। कूट। सौंफ। हींग। सेंधानोन इनसबको कांजी में पीसगरमकर सुहाताले‌पकरै तो शूलजाय १३ अथवा बेलकी जड़। अरण्डकीजड़। चित्रक। सोंठि। भुनीहींग। सेंधानोन इनसब को महीनपीस चूर्णकर २॥ टं० गरमपानीसेले तो शूलदूरहोय १४

अथवा पकेपेठेको टुकड़ेकर धूपमें सुखावै पीछे उन टुकड़ोंको पीतलकेपात्रमेंधर चूल्हेपर चढ़ाय आगलगाय युक्तिसे कोयला करै राखनहोने पावैपीछे इनकोयलोंको पीस उसमें२मासे सोंठि काचूर्णमिलाय जलसेपिये तौ असाध्यभी शूलकारोगजाय १५ इतिकूष्मांडक्षारः॥ ये सबंयत्न भावप्रकाश में लिखेहैं अथवा अजवाइन। सेंधानोन। भुनीहींग। जवाखार। कालानोन। हड़कीछाल ये सब बराबरले महीन चूर्णकर २॥ टं० गरमपानीके साथ ले तौ बायुका शूलजाय १६ अथवा कालानोन १ टं० जीरा ३ टं० कालीमिरच ४ टं० इन्हें महीन पीस अमलबेतके रसकी ७ पुटदे पीछेबिजौरे के रसकी ७ पुटदे फिर इसकी ५ मासे की गोली बांधे प्रतिदिन १ गोली गरमजल से ले तौ वायुकाशूलजाय १७ अथवा सोंठि। हड़कीछाल। पीपल। निसोत। कालानोन येसबबराबर ले इन्हें महीनपीस १। टं० गरम जलसे ले तौ शूल। अफरा। बवासीर। आमबात इनसब रोगों को दूरकरै है १८ इति पंचसमंचूर्णम्॥

अथवा सोंठिके काढ़ेमें अरण्डकातेलडाल कालानोन भुनी हींग इनको मिलायपिये तौतत्काल शूलजाय १९ अथवा शंख काचूर्ण। कालानोन। भुनीहींग। सोंठि। कालीमिरच। पीपल ये सबबराबरले चूर्णकर २॥ टं० गरमजलसे ले तो तत्कालशूल जाय २० अथवा शोधासिंगीमुहरा। चित्रक। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। सपेदजीरा। भुनीहींग ये सबबराबर ले इनको महीनपीस इसमेंभंगरेके रसकी ३ पुटदे पीछे इसकी गोलीचने प्रमाण बांधे १ गोली गरम जलसेले तौ शूलतत्कालजाय २१ अथवा शंखकी भस्म कणगचकीजड़ अथवा कंजाकीजड़। भुनी हींग। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। पांचोनोन ये सब बराबर ले महीन पीस गरम जलके साथ २॥ टं० ले तौ शूलका रोग जाय २२ इतिशूल नाशनंचूर्णम्॥

अथवा चित्रक। भुनीहींग। पाढ़। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। पांचोनोन। सपेदजीरा। धनियाँ। वाड़छल। अजवाइन। पीपलामूल ये सब बराबर ले इन्हें महीनपीस जंभीरी के रस की ५ पुटदे पीछे इसकी गोली बांधे १ गोली प्रतिदिन गरम जलसेले तो शूल। हृदयशूल। पशुलियोंकाशूल। अरुचि और ८० प्रकारकीवायु। आमकाशूल इनसबको तत्काल यहगोली दूरकरै २३ इतिचित्रकादिगुटिका॥

अथवा हड़कीछाल। सोंठि। कालीमिरच। छोटीपीपल। कुचला। शोधीगन्धक। भुनीहींग। सेंधानोन ये सब बराबरले पीछे उन्हें महीनपीस चनेप्रमाण गोलीबांधे १गोली प्रतिदिन गरमजल से ले तो शूल। संग्रहणी। अतीसार। अजीर्ण। मन्दाग्नि इनसबरोगोंको यहदूरकरै है २४ इतिशूलनाशकगुटिका॥

अथवा कूट २॥ टं० सोंठि २॥ टं० कालानोन १। टं० भुनीहींग १। टं० इन्हें महीनपीस सहजनेकी जड़केरसमें अथवा लहसन के रसमें गोली बांधे १ गोली प्रतिदिन खाय तो शूल तत्काल जाय २५ इतिकूटादि गुटिका॥

अथवा त्रिफला। सार। मुलहटी। महुआ इनसबको बराबर ले महीनपीस १। टं० शहतघृतमें चाटै तो त्रिदोषकी शूलजाय २६ अथवा शोधापारा १० टं० शोधासिंगीमुहरा १० टं० काली मिरच १० टं० पीपल २० टं० सोंठि २० टं० भुनीहींग १० टं० पांचोनोन ५ टकेभर अम्लीकाखार ८ टकेभर जंभीरीकारस और शंखको ७बेर दग्धकर पीछे उस शंखका चूर्ण ८ टकेभर ले पीछे सबको इकट्ठाकर नींबूकेरसमें ५दिन खरलकरै पीछे इसको १। टं० गरमजलसे ले तो शूल तत्काल जाय २७ इतिशूल दावानल हीरा कसीस ऽ। लाहौरी फिटकरी ऽ। सेंधानोन ऽ। कलमीसोरा ऽ२ सेर इन्हें पीस टीकली यन्त्र में इनको चुआय चीनीके बासनमें रस काढ़ै पीछे प्रति दिन १ मासे ले और

लेते समय जीभमें घृतलगाले और दांतसे लगने न पावे तौ शूल। क्रिया। उदरकेरोग। बवासीर। अजीर्ण। बायुके रोग इन सबको यह दूरकरैहै २८ इतिशंखद्राव॥

अथवा शोधीगन्धकसे आधा शोधापारा इन दोनोंकेबराबर शोधा कंटकवेधी ताँबे का पत्र इन तीनोंको खरलमें डालकर मर्दन करै एकदिन पीछे इसका गोलाकर हांडीमें नोनभर उसकेबीच इसगोलेको धर पकावे ३ दिन अग्निदे पीछे उसको स्वांग शीतल होनेके पीछे १ रत्ती नागरबेलके पत्तेसे खवावे तो तत्काल शूलमात्र दूरहोयँ २९ इतिशूलगजकेसरीरसः॥

अथवा सपेदजीरा। सोंठि। भुनीहींग। कालीमिरच। खुरासानीबच ये सब बराबरले महीन पीस २॥ टं० गरमजलसे ले तौ शूलजाय ३०॥ अथवा त्रिफला १ टकेभर शोधीगन्धक ५ टं० सार २॥ टं० इनको महीनपीस एकरसकर २॥ टं० शहत और २॥ टं० घृत इन दोनोंके साथ इसको तीनमहीने तक ले तौ शूलमात्र बातके बिकार फोड़ा ये सब दूरहोयँ ३१ इति गन्धकरसायनम्॥

अथवा गुड़ १ टं० आमला १ टं० हड़कीछाल १ टं० मण्डूर १ टं० इन सबको महीनपीस २॥ टं० शहत और घृत केसाथ खाय तौ शूल। अन्नद्रव। जरतपित्त। अम्लपित्त। परिणाम। शूल इनसबको दूर करैहै ३२ इतिगुडाद्यंमण्डूरम्॥

अथवा वायविडंग। चित्रक। चव्य। त्रिफला। सोंठि। कालीमिरच। पीपल ये सब बराबरले और इन सबकी बराबर मंडूर ले और मंडूरहीकी बराबरगुड़ले और सबसे १० गुना गोमूत्र ले फिर इनको कढ़ाईमें भर मधुरी आंचसे पकावै फिर इनका एक पिंडाबनाकर चिकनेबासनमें धर रक्खे फिर २॥ टं० भोजनके पहिले ले तौ शूल। पंक्तिशूल। कामला रोग। पांडुरोग। सूजन। मन्दाग्नि। बवासीर। संग्रहणी। कृमिरोग।

गोला। उदररोग। अम्लपित्त इन सबको यह दूरकरैहै ३३ इतितारामण्डूरः॥ अथवा हड़कीछाल। सुहागा। सोंठि। भुनीहींग। कालीमिरच। चित्रक। शोधीगन्धक। सेंधानोन ये सब बराबरले और इन सबकी बराबर कुचलाले फिरइनसब को महीनपीस एक रसकर १ मासे जलकेसाथ ले तौ शूल। अफरा। बद्धकोष्ठ। गोला। खांसी। कफकेरोग। अजीर्ण। मन्दाग्नि इन सबको यह दूरकरैहै ३४ इतिशूल गजकेसरी गुटिका॥ अथवा कणगचकीजड़ अ० कंजाकीजड़। भुनीहींग। भुनासुहागा। सोंठि ये सब बराबरले महीन पीस २॥ टं० गरमपानीसे ले तौ महाशूलदूरहोय ये सबयत्न वैद्यरहस्य में लिखेहैं ३५ अथवा निसोत। बायबिडंग। सहजनेकी फली। कबीला। हड़कीछाल ये सब बराबरले महीन पीस घोड़े के मूत्र में पकावै फिर २॥ टं० मदिराके साथले तौ वायुका शूल जाय॥ यह चक्रदत्तमें है ३६ अथवा भुनीहींग। अमलबेत। पीपल। कालानोन। अजवाइन। जवाखार। हड़कीछाल। सेंधानोन ये सब बराबरले महीनपीस २॥ टं० मदिरा के साथ ले तौ वातका शूलजाय ३७ अथवा कालानोन। अमलबेत। सपेदजीरा ये सबएकएकसे दूनाले महीनपीस बिजौरेके रस में गोली बांधे फिर एकगोली गरमजलसेलेतौ शूलजाय३८ इतिसौवर्चलादि गुटिका॥ अथवा बिजौरेकीजड़ २॥ टं० महीन पीसघृतसे पिवै तौवातकाशूल दूरहोय ३९ इतिबीजपूरादि योगः॥ यहयत्न सर्व्वसंग्रहमेंहै अथवा भुनीहींग। अमलबेत। सोंठि। कालीमिरच। बड़ीपीपल। अजवाइन। कालानोन। सेंधानोन ये सबबराबरले महीनपीस बिजौरेकेरसमें गोलीबांधेफिर १गोली गरमपानीमेलेतौ शूलजाय ४० इतिहिंग्वादिगुटिका॥

अथवा सोंठि। कालीमिरच। बड़ीपीपल। कालानोन इनको बराबरले महीनपीस बिजौरेकेरसकी तीन पुट देकेसुखाले फिर

२॥टं० शहतमें चाटै तौ त्रिदोषका शूलजाय ४१ अथवाशंखकी भस्म । कालानोन । भुनीहींग । सोंठि । कालीमिरच । बड़ीपीपल येसब बराबरले महीनपीस २॥टं० गरमजलसे ले तौ शूलजाय ४२ अथवा हल्दी । सहजनकीछाल । सेंधानोन । अरएडकी जड़ । भैंसागूगल । सरसों । मेथीकेदाने । सौंफ । असगंध । महुआ इनसबको बराबरले महीनपीस कांजीके पानीमें रोटी कर उसको पकाके पेटके ऊपर उसका सेंककरै तौ पेटका शूल जाय ४३ अथवा कौड़ीकीराख । शोधा सिंगीमुहरा । सेंधानोन । सोंठि । कालीमिरच । पीपल येसब बराबरले महीनपीसनागरबेलके रसमें १ रत्तीप्रमाण गोली बांधे फिर एकगोली नित्य खाय तौ शूलजाय ४४ इतिशूल गजकेसरी रसः ॥

अथवाशुद्धपारा।शोधीगन्धक।अभ्रक।तामेश्वर।अमलबेत। शोधासिंगीमुहरा ये सब बराबरले महीनपीस अदरखके रस में ३ रत्ती प्रमाणकी गोलीबांधे १ गोलीजलसे ले तौ बातका शूलजाय४५इत्यग्निमुखरसः॥ अथवाबड़ेशंखको २१बारगरम कर नींबूकेरसमें बुझावै फिर उसका चूर्णकरै फिर इसमें इमली का खार १ टकेभर और कचनोन १टं० बिड़नोन १टं० सोंठि६ मा० कालीमिरच ६ मा० पीपल ६ मा० भुनीहींग १ टं० शोधा सिंगीमुहरा ५ टं० शोधीगन्धक १ टं० पारा १ टं० इनसबको महीनपीसे फिरपारे और गन्धककी कजलीकरै उसमें ये औषधि मिलाके एकरसकर छोटबेरके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली लवंग के काढ़ेके साथले तौ शूल तत्काल दूरहोय ४६ इतिशंखवटीरसः ॥

अथवा सीपकीभस्म २॥टं० गरम जलके साथपिये तौ भोजनके पीछेशूल होताहुआ बन्दहोजाय ४७ अथवा शोधापारा १टकेभर शोधीगंधक १ टं० शोधा सिंगीमुहरा १टं० कालीमिरच १टं० बड़ीपीपल १टं० काकड़ाशिंगी १टं० भुनीहींग २ टं०

पांचोनोन ८ टं० इमलीकाखार ८ टं० जंभीरीके रसमें बुझाई हुई शंखकी भस्म ८ टं० प्रथमपारे और गंधककी कजलीकरै पछैउस कजलीमें ये सब औषधि मिलाय नींबूके रसमें एकरस कर १ टं० प्रमाणकी गोलीबांधे १ गोलीजलसे ले तौ शूल। अजीर्ण। उदरकेरोग। मन्दाग्नि इनसबको दूरकरै—इति शूल दावानल रसः येसब यत्न सर्व्वसंग्रहमें लिखे हैं॥

अथ पसलीके शूलका यत्न॥

सिंगीमुहरा। हरताल। हींग। राई। नौसादर। मैनसिल। लहसन। खुरासानीबच। एलुआ इनको बराबरले महीनपीस गरम जलसे गरम २ सुहाता लेप करैतौ कुक्षि शूल जाय॥ इतिआठ प्रकारके शूल। परिणाम। शूल अन्नद्रव। बातरक्त। जरत्पित्त। शूलका यत्न सम्पूर्ण॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंह जीबिरचिते अमृतसागरनामग्रन्थे बात। रक्तशूल। परिणाम अन्नद्रव। जरत्पित्तकी उत्पत्तिलक्षणयत्न निरूपणंनामदशम स्तरंगः १०॥

अथ उदावर्त्त रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जो मनुष्य १३ वेगोंको धारणकरै उसके उदावर्त्तका रोग उत्पन्नहोयहै वह १३ वेग लिखतेहैं अधोवायु १ मल २ मूत्र३ जम्भाई ४ अश्रुपात ५ छींक ६ डकार ७ बमन ८ मैथुन ९ क्षुधा १० तृषा ११ श्वास १२ निद्रा १३ इन वेगोंको जो मनुष्यरोकै उसके उदावर्त्त रोगउत्पन्न होय॥

अथ अनुक्रमसे अधोवायु आदि ले १३ वेगोंका लक्षण॥

अधोवायुके रोकनेसे जोरोग उत्पन्नहोयँ सो लिखतेहैं अधोवायुको जो रोकताहै उसकेमल मूत्र रोकनेके रोग। अफरा। उदर में अधिक बातके रोग ये लक्षण होयँ तौ अधोवायु के रोकनेका उदावर्त्त जानिये १॥

अथ मलरोकनेके उदावर्त्तका लक्षण॥

पेटमें गुड़गुड़ा शब्द रहै। शूलहोय। पेड़में पीड़ाहोय। मल उतरै नहीं। डकार बहुत आवै। मल मुखमें निकल आवै ये लक्षणहोयँ तौ मल रोकनेका उदावर्त्त जानिये २॥

अथ मूत्ररोकनेके उदावर्त्त का लक्षण॥

पेडू और इन्द्रियमें शूलहोय। मूत्र कष्टसे उतरै। मस्तकमें पीड़ाहोय पीड़ासे शरीर सीधाहोय नहीं। पेडूमें अफरा होय तौ मूत्ररोकनेका उदावर्त्त जानिये ३॥

अथ जंभाई रोकनेके उदावर्त्त का लक्षण॥

जिससे कन्धा। गला। रुकजाय। मस्तकके विकार होयँ जम्भाई बहुत आवै। वायुके विकारहोयँ। नेत्र। नासिका। कान इनमें पीड़ा बहुतहोय ये लक्षणहोयँ तो जंभाई रोकने का उदावर्त्त रोग जानिये ४॥

अथ अश्रुपात रोकनेके उदावर्त्तका लक्षण॥

आनन्द अथवा शोकके अश्रुपातोंको रोकै तौ उसकामाथा भारीरहै। नेत्रके रोगहोयँ। पीनसहोय ५॥

अथ छींक रोकनेके उदावर्त्त का लक्षण॥

कन्धा मुड़ैनहीं। माथेमें शूलहोय। आधाशीशी होय। सब इन्द्रियां दुर्वल होजायँ ६॥

अथ डकार रोकने के उदावर्त्तका लक्षण॥

कंठ और मुख भोजनसे भरादीखे। अधिकमोह। शरीरमें व्यथा। और वायुके बहुत विकारहोयँ पवननिकलैनहीं ७॥

अथ छर्दि रोकनेके उदावर्त्तका लक्षण॥

शरीर में खुजली और चकत्ते पड़जायँ। अरुचिहोय। मुख ऊपर झांईपड़जायँ। सूजन। पांडुरोग। ज्वर। कोढ़होय। हृदयदूखे। विसर्परोगहोय ८॥ अथ शुक्र रोकनेके उदावर्त्तका लक्षण॥

पेडू। गुदा। पोते। इन्द्रिय इनमें पीड़ा और सूजनहोय मूत्र

रुकजाय वीर्य्य और रुधिर इन्द्रियमेंसे गिरनेलगै । पथरीका आजार होय नेत्रका विकार होय ९ ॥

अथ क्षुधा रोंकनेके उदावर्त्तका लक्षण ॥

तन्द्रा। हाड़ों में फूटन । अरुचि । विना श्रमके श्रम होय शरीर क्षीण पड़जाय दृष्टिमन्द होजाय १० ॥

अथ तृषारोंकनेके उदावर्त्तका लक्षण ॥

कंठ मुखसूखे। थोड़ा सुनै । हृदयमें पीड़ा होय ११ ॥

अथ श्वास रोंकनेके उदावर्त्तका लक्षण ॥

दौड़नेमें श्वास होआवै उसको रोंकै जिसके यह लक्षणहोय उसकाहृदयदूखे। मोह बहुतहोय। पेटमें गोलेकारोगहोय १२॥

अथ निद्रा रोंकनेके उदावर्त्तका लक्षण ॥

जंभाई बहुतआवैं। अंगमें हड़फूटन होय। नेत्र और माथा भारी रहै। तन्द्रा होय १३ ॥

अथ उदावर्त्तकी उत्पत्ति ॥

कोष्ठमें रहती जो वायु वह रूखे कषैले कडुये भोजनसे कुपितहो उदावर्त्त रोगको करै है ॥

अथ उदावर्त्तका सामान्य लक्षण ॥

जहां वायुका ऊर्ध्व भ्रम होजाय उसको उदावर्त्त कहिये ॥

अथ उदावर्त्तका विशेष लक्षण ॥

कफ और मेदाको लेचलनेवाली जो नसें वे अधोवायु और मलमूत्र को ऊँचा लेजाकर मलको सुखादे हैं और हृदय और पेडूमें शूल चलावैं शरीर भारीरहै । अरुचिहोय । अधोवायु और मलमूत्र अत्यन्त कष्टसे उतरै । श्वास । खांसी । पीनस । दाह । मोह । तृषा । ज्वर । वमन । हिचकी । मस्तकका रोग । हौलदिली । थोड़ासुनै । और वातके बहुतसेरोग होजायँ। और तृषा करके पीड़ितहो । शरीर क्षीणपड़जाय । शूलबहुत चलै मलको वमनकरै ऐसा उदावर्त्त वाला मरजाय ॥

अथ क्रमकरके उदावर्त्तका यत्न ॥

अधोवायुके रोंकनेसे उपजा जो उदावर्त्त उसको स्नेहपान करावै तौ उदावर्त्त जाय १ अथवा इन औषधियों से पसीना लिवावै अथवा बमन करावै तौ उदावर्त्त जाय २ ॥

अथ मल रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

इनको जुलाबदे और शूलके दूरकरनेवाली औषधिदे और ऐसाही अन्नदे तेलका मर्दनकरै वस्तिकर्म कराइये ३ ॥

अथ मूत्ररोंकने के उदावर्त्तका यत्न ॥

जवाखार १। टं० खुरासानी बच १। टं० इनको पानी में महीनपीस पिलावै तौ यह उदावर्त्त जाय ४ अथवा कटेली और अर्जुनवृक्षकीजड़का काढ़ाले तौ मूत्ररोंकनेका उदावर्त्त जाय ५ अथवा तिवरसीका बीज पानीमेंपीस सेंधानोन डालकर पिये तौ मूत्ररोंकने का उदावर्त्त जाय ६ अथवा मिश्री ऊँखकारस। दूध। दाख अ० किसमिस इनका शर्बतपिये तौ मूत्ररोंकने का उदावर्त्त। मूत्रकृच्छ्र। पथरीका रोग ये सबजायँ ७॥

अथ जम्भाईरोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

स्नेहकेपीने । अथवा मर्दन करने । अथवा पसीना लेने से यह रोग और अन्यभी बातके रोगजायँ ८ ॥

अथ अश्रुपात के रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

ऊँचे प्रकारसे रुदनकर अश्रुपातडालै तौ यह रोगजाय ९ अथवा सुखपूर्वक अच्छे प्रकारसे सोवै तौ यह रोगजाय १० अथवा मनोहर कथाको सुनै तौ यह रोग जाय ११ ॥

अथ छींक रोंकनेके उदावर्त्तका यत्न ॥

कालीमिरच । राई । नकछिकनी आदिका नासले अथवा सूर्य्यको देखकर छींक ले तौ उदावर्त्त जाय १२ अथवा तेल मर्दन करावै अथवा पसीना लिवावै तौ यह रोगजाय १३ ॥

अथ डकारके रोकनेके उदावर्त्त का यत्न ॥

तेलके मर्दन और प्रस्वेदसे यह रोग जाय १४ ॥

अथ छर्दि रोकने के उदावर्त्तका यत्न ॥

इस रोगवाले को बमन और लंघन करावै। और जुलाब दीजे। तेलका मर्दन करावे। वस्तिकर्म करावे नास सुँघावे तो यह रोग जाय १५ ॥

अथ शुक्र रोकनेसे उपजा जो उदावर्त्तरोग उसकायत्न ॥

सुन्दर १६ बर्षकी स्त्रीसे संभोगकरावै तो यह रोग जाय १६ अथवा तेलको लगावे या मदिरा पिलावे या कूकरी अर्थात् कुतिया का मांसखिलावे। अथवा सांठीके चावल खिलावे या वस्तिकर्म्म करावे तो यह रोग जाय १७ ॥

अथ क्षुधारोकनेके उदावर्त्त का यत्न ॥

चिकना। गर्म। हलका। रुचिकारी। हित भोजन करावे और सुगन्धपुष्पोंकी माला धारणकरावै तो यह रोग जाय १८ ॥

अथ तृषारोकनेके उदावर्त्तका यत्न ॥

शीतलक्रिया सर्व्वहितकारी चादर फुहाराआदि जलक्रीड़ा करावै और शीतल जलमें भीमसेनी कपूर डाल उसको शनैः२ पान करे तो यह रोग जाय १९ ॥

अथ श्रमश्वासरोकनेके उदावर्त्त का यत्न ॥

विश्रामकर उसकाखेद दूरकरै अथवा शोरुएके साथ चावल खिलावे तो यहरोगजाय २० ॥

अथ निद्रारोकनेके उदावर्त्तका यत्न ॥

गर्म दूधमें मिश्रीडाल सुहाता २ रुचिपूर्व्वक पिये अथवा सुखसे सोवे। अथवा मनोहर कथासुने तो यहरोगजाय २१ ॥

अथ रूखीवस्तुआदि खानेसे उत्पन्न उदावर्त्तका यत्न ॥

हींग। शहत। सेंधानोन। इनको महीनपीस वत्तीकर घृतसे चुपड़ जबतक सुहाय तबतक गुदामें धरै तो यह उदा-

वर्त्त जाय २२ इति--हिंग्वादि फलवर्तिः ॥ अथवा मैनफल। पीपल। कूट। खुरासानीबच। सरसों। गुड़। इनको दूधमेंपीस इनकी बत्तीकर गुदामें सुहाती हुई रक्खे तौ उदावर्त्तजाय २३ इति मदनफलादिफलवर्तिः ॥

अथवा खांड़ १। टंक निसोत २॥ टंक पीपल ५ टंकइनका चूर्ण कर भोजनके पहिले २ टंक शहतके साथ ले तौ गाढ़ा दुहरा मल उतरताहोय वह बन्द होय और उदावर्त्तजाय २४ इति नारायणचूर्ण ॥

अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। पीपलामूल। निसोत दात्यूणी। चित्रक। इन सबको बराबरले महीनपीस १ टंक गुड़के साथ प्रभातही जलसेले तौ उदावर्त्त। फिया। गोला। सूजन। पांडुरोग। ये दूरहोयँ २५--इति गुड़ाष्टकम् ॥ अथवा सूखीमूली। सांठीकीजड़। छोटीपीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। दशमूल। किरमालाकीगिरी इन ओषधियोंको घृत में पकाय फिर इस घृतको खाय तौ सब प्रकार के उदावर्त्त जायँ २६--इतिशुष्कमूलकाद्यंघृतम् ॥ येसबयत्न भावप्रकाशमेंहैं ॥ अथ शोधा जमालगोटा। पारा। शोधीगन्धक। भुनासुहागा। सोंठि। मिरच। बड़ीपीपल। ये सब बराबरले प्रथमपारे और गन्धककी कजलीकरे फिर येसबओषधि कजलीमें मिलाय ४ रत्ती अथवा १ माशे मिश्रीकेसाथ ले तौ उदावर्त्त। अफरा। उदरके रोग गोला इनसबको दूरकरैहै २७--इति नाराचरसः ॥ यहवैद्य रहस्यमें है ॥

अथवा निसोत। थूहरके पात तिलको आदिले गर्मवस्तुके सेवनसे उदावर्त्तजाय २८ अथवा निसोत। दात्यूणी। तज। थूहर। शंखाहूली। किरमाला। कवीला। कणगच्च अ० कंजाकीजड़। चोख इनसबको बराबरले जवकुटकर १ टंकका काढ़ा करे उसमें २॥ टंक तेलडाल नित्य ७ दिनतक पिये तौ उदा-

वर्त्त। उदररोग। अफरा। विषरोग। गोला इनको यह दूर करै—इतिउदावर्त्त रोगकी उत्पत्ति लक्षणयत्न॥

अथ आनाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

उदरमें आमके या मलके बढ़नेसे अथवा अधोवायुके रोकनेसे अथवा शरीरमें दुष्टपवन के बढ़नेसे मनुष्योंके उदरमें आनाह नाम अफरा रोग होताहै उसमें तृषा। पीनस। शिरके सम्पूर्ण विकार। उदरशूल होयँ शरीर भारी रहै हृदय दूखे डकार न आवे ये लक्षण होयँ तौ आमका अफराकहिये १॥

अथ मलबढ़ने के अफराका लक्षण॥

शरीर जकड़जाय और दिशाके समय कटि और पीठ में पीड़ाहोय मूर्च्छा होय मलकीछर्द्दि करै। श्वास और विशूचिका होय। और पीछे कहेहुये लक्षणभी होयँ तौ मल बढ़नेका अफरा जानिये॥

अथ अफरेका यत्न॥

जो उदावर्त्तका यत्न पीछे लिखाहै वही अफरेकाभी जानना परन्तु कुछ विशेष है सोलिखते हैं निसोत २ भाग पीपल ४ भाग बड़ी हड़की छाल ५ भाग इनको महीनपीस इन सबकी बराबर गुड़मिलाय १ टंक प्रमाण गोलीकर पीछे १ गोली नित्य जलके साथ १५ दिनतक ले तौ अफरेका रोगजाय १ अथवा सोंठि कालीमिरच। बड़ीपीपल। सैंधानोन। सरसों। धमासा। कूट। मेढ़ल ये सब बराबरले महीनपीस गुड़में मिलाय पकावै फिर उसकी अंगूठेबराबर मोटीबत्तीकर उसमेंघृतलगाय गुदामेंधरै तौ अफरा। उदावर्त्त। उदररोग। पेडूका रोग। गोलेकारोगदूर होय ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं॥ इति आनाहनाम अफरा रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ गुल्म रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

मिथ्याआहार और मिथ्याविहारके कुपथ्य से वात पित्त कफ

दुष्टहोकर पुरुष अथवा स्त्रीके पेटसे ले पेडूतक गोलेके सदृश एक गांठको उत्पन्नकरैहैं वह गोलावात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ इनभेदोंसे ५ प्रकारकाहै कोष्ठकेविषे जिसस्थानमें गुल्म होताहै वह स्थान लिखतेहैं दोनोंपसलीमें हृदयमें नाभिमें पेडूमें ॥

अथ गुल्म का सामान्य लक्षण ॥

हृदय और पेडूकेबीचमें गांठहोय और फिरै अथवा न फिरै गोलहोय और बढ़तीजाय उसको गुल्मकहतेहैं इसरोगमें अरुचि होय । मलमूत्र दुहराउतरै । वायुबढै और आंत बोलै । अफरा होय । पवन की ऊर्ध्वगति होय जिसमें ये लक्षण होयँ उसको गुल्मरोग कहते हैं ॥ अथ वायुगोले की उत्पत्ति लक्षण ॥

रूखेअन्नके खानेसे । विषमाशनसे । मूत्ररोकनेसे । शोचकरनेसे । चोटलगनेसे । मलके क्षीणपने से । लंघनकरनेसे । विरुद्ध चेष्टासे वलवान्‌केसाथ युद्धकरनेसे बायुगोला उत्पन्नहोताहै ॥

अथ वायुके गुल्मका लक्षण ॥

जो गोलेके स्थानमें पीड़ाघटै बढ़े और अधोवायुकी प्रवृत्ति अच्छीतरह से होय नहीं मल उतरै नहीं मुख और गला सूखे शरीरकीकांतिकालीहोजायशीतज्वरहोय । हृदय । कुक्षि । पसली । शिर इनसबमें पीड़ाहोय और हृदयमें भोजन पचेके पीछे पीड़ा अधिकहोय और भोजनकरनेकेपीछे थोड़ीहोय और रूखेकषैले कडुएरससे पीड़ावढे ये लक्षणहोयँ उसकोवातकागुल्मकहिये ॥

अथ पित्तके गोलेकी उत्पत्ति ॥

कडुआ । तीखा । खट्टा । गर्म इन रसों के सेवनसे क्रोधके करने और मद्यकेपीनेसे अग्नि और धूपकेसेवनसे आमकेवढ़ने से चोटके लगनेसे रुधिरके विगड़ने से इनवस्तुओंसे पित्तका कोपहोता है ॥ अथ पित्तके गोलेका लक्षण ॥

ज्वर । तृषा । शरीरमेंपीड़ा । शूल । दाह । व्रण । गोलेमेंहाथके लगनेसे अधिकपीड़ा और भोजनके पचनेके समय बहुत

प्रस्वेद होय ये लक्षण होयँ तौ पित्त का गोला जानिये ॥

अथ कफके गोलेकी उत्पत्ति ॥

ठंढी। भारी। चिकनी इनबस्तुओंके खानेसे और बैठेरहने वा दिनमेंसोनेसे इनबस्तुओंसे कफकागोला उत्पन्नहोयहै और ये सबकारण मिलैंतौ सन्निपात उत्पन्न होता है ॥

अथ कफके गोलेका लक्षण ॥

जिसमें शीतज्वर वा शरीरमें पीड़ा होय कडुआ, खट्टा, वमन। खांसी। भोजनमें अरुचि ये लक्षणहोयँ तौ कफका गोलाजानिये ॥ अथ स्त्रीधर्म्मरूप जो रुधिर उससे उत्पन्न जो गुल्म उसका लक्षण ॥

यह रुधिरका गुल्म स्त्रीका कच्चागर्भ गिरपड़ै कुपथ्यभोजन से प्रथम गर्भके ऋतुसमय अथवा ऋतुविना भी उसस्त्रीकेवायु रुधिरको ग्रहणकर गोलेको उत्पन्न करैहै उसगोलेमें अतिपीड़ा और दाहहोय और पित्तके गोलेके सम्पूर्ण लक्षणमिलैं और वह अंग बिनाही सबपेटमें फिरै और शूलहोय और गोलेमें गर्भके संपूर्ण लक्षणमिलैं उसको रुधिरसे उपजा गोला जानिये परंतु उसस्त्रीका दशवां महीना व्यतीत होचुकै तब वैद्य उस गोले का उपाय करै ॥ अथ गुल्मरोगका असाध्य लक्षण ॥

जिस मनुष्यका गोला फिरै अथवा न फिरै और पीड़ाअधिक व शरीरमें दाह होय पथरी कीसी गांठ ऊंची होय वह गांठ मलको बिगाड़ शरीरको दुर्बलकर अग्निके बलको नष्ट करदे उस गोलेको त्रिदोषका जानिये यह असाध्य है १ ॥

अथ गोलेका असाध्य लक्षण ॥

गोला क्रमसे बढ़ै। शूलचलै। कछुएके समान कठोर होय। शरीर दुर्ब्बल होजाय। भोजनमें रुचिजातीरहै। कडुआ। खट्टा वमन करै। ज्वर। तृषा। तन्द्रा। पीनस। अतीसार। हृदय। नाभि और हाथ पैरोंमें सूजन होय इस गोलेवाले मनुष्यको असाध्य जानिये २ ॥

अथ गोलेका यत्न ॥

गर्मदूधमें अरण्ड का तेल और हड़का चूर्णडाल नित्यपिये तौ जुलाव लगकर गोलाजाय १ अथवा तेलके मर्द्दनसे गोला जाय २अथवा सज्जी। कूट। जवाखार। केवड़ेकाखार इनकाचूर्ण करइनमें अरण्डकातेल मिलायपिये तौ वातका गोलाजाय ३ ॥

अथ पित्तके गोलेका यत्न ॥

निसोतके चूर्णका सेवनकरावै। या त्रिफलेका सेवनकरावै ४ अथवा केलेको मिश्रीके साथ। अथवा शहतके साथदे तौ पित्त का गोला जाय ५ ॥ अथ वातके गोलेका यत्न ॥

यही कफकाभी जानलेना। अथवा भुनीहींग। पीपलामूल। धनियां। सपेदजीरा। खुरासानी। बच। चव्य। चित्रक। पाढ़। कचूर। अमलवेत। कालानोन। साम्हरनोन। सैंधानोन। जवा-खार। सज्जी। अनारदाना। हड़कीछाल। पुष्करमूल अ० पुहकर-मूल। डांसरा अ० तन्तरीक। झाऊकीजड़ ये सब बराबर ले महीन पीस इसमें अदरखके रसकी ७ पुटदे फिर विजौरे के रसकी ७ पुटदे फिर २॥ टंक नित्यले तौ गोला। अफरा। बवासीर। उदावर्त्त। उदररोग इन सबको यह दूरकरै है ६ इति हिंग्वादि चूर्णम् ॥

अथवा सज्जी ४ माशे गुड़ ४ माशे इनको मिलाय नित्य खाय तौ गोलाजाय ७ अथवा पलाशकाखार। थूहरका खार। आंधीझाड़े का खार। अमलीकाखार। आककाखार। तिलका खार। जवाखार। सज्जी इनको महीन पीस १। टंक अथवा २॥ टंक प्रमाण गर्मजलके साथले तौ गोला और शूलके रोग को दूरकरै है ८ इति क्षाराष्टकम् ॥

अथवा साम्हरनोन। कचनोन। जवाखार। कालानोन। सु-हागा। सज्जी ये सब बराबरले महीन पीस इनको थूहरके दूधमें १ दिन भिजोय रक्खे फिर धूपमें सुखावै फिर तीनदिन

आकके दूधमें भिजोवै फिर धूपमें सुखावै फिर आकके पत्तोंमें लपेट मट्टीके बासनमें धर गजपुटमें पकाले फिर सोंठि। काली मिरच। पीपल बड़ी। त्रिफला। अजवाइन। सपेदजीरा। चित्रक इनको उन खारों की बराबरले महीनपीस उनमें मिलाके फिर इसको २ टंक प्रमाण गर्मजलसे ले तौ गोला। अजीर्ण। सूजन। उदरके सब रोग। मन्दाग्नि। उदावर्त्त। फिया इन सबको दूरकरै है ९ इति वज्रक्षार चूर्णम्॥

अथवा ग्वांरके पट्ठेका गूदाले उसमें सोंठि। कालीमिरच। बड़ीपीपल। सेंधानोन इनको महीनपीस मिलाय २॥टंक प्रमाण घृतके साथ नित्यखाय तौ गोला फिया सब दूरहोयँ१० अथवा ग्वांरकेपट्ठेके १ एकमन गूदेमें २००टकेभर गुड़ डालै और सोंठि २॥ट०मिरच २॥ट० छोटीपीपल २॥ट० तज२॥ट० पत्रज २॥ट०चव्य २॥ट०इलायची २।ट०कचूर २ट०त्रिफला २।ट०चित्रक २।ट० नागकेसर २।ट०झाऊकीजड़ २।ट० अजमोद२।ट० सपेदजीरा२।ट०देवदारु२।ट० बेरका छिलका२।ट० असगन्ध २।ट० रास्ना २।ट० विधारा २।ट० इन्द्रयव २।ट० इनको महीनपीस ग्वांरके पट्ठेके रसमें डालै फिर इनको एक रसकर चिकने बासनमें भर २१ दिन पृथ्वीमें गाड़ फिर निकालकर २ टकेभर खाय तौ गोला। उदावर्त्त। उदरके विकार। विशूचिका। गृध्रसी। श्वास। खांसी। पाण्डुरोग। वात के सब विकार इनको यह दूरकरै है ११ इति ग्वांरके पट्ठे का आसव ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं॥

अथवा शोरा १ टंक अदरख १ ट० इनको नित्यखाय तौ गोलाजाय १२ अथवा सीपकी भस्म १ ट० गुड़ ४ माशे नित्य खाय तौ गोला जाय १३ इति सीप प्रयोगः॥

अथवा ल्हसुन २।टकेभर दूधमें खीरकरके नित्यखाय तौ गोलाजाय १४ अथवा अरण्डकीजड़। चित्रक। सोंठि। पीप-

लामूल। बायबिडंग। सेंधानोन। भुनीहींग इनका काढ़ादे तौ गोला। अफरा। शूल जाय १५॥

अथवा अजवाइन १६ मा० सपेदजीरा ५ टं० धनियां ५ टं० कालीमिरच ५ टं० कुड़ाकीछाल ५ टं० अजमोद ५ टं० कालाजीरा ५ टं० भुनीहींग ६ टं० जवाखार ८ टं० सज्जी ८ टं० पांचोनोन ८ टं निसोत ८ टं० दात्यूणी (अ० दतुइनि) १० टं० कचूर १० टं० पुष्करमूल अ० पुहकरमूल १० टं० बायबिडंग १० टं० अनारदाना १० टं० हड़कीछाल १० टं० चित्रक १० टं० अमलवेत १० टं० सोंठि १० टं० इन सबको महीनपीस बिजौरेके रसकी १० पुटदे फिर १ टं० प्रमाणकी गोलीबांधे १ गोली घृतकेसाथ अथवा दूधकेसाथ नित्यखाय तौ पित्तके गोलेको दूरकरै और मद्यके साथले तौ वायुकेगोले को दूरकरै और हृदयके रोग संग्रहणी। शूल। कास। बवासीर इतने रोगोंको यहगोली दूरकरै है १६-इति कांकायन गुटिका॥

अथवा लवण भास्कर चूर्ण जो पीछे लिखा है उसके खाने से गोलेका रोगजाय अथवा छोटीपीपल +। भारंगी। पीपलामूल। देवदारु। कणगच अ० कंजाकीजड़। तिल इनकाकाढ़ा ले तौ गोलेकारोगजाय १७ अथवा तिलोंकाकाढ़ाले तौ गोला जाय १८ अथवा भारंगी। गुड़। घृत। बड़ीपीपल। तिल। सोंठि। मिरच इनका काढ़ाले तौ गोलेका रोगजाय १९ इति कणादि क्वाथः अथवा मैनसिल। हरताल। सोनामक्खी। आमलासार। गन्धक। तामेश्वर। पारा ये सब बराबरले पहिले पारे और गन्धककी कजली करै फिरउस कजलीमें ये सब औषधि डाले फिर पीपलके काढ़ेके रसमें १ दिन खरलकरै फिर थूहरके दूधमें १ दिन खरलकरै फिर एकटंक प्रमाण शहतमें अथवा गो-

+ जिन औषधियोंका प्रमाण चूर्ण या काढ़ा विषय में नहीं लिखा है वहांपर सम्पूर्ण औषधियोंको समभाग लेना॥

मूत्रमें ले तौ गोला और शूलकारोगजाय २० इतिविद्याधररसः॥

अथवा पारा। शोधीगन्धक। भुनासुहागा। त्रिफला। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। शोधाहरताल। शोधासिंगीमुहरा। तामेश्वर। शोधा जमालगोटा ये सब बराबरले पहिले पारे और गन्धककी कजली करै फिर उस कजली में यह औषधि पीस मिलावै फिर इसमें भँगरेके रसकी ३ पुटदे और तीनदिनतक खरल करै फिर इसकी १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली अदरखके रसमें ले तौ गोलाजाय २१ इति गुल्मकुठाररसः॥ ये सब यत्नवैद्यरहस्य में लिखे हैं॥

अथवा हाथ में फस्तादि लिवावै तौ गोले के सर्व रोग जायँ २२ अथवा भुनीहींग। अनारदाना। बिड़नोन ये सब बराबर ले बिजौरे के रसमें खरल करै फिर २॥ टंक मद्यके साथ नित्यले तौ वायुगोला जाय २३॥

अथवा सज्जी। कूट। जवाखार ये सब बराबरले महीन पीस २॥ टंक तेलके साथ पिये तौ गोलाजाय २४॥

अथ योनिमें शूलहोताहो उसका यत्न॥

त्रिफला। निसोत। दात्यूणी (अ० दतुइनि) दशमूल ये सब पृथक् २ टकेभर ले फिर इनको जवकुट कर ५ टंक का कांढा कर छान उसमें अरण्डकातेल डाल घृत मिलाय दूधसे पिये तौ योनि का शूलजाय २५ इति मिश्रकस्नेह॥ यह योगतरंगिणीमें लिखा है॥

अथवा १ टंक अजवाइनको महीन पीस ५ टंक गुड़में मिलाय मट्ठेके साथ नित्यले तौ गोला जाय। क्षुधा लगै। मलमूत्र उतरै २६ यह वृन्द में लिखा है॥ अथवा अजवाइन। भुनी हींग। सेंधानोन। जवाखार। कालानोन। हड़की छाले ये सब बराबर ले महीनपीस २॥ टं० वारुके साथ नित्य ले तौ गोला शूलजाय २७ अथवा भुनीहींग १ भा० सेंधानोन २ भा०

पीपलामूल ४ भा० कंकोलमिरच ५ भा० अजवाइन ६ भा० हड़कीछाल ७ भा० अनारदाना ८ भा० आमकीजड़का छिलका ९ भा० चित्रक १० भा० सोंठि ११ भा० फिटकरी १२ भा० इनसबको महीनपीस २॥टं० नित्य पानीसेले तो गोला। अरुचि। हृद्रोग। अफरा। बवासीर। बातके सब विकार इनको यह दूरकरै है २८ इतिहिंगुद्वादशकंचूर्णम् ॥

अथवा खुरासानीवच। हड़कीछाल। भुनीहींग। सैंधानोन। अमलवेत। जवाखार। अजवाइन इनको बराबरले महीनपीस २॥ टं० गरम पानीसे लेतौ शूल और गोला दूरहोय २९इति वचाद्यंचूर्णम् ॥

अथवा २५ बड़ी हड़ोंको १६ सेर जलमें पकावै और जलहीमें दात्यूणी १६ टकेभर चित्रक इनको डाल मधुरी आंचसे पकावै जब जलका चतुर्थांश रह जाय फिर उसमें हड़ों समेत १६ टकेभर गुड़डाल फिर औटावै जब आधारहजाय तब इसमें वड़ीपीपल १ ट० सोंठि १ ट० घृत ४ ट० शहत ४ ट० तजकलमी १ ट० पत्रज १ ट० नागकेसर १। ट० छोटी इलायची १ ट० इनसबको एक रसकर अवलेह करै फिर १ट० भर नित्य खायतौ जुलाव लगै और गोला। संग्रहणी। पांडुरोग। सूजन। विषमज्वर। कोढ़। बवासीर। अरुचि। फिया। हृद्रोग ये सबरोगजायँ ३० इतिदन्ती हरीतकी ॥

अथवा शंखद्राव से भी गोलाजाय अथवा बड़ीपक्की जम्हीरी २०० ले उसका रस लेके घृतके चिकने बासनमें रक्खे फिर भुनीहींग २ ट० सैंधानोन १ ट० सोंठि १ ट० काली मिरच १ ट० कालानोन ४ ट० अजवाइन १ ट० सरसों ९ ट० इन सब औषधियोंको महीनपीस उस रसमें डाल फिरदो दिन घूरे में गाड़रक्खे फिर१ टकेभर प्रतिदिनखाय तो गोला फिया। विद्रधि। अष्ठीला। वात कफका अतीसार। पसलीका

शूल। हृदयरोग। बद्धकोष्ठ। जहर उदररोग वात कफकारोग ये सब दूर होयँ ३१—इतिजम्हीरीद्रावः यह यत्न भावप्रकाशमें लिखाहै ॥ अथवा नदीकुड़ा। आक। सहजना। कटेली। थूहर। बेल। बकायन। आंधीझाड़ा। कदम्ब। अडूसा इनसबकाखार और साम्हरनोन बरावर ले और इसमें अनुमान माफिक भुनीहींग डाल फिर इनको २॥ टं० गर्म पानीसे ले तौ गोला। शूल। उदरके रोग ये सब जायँ ३२——इति नादेईक्षार यह योगशतक में है ॥

अथवा सौंफ। कणगच अ० कंजाकीजड़। तज। दारुहल्दी। बड़ी पीपल। इनका काढ़ादे और तिल। गुड़। सोंठि। मिरच। भुनीहींग। भारंगी ये सब औषध काढ़े में डाल औटाकर दे तौ रुधिरका गोला और स्त्रीधर्म्म जाता रहाहो उसको यह दूरकरैहै ३३ अथवा जवाखार। सोंठि। कालीमिरच। बड़ीपीपल। इनकोऔटाके पिलावैतौ रुधिरकागोलाजाय ३४ अथवाशुद्धपारा १ भाग बंगकी भस्म १ भाग शोधी गन्धक ४ भाग तामेश्वर ४ भाग इनसबको दोदिनतक आकके दूधमें खरल करै फिर इसको गोलाकर सरवे में धर गजपुटमें पकावै फिर इसको ठंढाकर निकालके २ रत्ती प्रमाण घृतके साथलेतौ गोला। फिया। उदरके रोग येसब दूर करै ३५ इति बंगेश्वर रसः ॥

मछली का मांस। सूखीतरकारी। दाल। मठा। फल। गोलेवाला इतनीवस्तु खाय नहीं। यह सर्वसंग्रह में लिखाहै ॥ इति गुल्म रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ यकृतप्लीह रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

यकृत प्लीह ये दोनों शरीरके अंगहैं दाहनी पसलीमें यकृत रहै है हृदयके नीचे और बाईपसलीमें प्लीहरहै इसको लौकिक में फियाकहैंहैं सो ये दोनों रुधिरसे उत्पन्न होयहैं और रुधिरकी लेचलनेवाली नसोंमें इनका मुख्य ठिकाना है ॥

अथ प्लीहरोगकी उत्पत्ति लक्षण ॥

जो मनुष्य गरमवस्तु अथवा दहीआदि कफकारी वस्तु बहुत खायउसके रुधिर और कफ ये दोनों बढ़कर मन्दज्वर और मन्दाग्नि करैहैं और कफपित्तका जिसमें लक्षणहोय उसके शरीरका बलजातारहैं शरीर पीलापड़जाय उसको फियाकहते हैं वह फियावात। पित्त। कफ। रुधिर इनभेदोंसे चारप्रकार का है ॥

अथ वातके फियाका लक्षण ॥

उदर में नित्य अफरा उदावर्त और पीड़ा रहै तौ वातका फिया जानिये १ ॥

अथ पित्त के फिया का लक्षण ॥

ज्वररहै। तृषावहुतलगै। दाह। मोहहोय। शरीर पीला होजाय। तौ पित्तका फिया जानिये २ ॥

अथ कफ के फिया का लक्षण ॥

सब इन्द्री शिथिल होजायँ। भ्रमहोय। शरीरकारंग और का और होजाय। मोह होय। शरीर भारी रहै। उदर लाल होजाय ये लक्षण कफ और रुधिरके फियाका जानिये ३ और त्रिदोषका फियाहोय तौ असाध्य जानिये और यही लक्षणयकृत रोग का भी जानना ॥

अथ फिया का यत्न ॥

जवाखार ऊंटनी के दूधके साथले तौ फिया जाय १ अथवा सीपकी भस्म दहीके साथ खाय तौ फियाजाय २ अथवा १। टंक पीपल दूधके साथ नित्य खाय तौ फिया जाय ३ अथवा आकके पत्तों की राख नोन मिलाय मट्ठेके साथ पिये तौ फिया जाय ४ अथवा भुनीहींग। कालीमिरच। पीपल। ×सोंठि कूट। जवाखार। सेंधानोन ये सबबराबरले महीन पीस २ ॥

× जिस काढ़ामें पीपलकाप्रयोग आवै वहांपर बड़ीपीपल छोड़ना और जिसजगह चूर्णअवलेहका प्रयोग हो उस जगह छोटीपीपल छोड़ना ॥

टंक बिजौरे के रस से प्रतिदिन ले तौ फिया जाय ५ अथवा छीलके खारमें भिजोई हुई पीपल २॥ टंकले तौ फिया गोला जाय ६ अथवा शंखकी भस्म ४ माशे जम्हीरीके रसके साथ ले तौ फिया जाय ७ अथवा बायें हाथकी फस्त खुलवावै तौ फियाजाय ८ दाहिनेहाथकी फस्त खुलवावै तौ यकृत जाय ९ अथवा पक्के आमके रसमें शहत को मिलाके पिये तौ फिया जाय १० अथवा अजवाइन। चित्रक। जवाखार। पीपलामूल। दात्यूणीअ०दतुइनि। पीपल मदिराकेसाथ नित्यपिये तौ फिया जाय ११ ये सब भावप्रकाशमें लिखेहैं॥ अथवा सेंधानोन ५टंक जलमें औटाय नित्यपिये तौ फिया जाय १२ यह वैद्यरहस्यमें है॥ अथवा जवाखार। बायविडंग। पीपल। कणगच्चअ०कंजाकी जड़। अम्लबेत ये बराबरले महीनपीस २ टंक नित्य गरम जलके साथले तौ फियाजाय १३ अथवा पीपल। सोंठि। दात्यूणी ये सब बराबरले और इनसे दूनी हड़कीछालले सबको महीनपीस गुड़के साथ पानीसे ले तौ फियाजाय १४ अथवा बायविडंग। इन्द्रायणकीजड़। सेंधानोन। चित्रक ये बराबरले और इनसे दूनी देवदारुले और तिगुनी सोंठिले और साटी कीजड़। बायविडंग बराबरले निसोत चौगुनीले इनको महीन पीस १टंकगरमपानीकेसाथले तौ फियाजाय १५ अथवा सहँजनेकीजड़। सेंधानोन। चित्रक। पीपल इनका काढ़ाकरपिये तौ फियाजाय १६ अथवा शुद्धभिलावा। हड़कीछाल। सपेदजीरा ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस इनमें बराबरका गुड़मिलाय ५ टंक नित्य ७ दिनतक खाय तौ फियाजाय १७ अथवा लहसन। पीपलामूल। हड़कीछाल ये बराबरले महीनपीस २॥टंक गोमूत्रके साथले तौ फियाजाय १८ यह चक्रदत्तमें लिखाहै॥ अथवा रोहिप अर्थात् रोहीड़ाकीजड़। हड़कीछाल। ये बराबर ले महीनपीस २॥टंक गोमूत्रकेसाथ ले तौ फिया और उदरके

रोग। प्रमेह। बवासीर। कफकेरोग। कोढ़ ये सब जायँ १९ यह योगतरंगिणीमें है॥ अथवा साम्हरनोन। हल्दी। राई। इन तीनोंको एक २ टकेभरले और १०० टकेभर मट्ठेको चिकने वासनमें भर ५ दिनतक रक्खे फिर ५ टकेभर ३ दिनतक पिये तौ फियाजाय २० इतितक्रसन्धानम् यह भावप्रकाशमें है॥

अथवा १०० टकेभर रोहिष और ४ सेर बेरकीजड़को कूट कर १६ सेर पानीमें इनदोनोंको औटावे जबपानी चौथाई रह जाय तब उतारछानले फिर उस पानीमें १ सेर गौकाघृतडाले और बकरीका दूध ४ सेरडाले। सोंठि २ टंक कालीमिरच २॥ टंक पीपल २॥ टंक त्रिफला २॥ टंक भुनीहींग २॥ टंक अजवाइन २॥ टंक साटीकीजड़ २॥ टंक तुम्बुरूअ० तोंबा २॥ टंक बायबिड़ंग २॥ टंक कालानोन २॥ टंक अनारदाना २॥ टंक देवदारु २॥ टंक इन्द्रायणकीजड़ २॥ टंक जवाखार २॥ टंक पुष्करमूल २॥ टंक झाऊवृक्षकीजड़ २॥ टंक खुरासानीबच २॥ टंक चव्य २॥ टंक इन सबको महीनपीस घृतमें मधुरीआंच से पकावै जब ये औषध और दूधजलजाय और घृतमात्ररहजाय तब उसको अमृतबानमें छानके भररक्खै फिर इस घृतमेंसे ३ टकेभर पथ्यके साथ खाय तो फिया। प्लीहोदर। कुक्षिशूल। पसलीकाशूल। अरुचि। बद्धकोष्ठ। पाण्डुरोग। छर्दि। अतीसार। विषमज्वर। इन सबको यह दूरकरै है २१ इति महारोचकं घृतं यह चक्रदत्तमें है॥

अथवा चित्रक १०० टकेभरले उसका काढ़ाकर उसमें कांजीकापानी २०० ट० और दहीकामट्ठा ४०० ट० पीपलामूल १ ट० चव्य १ ट० चित्रक १ ट० सोंठि १ ट० तालीसपत्र १ ट० जवाखार १ ट० सेंधानोन १ ट० दोनोंजीरा २ ट० दोनों हल्दी २ ट० कालीमिरच १ ट० इन सबको महीनपीस चित्रकके काढ़ेमेंमिलावै पीछे इसमें १ सेर घृत मिलावे जब पानी

आदि सब जलजायँ घृतमात्र रहजाय तब इसे उतार छान कर अमृतवानमें भररक्खै फिर उसका सेवनकरै तो फिया। गोला। उदररोग। अफरा। पाण्डुरोग। अरुचि। विषमज्वर। पेडूकाशूल। सूजन। मन्दाग्नि। इन रोगोंको यह दूरकर बल को बढ़ावै है २२ इति चित्रकाद्यं घृतं यह वृन्दमें लिखा है॥

और जोफियाका यत्नहै वही यकृतकाभी जानना॥ अथवा जवाखार। बायविडंग। पीपल। कणगचअ० कंजाकीजड़। इनके काढ़े से यकृत फिया दोनों जायँ २३ इति फिया यकृतरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ हृद्रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

बहुत गरम और भारी। बहुतखट्टी। कषैली। बहुततीखी इनबस्तुओंके खानेसे। बहुतश्रमके करनेसे। भारीचोटके लगने से। बहुतपिटने। और अतिचिन्ता करनेसे। मलमूत्रके रोकने से इनबातोंसे हृदयका रोग उत्पन्नहोताहै सो वह रोग बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ कृमि ५ इनभेदोंसेपांचप्रकारकाहै॥

अथ हृद्रोगका सामान्य लक्षण॥

अन्न खानेका रस जो प्रथम हृदयमें जाय उस रसको बात पित्त कफ बिगाड़कर हृदय में पीड़ा करै है उसको वैद्य हृद्रोग कहते हैं॥

अथ बातके हृद्रोगका लक्षण॥

हृदय में पत्थर और कुल्हाड़े कीसी चोटलगै ये लक्षण होयँ तो बातका हृद्रोग जानिये १॥

अथ पित्तके हृद्रोग का लक्षण॥

तृषा बहुतलगै दाह होय हृदय दूखै कण्ठसे धुआं निकलै मूर्छाहोय शरीर शीतल होजाय पसीना आवै मुख सूखजाय ये लक्षण जिसमें होयँ उसको पित्तका हृद्रोग जानिये २॥

अथ कफके हृद्रोग का लक्षण॥

हृदयभारीरहै मुखमें से कफ बहुत निकलै भोजन से रुचि

जातीरहै। शरीरजकड़ासाहोजाय। मुख मीठारहै। मन्दाग्नि होय। हृदयमें कफ जमजाय ये लक्षणहोयँ तौ कफका हृद्रोग जानिये ३ और ये सब लक्षण मिलेहोयँ तौ सन्निपातका हृद्रोग जानिये ४॥

अथ कृमिके हृद्रोग का लक्षण॥

आंतोंमें कृमिहोयँ। पीछे कुपथ्यका करनेवाला मनुष्य तिल दूध गुड़ आदिले मीठीवस्तु खाय तब उसके मर्म्मस्थानों में पीड़ाहोय हृदयदूखे हृदय सड़जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुःखपावै ये लक्षण जिसमेंहोयँ और मनमें छेदहोय। थूकैबहुत हृदयमें शूलचलै। भोजनमें अरुचिहोय। नेत्रकाले पड़जायँ। शरीर सूखजाय यह कृमिके हृद्रोगका लक्षण जानिये॥

अथ हृद्रोगके उपद्रव॥

सब इन्द्रियोंका ज्ञान जातारहै। शरीरमें पीड़ाहोय। घुमेर आवै। शरीर सूख जाय॥

अथ हृद्रोगका यत्न॥

बहेड़े के वृक्षकीछालका चूर्ण २ टकेभर प्रतिदिन दूध अथवा घृत अथवा गुड़के पानीकेसाथ पिये तौ हृद्रोग। जीर्णज्वर। रक्त पित्त। इनको दूरकरै १ अथवा हड़कीछाल। खुरासानी बच। रास्ना। पीपल। सोंठि। कचूर। पुष्करमूल ये सब बराबरले महीनपीस २॥ टंक जलके साथ ले तौ हृद्रोग दूरहोय २ अथवा हिरनके सींगको पुटपाककरै और गौ के घृतके साथ खाय तौ हृद्रोग शूलमात्र दूर होयँ ३ इतिहिरनके सींगकापुटपाक॥

अथवा खरैटी। गंगेरनकी छाल। काहूवृक्षका बकला। मुलहठी ये औषध बराबरले महीन पीस २॥ टंक का काढ़ा कर नित्य ले तौ हृद्रोग। वातरक्त। रक्तपित्त। इन सबको दूरकरै ४ यह भावप्रकाशमें लिखा है॥ अथवाकूट। वायविडंग। इनको महीनपीस २॥ टंक गोमूत्रके साथले तौ हृदयके कृमि गिरपड़ें और हृद्रोगजाय५ अथवा गंगेरनकी जड़। और काहूवृक्षका ब-

कला। पुष्करमूल अ० पुहकरमूल इनको महीनपीस २॥ टंक दूधके साथ अथवा शहतके साथले तौ हृद्रोग। श्वास। कास छर्दि। हिचकी इनको दूरकरै ६ अथवा हड़कीछाल। बच। रास्ना। पीपल। सोंठि। कचूर। पुष्करमूल इनका चूर्णले तौ हृद्रोगजाय ७ इति हरीतक्यादि चूर्णम् ॥

अथवा दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल और साम्हर नोन डालके पिये तौ हृद्रोगजाय ८ अथवा पुष्करमूल। सोंठि। कचूर। हड़की छाल। जवाखार ये सब बराबरले इनका काढ़ा कर इसमें घृतडाल पिये तो बातका हृद्रोग जाय ९ यह वैद्यरहस्य में है॥ अथवा भुनीहींग। बच। बायबिडंग। सोंठि। पीपल। हड़कीछाल। चित्रक। जवाखार। कालानोन। पुष्कर मूल ये सब बराबरले महीनपीस २॥ टंक शहतके साथ ले तौ हृद्रोग। श्वास। कास। राजरोग। हिचकी ये सब रोग दूर होयँ १० अथवा भुनीहींग। सोंठि। चित्रक। कूट। जवाखार। हड़कीछाल। बच। बायबिडंग। कालानोन। शुद्धपारा। पुष्करमूल ये सब बराबरले महीनपीस १ टंक जलके साथले तो हृदयरोग। अजीर्ण। विशूचिका ये सब दूरहोयँ ११ यह रसप्रदीपमें है॥ इति हृद्रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजी विरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेहृद्रोगोत्पत्तिलक्षण यत्ननिरूपणंनामैकादशस्तरंगः ११ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र रोगकीउत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

खेदके करनेसे। तीक्ष्णवस्तु और रूखीवस्तुके खानेसे और मद्यकेपीनेसे। नाचनेसे। दुष्ट घोड़ेके चढ़नेसे। नदीके जीवों के मांसखानेसे। भोजनपर भोजन करनेसे। अजीर्णसे इनकारणोंसे मनुष्यके मूत्रकृच्छ्ररोग उत्पन्नहोताहै यह ८ प्रकारका है बातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ चोटलगने

का ५ मलके रोंकनेका ६ शुक्रके रोंकनेका ७ पथरीका ८ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रका सामान्य लक्षण ॥

कोपको प्राप्तहुये जो बात पित्त कफ वह आपअपनेही कारणसे पेटमें प्राप्तहो मूत्रके मार्गमें बहुत पीड़ा करके बड़ेकष्टसे टीस चलकर मूत्र उतारैहैं और मूत्र बन्दहोने में तौ कम और मूत्र करनेमें अधिक पीड़ाहोय उसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥

अथ वातके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

जांघों । और पेड़की सन्धिमें और पेड़ू और इन्द्री में पीड़ा अधिक होय और थोड़ा २ बार बार मूते ये लक्षण जिसमेंहोयँ उसको बातका मूत्रकृच्छ्र जानिये १ ॥

अथ पित्तके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

पीला और लाल और गरम मूत्र बहुत कष्टसे टीसचलकर उतरै उसको पित्तका मूत्रकृच्छ्र कहिये २ ॥

अथ कफके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

पेडू और लिंग ये दोनों भारीहोयँ और दोनोंमें सूजनहोय और मूत्रमें झागआवै और मूत्र कष्टसे उतरै ये लक्षण जिसमें होयँ उसको कफका मूत्रकृच्छ्र कहिये ३ और ये सब लक्षण जिसमें होयँ उसको सन्निपातका मूत्रकृच्छ्रकहिये ४ ॥

अथ चोटलगनेके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

मूत्रको लेचलनेवाली नसोंमें किसीप्रकार चोटलगनेसेमूत्र रुकजाय और वायुके मूत्रकृच्छ्र का लक्षण इस मूत्रकृच्छ्र के लक्षणसे मिलै तौ मनुष्य मरजाय ५ ॥

अथ मलरोंकनेके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

जो पुरुष मलकी बाधाको रोंकै उसके वायु कुपित होकर पेड़ू और पेटमें अफरा करै और इन्द्रीके स्थानमें पीड़ा अधिक करै मूत्र बहुत कष्टसे उतरै ये लक्षणहोयँ तो मलका मूत्रकृच्छ्र जानिये ६ ॥

अथ वीर्यके रोंकनेके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

वीर्य्यके रोंकनेसे मूत्रका मार्ग रुकजाय तौ पुरुषके पेडू और लिंगमें शूलहोय वीर्य्यको लिये बड़े कष्टसे मूत्र उतरै तो वीर्य्य रोंकनेका मूत्रकृच्छ्र कहिये ७ ॥

अथ पथरीके मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

पथरी और शर्करानामरेत ये दोनों अण्डमें रहैहैं इन्हीं से मूत्र कृच्छ्र होताहै वह पथरी पित्तकरके पचीवायु करके रूखी कफसे रहित पथरीका रूपहोय निकल मूत्रको रोंकैहै ॥

अथ शर्कराका उपद्रव ॥

हृदयमें पीड़ाहोय। शरीर कांपै। कोषमें शूलचले। मंदाग्नि और मूर्च्छाहोय ये लक्षणहोयँ तौ मनुष्य मरजाय ८ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

गोखुरू। किरमालाकी गिरी। डाभकीजड़। कासकी जड़। जवासा। आमला। पाषाणभेद। हड़कीछाल ये सब बराबरले जवकुट कर २ ॥ टंकका काढ़ा कर शहत मिलाय प्रतिदिन ले तौ मूत्रकृच्छ्र और पथरीका असाध्यभी रोगजाय १–इतिगोक्षुरादिक्काथः ॥

अथवा इलायची। पाषाणभेद। शिलाजीत। पीपल। गोखुरू। तिवर्सीका बीज। सेंधानोन। केसर ये सब औषध बराबरले महीन पीस इक्कीस टंक चावलके पानीकेसाथ अथवा पुरानेगुड़के पानी के साथ प्रतिदिन ले तौ मूत्रकृच्छ्र जाय २ अथवा दूधमें पुरानागुड़ अथवा मिश्रीडालकुछ गरमकर पिये तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ३ ॥ अथ चोट लगनेके मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

आमलेके रसमें शहत मिलाय पीवै अथवा ऊखके रसमें शहत डाल पीवै तो मूत्रकृच्छ्र जाय ४ ॥

अथ मल रोंकनेके मूत्रकृच्छ्रका यत्न ॥

गोखुरूका काढ़ाकर शहत जवाखार मिलाकर पीवैतो मूत्र-

कृच्छ्र जाय ५ अथवा त्रिफला ५ टं० वेरके जड़की छाल ५ टं० इनदोनों को रात्रिमें भिगो प्रभातही उसी पानीमें पीस सेंधा नोन डाल पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ६ अथवा जवाखार ५ माशे। मिश्री ५ माशेइन्हैं पीसजलसे ले तौ मूत्रकृच्छ्र निश्चय जाय ७ अथवा मुनक्कादाख अथवा किसमिस ५ टं० मिश्री १० टं० दहीका मट्ठा १० टं० यहतीनों मिलाय पीवै तौ मूत्र-कृच्छ्र जाय ८ अथवा गोखुरूकी जड़ समेत काढ़ाकर शहत मिश्री मिलाय पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ९ ये यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं ॥ अथवा गिलोय। सोंठि। आमला। असगन्ध। गो-खुरू। ये सब बराबरले इन्हें जवकुट कर २॥ टं० का प्रतिदिन काढ़ाकर पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय १० अथवा पक्के नींबूकारस गौके कच्चे दूधमें डाल प्रतिदिन इच्छापूर्वक पीवै तौ स्त्री की योनिदोष से उत्पन्न जो रोग और दाह प्रमेह। मूत्रकृच्छ्र इन-को दूरकरैहै ११ अथवा हड़की छाल। गोखुरू। किरमाला की गिरी। पाषाणभेद। धमासा। अडूसा ये सब बराबरले जव-कुटकर ५ टंकका काढ़ाकर शहत डाल प्रतिदिन पिये तौ दाह संयुक्त मूत्रकृच्छ्र बद्धकोष्ठ इनको दूरकरै १२—इतिहरीत-क्यादि क्वाथः ॥

अथ कष्टसे रुधिर मूतताहो उसका यत्न ॥

डाभकीजड़। कासकीजड़। दूबकीजड़। सरकंडेकीजड़। ऊख की जड़ इनका काढ़ाकर दे तौ रुधिर मूतना अच्छाहोय १३—इति तृण पंचकम् ॥

अथवा पक्के पेठेके रसमें मिश्री मिलाय पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय १४—इति कूष्मांडरसः ॥

अथवा कटेलीके रसमें शहत डालपीवै तौ मूत्रकृच्छ्रजाय १५ अथवा २८ टके भर गोखुरू को अष्टगुणित जल में औटाय अर्धौटाकर पीछे छान इसमें गूगुल ७ टकेभर डालफिर पकावै

फिर इसमें सोंठि १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० हड़ की छाल १ टं० बहेड़ेकीछाल १ ट० आमला १ टं० नागरमोथा १ टंक इनसबको महीन पीस गूगुलमें डालैपीछे इनको एकजीवकर ५ माशे प्रतिदिन जलसे ले तौ मूत्रकृच्छ्र । मूत्राघात । प्रमेह । प्रदर । बातरक्त । वीर्य्य दोष इनको दूर करे है १६–इति गोक्षुरादि गूगुल ॥

अथवा जीरा १ टंके गुड़ १ट० प्रतिदिन खायतौ मूत्रकृच्छ्र जाय १७ अथवा जवाखार सवादोटंक गौके मट्ठेसे पीवे तो मूत्रकृच्छ्र पथरी दोनों जायँ १८ इतिजवाखारतक्रयोगः ॥

अथवा शुद्धपारा १ भाग शोधीगन्धक ४ भाग इन दोनोंकी कजलीकरै पीछे इस कजलीको बड़ीकौड़ीमें भरै और भुनेसुहागे को जलसे पीस कौड़ीके मुखमें लगावै पीछे उसकौड़ीको कुल्हड़े में धर गजपुटमें फूंकदे शीतलहोनेके पीछे उसकौड़ीको कुल्हड़ेमें से काढ़ महीनपीस ४ रत्तीप्रमाण और २१ मिरचपीस मिलाय घृतके साथखाय तौ मूत्रकृच्छ्रजाय १९–इतिलघुलोकेश्वररसः॥ यह सर्व्व यत्न भावप्रकाश और वैद्यरहस्य में लिखे हैं अथवा निरूहवस्ति वा उत्तरवस्तिके करनेसे मूत्रकृच्छ्रजाय २० अथवा शतावरि । कासकीजड़ । डाभकीजड़ । गोखुरू । विदारीकन्द । सालरकीजड़ । कसेरू इनका काढ़ाकर शहत और मिश्रीमिलाय पिये तौ मूत्रकृच्छ्र जाय २१ यह चक्रदत्तमें लिखा है ॥ अथवा तिवसींका बीज । महुआ । दारुहल्दी इनका काढ़ाकर पिये तौ पित्तका मूत्रकृच्छ्र जाय २२ अथवा केलेके रसमें गोमूत्र डाल पिये तौ कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २३ अथवा इलायचीको महीन पीस जलसेले तौ कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २४ अथवा मूंगे का चूर्ण १।टंक चावलके पानीसे पिये तौ कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २५ अथवा गोखरू । सोंठि इनका काढ़ा ले तौ सबका मूत्रकृच्छ्र जाय २६ यह वृन्दमें है॥ अथवा बड़ी कटेली। पाढ़। मुलहटी।

महुआ। इन्द्रयव इनका काढ़ाकर पिये तौ सन्निपातका मूत्रकृच्छ्र जाय २७॥

अथ शुक्रकेरोंकनेके मूत्रकृच्छ्रकायत्न॥

शिलाजीत शहतमें मिलायकै खाय तौ शुक्र रोंकनेका मूत्रकृच्छ्र जाय २८ यह चक्रदत्तमें है॥ अथवा उत्तम स्त्रीसे संग करै तौ यह मूत्रकृच्छ्र जाय २९ अथवा खरैटीकी जड़का काढ़ा ले तौ सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र जाय ३०॥ अथवा गोखुरूका पंचांग १०० टके भरले उसकोकूट अठगुने पानीमें औटावै जब चतुर्थांश रहै तब उससें ५० टकेभर मिश्रीकी अवलेह कीसी चासनीकरै उसमें सोंठि २ ट० पीपल २ ट० इलायची २ ट० जवाखार २ ट० केसर २ ट० काहूवृक्षकावक्कल २ ट०तिवर्सीकाबीज २ ट० वंशलोचन ८ ट० इन सब ओषधियोंकोमहीन पीस इस चासनी में डालै फिर १ टकेभर प्रातिदिन खाय तौ मूत्रकृच्छ्र। दाह। बद्धकोष्ठ। पथरी। रुधिरका मूतना। मधुप्रमेह इन सबको दूर करै ३१ इति गोक्षुरावलेहः॥ यह सब यत्न सर्व्वसंग्रह में लिखे हैं—इतिमूत्रकृच्छ्र की उत्पत्तिलक्षणयत्न॥

अथ मूत्राघातरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

मनुष्य मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात में शंकाकरै हैं सो इसका भेद लिखते हैं॥ मूत्रकृच्छ्रमें बहुत कष्ट और मूत्रबन्धमें थोड़ा और मूत्राघातमें मूत्रबन्धतो बहुत परन्तु मूतने में पीड़ा थोड़ी होतीहै इतना भेदहै॥

अथ मूत्राघातकी उत्पत्ति लक्षण॥

कुपथ्य करके कोपको प्राप्त हुआ जो वात पित्त कफ तिन करके मूत्राघात होय है सो मूत्राघात रोग १३ प्रकार का है वातकुंडलिका १ अष्ठीला २ वातवस्ति ३ मूत्राघात ४ मूत्र जठर ५ मूत्रोत्संग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रन्थि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णवात १० मूत्रसाद ११ विड्घात १२ वस्तिकुंडलिका १३॥

अथ वातकुण्डलिका का लक्षण ॥

रूखी वस्तुके खानेसे मल मूत्र और शुक्रके धारणसे बात पेडूमें जाकर पीड़ाकरै और मूत्रकी नसों में जाय बिचरै और कोपित होजाय तब कफ मूत्रके छिद्रकोरोंके और इन्द्रीके मुख में बात कुण्डलके आकार होय रहै तब पुरुष थोड़ा २ मूते और मूतनेमें पीड़ा बहुत होय यह लक्षणहोयँ उसके बातकुंडलिका रोग कहते हैं यह असाध्यहै इस रोगवाला पुरुष मरजाय १ ॥

अथ अष्ठीलाका लक्षण ॥

पेडूमें अफरा होय गुदाकी पवनचलै नहीं गुदामें पवनकी गांठ पत्थरसी होजाय उस स्थानमें पीड़ा बहुतहोय और वह पवन मल मूत्रको रोंकदे तौ अष्ठीला का लक्षण जानिये २ ॥

अथ वातवस्तिका लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्रके वेगको रोंके उसके पवन पेडूमेंजाके मूत्रकी नसोंके मुखको रोंकदे मूत्र उतरनेदेनहीं पेडू और कुक्षिमें पीड़ा करै उसको बातवस्तिरोग कहते हैं यह रोग कष्टकारी है ३ ॥

अथ मूत्रातीतरोगका लक्षण ॥

मूत्रको बहुतबार रोंकै और देरतक मूत्रकरै नहीं तब पुरुष के मूत्र मन्दउतरै इसको मूत्रातीत कहते हैं ४ ॥

अथ मूत्रजठररोगका लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्रके वेगको रोंकै तिसकी गुदाकी अपान वायु उदरको पवनसे भरकर नाभिकेनीचे अफरारोगकोकरके बहुत पीड़ा करै उसको मूत्रजठररोग कहते हैं ५ ॥

अथ मूत्रोत्संगका लक्षण ॥

पेडू अथवा लिंगकी नसोंमें आया जो मूत्र उसकोकरैनहीं तब उसपुरुषके मूत्रकेद्वारा पीड़ासहित अथवा विनपीड़ा थोड़ा रुधिर उतरै उसको मूत्रोत्संग रोग कहते हैं ६ ॥

अथ मूत्रक्षयका लक्षण ॥

जिस पुरुषका खेदकरके शरीर सूखा पड़जाय उसके पेडूमें रहते जो बात पित्त कफ वह पीड़ा और दाह सहित मूत्रको नाशकरै हैं उसको मूत्रक्षय रोग कहते हैं ७॥

अथ मूत्रग्रन्थिरोगका लक्षण ॥

पेडूके बीचमें गोल और स्थिर और छोटी आमले के प्रमाण बहुत कड़ी वायुकी गांठ अकस्मात् उपज आवै उसको मूत्रग्रन्थि कहते हैं ८॥

अथ मूत्रशुक्ररोग का लक्षण ॥

मूत्रका वेग लगरहाहो और मैथुन करनेको स्त्रीके पासजाय तब उसकी वायु शुक्रको स्थानसे भ्रष्टकरै है मूत्रके पहले अथवा मूत्रकेपीछे अरने उपलेकी राखके पानीके सदृश गिरे उसको मूत्रशुक्र कहते हैं ९॥

अथ उष्णवात रोगका लक्षण ॥

स्त्रीके संगसे। खेदसे। धूपमें रहने से पुरुषके पेडूमें रहते जो वात पित्त वह पेडू। इन्द्री। गुदाको दग्धकरै हैं तब हल्दी के सदृश मूत्रउतरै अथवा रुधिरालिये बड़ेकष्टसे मूत्र उतरै उसको उष्णवात कहते हैं १०॥

अथ मूत्रसाद रोगका लक्षण ॥

पुरुषके कुपथ्य करके पेडूमें रहता जो वायु सो पित्त और कफको बिगाड़ैहै तब उसके मूत्र बहुतकष्टसे उतरै पीला अथवा लाल। सुपेद। बहुतगाढ़ा। गरम गोरोचनके सदृश। चूनेकी राख सदृश थोड़ाउतरै। शरीरसूखजाय उसकोमूत्रसादकहतेहैं ११॥

अथ विड्विघातरोगका लक्षण ॥

जो पुरुष बहुत रूखा अन्नखाय सो दुर्बलहोय मलसहित मूतै और उसके मूत्रमें मलकीसी गन्ध आवै और बहुत कष्टसे मूत्रउतरै उसको विड्विघात रोग जानिये १२॥

अथ वस्तिकुण्डल रोगका लक्षण ॥

बहुत जल्दीदौड़नेसे । लंघन करनेसे । बहुत खेदसे पेडूमें किसी प्रकारकी चोटलगनेसे । पेडूमें गांठ पड़जाय तब उठते पीड़ाहोय और गांठ बढ़ीहुई हलैनहीं । गर्भकीसी भांति रहै । शूलहोय । फड़के । दाह अधिकहोय । उसगांठको हाथसेदावै तौ मूत्रकी बूँदउतरै और बहुतपीड़ाहोय तब मूत्रकीधार निकलै और शस्त्रकी चोट लगनेकीसी पीड़ाहोय इसको वस्तिकुण्डल कहते हैं यह असाध्यहै १३ ॥ यह रोगवाला मरजाय ॥

अथ मूत्राघात रोगका यत्न ॥

नरसलकी जड़ । डाभकीजड़ । कासकीजड़ । साटीकीजड़ । खरैटीकीजड़ इनका काढ़ाकरै फिर शहद डाल ठण्ढाकर पिये तौ मूत्राघात जाय १ अथवा कपूरको जलसे महीन पीस वस्त्र में उसका लेपकर उसकी बत्तीकरै फिर उस बत्तीको इन्द्रियमें धरै तौ यहरोग जाय २ अथवा धनियां । गोखुरू इनदोनोंका काढ़ाकर इस काढ़ेमें घृत पकाय खाय तौ मूत्राघात और मूत्र-कृच्छ्र शुक्रदोष ये तीनों जायँ—३ इतिधान्य गोक्षुरघृतं ॥

और जितना यत्न मूत्रकृच्छ्र और पथरी काहै उतनाहीमूत्राघातका जानलीजिये ४ यह भावप्रकाशमें लिखाहै अथवा तिवरसीके बीज ५ टं० धनियां ५ टं० इन्हें रात्रि में भिजोय फिर प्रातःकालही उसीपानी में पीस छान १ टं० सेंधानोन डालकर पिये तौ मूत्राघात जाय ५ अथवा पाटलवृक्षका खार २॥ टं० कालानोन १। टं० ये दोनों मदिराके साथ पिये तौ मूत्राघात जाय ६ ॥ अथवा मद्यमें खट्टे अनारकारस और इ-लायची डालकर पिये तौ यह रोगजाय ७ यह वृन्दमें लिखाहै अथवा शिलाजीतका सेवन करै तौ मूत्राघात जाय ८ अथवा कौंचकेबीज ५ टं० खरैटी १० टं० पीपल १ टं० तालमखाना १। टं० मिश्री १० टं० मुनका दाख अर्थात् किसमिस १० टं०

इनकोमहीनपीस गर्म दूधमें शहद घृत डालपिये तौ शुक्र के रोकनेका मूत्राघातजाय॥ और यह प्रयोग बंध्याके पुत्र उत्पन्न करनेवालाहै ९ यह सर्व्वसंग्रहमें लिखाहै ॥ अथवा चित्रक ऽ। गौरीसर ५ टं० खरैटी १० टं० दाख ऽ॥ इन्द्रायणकी जड़ ५ टं० त्रिफला ५ टं० बड़ा आमला १०० इनका १६ सेरपानीमें काढ़ाकरै जब इसका चतुर्थांश रहजाय तब उतारकर छानले पीछे इसकाढ़े में ४ सेर घृत डालकर पकावै जब औषध और पानी जलजाय केवल घृतमात्र रहजाय तब छानले फिर इस में बंशलोचन ऽ॥ डालकर ऽ॥ प्रतिदिनले तौ सर्व्वप्रकारके वीर्य्यकेदोषोंको दूरकरै है और स्त्रीके गर्भकरै है और मूत्राघात। प्रदर। योनिकेदोष। मूत्रकृच्छ्र इनसब रोगोंको दूरकरैहै १०॥ इति चित्रकाद्यंघृतं ॥ यह चरकमें लिखा है ॥

अथवा त्रिफलाके काढ़ेमें गुड़ दूध डालकर पिये तौ मूत्राघातजाय ११ ॥ अथवा पाढ़ल। अरलू। नींबकीछाल। हल्दी। गोखुरू। पलाशका वक्कल ये सब बराबरले इनका काढ़ा कर उसमें गुड़डालकर पिये तौ मूत्राघात जाय १२॥ अथवा सुन्दर चतुर स्त्रीसे मैथुनकरै तौ मूत्राघातजाय १३ ये सब आत्रेयमें लिखे हैं—इति मूत्राघातकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ मूत्ररोध रोगका लक्षण ॥

जो यत्न मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्रके हैं वही इसकेभी जान लीजिये और कुछविशेषहैं सो लिखतेहैं ककड़ीकेबीज। त्रिफला। सेंधानोन ये सब बराबरले महीनपीस ५ टं० गर्म जलकेसाथ पिये तौ मूत्ररोधजाय १ ॥ अथवा तिलके काकड़ेको जलाके खार निकाल २ टं० दही और शहदके साथले तौ मूत्रकेचार रोगजायँ २ ॥ अथ मूत्र बहुतगर्म उतरै उसका यत्न ॥

चमेलीकी जड़को बकरीके दूधमें पीसकर पिये तौ यह रोग जाय ३ ॥ अथवा कमलकी जड़को गोमूत्रमें पीस उसमें तिल

मिलाय पिये तौ मूत्ररोधजाय ४ इतिमूत्ररोधका यत्नसम्पूर्ण॥ यह आत्रेयमें लिखाहै॥

अथ अश्मरीरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अश्मरीको लोकमें पथरीकहतेहैं यह पथरीरोग चारप्रकार काहै बातका। पित्तका। कफका। बीर्य्यके रोकनेका इन चारों में जो कफ मिलाहै वह यमरूपहै॥

अथ पथरीकी उत्पत्ति॥

पेड़ूमें रहतीजो बायुसो पेड़ूके वीर्य्य। मूत्र। पित्त। कफ। इनको सुखाय क्रमसे पथरीको उत्पन्न करैहै यहां यह दृष्टान्त है कि जैसे गोकेपित्तमें गोरोचन बढ़जाय वैसेही मनुष्यके पथरी पड़जाय है॥

अथ पथरीका पूर्व्वरूप॥

पथरीकारोग सन्निपातसे उत्पन्नहोताहै पथरीवाले पुरुषके मूत्रमें मस्त बकरेकी सी गन्ध आवै पेड़ूमें अफरा होय पीड़ा बहुतहोय मूत्र बहुत कष्टसे उतरे ज्वरहोय और भोजनमें अरुचि होय यहपथरी के पूर्वरूप का लक्षणहै॥

अथ पथरीरोगका सामान्य लक्षण॥

नाभिमें मूत्रकी नसोंमें पेड़ूमें पीड़ा बहुतहोय मूत्रकी धार बँधी गिरै नहीं और मूत्रका मार्ग रुकजाय जबयह पथरी मूत्र के मार्गसे सरकजाय तबउस पुरुषको सुखहोय मूत्रअच्छे प्रकार पीलाउतरै और जब वह कोपको प्राप्तहोय तब बड़ी पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरै॥

अथ अधिक बातवाली पथरीका लक्षण॥

जिसमें मूत्रके समय अधिक पीड़ा होय दांतोंको चाबे मूत्र करते में इन्द्रिय कांपै। इन्द्रिय और नाभिमें पीड़ाहोय मूतते पुकार उठे और मलकरदे मूत्रबूंद २ उतरै पथरी का रंगकाला होय और पथरी में कांटेसेहोवैं उसको बातकी पथरीकहतेहैं १॥

अथ कफपित्तकी पथरीका लक्षण ॥

पेडूअग्निके समान ऐसा जलै मानो पकगयाहै औरपथरी बदामके छिलकेके समान और पीली लाली सफ़ेदाई लियेहोय ये लक्षणहोयँतो कफ पित्तकीपथरी जानिये २ ॥

अथ कफकी पथरीका लक्षण ॥

पेडूमें पीड़ा बहुत होय और पेडूशीतल भारीहो औरउसकी पथरी चिकनी और गीली और सफ़ेद कुक्कुटके अण्डेकी बराबरहो जिसमें येलक्षण होयँ उसको कफकी पथरीकहिये ३ ॥

अथ शुक्रके रोकनेकी पथरी का लक्षण ॥

जिस पुरुषको मैथुन करनेकी इच्छाहोय और वहशुक्रको रोंके किसीप्रकार जानेनदे उसके शुक्रकी पथरी उत्पन्नहोती है इन्द्रिय और पोतेके बीचमें वहपवन वीर्य्यको सुखाय पथरीकरै फिरवह पथरी पेडूमें पीड़ाकरै मूत्र महाकष्टसे उतरै पोतेसूज जायँ उसका वीर्य्य जातारहै और इन्द्रियमें पीड़ाकरै तौ इन्द्रिय के द्वारा शुक्रनिकलै अथवा वहइन्द्रिय पीड़ितकरै तब वात उस पथरीकेनिकट महीन शुक्रके रेतके सदृश टुकड़े करदे तबइसको सर्करा कहते हैं ४ ॥ अथ पथरीका उपद्रव लिखते हैं ॥

शरीर दुर्बल होकर पीलाहो कुक्षिमें शूल चलै अरुचिहोय शरीर पीलाहोजाय मूत्राघात होय और नाभिसूज जाय मूत्र रुकजाय ये इसके उपद्रवहैं ॥

अथ पथरीरोगका यत्न ॥

सोंठि । अरणी । पाषाणभेद । कूट । बरणागोखुरू । अरण्ड कीछाल । किरमालाकी गिरीये सब बराबरले जवकुटकर ५ टं० का काढ़ाकर उस में भुनीहींग । जवाखार । सैंधानोन ये तीनों डाल पथरीवाला पिये तौ पथरी और मूत्रकृच्छ्र ये दोनों जायँ और यह कोष्ठकी वात । उपदंश । बवासीर इनकोभी दूर करै है और दीपन पाचनहै ५—इति शुंठ्यादिक्वाथः ॥

अथवा इलायची। पीपल। महुआ। पाषाणभेद। पित्त-पापड़ा। गोखुरू। अडूसा। अरण्डकीजड़ येसब बराबरलेजव-कुटकर इनका काढ़ाकरके उसमें शिलाजीत डालकर पिये तौ पथरी और मूत्रकृच्छ्को दूरकरै है६—इतिएलादिक्वाथः॥

अथवा पेठेके रस में भुनीहींग। जवाखार डाल कर पिये तौ पेडूकी पीड़ा और पथरीजाय ७॥ अथवा अरणीकी छाल। पाषाण भेद। सोंठि। गोखुरू। इनका काढ़ा कर जवाखार डाल पिये तौ पथरी जाय ८॥ अथवा गोखुरूके चूर्णमें ५॥ टंक शहत मिलाय भेड़के दूधमें पिये तौ पथरी जाय ९॥ अथवा बरणाकी जड़ का काढ़ाकर उसमें गुड़डालकर पिये तौ पथरीका रोग और पेडूकाशूल दूर होय १०॥ अथवा अदरख का रस। जवाखार। हड़की छाल। मलयागिरिचन्दन इनका काढ़ाकर दहीडालकर पिये तौ पथरी जाय ११॥ अथवा बरणाका व-क्कल १०० टकेभरले उसमें चौगुना पानीडाल औटावै जब चतुर्थांश रहजाय उसमें १०० टके भर गुड़की चासनी कर चिकनेबासन में धरे उसमें सोंठि १ टके पेठेके बीज १ टंक बहेड़े कीमींगी १ ट० बथुएकेबीज १ ट० सहजनेकेबीज १ ट० दाख अर्थात् किसमिस २ ट० इलायची १ ट० हड़कीछाल १ट० बाय-बिड़ंग १ ट० इनका चूर्णकर उसमें डाल एक रस कर प्रतिदिन खाय तौ पथरीकारोगजाय १२—इतिबरणादि गुड़काअवलेह॥

अथवा मंजीठ। तिवसींकाबीज। सपेदजीरा। सौंफ। आमला। बेरकी मींगी। शोधागन्धक। आंवलासार। मैनासिल ये सबबरा-बरले महीनपीस १। टंक प्रतिदिन शहतकेसाथ खाय तौ पथरी निश्चय जाय १३॥ अथवा २। टकेभर कुलथ्थकाकाढ़ा कर उसमें संधानोन २ माशे शरफोंकाका रस २ माशे मिलाय पिये तौ पथरी जाय १४॥ ये सब भावप्रकाशमें लिखे हैं॥ अथवा हल्दी का चूर्ण ५, ट० गुड़ १० टंक इनको ३माशे कांजीमें डाल

पिये तौ पथरी जाय १५ ॥ अथवा कालानोन । दूध । तिलेठी की राख ये सब मदिरामें मिलाय ३ दिन पिये तौ पथरी जाय १६ ॥ यह चक्रदत्तमें लिखा है ॥ अथवा तिलेठीकी राख २ ॥ टंक शहत ५ टंक इनको दूध के साथ १५ दिन पिये तौ पथरी निश्चय झड़पड़े १७ ॥ अथवा गोपाल काकड़ी अर्थात् एरंड काकड़ी की जड़ २ टंक ले उसको रातमें भिगोरक्खै प्रातही उसीपानीमें पीस ७ दिन पिये तौ पथरी इन्द्रिय द्वारा झड़पड़े १८॥ यह राजमार्तंड में लिखाहै ॥ अथवा कुलत्थ । सेंधानोन। वायविडंग । सार । मिश्री । साटी अर्थात् पथरचटाका रस । जवाखार । पेठेकारस । तिलकाखार । पेठे के बीज । गोखुरू इनसबका काढाकर इसमें गौका घृत पकाय १ टके भर नित्य खाय तौ पथरी। मूत्रकृच्छ्र। मूत्राघात। शुक्रबन्ध इन सब रोगों को यह दूरकरै १९ ॥ इति कुलत्थाद्यंघृतम् ॥ यह वृन्द में लिखा है ॥ और मूंग । जव । गेहूं । चावल । दूध । घृत । टेढ़रु । सेंधानोन ये इस रोगमें पथ्य हैं इति अश्मरीनाम पथरी रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ प्रमेह रोगकी उत्पत्ति लक्षण ॥

अधिकबैठने और बहुतसोने और नवीनपानीकेपीने बकरा भेंड़कामांस और गुड़आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफकारी वस्तु इनके खाने और श्रम और बहुत मैथुनकरने। धूपकेरहने । विरुद्ध और गरम भोजनके करने । बहुत मदिरा के पीने । कडुआ रसकेखानेसे इन वस्तुओंके करनेसे पुरुष के प्रमेह रोग उत्पन्न होता है ॥

अथ कफ पित्त वायुके प्रमेहका संप्राप्ति ॥

पेडू में प्राप्तजोमेदा और मांस और शरीरका जल तिनको कफ दूषित करके कफ प्रमेहको करैहै ॥ ऐसेही पित्त गरमवस्तु से कोपकर पेडूमेंप्राप्त जो मेदा मांस जल तिनको दूषितकर

पित्तके प्रमेहको करैहै॥ ऐसेही वायुभी अपनी अपेक्षा आप सो क्षीण जो कफ पित्त तिनको पेडूमें प्राप्तकर और शुद्धजो मांस को स्नेह उसको और शरीरके जल पेडूकीनसों के मुखमें प्राप्त कर वायुके प्रमेह को करैहै कफके १० प्रमेह साध्य हैं क्योंकि सामान्य यत्नसे जायहैं और पित्तके ६ प्रमेह जाप्य हैं अर्थात् यत्नसे दबे रहैं इसका विषमयत्नहै क्योंकि दोष दूष्यके विषम पनेसे ऐसा दोष दूषितहै और दूष्यरसमांसादिकहै शीतलम-धुरादिक पित्तहारी द्रव्यहैं और रसमांसमेदा इनको शीतलम-धुरादिक पित्तहारी द्रव्य उपजावैहैं और वायुके ४ प्रमेह अ-साध्यहैं वे जायँ नहीं क्योंकि मज्जाको आदिले वे गंभीर धातु हैं और सर्व शरीर व्यापी है और शरीरके विनाशकारी हैं इस कारण वायुका प्रमेह असाध्य है॥

अथ बीसप्रकारके जो प्रमेह तिनके नाम॥

उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सान्द्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्ट प्रमेह ५ शुक्रप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ शीतप्रमेह ८ शनैःप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० ये दशतो कफके प्रमेह हैं और क्षारप्रमेह १ नीलप्रमेह २ कालाप्रमेह ३ हारिद्र प्रमेह ४ मांजिष्टप्रमेह ५ रक्त प्रमेह ६ ये छ पित्तके प्रमेहहैं और वसाप्रमेह १ नीलप्र-मेह २ कामप्रमेह ३ हस्तीप्रमेह ४ ये चार वायुके हैं ये २० प्रमेह वाग्भट्ट सुश्रुत चरक भावप्रकाश आदि के मत से हैं और आत्रेयजीके मतसे विशेषहैं सो लिखते हैं सूप प्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिण्डिका प्रमेह ३ शर्करा प्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अति मूत्रप्रमेह ६॥

अथ प्रमेहका पूर्वरूप॥

दांतलाल जीभ इनमें मैल अधिकहोय हाथपैरमें दाह और देह चिकनीहोय तृषा बहुतलगै मुंह मीठारहे ये लक्षण होयँ तो जानिये कि इसके प्रमेह होगा॥

अथ प्रमेहका सामान्य लक्षण ॥

बहुत ठण्ढा और पतला मूत्रहोय तब जानिये कि इसके प्रमेह होगा ॥

अथ कफके १० प्रमेहक्रमसे लिखते हैं उदक प्रमेहका लक्षण ॥

निर्म्मल सफ़ेद और बहुत शीतल गन्धरहित जलकेसदृश कुछएकमदरंगा और चिकनामूतेउसको उदकप्रमेहकहते हैं १॥

अथ इक्षुप्रमेहका लक्षण ॥

सांठेके रसके समान मीठाहोय उसको इक्षुप्रमेहकहतेहैं २॥

अथ सान्द्रप्रमेहका लक्षण ॥

जैसे बासी पानी बासनमें धराहुआ ठण्ढा होता है वैसाही मनुष्यमूते तौ उसको सान्द्र प्रमेह कहते हैं ३ ॥

अथ सुराप्रमेहका लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें दारूकीसी बास आवै और उसकामूत्र ऊपर तौ निर्म्मल होय और नीचे मदरंगा होय उसको सुराप्रमेह कहतेहैं ४ ॥

अथ पिष्टप्रमेहका लक्षण ॥

चावलआदिके चूरनके पानीके सदृश सफ़ेद कष्ट पूर्व्वक और मूततेहुये रोमांचहोय उसको पिष्ट प्रमेह कहतेहैं ५ ॥

अथ शुक्रप्रमेहका लक्षण ॥

वीर्य्य सहितमूते उसको शुक्र प्रमेह कहते हैं ६ ॥

अथ सिकता प्रमेहका लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें वालूके कणकोंके समान कफकी फुटक आवै उसको सिकता प्रमेह कहते हैं ७ ॥

अथ शीतप्रमेहका लक्षण ॥

वारवार बहुत शीतल मूतै उसको शीतप्रमेह कहते हैं ८ ॥

अथ शनैः प्रमेहका लक्षण ॥

शनैः २ निपट मन्दमूतै उसको शनैः प्रमेह कहते हैं ९ ॥

अथ लालाप्रमेहका लक्षण ॥

लारकीतांतसहित मूते उसको लालाप्रमेह कहतेहैं १० ये दशकफके प्रमेहहैं ॥

अथ पित्तके ६ प्रमेहमें प्रथमक्षार प्रमेहका लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें खारकीसी गन्ध और वर्ण होय और खारके पानीके सदृशमूते उसको क्षार प्रमेह कहिये १ ॥

अथ नील प्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र नीलके रंगके समान उतरै उसको नीलप्रमेह कहिये २ ॥ अथ काल प्रमेह का लक्षण ॥

स्याही के समान काला मूतै उसको कालप्रमेह कहिये ३ ॥

अथ हारिद्र प्रमेह का लक्षण ॥

हलदी रंगके समान कडुआ दाहको लिये मूतै उसको हारिद्र प्रमेह कहिये ४ ॥ अथ मांजिष्ठ प्रमेहका लक्षण ॥

मंजीठके पानीके रंग सदृश मूतै और दुर्गन्ध बहुत आवै उसको मांजिष्ठ प्रमेह कहिये ५ ॥

अथ रक्त प्रमेह का लक्षण ॥

रुधिरके समान दुर्गन्धयुक्त बहुत मूतै उसको रक्त प्रमेह कहिये ६ ये पित्तके प्रमेह हैं ॥

अथ वायुके ४ प्रमेहों में प्रथम वसा प्रमेह का लक्षण ॥

शुद्ध मांसका जो घृत उसको और उसके रंगको लियेमूतै उसको वसा प्रमेह कहिये १ ॥

अथ मज्जा प्रमेह का लक्षण ॥

हाड़की मज्जाको लिये और उसके रंगके सदृश बारम्बार मूतै उसको मज्जा प्रमेह कहते हैं २ ॥

अथ क्षौद्र प्रमेह का लक्षण ॥

कसैला और शहतके सदृश मीठा और खारी जिसका मूत्र होय उसके क्षौद्र प्रमेह जानिये ३ जिस पुरुष के प्रमेह होय

और वह यत्न न करै और प्रमेह बहुत दिनका होजाय और प्र-मेह वाला कुपथ्यकरै उसके मधुप्रमेह होयहै यह असाध्य है ॥

अथ कफके प्रमेह का उपद्रव ॥

अन्न पचैनहीं भोजनमें अरुचि और छर्दि होय निद्राखांसी बहुत आवै पीनसहोय यह कफके प्रमेहके उपद्रव हैं ॥

अथ पित्तके प्रमेह का उपद्रव ॥

पेडू और इन्द्रीमें पीड़ाहोय अंडकोश फटनेलगै ज्वर । दाह तृषा । मूर्च्छा । अतीसार होयँ खट्टी डकारआवै ये पित्त प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ वायुके प्रमेह का उपद्रव ॥

जिसमें उदावर्त रोगहोय । शरीर कांपै हृदय दूखै सब रसों के खानेकी इच्छा रहै पेटमें शूलहोय निद्रा आवैनहीं शरीर सूज जाय खांसी और श्वास होय ये बात प्रमेहके उपद्रव हैं ॥

अथ प्रमेह का असाध्य लक्षण ॥

बात । पित्त । कफके उपद्रव संयुक्त जिसपुरुषके प्रमेह होय उसको असाध्य जानिये वह मरजाय और प्रमेहकी जो दश पिड़िका कही हैं तिन करिके संयुक्त जो पुरुष वहभी मरजाय ॥

अथ आत्रेयके मतके जो प्रमेह उनके नाम औरलक्षण ॥

पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिड़िकाप्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ ॥

अथ पूय प्रमेह का लक्षण ॥

पीवके समान मूतै उसको पूयप्रमेह जानिये १ ॥

अथ तक्र प्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र मट्ठे के समान उतरै और मूत्रमें मट्ठेहीकीसी वास आवै उसको तक्र प्रमेह जानिये २ ॥

अथ पिडिका प्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्र में वीर्य्य की फुटक पड़ै उसको पिड़िका प्रमेह कहिये ३ ॥

अथ शर्करा प्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र मिश्रीके सदृश मीठाहोय और मिश्रीके वर्ण के सदृश होय उसे शर्करा प्रमेह कहिये ४ ॥

अथ घृतप्रमेहका लक्षण ॥

जिसकेमूत्रकारंग घृतकेसदृशहोय उसको घृतप्रमेहकहिये५

अथ अतिमूत्र प्रमेहका लक्षण ॥

जिस पुरुषको रात्रि और दिन बहुत मूत्र उतरै और वह मनुष्य निर्बल पड़जाय उसको अतिमूत्रप्रमेह कहिये ६ ये आत्रेयके मतके प्रमेह हैं ॥

अथ प्रमेहवाले पुरुषके दशजातिकी पिडिका होयहैं तिनकानाम लिखते हैं ॥

शराबिका १ कच्छपिका २ जालिनी ३ बिनता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८ बिदारिका ९ बिद्रधि १० ॥

अथ पिडिका का लक्षण ॥

शरीरके ढूगाआदि जो पुष्टस्थान तिनके मर्मस्थानके बिषे १० सन्धिमें उपजें उनको पिड़िका कहिये ॥

अथ शराबिकाका लक्षण ॥

फुनसीऊपर तो ऊँची और जिसकेबीचमें गढ़ाहोय अर्थात् शरवेके समान शोथहोय उसको शराबिका कहिये १ ॥

अथ कच्छपिका का लक्षण ॥

पीछे कहे जो शरीरके पुष्टस्थान तिनमें सरसों के प्रमाण दाह को लिये कछुआ के आकार जो फुनसी होय उसको कच्छपिका कहते हैं २ ॥

अथ जालिनीका लक्षण ॥

जिस फुनसीमें दाह बहुतहोय और वह मांसके समूहमें होय उसको जालिनी कहिये ३ ॥

अथ बिनता का लक्षण ॥

जिस फुनसीके भीतर पीड़ाहोय और वह फुनसी बड़ीहोय

और पीठपीछे अथवा उदरमें होय उसे बिनता कहिये ४ ॥

अथ अलजी का लक्षण ॥

जो फुनसी लाल और काली होय बहुत फाटे पीड़ा अधिक होय उसको अलजी कहिये ५ ॥

अथ मसूरिका का लक्षण ॥

जो फुनसी मसूरके प्रमाण होय और मसूरही कासा रंग होय उसको मसूरिका कहिये ६ ॥

अथ सर्षपिका का लक्षण ॥

जो फुनसी सरसोंके प्रमाणहोय और सरसोंही कासा रंग होय उसको सर्षपिका कहिये ७ ॥

अथ पुत्रिणी का लक्षण ॥

जो फुनसी उठतेही बड़ीउठे उसको पुत्रिणी कहिये ८ ॥

अथ विदारिका का लक्षण ॥

जो फुनसी बिदारीकन्दके सदृश गोलहोय और कड़ी होय और वैसाही रंगहोय उसको बिदारिका कहिये ९ ॥

अथ विद्रधि का लक्षण ॥

बिद्रधिरोग ६ प्रकारकाहै उसके लक्षण पीछे लिखे हैं सो यहांभी जान लीजिये दश पिड़िका प्रमेहवाले रोगीके होय हैं और जिसकामेद दुष्टहोय उसके विना प्रमेहभी होयहै १० ॥

अथ १० पिड़िका का उपद्रव ॥

तृषा। खांसी। मांसका संकोच। हिचकी। मन्दज्वर। विसर्प्प। मर्म्मका रोकना ये इनके उपद्रव हैं ॥

अथ पिड़िका का असाध्य लक्षण ॥

गुदा। हृदय। मस्तक। कन्धा। मर्मस्थान इन स्थानों में मन्दाग्निवालेके फुनसीहोय तो असाध्य जानिये कई आचार्यों के मतसे स्त्रीके प्रमेहरोग नहींहोता क्योंकि स्त्री के महीने के महीने स्त्रीधर्म होताहै उससे शरीरके सबरोग जातेरहै हैं ॥

अथ प्रमेह जातारहाहो उसका लक्षण ॥

जिसका मूत्र निर्मल होय और पतला पानी के समान होय कडुवा और तीखा होजाय उसका प्रमेह गया जानिये ॥

अथ रक्त पित्त रक्त प्रमेह का भेद ॥

जिसके शरीर का वर्ण हल्दीके समान होजाय और मूत्र रुधिर के समान उतरै उसके रुधिर प्रमेह जानिये या रक्त पित्त का कोप जानिये ॥

अथ प्रमेह रोगका यत्न ॥

सावां। गेहूँ। चना। अरहर। कुलत्थ। जव। मूंग। मोठ। सांठी। चावल। प्रमेह वाला इतनीवस्तु पुरानी खाय और तीखाशाकपत्र। हरिणका मांस। प्रमेह वाले को ये कुपथ्य हैं॥ गुड़को आदिले मीठीवस्तु दूध। घृत। तेल। मट्ठा। मदिरा। खटाई। सांठीकारस। पिसाअन्न। अनूपदेश का मांस प्रमेह वाला इतनीवस्तु न खाय ॥

अथ कफके १० प्रमेह वालेको यह काढ़ा योग्य है ॥

नागरमोथा। हड़कीछाल। पठानी लोध। कायफल। इनको बराबर ले जवकुटकर ५ टंकका काढ़ा प्रतिदिन शहत डालले तो पित्त कफके प्रमेह जायँ १ अथवा खस। लोध। काहूका बक्कल। रक्तचन्दन। इनको बराबर ले जवकुटकर ५ टंकका काढ़ा प्रतिदिन शहत डालले तो पित्तका प्रमेह जाय २ यह यत्न भावप्रकाश में है ॥

अथ जल प्रमेह का यत्न ॥

धववृक्षका बक्कल। कदम्बकाबक्कल। रक्तचन्दन। सालर वृक्षकाबक्कल। इनकाकाढ़ा ले तो जल प्रमेह जाय ३ ॥

अथ रक्त प्रमेह का यत्न ॥

बासीपानी में दाखअ॰किसमिसका शर्बत करै उसमें मुलहठी सुपेदचन्दन डालकर पिये तो रक्त प्रमेह जाय ४ ॥

अथ क्षार प्रमेह का यत्न ॥

सुन्दर स्त्रीके संभोग करने से क्षार प्रमेह जाय ५ ॥

अथवा धववृक्षकाबक्कल । काहूकाबक्कल । अडूसेकाबक्कल । कसेरू । केलेकेभीतर का सुपेदबक्कल । कमलकीजड़ । दाख अ०किसमिस । इनसबका काढ़ा दे तौ क्षार प्रमेह जाय ६ ॥

अथ तक्र प्रमेह का यत्न ॥

पठानीलोध । काहूकाबक्कल । खस । नींबकेपत्ते । आमला । रक्तचन्दन । इनसबका काढ़ाकरके गुड़ डाल पिये तौ तक्र प्रमेह और पिड़िका प्रमेह यह दोनों जायँ ७ ॥

अथ शुक्रप्रमेहका यत्न ॥

दूब । मूर्व्वाअ०मुरहरी । डाभकीजड़ । कासकीजड़ । दात्यूणीअ०दतइनि । मंजीठ । सालरकाबक्कल । इनकाकाढ़ा ले तौ शुक्र प्रमेह और रुधिर प्रमेह ये दोनों जायँ ८ ॥

अथ घृतप्रमेहका यत्न ॥

त्रिफला । किरमालाकीगिरी । और उसीकीजड़ । मूर्व्वा । सहँजनेकेपत्ते । नींबकेपत्ते । केलेका सुपेदबक्कल । मुनक्का दाख इनका काढ़ा दे तौ घृत प्रमेह जाय ९ ॥

अथ इक्षुप्रमेहका यत्न ॥

कूट । पित्तपापड़ा । कुटकी । मिश्री । इनकाकाढ़ा दे तौ इक्षु प्रमेह जाय १० अथवा अरणीकीजड़ । पाढ़ल । धमासा । अरलू । छीलाकीजड़ । इनका काढ़ा ले तौ इक्षु प्रमेह जाय ११ ॥

अथ पित्त प्रमेहका यत्न ॥

कमलकीजड़ । काहूकाबक्कल । इन्द्रयव । धवकाबक्कल । अमलीका बक्कल । आमला । निंबौली । इनमें मिश्री डालपिये तौ पित्तका प्रमेह जाय १२ अथवा वायविडंग । राल । काहू का बक्कल । कायफल । कदम्बका बक्कल । लोध । बिजयसार । इनका काढ़ा ले तौ पित्तका प्रमेह जाय १३ सर्व्व प्रमेह मात्र

और मूत्रग्रहको यह दूरकरैहै ॥ अथवा करिहारी। और हड़की छाल। हल्दी। काहूका बक्कल ये सब बराबरले महीनपीस इन की बराबर मिश्री मिलाय ५ टंक शहतके साथखाय तौ सब प्रकारके प्रमेह जायँ १४ ॥

अथ मधुप्रमेहका यत्न ॥

बड़कीजड़काबक्कल। अरलूकी जड़का बक्कल। चारोलीअ० चिरौंजी। आमला। बड़ीपीपल। किरमाला इन सबकीजड़का बक्कल। मुलहठी। नींबकीछाल। पटोल। बड़काछिलका। दा-त्यूणी। मेढ़ासिंगी। चित्रक। कणगचकीजड़। इन्द्रयव। त्रि-फला। शोधाभिलावां। सोंठि। कालीमिरच। तज। पत्रज। इलायची येसब बराबरले महीनपीस २॥ टंक शहतके साथले तौ मधुप्रमेह जाय १५ अथवा बड़की जटाको आदिले इनऔ-षधियोंका काढ़ादे अ० इनका तेल वा घृत करै सो तेलका तौ मर्द्दनकरै और घृतकोखाय तो मधुप्रमेह जाय १६ इतिन्यग्रो-धाद्यंचूर्णम् ॥ अथवा शोधी सोनामक्खी। पाषाणभेद। शोधा शिलाजीत। चन्दन। कचूर। पीपल। वंशलोचन ये सबबरा-बरले महीनपीस २॥ टंक ले १० टंक शहतमिलाय गौके दूध के साथप्रतिदिन पिये तौ मधुप्रमेह और मूत्रका अवरोध इन सबको यहदूरकरै है १७ यहसब यत्न आत्रेयमें लिखेहैं ॥

अथ चन्द्रप्रभा गुटिका लिखते हैं ॥

कचूर १ टंक वच १ टंक नागरमोथा १ टंक चिरायता १ टंक देवदारु १ टंक हल्दी १ टंक अतीस १ टंक दारुहल्दी १ टंक पीपलामूल १ टंक चित्रक १ टंक धनियां १ टंक त्रिफला १ टंक चव्य १ टंक गजपीपल १ टंक जवाखार १ टंक सज्जी १टंक सेंधानोन१टंक कालानोन १टंक साम्हरनोन १टंक सार ५ टंक मिश्री २ टंक शोधा शिलाजीत ४ टंक शोधागूगुल ४ टंक इनसबको महीन पृथक् २ पीसै फिर सबको मिलाय एक

रसकरै फिर शुद्धपारा १ टंक शोधीगन्धक १ टंक अभ्रक १ टंकले फिर पारे और गन्धककी कजलीकरै ये सब औषध इस में मिलावे फिर ४ माशे शहत और घृतकेसाथ ले तौ सर्व्व प्रमेह मात्र बवासीर। क्षयी। वीर्यकादोष। नेत्र और दांतका रोग। खांसी। पाण्डुरोग। पादशूल। उदरकारोग। मूत्रकृच्छ्र। मूत्राघात। फिया। कोढ़ इनसबको यह दूर करैहै १८॥ इति चन्द्रप्रभा गुटिका॥ अथवा त्रिफला ४ ट० जीरा ४ ट० धनियां ४ ट० दालचीनी २ ट० लवंग २ ट० नागकेसर २ ट० तुखमलैआ के बीज २ ट० कौंचके बीज ४ ट० छोटी इलायची २ ट० इनसबको महीन पीस एक रसकर फिर इनको मिश्री और घृतमें मिलाय १ ट० भरका लड्डूबांधे १ लड्डू प्रभात खाय तौ प्रमेह मात्र दूर होय १९—इति प्रमेहारिचूर्णम्॥

अथ मधुप्रमेह का यत्न॥

शोधापारा। शोधी गन्धक। काहूका बक्कल। मिश्री इनको बराबरले खरलमें महीन पीस सालरकी जड़की ३ पुटदे फिर खरलकर फिर इसकी १ माशेप्रमाणकी गोलीबांधे १ गोली नित्य खाय तौ मधुप्रमेह जाय २० अथवा पठानीलोध १ टंक शहत से अथवा खरैटीके काढ़ेके साथ ले तौ प्रमेह जाय २१ अथवा गिलोय सत। त्रिफला। सार ये तीनों मिलाय १ टंक शहत मिलाय खायतौ प्रमेह जाय २२ अथवा मिश्री। सिंघाड़ा। रेवंदचीनी सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० जलसे नित्य ले तौ बहुत दिवसकाभी प्रमेह जाय २३ अथवा वंगेश्वर रस १ रत्ती शहतसे और इसके ऊपर पक्के गूलरके फलका चूर्ण शहतसे ले तौ असाध्यभी प्रमेह जाय २४ अथवा पक्के गूलरकाफल १ टं० सेंधानोनके साथ खाय तौ असाध्यभी प्रमेह जाय २५॥ अथ वंगेश्वर रसकी क्रिया॥

रांगाचोखा ऽ। गलावे गलती समय ऽ= शुद्धपारा डाले

पीछे इसकी थालीमें पतली पापड़ी जमावै फिर उसका छोटा२ टुकड़ा कर जुदा रक्खै पीछे पांच २ सेरके वड़े २ गोबरके दो उपले पाथ एक उपलेके ऊपर २ सेर कसेरूका चूर्ण बिछावै और युक्ति से उसमें मेंहँदीका १सेर चूर्ण मिलावै पारा× और रांगके टुकड़ों को युक्तिसेधर ऊपर दूसरा उपलाधरै पीछे उसे युक्तिसे निर्वात स्थानमें फूंकदे फिर ठंढाकर जब उसका फूल सपेद होजाय पूरीतोल उतरै तब काढ़ ले यह वंगेश्वररसकी क्रिया है ॥ यह पृथक् २ अनोपानसे सर्वरोगमात्रकोदूर करे है २६ इति बंगेश्वर रसकी क्रिया ॥

अथ सुपारीपाक लिख्यते ॥

दक्षिणीसुपारी ८ टकेभर महीनपीस गौके ८ टकेभर घृतमें उसन ३ सेर गौके दूधमें उसका खिलावा मावाकरै पीछे इस मावे में नागकेसर ५ टं० नागरमोथा ५ टं० सपेदचन्दन ५टं० सोंठि ५ टं० कालीमिरच ५ टं० पीपल ५ टं० आंवला ५ टं० कोयलेकाबीज ५ टं० जायफल ५ टं० लवंग ५ टं० धनियां ५ टं० चारोली अर्थात् चिरोंजी ५ टं० तज ५ टं० पत्रज ५टं० इलायची ५ टं० दोनोंजीरा १० टं० सिंघाड़ा ५ टं० बंशलोचन ५ टं० इन सबको महीन पीस मावे में मिलावै पीछे ५० टकेभर मिश्रीकी चासनी करै उस चासनी में सब औषधियों समेत उस मावेको डालै पीछे उसकी १।टं० प्रमाण की गोली बांधै १ गोली प्रभात और १ संध्यासमय को खाय तो प्रमेह। जीर्णज्वर। अम्लपित्त। बवासीर। मंदाग्नि। शुक्रके दोष। और प्रदर इनको यह दूर कर शरीर को पुष्टकरै है २७ इति सुपारीपाकः ॥

अथ गोखुरूपाक ॥

गोखुरू ऽ॥ सेरले महीन पीस गौके १ सेर घृतमें मकरोवे

× जहांपरपाराडालै वहांपर सिंगरफका निकालाहुआ डालै पारे शुद्धकी अपेक्षा न होगी ॥

फिर ५ सेर गौके दूधमें इसका खिलावा मावाकरै उस मावे में बेलकी गिरी २॥ टं० कालीमिरच २॥ टं० जायफल २॥ टं० समुद्रशोष २॥ टं० इलायची २॥ टं० भीमसेनी कपूर २॥ टं० पत्रज २॥ टं० दालचीनी २॥ टं० हल्दी २॥ टं० कूट २॥ टं० तालमखाना २॥ टं० अफीम २॥ टं० इन औषधियों से आधी भांगले इन्हैं महीन पीस उस मावे में डाले पीछे ४ सेर मिश्री की चासनी करै इसपानी में औषधियों समेत मावा मिलावै पीछे ५ टं० प्रमाणकी गोली बांधे १ गोली नित्य सघती खाय तो प्रमेह को दूर कर वीर्य्य स्तम्भहो स्त्रियों को बहुत प्रसन्न करै २८ अथवा चित्रक। शोधी गन्धक। सोंठि। कालीमिरच। शुद्धपारा। शोधा सिंगीमुहरा। त्रिफला। नागरमोथा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धककी कजलीकरै पीछे इस कजली में ये औषध महीनपीस मिलावै फिर इसमें भांगर के रसकी एक पुटदे फिर खरलकरै पीछे १ टं० प्रमाणकी गोली बांधे १ गोली नित्य प्रभात समयखाय तो अठारह प्रकारका कोढ़जाय २९ इति पंचानन गुटिका॥ ये यत्न वैद्यरहस्यमें लिखेहैं अथवा भीमसेनी कपूर १ मासे कस्तूरी १ मासे अफीम ४ मा० जावित्री ४ मा० इन सब को नागरबेलके पत्तोंके रस में पीसे पीछे १ रत्ती प्रमाणकी गोली बांधे पीछे १ गोली नित्य दूध मिश्री के साथ ले तो प्रमेह मात्र दूर होय और वीर्य स्तम्भ होय ३०॥ अथ घृतप्रमेह का यत्न॥

गिलोय। चित्रक। पाढ़ कुड़ाकीछाल। भुनीहींग। कुटकी। कूट यहसब बराबरले महीनपीस २॥ टं० घृतमें ले तो घृतप्रमेह जाय ३१ अथवा आंवला। हल्दी यह बराबर ले ५ टंक रातमें भिजोय प्रभातही उसी पानीमें पीस शहतमिलाय प्रतिदिन पिये तो प्रमेहमात्र जाय ३२ अथवा शुद्धपारा। शोधी गन्धक। सार। शोधीसोनामक्खी। सोंठि। मिरच। बड़ीपी-

पल। त्रिफला। शिलाजीत। बेरकीमींगी। हल्दी। कैथ येसब बराबरले प्रथमपारे और गन्धककीकजलीकरै फिर उसमें ये औषध महीनपीस मिलावै फिर भांगरेकेरसकी २१ पुटदे फिर १।टं० प्रतिदिनखाय तौ प्रमेहमात्र दूरहोय ३३॥ इतिमेघनादरसः॥

अथवा शुद्धपारा। अभ्रक बराबरले आंवलेकेरसमें ७ दिन खरलकरै पीछे १ रत्ती नित्यखाय तौ प्रमेहमात्रजाय ३४ इति हरिशंकर रसः॥

अथवा छोटीइलायची। भीमसेनीकपूर। भारंगी। जवफल। बड़ीगोखुरू। सालरकी बक्कल। मोचरस। शुद्धपारा। अभ्रक। वंगसार ये सब बराबरले इन्हैं खरल में महीन पीस २ रत्ती नित्यशहतसेले तौ प्रमेहमात्रजाय ३५॥ इति प्रमेहकुठाररसः॥

अथवा। बकायनके बीज ५ टं० चावलके पानीसें पीसे उस में गौकाघृत मिलाय प्रतिदिन पिये तो बहुत दिनकाभी प्रमेह जाय ३६ यहयत्न सर्व्वसंग्रहसें लिखा है॥ इति प्रमेह हरण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ आत्रेयके मतसे प्रमेहपिड़िकाका लक्षण और यत्न लिखतेहैं॥

पित्तकी पिड़िका पीली अथवा। लालहोय। दाह और ज्वर होय। वायुकी पिड़िका कालीहोय शरीरकांपै। मूततेसमयशूल होय। पुरुष विकलहोजाय कफकी पिड़िका सुपेद भदरंगी शीतलहोय विलम्बसे पके। सूजन लियेहो यह सबलक्षण जिसमें होयँ उसको सन्निपातकी पिड़िका कहतेहैं॥

अथ पिड़िकाका यत्न॥

धव। काहू। कदम्ब। बेर। शीसों। नींब इनके बक्कलका काढ़ा करउसके पानीसे उसपीड़िकाको धोवै तौ पीड़िकाअच्छीहोय १॥

अथ इन्द्रीके ऊपर रादपड़गईहोय उसका यत्न॥

काहू। कदम्ब इनका बक्कल और तेंदूकी अतरछाल इनके काढ़ेसे धोवै तौ इन्द्रीकी राद अच्छीहोय २॥

अथ इन्द्रीके ऊपर वायुकी पीड़िकाहोय उसका यत्न ॥

भांगरेकारस । तुलसीकापत्र । पटोलकापत्र इनको कांजीसे पीस लेपकरै तौ पीड़िका जाय ३ ॥

अथ पित्तकी पीड़िकाका यत्न ॥

मुलहठी । कूट । रक्तचन्दन । खस । रोहिष अर्थात्‌रोहीडा। गेरू । कमलगट्टा ये दूधमेंपीस पित्तकी फुनसियोंके लेपकरै तौ दाह जाय ४ ॥ अथ इन्द्रीकीफुनसी पकजाय उसका यत्न ॥

शीतलजलसे १००बारकेधोये मक्खनका लेपकरै तौ उसका दाह दूरहोय ५ अथवा कदम्ब । काहू । दाड़िम । खैर । आंवला इनकेपत्तोंको गरमजलसेपीसलेपकरै तौ फुनसियोंकी सन्धिजाय६अथवा । त्रिफलेकेपानीके धोनेसे रादजाय७॥अथवा॥कांजी॥ मट्ठा।शीतलजल इनके धोनेसेरादजाय ८ ॥ यह यत्न आत्रेय में लिखाहै ॥ अथ रसरत्नाकरका यत्न ॥

कपासकी मींगी भैंसके मट्ठेमें ७ दिन खरलकरै फिर उसमें से २ मासे नित्य खाय तौ लालाप्रमेह जाय १ ॥

अथ मूत्रप्रमेहका यत्न ॥

माराहुआपारा । बंग । अथवा । बंगेश्वर । सार । अभ्रक इन सबको बराबरले शहतमें एकदिन खरलकरै फिर १ मासेशहत से नित्यखायतौ बहुमूत्रप्रमेह जाय २ इति तालक रसः ॥इस रसके लेनेके पीछे पक्केगूलरके फलका २॥ टं० चूर्णऊपर से ले तौ बहुमूत्रप्रमेह जाय ३ ॥

अथवा । पंचवक्त्र रस २मासे ले तौ मूत्रप्रमेह जाय ४ यह यत्न रसरत्नाकरमें है ॥ इतिप्रमेह और प्रमेह पीड़िका रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेमूत्रकृच्छ्र मूत्राघातअश्मरीशर्कराप्रमेहइनसबरोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्ति लक्षणयत्ननिरूपणंनामद्वादशस्तरंगः १२ ॥

अथ मेदरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत ऐसे आरामकेकरने और बैठेरहने दिनके सोनेसेऔर कफकारी वस्तु और मधुर अन्न घृतको आदिले चिकनी वस्तु के खानेसे मेदबढ़ैहै तब पुरुष कुछकाम नहीं करसक्ता क्योंकि और जो हाड़। मज्जा। वीर्य्य आदि धातुहैं वे मेदके बढ़ने से पुष्टहोयँ नहीं और पुरुष निकम्मा होजाय १ ॥

अथ मेदके और दोष लिखतेहैं ॥

जिसके मेदहोय उसकेक्षुद्र। श्वास। तृषा। मोह ये होयँ कराहता सोवै शरीर में पीड़ा होय। छींक और पसीना आवै शरीर दुर्गन्धहोय मैथुन करनेकी सामर्थ्यहोय नहीं ये मेदवाले के लक्षणहैं॥

अथ मेदका स्थान ॥

प्राणीमात्रके उदर में मेदरहता है इसकारण मेद उदरको बढ़ावै और दीप्यमान करै है क्योंकि मेद करिकै ढका है मार्ग जिसका ऐसी जोवायु सो कोष्ठहीमें विचरकर अग्निको देदीप्त कर भोजनहीकी बासना रक्खे तब मनुष्यके बहुत खानेसे अनेक भयंकर रोग बहुत दिनोंमें उत्पन्नहोयँ फिर उदरमें रहती जो अग्नि और पवन उससे स्थूलहुआ जो वह मेदवालापुरुष उसको दग्धकरै फिर मेदके बहुत बढ़नेसे पेटमें रहतीजो बात पित्त। अग्नि। वह बहुत बिकारोंको उत्पन्न कर उस पुरुष को मारै है ॥

अथ स्थूलका लक्षण ॥

मेद मांस जब बहुत बढ़ै तब पुरुषके चूतड़। उदर स्थान बढ़के थल २ हालै और पुरुषका बल। मांस। उत्साह जाता रहै उसको स्थूल कहते हैं पीछे स्थूल पुरुषके विसर्प भगन्दर। विषमज्वर। अतीसार। बवासीर। पामा आदि भयंकर औरभी रोग होयँ है ॥

अथ मेदवाले रोगीका यत्न ॥

पुराना चावल। मूंग। कुलत्थ। कोन्दों यह खाय और लिखना अग्निकर्म्म। स्वेद। चिन्ता। कुश्ती। मार्ग चलना शहत

और जवका खाना। जागना। खारारस। अरण्डके पत्तोंकीत-रकारी। हींग। चावलकामाड़ इतनीबस्तु इस रोगवाले को खाना योग्यहै॥ अथवा गिलोय। त्रिफला इनके काढ़े से मेद रोग जाय १ अथवा गिलोय। त्रिफला इनके काढ़ेमें सार औ शहत मिलाय पीवै तौ मेदरोग जाय २ अथवा गरम अन्नखाय चावल का माड़ पिये तौ मेदरोग जाय ३ अथवा बासी ठण्ढे पानीमें शहत डाल पीवै तौ मेदरोग जाय ४ अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। चित्रक। त्रिफला। नागरमोथा। बायबिड़ंग इनके काढ़ेमें गूगल डाल पीवै तौ यहरोगजाय ५ अथवा पी-पल। शहतसे प्रतिदिन खायतौ मेदरोग जाय ६ अथवा बड़-वानलरस। शुद्धपारा। तामेश्वर। सार। बीजाबोल इन्हें बरा-बरले महीनपीस कूकर भांगरेके रसमें ३ दिन खरलकरै पीछे २ रत्ती प्रमाण प्रतिदिन शहतसे चाटै तौ मेदरोग जाय ७ इतिबड़वानलरसः॥

अथवा धतूरेके पत्तोंके रसका मर्द्दनकरै तौ मेदरोगजाय ८ यहवैद्यरहस्यमेंहै अथवा चव्य। सपेदजीरा। सोंठि। कालीमि-रच। बड़ीपीपल। भुनीहींग। कालानोन येसब बराबरलेमहीन पीस जवकेसत्तूके साथ २॥टंक प्रतिदिनखायतौ मेदरोगजाय ९ यहचक्रदत्तमेंहै अथवा बायबिड़ंग।सोंठि। जवाखार। पीपल। सार इन्हें महीनपीस उसमें १ टंक जव। और आंवलाका चूर्ण मिलाय शहतसे ले तौ यह रोग जाय १० अथवा बेरके पत्तों को कांजी के पानी में डाल और इस में अरणी का रस और शिलाजीत डालकर पिये तौ मेदरोग जाय ११ अथवा गिलोय। इलायची। कुड़ाकी छाल। आमला यह सब अनुक्रमसे एक से एक अधिक और इन सबके बराबर गूगलले इनको एकरस कर पीछे १। टंक शहतके साथले तौ मेदरोग और भगन्दरसब जायँ इति अमृत गूगल १२ यह चक्रदत्त में है अथवा त्रिफला।

निसोत मूर्व्वा अर्थात् मुलहटी। अतीस। चित्रक। अडूसा। नींबका वक्कल। किरमाला की गिरी। पीपलामूल। दोनोंहल्दी। गिलोय। इन्द्रायण। पीपल। कूट। सरसों। सोंठि ये सब बराबरले इनका काढ़ाकर उसमें तुलसीका रस अनुमान माफिक डालै फिर इससें तेल पकावे फिर इसतेलका मर्द्दनकरे अथवा बदलदे बस्तिकर्म करै तौ मेद और कफके रोग दूर होयँ १३ इति त्रिफलाद्यंतैलं यह चक्रदत्त में है इति मेद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ देहमें पसीनेसे दुर्गन्धआतीहोय उसका यत्न ॥

अडूसेके पत्तों के रससें शंखका चूर्ण मिलाय लेपकरै तौ शरीर की दुर्गन्धजाय १ अथवा बेलके पत्तों में शंखका चूर्ण मिलाय लेप करै तौ शरीर की दुर्गन्ध जाय २ ॥

अथ कांखमें बास आती हो उसका यत्न ॥

नींबूके पत्तोंके रसका लेप करै तौ कांखकी दुर्गन्ध जाय १ अथवा हल्दी को अधजली कर पानीमें पीसकर लेपकरै तौ कांखकी दुर्गन्ध जाय २ अथवा नागकेसर। सिरसकावक्कल। पठानी लोध। खस। हडकी छाल इनको पानीमें पीस उबटनकरै तौ शरीर की दुर्गन्ध जाय ३ अथवा बेरके पत्तों को जलमें महीनपीस शरीर में मर्द्दनकरै स्नानकरै तौ शरीर की दुर्गन्ध जाय ४ ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ शरीरकी दुर्गन्ध दूरहोनेका उबटन ॥

ताम्बूल। हडकीछाल। कूट इनको पानी में पीस शरीर में मर्द्दन करै तौ शरीरकी दुर्गन्ध जाय ५ यह वृन्द में है ॥

अथ स्त्रीका अच्छा रंगकरनेका लेप ॥

हडकी छाल। पठानीलोध। नींबकेपत्ते। अनारका छिलका। आमका वक्कल। इनको जलमें महीनपीस शरीर में लेपकरैतौ शरीरकी कांतिहोय ६ यह काशीनाथ पद्धतिमें लिखा है ॥

अथ कांखकी दुर्गन्धदूरहोनेका दूसरा यत्न॥

कूट। दोनौंहलदी। इनको गौके मूत्र अथवा गोबरमें पीस लेपकरै तौ कांखकी दुर्गन्धजाय और इससेकोढ़भीजाय ७ यह चक्रदत्त में है॥ अथ शरीरकी दुर्गन्धदूरहोनेका यत्न॥

कुलत्थ। कूट। छारछबीला। सपेद चन्दन। भुंनेजवका चूर्ण। तज। बच। इनको जलसे महीनपीस शरीर में लेपकरै तौ शरीर की दुर्गन्ध जाय ८ यह शार्ङ्गधर में है॥

अथ कार्श्य रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

कार्श्य रोगको लौकिकमें क्षीणकहतेहैं बादी और सूखेअन्नके खानेसे लंघन। मैथुन। खेद। इनसबकेकरनेसे। भयसे धन पुत्रादिकके नष्टहोनेके शोचसे इन कारणोंसे पुरुषके कार्श्यरोग उत्पन्न होता है॥

अथ कार्श्यरोग का लक्षण॥

कूला। उदर। कन्धे। ये सूखजायँ। नसें निकलआवैं हाड़ चमड़ा शरीर में बाकी रहिजाय। शरीर दुर्ब्बल होजाय ये लक्षण होयँ तो क्षीणताकारोग मनुष्यके जानिये॥

अथ मनुष्य अत्यन्त क्षीणपड़जाय उसके इतने रोगहोयँ॥

संग्रहणी। अफराको आदिले और भी रोग होयँ औरबहुत से पुरुष देखनेको दुर्ब्बल होते हैं उनके शरीर में मेदकाभाग तौ थोड़ा और वीर्यका भाग बहुत होय वे मैथुन बहुत करैं और बंधेज भी बहुत रहैं और स्त्रियों के गर्भस्थित करदें और कोई देखने में तौ शरीरके पुष्ट और बलहीन और मैथुनादिकमें सामर्थ्य रहित उनको क्षीण कहते हैं उनके शरीर में मेदका भाग तौ बहुत और वीर्यका भाग थोड़ाहोताहै इससे उनको भी क्षीणही कहिये॥

अथ कृशनाम क्षीणता का यत्न॥

जितनी बलकारी और बन्धेज की औषध हैं और जितने

पुष्टकारी घृत दूध मांस आदिक पदार्थ हैं उनसे क्षीणता का रोग दूर होता है १ और इसके यत्न पुष्टाई के ग्रन्थकी समाप्ति में लिखे हैं ॥ अथ क्षीणताका असाध्य लक्षण ॥

जिस पुरुषके स्वतःस्वभावसे क्षीणता और मन्दाग्नि होय और सदा शरीर दुर्बल रहै उसका यत्न नहीं है ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ इतिकार्श्यनाम रोगकी उत्पत्ति लक्षणयत्न ॥

अथ उदररोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

सब उदररोग ८ प्रकारके हैं सो वे मन्दाग्नि वाले पुरुषके निश्चय उत्पन्न होय हैं और अजीर्णसे अनन्तरोग उपजै हैं ॥ ऐसी २ वस्तुओंके खानेसे उदररोग होता है और दोषोंकासमूह और मल और आमकासंचय कोष्ठमें होय तौ पुरुषके उदररोग होता है ॥ अथ उदररोगकी उत्पत्ति ॥

कुपथ्यसे संचयको प्राप्तहुआ जोबात पित्त कफ सो जलके लेचलनेवाली नसोंको रोकै है और हृदयकी पवन अग्नि गुदाकी पवन इनको बहुत दूषित कर ८ प्रकारके उदररोग को उत्पन्न करै है ॥ अथ उदररोगका सामान्य लक्षण ॥

पेटमें अफरा होय चलने फिरनेकी सामर्थ्य जातीरहै शरीर दुर्बलहोय । मन्दाग्निहोय । शरीर में सूजन और हाड़ों में हड़फूटन होय मल मूत्र अच्छे प्रकार उतरै नहीं शरीर में दाह होय ये लक्षण होयँ तौ जानिये कि इस के उदररोग है ॥

अथ आठप्रकारके उदररोग लिखते हैं ॥

वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ फियाका ५ मलबन्दहोने का ६ चोटलगने का ७ जलोदर का ८ ॥

अथ वातोदरका लक्षण ॥

जिसपुरुषके पैर हाथ नाभिमें सूजनहोय । कोख । पसली । कटि । पीठ और सन्धि २ में पीड़ा होय रूखा खांसे शरीर भारीरहै । मल उतरै नहीं । शरीरकी त्वचा । नख । नेत्र काले

पड़जायँ । पेटमेंपीड़ा । और अफरा होय । पेट बोलाकरै ये लक्षण होयँ तौ बातका विकार जानिये १ ॥

अथ पित्तोदरका लक्षण ॥

जिसमें ज्वर । मूर्च्छा । दाह । तृषा ये होयँ मुख कडुवारहै घुमेर अतीसार ये सब रोगहोयँ और शरीरकी त्वचा पीलीहरी होय । शरीरमें पसीना आवै । और दाहहोय । धुयेंकोलिये डकार आवै । त्वचाका स्पर्श कोमल होय । त्वचा पकीसी होजाय ये जिसमें लक्षण होयँ तिसके पितका उदर रोग जानिये २ ॥

अथ कफोदर रोगका लक्षण ॥

जिसके शरीरमें पीड़ाहोय । सोवै बहुत । सूजनहोय । शरीर भारीरहै । हियादूखै । भोजनमें अरुचिहोय । देरमेंपचै । शरीर ठंढारहै । और पेट बोलाकरै ये लक्षग जिसमें होयँ उसे कफोदर कहिये ३ और जिसमें ये सब लक्षग मिले होयँ उसे सन्निपात का उदर रोग कहिये ४ ॥

अथ दुष्योदरका लक्षण ॥

जिस पुरुषका शत्रु किसीप्रकार सिंहकानख अथवा मूछका बाल और किसी दुष्टजानवर का मल मूत्र रुधिर वीर्य्य अथवा जहर किसीमें मिलाय वा अन्नपानमें खिलाय दे उसके दुष्योदर उत्पन्न होताहै सो उसके शरीरका रुधिर । वात । पित्त । कफ ये सब कोपित होकर दुष्योदर सन्निपात का भयंकर उदररोगको उत्पन्न करैहै फिर वह उदररोग बर्षाऋतु में कोपित होकर पुरुषको बहुत दुःखितकर मूर्च्छित करै मृत्युतुल्य करदे उसको दुष्योदर कहिये ५ ॥

अथ प्लीहोदर अर्थात् फियाका लक्षण ॥

गर्म वस्तुके खाने और गर्मवस्तुके पीनेसे दुष्ट हुआ जो रुधिर सो कफसे प्लीहको बढावै है पीछे बढाफिया बाईं पसली में उदरके रोगोंको उत्पन्न करैहै इससे पीड़ित मनुष्यकेमन्दा-

ग्नि जीर्णज्वर होय बल जातारहै ये लक्षण होयँ तौ प्लीहोदर कहिये ६ ॥ अथ मलके बद्धगुदोदरका लक्षण ॥

जोपुरुष बिना शोधा अन्नखाय उसमें बाल। कांकर। रेत। धूल ये मिलेहोयँ उसके दोषोंको लिये मलका संचय होय तब वह पुरुषके कष्टसे थोड़ा गुदाकेद्वारा मल उतरै और उसपुरुष का हृदय। नाभि बढ़जाय उसको वैद्य बद्धगुदोदर कहतेहैं ७॥

अथ छतोदर का लक्षण ॥

जो पुरुष पाषाणको आदिले रेतसे मिला अन्न खाय उस पुरुषकी आंतोंको काटि अन्न जलके सदृशहोकर गुदाके द्वारा निकले और उसकीगुदा रात्रिदिनबहाकरै और उसकी पेडूबढ़ै और पेडूमेंपीड़ाहोय उसको छतोदरकहते हैं८॥ छतोदर और बद्धगुदोदर एकहीहैं ॥ अथ जलोदरका लक्षण ॥

घृतको खाय वस्तिकर्म्म कराय जुलाबले वमन करके शीतल जल जो पुरुष पिये उसको जलकी बहनेवाली जो नसैं सो दूषितहो और स्नेह करके लिपी जो वहीनसैं तिनमें जलोदरको उत्पन्न करैहै और उस शीतल जलसे उत्पन्नहुआ जो जलोदर सोनाभिके ओर पास गोल और चिकना होय पानीकी मशक समान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उससे बहुतदुःखीहोय और उस का शरीर कांपै ये लक्षणहोयँ उसको जलोदर कहिये ९ ॥

ये सब आठों उदररोग उत्पन्न होतेही कष्ट साध्य हैं और बलवान् पुरुषके जलोदर तत्काल होय सो साध्यहै ॥

अथ उदररोगोंका असाध्य लक्षण ॥

बद्धगुदोदरहोय तौ एकपक्ष उपरान्त असाध्य जानिये और जलोदर असाध्यहीहै अथवा पसलियोंमें शूलचलै नेत्रोंकेऊपर सूजन होय और इन्द्री बांकीहोय और जिसके शरीरकी त्वचा गलजाय शरीर का रुधिर मांस सब जातारहै अग्निमन्द होजाय वह पुरुष असाध्य जानिये ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

पसलियोंमें शूलचलै पसली टूटीसी होजाय अन्नसे रुचि जाती रहै शरीरमें सूजन होय और अतीसार होय और उदर खालीहोय भरासा दीखै तौ उदररोग असाध्य जानिये ॥

अथ बातोदरका यत्न ॥

दशमूलके काढे में अरण्डकातेल डालपिये तौ बातोदरजा-य १ अथवा त्रिफलेके रसमें गोमूत्र डाल पीवै तौ बातोदरजा-य २ अथवा कूट। दात्यूणी। जवाखार। पाढ । कालानोन। सेंधानोन। साम्हरनोन। खुरासानीवच। सोंठि ये सब बराबर ले महीन पीस ५ टं० गरमजल से ले तौ बातोदर जाय ३ ॥ इतिकूटादि चूर्णम् ॥

अथवा इक्कड़िया अर्थात् एकपोत्यालहसुन १०० टकेभरले उसकोपीस १६ सेर पानीमें औटावै औटतेही में सोंठि १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० साटीकीजड़ १ ट० काला-नोन १ट० बिड़नोन १ट० त्रिफला ३ ट० दात्यूणी १ट०सहजने का वकल १ ट० अजवायन १ ट० गजपीपल १ ट० निसोत ६ ट० में इन्हें महीनपीस उस लहसुनके काढे में डाले और इसमें तैल २ सेर डाल मधुरीआंचसे पकावै जब सबरस और औषध जलजायँ तेलमात्र रहजाय तब उतार वासन में भर राखै पीछे ५ टंक प्रातःकाल अपनी अग्निके माफिक पीवै तौ सब उदरके रोग मूत्रकृच्छ्र। उदावर्त्त। अंत्रवृद्धि। पार्श्वशूल। आमशूल। अरुचि। क्रिया। अष्ठीला। हड़फूटन ये सबवायुके रोग महीनाभर सेवन करनेसे जायँ ४ ॥

अथ पित्तोदरका यत्न ॥

जुलाबके लेनेसे पित्तोदर जाय ५ ॥

अथ कफोदरका यत्न ॥

निसोतका चूर्ण २॥ टं० ऊंटनी के दूधमें डाल और अरंड

का तेल ५ टं० और पीपल । पीपलामूल । चित्रक ये सब औ-
षध अधेलेभर डाल उसदूधको एकमहीने गर्मकर पिये तो क-
फोदर जाय ६ ॥ अथ सन्निपातके उदररोगका यत्न ॥

सोंठि । त्रिफला इनका काढ़ा कर उसमें दही और तेल अथवा घृतडालपकावे पीछे उस तेल अथवा घृतकोखाय तो सन्निपातका उदररोग जाय ७ अथवा गर्म्म दूधमें अरण्डका तेल और गोमूत्रडालपीवै तौ बायुका उदररोगजाय ८ अथवा मट्ठे में कालानोन पीपलडाल पीवै तो बातोदर जाय ९ अथवा मिश्री कालीमिर्च ये जलमेंपीवे तौ पित्तोदरजाय १० अथवा अजवायन । झाऊकीजड़ । सपेद जीरा । सोंठि । कालीमिर्च । पीपलछोटी इनको महीनपीस ५ टं० गर्मपानी के साथले तौ कफोदर जाय ११ अथवा सोंठि । काली मिरच । बड़ीपीपल । जवाखार । सेंधानोन इन्हें महीन पीस ५ टं० गरम्मपानी से पिये तो सन्निपातका उदररोग जाय १२ ॥

अथ नारायणचूर्णम् ॥

अजवायन । झाऊकाबक्कल । धनियां । त्रिफला । बड़ीपीपल। कालाजीरा । अजमोद । पीपलामूल । वायबिड़ंग ये सब बराबरले और दात्यूणी एक औषधके हिस्से से त्रिगुणित ले और निसोत एक औषध के भागसे दूनीले इन्द्रायण एक औषधके भागसे दूनीले थूहरकादूध सबसे चौगुनाले इन सबको महीन पीस थूहरके दूधकी १ पुटदे फिर सुखाय २॥ टं० गरम्मपानीसे ले तो उदर और वायुकेरोगोंको दूरकरै और इसको बेरके बक्कल काढ़े के साथले तो वायुके रोगों को दूरकरै और दारूसे ले तो अफरा जाय मट्ठासे ले तो बद्धकोष्ठजाय दाड़िमकेरसके साथले तो बवासीरजाय और गरम्मपानीसेले तो अजीर्णजाय और यह चूर्ण भगंदर । पाण्डु । खांसी । श्वास । अश्री । संग्रहणी । कोढ़ । मन्दाग्नि । और विषमात्र को दूर करै १३ जैसे भगवान् का

सुदर्शनचक्र दैत्यों को मारै वैसेही यह नारायणचूर्ण रोगों को दूर करै है ॥ इति नारायणचूर्णम् ॥

अथवा थूहरका दूध । दात्यूणी । त्रिफला । वायविडंग । कटेली । चित्रक । कूकर । भांगरा ये सब दोसेर ले और इससे चौगुना पानी डाले और १ सेर गोकाघृतडालै मधुरी आंच से पकावै जव ये सब जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब उतार पात्रमें भर रक्खे फिर इसमेंसे २॥ टं० ले तो जुलाब लगजाय और उदरके रोगोंको दूर करै १४ इतिनाराचघृतम् ॥ अथवा साटीकीजड़ । दारुहल्दी । पटोल अर्थात् परवर । कुटकी । हड़की छाल । नीमकी छाल । देवदारु । सोंठि । गिलोय ये सब बरावर ले इनको जवकुटकर ५ टं० का काढ़ा प्रतिदिन गोमूत्र और गूगलडाल पिये तो कफोदर पसली का शूल । श्वास पांडुरोग ये सब जायँ १५ इति पुनर्नवादिक्काथः ॥ ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा अजवायन १४ टं० भुना सुहागा २ टं० इनका चूर्णकर २ । टं० गरमजलसे ले तो उदर के सब रोग जायँ १६ अथवा पीपल ५ टं० ले और उसको थूहरके दूधमें १७ दिनतक भिजो रक्खे फिर छायामें सुखाय महीनपीस ४ मासे जलसे एक दिनके अन्तरसे ले और इसके ऊपर मट्ठा चावलखाय तो उदरका रोग जाय १७ इति उदरामयहरं चूर्णम् ॥ अथवा पीपल १००० ले उसमें थूहरके दूधकी ७ पुटदे अथवा हड़के चूर्णमें थूहरके दूधकी सातपुटदे फिर उसमें से १ । टं० गोमूत्रके साथले तो सब उदर के रोग जायँ १८ अथवा दात्यूणी अर्थात् दतुइन । पीपल । सोंठि ये सब वरावरले और इन सबसे दूना चूखले और इनसे चौथाई बिड़नोनले फिर इनकोमहीनपीस १ । टं० गर्मपानीसेलेतो क्रिया गोला । मन्दाग्नि । पांडुरोग । उदररोग इन सबको दूरकरै है १९ अथवा आकके पत्तोंमें सेंधानोन डाल मटकीमें भर उसके

मुँहको बन्दकर फूँकदे फिर उसको पीस ५ ट० प्रतिदिनमट्ठेसे अथवा ग्वारके पट्ठेसे ले तो उदरकेरोग जायँ २० अथवा गुड़। और हड़। वा गुड़। और पीपल इनको २॥ टं० नित्यखाय तो उदररोग। सूजन। पीनस। खांसी। अरुचि। जीर्णज्वर। बवासीर। संग्रहणी। कफ और वायुकेरोग इनसबको यह दूरकरै है २१ ये सबयत्न वैद्यरहस्यमें हैं॥

अथ जलोदरका यत्न॥

नीलाथोथा। आर्यलासार। गन्धक। पीपल। हड़कीछाल ये सब बराबरले इनको महीनपीस थूहरके दूधमें ५ दिनखरल करै फिर १ मासे प्रतिदिन गर्मजलसेले तो जलोदररोग जाय और रसके ऊपर चावलखाय और इमलीका शर्बत पिये २२॥ इतिउदारारिरसः॥ यह योगतरंगिणीमें है॥

अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल। पांचौनोन। सज्जी ये सब बराबरले इनसबकी बराबर शोधा जमालगोटाले इनसब में दात्यूणी के रस की ३ पुटदे फिर बिजौरेके रस की ३ पुटदे खरलकर फिर छायामें सुखावै फिर आधरत्ती प्रमाण उसमें से खाय तो उदररोग फिया गोला। अफरा। शूल। बवासीर इन सबकोदूरकरै और इसकेनेत्रमें आंजनेसे सर्पका बिषदूरहोताहै २३ इति उदयभास्कर रसः॥ येरस रत्नप्रदीप में हैं॥ अथवा आकका दूध २ टकेभर कुड़ाकीछाल १ टका थूहरकादूध ६ टका निसोत १ टका हड़कीछाल १ टका कबीला १ टका इनसबको महीनपीस इकट्ठाकर ५ सेर पानीमें घृतसमेत अग्निके ऊपर चढ़ाय मधुरी आंचसे पकावै जब पानी आदि सब जलजाय और घृतमात्ररहजाय तब उतार बासनमें भररक्खे फिर इसघृत के जितनेबूंदखाय उतनेही दस्त जुलाबमें आवैं तब उदररोग। सूजन। भगंदर। गोला इनसब को यह घृत दूरकरै २४ इति

विन्दघृतम् ॥ यह वैद्यविनोदमें है ॥ इति उदररोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविर चितेअमृतसागरनामग्रन्थेमेदरोग। कार्श्यरोग। क्षीणरोग। उदररोग। आदिकेभेदसंयुक्तउत्पत्ति लक्षणयत्ननिरूपणं नामत्रयोदशस्तरंगः १३ ॥

अथ शोथनामरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो पुरुष वमन। विरेचन। और ज्वरादिकसे अथवा लंघनादिकसे दुर्बल होय उसके खारी। खट्टी। तीखी। भारीवस्तु और दही और कच्ची मोटी वस्तु। शाक और बिरुद्धवस्तु। गेहूँके मैदाकी विषकामिला अन्न इनकेखानेसे। और बवासीर केरहनेसे। पेटमें आमहोय। और जुलाबलेने से। और चोट के लगनेसे। कच्चेगर्भके पड़नेसे। जुलाबादि पांचकर्मकरै उसमें कुपथ्यके करनेसे उसदुर्वल मनुष्यके शोथकारोग होताहै सो वह शोथकारोग ९ प्रकारकाहै वातका १ पित्तका २ कफका ३ वातपित्तका ४ वातकफका ५ कफपित्तका ६ सन्निपातका ७ चोटलगनेका ८ बिषका ९ ॥

अथ शोथका पूर्वरूप ॥

शरीरमें वातरहै और तानकर सोनेसे नसों में पीड़ा होय शरीर भारीरहै यह लक्षण होयँ तो जानिये कि इसके शोथका रोग होगा ॥

अथ शोथका सामान्य लक्षण ॥

अपने कारणसे दुष्ट हुये जो वात रक्त पित्त वे शरीरकीजो बाहरकी नसें उनमें कफको प्राप्त कर शरीरकी जो त्वचा। मांस। उसके समूह को बहुत फुलादे हैं इस कारण से इसको शोथ का रोग कहतेहैं सो वह शोथका रोग शरीर को भारी करे और मनमें आवे जहां होजाय और शोथमें उष्णता होय नसें निकल आवें रोमांचहोय शरीरका वर्ण और का औरहो-

जाय ये लक्षण होयँ तौ शोथका रोग जानिये अथवा काली-सूजनहोजाय तौ वह सेंकादिक करनेसे अच्छीहोय औरदिनमें सूजन बहुतहोय तौ बातकी सूजन कहिये १ ॥

अथ पित्तकी सूजनका लक्षण ॥

शरीरकी त्वचा कोमल और गन्धयुक्त पीली और ललाई लियेहोय शरीरघूमे ज्वरहोय पसीना बहुतआवै तृषालगै मद हो शरीरका स्पर्श सुहावैनहीं नेत्रलालहोयँ शरीरकी त्वचा में दाहबहुत होय ये लक्षणहोयँ तो पित्तकी सूजन जानिये २ ॥

अथ कफकी सूजनका लक्षण ॥

जिस सूजनमें शरीरभारीरहै और त्वचा पीलीहोय नींदअधिकआवै अग्निमन्दहोय सूजनऊंची नहींहोय भोजनसे रुचि जातीरहै रात्रिमें बढ़जाय ये लक्षण जिसमें होयँ उसे कफकी सूजन कहिये ३ और २ दोषोंके जिसमें लक्षणमिले होयँ उसे २ दोषों की सूजन कहिये ४ और जिससूजन में सर्वदोषों के लक्षणमिलें उसको सन्निपातकी सूजन कहिये ५ ॥

अथ चोटलगनेसे उपजी जो सूजन उसका लक्षण ॥

शस्त्रादिकके लगनेसे अथवा शीतपवन लगनेसे अथवादही के खानेसे अथवा भिलावांके लगनेसे अथवा कौंचलगने से अथवा जिमींकन्द आदिके लगनेसे उपजी जो सूजन सो वह एक जगहकी सूजन सब शरीरमें फैलजाय और उसमें दाह बहुतहोय लालहोआवे और पित्तकेसर्वलक्षण सूजनमेंहोयँ उसे शस्त्रादिकके लगनेकी सूजन जानिये ६ ॥

अथ विषैले जानवरसे उपजी सूजनका लक्षण ॥

विषैले जानवरके मूत्रके स्पर्शकरनेसे अथवा दांतकेलगने से अथवा दांतकेकाटनेसे नखके लगनेसे विषैले जानवरकेमल मूत्र वीर्यके स्पर्शकरनेसे विषवृक्षके पवनके स्पर्शकरनेसे जहर के खानेसे अथवा लगनेसे सूजनहोय ॥

अथ इनसवका लक्षण ॥

जिस सूजनमें पीड़ा बहुतहोय शरीरमें बहुतफैलै दाहहोय तब जानिये यह बिषकी सूजनहै ७॥

अथ सूजनका उपद्रव ॥

श्वास तृषा छर्दिहोय शरीर दुर्बल होजाय ज्वरहोय भोजन से रुचि जातीरहै ये इसके उपद्रवहैं इस उपद्रव वालेका यत्नकीजिये नहीं ॥ अथ सूजनका कष्टसाध्य लक्षण ॥

पेडूसे ले स्तनोंतक सूजन होय तो कष्टसाध्य है और सर्व शरीरमें होय वह असाध्य है ॥

अथ सूजन का पुनः असाध्य लक्षण ॥

पुरुषके तो प्रथम पैरसेले मुखके ऊपरतक सूजनचढ़ै स्त्रीके प्रथम मुखके ऊपर होय पैरतक आवै वह असाध्यहै इसका यत्न नहीं है और प्रथम पेडूमें होय और फिर सर्वत्र फैले दोनों को असाध्य जानिये १॥

अथ शोथरोग अर्थात् सूजनका यत्न ॥

सोंठि। साटीकीजड़। अरंडकीछाल। बड़ीपीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक इनका काढ़ा ले तो वायुका शोथजाय १ अथवा पटोल अ॰परवरके पत्ते। त्रिफला (नींबकीछाल) दारुहल्दी इनका काढ़ा गूगल डालले तो पित्तकी सूजनजाय और तृषा ज्वरको भी यह काढ़ा दूरकरै है २॥

अथ कफकी सूजन का यत्न ॥

बड़ी पीपल अथवा हड़को थूहरके दूधमें भिगोय ३ दिन पीछे इन्हें सुखाय महीनपीस २॥ टं॰ नित्य १० दिनले तौ कफ और सन्निपातकी सूजन जाय ३॥

अथ भिलावें की सूजन का यत्न ॥

तिल और गीली मट्टी भैंसके दूधमें अथवा मक्खनमें पीस लेपकरै तौ भिलावांकी सूजन दूर होय ४ अथवा मुलहठी।

कालेतिल। भैंसका दूध इनको मक्खनमें पीस लेपकरै तौ भिलावे की सूजन जाय ५ अथवा सालवृक्षके पत्तों को पीस लेप करै तौ भिलावे की सूजन जाय ६ और बिषकी सूजनका यत्न बिषके प्रकरणमें लिखेंगे ॥

अथ शोथरोगका सामान्य यत्न ॥

हड़की छाल। हल्दी। भारंगी। गिलोय। चित्रक। दारुहल्दी। साटीकी जड़। देवदारु। सोंठि इनका काढ़ा ले तौ उदर। पैर। मुंह इनकी सूजन तुरंत दूर होय ७—इति पथ्यादि क्काथः ॥

अथ पोतेकी सूजन का यत्न ॥

त्रिफले के काढ़े में गोमूत्र डालपीवे तौ पोतेकी सूजनजाय८ अथवा बिषखपरे की जड़। देवदारु। सोंठि इनके काढ़ेसे सूजन जाय ९ अथवा दात्यूणी अ० दतइनि। निसोत। सोंठि। कालीमिरच। बड़ीपीपल। चित्रक इनका काढ़ा ले तौ सूजन जाय १० अथवा सोनामक्खी। बिषखपरा। नींबकी छाल। गोमूत्र इनका काढ़ा ले तौ सूजन जाय ११ अथवा साटी की जड़। दारुहल्दी। सोंठि। सहँजनेकी जड़। सरसों इन्हें कांजी के पानीमें पीस गरम कर लेपकरै तौ सब प्रकार की सूजनमात्र दूर होयँ १२ अथवा गुड़ अदरख या गुड़ सोंठि अथवा गुड़ और हड़की छाल अथवा गुड़ छोटी पीपल इन्हें महीन पीस २॥ ट० से १ टकेभर तक नित्य बढ़ती १ महीने भरले तौ सूजन। पीनस। कंठरोग। श्वास। खांसी। अरुचि। जीर्णज्वर। बवासीर। संग्रहणी। कफवायु के बिकार इन सब को यह दूर करै १३ ॥

अथवा बड़ी पीपल। सोंठि को महीनपीस इन की बराबर गुड़ मिलाय खाय तो सूजन। आंव। अजीर्ण। शूल इन को दूर करै है १४ अथवा गुड़ ३ ट० सोंठि ३ ट० पीपल ३ ट० मंडूर १ ट० तिल १ ट० इन सब को महीनपीस इनको एक

जीवकरै पीछे २॥ टं० प्रतिदिन खाय तौ सर्वप्रकार की सूजन जाय १५ अथवा सूखी मूली । साटीकीजड़ । दारुहल्दी । रास्ना । सोंठि इनका काढ़ा कर काढ़े के रस में तेल पकाले पीछे इस तेलका मर्दन करै तौ शूल संयुक्त सूजन जाय १६ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ सूजनके दाहके दूरकरने का लेप ॥

बहेड़ेकी मींगीको पानीमें पीस लेपकरै तौ सूजनका दाह दूरहोय १७ अथवा साटीकीजड़ । दारुहल्दी । गिलोय । पाढ़ । सोंठि।गोखुरू ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस २॥ टं० गोमूत्र संपीवे तौ सर्वप्रकारकी सब शरीरमें फैलीहुई सूजन और इस से आठ प्रकारके उदर रोग और व्रणमात्र जायँ १८—इति पुनर्नवादिचूर्णम् ॥

अथवा साटीकी जड़ । हड़की छाल । नींबकी छाल । दारुहल्दी । कुटकी । परवर । गिलोय । सोंठि इनका काढ़ाकर गोमूत्र डालपीवै तौ सर्वांगशोथ । खांसी । श्वास । उदररोग । पांडुरोग इन सबको यह दूरकरै है १९—इति पुनर्नवादि क्वाथः ॥ इति शोथनाम सूजन रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ अंत्रवृद्धिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अंत्रवृद्धि ६ प्रकारकी है ॥ वायुकी १ पित्तकी २ कफकी ३ रुधिरकी ४ मेदकी ५ मूत्रकी ६ अंत्रवृद्धि एकप्रकारकीवायुकी ॥

अथ अंत्रवृद्धिका सामान्य लक्षण ॥

अधोगामी जो पवन सो अपनेही कारणसे कुपितहोय अंडकोशमें और जांघोंकी संधियोंमें प्राप्तहो उनमेंही विचरतीहुई सूजन और शूलकोकरै और पीछे उनदोनों अण्डकोशों और उनकी खालके भंडारेको वहनेवाली जो नसें तिनमें वह दुष्ट पवन प्राप्तहो उननसोंको पीड़ितकरै और उनदोनों अण्डकोशों और उनके भंडारोंको बढ़ायदेहै उसे वैद्य अंत्रवृद्धिकहै हैं ॥

अथ वायुकी अंत्रवृद्धिका लक्षण ॥

वायुकरके भरी जैसी लुहारकी धमनी उसकासा स्पर्शहोय और रूखीहोय और बिनाकारणही उसमें पीड़ा होय उसको वायुकी अंत्रवृद्धिकहिये १ ॥

अथ पित्तकी अंत्रवृद्धिका लक्षण ॥

जिसका रंग पके गूलरके फलके समान होय और जिसमें दाह और पाकहोय उसे पित्तकी अंत्रवृद्धि कहिये २॥

अथ कफकी अंत्रवृद्धिका लक्षण ॥

जो अंत्रवृद्धि शीतलभारी चिकनीहोय और उसमें खुजली चलै कड़ीहोय और उसमें पीड़ा थोड़ीहोय तो कफकी अंत्रवृद्धि जानिये ३ ॥ अथ रुधिरके दोषकी अंत्रवृद्धिका लक्षण॥

कालीहोय फोड़े जिसमेंबहुतहोयँ और पित्तकी अंत्रवृद्धिके लक्षणमिलें उसे रक्तदोषकी अंत्रवृद्धि कहिये ४ ॥

अथ मेदकी अंत्रवृद्धिका लक्षण॥

सब कफकेसे जिसमें लक्षणहोयँ और कोमल ताड़के फल सदृशहोय उसे मेदकी अंत्रवृद्धि कहिये ५ ॥

अथ मूत्ररोकने की अंत्रवृद्धिका लक्षण॥

जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै और मार्गचलै उसके मशकके सदृश कोमल अण्डकोश बढ़ै और उनमें पीड़ा होय और मूत्र कष्टसे उतरे उसे मूत्ररोकनेकी अंत्रवृद्धि कहिये ६॥

अथ सामान्य अंत्रवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिन वस्तुओंसे वायु कोपको प्राप्तहोय ऐसा तो भोजन करे और शीतल जल में स्नान करे मल मूत्रके वेगको रोकै युद्धमें रहै भारको उठावै मार्गचलै अंगोंको तोड़ै और कोईभयंकर वस्तुको करै इन कारणोंसे पवन संकुचित होय शरीरकी छोटी आंतोंके अवयवोंको अपने स्थानसे नीचे प्राप्त कर पेडू और जांघ की सन्धिमें अफरा करे पीछे मनुष्य अण्डकोश

को हाथसेखींचे तब वहअरण्डकोश बोलिके अपने स्थानमेंबैठ जाय और फिर किसीतरह अफरा होय तब बाहर निकलआवे और जिस पुरुषके बायुकासंचय बहुतहोय उसके आंतोंकाअवयवमिलि अंत्रवृद्धिकोकरैहै वह अंत्रवृद्धि बायुकीवृद्धिकेतुल्यहै यहरोग असाध्यहै १ ॥ अथ अंत्रवृद्धिका यत्न ॥

दूधमें अरण्डका तेल डाल १ महीनेतक पीवै तौ बायु की अंत्रवृद्धिजाय १ अथवा गूगल अरण्डका तेल ये दोनोंगोमूत्रमें मिलाय पीवै तौ पित्तकी अंत्रवृद्धिजाय २ अथवा रक्तचन्दन। महुआ। कमलगट्टा। खस । कमलकी जड़ ये सब बराबर ले पीछे इन्हें दूधमें महीनपीस अंडकोशमें लेप करै तौ पित्तकी अंत्रवृद्धि दाहपीड़ा इनको यह लेप दूरकरै है ३ अथवा सोंठि। कालीमिरच। पीपल । त्रिफला इनका काढ़ा ले उसमें जवाखार। सेंधानोन डालपीवै तौ कफकी अंत्रवृद्धि जाय ४ अथवा रूखी कड़वी तूंबीका सुहाता २ लेपकरै और अरंडके पानीका तरेड़ादे तौ सर्वप्रकारकी अंत्रवृद्धि जाय ५ अथवा बारम्बार जोंक लगायके उसजगहका रुधिर कढ़वायाकरै तो रक्तके कोप की अंत्रवृद्धि जाय ६ अथवा जुलाबसे रक्तकी अंत्रवृद्धि जाय७ अथवा मिश्री शहत पानी में मिलाय पीवै तौ रक्तके कोपकी अंत्रवृद्धिजाय ८ अथवा शीतलद्रव्यके लेपसे रक्त औ रक्त पित्तकी अंत्रवृद्धिजाय ९ अथवा तुलसीके पत्तोंका सिझाय उसका सुहाता २ लेपकरै तौ मेदकी अंत्रवृद्धि जाय १० ॥

अथ गोसा उतरगयाहोय उसका यत्न ॥

भेड़काघृत कांसीकी थालीमें मथै उसमें रालमिलावै पीछे और मथै फिर थोड़ा सिंगीमुहरा मिलावै फिर इसको गोसेके मर्द्दनकरै तो गोसा अच्छा होजाय ११ ॥

अथ अंत्रवृद्धिकी औषध ॥

खैरका गूदा १५ टं० खुरासानीवच १० टं० सोंठि १५ ०टं

गौकादूध ८ पैसेभर इनमें सालममिश्री ८ पैसेभर मिलाय ४ टं० नित्य २१ दिनतक अण्डोंके लेपकरै तौ अंत्रवृद्धिजाय १२ अथवा अंडोंकी सीमनिको पसलियोंके नीचे महीनशस्त्रसे बेधै तो मूत्रकी अंत्रवृद्धि जाय १३ ये सबयत्न भावप्रकाशमें हैं ॥ अथवा रास्ना। मुलहठी। गिलोय। अरंडकीजड़। किरमालाकी गिरी। गोखुरू। पटोल अर्थात् परवर। अडूसा इनका काढ़ाकर अरण्डका तेल डाल पीवै तौ अंत्रवृद्धि जाय १४ अथवा हड़की छाल। चिरायता। धनियां ये सब पैसेभर लवंग पौन पैसेभर सोनामक्खी १ टं० इन सबकी बराबर मिश्रीले और मिश्रीकी बराबर शहतमिलाय प्रतिदिन २॥ टं० खाय तौ निश्चय अंत्रवृद्धि जाय १५ यह वैद्यरहस्यमें लिखा है—इति अंत्रवृद्धि की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ ब्रध्नरोग जिसे लौकिकमें वदकहैहैं उसकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत भारी और कफकारी वस्तु खाय अथवा भारी अथवा पित्तकारी मांसखाय मिथ्याविहार स्त्री संगादिकसे कुपित हुई जो पित्तसंयुक्त वायु सो पेडू और जांघों की संधिमें सूजनको लिये गांठको उत्पन्नकरै है और वह गांठ ज्वर शूलकोकरै और अंगोंमें पीड़ा करै है उसको वैद्य ब्रध्न अथवा वद कहै हैं ॥

अथ वदका यत्न ॥

हड़की छाल। बड़ीपीपल। सेंधानोन ये सब बराबर ले महीनपीस इन्हें अरंडके तेलमें भूनै पीछे २। टंक इसमेंसे खाय तौ वदरोगजाय १ अथवा सपेदजीरा। झाऊवृक्षकाबक्कल। कूट। गेहूं। बेरके पत्ते इन्हें कांजीके पानी में महीन पीस वदके लेपकरै तौ वदका रोगजाय २ यह भावप्रकाशमें है ॥ अथवा तत्काल का मारा जो कागला उसके भीतर का मलले उसे थोड़ा गरमकर वदके बांधे अथवा लेपकरै तौ तत्काल वद अच्छाहोय ३ यह वैद्यरहस्यमें है ॥ अथवा कुंदुरूको भेड़के दूधमें पीस लेप करै

तौ वह अच्छी होय ४—इति चढ़रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ गलगण्ड १ गण्डमाला २ अपची ३ ग्रन्थि ४ अर्बुद ५ इन सब रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जिस पुरुषके गलेमें अंडेकीसी कठोर सूजनहोय लटके और बड़ी होय अथवा छोटी उसे वैद्य गलगण्डरोग कहै हैं॥

अथ गलगण्डका सामान्य लक्षण॥

वायु और कफ ये दोनों गलेमें दुष्टहोयँ और गले के बीच मेदको पकड़ शनैःशनैः अण्डकी तरह अपने चिह्न को लिये लिचपिचाय देयहैं उसे गलगण्डकहिये सो गलगण्ड ३प्रकार काहै वातका १ कफका २ मेदका ३॥

अथ वायुके गलगण्डका लक्षण॥

जिसमें पीड़ाबहुतहोय और गलेकी नसें कालीहोयँ अथवा लालहोयँ और उसमें कठोरता होय और देरसे बढ़े और पके नहीं और मुंह विरसहोजाय और उसका तालू और गलासूखे ये लक्षण जिसमें होयँ उसे वायुका गलगण्ड कहिये १॥

अथ कफके गलगण्डका लक्षण॥

गले में अण्डकोश की भांति लटकतीहुई सूजन स्थिररहै और भारीहोय उसमें खुजली बहुत होय और वहशीतलहोय देरसे बढ़े और देरसे पके उसमें पीड़ा कम होय। और उसका मुख मीठा होय तालू और गला कफसे लिपासा रहै उसे कफ का गलगण्ड कहिये २॥

अथ मेदके गलगण्ड का लक्षण॥

जोगलगण्ड चिकना कोमल पीलाहोय और उसमें खुजली और पीड़ाहोय। और गलेमें घियाकी भांति लटके उसकीजड़ थोड़ीहोय। और रोगीकी देहके अनुमान माफिक घटै बढ़ै और उसका मुख चिकनाहोय वह गलेसेही बोले ये लक्षण होयँ तौ उसको मेदका गलगण्ड कहिये ३॥

॥ अथ गलगण्डका असाध्य लक्षण ॥

जिसके श्वास कठिनतासे आवै और सब शरीर कोमल होय स्वर अच्छा निकले नहीं। और वह १ वर्ष नांघिजाय भोजन से रुचिजातीरहै। और शरीर क्षीणपड़जाय तौ वह गलगण्ड वाला मरजाय ४ ॥

॥ अथ कण्ठमाला का लक्षण ॥

जिसके गलेमें अथवा कांखमें अथवा कन्धोंमें अथवा पेड़ू और जांघोंकी सन्धि २ में बेर अथवा आंवलेके प्रमाण मेद, कफ की बहुतसी गांठें पड़जायँ उसे वैद्य गंडमालाकारोग कहतेहैं ५ ॥

॥ अथ अपचीका लक्षण ॥

और जो वही गंडमाला बहुतदिनोंकी होजाय और उसमें ये लक्षण होयँ कि गांठ पकजाय और वहने लगजाय बहुत बढ़ जाय उसे अपची कहिये ६ ॥

॥ अथ अपचीका असाध्य लक्षण ॥

पसली में शूल होय। खांसी। ज्वर। और बमन होय ये लक्षण होयँ तौ असाध्य जानिये ७ ॥

॥ अथ ग्रन्थि जिसे गांठकहतेहैं उसका लक्षण ॥

वात पित्त कफ ये रुधिर मांस मेद और नसोंको दूषितकरैं और गोल ऊंची सूजन को लिये गांठ को पैदाकरैहैं उसे वैद्य ग्रन्थि रोग कहैहैं॥ सो यह गांठें ५ प्रकारकी हैं वायु की १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ नसोंकी ५ ॥

॥ अथ वायुकी गांठका लक्षण ॥

प्रथम वहगांठ त्वचाको खैंचकर बड़ीहोय पीछे उसमें चट-के चलें व्यथा बहुतहोय और जब वह फूटे तब निर्मल रुधिर निकले १ ॥

॥ अथ पित्तकी गांठका लक्षण ॥

जिसमें आगसीबलै और खिंचाव और जलन अधिकहोय लाल अथवा पीला जिसका रंग होय और जो फूटै तौ उसमेंसे बहुत गुरम रुधिर निकलै उसे पित्तकी गांठ कहिये २ ॥

॥ अथ कफकी गांठका लक्षण ॥

वह गांठ शीतलहोय और उसकावर्ण आरसीसाहोय थोडी पीडाहोय खुजली जिसके बहुतहोय पत्थरके सदृश गांठहोय देरमें बढै और वह फूटै और भदरंगी राद और रुधिर निकले ये लक्षण होयँ तौ कफकी गांठ कहिये ३ ॥

॥ अथ मेदकी गांठका लक्षण ॥

शरीर के सदृश वह गांठबढे घटे और चिकनी होय और बडी होय और उसमें खुजली चले पीडा बहुत होय और जब वह फूटै तब खल और घृतके सदृश मल निकलै उसे मेदकी गांठ कहिये ४ ॥ अथ नसोंकी गांठका लक्षण ॥

वह गांठ निर्बल पुरुष के खेदसे उपजे नसों को संकोचित करै वायुकी गांठको उपजावै ऊंची और गोलहोय और उसमें पीडा होय और कोमल होय अथवा कडी होय पीडा भी नहीं होय और वह गांठ मर्मस्थान में होय तो निश्चय असाध्यहै या कष्टसाध्य है ५ ॥ अथ मर्मस्थान लिखते हैं ॥

गला गाल कंधे शरीर की संधि हृदय गुदा का निकट पीठ ये मर्मस्थान हैं ॥ अथ अर्बुदरोगकी उत्पत्ति ॥

जो पुरुष मांस बहुत खाता होय और अन्नादिक थोडा खाय उसके वायु पित्त कफ दुष्टहोय रुधिर और मांसको बिगाड उसके शरीर में अथवा शरीर के एकदेश में बडी गोल स्थिर जिसमें थोडी पीडा होय और जिसकी जड थोडी देरसे बढै पकै नहीं ऐसी मांस की गांठ को करै उसको वैद्य अर्बुदरोग कहै हैं सो वह अर्बुदरोग २ प्रकारका है एक तो रक्तार्बुद १ दूसरा मांसार्बुद २ ॥ अथ रक्तार्बुद का लक्षण ॥

अपने कारणसे दुष्टहुआ जो पित्त सो रुधिर और नसोंको संकुचितकर उनमें पीडा कर और उनके मांसका पिंडकर मांसके अंकुरों से उसको ढके और बढावै पीछे उसे कुछेक प-

काय रुधिर संयुक्त निरंतर बहुत बहावै उसे रुधिरका अर्बुद कहिये यह असाध्य है रक्तका नाश होने से यह शरीरमें और उपद्रव। पांडुरोग आदिको करैहै इसे रक्तार्बुद कहिये १॥

अथ मांसार्बुद की उत्पत्तिसंयुक्त लक्षण॥

जिस पुरुष को मूका घूंसाको आदिलै किसी तरहकी शरीर में चोटलगै उस जगह का मांस दुष्ट होकर उस जगह सूजन करै और उस सूजन में पीड़ा नहीं होय और उस सूजन का देहके वर्ण सदृश रंग होय चिकनी होय पकै नहीं पत्थरके सदृश कठोर और स्थिर होय उसे मांसार्बुद कहिये यह भी असाध्य है २॥ अथ अध्यर्बुदका लक्षण॥

जो अर्बुद मर्मस्थान में उपजे अथवा नसों में उपजे और वह छोटी भी होय उसे अध्यर्बुद कहिये ३॥

अथ अर्बुद रोगपकै नहीं उसका कारण॥

यह कफ और मेदके अधिकपने से पकै नहीं इसी से यह असाध्य है ४॥

अथ गलगंडको आदिले कहेहुयेरोगोंका अनुक्रमसे यत्न॥

सरसों। सहजनेकेबीज। सनकेबीज। अलसी। यव। मूली के बीज इन्हें बराबरले खट्टे मट्ठे में महीन पीस लेप करै तो गलगंड गंडमाला गांठ इन सब रोगोंको तत्काल दूर करै १ अथवा सरसों। जलकुम्भी की राख इन दोनोंको तेलमें पीस लेपकरै तो गलगंड जाय २ अथवा शंखाहूलीको जल से पीस छान प्रातसमय १५ दिनपीवै ऊपरसे बहुतसा गौकाघृत खाय तो गलगंडरोग जाय ३ अथवा कुटकी को महीनपीस उसको पक्के घियाकेफलमें रात्रिमें भिगोयराखै पीछे उसी जलमें उसे महीनपीसिछान ७ दिनपीवै तो गलगंडरोग जाय ४ अथवा गिलोय। नीमकीछाल। आकडा। कुम्भीछाल। पीपल। दोनोंसंठी। देवदारु ये सब बराबरले इनके काढ़ेमें सरसोंके तेलपकावे पीछे इस

तेलको ५ ट० नित्य १५ दिन पीवै तो गलगंडजाय ५ ॥ इति अमृतादि तैलं ॥

अथवा यव मूँग पटोल अ० परनर कडवीवस्तु रूखा अन्न वमन रुधिरका कढ़ाना ये सब गलगण्डको अच्छेहैं ६ अथवा जलकुम्भी । सेंधानोन । पीपल इन्हें महीन पीस प्रात समय सोंठि डालपीवै तौ गण्डमालाजाय ७ अथवा वरुणाकी जड़के काढ़ेमें शहतडाल पीवै तौ गण्डमालाजाय ८ अथवा कचनार का बक्कल ५ टकेभर सोंठि १ ट० पीपल १ ट० मिरच १ ट० हड़कीछाल ५ ट० बहेड़ेकीछाल ५ ट० आंवला ५ ट० वरुणा की छाल २॥ टंक तज १ टंक पत्रज १ टंक इलायची १ टंक इन्हें महीनपीस इनकी बराबर इनमें शोधागूगल मिलाय सब को एकरसकर ४ माशे प्रभातही जलसे नित्यले तौ गलगण्ड अर्बुद गांठ गोला कोढ़ भगन्दर पृथक् २ अनोपानसे इनरोगों को यह दूरकरैहै ९ इति कचनारगूगल ॥

अथवा वायबिड़ंगकी जड़का काढ़ाकर उससें जलभांगरे कारसडाल पीछे अनुमानमाफिक तेलडाल मधुरीआंचसेपकावे जब रसजलजाय तेलमात्र रहिजाय तबइसमें सिंदूरडालउतार ले पीछेइसकालेपकरै तौकण्ठमालाजाय १० इतिचक्रमर्दतैलं॥

अथवा चिरमटी अ० सपेद घुँघचिल का पंचांगले जलमें महीनपीस अनुमानमाफिक उसमें तेलडाल मधुरी आंचमें पकावै जब रस जलजाय तेलमात्ररहै तब इसका मर्दनकरै तौ कण्ठमालाजाय ११ इति गुञ्जा तैलं ॥

अथ अपचीकायत्न ॥

सरसों । नींबकेपत्ते । भिलावां इन्हें काली बकरीके मूत्रमें महीन पीस लेपकरै तौ अपचीजाय १२ अथवा रक्तचन्दन । हड़की छाल । लाख । खुरासानीवच । कुटकी इन्हें पानी में

पीस इसपानीमें तेलपकावे पीछे इसका मर्दन करे तो अपची रोग जाय १३ इति चन्दनादि तैलं ॥

अथवा सोंठि। काली मिरच। बड़ी पीपल। बायबिडंग। महुआ। सेंधानोन। देवदारु इन्हें पानीसे महीन पीस इसमें तेलडाल मधुरी आंचसे पकावे जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इस तेलकी नासले तो अपचीजाय १४ इति शुंठ्यादि तैलं ॥

अथ गांठका यत्न ॥

मूलीकाखार शंखकाचूर्ण इन्हें पानीमेंपीस लेपकरै तो गांठ अर्बुद इनको दूरकरैहै १५ और जात्यादि घृत आगे व्रणरोगमें कहाहै उससे गांठ आदि व्रणमात्र सब जायँ ॥

अथ अर्बुदरोगका यत्न ॥

हल्दी। पठानीलोध। पतंग। धमासा। मैनसिल इन्हें शहतमें महीनपीसलेपकरै तो मेदका अर्बुदरोगजाय १ अथवा मूलीकाखार। हल्दी। शंखका चूर्ण इन्हें जलमें महीन पीस लेपकरै तो अर्बुदजाय २ अथवा कूट। खारीनोन। बड़कादूध इन्हें महीन पीस लेपकरै और ऊपर बड़के पत्ते ७ दिनबांधे तो अर्बुदजाय ३ अथवा सहजनेकीजड़। और सहजनेकेबीज। सरसों। तुलसीके पत्ते। यच। कनेरका बक्कल। इन्द्रयव येसब बराबरले पीछे मट्ठे से महीनपीस लेपकरै तो अर्बुदजाय ४ येसब भावप्रकाशमेंलिखे हैं अथवा लालअरण्डकीजड़। छीले की जड़ इन दोनोंको चावलके पानीमें पीस लेपकरै तो गलगण्डजाय ५ अथवा किरमालाकीजड़ चावलके पानीमें पीस लेपकरै तो कण्ठमाला जाय ६ अथवा सम्हालूकीजड़ जलसे पीस लेपकरै तो कण्ठमालाजाय ७ अथवा सरसों। शूकरकी बिष्ठा इन्हें बराबरले पीछे कडुवातेल मिलाय महीनपीस ठिकरे में धरै फिर लेपकरै तो कण्ठमाला जाय ८ ये सबयत्न वैद्यरहस्य

से लिखे हैं ॥ इति गलगण्ड गण्डमाला अपची अर्बुदरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंह जीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथेशोथरोगअंडवृद्धिअंत्रवृद्धि ब्रध्ननामबदगलगंडकण्ठमालाअपचीग्रंथिनामगांठअ र्बुदइनसबरोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणं नामचतुर्दशस्तरंगः १४॥

अथ श्लीपदरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिसके पेडू और जांघोंको सन्धिमें बहुत सूजनहोय और बैठे पीड़ा बहुतकरै और वह पीड़ा ज्वरकोकरै पीछे वह सूजन उस जगहसे बढ़िके क्रमसे पैरतकआवै इसे वैद्य श्लीपदकहैं हैं और कई एक आचार्य हाथ, कान, आंखें ओष्ठ नाक इनसें भी सूजनहोय तो उसे भी श्लीपद कहै हैं सो श्लीपदरोग ४ प्रकार काहै वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ ॥

अथ वायुके श्लीपदका लक्षण ॥

काला और रूखाहोकर फटिजाय और जिसमें पीड़ाबहुत और ज्वरहोय १ ॥ अथ पित्तके श्लीपदका लक्षण ॥

पीला जिसका रंगहोय और दाह ज्वरको लियेहोय कोमल जिसका स्पर्शहोय उसे पित्तका श्लीपद जानिये २ ॥

अथ कफके श्लीपदका लक्षण ॥

चिकना पीला और स्थिरहोय सुपेदाई लियेहोय तो कफ का जानिये ये तीनों श्लीपद कफकी अधिकयता से उत्पन्न होयहैं क्योंकि बिनाकफ भारीपन और बड़ापन नहींहोता ३ ॥

अथ सन्निपातके श्लीपदका लक्षण ॥

जिस श्लीपदमें छिद्रबहुतहोयँ टपकनेलगजाय और बांबी कीतरहहोय वह श्लीपदसन्निपातकाजानिये वहअसाध्यहै ४ ॥

अथ श्लीपदका यत्न॥

इसरोगवालेकोलंघन। लेप। स्वेद। जुल्लाब। रुधिरकाकढ़ाना। गरमवस्तुकाखाना ये सब अच्छेहैं १ अथवा सरसों। सहजनेकीजड़। देवदारु। सोंठि इन्हें गोमूत्रमें पीसलेपकरै तोश्लीपदजाय २ अथवा साटीकीजड़। सोंठि। सरसों इन्हें कांजीमें पीसलेपकरै तो श्लीप्रदजाय ३ अथवा धतूरेकीजड़। अरंडकीजड़। सम्हालूकीजड़। साटीकीजड़। सहजनेकीजड़। सरसोंइन्हेंपानीमें महीनपीसलेपकरै तो श्लीपदजाय ४ अथवा सहदेईको तालफलकेरसमेंपीसलेपकरै तो श्लीपदजाय ५ अथवा साखोटक अर्थात् अखरोटवृक्षकेवक्कलकेकाढ़ेमें गोमूत्रडालपीले तो श्लीपदजाय ६ अथवा हलदी और गुड़ ये दोनों बराबरले महीन पीस एकरसकर गोमूत्रसे पीवे तो श्लीपद दाह कोढ़ इनको दूरकरै है ७ अथवा साटीकी जड़। त्रिफला। पीपल ये सब बराबरले महीन पीस २॥ टं० शहतसेले तो बहुतदिनोंकाभी श्लीपदजाय ८ अथवा बड़ीहड़के चूर्णमें अरण्डकातेलमिलाय उसमें गोमूत्रडाल १५ दिन पीवे तो श्लीपद जाय ९ ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं॥ अथवा भदायरा पीपल। सोंठि। कालीमिरच। वायविड़ंग इन्हें पानी में महीन पीस पीछे अनुमानमाफिक तेलमिलाय मधुरीआंचसे पकावे जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उतारले पीछे इसका मर्दनकरै तो श्लीपदरोग जाय १० अथवा धतूरेके बीजको एकसे बढ़ता बीसतकखाय उसके ऊपर शीतल जलपीवे तो श्लीपद जाय ११ येसब भावप्रकाशमें लिखे हैं॥ अथवा मजीठ। महुआ। रास्ना जलसाटीकीजड़ इन्हें कांजीमें महीनपीस लेपकरै तो पित्तका श्लीपद जाय १२ अथवा अँगूठेके ऊपर की नसों का रुधिर कढ़ावै तो पित्तका श्लीपदजाय १३ अथवा कसोंधी की जड़ २॥ टं० ले गऊके घृतकेसाथ पीवे तो श्लीपद जाय १४ अ-

थवा पीपल। त्रिफला। देवदारु इन्हैं महीनपीस २॥ टं० नित्य कांजीके पानीमें लेतो शुलीपद अजीर्ण बायुके रोग-किया इन सब रोगोंको यह दूरकर सुखको बहुतबढावैहै ५ इतिपिप्पल्यादिचूर्णयहवृन्दसेंहै इतिश्लीपदरोगकीउत्पत्तिलक्षणयत्न॥

अथ विद्रधि रोगकी उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

हाडोंमें रहते जो बायु पित्त कफ सो शरीरकी त्वचा रुधिर मांस मेद इन्हैं बिगाड़ शनैः पुरुषके भयंकर सूजनको पैदाकरै हैं वह सूजन गोलहोय और पीड़ाको लियेहोय और बहुत गंहरी और बडीहोय ये जिसमैं लक्षण होयँ उसे वैद्य विद्रधिरोग कहते हैं सो रोग ६ प्रकारकाहै वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ चोटलगनेका ५ रक्तविद्रधिका ६॥

अथ वायुकी विद्रधिका लक्षण॥

वह सूजनकाली अथवा लालहोय क्षणएकमें थोडीहोय और उठतेही पकने लगजाय ये लक्षण होयँ तौ वायुकी विद्रधि कहिये १॥

अथ पित्तकी विद्रधिका लक्षण॥

वह सूजन पकेपर गूलरकेफल सदृशहोय और काली होय ज्वर दाहको लियेहोय और वह तुरन्त पकिजाय ये लक्षण होयँ तो पित्तकी विद्रधि कहिये २॥

अथ कफकी विद्रधिका लक्षण॥

पांडुवर्णहोय शीतल और चिक्नीहोय और जिसमेंपीड़ा थोडी होय बहुतदिनोंमें पकै उसको कफकी विद्रधि जानिये ३॥

अथ सन्निपातकी विद्रधिका लक्षण॥

जिस सूजनमें नाना प्रकारके वर्ण और जिसमें नाना प्रकारके स्राव और वह सूजन गलाकी घांटीके निकटहोय और विषम होय कभीतो घटे कभी बढे बडीहोय और उसका पकनाविषम होय कभीतो जल्दीपके कभी देरसेपके तो सन्निपातकी विद्रधि जानिये ४॥

॥ अथ चोट लगनेकी विद्रधिका लक्षण ॥

जिसस्थानमें चोटलगै वहां जो वायुसो पित्त संयुक्तहो रुधिर को बिगाडै पीछे उसस्थानमें सूजनको करै और ज्वर तृषा दाह होय और उसविद्रधिमें पित्तकेभी लक्षण मिलेहोयँ उसको चोट लगनेकी विद्रधि कहिये ५॥

॥ अथ रक्तविद्रधिका लक्षण ॥

सूजन कालीहोय और उससें फोडे बहुतहोयँ और पीडा दाह ज्वर ये भी हों और पित्तकी विद्रधिके जिसमें सर्व लक्षण मिलें उसको रक्तकी विद्रधि कहिये ६ ॥

॥ अथ साध्यअसाध्यजाननेकेलिये अन्तरविद्रधिका लक्षण ॥

पृथक् २ अथवा मिलेहुये वायु पित्त कफ ये कुपथ्यसे कोप को प्राप्तहो शरीरमें एकगांठ गोलाके आकार बांबीकी भांति ऊंची उत्पन्नकरैहै उसको वैद्य अन्तरविद्रधि कहेहैं वह अन्तर विद्रधि १० प्रकारकीहै गुदाके विषेहोयहै १ पेडूके मुखमें २ नाभिमें ३ कुक्षिमें ४ पेडू और जांघकी संधिमें ५ हृदय और तृषाकी ६ फियामें ७ हृदयमें ८ नाभिकी दाहिनीओर ९ तृषा के स्थानमें १० ॥ ॥ अथ गुदाकी विद्रधिका लक्षण ॥

गुदामें विद्रधिहोय तो पवन अच्छीतरह सरैनहीं वा पवन रुकजाय १ पेडूके मुखमें विद्रधिहोय तो उसके मूत्रकृच्छ्र का रोगहो २ नाभिमें विद्रधिहोय तो उसके हिचकी बहुतआवैं और पेटमें अफरारहै ३ कोखमें विद्रधि होयतो उसजगह वायु का कोपहोय ४ पेडू और जांघकी संधिमें विद्रधिहोय तो कटि में पीडा बहुतहोय ५ हृदय और तृषाके स्थानके बीच विद्रधि होय तो पसुलियों का संकोचहोय और उसजगह पीडा बहुत होय ६ फियामें विद्रधिहोय तो श्वास नहीं आवे ७ हृदय में विद्रधि होय तो सबअंगोंमें पीडा होय सब अंग रुकजायँ और खाँसीहोय ८ और नाभिकी दाहिनी ओर विद्रधिहोयतो श्वास

कारोग होय ९ और तृषाके स्थानमें विद्रधिहोय तो जल बहुत पीवे धापेनहीं १०॥ अथ विद्रधिका असाध्य लक्षण॥

नाभिकेऊपर जो विद्रधि पकके फूटे उसकी राद ऊपरजाय है और नाभिकेनीचेकी जो विद्रधि पककेफूटे उसकी रादनीचे जाय है जो विद्रधिकी राद नीचे जाय सोतो प्राणीजीवे नहीं और जिस विद्रधिकी रादफूटकर ऊपरजाय वह प्राणीअच्छा होजाय १॥ अथ पुनःअसाध्य लक्षण॥

हृदय नाभि पेडूमें विद्रधिहोय सोअच्छी नहीं औरस्थान में होय सो अच्छी और विद्रधि कच्ची वा पकी या दग्धहोगई होय उसको सूजनकी तरह देख लीजिये॥

अथ भीतरकी विद्रधिका असाध्य लक्षण॥

अफरा। वमन। हिचकी। तृषाबहुतहोय पीड़ाअधिकहोय ये लक्षण होयँ तो वह प्राणी मरजाय॥

अथ विद्रधिका कष्टसाध्य लक्षण॥

विद्रधि कच्चीहोय और वायुकीहोय वडीहोय अथवा छोटी होय वा मर्म्मस्थानमें होय तौ कष्टसाध्य जानिये॥ और जो विद्रधि सन्निपातकी होय और हृदय नाभि पेडूमें होय और वह मूठीप्रमाण होय तौ असाध्य जानिये और मूठी प्रमाण मांस और रुधिरका गोलाभी होय है सो विद्रधि तो पकजाय और गोला पके नहीं यही इसमें भेदहै॥

अथ विद्रधिकायत्न॥

सर्व विद्रधिमात्र में जोंक लगाय उसका रुधिर कढावे तो विद्रधि अच्छी होय १ अथवा जुलाबसे पित्तकी विद्रधि जाय २ अथवा विद्रधि पकीनहोय तौ उसका सूजनकासा यत्नकरै ३ अथवा अरण्डकी जड़ का काढा कर उसमें तेल अथवा घृत पकाय उससे सुहाता २ सेंककरै तौ वायुकी विद्रधि जाय ४ अथवा। यव। गेहूँ। मूँग इनकाचूर्ण घृतसे पकाय लेपकरै तौ

वायुकी विद्रधि बिना पकीभी अच्छीहोय ५ अथवा असगन्ध। खस। महुआ। रक्तचन्दन इनको दूधसे महीन पीस इसमें घृत मिलाय गुनगुना कर लेप करे तौ पित्तकी विद्रधिजाय ६ अथवा ईटका रेत लोहे की मैल गोबर इन्हें महीनपीस गो-मूत्र में सिझाय इसका सुहाता २ सेककरै अथवा लेप करै तौ कफकी विद्रधि जाय ७ अथवा दशमूल के काढ़े में तेल अथवा घृत डाल उसका तरेडादे तो विद्रधि के व्रणकी सूजन और उसका शूलजाय ८ अथवा रक्तचन्दन। मजीठ। हल्दी। म-हुआ। गेरू इन्हें दूधमें सिझाय लेपकरै तौ रुधिरकी औ चोट लगनेकी विद्रधि जाय ९ अथवा कालाजीरा। इन्द्रायण की जड़तोड़ इनका काढ़ा शा ८० ले तो कोष्ठ की उपजी विद्रधि जाय १० अथवा सहजनेकी जड़का रस शहत मिलायपीवै तौ अंत्रकी विद्रधि जाय ११ अथवा सहजने की जड़ के काढ़े में सेकी हींग। सेंधानोन डाल प्रभातही पीवै तौ अंत्रकी विद्रधि जाय १२ येसब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं॥ इति विद्रधि रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ व्रणशोथरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

व्रणशोथ रोग ६ प्रकारका है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्टपने का ५ किसीतरह ल-कड़ी आदि की चोट लगने का ६ इनकारणों से प्रथम व्रण होय पीछे व्रणमें शोथ होय॥

अथ व्रणशोथका लक्षण॥

वायुका शोथ व्रण बिषमपकै पित्तकाव्रण तत्कालपकै कफ का व्रण देरसेपकै रुधिर और चोटलगनेकाभी तत्कालहीपकै॥

अथ व्रणशोथनहींपकाहोय उसका लक्षण॥

उस व्रण शोथ में गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ा होय और उसका त्वचा के सदृश वर्ण होय और उस में पीड़ा

कम होय ये लक्षण होयँ तौ जानिये कि व्रणशोथ कच्चा है॥

अथ पकेव्रणशोथका लक्षण॥

सूजन अग्नि की तरह जलै और खारकी तरह पकै और चींटी औरछुरीकी तरह काटै और दंडकीतरह मारै और हाथ से पीड़ित होय मानों सुईकरिके बेधी नहीं सी होय और उस में दाह बहुत होय उसका रंग औरसा होजाय अंगुली को दबाने से पीड़ित होय मानो आसन और सोने के विषे शान्ति को प्राप्तहोय और उस में बीछूके काटने कीसी पीड़ा होय और वह सूजन गाढ़ी होय जिसके उसके पकने के यत्न करै फूटै नहीं और उस सूजनमें ज्वर। तृषा। अरुचि होय ये लक्षण जिसमें होयँ तौ जानिये कि यह सूजन पकगई॥

अथ व्रणशोथ पकगयाहोय इसका लक्षण॥

उस व्रणमें पीड़ाहोय नहीं ललाई थोड़ी होय बहुत ऊंचा न होय और उसकी सूजनमें तह पड़जायँ औरपीड़ाहोय खुजली भी बहुतचलै सर्व उपद्रव जातेरहैं पीछे वह सूजन न जाय खचा फटनेलगे और उसमें अंगुली लगानेसे पीड़ाहोय राद निकलै ये लक्षण होयँ तौ जानिये कि व्रणशोथ पकगयाहै उसमें भी वायु बिना पीड़ा नहीं पित्तबिना पकना नहीं कफबिना राद नहीं इस कारण पकनेके समय ये तीनोंही होयँ हैं॥

अथ परिपाक अवस्थामें औरभी प्रतीतरका लक्षण॥

उसके यत्न करनेमें ढीलकरै तौ पित्त बढ़कर कफको ग्रहणकर रुधिरको पकायदे वहप्रकारुधिर रादकोकरै अथवा रादको काढ़ैनहीं उसकादोष लिखते हैं॥ जैसे तृणोंके समूहको पवनसे प्रेरित अग्नि दग्धकरैहै तैसेही उसकी राद काढ़ै नहीं तौ उस के शरीरके मांसके और नसोंको यह राद खायजाय है॥

अथ व्रणके कच्चे पके ज्ञानके अर्थ वैद्यके गुणदोष लिखते हैं॥

जो कच्चे और पकेहुये व्रणको जाने सो तौ वैद्य और उसको

जाने नहीं सो वैद्यनहीं वह चोरकी वृत्तिकरने वाला वैद्य चोर है १ और जो वैद्य फोडेको या व्रणको कच्चा फाड़े और पक्के को फाडेनहीं और जिसे कच्चे पक्केका ज्ञानहोय नहीं उसे चांडाल जानिये २ इति व्रणशोथकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥ यह माधवी. का पाठ है ॥

॥ अथ व्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

वह व्रण ८ प्रकार का है वायु पित्त कफ के दोषों का १ शस्त्रादिक के लगने का २ वायु पित्त कफका ३ रुधिर का ४ वायु पित्तका ५ वायु कफका ६ कफ पित्तका ७ सन्निपातका ८ ॥

॥ अथ वायुके व्रणका लक्षण ॥

व्रण स्थिर और कठिन होय मन्द स्रवै पीड़ा बहुत होय अधिक फरके कालाहोय ये लक्षणहोयँ उसको वायु का व्रण कहिये १ ॥

॥ अथ पित्तके व्रणका लक्षण ॥

तृषा मोह ज्वरहोय गीलापन दाह पीड़ाहोय फटनेसे दुर्गन्धि लिये राद निकले ये लक्षण होयँ उसे पित्तका व्रण कहिये २ ॥

॥ अथ कफके व्रणका लक्षण ॥

जिसमें अधिक आलस्यपना होय भारी और चिकना होय जिसमें पीड़ा कमहोय पीला वर्ण देरसे पकै ये लक्षण होयँ उसे कफका व्रण कहिये ३ ॥

॥ अथ रुधिरके व्रणका लक्षण ॥

व्रण लालहोय और उसमें रुधिर बहुत निकले ४ जिस व्रण में वायु पित्त के लक्षण होयँ उसे वायु पित्तका कहिये ५ जिसमें वायु कफ के लक्षणहोयँ उसे वात कफ को जानिये ६ जिसमें कफ पित्त के लक्षण होयँ उसे कफ पित्त का कहिये ७ जिसमें सर्व लक्षण मिलें उसे सन्निपात का कहिये ८ ॥

॥ अथ शुद्धव्रणका लक्षण ॥

जीभके नीचे पैंदेके सदृश जिसकी कांतिहोय अति कोमल और निर्मल चिकना होय पीड़ा होय नहीं अच्छी जिसकी व्य-

वस्था होय और उसमें राद आदि निकले नहीं तब जानिये यह व्रण शुद्ध हुआ ९ ॥

अथ दुष्टव्रण का लक्षण ॥

जिसमें राद रुधिरकी दुर्गंधि निकला करे और सूजन और स्थिरपना रहै उसे दुष्टव्रण कहिये १० ॥

अथ अंकुरित शुद्ध व्रणका लक्षण ॥

जिस व्रणका पीला अथवा धूसरावर्णहोय और राद आदि और अंकुर निकलनेलगिजायँ उसको अंकुरितव्रणजानिये ११॥

अथ अच्छीतरह व्रण भरताहोय उसका लक्षण ॥

जिस व्रणमें अंकुर शुद्ध निकलैं और गांठ न होय और सूजन होय उसे भले प्रकार व्रण भरा जानिये १२ ॥

अथ व्रणके सुख साध्यादिक लक्षण ॥

वह व्रण मर्मस्थानमें नहींहोय त्वचा और मांसमेंहोय और तरुण और बुद्धिमान् और पथ्यसे चलताहोय ऐसेपुरुषके होय शीतकालमें होय तो व्रण सुखसाध्य है १३ वायु पित्त कफका तो व्रणहोय और वह मेद मज्जा और मस्तककी गूदीकेसदृश श्रवै तो वह अच्छाहोय १४ और शस्त्रादिककी चोटसे उत्पन्न जो व्रण उसमें जो बसा मेदा मज्जा और मस्तककी गूदी के सदृश मैलनिकलै तो वहव्रण अच्छाहोय १५ कोढी और विष खानेवाला और मधुप्रमेहवाले पुरुषोंके व्रणहोय सो कष्ट से अच्छे होयँ १६ ॥

अथ पुनः व्रणकाअसाध्य लक्षण ॥

जिस व्रणमें बहुत दाहहोय और व्रणबाहरसे शीतलहोय और उस पुरुषकामांस रुधिर सूखगयाहोय श्वास खांसी अरुचि ये होयँ बूढाहोय और उस व्रणमें राद रुधिरही निकला करै मर्मस्थानमें होय तो ऐसाव्रण अच्छा नहींहोय वैद्य अपना यश चाहै तो यत्न न करै १७ ॥

अथ आगन्तुकव्रण अर्थात् तलवार आदि शस्त्रादिकके लगनेसे उत्पन्न जो घाव उसकी व्रण संज्ञाहै उसकीउत्पत्ति लक्षण ॥

तलवार सेल तीर छुरी गोली बाण फरसाआदि किसीशस्त्र के किसी अंगमें लगने से नानाप्रकार की आकृतिके व्रण होयँ हैं सो वह आकृति छःप्रकारकी है सो लिखते हैं छिन्न १ भिन्न २ बिद्ध ३ क्षत ४ पिच्चित ५ घृष्ट ६ ॥

अथ छिन्नव्रणका लक्षण ॥

जो पुरुष तलवारको आदिले शस्त्र करके टेढ़ा कटा होय अथवा सीधा कटा होय और घाव बड़ा होय और मनुष्य के शरीरको पृथ्वीपर डालदे उसको वैद्य छिन्नव्रण कहै हैं १ ॥

अथ भिन्नव्रणका लक्षण ॥

बरछी सेल तीर छुरी तलवारको आदिले जिसके लागे उसका कोठा किसीतरह कटजाय उस कटे कोठेसे रुधिरचलै तब रुधिरसे उदर भरजाय तब ज्वरदाहको करैहै पीछे वह रुधिर इन्द्री गुदा मुख नासिकाकेद्वारानिकलै और मूर्च्छा श्वास तृषा अफरा अरुचि इन्हें पैदाकरै और मल मूत्र रुक जायँ पसीना आवै नेत्र लालहोजायँ मुखमें रुधिरकी बास शरीरमें दुर्गन्धि आवै हृदय पसली में शूल होय जिसमें ये लक्षण होयँ उसको भिन्नव्रण कहिये २ ॥ अथ विद्धव्रणका लक्षण ॥

जिस पुरुष के भीतर शस्त्रकी नोक लगै और उसका अंग कटजाय उसे वैद्य बिद्ध कहै हैं ३ ॥

अथ जिस घावमें तीरआदि रहगये होयँ उसका लक्षण ॥

जो घावकाला और सूजन संयुक्तहोय फुनसियों को लिये होय और उस घावका मांस बुदबुदेके समान ऊँचाहोय और उसमें पीड़ाहोय उस घावको शस्त्रसमेत जानिये ४ ॥

अथ कोठेमें तीर रहगयाहोय उसका लक्षण ॥

शरीरकी सातोंत्वचा और शरीरकी नसोंको नांघिकर पीछे

उन नसोंको विदीर्णकरै और कोष्ठके विषे रहा जो वहशस्त्र सो अफरेकोकरै और व्रणके मुखसें अन्न और मलमूत्रको लेआवे तब जानिये इसके कोष्ठमें शल्यहै ५ ॥

अथ असाध्यकोष्ठमें रहे रुधिर और मल उसका लक्षण ॥

कोष्ठमें रहता जो रुधिर सो पीलाहोकर शरीरको पीलाकरै हाथ पांव मुँह शीतलहोयँ और उसकी नाककी श्वास शीतल चले नेत्र लालहोयँ ये लक्षण होयँ तौ उसे असाध्यकोष्ठका रक्त मल जानिये यह असाध्यहै ६ ॥

अथ क्षत व्रणका लक्षण ॥

जिसमें अतिछिन्न अतिभिन्नके लक्षण नहीं मिलैं दोनोंके लक्षण मिलेहोयँ वह व्रण विषमहै ७ ॥

अथ पिच्चित व्रणका लक्षण ॥

जो अंग मुद्गर किवाड़ आदि किसी भारीवस्तुसे पिच्चल जाय और हाडोंमें व्रणहोजाय उसको पिच्चितव्रण कहिये ८ ॥

अथ घृष्टव्रणका लक्षण ॥

जिसके ईंट पत्थर भीतआदि किसीतरहकी रगड़से शरीर का चाम घिसजाय और शरीरसे दूरहोजाय और उसमें चेप निकलाकरै और दाहहोय उसको घृष्टव्रण कहिये ९ ॥

अथ जिसके मांस नस मर्मस्थानमें चोटलगीहोय उसका सामान्य लक्षण ॥

जिसकेभ्रम। प्रलापहोय। गिरपड़ै। मोहहोय। चैतन्यता जातीरहै। ग्लानि और दाहहोय। अंग शिथिल होजाय। पीड़ा बहुतहोय। मांसके जलसदृश जिसका रुधिरहोय और सर्व इन्द्रियोंका धर्म्म जातारहे और पीछे कहे जो ५ मर्मस्थान उन में चोटलगै उसकाभी यह लक्षण कहिये १ ॥

अथ मर्मस्थान नससंधि हाड़ ये व्रणसे छिन्नभयेहोयँ तिनका पृथक् २ लक्षण ॥

इन्द्रका धनुष और सावनकी बीरबहूटी के सदृश जिसमें रुधिर निकले उसे क्षतव्रण कहिये वह व्रण वायुके अनेक रोगों

को करैहै तीर तलवार आदि शस्त्रकरिके नस बन्धजाय उस्से उपजा जो व्रण तिस्से शरीर कुवड़ा होजाय अंग २ में पीड़ा होय चलाजाय नहीं और बहुत काल पीछे उसमें अंकुर आवैं तव जानिये कि नस बिंधजानेका व्रणहै इसव्रणमें सूजन बहुत होय बलजातारहै और सन्धि२में घाव लगेहोयँ तौ सन्धिका हिलना जातारहै और उसमें पीड़ाहोय रातदिन चैन पड़ैनहीं उसके हाड़में शस्त्रादिकसेउत्पन्न व्रणजानिये और मर्मस्थानमें चोटलगनेसे व्रणहोयँ तिसकेशरीरकावर्ण पीलाहोय और व्रण स्पर्श सहै नहीं ॥ अथ व्रण के १६ उपद्रव लिखते हैं ॥

बिसर्प रोग १ पक्षाघात २ शिरघूमै नहीं ३ अपतान ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणमें पीड़ा ७ ज्वर ८ तृषा ९ कन्धानवै नहीं १० खांसी ११ बमन १२ अतीसार १३ हिचकी १४ श्वास १५ कांपनी १६ ये व्रणके उपद्रव हैं ॥

अथ अग्निदग्धकी उत्पत्ति लक्षण ॥

प्रथम अग्निदग्ध २ प्रकारकाहै एक तौ तैलादिकसे दग्ध हुआ १ दूसरा लोह अग्निआदिसेदग्ध २ पुनः अग्नि दग्ध४ प्रकारकाहै ॥ प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यक्दग्ध ३ अतिदग्ध ४ ॥

अथ प्लुष्ट दग्धकालक्षण ॥

अग्निसे दग्धहुआ जिसका वर्ण औरसा होजाय उसको प्लुष्ट कहिये १ ॥ अथ दुर्दग्धका लक्षण ॥

जिसमें दाह पीड़ा और फोड़े होजायँ और बहुत दिनों में मिटैं उसको दुर्दग्ध कहिये २ ॥

अथ सम्यक्दग्धका लक्षण ॥

जिसके अंगका तांबेका वर्ण होय और वह दृढ होय और जिसमें दाह और पीड़ाहोय और फैले नहीं उसको सम्यक्दग्ध कहिये ३ ॥ अथ अतिदग्धका लक्षण ॥

जिसकी त्वचा । मांस सब दग्ध होजायँ और इस्से शरीर

पृथक् होजाय और नसैं स्नायु हाड़ सन्धि ये सब दग्धहोजायँ और उनमें पीड़ाहोय दाह ज्वर तृषा मूर्च्छाहोय और जिसमें अंकुर देरसे आवै बर्ण औरसा होजाय ये लक्षण अतिदग्धके कहिये ४॥ अथ इनदोषोंसे उत्पन्नजो व्रण उसका यत्न॥

इसके मुख्य यत्न ११ प्रकारके हैं सो क्रमसे लिखते हैं॥ और सुश्रुत चरकमेंव्रणके यत्न ६० प्रकारके हैं प्रथम तौ लेप १ पीछे और ओषधियोंके जलसे गुनगुनातरेड़ा २ बांसकीलकड़ी से अंगूठा मसल उसके पसीना लिवावे ३ किसी तरह रुधिर कढ़ाना ४ ओषधियों की पट्टी बांध उसके पसीना लिवावे ५ उसे पकाना ६ शस्त्रादिकसे चीरदेना ७ व्रणको अंगूठेसे दाब उसकीराद काढ़ना ८ व्रणका शोधना ९ उसके अंकुर लाना १० उसको त्वचाके बर्ण सदृश करदेना ११॥

अथ वायुकी सूजन दूरकरनेका लेप॥

बिजौरेकीजड़। बाड़छड़। देवदारु। सोंठि। रास्ना। अरलू ये सब बराबर ले इन्हें जलसे महीन पीस गुनगुना लेपकरैतौ वह सूजन दूरहोय १॥

अथ पित्तकी सूजनका लेप॥

महुआ। रक्तचन्दन। दूब। आंवला। कमलकीजड़। खस। नेत्रबाला। पद्माक ये सब बराबरले जलसे महीनपीस शीतल ही लेपकरै तौ पित्तकी सूजन जाय २ अथवा बड़। गूलर। पीपल। पाकर। बेतकीजड़ इनका बक्कलले इन्हें जलसे महीन पीस इसमें ओषधियोंसे दशवां हिस्सा घृतमिलाय लेपकरैतौ पित्तकी सूजनजाय ३॥

अथ कफकी सूजन का लेप॥

अजमोद। बावची। मेढ़ासींगी। मजीठ। राल। असगन्ध। सतावर इन्हें जलमें पीस गुनगुना लेपकरै तौ कफकी सूजन जाय ४ अथवा पीपल। पुरानीखस। सहजनेकाबक्कल। रेत।

हड़कीछाल इन्हें गोमूत्रसे महीनपीस गुनगुना लेपकरे तौ कफकी सूजनजाय ५ और रातमें लेपकरिये नहीं ॥

अथ औषधियों के जलसे गुनगुना तरेड़ादे सो अनुक्रमसे लिखतेहैं ॥

हड़केबक्कलको औटाय इसका सुहाता उस सूजनके दाहपर तरेड़ादे तौ दाह तत्कालदूरहोय ६ अथवा वायुके दूरकरनेवाली औषधके काढ़ेसे जलका उसपर तरेड़ादे अथवा तेलकातरेड़ादे अथवा मांसके रसका तरेड़ादे अथवा गरम २ घृतका अथवा गरम २ कांजीका तरेड़ादे तौ वायुकी सूजनदूरहोय ७॥

अथ पित्तकी सूजनदूर करनेका तरेड़ा ॥

शीतल औषधियोंके काढ़ेका तरेड़ादे और दूध घृत खांड़ सांठेके रसके तरेड़ेसे पित्तकी सूजनजाय ८ ॥

अथ कफकी सूजनका तरेड़ा ॥

कफको दूरकरनेवाली औषधियों का गरम २ तरेड़ा दे तो कफकी सूजन जाय ९ रक्तपित्त और सूजनका यत्न एकही है और व्रणकी सूजनको अँगूठेआदिसे मसलकर पसीना लिवावै जो व्रणकड़ाहोय उसे अँगूठा अथवा बांसकी साफ लकड़ी से शनैः मसलवावै तो वह ढीलापड़ अच्छा होजाय ॥ और उसका वर्ण औरसा होजाय कालाहोय पीड़ा बहुत होय ऐसी व्रणकी सूजनके अथवा किसी बिषैले जानवरके काटनेकी सूजनकेजोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ायडाले अथवा पछना दिवाय रुधिर कढ़ायदे यह एकही यत्न सब यत्नोंकी बराबर है ॥

अथ कच्चेव्रणके पकानेकी औषध ॥

दशमूल। खरैटी। रास्ना। असगन्ध। खीप। अरंडकीजड़। अथवा इसका फल। निर्गुण्डी। साटी। सहँजना। पीपल। सेंधानोन। सोंठि। सनके बीज। कपासकेबीज। अलसी। कुलत्थ। तिल। जव। सरसों। मूलीकेबीज। सोंफ। नींबकेपत्ते। नागरबेलकेपत्ते। गुलाबकेपत्ते आदि गरमकर इन्हें महीन पीस

बाँधे अथवाइनकेकाढ़ेकातरेड़ादेतो वायुकेव्रणकीसूजनजाय १॥

अथ व्रणके शोथके दूरकरने का लेप॥

साटी की जड़। देवदारु। हल्दी। सोंठि। सहँजनेकाबक्कल। सरसों। इन्हें खटाई से महीनपीस गुनगुना कर लेप करै तौ सर्व प्रकारके व्रणशोथ दूर होयँ २॥

अथ व्रणके पकानेकी विधि॥

व्रणलेपादि करकेपके नहीं तो सनकीजड़। सहँजनेकाफल। तिल। सरसों। अलसी। जव। गेहूँ। नींबकेपत्ते इन्हें सिझाय व्रणके बांधे तो व्रणपक जाय ३॥

अथ पकेव्रणमें चीरादेनेकी विधि॥

जिसव्रणमें रादपड़गई होय उसको चतुर वैद्यके शस्त्रोंसे तीन चीरा दिवाय उसकी राद कढ़वाय दे पीछे मलहम आदि लगावै तो व्रण अच्छा होय ४॥

अथ इतनेमनुष्योंकेचीरा नहीं लगावे॥

वालकके वृद्धके जिससे चीरा सहाजाय नहीं क्षीणपुरुष के भयवाले के स्त्री के मर्मस्थान में इनके चीरा दीजे नहीं उनमें औषधियोंसे भेदनकर उसकी रादकढ़ाय अच्छाकीजे सोभेदन औषध लिखते हैं॥ कणगचकी जड़। चित्रक। दात्यूणी। भि-लावां। कनेर। कबूतरकीबीट। गीधकीबीट इनमें किसीकालेप करै तो व्रण आपही फूट राद निकल अच्छा होय ५ अथवा खारीनोन। जवाखार। सज्जी। आंधीझाड़े का खार इनमें से किसीका लेपकरै तो व्रणकी राद निकल जाय ६ अथवा व्रण कड़ाहोय तो हाथीदांतको जलमें घिस उसकी बूँद व्रणपर धरै तो सूजन दूरहोय उसकी राद निकल जाय ७॥

अथ पीड़न लिखते हैं॥

जिसमें राद पड़गई होय और मर्मस्थान में होय ऐसे व्रण के चीरा दीजै नहीं ये औषध लगाय उसकी रादकाढ़ डालिये

तौ वह व्रण अच्छा होय सो औषध लिखते हैं ॥ जव । गेहूँ । उड़द इन्हें महीन पीस पानी से गुनगुनाकरै और व्रणके मुख में से राद काढ़डाले पीछे उसके मलहम आदि लगावै तौ वह व्रण अच्छा होय ८ ॥ अथ व्रणका शोधन ॥

जो व्रण कच्चाहोइ तो पटोलके पत्ते अथवा नींबकेपत्ते इन्हें सिझाय इनके पानी से व्रणको धोवै तौ व्रण अच्छा होय ९ अथवा दशमूल के काढ़ेसे व्रणधोवै तौ वायुकाव्रण अच्छाहोय १० अथवा गूलरके बकले के काढ़ेसे व्रणधोवै तौ व्रण अच्छा होय ११ और किरमालाके बक्कलके काढ़े से धोवै तौ कफका व्रण अच्छा होय १२ और पीपल । गूलर । बड़ । वेल इनके वक्कल के काढ़े से व्रणकी सूजन और उपदंश को धोवै तौ व्रण अच्छाहोय १३ अथवा तिल । सेंधानोन । मुलहठी । नींबकेपत्ते दोनों हल्दी । निसोत । नागरमोथा इन्हें बराबर ले जल से पीस इनका लेपकरै तौ व्रण पकके उसकी राद निकलजाय १४ अथवा नींब के पत्ते । तिल । दात्यूणी । निसोत । सेंधानोन इनमें शहत मिलाय महीन पीस लेप करै तो दुष्टव्रण अच्छा होय १५ अथवा नींब के पत्तों को सिझाय बांधै तौ दुष्ट व्रण अच्छा होय १६ अथवा हड़ । निसोत । सेंधानोन । दात्यूणी । कलिहारीकी जड़ शहतमें इन्हें पीस इनकी बत्ती व्रणमें दे तौ दुष्ट व्रण अच्छा होय १७ अथवा व्रण का मुख सूक्ष्म होय तौ नींबके पत्तोंके रसआदि औषधियोंकी बत्तीदे तौव्रण अच्छा होय १८ अथवा नींबकेपत्ते । घृत । शहत । दारुहल्दी । महुआ इनकी बत्ती कर व्रणमें दे तो व्रणअच्छाहोय १९ अथवा तिलों को औटाय उसकी बत्ती दे तो व्रण अच्छा होय २० ॥

अथ व्रणके रोपणनाम अंकुर लाने का यत्न ॥

जिन व्रणोंकी राद निकलगई होय और व्रणभरैं नहीं उन को नींबकेपत्ते औटाय उसपानीसे धोवै फिरशहत मिलाय तेल

का फाहा उसपरधरै तो व्रण भरजाय अथवा असगन्ध । कायफल । मुलहठी । मजीठ । धवई के फूल इन्हैं महीन पीस व्रण के बांधै तो व्रणभर अच्छा होय २२ ॥

अथ व्रणमें दाहशूलहोय उसके दूरकरनेका लेप ॥

जवका आटा । शहत । तेल । घृत ये सब मिलायथोड़ा गरमकर लेपकरै तो व्रणका दाह शूल जाय २३ ॥

अथ व्रणके कृमिदूरहोनेका लेप ॥

कणगचकीजड़ । नींबकीछाल । निर्गुण्डी इन्हैं महीनपीस लेपकरै तो व्रणके कृमिजायँ अथवा लहसुनकालेपकरै तो व्रण के कृमिजायँ अथवा हींग नींबकीछालका लेपकरै तो व्रणके कृमिमरैं २४ ॥

अथ व्रणमेंछूतपड़ि उसमें खाजपीड़ाहोय कृमिपड़गयेहोयँ इसकीधूनी ॥

नींबकेपत्ते । बच । हींग । घृत । नोन । सरसों इन्हैं इकट्ठाघृतमें महीनपीस इनकीधूनीदे तो व्रणकीछूत । खाज । कृमिजायँ २५ ये सबयत्न भावप्रकाशमें हैं ॥

अथ व्रणकेभरनेका मलहम ॥

कडुआतेल २॥ पैसेभर पानी २॥ पैसेभर इनदोनोंको कांसी की थालीमें १ दिनतकहाथसेमथ पीछे इसमेंराल ५ पैसेभर महीनपीस मिलावै नीलाथोथा २॥ टं० मिलावे बिरोजा १। टं० मिरच १। टं० महीनपीस इसमें मिलाय पीछे इन्हैं महीनपीसि हाथसेमथ व्रणकेलगावै तो व्रण तत्काल भरआवै २६ ॥

अथ आगन्तुकव्रणअर्थात्तलवारआदिशस्त्रादिकेलगनेसे उत्पन्नजोव्रणउसकायत्न ॥

जिन मनुष्योंके तलवारकोआदि ले शस्त्रोंकी नानाप्रकारकी धारकेलगनेसे त्वचा फटिजाय अथवा त्वचाकी नानाप्रकारकी आकृति होजाय तो उसे अच्छे चतुरसाथियेकेपास निर्वातस्थान में पाटके सूतसे सिवाय पीछे उनटांकोंके व्रणके स्थानमें गेहूँकी मैदामें पानी घृतमिलाय पकायले जब पानीजलजाय घृतमात्र

रहजाय तब उसकी लोईबनाय सुहाता २ सेंककरै तो वहव्रण तत्कालअच्छाहोय १ अथवा कुटकी। मोम। हल्दी। मुलहठी। कणगचकीजड़। और कणगचकेपत्ते और फलपटोल। चमेली और नींबके पत्ते इन्हें घृतमें डालपकावे जब पानी जलजाय घृतमात्र आय रहै तब इस घृतका सुहाता २ सेंककरै तो यह व्रण तत्काल अच्छा होय २ ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं अ-थवा शस्त्रादिकोंसे जिसका रुधिर बहुत निकलगयाहोय उसके बायुकी पीड़ा होय आवे उसके दूरकरनेके वास्ते घृत पान क-राइये और जिसका खड्गादिककरके गात्रछिन्न होजाय उसके गंगेरनकी जड़का रस उसमें भरदे तो वे व्रण तत्काल भरजायँ और अच्छे होयँ ३ इस व्रण वाले को शीतल यत्न सब अच्छे हैं और शस्त्र लगते जिसके रुधिर आमाशय में जाय तो उस पुरुषको बमन करावे तो अच्छा होय और पेडू में रुधिर जाय तो वह जुलाबसे अच्छाहोय बांसकी छाल। अरण्डका बकल। गोखुरू। पाषाणभेद इनका काढ़ाकर उसमें सेंकीहींग सेंधा-नोन डाल पीवे तो कोठेका रुधिर निकल बहै अच्छा होय ४ अथवा जव। कुलत्थ। सेंधानोन। रूखा अन्न इनका खाना अच्छाहै ५ अथवा चंबेलीकेपत्ते। नींबकेपत्ते। पटोल। कुटकी। दारुहल्दी। गौरीसर। मजीठ। हड़कीछाल। मोम। नीलाथोथा। शहत। कणगचके बीज ये सब बराबरले इनकी बराबर गौका घृतले और इनसे अठगुना पानीले इन्हें मधुरी आंचसे पकावे जब पानी जलजाय घृतमात्र रहजाय तब इस घृतकी बत्तीकर व्रणके लगावे तो गम्भीर को आदिले सब व्रण अच्छे होयँ ६ इतिजात्यादिघृतम्॥

अथवा चमेली। नींव। पटोल। किरमाला। इनके पत्ते। मोम। महुआ। कूट। दारुहल्दी। देशीहल्दी। कुटकी। मजीठ। पद्माख। हड़कीछाल। पठानीलोध। तज। कमलगट्टा। गौरीसर।

नीलाथोथा । फिटकरीकी गिरी ये सब बराबरले इनका काढ़ा कर इनके रसमें मधुरी आंचसे तिलकातेल पकावै जब काढ़ेका रस जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उस तेलको उतार अच्छे बासनमें धररक्खे पीछे इसतेलकी बत्तीकर किसीतरहसे व्रणके लगावै तो व्रण तत्कालसर अच्छाहोय ७ इतिजात्यादि तैलम् ॥

अथवा चित्रक । लहसन । हींग । सरफोंका जो गौड़देशमें प्रसिद्धहै और कलिहारीजड़ीकी जड़ । सिन्दूर । अतीस । कूट । कडुआतेल इन औषधियोंके माफिक पानीडाल मधुरी आंचसे पकावै जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इस तेल को बासन में भररक्खे पीछे इसको कपड़ेकी बत्ती आदिसे किसी तरह व्रणके लगावै तौ व्रणमात्र दुष्टव्रण नाडीव्रण इनको यह तैल तत्काल दूरकरैहै ८ इति विपरीत मल्लतैलम् ॥

अथवा गिलोय । पटोलकीजड़ । त्रिफला । बायबिड़ंग इन्हें बराबरले महीनपीस इनकीबराबर गूगल मिलाय एकजीवकर २ ॥ टंक पानी से नित्यखाय तौ व्रणमात्र । बातरक्त । गोला । उदररोग । सूजन इनको यह दूरकरैहै ९ इतिअमृतादि गूगल ॥ ये सब यत्न भावप्रकाशसे हैं ॥

अथ ६ प्रकारके अग्निदग्धका अनुक्रमसे यत्न ॥

अग्निसे किसीतरह जलगयाहोय उसको अग्निसे तपावै तो वह पुरुष तत्काल अच्छाहोय १ अथवा उसपुरुषके अगरको आदिले गरम औषधियोंका ऊपर लेपकरै तौ वह अच्छाहोय २ यह प्लुष्टका यत्न है ॥ अथ दुर्दग्धका यत्न ॥

औषधियोंके घृतको अथवा इसीघृतको गरमकर पीछे उसे ठण्ढाकर लेपकरे तौ दुर्दग्ध अच्छाहोय ३ ॥

अथ सम्यकूदग्धका यत्न ॥

तबाशीर । बड़कीजड़ । रक्तचन्दन । रसौत । गेरू । गिलोय इन्हेंघृतसे महीनपीस लेपकरै तौ सम्यकूदग्ध अच्छाहोय ४ ॥

अथ अतिदग्ध का यत्न॥

बुरेमांसको दूरकर पीछे सांठीचावल तेंदू इन्हें घृतमेंमहीन पीस लेपकरे ऊपर गिलोयका पत्ता बांधे तौ अतिदग्ध अच्छा होय ५ अथवा मोम। महुआ। पठानी लोध। राल। मजीठ। रक्तचन्दन। मूर्वा ये सब बराबरले महीन पीस गौके घृतमें पकावै पीछे इस घृतका लेपकरे तौ अतिदग्ध अच्छा होय और सर्वशरीरमें मांस और होआवै ६ इति सिक्थादि घृतं॥

अथवा पटोलके पंचांगका काढ़ाकर उससें कडुआ तेलपकावै जब काढ़ेका रस जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उतार उस तेल को लगावै तो अग्निके जरेका दाह और व्रण और फोड़े सब अच्छेहोयँ ७ ये सर्वयत्न भावप्रकाशमें हैं॥ अथवा पुरानागीला खानेका चूना उसको दहीके पानीमें पीस जरेऊपर लगावै तौ वह अच्छाहोय और तेलकाजलाहोय तौ उसकेफफोलेभी दूर होयँ ८ अथवा जवकोजलाय तिलोंकेतेलमेंपीस पीछेजलेऊपर लेपकरे तौ अच्छाहोय ९ अथवा भुनेजीरेको महीनपीस उसी की बराबर मोम। राल। घृत मिलाय लेपकरे तौ अग्निका जला तत्काल अच्छा होय १०॥

अथ तेलआदिसे जलाहोय उसका यत्न॥

अथवा तिलकातेल ड। भर और खानेकाचूना गीला पुराना ४ पैसेभर उसको हाथसे एकपहर मसल रावसाकर रुईके पहलसे उसके लगावै तौ जलाहुआ तत्काल अच्छाहोय ११॥

अथ व्रणग्रंथिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

विना खेदही शरीरसे निकलता जो दुष्ट रुधिर उसे पवन शोषकर गांठको उत्पन्नकरैहै उसगांठमें दाह खुजाल बहुतहोय उसको व्रणग्रन्थि कहिये १२॥

अथ व्रणग्रंथिका यत्न॥

कवीला। वायविडंग। तज। दारुहल्दी इन्हें जलसे महीन

पीस और उसमें तिलका तेल डाल मधुरीआंचसे पकावै जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इस तेलकालेपकरै तौ व्रणग्रन्थि जाय १३—इतिव्रणग्रन्थि व्रणरोग अग्निदग्ध की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ भग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

हाड़के टूटनेको भग्नकहिये सो दोप्रकारकाहै ॥ कांडका १ सन्धिका २ कांडका तो नल कपाल पहुँचाआदिले और संधिका ६ प्रकारकाहै उत्पिष्ट १ विश्लिष्ट २ विवर्त्तित ३ तिर्य्यक्गति ४ क्षिप्त ५ अन्ध ६ ॥

अथ मलमकईके माफिक किसीस्थानकी शरीरकी सन्धि टूटगई होय उसका सामान्य लक्षण ॥

उठते पसारते इकट्ठाकरते सन्धि में पीड़ा बहुत होय और उस जगह स्पर्श सुहावैनहीं तौ जानिये कि सन्धि टूटी है ॥

अथ उत्पिष्ट संधिटूटनेका लक्षण ॥

हाड़ोंकी सन्धि टूटीहोय उसजगह चारोंओर सूजन बहुत होय और पीड़ाहोय तौ जानिये कि उत्पिष्टसंधि टूटी है १ ॥

अथ विश्लिष्टसंधिटूटनेका लक्षण ॥

उसजगह सूजनहोय और रात्रिमें पीड़ा सूजन अधिकहोय उसकी विश्लिष्टसन्धिटूटी जानिये २ ॥

अथ विवर्त्तितसंधिटूटीका लक्षण ॥

पसलियोंमें पीड़ाबहुतहोय और उसस्थानमें सूजन पीड़ा रहाकरै तौ विवर्त्तित सन्धिटूटी जानिये ३ ॥

अथ तिर्य्यक्गति संधि टूटी का लक्षण ॥

उसजगह सूजनहोय पीड़ाबहुत होय तौ तिर्य्यक्गति सन्धि टूटी जानिये ४ ॥ अथ क्षिप्तसंधि टूटीका लक्षण ॥

जांघोंमें कभीथोड़ा कभीबहुत विषमशूलहोय उसकी क्षिप्त सन्धि टूटी जानिये ५ ॥

अथ अधःसन्धि टूटीहोय उसका लक्षण ॥

जो सन्धि नीचेकी टूटीहोय उसकेनीचे पीड़ाहोय उसे अधः सन्धि जानिये ६ ॥

अथ सन्धि विना नल कपाल वलयके हाड़ टूटगयेहों उसका लक्षण ॥

नरसलकीसी भांति वे हाड़ छिद्र २ लियेहों सूधेहोयँ उसे नल कहिये ॥

अथ हाड़टूटना १२ प्रकारकाहै सो लिखते हैं ॥

कर्कट १ अश्वकर्ण २ विचूर्णित ३ पिच्चितकहिये यन्त्रित किया ४ अस्थिछल्लिका ५ कांडके विषयभग्न ६ अतिपातित ७ मज्जागत ८ अस्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधाकरना १२ जैसे इनके नामहैं तैसेही लक्षण जानले ॥

अथ हाड़ टूटाहोय उसका लक्षण ॥

अंग शिथिलहोजाय और उस जगह स्पर्शसुहावैनहीं और वहां शरीरफरके और शरीरमें पीड़ा और शूलहोय रात्त दिन कभी भी चैन पड़ैनहीं ये लक्षणहोयँ तब जानिये कि इसका किसीप्रकारसे हाड़ टूटाहै ॥

अथ भग्नरोगका कष्टसाध्य लक्षण ॥

अग्निमन्दहोजाय कुपथ्य कराकरै वायुका शरीरहोय और जिसमें ज्वर अतीसारादिकभी होयँ वह भग्नरोगी कष्टसेबचै ॥

अथ भग्नरोगका असाध्य लक्षण ॥

अथवा जिसकामस्तक फटगयाहोय कटि टूटगईहोय और सन्धिखुलजाय जांघपिसिजाय और ललाटकाचूर्णहोजाय स्तन की जगह टूटजाय हृदय गुदा कनपटी माथा फटिजाय वह असाध्य जानिये ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

हाड़को अच्छेप्रकारबांधे पीछे कड़ाबांधे और वह बुरीतरह बँधिजाय और उसमें चोटआयजाय और मैथुनादिक करै तो वह हाड़टूटना असाध्य होजाय ॥

अथ शरीरमें स्थान २ के हाड़ोंमें चोटलगीहोय उसका चिह्न ॥

कण्ठ तालू कनपटी कन्धे शिर पैर कपाल नाक आंख इन स्थानोंमें किसीतरहकी चोटलगै तो उस जगहकेहाड़ नेयजायँ और पहुँचा पीठ आदिके सूधेहाड़हैं सो टेढे होजायँ कपालको आदिले जोगोलहाड़हैं सो फटिजायँदांतआदि छोटेहाड़टूटजायँ॥

अथ भग्न रोग अर्थात् हाड़ सन्धि का टूटना उसका यत्न ॥

प्रथम चोट आदि किसीतरहसे हाड़ और सन्धि टूटीजानै तौ उसीसमय उसजगह शीतलपानीडालै पीछे बुद्धिमान् मनुष्य उसके औषधियोंका सेककरै अथवा पट्टीबांधे और उस जगह जो इलाजकरै सो शीतलकरै और जो बुद्धिमान् पुरुष होय सो पट्टी शिथिल नहींबांधे और बहुतकड़ी भी नहींबांधे अच्छीतरह साधारणबांधे शिथिलबांधनेसे अच्छीतरह हाड़ स्थिरमिलैनहीं और गाढ़ा बांधनेसे त्वचामें सूजन पीड़ाहोय और चमड़ी पकजाय इसीसे पट्टी साधारणही बांधनायोग्यहै १ हाड़ सन्धिको टूटीजगह गांठ ढबसेबांधै औषधियोंको गीलीकर अथवा चोटकीजगह गीलीप्याजलगावै तौ हाड़ सन्धि टूटीअच्छीहोय २ अथवा मजीठ । महुआ इनदोनों को ठण्ढेपानीसे महीनपीस टूटेहाड़पर लेपकरै तौ अच्छाहोय ३ अथवा सौबार का धोयाघृत उसमें सांठीचावलपीस लेपकरै तौ अच्छाहोय४ अथवा बेर । पीपलकीलाख । गेहूँ । काहूवृक्षकाबक्कल ये घृतमें पीस ५ टं० दूधसेपीवै तौ सन्धि और हाड़टूटा अच्छाहोय ५ अथवा लाख काहूकाबक्कल । असगन्ध । खरैटी । गूगल ये सब बराबरले इनको एकजीवकर २॥ टं० दूधकेसाथले तो अच्छा होय ६ अथवा गेहूँको ठीकरेमेंधर अधजलाकरले पीछे उन्हें महीनपीस ५ टं० ले १० टं० शहतकेसाथ नित्य ७ दिनतकचाटै तो टूटाहाड़ अच्छाहोय ७ अथवा मैदालकड़ी । आंवला । तिल इन्हें ठंढेपानीसे महीनपीस उसजगह लेपकरै और इसमें घृत

भी मिलावे तो टूटाहाड़ और टूटीसन्धि अच्छीहोय ८ और मनुष्यके मांसकी चोखीमिमाई अनुमान माफिकले शहतसे उसको चटावे तौ टूटाहाड़ टूटीसन्धि अच्छीहोय ९ और चोटवालेको मांसकाशोरुवा दूध घृत पुष्टाईकी औषधदे तौ ये सब अच्छी और इतनीवस्तु उसको अच्छीनहीं नोन कड़वीवस्तु खार। खटाई। मैथुन। तावड़ा। रूखाअन्न। बालककी और तरुणकीचोट शीघ्र अच्छी होय वृद्ध और रोगी की चोट शीघ्र अच्छी होय नहीं १० अथवा लाख २॥ टं० दूधसे १५ दिन पीवे तो टूटाहाड़ अच्छाहोय ११ अथवा पीली कौड़ियोंका चूना २ तथा ३ रत्ती औटाय दूधसेपीवे तो टूटाहाड़जुड़े १२ येसर्वयत्नवैद्यरहस्यमें हैं॥

अथवा बेरकावक्कल। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल इन सबकी बराबर गूगलडाल सबको एक जीवकर २॥ टं० नित्य १५ दिन दूधसे ले तौ शरीर बज्रका होजाय १३ अथवा बेरका बक्कल २ टं० महीनपीस शहतसे १ महीनाभरले तौ शरीर बज्रकाहोय १४ यह योग तरंगिणीमें है॥

अथ मुद्गर आदिकिसीतरहकी चोटलगीहोय उसके अच्छे होनेकी औषधि॥

मेथी। मैदालकड़ी। सोंठि। आमला इन्हें गोमूत्रमें महीन पीस चोटपै लेपकरै तौ चोट अच्छीहोय १५—इतिभग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ नाड़ीव्रणकी उत्पत्ति लक्षण॥

जो अज्ञान वैद्य या सथिया व्रणको कच्चा जान उसका यत्न करैनहीं और उसकी रादकाढ़े नहीं वहराद नसोंमें धसिजाय॥ पीछे उनके स्थानोंको विगाड़दे फिर वह किसीतरह बाहर निकले नहीं और रादके अधिक प्रभावसे वहराद नाड़ियोंमें नल किसी भांति जैसे नलमें जल बढ़ै तैसे नाड़ियोंमें राद बढ़ै इस कारण इस रोगका नाम नाड़ीव्रण है १ वह नाड़ीव्रण रोग ५

प्रकारका है बायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ शस्त्रादिक की चोट लगनेका ५ ॥

अथ वायुके नाड़ीव्रणका लक्षण ॥

कठोर महीन जिसका मुखहोय और शूलहोय और जिसके मुँह में राद रहे रातमें बहुत रहे ये लक्षण होयँ उसे बायुका नाड़ीव्रण कहिये १ ॥

अथ पित्तके नाड़ीव्रणका लक्षण ॥

जिसमें तृषा । ज्वर । दाह ये होयँ गरम पीली जिसमें राद निकले उसको पित्तका नाड़ीव्रण कहिये २ ॥

अथ कफके नाड़ीव्रणका लक्षण ॥

जिस व्रणके मुखमें रुधिरको लिये अधिक बदरंगी सुफेद राद निकले और उसमें खाज आवे और पीड़ाभी होय रातमें बहुतहोय ये लक्षणहोयँ उसे कफका नाड़ीव्रण कहिये ३ ॥

अथ सन्निपात के नाड़ीव्रणका लक्षण ॥

जिस व्रणमें राद । ज्वर । श्वास । मूर्च्छाहोय मुखसूखे और जिस रादकीगति गम्भीर होय और जिसका अन्त मिले नहीं ऐसी राद निकले वह नाड़ीव्रण कालरात्रिकी समान है मानो मारहीडाले ये लक्षण सन्निपातके नाड़ीव्रणका कहिये ४ ॥

अथ शस्त्रादिकोंकी चोटसे उत्पन्न जो नाड़ीव्रण उसका लक्षण ॥

जिसके शरीरमें तीर गोली इत्यादि लगेहोयँ और वे किसी तरह शरीरमें रहजायँ उसको वैद्य या साथिया काढ़े उससे उस जगह व्रण पड़जाय और उस व्रणमें झाग समेत रुधिर राद निकलाकरै किसीतरह शरीर हलनेसे पीड़ारहै उसे शस्त्रादिक की चोट लगनेका नाड़ीव्रण कहिये ५ ॥

अथ नाड़ीव्रणका असाध्य कष्टसाध्य लक्षण ॥

त्रिदोषका नाड़ीव्रण अच्छा नहींहोय १ और चार प्रकार का नाड़ीव्रण अच्छा सो वैद्यके यत्नसे अच्छा होजाय २ ॥

अथ नाड़ीव्रणका यत्न ॥

सूक्ष्ममुखके व्रणमें जो राद निकलाकरै तौ उसको थूहरके दूध। अथवा आकके दूधमें दारुहल्दी भिगोय उसको घिसि बत्तीकर उसव्रणके मुखमेंदे तौ वहव्रण भरजाय १ अथवाकिरमालाकी जड। हल्दी। मजीठ इन्हें शहतमें महीनपीस उसकी बत्तीकर व्रणमें युक्ति से वैद्यदे तौ व्रण अच्छा होय २ अथवा चमेलीकेपत्तोंकारस। आककीजड। किरमालकीजड। दात्यूणी। सेंधानोन। जवाखार इन्हें महीनपीस इनकीबत्ती व्रणकेमुखमें युक्तिसे दे तौ व्रण भरकर अच्छाहोय ३ अथवा जात्यादिघृत वा जात्यादि तेलसे भी नाड़ीव्रण जाय है ४ अथवा त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल और इनकीबराबर शोधागूगललें इन्हें महीनपीस एकजीवकर ₹॥ टं० नित्य ४९ दिन शीतलजलसे ले और पथ्यसेरहै तौ सबप्रकारके नाड़ीव्रण जायँ ५ अथवा गूगल सिंदूर इनदोनों को महीनपीस इन्हें यत्नसे व्रणमें भरे तौ नाड़ीव्रण अच्छाहोय ६ ये भावप्रकाशमें लिखे हैं अथवा आंधीझाड़के बीज। तिल इन्हें महीनपीस यत्नसे नाड़ीव्रणके लेप करै तौ बायुका नाड़ीव्रणअच्छाहोय ७ अथवा तिल। मजीठ। हाथीकादांत। हल्दी इन्हें महीनपीस पित्तके व्रणके लेपकरै तौ नाड़ीव्रणजाय ८ अथवा तिल। मुलहठी। दात्यूणी। नींबकी छाल तथापत्ते। सेंधानोन इन्हें महीन पीस लेपकरै तौ नाड़ी व्रणजाय ९ अथवा तिल। शहत। घृत इकट्ठाकर लेपकरै तौ घावका व्रणअच्छाहोय १० अथवा शहतकीबत्ती अथवा नोन कीबत्तीसे दुष्टव्रण अच्छाहोय ११ अथवा सज्जी। जवाखारी। कबीला। मेंहदी। सुहागा। सुफेद खैरसार येभी बराबरलेइ गौके घृतमें महीनपीस १ दिनपीछे व्रणमें भरे तौ व्रणके कृमिमरजावैं और खाजजातीरहै और व्रणभर अच्छाहोय १२ इतिस्वर्जिकाघृतम् यह चक्रदत्तमें लिखा है ॥

अथवा सम्हालूके पत्तोंके रसमें तेलपकाय उसतेलकीवत्ती व्रणमेंदे तौ व्रण अच्छाहोय १ इतिनिर्गुण्डीतैलं—यहवृन्दमेंहै॥

अथ सुपेद मलहमकी विधि॥

राल १ पैसेभर। सुफ़ेद मोम २ पैसेभर। मुरदासंख १ पैसेभर इन्हें महीनपीस पीछे गौकाघृत ८ पैसेभर गरमकर उसमें मोमपिघलाय शुद्धकरै पीछे वह औषध भी मोमके घृतमेंउसी समय डालै पीछे उसको कांसेकी थालीमें जलडालि उसपानीमें मोमसहित सर्व औषध डालि हाथसे खूब १०८ वारधोवै पीछे व्रणके लगावे तौ व्रण अच्छाहोय १४ अथवा शोधापारा। आंवलासार गन्धक ये सबबराबरले इनदोनोंकी बराबर मुरदासंखले और इनतीनों की बराबर कबीलाले और इनमें थोड़ा नीलाथोथाडाले और इनसबसे चौगुनागौकाघृत मिलावे और नीबके पत्तोंकारस अनुमान मुआफिक डाले पीछे इनसबको घृतमें खूब दोदिनतक पीसे फिर व्रणके लगावे तौ व्रण मात्र सब अच्छे होयँ १५ यह वैद्यरहस्यमें है अथवा सुफ़ेद मोम। मस्तंगी। गोंद। मैंढल। नीलाथोथा। सुहागा। सज्जी। सिंदूर। कबीला। मुरदासंख। गूगल। कालीमिरच। सोनेरू। इलायची। वेर। सुफ़ेद। शिंगरफ। शोधीगन्धक येसब बराबर ले मोम बिना सबको इकट्ठा पृथक् २ महीन पीस और मोमको गौकेघृतमें अग्निकेऊपर तपाय शुद्धकरले पीछे सब औषध इस मोम में मिलाय खूब महीन खरलमें २ दिन महीन पीस एक जीवकरै तौ सब शस्त्रव्रण और दुष्टव्रणभी इसके लगानेसे अच्छेहोयँ १६ ये वैद्यकुतूहलमें लिखेहैं अथवा नीलाथोथा। मुरदासंख। सुफ़ेद खैरसार। सिन्दूर। शिंगरफ। मोमकेसर। गौकाघृत ये सब बराबर ले पीछे गौके घृतको गरमकर नीचे उतार इसमें पहिले नीलाथोथा पीसडाले पीछे उसीसमय इसमें मोमडालै फिर पिघलायले फिर इसमें ये औषध महीनपीस

डाल इन सबको एक जीवकर कांसेकी थाली में बहुतसा जल डाले उसमें मोम सहित ये सब औषधडाले हथेलीसे १ दिनतक अच्छीतरह मर्दनकरे पीछे इस मलहमको व्रणमात्रके लगावे तो व्रणमात्र और चांदाआदि सब अच्छे होयँ १७ यहभी वैद्यकुतूहलमें है अथवा शिंगरफ ३ पैसेभर सुफेदमोम ३ पैसेभर सज्जी १ पैसेभर नींबके पत्तोंकी टिकड़ी कर गौके घृतमें पकावे और मोमघृतमें पिघलायले मुरदासंख १ पैसेभरले पीछे इन्हें महीन पीस एकजीवकर व्रणके लगावे तो व्रणमात्रअच्छेहोयँ १८ ॥

अथ शरीरमें हाथपांव आदिफटि २ बेवांईसी पड़जायँ उसके अच्छे होनेका मलहम ॥

राल १ पैसेभर कत्था १ पैसेभर कालीमिरच १ पैसेभर गौकाघृत २ पैसेभर चमेलीकातेल ४ पैसेभर इन सब औषधों को महीनपीस लोहके करछुलेमें मलहमकरले पीछे इसको लगावे तो हाथपैर आदिका फटना निश्चय अच्छाहोय १९ ॥

अथ नींबका मलहम ॥

नींबके पत्तोंकारस १ सेरकाढै पीछे गौकाघृत पावभर करछुलेमें चढ़ाय उसको गरमकरै जब गरमहोय तब उसमें राल४ पैसेभरडाल उसे पिघलावे जब वहपत्तोंकारस उसमें सूखजाय और गाढ़ाहोजाय तबकत्था १ पैसेभर नीलाथोथा १ पैसेभर मुरदासंख १ पैसेभर इन्हें महीनपीस उसमेंडाल एकजीवकर पीछेकपड़ेमें लगाय व्रणके ऊपरलगावे तो व्रण निश्चयअच्छा होय २० ॥ अथ व्रणके स्थानकी त्वचाका वर्ण अच्छे करनेकी औषध॥

मैनसिल। मजीठ। लाख। दोनोंहल्दी ये बराबरले इन्हें घृत शहतमें महीनपीस त्वचाके लेपकरै तो व्रणकी त्वचाका शरीरकासा वर्णहोय २१ इति नाड़ीव्रण रोगकीउत्पत्ति लक्षणयत्न सम्पूर्णम्॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागर नामग्रन्थेरलीपदविद्रधिव्रणशोथशारीरव्रणदुष्टव्रणपित्तकफादिकरशस्त्रादिके आगंतुकव्रणअग्निदग्धव्रणग्रन्थिभग्ननाडीव्रणइनसर्वरोगोंकेभेद संयुक्तउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणंनामपंचदशस्तरंगः १५ ॥

अथ भगन्दररोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

गुदाके आसपास चारों ओर दो दो अंगुल में फुनसीहोयँ और फूटैं तब वहां पीड़ाहोय और उसजगह फुनसी बहाकरै उसको भगन्दर कहिये और भग गुदा और बस्तिकेबीच यहहोय है भगकीसी तरह यह रोग होयहै इसवास्ते इसे वैद्य भगन्दर कहै हैं सो भगन्दर पांचप्रकारका है बायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ शस्त्रादिककी चोटलगनेका ५ ॥

अथ वायुके शतयोनिक भगन्दरका लक्षण ॥

जो पुरुष कषैला और रूखा बहुत भोजनकरै उसकी वायु कोप को प्राप्तहोय गुदाकेपासफुनसीकरै और आलस्यकर पुरुष उसका यत्नकरैनहीं तबवह फुनसीपकै और उसजगह पीड़ाबहुत करै और वहफूटै तब उसमेंराद आदि मलमूत्र वीर्य्य येभी निकलाकरैं और उसमें चलनी के सदृश सौ छिद्र होजायँ इससे इसको शतयोनिक भगन्दर कहते हैं १ ॥

अथ पित्तके उष्ट्रग्रीव भगन्दरका लक्षण ॥

गरमवस्तुके खानेसे पित्त कुपित होयहै तब गुदाके चौगिर्द दोअंगुलकी जगहमें लालफुनसी तत्काल पकिजायँ और उसमें गरम२रादनिकले और वह फुनसी ऊँटकी गर्दनके सदृशऊँची होय उसको पित्तका उष्ट्रग्रीव भगन्दर कहै हैं ॥

अथ कफके परिस्रावी भगन्दरका लक्षण ॥

उसमें खुजली बहुतचलै और गाढ़ीरादनिकले और पीड़ा थोड़ीरहै वह फुनसी सपेदहोयँ स्रवाकरै उसको परिस्रावी कफका भगन्दर कहिये ३ ॥

अथ सन्निपात के शम्बूकावर्त्त भगन्दरका लक्षण ॥

उस फुनसीमें बहुतप्रकारकी तो पीड़ाहोय और बहुत प्रकारके वर्णहोयँ और वह स्रवाकरै और वही फुनसी मुनका

दाखके सदृश होय और शंखकी भीतरली नाभिके सदृशहोय उसे सन्निपातका शम्बूकावर्त्त भगन्दर कहिये ४॥

अथ शस्त्रादिककी चोट लगनेके भगन्दरका लक्षण॥

गुदा के पास कांटे आदि लगे होयँ अथवा वहां खुजलाने से नखादिक लगिजायँ अथवा वहांके बाल बनाने में छूराकी धार लगिजाय तब वहां फुनसीहोय और वह फुनसी फूटे तब उसकी रांदकी चेपसे वहां और फुनसी होजायँ और वे जायँ नहीं और स्रवाहीकरैं उसे उन्मार्गसंज्ञिक शस्त्रकी चोट लगनेका भगन्दर कहिये ५॥

अथ भगन्दरका कष्टसाध्यलक्षण॥

भगन्दर तो सबही कठिनतासे अच्छेहोयँ परन्तु सन्निपात का और चोटलगनेका भगन्दर अच्छाहोय नहीं॥

अथ भगन्दर का यत्न॥

गुदाकीजगहभगन्दर उपजाजानै तब वैद्य जोंकआदिलगाय उस जगहका रुधिर तत्काल कढ़ायडालै तौ वे फुनसी पकैंनहीं अथवा उस जगह फुनसी उपजीजानै तौ वहां साटीकीजड़। गिलोय। सोंठि। मुलहठी। बड़केकोमलपत्ते इन्हें महीनपीस सुहाता २ गरम लेपकरै तौ भगन्दरकी फुनसी अच्छीहोयँ १ अथवा तिल। नींबकाबक्कल। महुआ इन्हें महीनपीस शीतल जलसे लेपकरै तौ पित्तकाभगन्दर अच्छाहोय २ अथवा चमेली के पत्ते। बड़केपत्ते। गिलोय। सोंठि। सेंधानोन इन सबको मट्ठे में महीनपीस भगन्दरके लेपकरै तौ भगन्दर अच्छाहोय३ अथवा हल्दी। आकका दूध। सेंधानोन। गूगल। नींबकेपत्ते इन्हें औटाय इनमें अनुमान मुआफ़िक़ तेलडाल पकावे जब जल मात्र जलजाय और तेलमात्र आयरहै तब इसतेलका मर्द्दनकरै तौ भगन्दरजाय ४ अथवा गूगल। त्रिफला। पीपल इन्हें बरा-बरले महीनपीस १। टंक जलसेले तौ शोथ। गोला। बवासीर।

भगन्दर इनको यह दूरकरै है ५—इति नवकार्षिक गूगल ॥
अथवा बहुत चतुरवैद्य वा साथियोंसे चीरादिवावे और मल-हम आदि लगाय व्रणका यत्न करै तौ भगन्दर अच्छाहोय ६ भगन्दरवाला इतने वस्तुकरै नहीं खेद। मैथुन। युद्ध। घोड़ेकी सवारी और नवीन अन्नकाभोजन और भगन्दर अच्छाहोगया होय तौभी १ वर्षतक इतनी बस्तु करैनहीं ॥ यह भावप्रकाश में लिखाहै ॥ अथवा रसौत। दोनोंहल्दी। मजीठ। नींबकेपत्ते। निसोत। तेजबल। दात्यूणी इन्हें महीनपीस भगन्दरके लेपकरै और इन्हींसे उसे धोवै तौ भगन्दर अच्छाहोय ७ अथवा कुत्ते का हाड़। केंचुआ इन्हें गधेके रुधिरसे महीन पीस लगावै तौ भगन्दर अच्छाहोय ८ अथवा बिलाईके हाड़ की राख कुत्ते के हाड़की राख इन्हें लोहेके पात्रमें गौकेघृतसे घिसि लेपकरै तौ भगन्दर जाय ९ अथवा बिलाईके हाड़को त्रिफलेकेरससे महीन पीस भगन्दरके लेपकरै तौ भगन्दर जाय १० ॥

अथ रूपराज रसकी विधि ॥

पारा १ भाग तांबेकामैल ४ भाग इन दोनोंको इकट्ठाकर कागलहरीके रसमें ५ दिन खरलकरै पीछे इन्हें तांबे केसम्पुट में धरै उसके आसपास और ऊपर रेतसे हांडी भरै फिर उसके नीचे लकड़ियोंकी ८ प्रहर आंचदे फिर स्वांग शीतल होनेपर सम्पुटको उसमेंसेकाढ़ फिर उन्हें काढ़ घृत शहतमें डुबोवे पीछे उन्हें पक्की मूसीमें धर उसकी अन्धमसीकर धौकनीसे खूबधों-कावे जब वह चक्रखाय फिरै तब उसमेंसे काढ़ले तब वह रस सिद्धहोय पीछे इस रसमेंसे २ रत्ती शहतसेले तो भगन्दर नि-श्चय अच्छाहोय ऊपरसे त्रिफलेका काढ़ापीवै और पथ्यसेरहै ११—इति रूपराज रसः ॥

अथ रवि सुन्दर रस ॥

पारा १ भाग आमलासारगन्धक २ भागलेके इन दोनोंकी

खरलमें कजली करै फिरि ग्वारके पट्ठेके रसमें खरलकरै पीछे इसका गोलाकर तांबेके सम्पुटमें धरै और उस सम्पुटको हांड़ी के चारोंओर आस पास राखभर बीचमें धरै पीछे उसके नीचे १ दिनतक अग्नि लगावै फिर स्वांगशीतल होनेपर उसको काढ़ै फिर उसमें जँभीरी के रसकी ७ पुटदे पीछे उसे १ रत्ती शहत और घृतसे चाटै तौ भगन्दरजाय ऊपरसे मूसली। लहसनपीवै इसके खानेके ऊपर मीठाआहार। दिनमें सोना। मैथुन और शीतल भोजन करै नहीं १२ इति रवि सुन्दर रसः यह रस सिंधुमें लिखा है ॥ इति भगन्दर रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

अथ उपदंशरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

हथरसके करनेसे और इन्द्रीमें किसी तरह नख और दांत के लगने से अथवा स्त्रियों की भगके ऊपर कठोर बालों के उखाड़ने से अथवा योनि का छिद्र महीन होने से स्त्रियों की योनि दूषित होनेसे अथवा लिंगेन्द्री को धोवै नहीं इसकारण से अथवा स्त्री पुरुषसे मैथुन बहुत करै इन कारणों से पुरुषकी लिंगेन्द्रीके विषे ५ प्रकार का उपदंश होय है और नानाप्रकार का कुपथ्य करैतो यह रोग होयहै सो उपदंश ५ प्रकार का है बायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ और लिंगेन्द्री में किसी तरह नख दन्तादिक की चोटलगने का ५ ॥

अथ वायुके उपदंशका लक्षण ॥

लिंगेन्द्री के विषे गरमीकर पीड़ा होय और बेवाईके सदृश फटिजाय और वह फड़के और उसजगह काली फुनसी होयँ तो जानिये कि बायुका उपदंश है १ ॥

अथपित्तके उपदंशका लक्षण ॥

उस जगह पीली फुनसियां होजायँ और उनसें चेप बहुत निकलै और कंठमेंदाहहोय अथवा फुनसियां लालहोयँ तो पित्त का उपदंश जानिये २ ॥

अथ कफके उपदंश का लक्षण ॥

जिसमें खाजबहुत होय और सुफेद फुनसियां होयँ और गा-
ढीरादस्रवै उसे कफका उपदंशकहिये ३ और ये सब लक्षण
जिसमेंमिलें उसे सन्निपातका उपदंश जानिये ४ ॥

अथ उपदंशका असाध्य लक्षण ॥

जो लिंगेन्द्रीका मांसविखरजाय उसमें कृमिपड़िजायँ इन्द्री
गलिजाय। अंडकोश अवशेष रहजाय वह उपदंश असाध्यजा-
निये ५ अथवा उपदंशवाला यत्नकरै नहीं और बिषय करता
रहै उसके समयपाय लिंगेन्द्रीविषे सूजन होआवै और इन्द्री
पकिजाय और उसमें कृमिपड़िजायँ और इन्द्री गलिजाय वह
पुरुष मरजाय ॥

अथ लिंगार्शका लक्षण ॥

जिस पुरुषकी लिंगेन्द्रीके विषे धान के अंकुर सदृश ऊपर
होजायँ वा कुत्ते की शिखासदृश होजायँ और लिंगेन्द्रीमें और
उसकी सन्धिकी नसों में पीड़ा बहुत होय और उसकी सन्धि
और इन्द्री चूनेलगे इसे लिंगार्श कहिये १ ॥

अथ उपदंश का यत्न ॥

जोंक लगाय के उस जगह का रुधिर कढावै और उसको
पकनेदे नहीं तो उपदंशजाय १ अथवा साटीकीजड़। गिलोय।
सोंठि। मुलहठी। बड़के कोमल पत्ते इन्हें औटाय इनके पानी
से लिंगेन्द्री को धोवै तो उपदंश जाय २ अथवा लिंगेन्द्री की
फस्त खुलवावै तो उपदंश जाय ३ अथवा बड़केकोमलपत्तेमहु-
आकावक्कल। जामनकावक्कल। पठानीलोध। हड़कीछाल। हलदी
ये सबबराबर ले इन्हें जलमें महीनपीस लिंगेन्द्रीके लेपकरे तो
सब व्यथाजाय ४ अथवा लिंगेन्द्री पकिजाय और इन्हीं औष-
धोंसे धोवै तो उपदंश जाय ५ अथवा त्रिफले के काढ़से धोवै
अथवा भांगरेके रससे धोवै अथवा कमलके पानीसे धोवै अ-
थवा लेपकरे तो उपदंशजाय ६ अथवा सहँजनेके वृक्षके वक्कल

का चूर्ण अथवा दात्यूणीके बक्कलका चूर्ण महीनपीस लिंगेन्द्रीके लेपकरे तौ उपदंश जाय ७ अथवा सुपारी को पानी में घिस लगावे तो उपदंश जाय ८ अथवा कडाहीमें त्रिफलेको जलाय उसकी राखकर शहतसे उपदंशपै लेपकरे तो यह रोग दूरहोय ९ अथवा पटोल। नींबकी छाल। त्रिफला। चिरायता। खैरसार। बिजैसार। गूगल ये बराबर ले पीछे इन्हें औटाय पीवै तो उपदंशजाय १० अथवा चिरायता। नींबकीछाल। त्रिफला। पटोल। कणगचकी जड़। आंवला। खैरसार। बिजैसार इनके काढ़के पानीमें घृत पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र रहजाय तब इस घृतका लेपकरै अथवा भोजन में खाय तो उपदंशजाय ११–इति भूनिम्बादि घृतम्॥

अथवा जो घृत कोढ़ और व्रणके यत्नमें लिखाहै सो घृतलगावै अथवा भोजनमेंखाय तो उपदंशजाय १२ अथवा जुलाब के लेनेसे उपदंशजाय १३ अथवा जंगीहड़ ८ पैसेभर सफेद कत्था १ पैसेभर नीलाथोथा १ पैसेभर इन्हें महीनपीस पीछे १०० पक्केनींबूके रसमें खरलकरे यह रस सुखायदे पीछे इसकी गोली १ माशेभरकी करे १ गोलीनित्य १५ दिन दहीके साथ ले और पथ्यसेरहै तो उपदंश निश्चयजाय १४ अथवा नीलाथोथा १ भाग कत्था २ भाग मुरदासंख २ भाग सुपारीकीराख २ भाग इन्हें महीनपीस उपदंशके चांदीमें इनको बुरकावे तो उपदंशजाय १५ अथवा पारा। गन्धक। हरताल। सिंदूर। मनासिल इन्हें तांबेकेपात्रमें तांबेकेघोटेसे घृतमें पीस ३ दिन पीछे इसेलगावे तो उपदंशजाय १६ अथवा अपस्मार दूरहोने का यत्न जो पीछे लिखाहै उससे लिंगार्शका यत्न वैद्यकरै इति उपदंश रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥ ये सब भावप्रकाशमें लिखेहैं॥

अथ शूकरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जो मूर्खपुरुष विना बिचारे मूर्खके कहनेसे लिंगेन्द्रीके पट्टी

लेपादिक करि बढ़ाया चाहै उस पुरुषके अठारह प्रकारके लिंग के बिषे शूकरोग उत्पन्नहोयहैं सो अठारहप्रकार येहैं सर्षपिका १ अष्ठीलिका २ ग्रथित ३ कुम्भिका ४ अलजी ५ मृदित ६ सम्मूढ़पीड़िका ७ अवमन्थ ८ पुष्करिका ९ स्पर्शहानि १० उत्तमा ११ शतयोनक १२ त्वक्पाक १३ शोणितार्बुद १४ मांसार्बुद १५ मांसपाक १६ विद्रधि १७ तिलकालक १८ ॥

अथ सर्षपिकाका लक्षण ॥

जिसके किसीतरहसे लिंगमें कफरक्त करके सरसों सदृश फुनसीहोजायँ उसे सर्षपिका नाम शूकरोग कहिये १ ॥

अथ अष्ठीलिकाका लक्षण ॥

किसीतरह पुरुषके लिंगकेविषे कड़ी और टेढ़ीपीड़ाकोलिये वायुकरके फुनसियांहोयँ उसे अष्ठीला शूकरोगकहिये २ ॥

अथ ग्रथितका लक्षण ॥

किसीतरह लिंगेन्द्रीविषे कफसे फुनसीहोजायँ उसे ग्रथितनाम शूकरोगकहिये ३ ॥ अथ कुम्भिका शूकरोगका लक्षण ॥

किसी कारणसे रक्त पित्तसे जिसके लिंगमें जामनकीगुठली के सदृश फुनसी होजायँ उसे कुम्भिका शूकरोग कहिये ४ ॥

अथ अलजी शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकीइन्द्रीमें प्रमेहकी फुनसीहोजायँ उसे अलजीकहिये ५ ॥

अथ मृदित शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री किसी तरह मसलगईहोय और उसमें वायु करके पीड़ा होआवे उसे मृदित कहिये ६ ॥

अथ संमूढ़पीड़िका शूकरोगका लक्षण ॥

जिसके दोनों हाथोंसे इन्द्रीपीड़ी गई होय उससे फुन्सी हो आवें उसे मूढ़पीड़िका कहिये ७ ॥

अथ अवमंथ शूकरोगका लक्षण ॥

जिसके किसीकारणसे लिंगकेविषे कफ रुधिरके दुष्टपनेसे

बड़ी और बहुत फुनसियां हो आवें और उनमें पीड़ा होय रोमांच हो आवै उसे अवमंथ शूकरोग कहिये ८ ॥

अथ पुष्करिका शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी सुपारी के ऊपर पित्त रुधिर के कोपसे फुनसियां बहुत होयँ उसे पुष्करिका शूकरोग कहिये ९ ॥

अथ स्पर्शहानि शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री किसीकारणसे हाथ आदिका स्पर्शसहै नहीं उसको स्पर्शहानि शूकरोग कहिये १० ॥

अथ उत्तमा शूकरोगका लक्षण ॥

जिस पुरुषके अजीर्णसे मूंग उड़दके सदृश रक्तपित्तकेकोप से लिंग के विषे लाल फुनसी हो जायँ उसे उत्तमा शूक रोग कहिये ११ ॥ अथ शतयोनक रोगका लक्षण ॥

जिसके लिंगकेविषे किसी कारणसे वात रुधिर के कोप से छिद्र अधिक पड़िजायँ उसे शतयोनक कहिये १२ ॥

अथ त्वक्पाक शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री वायु पित्त कफ करके पकिजाय और उसमें दाह होय और पीड़ासे शरीर में ज्वर हो आवे उसे त्वक्पाक शूकरोग कहिये १३ ॥

अथ शोणितार्बुद शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रीमें काली लाल फुनसी होआवें और वहां पीड़ा होय उसको शोणितार्बुद कहिये १४ ॥

अथ मांसार्बुद शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रीका मांस बिखरजाय और वहां पीड़ा अधिक होय तो उसे सर्वदोषके कोपका मांस पाक कहिये १५ ॥

अथ विद्रधि शूकरोगका लक्षण ॥

जिसके लिंगमें सन्निपात के कोपसे फुनसियांउठैं उसे विद्रधिशूकरोग कहिये १६ ॥

अथ तिलकालक शूकरोगका लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रीमें काले और नानाप्रकारके रंगकोलिये और विषको लिये ऐसी फुनसीहोयँ और पकन लगजायँ और उसमें रादपड़े इन्द्री गलिजाय यह सन्निपात के कोपसे होय है इसे तिलकालक शूकरोग कहिये १७॥

अथ शूकरोगका असाध्य लक्षण ॥

मांसार्बुद १ मांसपाक २ विद्रधि ३ तिलकालक ४ ये चार अच्छे नहीं होयँ १॥ अथ शूकरोगका यत्न ॥

अठारहों शूकरोगोंका विष दूर करनेवाला यत्न कीजे अथवा लिंगेन्द्रीके जोंक लगाय दुष्ट रुधिर कढ़ाय डालिये तौ शूकरोग जाय १ और इंद्री के अच्छा जुलाब दे तौ शूक रोग जाय २ अथवा लघु भोजनसे शूकरोग जाय ३ अथवा त्रिफलेके काढ़े से गूगलखाय तो शूकरोगजाय ४ अच्छी औषधों के लेप और सेंकसे शीतलयत्नसे यह रोगजाय ५ अथवा दारुहल्दी। तुलसी। मुलहठी। धमासा इन्हैं तेलडाल पकावै उससे औषध सीझि जायँ तब इसतेल का मर्दन करै तौ शूकरोग जाय ६ अथवा खरैटी के तेलका मर्दन करै तौ शूकरोग जाय ७ यह सर्वसंग्रह में लिखा है इतिशूकरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

अथ कुष्ठरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

विरुद्ध अन्न पानके खाने पीनेसे पतली चिकनी भारी वस्तु के खानेसे और धूपमें रहनेसे श्रम करनेसे बमन और मलमूत्र के वेगके रोकनेसे बहुत अग्निके तापनेसे बहुत भोजनके करने से शीत उष्णके नहीं गिननेसे श्रमके करनेसे भयके लगनेसे और धूपभय श्रमसे दुःखित हुआ जो पुरुष और तत्काल इसके ऊपर शीतल पानी पीने और अजीर्ण में भोजन करने से और बमन जुलाब आदि में कुपथ्य करने से नवीन जलके पीनेसे दही मछली बहुत नोन बहुत खटाई और उड़द। मूली।

पिसाअन्न। तिल। हल्दी। गुड़ इनके बहुत खानेसे दिनकेसो-नेसे ब्राह्मणके शापसे और अनेक प्रकारके अधिक खानेसे स्त्रीसंगसे और अनेकप्रकारके पापोंके करनेसे मनुष्योंको वायु पित्त कफ और सातों धातुदुष्टहोयँ उसकेशरीरके रुधिरमांसके जलको दूषितकरैं और १८ प्रकारके कोढ़के कारणप्रकटकरैहैं॥

॥ अथ अठारह प्रकारके कोढ़ोंकानाम ॥

कपाल १ उदुम्बर २ मंडल ३ ऋक्षजिह्व ४ पुंडरीक ५ सघुम कहिये बिभूति ६ काकिण ७ एककुष्ठ ८ गजचर्म ९ चर्मदल १० बिचर्चिका ११ पामा १२ दाद १३ विस्फोटक १४ वैपादिक १५ किटिभ १६ अलस १७ शतारु १८ ॥

॥ अथ कुष्ठरोगकापूर्वरूप ॥

पहिले ब्रणहोयँ वे ब्रणकोमलहोयँ अथवा खरदरा बहुत जिनका स्पर्शहोय अथवा रूखाहोय अथवा ब्रणोंमें दाह होय खुजली चले वा त्वचा सूखजाय ब्रणोंमें पीड़ाहोय ब्रण ऊंचा होय और शूल बहुत होय और तत्काल उसकी उत्पत्ति होय और बहुत दिनतक रहै और कुपथ्य तो थोड़ाकरै परन्तु कोप बहुत होय और वायुके होनेसे रोमांचहोयँ और उसमें रुधिर काला निकले जिसमें ये लक्षणहोयँ तो जानिये कि इसकेकोढ़ होगा १ ॥

॥ अथ कोढ़कासामान्य लक्षण ॥

पूर्व जन्मके पापसे मनुष्योंकी कुबुद्धिसे बिकूचित होकरकुपथ्य करै पीछे उन कुपथ्योंसे कोपको प्राप्तहुआ जो वायु। पित्त। कफ सो शरीरकी नसोंमें प्राप्तहोय त्वचा रुधिर और मांसदूषितकरै और शरीरकी त्वचाकास्वरूप औरसाही करदे उसको वैद्यकोढ़ कहै हैं १ और वायु शरीरमें बहुत कोपकरकपाल कुष्ठको पैदाकरैहै शरीरमें कफकोपको प्राप्तहोय तबमण्डलनाम कोढ़को करै वायु पित्त शरीरमें कोपको प्राप्तहुआ होय तो बिचर्ची और ऋक्षजिह्वनाम कोढ़को पैदाकरै है और वायु।

कफ शरीर में कोपको प्राप्तहोकर गजचर्म और किटिभ कुष्ठ सिध्म अलस कुष्ठ विपादिका इनको पैदाकरैहै पित्त। कफ शरीरमें कोपकोप्राप्तहोकर दाद शतरुखी पराडरीक विस्फोटककोढ़ पांवचर्म दलकोढ़ इनको पैदा करैहै और सब वायु पित्त कफ शरीरमें कोपको प्राप्त होकर काकण नाम कोढ़को पैदाकरैहै १॥

अथ सात महा कुष्ठके मध्ये कापालिककोढ़का लक्षण॥

जिसकी शरीरकी त्वचा काली लाल और फटी रूखीऔर कठोर और सूखीहोय और उसमें पीड़ा बहुतहोय उसकोढ़को वैद्य कपाल नामकोढ़ कहैहैं॥ यहकोढ़ विषमहै देरसेजाय २॥

अथ औदुम्बरकुष्ठका लक्षण॥

जिसकी शरीरकी त्वचामें दाह और ललाई बहुतहोयऔर खुजली बहुत चलै रोम २ में पीड़ा होय और शरीरकी त्वचा गूलरका फल सदृश होजाय उसे औदुम्बर कोढ़कहिये ३॥

अथ मण्डलकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा सुपेद और लाल होय और वह स्थिर रहै चिकनी और ऊंची होय गोली रहाकरै उसे मण्डलनाम कोढ़ कहिये ४॥

अथ सिध्मनाम विभूतिकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा सुपेद ताँबेके सदृशहोय और त्वचा सूक्ष्म होय उसमें खुजलीचलै और महीन २ त्वचा उतरजाय और वह विभूतिमुख्य हृदयमें बहुत होय घियाके फूलके सदृशहोय उसे वैद्य सिध्मनाम विभूतिनाम कोढ़ कहै हैं ५॥

अथ काकणनाम कोढ़का लक्षण॥

जिसकीत्वचा रेशमके सदृशहोय बीचमेंकाली अन्तमेंलाल ऐसीहोय और वहपकैनहीं जिसमें पीड़ाबहुत होय उसे काकण नाम कोढ़ कहैं हैं सो सन्निपातके कोपसे उपजै है यह अच्छा होय ६॥

अथ पुंडरीकनाम कोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचासुपेद ललाईको लियेहोय है कमलकी पाखुरी

सदृशहोय वह कफकेकोपसे होय उसेबैद्य पुंडरीककोढ़कहेहैं ७॥

अथ ऋक्षजिह्वनाम कोढ़का लक्षण॥

जिसकीत्वचारुधिर पर्य्यन्तमें लालहोय और जिसमें काली भीहोय उसे ऋक्षजिह्व कोढ़कहें हैं ८॥

अथ ११ क्षुद्रकोढ़ हैं तिनमें एककुष्ठनामकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचामें पसीना नहीं आवे बड़ा जिसकास्थान होय मछलीके टूक सदृश होय उसे एककुष्ठ नाम कोढ़ कहें हैं १॥

अथ गजचर्म्मका लक्षण॥

हाथी के चर्म सदृश जिसकी त्वचा बरंगी होय उसे गजचर्म्मकोढ़ कहिये २॥

अथ चर्मदलकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा शूलको लिये लालहोय और जिसमें खुजली चलै और जिसमें फोड़े फटेसे होयँ और हाथका स्पर्श न सहा जाय उसे चर्मदल कोढ़कहिये ३॥

अथ बिचर्चिका कोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचामें फुनसी खाजको लियेहोयँ और कालीहोयँ और उनमें चेप निकले और हाथपैर में होयँ उसे बिचर्चिका कोढ़कहिये ४॥ अथ पामानामकोढ़ का लक्षण॥

जिसके शरीरमें छोटी २ और बहुत फुनसीहोयँ और जिन में चेप निकले खाजहोय और लालफुनसी होयँ और दाहहोय उसे पामानाम पांवकोढ़ कहिये ५॥

अथ दादनाम कोढ़ का लक्षण॥

जिसमें खाजहोय और फुनसियां लालहोयँ, त्वचासे ऊंची होयँ ये लक्षण होयँ तो दादनाम कोढ़ कहिये ६॥

अथ दादकेभेद कच्छदादका लक्षण॥

जिसके हाथपैर कांछ कटिमें जो फुनसियां होयँ और जिस में दाहहोय उसे कच्छदाद कोढ़ कहिये ७॥

अथ विस्फोटक नामकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा में फोड़े काले और लाल और छोटे २ होयँ उसे विस्फोटक नाम कोढ़ कहिये ८॥

अथ किटिभनाम कोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा में सूखे व्रणके स्थान माफिक लाल खरदरा कठोर स्पर्श होयँ उसे किटिभ नाम कोढ़ कहिये ९॥

अथ वैपादिक कोढ़का लक्षण॥

जिसमें खुजलीचलै दाह और पीड़ाको लिये पैरही में होय उसे वैपादिक कोढ़ कहिये १०॥

अथ अलसकनाम कोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा में लाल खुजली को लिये फुनसी होयँ उसे अलसक कोढ़ जानिये ११॥

अथ शतारुनामकोढ़का लक्षण॥

जिसकी त्वचा में फुनसियां लाल काली दाहको लिये होयँ उसे शतारु नाम कोढ़ कहिये १२ — अथ शरीरकी सात धातुओं में प्राप्तहुये जो कोढ़ तिन का पृथक् २ लक्षण॥

अथ रसधातुमें प्राप्तहुआ जोकोढ़ उसका लक्षण॥

त्वचामें स्थित जोकोढ़ उसकी त्वचाका स्वरूप औरसाहोय और त्वचा रूखीहोय और सूखजाय रोमांचहोय पसीना बहुत आवे येलक्षण होयँ तो रसधातुमें प्राप्तहुआ कोढ़ जानिये १३॥

अथ रुधिरमें प्राप्तहुआ जो कोढ़ उसका लक्षण॥

जिस में खाज होय और राद निकले तब जानिये रुधिरमें प्राप्त हुआ कोढ़ है १४॥

अथ मांसमें प्राप्तहुयेकोढ़का लक्षण॥

जोकोढ़पुष्ट बहुतहोय और मुँह बहुत सूखे और फुनसियां कठोर होयँ और उनमें पीड़ा होय येलक्षणहोयँ तोमांसमें प्राप्त हुआ कोढ़ जानिये १५॥

अथ मेदमें प्राप्तहुये कोढ़का लक्षण ॥

हाथ नष्टहोजायँ कुहनी आयरहे चलाजाय नहीं सब अंग टूटने लगिजायँ थोड़ी चोट सर्वत्र फैलजाय मुँहसूखे फुनसियां कठोर और उनमें पीड़ाहोय ये लक्षण होयँ उसे मेदमें प्राप्तहुआ कोढ़जानिये १६ ॥

अथ हाड़मींगीमें प्राप्तहुये कोढ़का लक्षण ॥

नाक गलिजाय नेत्र लालहोजायँ और उस व्रणमें कृमिपड़ जायँ कण्ठका स्वर घोंघों होजाय और व्रणमें पीड़ाहोय तब जानिये हाड़ मींगी में प्राप्तहुआ कोढ़ है १७ ॥

अथ वीर्यमें प्राप्तहुआ जो कोढ़ उसका लक्षण ॥

जिसके माता पिताके वीर्य्यमें कोढ़के दोष बहुतहोयँ उससे हुई जो सन्तति सो भी कोढ़ीहोय १८ ॥

अथ कोढ़का साध्यासाध्य लक्षण ॥

जो कोढ़ वायुकफका होय और त्वचा रुधिर मांसमें रहता होय सो तो साध्य जानिये और जो कोढ़ मेदमेंजाय प्राप्तहोय और कृमि पड़जायँ और दाह होय और मन्दाग्नि होय जाय और त्रिदोषका होय सो असाध्य जानिये और शुक्रमें प्राप्तहुआ जो कोढ़ सो भी असाध्य जानिये ॥

अथ कोढ़का असाध्य लक्षण ॥

कोढ़ बिखरजाय और चूने लगिजाय स्वर घोंघों होजाय और उसे बमन बिरेचन करनेदे नहीं १ ॥

अथ कुष्ठकाभेद एकश्वित्रभीहै उसकीउत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो कोढ़की उत्पत्तिहै वही श्वित्रकीभी उत्पत्ति है श्वित्रभी लालहोय चुवैनहीं कोढ़चुवै इससे यहीभेदहै और श्वित्रकाभेद एक किनासहै यह लालहोयहै पुनः श्वित्र दोप्रकारकाहै एक तो बायु पित्त कफका १ दूसरा व्रणका २ ॥

अथ श्वित्रकोढ़का साध्यासाध्य लक्षण ॥

महीनहोय कालेबालमें होय एक दोषका होय नवीन उत्पन्न होय नहीं अग्निसे उपजाहोय ऐसा श्वित्रकोढ़ साध्य जानिये इसमें और लक्षण होयँ तो श्वित्र असाध्य जानिये ॥

अथवा कुष्ठीके मिलापसे कुष्ठ जैसे और मनुष्योंके जायलगै तैसेही औरभी ये रोग जायके लगै हैं॥ इन रोगवालोंका प्रसंग करै अथवा इकट्ठा भोजनकरै अथवा इकट्ठासोवै अथवा आपसमें वस्त्र पहिरै अथवा आपस में किसी वस्तुका लेपकरै तौ इतने रोग उसके जायलगैं सो रोग लिखते हैं श्वास १ कोढ़ २ ज्वर ३ राजरोग ४ नेत्ररोग ५ शीतला आदिले ये उड़केलगै हैं॥

अथ पुनः कोढ़का असाध्य लक्षण ॥

गुह्य और मुख हाथोंपर होय सो जाय नहीं ॥

अथ कोढ़रोगका यत्न ॥

हड़की छाल। कणगचकी जड़। सरसों। हल्दी। चाब। बावची। सेंधानोन। बायविडंग येसब बराबरले इन्हें गोमूत्रमें महीनपीस कोढ़केलेपकरै तौ कोढ़दूरहोय १ इतिपथ्यादिलेपः॥

अथवा बावची को महीनपीस अदरखके रसकी उसमें पुट दे पीछे इस कोढ़के ऊपर उबटनकरै तौ कोढ़जाय २ अथवा ब्रह्मा जीने मार्कण्डेयजी को बताया जो प्रयोग सो कोढ़को आदिले औरभी रोगों को दूरकरै है सो यहां लिखते हैं॥ नींबके फूलके समय तौ नींबके फूलले और फल बक्कल और जड़ पत्ते ले ये पंचांगले और दोनों हल्दी। त्रिफला। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। ब्राह्मी। गोखुरू। शोधा भिलावां। चित्रक। बायबिडंग। सार। बाराहीकन्द। गिलोय। बावची। किरमाला। मिश्री। कूट। इन्द्रयव। पाढ़। खैरसार यह बराबरले इन्हें महीनपीस नागरमोथाके रसकी पुटदे पीछे नींबके पंचांगके रसकी ७ पुटदे पीछे भांगरेके रसकी ७ पुटदे फिर इसे छायामें सुखाय महीन

पीस चूर्ण करले पीछे अच्छा दिन देखके कोढ़वाले को शहतके साथ अथवा खैरसारके काढ़ेकेसाथ प्रभातसमय गरमपानीसे अधेलाभरके प्रमाण जुलाबदे पीछे थोड़ा २ टकेभरतक बढ़ाता जाय और घृतसमेत इसके ऊपर हलका भोजनकरै तौ इतने रोगोंको दूरकरै च्यौची। उदुम्बर। पुण्डरीक। कपाल। दाद-किटिभअलसक। शतारु। बिरुफोटक ये सब जातिके कोढ़ हैं और बिसर्परोग भगन्दर श्लीपद बातरक्त और ब्रणमात्र प्रमेह मात्र प्रदर बिषमात्र उदरकेरोग इतने रोगोंको यह निम्बपंच-कावलेह दूरकरै है इति निम्बपंचकावलेहः॥

अथवा बावची ५ ट० भर शोधा गूगल ५ ट० भर शोधी सोनामक्खी ३ ट० भर सार २ ट० भर गोरखमुण्डी ३ ट० भर त्रिफला ३ ट० भर कणगच १ ट० भर खैरसार ५ ट० भर गिलोय २ ट० भर निसोत २ ट० भर नागरमोथा २ ट० भर बायबिडंग १ ट० भर हल्दी २ ट० भर तज १ ट० भर नींब कापंचांग ५ ट० भर चित्रक २ ट० भर इन सबकोमहीनपीस २ टंक प्रमाण शहत घृतके साथ गोलीकरै पीछे प्रभातही १ गोली गोमूत्रसे ले तौ कोढ़मात्र और बातरक्त पांडुरोग उदर रोग प्रमेह गोसा आदि रोगों को यह दूरकरै है और यह वृ-द्धताको दूरकर तरुणताको करै है इति स्वयंभुवगूगल॥

अथवा चित्रक। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल। जीरा। कलौंजी। खुरासानीबच। सेंधालोन। अतीस। कूट। चव्य। इलायची। जवाखार। बायबिडंग। अजमोद। नागरमोथा। देवदारु ये सब बराबर ले और इनसबकी बराबर शोधागूगल ले पीछे इनसबको महीनपीस एकजीवकरै घृतसे ४ माशेभर की गोलीकरै एकगोली भोजनके समय खाय तौ कोढ़मात्र कृमि ब्रणमात्र संग्रहणी बवासीर गृध्रसी गोला आदिको यह दूरकरै है—इति किशोर गूगल॥

अथवा २ सेर शोधाभिलावां १६ सेर पानीसें औटावै पीछे औटतेमें गिलोय २ सेर कूटिकरडालै जबइसपानीका चतुर्थांश रस रहै तब उतार उससें गौकाघृत १ सेर और गौकादूध ४ सेर डालै पीछे मिश्री १ सेर डालै शहत आधसेर डाल पीछे मधुरी आंचसे पकावै ये सब ठंढीहोयँ तब इसको आंचपरसे उतार ये औषधिडालै बावची २ टं० पवांरकेबीज २ टं० नींब कीछाल २टं० हड़कीछाल २टं० आंवला २टं० सेंधानोन २ टं० नागरमोथा २ टं० तज २ टं० इलायची २ टं० नागकेसर २टं० पित्तपापड़ा २टं० पत्रज २टं० नेत्रबाला २टं० खस २टं० चन्दन २टं० गोखुरू २टं० कचूर २टं० रक्तचन्दन २टं० ये सब औषधि महीनपीस उसरसमें मिलाय एकजीवकरै पीछे इसे १ट० भर प्रातही जलके साथ नित्यलेतो सर्वकुष्ठमात्र वातरक्त बवासीर आदिको यह दूरकरैहै और इस अमृतभल्लातकका खानेवाला इतनी वस्तुकरै नहीं खेद न करै धूपमें रहैनहीं अग्निके पास न जाय खटाई मांस दही खायनहीं तेल न लगावै मार्ग चलै नहीं ६ इति अमृत भल्लातकाअवलेहः ॥

अथवा नींबका वक्कल। गौरसर। मजीठ। कुटकी। त्रायमाण। त्रिफला। नागरमोथा। पित्तपापड़ा। बावची। जवासा। बच। खैरसार। रक्तचन्दन। पाढ़। सोंठि। भारंगी। अडूसा। चिरायता। कुड़ाकीछाल। निसोत। इन्द्रायनकी जड़। मूर्वा। वायविडंग। इन्द्रयव। चित्रक। मानपात। गिलोय। बकायन। पटोल। दोनों हल्दी। पीपल। किरमालाकीगिरी। सतौन्यवेद। शोधीचिरमिटी। मजीठ। करिहारीकीजड़। रास्ना। साटीकी जड़। दात्यूणी। शोधा जमालगोटा। सांगरा। कटसैला। अखरोट। शाखेटक ये सब औषधि पृथक् २ ट० भरले इन्हें जवकुटकर १६ सेर पक्के पानी में औटावै जब इसका चतुर्थांश रहै तब उतार छानले पीछे १००० शोधा भिलावां १६

सेर पानीमें औटाय ले जब इसकाभी चतुर्थांश रहै तब जुदा रक्खै पीछे इन दोनोंको इकट्ठा मिलाय ले पीछे इन दोनों के रसमें १०० ट० भर गुडकी चासनीमें ये औषधडालै सोंठि१ ट० भर मिरच १ ट० पीपल १ ट० त्रिफला ३ ट० नागरमोथा १ ट० बायबिडंग १ ट० चित्रक १ ट० सैंधानोन १ट० चन्दन १ ट० कूट १ ट० अजमोद १ ट० तज १ ट० पत्रज १ ट० नागकेसर १ ट० इलायची १ ट० भर ये सब औषध महीनपीस अवलेहमें डाल इनको एक जीवकरै पीछे अच्छा दिनदेखि २ ट० भर नित्यखायतौ सर्वकोढमात्र बवासीरी व्रणमात्र कृमि रोग रक्तपित्त उदावर्त्त कासश्वास भगन्दर उन रोगोंको यह दूर करै है और आमवातको दूरकर पुष्टई को करै है और शरीरकी परम कान्तिको करैहै भूंखको बढावैहै इसका खानेवाला खटाईआदि कुपथ्य करै नहीं गरमवस्तु खायनहीं–इतिभल्लातकाअवलेहः॥

अथवा मजीठ। त्रिफला। कुटकी। बच। दारुहल्दी। नींब की छाल। गिलोय इन्हें बराबर ले जवकुटकर ५ टं० का काढा नित्यले तौ कोढमात्र बातरक्त बिसर्प्प बिस्फोटक इन्हें दूरकरै है ८–इति लघुमंजिष्ठादि क्वाथः॥

अथवा मजीठ। बावची। पवांड। नींबकी छाल। हडकी छाल। हल्दी। आंवला। अडूसा। शतावरि। खरैटी। गंगेरन कीछाल। मुलहठी। महुआ। कटेली। पटोल। खस। गिलोय। रक्तचन्दन ये सब बराबरले इन्हें जवकुट कर ५ टं० भरका काढा करले तौ कुष्ठमात्र वातरक्त इनको यह दूर करै है ९–इति मध्यमंजिष्ठादि क्वाथः॥

अथवा मजीठ। इन्द्रयव। गिलोय। नागरमोथा। बच। सोंठि। हल्दी। दोनों कटेली। नींबकी छाल। पटोल। कूट। कुटकी। भारंगी। बायबिडंग। चित्रक। मूर्वा। देवदारु। जल

भांगरा। पीपल। त्रायमाण। पाढ़। शतावरि। खैरसार। विजयसार। त्रिफला। चिरायता। बकायन। किरमालाकीगिरी। निसोत। बावची। रक्तचन्दन। बरुनादात्यूणी। शाखोट अडूसा। पित्तपापड़ा। गौरीसर। अतीस। जवासा। इन्द्रायणकी जड़ ये सब बराबर ले जवकुटकर ५ टं० का काढ़ा नित्य ले तौ अठारह प्रकारके कोढ़मात्र वातरक्त रुधिर बिकारमात्र विसर्परोग त्वचाका शून्यपना इन सबरोगोंको दूरकरैहै १०—इति वृहन्मंजिष्ठादि क्वाथः॥

अथवा कालीमिरच। निसोत। नागरमोथा। हरताल। मैनसिल। देवदारु। हल्दी। दोनों बाड़छड़। कूट। रक्तचन्दन। इन्द्रायनकीजड़। कलौंजी। आकका दूध। गोबरकारस ये सब औषध धेले २ भरले शिंगीमुहरा १ पैसे भर कडुआ तेल १ सेर पानी ४ सेर गोमूत्र ८ सेर ले पीछे इनसबको मधुरीआंच से औटावै जब ये सब जलआदि जल जायँ तेलमात्र आयरहैं तब उतार छानले पीछे इसका मर्द्दनकरै तौ सर्वकुष्ठमात्र को यह दूरकरै है ११—इतिलघुमरिचादितैलम्॥

अथवा कालीमिर्च। निसोत। दात्यूणी। आककादूध गोबरकारस। देवदारु। दोनोंहल्दी। बाड़छड़। कूट। रक्तचंदन। इन्द्रायनकीजड़। कलौंजी। हरताल। मैनसिल। कनेरकीजड़। चित्रक। कलिहारीकीजड़। नागरमोथा। वायविडंग। पवांड़। सिरसकीजड़। कुड़ाकीछाल। नींबकीछाल। सतोंन्यकीछाल। गिलोय। थूहरकादूध। किरमालाकीगिरी। खैरसार। बावची। वच। मालकांगनी ये सब औषध २ टकेभर शिंगीमुहरा ४ ट० कडुआ तेल ४ सेर गोमूत्र १६ सेरले इन सबको इकट्ठा चढ़ाय मधुरी आंचसे पकावै जब गोमूत्र आदि सब जलजायँ तेलमात्र रहजाय तब उतारछानले पीछे इस तेलका मर्द्दनकरै तौ कोढ़मात्र को दूरकरै है॥ और इसका मर्द्दन यौवनपने को

करैहै और यह मनुष्य घोड़ा हाथीआदिके वायुमात्रके रोगदूर करैहै १२–इतिमरिचादितैलम् ॥

अथवा हरतालका चोखा पत्रकर चित्रकके रससे १ दिन खरलकरै पीछे साटीके रससे एक दिन खरलकरै पीछे इसकी टिकड़ी कर अच्छी तरह सुखावै फिर इस हरतालको साटी के पंचांगके खारके बीचमें धर चूल्हेपै चढ़ावै और इस हरतालका धुआं निकलने दे नहीं फिर उसकी टिकड़ीको उससाटीकेखार के बीच खूब दाबदे पीछे उसके नीचे निरन्तर एक रात दिन तक मधुरी आंचदे अथवा ४ दिन तक दे फिर स्वांग शीतल हुई उस टिकड़ीको खारमेंसे अच्छेप्रकार चतुरमनुष्य काढ़े वह हरताल तोलमें पूरी उतरै निर्धूम और सुफ़ेदहोय फिर इसमेंसे २ रत्ती मनुष्य खाय उसके ऊपर मरिचादिकक्काथले तौ अठारह प्रकारके कोढ़ बातरक्त उपदंश फिरंग वायु इनको यह हरताल दूरकरैहै और इसका खानेवाला नोन खटाई कडुआ रस खायनहीं धूपमें सोवै नहीं और नोनबिना नहीं रहा जाय तौ सेंधानोन खाय और मीठा बहुत खाय १३–इतिहरतालकी बिधि इसीको तालकेश्वर रस कहैहैं ॥

अथवा पारा। शोधीगन्धक। ताम्रेश्वर। सार। गूगल। चित्रक। शिलाजीत। कुचिला। बच। अभ्रक ये सब बराबर और कणगचके बीज एक औषधके भागसे चौगुनाले प्रथम पारे गन्धककी कजली करै फिर कजलीमें सब औषध मिलाय एकजीवकरै पीछे इसमेंसे २ टं० शहतघृतके साथ नित्यखाय ऊपरसे चावल दूधही खाय तौ गलतकुष्ठ जाय और शरीर उसका महासुन्दर कामदेवके सदृश होजाय ॥ यह रस खाय तौ स्त्रीसंगकरैनहीं १४–इतिगलतकुष्ठारिरसः ॥

अथ विभूतिका यत्न ॥

कूट। मूलीके बीज। सरसों। हल्दी। केसर इन्हैं सिरसके

जलमें पकाय लेपकरै तौ बहुत दिनकी भी विभूति जाय १५
अथवा केलेकाखार। हल्दी। दारुहल्दी। मूलीकेबीज। हरताल।
देवदारु। शंखका चूर्ण ये सबबराबरले इन्हैं नागरबेलकेपत्तों
के रसमें महीनपीस लेपकरै तौ विभूति दूरहोय १६॥

अथ चर्मदलकोढ़ का यत्न॥

अमचूरमें किंचित् सेंधानोन डाल जलसे तांबेकेपात्रमेंतांबे
के घोटेसे खूबपीस लेपकरै तौ चर्मदलकोढ़जाय १७॥

अथ पांवका यत्न॥

जीरा १ ट० भर सिंदूर ५ ट० भर इनदोनोंको कडुये तेलमें
खूबपीस पकाय इनकालेपकरै तौ पावँ अच्छाहोय १८ अथवा
मंजीठ। त्रिफला। लाख। कलिहारीकीजड़। हल्दी। आंवला-
सारगन्धक इन्हैं बराबर ले महीनपीस धूपमें खूब गर्मकरै फिर
इनका लेपकरै तौ पावँ अच्छा होय १९ अथवा पारा। दोनों
जीरा। दोनोंहल्दी। कालीमिरच। सिंदूर। आंवलासारगन्धक।
मैनसिल ये बराबर ले पीछे पारे गन्धककी कजलीकर इसक-
जलीमें ये औषध महीनपीस गौके घृतमें १ दिनखरलकरै पीछे
इसका मर्दनकरै तौ पावँ दूरहोय २० अथवा पारा। आंवला-
सार गन्धक। नीलाथोथा। कत्था। मेहदी। खुरासानीअजवा-
इन। मोम। मालकांगनी ये सब बराबरले पीछे पारे गन्धक की
कजलीकर और मोमको घृतमें जुदा पिघलावै पीछे ये औषध
पृथक् पीस कजलीमें मिलावे पीछे सब औषध गौके घृतमें इ-
कट्ठी कर १ दिनतक पीस पीछे इसका मर्दनकरै तौ पावँआदि
रुधिर के सबरोग जायँ २१ अथवा शोधी आंवलासार गन्धक
२ ट० नीलाथोथा ३ माशे इनदोनों को पानीसे महीनपीस गो-
लीबांधे पीछे इस गोलीको महीनकपड़ेमें बांध पोटलीकरै और
इस पोटलीको गेहूँकी अलोनी ३ या ४ बाटी में सेंकै फिर महीन
पीस घृतमें चुपड़ खावै अथवा इसका बूरे से चूरमाकर ५ दिन

खाय तौ पावँआदि रुधिरके सब बिकारजायँ २२ अथवा सेंधा-नोन। पवांड़केबीज। सरसों। पीपल इन्हें कांजीके पानीमें महीन पीस लेपकरै तौ पावँकी खुजली दूर होय २३॥

अथ कच्छदादकी औषध॥

आकके पत्तोंकारस और हल्दीके काढ़ेकारस इनमें सरसों का तेलपकावै पीछे इस तेलका मर्द्दनकरै तौ कच्छदादजाय२४ इति अर्कतैलम्॥

अथवा मैनशिल। हीराकसीस। आंवलासारगन्धक। सेंधा-नोन। सोनामक्खी। पत्थरफोड़ा। सोंठि। पीपल। करिहारी। कनेर। बायबिड़ंग। चित्रक। दात्यूणी। नींबके पत्ते ये सब औ-षध धेला २ भरले इन्हें जलसे महीनपीस इनके पानी में कडु-वातेल२सेर पकावै और उसीमें आक और थूहरकादूध आध२ पावडाले और गोमूत्र ४ सेरडाले पीछे इसको मधुरी आंच से पकावै ये सबजलजायँ तेलमात्र आयरहै तब इसका मर्द्दनकरै तौ असाध्यभी कच्छदाद जाय और पावँ खुजली और रुधिरके भी सबरोगजायँ २५-इति कच्छराक्षसनाम तैलम्॥

अथ दादका यत्न॥

कूट। बायबिड़ंग। पवांड़केबीज। तिल। सेंधानोन। सरसों ये सब बराबरले इन्हें खटाईसे महीनपीस लेपकरै तौ दाद कोढ़ दूरहोयँ २६ अथवा दूब। हड़कीछाल। सेंधानोन। पवांड़के बीज। कनेरकीछाल ये सब बराबरले पीछे इन्हें कांजीमें अथवा मट्ठे में महीनपीस लेपकरै तौ दाद कच्छ खाज जायँ २७॥

अथ श्वित्रनाम कोढ़का यत्न॥

बहेड़ेकी छाल। हड़की छाल। कठुम्बर। बावची इनका काढ़ा करले तौ श्वित्रनाम कोढ़ जाय२८ अथवा हरताल। मै-नशिल। चिरमिटी। चित्रक इन्हें गोमूत्रमें महीनपीस लेपकरै तौ श्वित्रनाम कोढ़जाय २९ ये सबयत्न भावप्रकाश में हैं अ-

थवा हल्दी ८ टकेभर गौकाघृत ६ ट० गौकादूध ४ सेर मिश्री ५ ट० सौंठि १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० तज १ ट० नागकेसर १ ट० वायबिडंग १ ट० निसोत १ ट० त्रिफला ३ ट० केसर १ ट० नागरमोथा १ ट० ले पीछे इन्हें महीन जुदा २ पीस घृत में मकराय हल्दी और दूध में उसका खेर वा मावा करै पीछे इस मावेसमेत खांड़की चासनी कर उसमें सब औषधि डालै पीछे इसकीगोली टकाभरकी बांधै १ गोली नित्य खाय तो कोढ़ खुजली फोड़ेकी दाद इनरोगोंको यह दूर करैहै ३० ॥ इति हरिद्राखण्ड ॥

अथ हरताल मारनेकी विधि ॥

तबकिया हरताल चोखा ले उसमें दशवां हिस्सा सुहागा मिलाय उसकी बाफताके कपड़े में चार पोटली करै पीछे वह पोटली जम्भीरी के रसके बीचमें धर दोलिका यन्त्रकर उसके नीचे २ प्रहर अच्छी गाढ़ीआंचदे औटावे पीछे इसीतरह कांजी के पानीमें औटावै फिर पेठेके पानीमें औटावै पीछे तेलमें औटावै और इसीतरह त्रिफलेके पानीमें औटावै पीछे इसहरताल को किसीतरहकी खटाईमें धोयले फिर इसे छिलकेके बक्कलके रसमें २ दिनरात्रि खरलकरै पीछे धूपमें सुखाय इसका गोला करै फिर गोलेको सकोरेके सम्पुटमें खूब यत्नसे मिलाय सेरके को खामदे पीछे गजपुटमें अरनेऊपलेकी आंचदे शीतलहोनेके पीछे उसमें से सम्पुटको काढ़ै पीछे हरतालको काढ़ बकरी के दूधमें १ दिन खरलकर पीछे फिर इसका गोलाकर धूपमें सुखावे फिर पलाशकी ४ सेर राख पक्कीहांडीमें भरै और उसके बीचमें हरतालका गोलाधर खूब राख मुँहतक दाबिके भरै पीछे उस हांड़ीको चूल्हेपर चढ़ाय नीचेआंचदे उसका धुवां न निकलने दे इसीतरह अनुक्रमसे मन्द मध्य और अत्यन्तगाढ़ी ३२ प्रहर आंचदे पीछे स्वांग शीतलहुये पर हरताल को काढ़ै हरताल

सफेद निकले निर्धूम तोलकी पूरी पीछे इसे पुराने गुड़के साथ १ रत्तीखाय ऊपर चनेकीरोटी साठीचावल गौकाघृत ये इक्कीस दिन खाय और नोन खटाई न खाय तो १८ प्रकारके कोढ़ बात रक्त फिरंगबाय इनको यहहरताल दूरकरैहै ३१ ॥ इतिहरताल मारण विधिः ॥

अथवा पारा २ टं० शोधीगन्धक २ टं० हरताल २ टं० मैनशिल २ टं० बावची ५ टं० धमासा २ टं० सिन्दूर २ टं० दोनों हल्दी ५ टं० इन सबको गौके घृतसे खूबमहीनपीसलेप कर २ प्रहर धूपमें बैठे फिर स्नानकरै तौ कोढ़ दाद कृमि ३ दिनमें दूरहोयँ ३२ अथवा छीलेकी जड़के सूखे बक्कल २५टके भरकी राखकर उसको नवीन पक्की अच्छी हांड़ीमें भर उसके बीच तबकिया चोखा हरताल २५ माशे भर यत्नसे धर गाड़ दाबदे फिर उस हांड़ीके ऊपर सेरवा ढक पीछे उस हांड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय उसके नीचे १ प्रहरतक अत्यन्त अग्नि से जलावै फिर स्वांग शीतल होनेपर नये बस्त्रसे छानले फिर इसराखको २ रत्ती प्रमाणले पिसाहुआ जीरा १ माशे ले इन दोनों को एककर पके नागरबेलिके पत्तोंके साथ शीतलजलसे खाय इसके ऊपर चनेकी अलोनी रोटी एकमंडलतक खाय इस के खानेवाला पवन धूप खाय नहीं इस बिधिसे रहै तौ अठारह प्रकारके कोढ़। बात। रक्त। ब्रणमात्र पीड़िका। बातब्याधि इन सब रोगोंको यह दूरकरै है ३३ ॥

अथ दादका यत्न ॥

पवांड़केबीज। बावची। सरसों। तिल। कूट। दोनोंहल्दी। नागरमोथा ये सब बराबरले इन्हें मट्ठे में खूब महीनपीस लेप करै तौ दाद। कंडू। ब्योची ये सब दूर होयँ ३४ ॥

अथ कोढ़के दूरहोने का लेप ॥

नीलाथोथा। सुहागा ये दोनों २ टंक बावची ५ टंक इन

तीनों को महीनपीस जलभांगरे के रसको इसमें ७ पुटदे फिर इसका लेपकरै तौ कोढ़जाय ३५ ॥ ये सर्बयत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ॥

अथ महालेप ॥

पारा एक टकेभर शंखकाखार १ ट० आंधीझाड़ेका खार १ ट० तिलोंका खार १ ट० सांटी का खार १ ट० हड़ का खार १ ट० अडूसेका खार १ ट० पटोलका खार। अरण्यकाखार। जवाखार। सुहागा। सज्जी। नौसादर। आंवलासारगन्धक। पांचोनोन। कूट। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। डांसरेकीजड़। आककी जड़। नीलाथोथा। करिहारीकी जड़। हल्दी। जिमीं-कन्द। गोरखमुण्डीकाखार। काहूकाखार। पीपलकाखार। राई। सरसों। सिंदूर। शिलाजीत। पापड़ाखार। कबीला। पठानी-लोध। थूहरकीजड़। आम्रकीजड़। चित्रक। आकके पंचांगका खार ये सबऔषध पृथक् २ एक एक ट० भर ले फिर इनसब औषधियों को महीनपीस इकट्ठाकर गोमूत्रमें मिलाय तांबे के बड़ेपात्रमें रक्खे फिर इसमें इतनीवस्तु और डाले भैंस। घोड़ा। बकरा। हाथी। उंट इनका मूत्र। नींबूकारस। जँभीरीकारस। बिजौरेकारस। नारंगीकारस। चनेकाखार। सहँजनेकारस। राईके संयोग की सातोंधातु की कांजी ये सब उसके अनुमान माफिक डाले फिर उसका मुहँढांकि २१ दिन अच्छेप्रकार से धररक्खै फिर इसका लेपकरै तौ सर्ब कोढ़मात्र दूरहोयँ और गंडमाला। बिसर्प। बवासीर। व्योची। बायुके सबरोग १ म-हीने में ये सबरोग जायँ ३६ ॥ यह रस सारसंग्रहमें लिखाहै ॥ इति कोढ़रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजी विरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेभगन्दरउपदंशलिंगार्श केरोगकोढ़इनसबरोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण यत्ननिरूपणंनामषोड़शस्तरंगः ॥ १६ ॥

अथ शीत पित्त उदर्दकोढ़ उत्कोढ़ इनरोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

शीतल पवनके स्पर्शकरनेसे कफ और पवन दुष्टहोय पित्त सहित अनेक कारण करके दुष्टहोय त्वचा में और बाहर वायु और कफ करके शीत पित्तादिक के रोगोंको पैदाकरै है ॥

अथ शीतपित्तादिक का पूर्वरूप ॥

तृषालगै । अरुचिहोय । बमनसी आवै । देहमें पीड़ा होय । शरीर भारीहोय । नेत्रलाल होजायँ ये लक्षण होयँ तौ जानिये कि शीत पित्तादिका रोग होगा ॥

अथ शीत पित्त उदर्द का लक्षण ॥

जैसे कीड़ेके काटने से चकत्ते हो आवें तैसे त्वचा के ऊपर चकत्ते बहुत होजायँ और उनमें खुजलीहोय और पीड़ा बहुत होय और छर्दि और ज्वर होय दाह लगिजाय तौ जानिये कि शीत पित्त है और इसीको उदर्दकहिये बायुकी आधिक्यताहोय तौ शीत पित्त जानिये कफकी आधिक्यताहोय तौ उदर्दजानिये—यह शिशिरऋतुमें बहुत होय है ॥

अथ कोढ़ उत्कोढ़ का लक्षण ॥

बमन को रोकै तौ पित्त कफ दुष्ट होय लाल २ खुजली को लिये चकत्ते शरीर में करदे उसे कोढ़ कहिये यह थोड़ीदेर रहै और यही बहुत देर रहै तौ उत्कोढ़ कहिये ॥

अथ शीतपित्त उदर्द कोढ़ उत्कोढ़ रोगका यत्न ॥

औषधियों से बमन कराय दे तौ शीत पित्त उदर्द दूर होय १ अथवा पटोल । नींबकीछाल । अडूसा । त्रिफला । गूगल । पीपल इनका काढ़ा दे तौ शीतपित्त उदर्द जाय २ अथवा जुलाब दे तौ यह रोग जाय ३ अथवा कडुवे तेलका मर्दन करै और शरीर को गर्म पानी से धोवे तौ शीत पित्त उदर्द जाय ४ अथवा त्रिफला शहत से खाय तौ शीत पित्त उदर्द जाय ५ अथवा मिश्री के संयोग से कुटकी का जुलाब ले तौ शीत पित्त

उदर्द जाय ६ अथवा गुड़ आंवला खाय अथवा अजवाइन। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। जवाखार इनका चूर्ण २ टं० ७ दिन गर्म पानीसे ले तो शीत पित्त उदर्द जाय ७ अथवा अदरखका रस पुराना गुड़ खाय तौ शीत पित्त उदर्द जाय ८ अथवा सरसों। हल्दी। पवांड़केबीज। तिल इन सवको कडुवे तेलमें महीन पीस लेप करै तो शीत पित्त उदर्द जाय९ अथवा अजमोद ५ टं० गुड़ ५ टं० इन दोनों को इकट्ठाकर ५ दिन वा ७ दिन नित्य खायतो शीत पित्त उदर्द जाय १० अथवा वकायनका बकला १ टं० महीनपीस गौके घृतके साथ पीवै तो शीत पित्त उदर्द जाय ११ अथवा रुधिर कढ़ाइये तोशीत पित्त उदर्द जाय १२ अथवा आंवले को और नींवके कोमल पत्तोंको घृतमेंतल १ टं० प्रमाण मनुष्य १५ दिन खाय तो फोड़ेका रोग। पित्ती। कृमि। शीत। पित्त। खुजली के रोग। गर्मीका रोग इन्हेंदूरकरैहै १३ अथवा छीलीअदरखके छोटे२ टूक १ सेर करै और गौका घृत २ सेर ले उसका और गौका दूध २२ सेर ले उसका मावा कर उसमें अदरखके टूक घृतसे चुपड़ करि डालै पीछे उस मावेके नीचे आंचदे उसका खरा मावा करै औ मिश्री १ सेरकी चासनी पतली अवलेह कीसी कर उसमें मावेको डाल और ये औषध महीनपीस डालै सो लिखते हैं पीपलामूल। मिरच। सोंठि। चित्रक। वायबिड़ंग। नागरमोथा। नागकेसर। तज। इलायची। पत्रज। कचूर ये सब औषध पृथक् २ एक एक टं० भर ले इन्हें महीनपीस मिश्री की चासनीमें डालै पीछे इसको नित्य १ टं० भर प्रभात और सन्ध्याका खाय तो शीत। पित्त। उदर्द। कुष्ठ। राजरोग। रक्त। पित्त। खांसी। अरुचि। वायुकागोला। उदावर्त्त। सूजन। खुजली। कृमिरोग। उदरके रोग इन रोगोंको यह अवलेह दूरकरै है और बल वीर्य्यको बढ़ावे है और शरीरको पुष्ट करै

है १४ इति आर्द्रक अवलेहः यह भावप्रकाश में लिखा है ॥

अथवा सेंधानोन। घृतमें महीनपीस शरीर में मर्दन करै पीछे लालि कामली ओढ़े तो पित्तीका रोग जाय १५ अथवा गौका घृत। गेरू। सेंधानोन। कुसुम्भके फूल ये सब बराबर ले इन्हें महीनपीस शरीरमें उबटन करै तो पित्ती दूरहोय १६ अथवा चिरायता। अडूसा। कुटकी। पटोल। त्रिफला। रक्त-चन्दन। नींबकीछाल इनका काढ़ाले तो पित्ती रोग। फोड़ा। दाह। ज्वर। मुखशोष। तृषाकेरोग। बमन इन सबरोगों को यह काढ़ा दूर करै है १७ अथवा अरने उपले की राख शरीर में मर्दनकरै तो पित्ती जाय १८ अथवा फिटकड़ी। नागरबेलि के पत्तोंके रसमें पीस शरीरमें मर्दनकरै तो पित्ती जाय १९ अथवा लहसुन १ ट० भर खाय अथवा त्रिफला ५ ट० भर महीनपीस शहतसे चाटै तो पित्ती जाय २० ये सब यत्न वैद्य-रहस्यमें हैं अथवा मेथीदाना १ ट० भर। कालीमिरच १ ट० भर। हल्दी १ ट० भर इनसबको महीनपीस पीछे इनको अ-दरखके रसकी ३ पुटदे पीछे गोली २ टं० प्रमाणकी कर १ गोली नित्य खाय तो पित्तीके सर्वबिकार दूरहोयँ २१ यह वैद्य-रहस्यमें लिखा है इति शीत पित्त उदर्द कोढ़ उत्कोढ़ रोग ये पित्ती के भेदहैं तिनकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ अम्लपित्तकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

नोन खटाई गर्म बस्तुके खानेसे पित्तहै सो कोपको प्राप्तहो अम्लपित्तको पैदा करैहै सो अम्लपित्त रोग तीनप्रकारका है वायुका १ कफका २ कफवायुका ३ ॥

अथ अम्लपित्तका लक्षण ॥

अन्न पचैनहीं बिनाखेद किये श्रमहोय बमनसी आवै क-डुवी खट्टी डकार आवै शरीरभारी होय हृदय कंठमें दाहहोय भोजनमें अरुचिहोय ये लक्षण होयँ उसे अम्लपित्त कहिये १

यह अम्लपित्त दो प्रकारका है एक तो ऊर्ध्वगामी सो तो मुख मेंहीं होकरजाय एक अधोगामी गुदाद्वारा ह्वैजाय है ॥

अथ ऊर्ध्वगामी अम्लपित्तका लक्षण ॥

जो बमनकरै सो हरा या पीला काला लाल अत्यन्त निर्मल मांसके जल सदृशहोय और अम्लपित्त कफसे मिलाहोय तो वहुत चिकना छांदै और कडुवा सलोना तीखा छांदै १ ॥

अथ अधोगामी अम्लपित्तका लक्षण ॥

उसके मलमें नानाप्रकारके वर्णहोयँ और तृषा । दाह । मूर्च्छा । मोह होय हृदयदूखे बमनसीआवै शरीरमें चकत्तेहोआवैं अग्नि मन्दहोजाय रोमांचहोय पसीनाआवै शरीरपीलाहोजाय ये लक्षणहोयँ तव जानिये अधोगामी अम्लपित्त है २ ॥

अथ भोजनकियेपीछे अम्लपित्तका लक्षणहोय सो लिखते हैं ॥

भोजनकरै अथवा भोजन नहींकरै तो तीखा और खट्टा बमनकरै और शरीरमें खाजहोय चकत्तेपड़जायँ और डकारें बहुत आवैं और कण्ठ कुक्षिमें दाह शिरमेंपीड़ा हाथ पैरोंमें दाह भोजन में अरुचि ज्वरहोयँ ये लक्षणहोयँ तव जानिये इसके अम्लपित्त का रोग है १ ॥

अथ अम्लपित्तमें औरभी दोषोंका मिलापहोय सो लिखते हैं ॥

अम्लपित्तमें वायु और कफका मिलापहोय तो वैद्यमोहको प्राप्त होय है ॥

अथ दोषभेद ॥

जिसमें कम्पहोय प्रलाप मूर्च्छा शरीरमें चिमचिमाहटहोय और शरीरमें पीड़ा और शूलहोय अँधेरी घुमेर मोह और हर्ष होय तव जानिये अम्लपित्त में वायुका मिलाप है १ अथवा कफथूके शरीरभारीरहै अरुचिहोय शरीरमें शीतलगै वमनहोय अग्नि और बल जातारहै शरीरमें खुजलीचलै और नींदबहुत आवै ये लक्षण होयँ तव जानिये अम्लपित्त में कफ मिलाहै ॥

अथ अम्लपित्तका साध्यासाध्य लक्षण ॥

अम्लपित्तका रोग नवीन उपजाहोय सो तो साध्य यत्नसे जाय और यही बहुत दिनकाहोय और पथ्यमें चलैनहीं सो असाध्य जानिये १ ॥ अथ अम्लपित्तका यत्न ॥

अम्लपित्त रोगवाले को पटोल। नींबकीछाल। अडूसा ये सब बराबरले इनका काढ़ाकर इससे बमनकरावे तो अम्ल-पित्तजाय १ अथवा मेढ़ल। शहत। सेंधानोन इनसे बमनक-रावे तो अम्लपित्तजाय २ अथवा जुलाबसे अम्लपित्तजाय ३ अथवा निसोत। शहत। आंवला इनका जुलाबदे तो अम्लपित्त जाय ४ अथवा ऊर्ध्वगामी अम्लपित्तहोय उसे जुलाब बमन करावे और अधोगामी अम्लपित्तहोय उसे जुलाबदीजै अथवा यव अथवा गेहूँका सत्तू अथवा चावलकासत्तू मिश्रीके संयोग से खाय तो अम्लपित्त जाय ५ अथवा यव। अडूसा। आंवला। तज। पत्रज। इलायची इनका काढ़ाकर शहत डाल पीवे तो तत्काल अम्ल पित्त जाय ६ अथवा गिलोय। नींबकी छाल। पटोल इनका काढ़ाकर शहतडाल पीवै तो महाभयंकरभी अ-म्लपित्त जाय ७ अथवा अडूसा। गिलोय। पित्तपापड़ा। चि-रायता। नींबकी छाल। जलभांगरा। त्रिफला। कुलत्थ इन्हैं शीतल जलसेले तो अम्लपित्त जाय ८ यह अम्लपित्त चूर्ण है— इति अम्लपित्त रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ विसर्परोगकी उत्पत्ति लक्षण ॥

नोन खटाई और गरमवस्तुके खानेसे विसर्परोग पैदाहोय है सो फैलाहुआ विसर्परोग सातप्रकारकाहै वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ वात पित्तका ५ वात कफका ६ कफ पित्तका ७ ॥ अथ विसर्प रोगका लक्षण ॥

नोन खटाई गरम वस्तुकोआदि ले जोपीछे लिखे हैं तिनके बहुत खानेसे वायु पित्त कफ कोप को प्राप्तहोयँ शरीरके रुधिर

मांसआदि सातों धातुको विगाड़ शरीरमें छोटी बड़ी फुनूसियों के मंडलको फैलायदेय हैं इसीसे वैद्य इस रोगका नाम विसर्प कहै हैं १ ॥ अथ वायुके विसर्प का लक्षण ॥

शरीरमें कुपथ्यके करनेसे वायु कोप को प्राप्तहोय शरीरमें कई जगह छोटी बड़ी फुन्सियां पैदाकरै तब फुन्सियां शरीर में फैलजायँ और उन में पांवरोग के सदृशपीड़ा खुजली बहुत होय १ ॥ अथ पित्तके विसर्प रोगका लक्षण ॥

कुपथ्यसे पित्त कोप को प्राप्त होय तब शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियां हों और उसमें पित्तज्वरके सब लक्षण मिलें और वे फुन्सियां जल्दी बहुत फैलजायँ और बहुत लाल होयँ २ ॥

अथ कफके विसर्प रोगका लक्षण ॥

कुपथ्यसे कफ कोपको प्राप्तहोय शरीरमें छोटी बड़ीफुन्सियों को फैला दे फिर उन में खुजली बहुत होय और वे फुन्सियां चिकनी होयँ और कफज्वरके सब लक्षण उन में मिलें ३ ॥

अथ सन्निपातके विसर्परोगका लक्षण ॥

कुपथ्यके करनेसे सन्निपात कोप को प्राप्तहोय शरीरमें छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदाकर शरीर में तत्कालफैलायदे और उन फुन्सियों में पीछेकहे सब लक्षण मिलें और सन्निपात ज्वर के भी सबलक्षण होयँ ४ ॥

अथ वात पित्तके विसर्परोगका लक्षण ॥

जिसके शरीरमें वात पित्त कुपथ्यके करनेसे कोप को प्राप्त होयँ शरीरमें छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदाकरैं वे शरीरमें फैल जायँ तब अग्न्याख्य नाम उन फुन्सियों को कहिये अग्नि सदृश उनका रूपहोय और वायुपित्त ज्वरके जिसमें लक्षण मिलें और छर्दि मूर्च्छा अतीसार तृषा भ्रम ये भी जिसमें होयँ और शरीर के हाड़टूटैं अँधेरीआवे अरुचि होय सब शरीर अग्नि के सदृशजलै जिसस्थानमें होयँ उसको काला नीला अथवा लाल

करै मर्मस्थानमें फैलजायँ उसकाअंग बहुत पीड़ाको प्राप्तहोय संज्ञाजातीरहै नींद आवेनहीं यह बिसर्परोग असाध्य जानिये शरीर में चैनपड़ै नहीं मन देह सब बिगड़जायँ शरीरका ज्ञान जातारहै यह बिसर्परोग अत्यन्त असाध्य है ५ ॥

अथ वात कफके विसर्परोगका लक्षण ॥

वायु कफ कुपथ्य करने से कोपको प्राप्तहोय शरीरमें छोटी बड़ी फुन्सियोंको पैदाकर फैलायदे उन फुन्सियोंको ग्रंथाख्य नाम कहिये वे गांठ सदृश होय हैं और कफकारिकै रुकी थकी जो पवन सो कफको बहुत प्रकार भेदनकरै पीछे त्वचा मांस नसोंमें प्राप्तहुआ जो रुधिरउसे और शीतकोकरै छोटेबड़े गोल भारी खरदरे चकत्तों की मालाको पैदाकरै उसमें बहुतसी पीली लाल ज्वरको लिये फुन्सी होयँ और श्वास। खांसी। मुखशोष हिचकी। वमन। भ्रम। मोह। शरीरकारंग औरकाऔर। मूर्च्छा। अंग में हड़फूटन। मन्दाग्नि येभी जिसमें होयँ तो जानिये कि वायु कफका विसर्प रोग है ६ ॥

अथ कफ पित्तके विसर्प रोगका लक्षण ॥

कफ पित्त अपने कारणसे कोपको प्राप्तहो शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदाकर फैलाय दे उन फुन्सियों को वैद्य कर्दम नाम महाभयंकर बिसर्प रोग कहे हैं उसमें ये लक्षण होयँ ज्वर। शरीरमें पीड़ा। अंगमें हड़फूटन। प्रलाप। भ्रम। भूख जातीरहै हाड़ २ टूटै। तृषाहोय। शरीरभारीरहै। आंवपड़ै। इन्द्रियां पकिजायँ। अंग २ में पीड़ाहोय फुन्सियां सब शरीरमें फैलजायँ बहुत लाल चिकनी काली सूजनको लिये भारी होयँ देरसे पकें गम्भीर जिसका कफ हो और दाह बहुतहोय राध बहुतनिकले कांपै शरीरकी नसें निकलीरहैं और जिनमें मुर्दे कीसी दुर्गन्ध आवै ये लक्षणहोयँ उसे कर्दमनाम विसर्प रोग कहिये ७ ॥

अथ शस्त्रादिकके घावके उपजे बिसर्पका लक्षण ॥

शस्त्रादिक की चोट लगनेसे कोपको प्राप्तहुई जो वायु सो रुधिरसमेत पित्तको दुष्टकर कुलत्थके समान शरीरसें फुन्सियों कोपैदाकरे फिर उन फुन्सियोंके फोड़े होजायँ और उनमेंसूजन और ज्वर होय रुधिर कालाहोय ८ ॥

अथ विसर्प रोगका उपद्रव ॥

ज्वर । अतीसार । वमन । तृषा । मांस बिखरजाय । बुद्धि ठिकाने नहींरहै । अरुचिहोय । अन्नपचैनहीं ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ विसर्प रोगका साध्यासाध्य लक्षण ॥

वायु पित्त कफका बिसर्प और अग्नि से उपजा जो बिसर्प और मर्मस्थान में उपजा जो बिसर्प सो असाध्य जानिये १ ॥

अथ बिसर्प रोगका यत्न ॥

जुलाब । वमन । औषधियोंका सेवना रुधिर कढ़ाना ये सब बिसर्परोग को अच्छे हैं १ ॥

अथ वायुके बिसर्परोगका यत्न ॥

रास्ना । कमलगट्टा । देवदारु । रक्तचन्दन । महुआ । खरैटी । इनको बराबरले पीछे दूध या घृतसे महीन पीस लेपकरै तो बिसर्परोग जाय १ ॥ अथ पित्तके बिसर्परोगका यत्न ॥

किसोरा । सिंघारा । कमलगट्टा । जलका सिवार । रक्तचन्दन इन्हें महीनपीस धोये घृत या शीतल जलसे लगावे तो बिसर्प रोगजाय २ ॥ अथ कफके विसर्प रोगका यत्न ॥

त्रिफला । कमलगट्टा । खस । लजालू । कनेरकीजड़ । नरसलकी जड़ । जवासा इन्हें जलसे महीन पीस लेपकरै तो कफ का बिसर्परोगजाय ३ ॥ अथ दशांग लेप ॥

तगर । शिरसकी जड़ । मुलहठी । रक्तचन्दन । इलायची । बाड़छड़ । दोनों हल्दी । नेत्रबाला । इन्हें जलसे महीन पीस गौका घृतडाल लेपकरै तो सब प्रकारके बिसर्प जायँ ४ अथवा

चिरायता। अडूसा। कुटकी। पटोल। त्रिफला। रक्तचन्दन। नींबकीछाल येसब बराबरले इन्हें जवकुटकर २टं०का काढ़ा दे तो विसर्प। दाह। ज्वर। सूजन। खुजली। फोड़े। वमन इतने रोगों को यह काढ़ा दूरकरैहै ५ अथवा कणगच। सतोन्यका बक्कल। करिहारीकी जड़। थूहरका दूध। आकका दूध। चित्रक। जलभांगरा। हल्दी। सिंगीमुहरा ये सब बराबर दो टकेभर और गौकामूत्र २ सेर पानी २ सेर तिलोंकातेल १ सेर ले पीछे इन्हें इकट्ठाकर इसकेनीचे मधुरीआंचदे जब सर्वरस जलजाय तेल मात्र रहजाय तव इसका मर्द्दन करे तो विसर्प फोड़ा ब्योची इनको यह तेल दूरकरैहै ६ ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं॥ अथवा बड़की जटा। नागरमोथा। केलेके मध्यका गाभा इनको धोये घृत से लेपकरे तो विसर्प और गांठ दूरहोयँ ७ अथवा सिरसके बक्कलको सौबार धोये घृतसे महीन पीस लेपकरे तो विसर्परोग और गांठ इनको दूरकरैहै ८ और कोढ़ फोड़ा शीतला ये सब जोंकके लगानेसे निश्चयजायँ ९ ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें हैं—इति विसर्परोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ स्नायुरोग अर्थात् वालारोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

दुष्ट जलके पीने और दुष्टअन्नके खाने से कोपको प्राप्तहुई जो वायु सो हाथ पैरोंमें फफोले अथवा सूजनको करे पीछे उस फफोलेकी वह वायु फफोलेको फोड़कर उस जगह प्राप्तहोय वह पित्तसी नसोंको सुखाय तांत सदृशके डोराको वह कुपित हुई वायु करैहै॥ सो तांतसदृश डोरा छाछिसांतिका पीडिके बांधने से शनैःशनैः बाहर निकलपड़े और वह टूटजाय तो कोप को प्राप्त होय और वह बाहर निकल आवे तो वह जातारहै और वही और शरीरमें होजाय अथवा हाथमें॥

अथ वालाका यत्न॥

५ टंक हींग को शीतलजलसे ३ दिनखाय तो वालाकारोग

कसी होय नहीं अथवा गौकाघृत ऽ। भर नित्य तीनदिनपीवै तो बालाकारोग जाय २ अथवा निर्गुण्डीकारस ३ दिन ४ पैसेभर नित्य पीवै तो बालाका रोग जाय ३ अथवा कलौंजी की जड़ शीतल जलसे ७ दिन पीवै तो बालाका रोग जाय ४ अथवा अरंडकीजड़का रस गौकेघृतसे ७ दिनतकपीवै तो बालाका रोग जाय ५ अथवा अतीस। नागरमोथा। भारंगी। सोंठि। पीपल। बहेड़ेकीछाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस २ टं० नित्य सात दिन गरम पानी से ले तो बालाका रोग जाय ६ अथवा सहँजनेकी जड़। और पत्ते इन्हें कांजीकेपानीसे पीस सेंधानोन मिलावै पीछे उसे बालाऊपर बांधै तो बालाकारोगजाय ७ अथवा कांटेवाली जातीकी कंकाजड़को जलसे पीस बाला ऊपर ७ दिन बांधै तो निश्चय बालाकारोग जाय ८ ये सबयत्न भावप्रकाशमेंहैं॥

अथवा कूट। सोंठि। सहँजनेकी जड़ इन्हें पानी से महीन पीस बालाके ऊपर लेप करै अथवा इन औषधियों को पीवै तो बालाका रोग जाय ९ अथवा धतूरेके पत्ते तेल लगाय बालाके ऊपर बांधै तो बालाकारोग जाय १० अथवा बबूलके बीजको कांजीसे सिझाय बालाके ऊपर बांधैतो बालाका रोग जाय ११॥ अथवा बालाके मन्त्रसे बालाजाय सो मन्त्र लिखते हैं॥ बिरूप नाम बावनके पूत सूतकादि किये बहुत पाकफूटै पीड़ाकरै बिरूप नाथ की आज्ञाफुरै इस मन्त्रसे बालाऊपर गुड़को ७ बार मन्त्रित कर बाला वाले को खिलावै तो बाला जाय १२ ये यत्न वैद्यरहस्यमें हैं॥ अथवा कबूतरकी बीटको शहत से गोली बांध ७ दिन निगलायदे तो बाला कभीभी निसरैनहीं १३ यह वैद्यरहस्यमें लिखा है॥ अथवा शहत में सज्जी पीस लेप करै तो बालाकारोग जाय १४—इति बालारोग की उत्पत्ति लक्षणयत्न॥

अथ विसफोटकरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

कड़वी वस्तु और खटाई गरमवस्तु रूखी खारी वस्तुके खाने

से अजीर्ण से धूपमें रहनेसे भोजन ऊपर भोजन करनेसे शीत उष्ण बर्षा ये जहां बहुत होयँ अथवा नहीं होयँ अथवा इनकी बिपरीतता से कोप को प्राप्तहुये बायु पित्त कफ ये दोष से शरीर की त्वचामें प्राप्तहोय शरीर के रुधिर और मांस और हाड़को दूषित करै हैं शरीर में भयंकर फोड़े को पैदाकरै हैं और पहिले ज्वरको उपजावैं इसे बिस्फोटक रोग कहिये १ ॥

अथ बिस्फोटक रोगका लक्षण ॥

ज्वरको लिये फोड़ेमें आगसी जलै ऐसा फोड़ा पके तौ फोड़े रक्तपित्त से उपजे शरीरमें सर्वत्रहोयँ अथवा कहींहोयँ उसे बिस्फोटक कहिये २ ॥ अथ बायुके बिस्फोटक का लक्षण ॥

मथवाय होय फोड़े में पीड़ा बहुतहोय ज्वर और तृषा हड़फूटन होय ब्रण काला होय ये लक्षण होयँ तौ बायुका बिस्फोटक जानिये १ ॥ अथ पित्तके बिस्फोटक का लक्षण ॥

ज्वर दाह फोड़ेमें पीड़ा होय जल्दी फूटै और पकिआवै तृषा लगे फोड़े के पीले लाल ब्रण होयँ ये लक्षण होयँ तौ पित्त का बिस्फोटक जानिये २ ॥

अथ कफके बिस्फोटक का लक्षण ॥

छर्दि अरुचि होय देर से पकै उसे कफ का बिस्फोटक जानिये ३ ॥ अथ बात पित्त के बिस्फोटक का लक्षण ॥

बहुत पीड़ा होय और बात पित्त के लक्षण मिलते होयँ उसे बात पित्त का बिस्फोटक जानिये ४ ॥

अथ बायु कफके बिस्फोटक का लक्षण ॥

शरीर भारी होय खुजली चलै तो बायु कफका जानिये ५ ॥

अथ पित्त कफके बिस्फोटक का लक्षण ॥

खुजली दाह ज्वर छर्दि होय तो कफ पित्तका जानिये ६ ॥

अथ सन्निपातके बिस्फोटक का लक्षण ॥

फोड़े के बीचमें गढे होयँ और ऊंचेभी होयँ और फोड़े गाढे

होयँ थोडापकैं फोडोंमें दाह होय ललाई बहुत होय तृषा मोह मूर्च्छा होय फोडों में पीड़ा और ज्वर प्रलाप होय शरीरकाँपै ये लक्षणहोयँ उसे सन्निपातके लक्षणका कहिये ये असाध्य हैं ७॥

अथ रुधिर के विस्फोटक का लक्षण॥

जिसमें पित्तके फोड़े के सब लक्षण होयँ फोड़े का चिरमिटी के सदृश वर्ण होय रुधिर निकले दाह होय यह रोग यत्नसे भी अच्छा नहीं होय॥ अथ विस्फोटकके उपद्रव॥

तृषा। श्वास। मांसका संकोच और उसमें दाहहोय। हिचकी आवै। ज्वरहोय। मर्मस्थलमें फोड़े फैलजायँ ये इसके उपद्रवहैं॥ अथ विस्फोटकका साध्यासाध्य लक्षण॥

एकदोषका साध्य दोदोषका कष्टसाध्य त्रिदोषका और जिस में बहुत उपद्रव होयँ सो असाध्यहै॥

अथ विस्फोटक रोगका यत्न॥

विस्फोटक रोग वालेको लंघन और वमन कराइये और जुलाब दीजे और पुरानी शालि। चावल। जव। गेहूं। मूंग। मसूर। अरहर ये अच्छेहैं १ अथवा दशमूलका काढ़ा रास्ना। दारुहलदी। खस। कटेली। गिलोय। धनियां। नागरमोथा इन काकाढ़ादे तो वायुका विस्फोटक जाय १ अथवा दाख। खंभारि। छुहारा। पटोल। नींबकीछाल। अडूसा। कुटकी। चावलकीखील। जवासा इनका काढ़ादे तो पित्तका विस्फोटक जाय २ अथवा चिरायता। खुरासानीबच। अडूसा। त्रिफला। इन्द्रयव। कुड़ाकीछाल। पटोल इनका काढ़ा शहत मिलाय दे तो कफका विस्फोटक जाय ३ अथवा चिरायता। कुटकी। नींबकीछाल। मुलहठी। नागरमोथा। पटोल। पित्तपापड़ा। खस। त्रिफला। कुड़ाकीछाल इनका काढ़ादे तो सबप्रकारका विस्फोटकजाय ४ अथवा चावल। कुड़ाकीछाल इन्हें जलसे महीन पीस फोड़ेके ऊपर लेपकरे तो विस्फोटक जाय ५ अथवा गि

लोध। पटोल। चिरायता। अडूसा। नींबकीछाल। पित्तपापड़ा। खैरसार इनका काढ़ादे तो विस्फोटक रोगकाज्वरजाय ६ अथवा चन्दन। नागकेसर। गौरीसर। चौराईकी जड़। सिरसाका बक्कल। चमेलीके पत्ते इन्हें जलसे महीनपीस फोड़ोंके ऊपर लेपकरे तो विस्फोटक जाय ७ अथवा कमलगट्टा। रक्तचंदन। पठानीलोध। खस। गौरीसर इन्हें जलसे महीनपीस लेपकरे तो विस्फोटक जाय ८ अथवा जियातोताकी सींगी जलसे महीनपीस लेपकरे तो विस्फोटक कांखोलाई गलेकीगांठि कानकी गांठि और फोड़ा फुन्सीमात्रको यहलेप दूरकरे है ९ ये सर्व्व यत्न भावप्रकाशसे हैं अथवा दशांग लेप किशोरगूगल इससेभी येरोग जाय हैं १० इति विस्फोटकरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ फिरंगरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो फिरंगरोग उपदंश वायुका भेदहै सो बहुत गर्म वाली स्त्रियोंकेसंगसे अथवा उसकासंग किसी औरनेकियाहोयसोजहां मूते वहां यहभीमूते अथवा उसका किसी तरह भोजनादिकमें संगकरे तो वायु अपने कारणसे कोपको प्राप्तहो इस रोगको प्रकट करे अथवा जो क्षीण पुरुष होय और मैथुन वारंवार करे तब वह अत्यन्तक्षीणहोय तब इसके बंधेजरहै नहीं और वायुकी नानाप्रकारकी शरीरमें पीड़ाहोय तब इसके वायु पित्त कफ ये सब अत्यन्त कोपको प्राप्तहोयँ और यह आगंतुकनाम फिरंग वायुको करै सो फिरंग वायु तीन प्रकारकी है शरीरकी गांठनसोंमें धँसजाय ॥

अथ शरीरकी त्वचाके बाहरहोय उसका लक्षण ॥

लिंगेन्द्रियके ऊपर फुन्सी और फटनेआदि चिह्नहोयँ और वहां थोड़ी पीड़ाहोय सो तो सुखसाध्य है यह यत्न करनेसे मिटजाय १॥ अथ शरीरकी सन्धियोंमें और नसोंमें फैलिजाय उसका लक्षण ॥

शरीरमें फोड़के फाटने कीसी चंटं पड़ जायँ सो हाथों जांघ

पीठ इनमें बहुत पीड़ा और सूजन होय सो कष्टसाध्य है २॥

अथ शरीरके बाहरहोय उसका लक्षण॥

ये सबकहे लक्षणहोयँ और बहुतदिनतक रहैं सो महाकष्ट साध्य है ३॥ अथ फिरंग वायुका उपद्रव॥

शरीर क्षीणपड़जाय बलजातारहै नाक गलिजाय अग्नि मन्दहोजाय मांस रुधिर सूखिजाय हाड़मात्र रहजायँ ये इसके उपद्रवहैं ये अच्छेनहीं १॥

अथ फिरंगवायुका यत्न॥

रसकपूरके साधनेकी और खानेकीबिधि। रसकपूर ४ रत्ती ले उसे गेहूंके आटेमें पानीसे उसन उसकेबीच रसकपूरको धर उसकी गोलीकरे पीछेलवंगको महीनपीस उसके चूर्णमेंगेहूंके चूनकी गोली रसकपूर समेत लपेटे पीछे उसगोलीको शीतल जलसे निगलजाय दांत लगावेनहीं इसके ऊपर कत्थे चूने बिना नागरबेलके पत्तेचावे इसके ऊपर नोन खटाई खायनहीं खेदकरे नहीं धूपमें रहेनहीं इसी तरह ३ दिनकरे तो फिरंग वायु जाय १॥ अथ संपसारण गुटिका॥

पारा १ टं० खैरसार १ टं० अकरकरा २ टं० शहत ३ टं० इनसबको महीनपीस एकजीवकरे पीछे इनकी ७ गोलीकर १ गोली नित्य प्रभात शीतल जलसेले तो फिरंगवायु जाय और इसके ऊपर नोन खटाई खायनहीं २ अथवा पारा २ टं० आंवलासार गन्धक २ टं० चावल २ टं० इनतीनोंको खरलमें महीनपीस कज्जली करे पीछे इनकी ७ पुड़ियाकरे पीछे १पुड़िया की नित्य इन्द्रियके धूनीदे तो फिरंग वायुजाय ३ अथवापीले फूलकी खरेटीके पत्तोंका रस १ टं० पारा १ टं० इन दोनोंको दोनों हाथमें मीसले पारा और वहरस हाथोंमें जबतक दीखे तबतक चरावे पीछे हाथोंको कुछ तपायले जहांतक पसीना आवे इसीतरह ७ दिनकरे तो फिरंगवायु जाय और नोन ख-

टाई खायनहीं ४ अथवा नींबकेपत्ते ८ टं० हडकीछाल ७ टं० आंवला ७ टं० हल्दी १टं० पारा इनसबको महीनपीस ४ माशे शीतलजलसे नित्य ७दिनले तो बाहर भीतरकी फिरंगवायुजाय ५ अथवा चोखी चोबचीनीकाचूर्ण ४ माशेले शहतसे १५ दिन चाटै तो यहरोग जाय इसके ऊपरनोन खटाई खायनहीं और नोन खाय तो सेंधानोन खाय ६ अथवा १ टं० पाराको कसेलेके रसमें खरलकरै फिर इसमें गूगल ५ टं० अकरकरा५टं० त्रिफला ५ टं० ये सब महीन पीस और शहत ५ टं० गौका घृत ५ टं० मिलाय इस चूर्णको नित्य २१ दिन तक ५ टंक खाय अथवा इसका मर्दनकरै तो फिरंगवायु जाय इसकेऊपर नोन खटाई खायनहीं ७ ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं ॥ अथवा जुलाबसे अथवा रुधिरके कढ़ानेसे फिरंगवायु जाय ८ अथवा पारा। सिंगरफ। नीलाथोथा। हीराकशीश। शोधी आंवलासार गन्धक येसबबराबरले इन्हें खरलमेंएकजीवकरै इसकाभुरकादे अथवा इसकालेपकरै तो फिरंगवायुजाय९ इतिसूतकलेप ॥

अथवा १०० बार के धोये घृतका लेपकरै तौ फिरंगवायु जाय १० अथवा नीलाथोथा। मोम इनदोनोंको घृतमें पकाय इनका लेपकरै तौ फिरंगवायु जाय ११ अथवा कडुआ तेल १ टं० मोम ५टं० कवीला। ग्रेर ये दोनों धेलेभरले सिन्दूर २टं० सोरा २ टं० मुर्दाशंख २ टं० इन सबको महीन पीस पीतलके पात्रमें मधुरीआंचसेपकावै पीछे हाथोंसे मथ डब्बीमें भररक्खे फिर इसकी कजलीदे तौ फिरंगकेफोडे उपदंश इनको यह मलहम अच्छाकरैहै १२ इति मलहर मलहम ॥

अथवा सिन्दूर आधपाव ऽ॥ गौकाघृत १ सेर इनदोनोंको मथ शरीरमें लेपकरै पीछे परालको शरीरमें लपेटे इसी तरह ३ दिन करै इसके ऊपर खीर खाय तो व्रणमात्र विस्फोटक फिरंगके चकते ये सब सूखजायँ १३ अथवा पारा। शीशा ये

दोनों बराबरले फिर इन दोनोंको खरलमें कजलीकरै और गेहूँ का तुष । कच्चीइमली । नींबके पत्ते । धमासा ये सब बराबरले नींबूके रससे खरलकरे पीछे २ टं० भरकी गोली बांधे वस्त्रसे शरीरको ढांककर १ गोलीकी धूनीले इसीतरह ७ दिनकरै तो सब प्रकारका बिस्फोटक जाय १४ इसके ऊपर खीर २१ तथा १४ दिन खाय अथवा त्रिफला । खैरसार । जावित्री ये सब बराबरले इन्हें पानीमें औटाय मुखकोधोवै पीछे धनीले तो फिरंगबायु जाय १५ अथवा कालाजीरा । कूट ये दोनों तीन २ टं० ले और पुरानागुड़ इनसे तिगुनाले इन्हें कूटि इनकी १५ गोली करै फिर १ गोली प्रभात और एक सन्ध्यासमय खाय तो फिरंगबायु जाय १६ और इसके ऊपर गेहूँ की रोटी घृतसे चुपड़ खाय—इति फिरंगगजकेशरी रसः ॥

अथवा सिंगरफ ६ मा० सुहागा १० मा० अकरकरा १० मा० मोम १० मा० इन्हें महीनपीस इनकी गोली १ रत्ती प्रमाणकीकरे पीछे १ गोलीको बेरकी कोंपलमें ७ दिन धूनी दे तो फिरंगबायुजाय १७ अथवा सहँजनेका वक्कल । बड़कावक्कल काहूकावक्कल इनका काढ़ाले तो ७ दिनमें फिरंगबायुजाय १८ अथवा सिंगरफ ४ मा० मैनसिल ४ मा० इन्हें महीन पीस बेर की लकड़ीकी अग्निमें २ मा० की निर्वातस्थानमें कपड़ाओढ़ाय गुदामें धूनीदे तो फिरंगबायुजाय १९—इति हिंगुलादिधूमः ॥

अथ रसकपूर मुखआयाहोय उसका यत्न ॥

पीपलकावक्कल । गूलरकावक्कल । छोटे बड़े प्लक्ष अर्थात् बरगद औ पकरियाका बक्कल । बड़काबक्कल । चेनकाबक्कल । इनका काढ़ाकर उसके कुल्लेकरे तो मुखकी सूजनदूरहोय २० अथवा जीरा ५ टं० खैरसार २ टं० इन्हें जलसे पीस छालेमें लगावे तो मुखपाकजाय २१—इति फिरंगरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ मसूरिका नाम शीतलाकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

कडुई बस्तु। नोनका खारी बस्तु। विरुद्धबस्तु को खानेसे भोजनके ऊपर भोजनकरनेसे बहुत शाकादिक और नोन शाक मांसके खानेसे दुष्ट पवनके सेवनसे दुष्टग्रहके आनेसे देशमें शीतलाके उपद्रवों से इनकारणों से शरीरके बिषे रुधिरको ये दुष्टकर मसूरकी आकृति फुन्सियों को पैदाकरे हैं सो मसूरिका नाम रोग १४ प्रकारकाहै॥

बायुका १ पित्तका २ कफका ३ रुधिरका ४ सन्निपातका ५ चर्मका ६ रोमांतिका ७ और सातोंधातुगतरसगत८ रक्तगत ९ मांसगत १० मेदगत ११ अस्थिगत १२ मज्जागत १३ शुक्र गत १४॥

अथ बायुकी मसूरिका का लक्षण॥

उसकी फुन्सियां काली और रूखी होयँ पीड़ा बहुत होय कड़ी होयँ ये लक्षण होयँ तौ बायुकी मसूरिका जानिये १॥

अथ पित्त की मसूरिका का लक्षण॥

जिसकी फुन्सियां लाल पीली काली दाहको लिये होयँ और पीड़ा बहुत होय और शीघ्र पकैं ये लक्षण होयँ तौ पित्त की मसूरिका जानिये २॥

अथ रुधिरकी मसूरिका का लक्षण॥

जिसमें अतीसार और ज्वर बहुत होय और पित्तके भी लक्षण होयँ उसे रुधिरकी मसूरिका कहिये ३॥

अथ कफकी मसूरिका का लक्षण॥

जिसमें फुन्सियां सफेद और चिकनी बड़ी होयँ जिनमें खुजली आवे और मन्द पीड़ा होय देरसे पकैं ये लक्षण होयँ उसे कफकी कहिये ४॥

अथ सन्निपातकी मसूरिका का लक्षण॥

जिसमें फुन्सियां नीली और चपटी होयँ और फैल जायँ और बीचमें खाड़ को लिये होयँ पीड़ा बहुत होय राद पड़गई

हो देरसे पकैं और बहुत होयँ ये लक्षण होयँ उसे सन्निपात की मसूरिका कहिये ५ ॥

अथ रसमेंप्राप्तहुई जो मसूरिका उसका लक्षण ॥

त्वचामें प्राप्तहुई जो मसूरिका सो पानीके बुदबुदे के सदृश होयँ और इनमें स्वल्प दोष होय और वे फूटें तब उनमें पानी निकले ६ ॥ अथ रुधिरमें प्राप्तहुई जो मसूरिका उसका लक्षण ॥

वे फुन्सियां लाल होयँ और तत्कालपकें त्वचामें हो जायँ और यही दुष्टहुई साध्य नहीं है और येही फूटीहुई रुधिर को बहावे हैं ७ ॥ अथ मांसमें प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

वे फुन्सियां कठोर और चिकनी होयँ देरसे पकें त्वचा में होजायँ गात्रमें शूलचले और खुजलीहोय दाह मूर्च्छा तृषा ये होयँ ८ ॥ अथ मेदमें प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

वे फुन्सियां मण्डल के आकार और कोमल और कुछ एक ऊंची होयँ और उनमें भयंकर ज्वर होय वे फुन्सियां बड़ी और चिकनी होयँ और शूलको लिये होयँ और जिन में मोह और अप्रीतिताप होय तो उन में कोई एक मनुष्य जीवे ९ ॥

अथ हाड़में प्राप्तहुई मसूरिकाका लक्षण ॥

फुन्सियां छोटी और गात्र के समान रूखी चपटी कुछ एक ऊंचीहोयँ और उनमें मोहहोय पीड़ा और अप्रीतिबहुतहोय १०

अथ शुक्रमें प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुन्सियां प्रथमही पकीसी दीखें और चिकनी होयँ जिनमें बहुत पीड़ा अप्रीति दाह उन्माद ये भी होयँ ऐसे लक्षण होयँ तो जीवेनहीं ११ ॥ अथ चर्म में उपजी मसूरिका का लक्षण ॥

चर्म में उपजी जो मसूरिका सो कंठको रोक और अरुचि तन्द्रा प्रलाप और अप्रीतिको करैहैं ये बहुत यत्न करनेसे अच्छी होयहैं १२ ॥ अथ रोमांतिका नाम रोममें प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय पीछे रोम २ में कफ पित्तसे फुन्सियां होयँ

वे कुछ एक ऊंची होयँ और इसमें खांसी अरुचि होय तो रोमांतिका कहिये १३ ॥ अथ मसूरिका का साध्य लक्षण ॥

त्वचा रक्त में मसूरिका होय और पित्तसे उपजी होय अथवा कफसे उपजी होय अथवा कफ पित्तसे उपजी होय सोतो साध्य जानिये और ये विना यत्नही अच्छी होयँ ॥

अथ मसूरिकाका असाध्य लक्षण ॥

जो सन्निपातसे उपजीहोय और मूंगेके सदृश अथवा जामनकेसदृश अथवा रुधिरकेसदृश अथवा अलसीके फूलसदृश वर्ण होय इसके अनेक वर्ण हैं यह मसूरिका असाध्य है और जिसमें ये लक्षणहोयँ सोभी असाध्य जानिये ॥

अथ मसूरिका का यत्न ॥

मसूरिकाके प्रारम्भमें सफेद चन्दनको भिगोय ७ दिनलेप करे तो मसूरिका थोड़ी न्किले ॥

अथ वायुकी मसूरिका का यत्न ॥

दशमूल। रास्ना। आंवला। खस। धमासा। गिलोय। धनियां। नागरमोथा इनका काढ़ादे तो वायुकी मसूरिकाजाय १ अथवा। मजीठ। बड़के अंकुर। सिरसका बक्कल। गूगल का बक्कल। घृत मिलाय इनका लेपकरे तो वायुकी मसूरिका अच्छी होय २ अथवा गिलोय। महुआ। दाख। मूर्वा अ० मुरहरी दाड़िमकाबक्कल इनका काढ़ाकर गुड़डालपीवे तो वायु की मसूरिका अच्छीहोय पकेनहीं ३ अथवा मसूरिकामें शालि के चावल मूँग मसूर मिश्री यह खाय नोनखाय नहीं खाय तो थोड़ा सेंधानोन खाय ४ ॥

अथ पित्तकीमसूरिका का यत्न ॥

पटोलकीजड़का काढ़ाले। अथवा पानोंका रसपीवे तो पित्त की मसूरिका अच्छीहोय ५ अथवा नींबकीछाल। पित्तपापड़ा। पाढ़। पटोल। दोनोंचन्दन। खस। कुटकी। आंवला। अडूसा।

इनकोकाढ़ा मिश्रीमिलायले तो पित्तकी मसूरिका जाय ६॥

॥ अथ रुधिरकी मसूरिका का यत्न॥

इससें रुधिर कढ़ावे तो रुधिरकी मसूरिकाजाय ७॥

॥ अथ कफकी मसूरिका का यत्न॥

अडूसा। चिरायता। त्रिफला। जवासा। पटोल। नींबकी छाल इनका काढ़ा शहत डालदे तो कफकी मसूरिका जाय८॥

॥ अथ सर्वमसूरिकामात्रका यत्न॥

पाढ़। पटोल। कुटकी। दोनोंचन्दन। खस। आँवला। अडूसा। जवासा इनका काढ़ा मिश्रीडालदे तो सर्वमसूरिकामात्र अच्छीहोयँ९॥ अथ मसूरिका विषे कंठमें व्रणहोगया होय उसका यत्न॥

आंवला। महुआ इनके काढ़ेमें शहतमिलाय कुल्लाकरै तो कंठके व्रण अच्छेहोयँ १०॥

अथ मसूरिकामें आंखें चिपटगई होयँ उसका यत्न॥

महुआके पानीसे अंडकोशका सेंककरेतो आंखखुले ११॥

॥ अथ मसूरिकामें नेत्रोंमें व्रणहुयेहोयँ उसका यत्न॥

महुआ। त्रिफला। मूर्वा। दारुहल्दी। कमलगट्टा। खस। पठानीलोध। मजीठ इनका लेपकरे तो नेत्रोंका व्रणअच्छाहोय फिर उस जगह व्रणहोयनहीं १२ अथवा बड़काबक्कल। गूलरकाबक्कल। पीपलका बक्कल इनका नेत्रोंके ऊपरलेपकरे तोनेत्र अच्छे होयँ १३ अथवा अरने उपलेकी राखके लगानेसे मसूरिका अच्छीहोय १४ ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं॥

॥ अथ मसूरिका का भेदशीतला उसका स्वरूप॥

प्रथम कभी विषमज्वर बहुतहोय कभी थोड़ा कभी शीत लगे कभी गरमी उसका भी नेमरहे नहीं पीछे मसूरिकाके आकार फुनसियां निकलैं वे बड़ी होजायँ ज्वरके ३ दिन पीछे ७ दिनतक निकलाकरैं और पीछे ढलैं उसे शीतला कहिये॥ वह शीतलासातप्रकारकी है॥

अथ शीतलाका यत्न ॥

शीतला पकीहोयँ तो अरने उपलेकी राख नीचे बिछाइये १ अथवा नींबकी डाली से मक्खी उडाइये २ इसके ज्वरमें शीतलजल पिलाइये ३ शीतलाको मनोहर शीतल स्थान में स्थापिये पवित्र होय शीतला का पूजन कीजै और शीतला में बहुत औषध का यत्न कीजै नहीं ४ अथवा शीतल जलसे हल्दी को पीवे तो उसके शीतलाके फोड़े बहुत कम होयँ ५ अथवा केले के जलसे सफेदचन्दन को अथवा अडूसे के रसमें महुआ को अथवा शहत के साथ महुआ को जो पुरुष बालक को शीतला निकसने से पहले प्यावे तो उसके शीतला का कोई बिकार नहीं होय ६ ॥ अथ शीतलावाले की रक्षा ॥

जिस घरमें शीतलावाला रहे उसघर के द्वारमें नींबके पत्ते बांधिये अथवा चन्दन। अडूसा। नागरमोथा। गिलोय। दाख इनकाकाढ़ा दीजे तो शीतलाकाज्वर जाय ७ अथवा जप होम दान ब्राह्मण भोजन शिव पार्वतीजीका पूजन श्रद्धा से कराइये ८ अथवा शीतला के आगे शीतला स्तोत्र पढ़ाइये सो स्तोत्र लिखते हैं (स्कंदउवाच) भगवन्देवदेवेश शीतलायाःस्तवं शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् १ (ईश्वर उवाच) वंदेहंशीतलांदेवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयंमहत् २ शीतलेशीतलेचेति योब्रूया द्दाहपीडितः ॥ विस्फोटकभयंघोरं क्षिप्रंतस्यविनश्यति ३ य स्त्वामुदकमध्येतु धृत्वासंपूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयंघोरं कुले तस्यनजायते ४ शीतलेतनुजान्रोगान् नृणांहरसिदुस्तरान्॥ विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ५ गलगण्डग्रहा रोगा येचान्येदारुणान्नृणाम् ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतलेयांति संक्षयम् ६ नमंत्रंनौषधंकिञ्चित् पापरोगस्यविद्यते ॥ त्वमेका शीतलेधात्रि नान्यांपश्यामिदेवताम् ७ मृणालतंतुसदृशींनाभि

हृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वांविचिन्तयेद्देवि तस्यमृत्युर्नजायते८ श्रोतव्यंपठितव्यंचै नरैर्भक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशार्थं परंस्वस्त्ययनंमहत् ९. शीतलाष्टकमेतद्धि नदेयंयस्यकस्यचित्॥ किंतुतस्मैप्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितश्चयः १० शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिता ॥ शीतलेत्वंजगद्धात्री शीतलायै नमोनमः ११ ॥ इतिस्कन्दपुराणे शीतलाष्टकं सम्पूर्णम् १ ॥

अथ शीतला का और भेद ॥

वायुकफसे उपजे उसे कोद्रवा कहिये कोदों कीसी आकृति होय वायु कफ की भी होजाय उसमें अंग अंग में गर्मी होय सब शरीर दरदरासा होजाय यह सातदिनमें अथवा बारहदिन में औषधविनाही अच्छीहोय इसे लौकिकमें बोदरी और भोरी कहे हैं इनमें गर्मीबहुतहोय और शरीरमें सरसोंकेआकार पीली पीलीफुनसियांहोयँ येसब बालकोंके होयहैं येसब शीतलाओंके भेद हैं—इति मसूरिका नाम शीतला बोदरी भोरीकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेशीतपित्तउदर्द कोढ़उत्कोढअम्लपित्तविसर्प पामास्नायुकनामवाला बोदरीभोरीइनसर्वरोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण यत्ननिरूपणन्नामसप्तदशस्तरंगस्सम्पूर्णः १७॥

अथ क्षुद्ररोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अजगल्लिकानाम फुनसीका लक्षण। वह फुनसी चिकनी होय शरीरकेव्रण सदृशहोय जिसमें पीड़ानहींहोय और मूँगप्रमाणहोय यह कफ वायुसे उपजै है १ ॥

अथ जवप्रख्या फुनसीका लक्षण ॥

जवके आकारहोय और कड़ी गठीलीहोय मांसमें रहतीहोय यह कफ वायुसे उपजै है २ ॥

अथ अन्त्रालजाफुन्सीका लक्षण ॥
वह फुन्सीभारी और सूधी और ऊँची मण्डलसहित होय राद जिसमें थोड़ीहोय यह कफ वायुसे उपजै है ३ ॥
अथ द्रविताानाम फुन्सीका लक्षण ॥
फटेमुँह की होय जिसमें बहुत दाहहोय पक्के गूलरके फल समान होय मण्डलके सहित होय ४ ॥
अथ कच्छपिका फुन्सीका लक्षण ॥
पांच अथवाछःगांठिहोयँ वे भयंकरहोयँ कछुवासी ऊँचीहोयँ येकफवायुसेउपजैहैं५ अथ वाल्मीक फुन्सीका लक्षण ॥
कन्धे और कांख हाथ पैर गला इन स्थानोंमें कुपथ्यकरने से वामीके आकार जो गांठिहोय पीछे वहबढ़े उसके अनेकमुख होयँ उनके मुखोंसे रादनिकले और पीड़ाहोय और वे ऊँचीहोयँ और बिसर्परोगके माफिक फैलजायँ इसका यत्न नहींहै ६ ॥
अथ इन्द्रवृद्धनाम फुन्सीका लक्षण ॥
कमलकेबीचकर्णिकामें जो कमलगट्टेका घरहै उसकेआकार फुन्सियांचारोंओरबायुपित्तसेहोयँ उसेइन्द्रवृद्धफुन्सीकहिये ७ ॥
अथ गर्दभिका फुनसीका लक्षण ॥
मण्डलके आकार गोलहोय और ऊँची और लालहोय और उसमें पीड़ाहोय यह बायुपित्तसे उपजैहै उसेगर्दभिकाकहिये ८ ॥
अथ पाषाणगर्दभिका फुनसीका लक्षण ॥
यह डाढ़ीकी सन्धिमें सूजनकोलिये या स्थिर कफ युक्तहोय इसमें पीड़ामन्दहोय और चिकनी होय उसे पाषाणगर्दभिका फुन्सीकहिये ९ ॥ अथ पनसिका फुन्सीकालक्षण ॥
कानके बीचमेंहोय उसमें पीड़ा बहुतहोय और वह स्थिर होय यह बायुकफसे होयहै इसे पनसिका कहिये १० ॥
अथ जालगर्दभिका फुन्सी का लक्षण ॥
जो सूजन पहले थोड़ीहोय और विसर्पके सदृश फैलजाय

और वह पकेनहीं दाह ज्वरको करै उसे जालगर्दभिका फुनूसी कहै हैं ११ ॥ अथ इरिवेल्लिका फुनूसीका लक्षण ॥

जो मस्तकमें गोल फुनूसी होय और जिसमें ज्वरको लिये पीड़ा बहुत होय यह सन्निपात से होय है उसे इरिवेल्लिका कहिये १२ ॥ अथ कांखोलाईका लक्षण ॥

भुजोंके एक देशमें अथवा पसवाड़ेके एक देश में अथवा कन्धोंके एक देश में पीड़ाको लिये पित्तके कोपसे काला फोड़ा होय उसे कांखोलाई कहै हैं और कई एक पाछनेके दोषसेकांख में फोड़े होयँ उसेभी कांखोलाई कहै हैं १३ ॥

अथ अग्निरोहिणी फुनूसीका लक्षण ॥

कांखके एकदेश में जो मांसको विदीर्ण करनेवाला फोड़ा भयंकर होय और उस फोड़े में दाह ज्वर भी होय और मानों उसफोड़ेमें अंगाराभरदियाहै सो फोड़ा सातदिनमें और बारह दिनमें अथवा सोलह दिनमें मनुष्यको मार डालैहै इसेअग्निरोहिणी कहिये यह सन्निपातसे उपजैहै यह असाध्य है १४॥

अथ चिप्पनामफुनूसीका लक्षण ॥

वायु पित्त नख के मांसमें रहकर के दाह और पाकको करै है तब यह चिप्पनाम फुनूसी पैदाहोय है १५ ॥

अथ कुनखरोग जिसका नख नखजातारहाहोय उसका लक्षण ॥

वायु पित्त कफ ये थोड़ेकोपको प्राप्तहोयँ तब पुरुषके कुनख रोगकोकरैं १६ ॥ अथ अनुशई फुनूसीका लक्षण ॥

वह फुनूसी गंभीरहोय जिसका आरंभ अल्प होय शरीर के वर्ण समान पैरके ऊपर होय कोपको प्राप्त होय जिस में ये लक्षण होयँ उसे अनुशई कहिये १७ ॥

अथ विदारिका फुनूसीका लक्षण ॥

वह फुनूसी विदारीकन्द के समान गोलहो कांखमें सन्निपातसे उपजी होय उसे बिदारिका फुनूसी कहिये १८ ॥

अथ शर्करानामफुन्सीका लक्षण ॥

कफमेद वायुहै सो मांस और नसोंमें प्राप्तहोय गांठोंको शहत अथवा घृत अथवा बसाके समानकर और वहगांठि बढ़ी थकी होके मैलेरुधिरको चलावेहै और शरीरके मांसकोसुखायदेहै उसे शर्कराकहिये १९ ॥ अथ शर्करार्बुद फुन्सीका लक्षण ॥

वह दुष्ट गांठहोय उसमें नानावर्णका चेपबहुतनिकला करे और उसकी नसैं रुधिरकोस्रवाहीकरैंउसेशर्करार्बुदकहिये २० ॥

अथ व्याऊकालक्षण ॥

जिसकापैर बहुत रूखाहोय और फिराकरे उसकीपगतली में जो वायुहै सो व्याऊकोकरेहै २१ ॥

अथ कदर फुन्सीका लक्षण ॥

पैरमेंअथवा हाथमें कांकरी चुभीहोय अथवाकांटाचुभाहोय उसकरकेबेरकीसीऊंची गांठहोजाय उसेकदरकहिये २२ ॥

अथ खरवेका लक्षण ॥

दुष्टकीचड़के स्पर्शकरनेसे पैरकी अंगुलीकेनीचे खाजहोय और उसजगह दाह और पीड़ाहोय उसेखरवा कहिये २३ ॥

अथ इन्द्रलुप्तनाम लौकिकमें उदीलागी कहैं उसकालक्षण ॥

रोम २ में रहताजो पित्तसो वायुकफ करिकेबढ़हुयेबालोंको दूरकरेहै पीछे रुधिरसहित जो कफहैसो रोमोंको उपजने से रोकदे उसे इन्द्रलुप्त अथवा चान्द्रला कहिये २४ ॥

अथ अरूंपिका इसीका भेदहै उसका लक्षण ॥

केशोंकी भूमिमें खुजली बहुतचले और वहभूमि वायुकेकोप करिके रूखीपड़जाय इसेदारुण कहिये कफऔर रुधिर मस्तक में कोपको प्राप्तहोयतबमनुष्यके अरूंषिकाप्रकटकरै २५ ॥

अथ यौवन अवस्थामें सुपेदबाल होयँ उसका लक्षण ॥

क्रोधसे अथवा शोचसे शरीरकी गर्मी शिरमेंजाय तबपित्त केशोंको सुपेद करदे है २६ ॥

अथ लहसनका लक्षण ॥

काला और चिकनाहोय और उसमें पीड़ा नहीं होय गोल होय यहकफ रुधिरसे उपजे है और यहशरीरकेसाथ पैदाहोय है इसेलहसन कहिये २७ ॥

अथ मस्सोंका लक्षण ॥

उसमें पीड़ानहींहोय स्थिर और कालाहोय शरीरमें उरद समान ऊंचाहोय यह वायुसे होयहै इसे मस्सा कहिये २८ ॥

अथ तिलका लक्षण ॥

काला और तिलकेसमान होयपीड़ा नहींहोय देहके बराबर होय ये वायु पित्त कफकी आधिक्यतासे होयँ हैं और बहुत होयँ हैं उनको तिल कहिये २९ ॥

अथ न्यच्छका लक्षण ॥

बड़ा अथवा छोटाहोय काला अथवा सुपेदहोय गोलऔर पीड़ा रहितहोय उसे न्यच्छकहिये ३० ॥

अथ लिंगवर्तिकाका लक्षण ॥

लिंगेन्द्रीके मलनेसे अथवा उसके दाबनेसे अथवावहांचोट लगनेसे लिंगेन्द्रीमें वायुहै सो घूमती थकी लिंगेन्द्रीके चमड़े को उथलदे और सुपारीकेनीचे एकलम्बी पीड़ाको लिये गांठि करदेवहवायुसेउपजेहै उसेलिंगवर्तिकानाम रोगकहिये ३१ ॥

अथ अवपाटिका रोगका लक्षण ॥

जिस स्त्रीकी योनिका मुंह बहुतसूक्ष्महोय उस स्त्रीकेसाथ पुरुष संगकरनेजाय हर्षसे अथवा अपने शरीरके बलसे बहुत संगकरे तब उस पुरुषकी लिंगेन्द्री की चमड़ी उतर जाय उसे अवपाटिका नाम रोग कहिये ३२ ॥

अथ निरुद्ध प्रकाश रोग का लक्षण ॥

लिंगेन्द्रीमें वायु आयके धँसे तबसुपारीकी चमड़ीमें रहकर सुपारीकी चमड़ीसे लिंगेन्द्री कोढकमूत्रके मार्गको रोकदे और

वहां बायुसेमिल पीड़ा करे तब उसे निरुद्ध प्रकाश नाम रोग कहिये ३३ ॥ अथ मणिनाम रोगका लक्षण ॥

निरुद्धप्रकाश रोगके होनेपीछे मूत्रकीधार महीन और बिना पीड़ाचले और उससोतेकामुहँ चौड़ाहोजाय उसे मणिनामरोग कहिये ३४ ॥ अथ सन्निरुद्ध गुदरोगका लक्षण ॥

जो मनुष्य मलकी बाधाके वेगको रोके उसके गुदा के बड़े मार्गको वायु छोटाकरदे तब छोटे मार्गके प्रभावसे रूखा विष्ठा बड़ेकष्टसेउतरे उसे सन्निरुद्धगुदरोग कहिये यह भयंकरहै ३५॥

अथ वृषणकच्छूरोगका लक्षण ॥

जो मनुष्य स्नान नहींकरताहोय उसके पोते में मैल बहुत होजाय जिसमें पसेव आय खुजली चले तब उसखुजलाने से फोड़े होआवें पीछे उनफोड़ोंसे राद बहै तब उसजगह कफ और रुधिरके कोपसे उपजाहुआ बृषणकच्छू रोग कहिये ३६ ॥

अथ गुदभ्रंशरोगका लक्षण ॥

मोड़ानिबाही और अतीसार इन दोनोंही से मनुष्य क्षीण पड़िजाय और उसका शरीर रूखा पड़िजाय और वह दुर्बल होजाय तब उस पुरुषकी गुदा बाहर निकलआवे उसको कांच कहिये ३७ ॥ अथ शूकरदंष्ट्र रोगका लक्षण ॥

जिसकी त्वचा पकिजाय और उसजगह पीड़ा बहुत होय दाह लगिजाय और लाल जगहहोय वहां खुजली बहुत चले और ज्वर होआवे उसे शूकरदंष्ट्ररोग कहिये ३८ ॥

अथ क्षुद्ररोगों का यत्न ॥

अजगल्लिकाको आदिले जो फुन्सियां हैं उनको जोंकलगाय कर रुधिर कढ़ाडाले १ अथवा पक्वेब्रणका जोयत्न पीछे लिखा है सोकरिये तो यह रोग अच्छाहोय २ अथवा फिटकरी। सौंफ। प्याज इन्हें शीतलजलसे महीनपीस लेपकरे तो अजगल्लिका आदि फुन्सियां अच्छीहोयँ ३ अथवा मैनसिल। देवदारु। कूट

इन्हें पानीसे महीनपीस लेपकरे पीछे इसे शस्त्रसेचीर रादकाढ़ डाले पीछे जो मलहम कही उससे ये निश्चय अच्छी होयँ ४ अथवा सहँजना । देवदारु इन्हें जलसे पीस लेपकरे तो बिदारिका फुन्सी अच्छी होय ५ ॥

अथ इरिवेलिका फुन्सीका लक्षण ॥

जो पित्तके बिसर्पका यत्नहै सो इसकाभी यत्नहै ६ ॥

अथ पनसिका फुन्सी का यत्न ॥

प्रथमनींबकेपत्तेबांध इसेपकावे पीछे मैनासिल । कूट । हल्दी । तिल इन्हें महीनपीस इनका लेपकर इसे पकावे पीछे चिरा दे इसकीरादकाढ़े फिर मलहमलगावे तो पनसिका अच्छीहोय७॥

अथ पाषाणगर्दभिका फुन्सीका यत्न॥

प्रथम जोंकलगाय रुधिरकढ़ाना अथवा गरमलेप कर इसे पकावे पीछे व्रणके यत्नसे इसका यत्नकरे ८ ॥

अथ वाल्मीक फुन्सीका यत्न ॥

इसे पकाय चिरादीजे पीछे नोन । चित्रक इनका लेपकरे पीछे इसकी राद काढडाले फिर अर्बुदरोगका यत्नकर इसे भरे ९ अथवा जोंकआदिसे इसकारुधिरकढ़ाइये १० अथवाकुलत्थकीजड़ । गिलोय । नोन । किरमालाकीजड़ । दारचूणी । निसोत इन्हें पानीसे महीनपीस गरमकर इसमें थोड़ाघृत मिलाय लेप करे तो यह पकिजाय पीछे चिरा दे और इसका मुरदा मांस काढ़िडाले व्रणके अच्छे होनेके मलहमसे यह अच्छा होय ११ अथवा--मैनासिल । इलायची । रक्तचन्दन । कूट । चमेलीकेपत्ते । भिलावा । मठ्ठा । नींबके पत्ते इनमें तेल पकाय पीछे यह तेल इसमें लगावे तो वाल्मीक फुन्सी सूजनसंयुक्त अच्छी होय इति मनश्शिलादि तैलम् १२ ॥

अथ कांखोलाई और अग्निरोहिणी इन दोनोंका यत्न ॥

प्रथम जलौकासे रुधिर कढ़ाइये अथवा जो पित्तके बिसर्प

का यत्न सोई इसका यत्न कीजिये १३ अथवा देवदारु। मैन-सिल। कूट इन्हें बराबर ले महीनपीस जलसे कुछ एक गरम कर इसका लेपकरे अथवा इसकी सुहाती २ गरम्म कांखोलाई के पीड़ी बांधे तो कांखोलाई अच्छी होय १४॥

अथ अवपाटिका का यत्न॥

चिकनीबस्तुओंसे शनैः शनैः सुहाता २ सेंककरे तो अव-पाटिका अच्छीहोय १५॥

अथ निरुद्धप्रकाश का यत्न॥

चूकाके रसमें तेलकोपकाय इस तेलका सेंककरे अथवा शू-कर के घृतका सेंककरे तो निरुद्धप्रकाश अच्छा होय १६॥

अथ संनिरुद्ध गुदाका यत्न॥

गरम सुहाता तेलका सेंककरे अथवा बायुके दूरकरनेवाले तेलका सेंककरे तो संनिरुद्ध गुदाका रोगजाय १७॥

अथ वृषण कच्छू रोगका यत्न॥

राल। कूट। सेंधानोन। सरसों इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे तो वृषणकच्छूरोग अच्छा होय १८॥

अथ गुदभ्रंशके कांचरोगका यत्न॥

गौका घृत आदि ले चिकनी बस्तुओं का सुहाता सेंककरे तो गुदभ्रंशजाय १९ अथवा कमलिनी के कोमलपत्ते सुखाय उसमें मिश्री मिलाय २ टंक नित्य खाय तो कांच निकलनी बन्द होय २०॥

अथवा चूहेके मांसका घृतकांचके लेपकरे तो कांचनिकलनी बन्द होय २१ अथवा डांसरा अर्थात् तंतरीक। चित्रक। लू-णख्या। बेलकीगिरी। पाढ़। जवाखार ये सब बराबर ले इन-का महीनचूर्णकर २॥ टंक गौके मट्ठेसे नित्य ले तो गुदभ्रंश जाय २२ अथवा मूसेका मांस और दशमूल इसमें पानीडाल इसका काथकरे पीछे इसक्काथमें तेल पकाय फिर इस तेलका

मर्द्दनकरे तो गुदभ्रंश कांचकारोग गुदशूल और भगंदर रोग जायँ इतिमूषक तैलम् २३ ॥

अथवा छछूँदरके तेलको मूषकके तेलकी तरहकर उसका लेपकरे तो गुदभ्रंशका रोगजाय २४ अथवा लूणख्याकारस। बेरकीजड़का रस। दही। मट्ठा इसमें सोंठि और जवाखार। घृत डाल पकावे पीछे इसघृतको ५ टंक नित्य खाय तो गुदभ्रंशका रोगजाय २५–इति चांगेरीघृतम् ॥

अथ शूकरदंष्ट्र रोगकायत्न ॥

जलभांगरे की जड़। हल्दी इन्हें महीनपीस जल से जहां शूकरका काटाहोय यह इसका लेपकरे तो शूकर की डाढ़काविष अच्छा होय २६ ॥ अथ अलसनाम खारका यत्न ॥

पटोल। मैनसिल। नींब। गोरोचन। कालीमिरच। तिल। कटेलीकारस। कांजी इनमें कडुवा तेल पकावे इसको खरवे में मर्द्दन करे तो खरवा अच्छा होय २७ अथवा कणगजके बीज। हल्दी। हीरा कसीस। महुआ। गोरोचन। हरताल ये सब बराबरले इन्हें शहत से महीनपीस लेपकरे तो खरवा अच्छा होय २८ ॥ अथ ब्याऊका यत्न ॥

गरम तेलका सुहाता सेंककरे तो ब्याऊ अच्छीहोय २९ अथवामोम। जवाखार। घृतमें मिलाय गरम २ ब्याऊमें भरै तो ब्याऊ अच्छीहोय ३० अथवा राल। सेंधानोन। शहत। घृत इनसबको कडुवे तेलमें मिलाय मथै पीछेइसको ब्याऊमें भरै तो ब्याऊ अच्छीहोय ३१ अथवा शहत। मोम। गेरू। घृत। गुड़। गूगल। राल इन्हें महीनपीस एकजीवकर ब्याऊमेंभरे तोब्याऊ अच्छीहोय ३२ अथवा धतूरेके बीज। जवाखार इन्हें कडुवे तेलमें पकाय मर्द्दनकरे तो ब्याऊ अच्छीहोय ३३ ॥

अथ कदरका यत्न ॥

जिसके पैरमें कांटा कंकरीचुभीहोय उसके आटण पड़जाय

तब उस आटणको गरम तेलसे सेंके अथवा आकको दूध गुड़ मिलाय बांधे तो कदरजाय ३४ ॥

अथ तिलका यत्न ॥

सरसों। सज्जी। हल्दी। केसर इन्हें जलसे महीनपीस उबटनाकरे पहिले छुरी आदिसे उसको रगड़े तो शरीरका तिल जाय ३५ ॥

अथ मस्सेका यत्न ॥

सज्जी। चूना। साबुन इन्हें जलसेपीस मस्सों में लगावे तो मस्से दूरहोयँ ३६ ॥

अथ जन्तुमणिनाम लहसनका यत्न ॥

लहसनकोपाछनेसेरगड़े पीछे सरसों। हल्दी। कूट। सज्जी। जवाखार। केसर इन्हें पानी से महीनपीस उबटनकरे तो लहसन जाय ३७ ॥

अथ चेपनामरोगका यत्न ॥

इसरोगमें जोंकआदिसे रुधिरकढ़ावे अथवा सुपारीकीराख। पीलीकौड़ीकी राख। कत्था। कबीला। मुरदाशंख। नीलाथोथा इनको बुरके तो चेपजाय ३८ ॥

अथ कुनखरोगका यत्न ॥

सार १ माशे नित्य शहतसेखाय अथवा कुटकीका साधन करे तो कुनखरोग जाय ३९ ॥

अथ मस्सा तिल लहसन इनकादूसरायत्न ॥

सिंगरफ। भुना नीलाथोथा ये दोनों १ पैसे भर ले और सिंदूर १ टंक राल ७ टंक इन सबको गौके ६ टके भर घृतसें कांसेकी थालीमें लोहेके घोटेसे अथवा तांबेके घोटेसे घोटकर ३ दिन रगड़े जब वह जल सदृश होजाय तब इसका लेपकरे तो मस्सा लहसन खारवा फोड़ा खुजली ये सबजायँ ४० ॥ अथवा कालीजीरी २॥ टंक नौसादर ५ टं० सीपकाचूर्ण ७ टं० नीलाथोथा २ टकेभरले इन सबको महीनपीस अरणीकेरसकी २ पुटदे पीछे जलभांगरे के रसकी ३ पुटदे इन्हें धूपमें सुखावे पीछे गौके बछड़े के मूत्रसे इसकी गोलीबांधे पीछे उसीकेमूत्रसे

गोलीको घिसलगावे तौ तिलमस्सा लहसन ये सबजायँ४१॥

अथ खुजली का यत्न॥

लोहेके पात्रमें लोहेके घोटेसे आंवलासार गन्धक १ मा० पारा २ मा० नीलाथोथा ३ मा० ले गौके घृतसे खूबघोटकर पीछे लेपकरे तौ खुजली दूरहोय ४२॥

अथ चेपका और यत्न॥

लोहेके पात्रमें हड़को हल्दीके रससे रगड़े पीछे गरम कर लगावे तो चेपजाय ४३॥

अथ पलित अर्थात् यौवन अवस्थामें बाल का सफेदहोना उसकायत्न॥

लोहेकाचूर्ण २॥ टं० आमकी गुठली २॥टं० आंवला २टं० बड़ी हड़का चूर्ण २टं० बहेड़ा२॥टं०इनसबकोमहीनपीस लोहेकेपात्रमें भांगरेके रससे २ दिन भिगोयरक्खे पीछे सुपेदबालों में लेपकरे तो श्यामहोयँ ४४ अथवा केतकीकी जड़ अथवा केवड़ेकीजड़। सहँजनेकेफूल। कनेरकीजड़। लोहचूर। जलभांगरा। त्रिफला इन सबको तेलमें पकावे पीछे लोहेके पात्रमेंधर पृथिवीमें गाड़रक्खे १ महीने पीछे उसतेलको सुपेद बालों में लगावे तौ सुपेदबाल काले होयँ ४५ अथवा त्रिफला। नींब के पत्ते। लोहचूर। जलभांगरेकारस। गाडरीके मूत्रमें इसे पीस सुपेद बालोंमें लगावे तो बाल कालेहोयँ ४६ अथवा पापड़खार १ माशे सिंदूर १ माशे मुरदाशंख १ माशे खानेका चूना ८ माशे इन्हें पानीसे पत्थरमें ३ घड़ीतक महीन पीसे जब इसका रंग नखके ऊपर कालाआवे तब सुपेद केशोंमें लगावे तो कालेकेशहोयँ ४७ अथवा मोटानया माजूफल लेके भूभलमें तबतकसेंके जबतक फटैनहीं और उसे जलने दे नहीं ऐसी चतुराईसे सेंके पीछे माजूफल १ माशे संगरासि १ माशे नीलाथोथा ४ रत्ती नौसादर ३ रत्ती लवँग ३ रत्ती फिटकड़ी २ रत्ती लोहचूर १ माशे इन सबको आंवलेके पानीके रसमें लोहके

पात्रमें लोहके घोटेसे १ पहर रगड़े जब उसका रंग नखोंपर आवे तब सुपेद केशोंको आंवलेके पानीसे धोय केशोंपर गाढ़ा लेपकरे लेपऊपरआवे नहीं पीछे सुपेद केशोंको आंवलेके पानीसे धोयं डाले तो केशकाले होयँ ४८ अथवा खानेका चूना व अरहड़की राख अथवा कौड़ियों की राखको सीसेसे रगड़े और इसमें थोड़ा गोपीचन्दनडाल १ माशे मुरदासंखडाले जब रगड़तेमें नखोंका रंग काला आवे तब इसका केशोंपर लेपकर ऊपरसे अरण्डका पत्ताबांधे तो केशकाले होयँ ४९ ॥

अथ इंद्रलुप्त जिसेलौकिकमें उदरीलागी कहै हैं उसका यत्न ॥

पटोलके पत्तों के रसमें कुटकीको पीस जहां बालगये होयँ तहां लेपकरे तो बाल जमिआवैं ५० अथवा गोखुरू। तिलोंके फूल ये दोनों बराबरले इन्हें शहत घृतमें महीनपीस जहांबाल गयेहोयँ वहां लेपकरे तो बालआवैं ५१ अथवा हाथीदांत की राख बकरीके दूधके साथ लगावे तो बाल होआवें ५२ अथवा कमलकीजड़ दाख तेल घृत दूध इन सबको महीनपीस लेपकरे तो बालहोयँ ५३ अथवा चमेलीकेपत्ते। कणगचकीजड़। चित्रक इनमें तेलपकावे पीछे इसतेलका मर्द्दनकरे तोबाल आवें ५४॥

अथ चेपका यत्न ॥

चिरौंजी करछुलेमें सज्जीजलाय लेपकरे तो चेपकारोग जाय ५५ ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं इतिक्षुद्ररोगोंकी उत्पत्ति लक्षणयत्न ॥

अथ मस्तक के रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण ॥

मस्तकके रोग ११ प्रकारके हैं वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरका ५ क्षीणपनेका ६ कृमिका ७ सूर्यावर्त्तका ८ अनन्तबातका ९ शंखनाम कनपटी दुखने का १० अर्द्धावभेदक ये ११ प्रकारके मस्तकरोगहैं सो मुख्य तो दुष्ट भोजनसे होयहैं ॥

अथ वायुके शिरोरोगका लक्षण ॥

कारण बिनाही जिसके मस्तकमें बहुत पीड़ाहोय और रात्रिमें अत्यन्तहोय और औषधके लेप अथवा सेंककरनेसे आराम होय तो जानिये वायुकी पीड़ाहै १ ॥

अथ पित्तके शिरोरोगका लक्षण ॥

जिसका माथा अग्निके सदृशजले और शिरकेटूकहुयेजायँ और नेत्रोंमें पीड़ा बहुतहोय और शीत रात्रिमें विशेष होय तो जानिये पित्तकी पीड़ा है २ ॥

अथ कफके शिरोरोगका लक्षण ॥

जिसका मस्तक कफसे लिपारहै और भारी और ठंढा होय और आंख नासिका मुखमें सूजनहोय और जिसकाशिर जलै ये लक्षणहोयँ तब जानिये कफकी पीड़ाहै ३ ॥

अथ सन्निपातके शिरोरोगका लक्षण ॥

पीछेकहेहुये सबलक्षणहोयँ तो जानिये सन्निपातकीपीड़ाहै४॥

अथ रुधिरके शिरोरोगका लक्षण ॥

पित्तकेलक्षण कहेहैं सो सब होयँ और मस्तक हाथकास्पर्श सहै नहीं तब जानिये रक्तकी पीड़ाहै ५ ॥

अथ क्षीणपने से उपजा जो शिरोरोगउसका लक्षण ॥

शरीरका बल जातारहै तब मस्तक खाली पड़िजाय शिर जले और बहुत पीड़ाहोय तब जानिये क्षीणपनेकी पीड़ाहै ६ ॥

अथ कृमिसे उपजेशिरोरोगका लक्षण ॥

जिसका शिरबहुत पीड़ाको प्राप्तहोय और फड़के और जिसकी नाकमें रुधिर और राद बहुत निकले और उसका शिर बहुत बढ़े ये लक्षणहोयँ तो कृमिकी पीड़ा जानिये ७ ॥

अथ सूर्यावर्त्तरोगका लक्षण ॥

सूर्यके उदयके समय शिरमें मन्दमन्दपीड़ाहोय और ज्यों२ दिनचढ़े त्यों २ दोपहरतक पीड़ाबढ़े और आंखों और भौंहोंमें

पीड़ा बहुतहोय और दोपहर पीछे पीड़ा मन्द होतीजाय इसे सूर्यावर्त्त रोगकहिये ८ ॥

अथ अत्यन्तवात शिरोरोगका लक्षण ॥

वायु पित्त कफ ये तीनोंदोष दुष्टहोनेसे कंधे और नेत्र और कनपटियों में बहुत पीड़ाकरे और दाढ़ोंको हलनेदे नहीं और कपोलमें कम्प और नेत्र विकार शिरमें पीड़ा बहुत करे इसे अत्यन्त वात कहिये ९ ॥

अथ शंखनाम कनपटीदूखे उनका लक्षण ॥

पित्तरुधिर और वायु ये दुष्टहो कनपटी में अत्यन्त पीड़ाकरे ौर शरीर में दाह और कनपटीको लालकरदे और शिर का ़करे और गलको रोंकदे इसे शंखनाम शिरका रोग कहिये इस रोगवाला तीन दिनजीवे १० ॥

अथ अर्द्धावभेदक शिरोरोगका लक्षण ॥

रूखीवस्तुके खानेसे भोजनके ऊपर भोजन करनेसे पुरवैया पवनसे बहुत मैथुन करनेसे मलमूत्र के रोंकने से खेदके करने से वायु कुपितहोय कफको ग्रहणकरे पीछे वह वायु कंधे कनपटी कान ललाट भौंह इन सबके आधे २ में बज्रके लगने कीसी पीड़ाहोय उसे अर्द्धावभेदक कहिये और यह पीड़ा नेत्र और कानमें बहुत होनेसे मनुष्यको मारडाले ११ ॥

अथ वायु शिरोरोगका यत्न ॥

वायुके तेलका अथवा इसी तेलका मर्दनकरे और वायुको दूरकरनेवाली बस्तुको खाय तो बायुका शिरोरोगजाय १ अथवा कूट। अरंडकीजड़। सोंठि इन्हें मट्ठेमें महीनपीस गरम कर मस्तक में लेपकरे तो वायुकी शिरपीड़ा जाय २ अथवा श्वास कुठार रसकी नासले तो नानाप्रकारकी शिरकी पीड़ा जाय ३ अथवा उरदके चूनको उसनके रोटीकरे उसरोटी को शिरमें एकपहरबांधे तो शिरकी पीड़ा दूरहोय ४ ॥

अथ शिरोवस्ति ॥

उरदके चूनको पानीमें उसन १६ अंगुल अथवा ८ अंगुलकी बाटीकर उसे गरम तेलसे पूर्णकर वहतेल १ पहर अथवा ४ घड़ी निश्चल स्थानमें शिरके ऊपर रक्खे तो वायुकाशिरोरोग दाढ़ कंधे नेत्र कानके रोगोंको और मस्तककांपताहोय उसे यह शिरोवस्ति दूरकरै है ५ दिन या सातदिन सेवनकरै इति शिरोवस्तिः ५ ॥

अथ पित्त शिरोरोगका यत्न ॥

चन्दन कमलगट्टे इन्हैं शीतल जल से पीसलेपकरै तोपित्त की मस्तक पीड़ाजाय ६ अथवा सौबारके धोयेघृतका लेपकरै तो पित्तकी मस्तक पीड़ाजाय ७ अथवा श्वासकुठाररस। कपूर। केसर। मिश्री। चन्दन इन्हैं बकरी के दूधसे पीस लेपकरै तो पित्तकी मस्तक पीड़ा जाय ८ अथवा सोंठि और गुड़ इन दोनों को पानीमें पीस नासले तो सब प्रकारकी मस्तक पीड़ा जाय ९ ॥

अथ रुधिरकी मस्तक पीड़ाका यत्न ॥

पित्तकी मस्तकपीड़ा और इनकायत्न एकही है इसमें रुधिर छुड़ाना विशेष १० ॥

अथ कफकीमस्तक पीड़ाका यत्न ॥

इसमस्तक पीड़ामें लंघन करना योग्यहै अथवा कफहारी औषधियोंको पीस इनका गरम लेपकरै तो यहरोगजाय ११ ॥

अथ सन्निपातकी मस्तक पीड़ाका यत्न ॥

सन्निपात को दूरकरनेवाली औषधियों का लेपकरै अथवा उन्हैंखाय तो यह मस्तक पीड़ाजाय १२ ॥

अथ षड्बिन्दुतैलम् ॥

अरंडकी जड़। तगर। सौंफ। जीवन्ती। सैंधानोन। रास्ना जलभांगरा। वायबिड़ंग। मुलहठी। सोंठि। तिलोंका तेल इन औषधियों से अठगुना तेल ले चौगुना जलभांगरे का रसले और तेलसे चौगुना बकरीका दूधले पीछे इन सबको इकट्ठा कर कराही में मधुरी आंच से पकावे जब जल सब जलजाय

तेलमात्र रहिजाय तबइसतेलके ६ बूंदकीनाकमें नासलेतो शिर केसर्बरोग और दांतके सर्बरोग जायँ १३ इतिषड्बिन्दुतैलं ॥

अथवा क्षीणपने से हुई जो शिरपीड़ा उसको जो दूरकरे ऐसा यत्न करने से मस्तक पीड़ाजाय १४ ॥

अथ कृमिसे उपजी मस्तकपीडाका यत्न ॥

सोंठि। मिरच। पीपल। किरमालाकीजड़। सहजनेके बीज ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के मूत्रमें महीनपीस नासले तो मस्तक के कृमिजायँ और मस्तकपीड़ा अच्छीहोय १५ ॥

अथसूर्यावर्तनाम आधाशीशीकायत्न॥

दूध और घृतमिलाय नासले तो आधाशिशीजाय १६ ॥ अथवा गुड़ औरघृतमिलाय मालपुआ खाय अथवा खीरखाय अथवा तिलोंका सेंक करावे तो आधाशीशी जाय १७ अथवा जलभांगरेका रस बकरी का दूधये बराबरले इन्हेंधूपमें गरम करै पीछे इसकानासले तोआधाशीशीजाय १८ अथवा शिंगी-मुहरा। अफीम। लाखकी जड़। धतूरे की जड़। सोंठि। कूट। लहसन। हींग इन्हें गोमूत्रमें महीनपीस गरमकर मस्तकमें लेपकरै तो आधाशीशी जाय १९ ॥

अथअर्द्धमस्तक दूखै उसका यत्न ॥

उसको जुलाबदे तो अर्द्धमस्तक दुखता बन्दहोय २० अ-थवा गरम भोजनसे यह अच्छाहोय २१ अथवा वायविड़ंग। कालातिल ये दोनों महीनपीस लेपकरै तोयह अच्छाहोय २२ अथवा मिश्री। दूध। कच्चेनारियल का पानी ये सब मिलाय पीवे अथवा इसकी नासले तो आधाशीशी अर्द्धमस्तकका दू-खना अच्छाहोय २३ ॥

अथ अनन्त वायुशिरोरोगका यत्न ॥

आधाशीशी का और इसकायत्न एकही है अथवा मस्तक कीनासकी फस्तलगावै तो यह अच्छाहोय अथवा शहतका

मालपुआ खाय तो अनन्त बात शिरका रोगजाय २४ ॥

अथपथ्यादिकाथलिख्यते ॥

हड़कीछाल। बहेड़ा। आंवला। हल्दी। गिलोय। चिरायता। नींबकीछाल। गुड़ ये सबबराबरले इन्हें जवकुटकर इनका काढ़ादे वा नासले तो भौंह कनपटीकी पीड़ा और नेत्ररोग आधाशीशी ये रोगजायँ २५ ॥ इतिपथ्यादिकाथः ॥

अथ कनपटी दुखतीहोय उसकायत्न ॥

दारुहल्दी। हल्दी। मंजीठ। गौरीसर। खस। कमलगट्टा इन्हेंजलसे महीनपीस कनपटियोंमें लेपकरे तो कनपटीअच्छी होय २६ अथवा शीतल जलसे शीतल औषधियों का लेपकरे तो कनपटी अच्छी होय २७ अथवा मुलहठी। उरद ये दोनों बराबरले और इनका चौथाहिस्सा शिंगीमुहराले पीछे इन्हें महीनपीस सरसों प्रमाण मात्राले तो सब प्रकार की शिरकी व्यथादूरहोय २८ अथवा गिलोय सीपका चूना और नौसादर इनको महीन पीस नासले तो सब प्रकार की शिरकी व्यथा जाय २९ ॥

अथ आधाशीशीका और यत्न ॥

मिश्री। केसर इन्हें घृतमेंसेंके पीछे इनकीनासलेतो आधाशीशी कनपटी भौंह नेत्रका दुखना ये सबरोग अच्छेहोयँ ३० ये सबयत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं ॥

अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। पुष्करमूल। हल्दी। रास्ना। देवदारु। असगंध। इनका काढ़ाले तो सब प्रकार के मस्तक के रोगजायँ ३१ अथवा मिश्री और इससे आधी दाड़िमकी कलीले इन्हें महीनपीसनासलेतो मस्तककीपीड़ाजाय ३२ अथवा कूट। अरंडकीजड़। इन्हेंकांजीमें पीसलेपकरै तो मस्तककी पीड़ाजाय ३३ अथवा मुचकुन्द के फूलोंका लेपकरै तो मस्तक पीड़ा जाय ३४ अथवा देवदारु। तगर। कूट। खस। सोंठि। तिल इन्हें कांजीमें घोटलेपकरै तो मस्तक पीड़ा जाय ३५ ॥

अथ आधाशीशी का यत्न।

मिश्री। मैनफल। इन्हें गोमूत्र में महीनपीस नासले तो आधाशीशीजाय ३६ अथवा शशा अर्थात् खरगोशके शोरुवेमें मिरचडाल भोजनकेसाथ ७ दिनखायतो आधाशीशी आदिले सबमस्तक के रोगजायँ ३७ ये सबयत्न वैद्यरहस्यमें हैं अथवा रक्तचन्दन। लवंग। सोंठि इन्हें पानी में महीनपीस लेपकरै तो मस्तकपीड़ाजाय ३८ अथवा आमकीछालकालेपकरे तो मस्तक पीड़ाजाय ३९ अथवाजलभांगरेका रस गौकामक्खन इनदोनों का लेपकरे तो मस्तक पीड़ाजाय ४० अथवा पीपल। मिरच। पठानीलोध। यहसब बराबरले महीनपीस इनकी ३ दिननास ले तो आधाशीशी आदिमस्तक पीड़ाजायँ ४१॥

अथ कपालकेकीड़ेकायत्न॥

कडुये ककोड़ेके पत्तोंकेरसकी नासले तो कपालके कीड़े जायँ ४२ अथवा पीपल। आंधीझाड़ा। सरसों। आककीडोंड़ी केबीज। इनकाशीतल जलसे लेपकरे तोमस्तक पीड़ाजाय४३ ये यत्न वैद्यवल्लभमें हैं॥

अथ मस्तककेकेशबढ़नेका यत्न॥

छाड़ छबीला। कूट। कालातिल। गौरीसर। कमलगट्टे इन्हें शहत और दूधमें महीनपीस लेपकरे तो शिरके केशबढ़ें ४४ अथवा चिरमिटीको महीनपीस जलभांगरे के रसमें वह चूर्ण और तिलका तेल पकाय इसतेलमें इलायची। छाड़छबीला कूट। इन्हें जलसे महीनपीस लेपकरे तो केशबढ़ें ४५ अथवा बाड़छड़। खरैटी। मौलसिरीकी छाल। आंवला। कूट इन्हें जलसे महीनपीस लेपकरे तो केशबढ़ें ४६॥

अथ मस्तकपीड़ाका और यत्न॥

लवंग १ मिरच ३ हींगचने प्रमाण इन तीनों का जल से नासले तो मस्तक पीड़ा निश्चय जाय ४७॥

अथ आधाशीशी का मन्त्र॥

अर्द्धकपाली नाशय जाजारी पापिनी जाजारी हत्यारी न जायतो तेरेगुरुकी आज्ञा हनुमंत वीरकी आज्ञा गरुड़पंखडीकी आज्ञामेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्रईश्वरोवाच इसमंत्र से मस्तकके शनैःशनैः २१ बारफूंकदे तौ आधाशीशी निश्चयजाय कृष्णबदी १४ को शक्ति माफिक इसमंत्रका जपकरे तौ यह मंत्र सिद्धरहै ४८॥

अथदूसरा मंत्र॥

ऊँ नमो आधाशीशी हूंहूं कारी पहर पचारी मुखमूंदिपाटलेडारी अमुकारेशीशरहै मुख महेश्वरकी आज्ञाफुरे ऊँ ठंठं स्वाहा २१ बार इसमंत्रसे अंगुलीमस्तककेऊपर फेरे तौ आधाशीशीजाय ४९ इतिमस्तकरोगकी उत्पत्तिलक्षणयत्नसंपूर्णम्॥

अथनेत्रके रोगोंकी उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

नेत्रका मण्डलदो अढाई अंगुलप्रमाणहै अथवा अपने अंगूठेके उदर प्रमाणहै सोशार्ङ्गधरके मतसेनेत्रमंडलमें ९४ रोग हैं और कईएक आचार्योंके मतसे ७८ रोग मुख्यहैं दृष्टिमें तो १२ रोगहैं नेत्रमें २ रोगहैं नेत्रकी काली जगहमें ४ रोगहैं नेत्र के सफ़ेद भागमें ११ रोगहैं नेत्रके मार्गमें ९ रोग हैं नेत्रकी बाफणी में २ रोगहैं नेत्रकी सन्धिमें ९ रोगहैं सब नेत्र में १७ रोगहैं ऐसेनेत्रके विषे ७८ रोगहैं येचरक औरसुश्रुतमें लिखेहैं वायुके १० पित्तके १० कफके१३ रुधिरके१६ सन्निपातके२५ नेत्रके बाहरके २ ऐसे ७६ रोगहैं॥

अथ नेत्रके रोगोंकी उत्पत्ति॥

धूपआदिसे शरीरमें गरमीहुई होय पीछे नदीतालाब बावली आदिकेजलमें प्रवेश करनेसे या दूरके देखनेसे दिनकेसोनेसे पसीनेसे नेत्रोंमें रजके पड़नेसे नेत्रोंमें धुआंके जानेसेछर्दि के रोकने से वहुत वमन के करने से गरम बस्तुके खाने से

कांजी । कुलत्थ । उरद इनकेखानेसे अधोवायु मलमूत्र इनके रोकनेसे ऋतुके विपरीतपनेसे क्लेश और बहुत मैथुनकेकरने से अश्रुकेरोकने से सूक्ष्मवस्तुके देखनेसे इनबस्तुओं से नेत्रों के ७६ रोगपैदाहोयँ हैं ॥

अथ प्रथम दृष्टिरोग लिखते हैं ॥

अथदृष्टि का लक्षण ॥

इस नेत्रमण्डलके विषे काली जगहमें मसूरकीदालकेप्रमाण एक माणस्याहै सो वहमाणस्या पांच महाभूतोंसे उपजाहै और वह अग्नि सदृश चमके और अविनाशी तेज स्वरूप सिद्ध है और वहनेत्र गोलमेंचार पटलकर ढकाहै पटलकहिये प्याजके छिलके सदृश झिल्लीजीरकके यहसब आंखि अच्छीदीखतीहो रहीहै और वहदृष्टि निपट शीतलरूपहै इसे बुद्धिमान् दृष्टिकहै हैं सो यह दृष्टिजल और रुधिरके आधारहै इसदृष्टिके ४ पटल हैं प्रथमपटल तो तेज और जलकेआश्रयहै दूसरापटलमांसके आश्रयहै तीसरा पटल मेदके आश्रय है चौथारुधिर तेजमांस मेद अस्थि इन पांचों के आश्रयहै ॥

अथ प्रथम पटलमें हुये रोगकालक्षण ॥

प्रथम नेत्रके पटलकी दृष्टिमें जो रोगरहैहैं उसपुरुषको जो दीखै सो सांगोपांग यथार्थ दीखै नहीं क्योंकि पहिले पटलमें दोष थोड़े रहैहैं १

अथ दूसरे पटलमें हुये रोगका लक्षण ॥

नेत्रके दूसरे पटलमें प्राप्त जो दोष उससे मक्खी मच्छड़ केश इनका समूहदीखै नहीं दूरका निकटदीखै निकट का दूर दीखै दृष्टिभ्रमतीरहै और बहुतयत्नसेभी सुईकाछिद्र दीखैनहीं क्योंकिदृष्टिहै सो बहुत बिकल होजाय है २ ॥

अथ तीसरे पटलमें हुये जो दोष उनका लक्षण ॥

ऊंचादीखै और नीचेकादीखै नहीं रूपका समूहदीखै मानो

वस्त्रबीच आय गयाहै कान नाक नेत्र ये औरसे दीखे दृष्टि में दोषबहुत आयरहा होय जो नीचेकी सो वस्तु ऊपरदीखे और ऊपरकी नीचेदीखे और नेत्रकेपसलियोंमें दोषबहुत आयगया होय उसे निकटकी बस्तु कोईदीखे नहीं और नेत्रके चारोंओर रहते जो दोषउसे आकुल व्याकुल चकचौंधादीखे और दृष्टिके मध्यरहते जो दोष उसेबड़ी बस्तुछोटी दीखे दृष्टिमें स्थित जो दोष उस निकट की वस्तुएककी दो दीखे और बगलकी जो दो वस्तु सो तीन दीखे और बगल में बहुत बस्तुहोयँ तो उनकी गिन्तीहोय नहीं ये लक्षण तीसरे पटलके जानिये ३ ॥

अथ चतुर्थपटलमें हुआ जो दोष उसका लक्षण ॥

चौथे पटलमें उपजा जो दोष उसे लौकिकमें तिमिर कहे हैं और इसे कोई वैद्य शास्त्रके आचार्य लिंगनाशक रोग कहे हैं लिंगनाशक कहिये जिसके नेत्रोंकी तेजोमयी पुतली नीली कांच सदृशहोजाय और जिसमें येलक्षणहोयँ उसपटलमें दोष बहुतहों चन्द्रमा सूर्यनक्षत्र आकाश बिजलीयेनिर्मल तेजहैं सो भी अच्छेदीखें नहीं ये भ्रमतेसेदीखें इसदोष को तिमिर कहे हैं अथवा इसे लिंगनाशकहिये और लौकिकमें इसे नजला कहे हैं और कोई २ मोतियाबिन्द भी कहे हैं ४ ॥

अथ और शास्त्रोंकेमतसे लिंगनाश मोतियाबिंदका लक्षण ॥

यह लिंगनाश मोतियाबिन्दरोग ६ प्रकारका है वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सान्निपातका ४ रुधिरका ५ परिम्लायिन का ६ परिम्लायिन कहिये रुधिरसे मूर्च्छितहुये पित्तको ॥

अथ वायु के लिंगनाशका लक्षण ॥

जिसके बायुका लिंगनाश होय उसे संपूर्णवस्तु भ्रमतीसी और मलीनसी दीखें और सब वस्तु कुछ एकलाल दीखें और कुटिल अर्थात् बांकी दीखें तब जानियें इसके बायु का लिंगनाश है १ ॥

अथ पित्तके लिंगनाशका लक्षण ॥

जिसके पित्तका लिंगनाश होय उसको सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र अग्नि इन्द्रका धनुष बिजली ये सब भ्रमते से दीखें और सब वस्तु नीलीसी दीखे तब जानिये कि पित्तका लिंगनाश है २ ॥

अथ कफके लिंगनाशका लक्षण ॥

कफका लिंग नाश होय उससे चिकना और सफ़ेद दीखे और उस मनुष्यका नेत्र जलसे भराही रहै ३ ॥

अथ सन्निपात के लिंगनाश का लक्षण ॥

जिसके सन्निपातका लिंगनाश होय उसे नाना प्रकार का आकार दीखे और नहीं अधिक अंग दीखे और तेजरूप सब वस्तु दीखे और पीछे कहे लक्षणभी होयँ ४ ॥

अथ रुधिरसे उपजे लिंगनाशका लक्षण ॥

जिसके लिंगनाश होय उसको लाल और सफ़ेद हरी काली और पीली सब वस्तु दीखे ५ ॥

अथ परिम्लायिनसे उपजे लिंगनाशका लक्षण ॥

रक्तसे मूर्च्छित हुआ जो पित्त उसे परिम्लायिन कहिये उससे उपजा जो लिंगनाश उसे दशों दिशा पीलीही दीखें मानों सर्वत्र सूर्यही हैं वृक्षआदि सबवस्तु दग्धहुई अग्निसदृश दीखे ॥

अथ और लिंगनाशका स्वरूप ॥

वायु का लिंगनाश अरुण पीलाईको लिये और नीला होय १ और ऐसाही पित्तका होय २ और कफका सफ़ेद होय ३ और रुधिर का लाल होय ४ और सन्निपातका विचित्र होय ५ ॥

अथ वायु को आदि ले ६ प्रकार के लिंगनाश कहे हैं ॥

तिनके नेत्र के मण्डलका पृथक् २ स्वरूप ॥

वायुका नेत्रमण्डल अरुण चंचल और कठोर होय १ पित्त के नेत्रमण्डलमें बिलोसा नेत्रकांसी के वर्ण सदृश और पीला होय २ कफका मण्डल बहुतचिकना होय और शंख या कुन्द

के फूलके सदृश पीला और चंचलहोय और उस नेत्रमण्डल में सफ़ेद बूंद होयँ ३ ॥

अथ सन्निपात के नेत्रमण्डलका लक्षण ॥

इस नेत्रमण्डलमें मूंगेके सदृश अथवापद्मके पत्रसदृशनेत्र मण्डलहोयँ और पीछे जो लक्षण कहे हैं सोभी होयँ ४ ॥

अथ रुधिर के नेत्रमण्डलका लक्षण ॥

यह नेत्रमण्डल लालहोय ५ ॥

अथ परिम्लायिन नेत्रमण्डलका लक्षण ॥

यह नेत्रभद्दरंगा कांचके सदृश पीलाहोय और यह मण्डल लाल रूखा मैला और नीला होय ६ ॥

अथ पित्त विदग्ध दृष्टिका लक्षण ॥

जिसके शरीरमें पित्तदुष्ट हुआ होय उसपुरुषकी दृष्टिपीली होजाय और उसको सब बस्तु पीलीही पीली दीखें ७ ॥

अथ दुष्ट पित्त तीसरे पटलमेंजाय प्राप्तहोय उसका स्वरूप ॥

उस पुरुषको दिनमें दीखैनहीं और रात्रिमेंदीखे चन्द्रमाके शीतलपनेसे कुछएक पित्त रात्रिमें थोड़ा होय ८ ॥

अथ कफ विदग्ध दृष्टि का लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि कफ करके विदग्ध होय उसे सब सफ़ेददीखे यह रोग प्रथम द्वितीय पटलमें होय है ८ ॥

अथ नक्तांध नाम रतौंधी का लक्षण ॥

तीसरे पटलमें कफ आवै तब नक्तांधहोय दिनमें दीखैरात्रि में दीखै नहीं इसे लौकिक में रतौंधी कहैहैं ९ ॥

अथधूमदर्शीरोगका लक्षण ॥

शोक या ज्वरसे खेदसे शिर में ताप जाय प्राप्त होय तब मनुष्य की दृष्टि है सो धुवां से व्याप्त होय और मनुष्य को सब वस्तु धुयें के सदृश दीखैं उसे धूमदर्शी रोग कहिये ॥

अथह्रस्वजात्य रोगका लक्षण ॥

जोपुरुष कष्टसे बड़ी बस्तुकोदेखै और वहबस्तु दिनमें छोटी दीखै और रात्रिमें यथार्थदीखे उसे ह्रस्वजात्यरोग कहिये ६ ॥

अथ नकुलांधरोगका लक्षण ॥

जिस पुरुषकी दृष्टि तो अच्छीतरहसे दीखै औरउसदृष्टिमें दोष आय प्राप्त होय तब उसको रात्रि विचित्र दीखै इसे नकुलांध कहिये ७ ॥ अथ गंभीर रोगका लक्षण ॥

जो पुरुष शीशाले तो उसकी दृष्टि भीतर को घुसजाय और नेत्र में पीड़ा चले इसे गंभीरनालरोग कहिये ८ ॥

अथ विनाकारणही लिंगनाशहोय उसका लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि निर्मल अच्छीहोय सो बिना कारणही काली होजाय उसे बिनाकारण लिंगनाशकहिये १ ॥ इतिदृष्टिरोगः ॥

अथ नेत्र के मंडल में हुये जो रोग तिनके नाम और संख्या लिखते हैं ॥

ये चाररोग कृष्णमण्डलमें होयहैं ॥ सव्रणशुक्र १ अव्रण शुक्र २ अक्षिपाकात्यय ३ अजकाजात ४ ॥

अथ सव्रणशुक्रका लक्षण ॥

नेत्रकी काली जगह में पुतलीके ऊपर दोष आयाहोय और उस दोष करके तारा ढकिजाय और वहबूंद नेत्रमें गडिजाय और उसमें सुईकासा चभका चले और गरम २ पानी नेत्र में से गिराकरै तो उसे सव्रणशुक्र कहिये १ ॥

अथ सव्रणशुक्र का असाध्य लक्षण ॥

वहबूंद दृष्टिके समीपगाढ़ी औरपकीत्वचामें नहींहोय और आंखों में बहुतपानी नहींपड़े और उसमें पीड़ा कमहोय और एक आंखिमें होय सोतो कदाचित् अच्छीहोय और इस से बिपरीत लक्षणहोय सो असाध्य जानिये २ ॥

अथ अव्रणशुक्रका लक्षण ॥

जिसकीकालीपुतलीकेतारेपर शुक्रकीबूंद आईहोय और वह

बूंदहालेचले और शंख या चन्द्रमा या कुंदकेफूल या आकाश अथवा बादलके सदृशहोय उसेअव्रणशुक्रकहिये यहसाध्यहै ॥

अथ अव्रणशुक्रसाध्यहै फिर अवस्था भेदकरके इसके कष्टसाध्य लक्षण लिखते हैं ॥

जिसके नेत्रकामांस बिखरजाय औरवहबूंद आडीहोय और वह नसों में हुई होय और मदरंगी होय और दूसरे पटल में होय चारोंओर लालहोय और बहुतदिनों का होय ऐसाअव्रण शुक्रभी असाध्यजानिये इसका यत्न कीजैनहीं ३ ॥

अथ इसका और असाध्य लक्षण ॥

जिसके नेत्रमें आंशू गरम उतरें और नेत्रमें फुंसियां होयँ और पुतलियोंके ऊपर शुक्रकीबूंद मूंगकेसमानहोय औरतीतर के पंखसदृश वर्णहोय सो अव्रणशुक्र भी असाध्य जानिये ४ ॥

अथ अक्षिपाकात्यय नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसकेनेत्रकी सफेदजगह सबसूजजाय और अश्रुपातभी बहुत होयँ औरउसजगह पीड़ाभी बहुतहोय और वह नेत्रदोषों सेपकिजाय इसेअक्षिपाकात्ययरोगकहिये यहभीअसाध्यहै ५ ॥

अथ अजकाजात नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसकीआंखिवकरेकीमेगनीअ० विष्ठाकेसदृशहोजायँ और उसमें पीड़ाचलै और लालरहै और लालही जिसमेंआंशूआवैं इसेअजकाजातनेत्ररोग कहिये ६ येचारों कृष्णमंडलकेरोगहैं ॥

अथ नेत्र के शुक्लभाग में उपजे जो रोग तिनके नाम और संख्या लिखते हैं ॥

नेत्रके शुक्लभाग में ११ रोग हैं प्रस्तार्म १ शुक्लार्म २ रक्तार्म ३ अधिमांसार्म ४ स्नाय्वर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापिडिका १० बलासग्रथित ११ ये कफकरके गुथेनेत्र के शुक्लभागमें होयहैं ॥

अथ प्रस्तार्म नेत्ररोगका लक्षण ॥

नेत्रके सफेदभागमें गरमीकोलिये बड़ा और काला लाल चिह्न होय उसको प्रस्तार्म नेत्ररोग कहिये १ ॥

अथ शुक्लार्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्रकासफ़ेदऔरकोमलमांसबढ़ेउसेशुक्लार्मनेत्ररोगकहिये २॥

अथ रक्तार्म नेत्ररोगका लक्षण ॥

नेत्रके सफ़ेद भाग में पद्मके सदृश कोमल जो मांस बढ़े उसे रक्तार्मरोग कहिये ३ ॥

अथ अधिमांसार्म रोगका लक्षण ॥

नेत्रके सफ़ेद भागमें बड़ा और कोमल पुष्टकालजा समान चिह्नहोयँ उसे अधिमांसार्म रोग कहिये ४ ॥

अथ शुक्तिनाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसनेत्रके शुक्लभागमें काली और मांसके सदृश बूंदहोयँ उसे शुक्तिनाम रोग कहिये ५ ॥

अथ अर्जुन रोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके शुक्लभागमें शशाके रुधिर सदृश १ बूंदहोय उसे अर्जुननाम नेत्ररोग कहिये ६ ॥

अथ पिष्टकनाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसनेत्रके शुक्लभागमें वायु कफके कोपकरके पिसे आटे सदृश मांस ऊंचाहो उसे पिष्टकनाम रोग कहिये ७ ॥

अथ शिराजाल नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसनेत्रके सफ़ेद भागमें नसोंके समूह कठिन और पीले हो आवें उसे शिराजाल नेत्ररोग कहिये ८ ॥

अथ शिरापिडिकानाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिस नेत्रके सफ़ेद भागमें नसोंसे ढकी सफ़ेद फुंसियांहोयँ उसे शिरापिड़िका नाम नेत्ररोगकहिये ९ ॥

अथ बलासग्रथित नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसनेत्रके सफ़ेद भागमें कांसीके सदृश सफ़ेद अथवा कमल सदृशवर्ण और कठोरसा चिह्नहोय उसे बलासग्रथित नेत्ररोगकहिये १० इतिनेत्रकेशुक्लभागके ११ रोग संपूर्णम् ॥

अथ नेत्रके मर्मस्थानमें २१ रोग जो नीचेकी और ऊपरकी पंखड़ी में रहैं तिनके नाम ॥

उत्संगपिड़िका १ कुम्भीका २ पोथकी ३ बर्त्मशर्करा ४ अर्शोवर्त्मा ५ शुष्कार्श ६ अंजननामिका ७ बहुलवर्त्मा ८ वर्त्मबंध ९ क्लिष्टवर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्यावबर्त्मा १२ प्रक्लिन्नवर्त्मा १३ अक्लिन्नवर्त्मा १४ बातहतवर्त्मा १५ वर्त्मार्बुद १६ असंस्तनिमेष १७ शोणितार्श १८ लगण १९ विषवर्त्मा २० कुंचन २१ ॥

अथ उत्संगपिड़िका का लक्षण ॥

नेत्रके ढकनेवाली वाफणी अ० बाझनी नामकोया उसमें फुंसीहोय और उसफुंसीमें मुंहहोय वह फुंसी लाल और बहुत ऊंची होय और रुधिरसे उपजी और बड़ीहोय और जिसमें खुजलीचले ये लक्षणहोयँ उसे उत्संगपिड़िका कहिये १ ॥

अथ कुम्भीकापिड़िका का लक्षण ॥

जिसके नेत्र मार्ग के अन्तमें कुम्भीकाके बीज सदृश फुंसी होय और वहफुंसी फूटकर श्रवाकरे और सूजन को लिये होय उसे कुम्भीका नाम नेत्ररोग कहिये २ ॥

अथ पोथकीनाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके कोयेमें लाल सरसों के समान फुंसी होयँ और वह झरें बहुत खाजचले और पीड़ाहोय उसे पोथकी पिड़िकानाम नेत्ररोगकहिये ३ ॥

अथ वर्त्मशर्करा पिड़िका नामनेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके कोयेमें तिवरसी अ० खीरा ककड़ी के बीज सदृश फुंसी होयँ और जिसमें पीड़ा कमहोय उसे वर्त्मशर्करा पिड़िकानाम नेत्ररोगकहिये ४ ॥

अथ अर्शोवर्त्मानाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जो फुंसी चिकनी और कठोरहोय उसे अर्शोवर्त्मा नेत्ररोग कहिये ५ ॥

अथ शुष्कार्श नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोयेमें बड़े २ अंकुर दर्दरे भयंकर होयँ उसे शुष्कार्श नाम नेत्ररोग कहिये ६ ॥

अथ अंजननामिका नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोयेमें फुंसियां दाह लियेहोयँ और लाल होयँ और कोमल छोटी होयँ और पीड़ा मन्दहोय उसेअंजननामिका नेत्ररोग कहिये ७ ॥

अथ बहुलवर्त्मा नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके कोयेमें चारोंओर एकबर्णकी बहुतसी फुंसियांहोयँ उसे बहुलबर्त्मा नेत्ररोग कहिये ८ ॥

अथ वर्त्मबन्धकनाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोयेमें सूजनहोय और उसमें थोड़ी खुजली चलै और थोड़ीपीड़ाहोय और सूजनसे नेत्ररुकजायँ उसेबर्त्मबन्धकनाम नेत्ररोग कहिये ९ ॥

अथ क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोयेकामार्ग अकस्मात् लालहोय और मंद पीड़ाहोय उसे क्लिष्टबर्त्मा नेत्ररोग कहिये १० ॥

अथ वर्त्मकर्दम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रमें पित्त संयुक्त कुपथ्यसे रुधिर दग्घ होय और आंखिसे कीचड़ बहुतबहै उसेबर्त्मकर्दम नेत्ररोग कहिये ११ ॥

अथ श्याववर्त्मा नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोयेके मार्गमें और बाहर काली सूजन होय और उस सूजनमें पीड़ाहोय और खुजली चलै और कीचड़भी आवे उसे श्यावबर्त्मा नेत्ररोगकहिये १२ ॥

अथ प्रक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोयेके बाहर सूजनहोय और उसमें पीड़ा नहीं होय और कीचड़ बहुतआवे उसे प्रक्लिन्नबर्त्मा नाम नेत्र रोग कहिये १३ ॥ अथ अक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसकी आंखधोयेसे खुलैनहीं औ मिर्चीही रहै उसे अक्लिन्नबर्त्मा नेत्ररोगकहिये १४ ॥

अथ वातहतवर्त्म नेत्ररोगकालक्षण ॥

जिसके पलक अच्छीतरह मिचैंनहीं और खुलेही रहैं और पीड़ारहै अथवा नहीं रहै अथवा आंख मिचीरहै उसे वातहत-वर्त्म नेत्ररोग कहिये १५ ॥

अथ वर्त्मार्बुद नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रभीतरको बैठिजायँ और वायुसेवाफणीजलाकरै उसेवर्त्मार्बुदरोग कहिये और उसे अलसनिमेषकहिये १६ ॥

अथ शोणितार्श नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कोयेकी बाफणीके मार्गमें उपजी फुनसीके कोमल अंकुर होयँ तिन्हें दूरकरनेके वास्ते बांधकरसोवे अंकुरबढ़ाकरै उसे शोणितार्श नेत्ररोग कहिये १७ ॥

अथ लगणनाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रकेकोयेके मार्गमें बेरप्रमाण गांठ होय और वह गांठ पके नहीं और कड़ीहोय और उसमें खुजलीचले और ने-त्रोंमें कीचड़आवे उसे लगण नेत्ररोग कहिये १८ ॥

अथ विषवर्त्मा नेत्ररोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रोंके कोये में बहुत छिद्र पड़िजायँ और कोये के ऊपर सूजन चढ़जाय नेत्रोंमें आंशू बहुतआवें उसे विषवर्त्मानेत्र रोग कहिये १९ ॥ अथ कुंचननाम नेत्ररोगका लक्षण ॥

वायु पित्त कफ जिसके कोयके मार्गको संकोचित करलें और कोयेको नेत्रोंसे उठनेदें नहीं कोईवस्तु दीखे नहीं उसे कुंचननाम नेत्ररोग कहिये २० इतिनेत्रके कोयोंका रोगसंपूर्ण ॥

अथ नेत्रकी वाफणी का रोग ॥

पक्ष्मकोप १ पक्ष्मशान्ति २ ॥

अथ पक्ष्मकोपरोगका लक्षण ॥

जिसके कोयेकी बाफणी जातीरहै अथवा कोये में घुसजाय अथवा बाफणीमें खुजली बहुतहो यह रोग वायुके कोपसे होय

है और बहुत भयंकर है सूजनभी होय है यहअसाध्य है १ ॥

अथ पक्ष्मशांति बाफणी के रोगका लक्षण ॥

नेत्रों के कोये की बाफणी जाती रहै उस में खुजली चले और जलती रहै यह पित्तकेकोपमें होयहै २॥

अथ नेत्र की संधिमें जो नवरोग होय हैं तिनके नाम॥

पूपालस १ उपनाह २ पैत्तिकश्राव ३ कफश्राव ४ सन्निपातश्राव ५ रक्तश्राव ६ पर्वणीश्राव ७ अलज ८ जंतुग्रन्थि ९॥

अथ पूपालस नेत्र संधिरोगका लक्षण॥

नेत्रके मध्य पुतलीकेपास कोयेके अन्तमें जो सन्धि सोपीड़ा करे और पककर सूजजाय औ उसमें कीचड़ रादके सदृश गाढ़ा बहुतआवै उसेपूपालसनामनेत्रकी सन्धिकारोगकहिये १॥

अथ उपनाहनाम नेत्रकी संधि के रोगका लक्षण॥

नेत्रकी दृष्टिकी सन्धिमें बड़ीगांठ होय और पके नहीं और उसमें खाजआवे और पीड़ा नहींहोय उसे उपनाहनाम नेत्रकी सन्धिका रोगकहिये २॥

अथ पैत्तिकश्राव नेत्रकी सन्धिके रोगका लक्षण॥

जिसकी आंखोंमें पीड़ा बहुत होय और रोमांच होयआवे और आंखोंमें खुजली होय नेत्र कडुवे होयँ और शिरबले और जिसके नेत्रकी सन्धिमें अश्रुपात हल्दीके समान पीले बहुत आवें उसे पैत्तिकश्राव नेत्रकी सन्धिका रोग कहिये ३॥

अथ कफश्राव नेत्रकी सन्धिके रोगका लक्षण॥

जिसके नेत्रकी सन्धिमें सफेद मदरंगे और चिकने आंशू आवैं उसे श्लेष्मश्राव नेत्रकी सन्धिका रोग कहिये ४॥

अथ सन्निपातश्राव नेत्रकी सन्धिके रोगका लक्षण॥

नेत्रकी सन्धिमें नासूर पड़जाय और उसमें दुर्गंधिकोलिये रादनिकलाकरै उसेसन्निपातश्रावनेत्रकी सन्धिकारोगकहिये५॥

अथ रक्तश्राव नेत्रकी संधिके रोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी संधिमें गर्म रुधिर बहुत निकलै उसे रक्तश्राव नेत्रकी संधिका रोग कहिये ६ ॥

अथ पर्व्वणी नाम नेत्रकी सन्धिके रोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी सन्धि तांबे के वर्ण समान लालहोय और महीन होय दाह और शूलको लिये होय गोल जिसका शोथ होय उसे पर्व्वणी नाम नेत्रकी संधिका रोग कहिये ७ ॥

अथ अलजी नाम नेत्रकी संधि के रोग का लक्षण ॥

जिसकेनेत्रकीसंधि तांबेके समानलालहोय और महीनहोय और दाह शूलको लियेहोय जिसका शोथ गोलहोय उसे अलजी नामनेत्रकी संधिका रोग कहिये इसका और पर्व्वणी का एकही लक्षण है ८ ॥ अथ जंतुग्रंथिनाम नेत्रकी संधिके रोगका लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी संधिकी गांठिमें कृमि पड़जायँ और उससे बाफणी जातीरहै और उसजगह खुजालआवै और उसकेनेत्रों की संधिमें अनेक महीनमार्ग्ग होजायँ और नेत्रोंमें पीड़ाबहुत होय उसे जंतुग्रंथि नाम नेत्रकी संधिका रोग कहिये ९ ॥ इति नेत्रसंधि रोग लक्षण सम्पूर्णम् ॥

अथ नेत्रके समस्तरोगों की संख्या और उनकेनाम लिखते हैं ॥

बायुका अभिष्पन्द १ पित्तका अभिष्पन्द २ कफका अभिष्पन्द ३ रक्त का अभिष्पन्द ४ वायु का अधिमंथ ५ पित्तका अधिमंथ ६ कफका अधिमंथ ७ रक्तकाअधिमंथ ८ सशोथपाक ९ अशोथपाक १० हताधिमंथ ११ वातपर्याय १२ शुष्काक्षिपाक १३ अन्यतोवात १४ अम्लाध्युषित १५ शिरोत्पात १६ शिरोहर्ष १७ और नेत्रोंकी श्यामता १८ नेत्रोंकी निरामता १९ ॥

अथ नेत्रकी वायुका अभिष्पन्द जिसे लौकिक में नेत्रपीड़ा कहै हैं उसकालक्षण ॥

जिसकी आंखों में पीड़ा बहुत होय और रोमांच होै आवें

आंखोंमें खुजालआवै नेत्र कड़ेहोयँ औ मस्तक जलै और अश्रु शीतलपड़ें तब इसे बाताभिष्पन्द नेत्रकारोग कहिये १ ॥

अथ पित्त का अभिष्पन्द जिसे लौकिकमें गर्मीसे नेत्रपीड़ा कहे हैं उसका लक्षण ॥

जिसके नेत्रोंमें दाह बहुतहोय और आंखैं पकिजायँ नेत्रोंमें शीतलता सुहावे और धुवांसा निकले और गर्म आंशूपड़ें और पीले नेत्रहोयँ तो पित्तका अभिष्पन्द नेत्रका रोग जानिये २ ॥

अथ कफ के अभिष्पन्दका लक्षण ॥

जिसकी आंखोंमें गर्मी सुहावे और नेत्र भारीहोयँ उनपर सूजनहोय और आंखोंमें खुजाल आवे और कीचड़ बहुत आवे और नेत्र शीतल बहुतरहैं झड़ें बहुत इसेकफका अभिष्पंद रोग कहिये ३ ॥

अथ रक्ताभिष्पन्द जिसे लौकिकमें रुधिरकी नेत्र पीड़ा कहे हैं उसका लक्षण ॥

जिसके नेत्रके कोये लाल होयँ और जिसके आंशू तांबे के समान पड़ें और नेत्रोंमें दाह होय और शीतलता सुहावे गर्म आंशूपड़ें उसे रुधिरका अभिष्पन्द नेत्र रोग कहिये ४ ॥

अथ वायुके अधिमंथ जिसे लौकिकमें बड़ी नेत्र पीड़ा कहे हैं उसका लक्षण ॥

आंखें दूखतेमें कुपथ्यकरे तब आंखोंमें शूलबहुतचले और ऐसे शूलेचलें मानो फूटीसी जायँ आधाशिर नीचेहोजाय मस्तक जलिउठे आंशू शीतल आवें तब जानिये वायु का अधिमंथ नेत्रका रोग है ५ ॥ अथ पित्तके अधिमंथका लक्षण ॥

जिसकी आंखें दूखने आईहोयँ वह गर्म बस्तु और खटाई आदिकुपथ्यकरै तब इसकी आंखोंमें शूलेबहुतचलें मानोआंखें शूलसे फूटीसीजायँ आंखोंमें दाहहोय और पकिजायँ और शीतलता सुहावे आंशूबहें पीले नेत्रहोयँ तबजानिये पित्तकाअधिमंथ नेत्ररोग है ६ ॥

अथ कफके अधिमन्थका लक्षण ॥

जिसकी आंखोंमें शूले बहुतचलें मानोआंखें फूटीजायँ है और

उसमें गर्म सुहावे और आंखों में सूजन होय खाज आवे इसे कफका अधिमंथ नेत्ररोग कहिये ७॥

अथ रक्तके अधिमंथ का लक्षण॥

जिसकी आंखें दूखती होयँ और रुधिर बिगड़े ऐसा कुपथ्य करै उसकी आंखों में स्ूले बहुत चलैं मानों आंखें बैठीसीजायँ और तांबे के बर्ण सदृश आंशू पड़ें और लाल जिसकी आंखें होयँ और दाह होय पकिजायँ गर्म आंशू पड़ें तब जानिये रक्त का अधिमंथ नेत्ररोग है कफका अधिमंथ ७ दिन में नेत्र को फोड़े वायु का अधिमंथ ६ दिन में नेत्र को फोड़े पित्त का अधिमंथ तत्काल नेत्रों को फोड़ै है ८॥

अथ सशोथपाक नेत्ररोगका लक्षण॥

जिसके नेत्रों में आंशू आवें और खाज होय और उसके नेत्रपके गूलरके फल समान पकिजायँ और सूजन होय और नेत्र लालहोयँ उसे सशोथपाक नेत्रकारोग कहिये ६॥

अथ अशोथपाक नेत्ररोगका लक्षण॥

जिसके नेत्रोंके ऊपर सूजन नहीं होय और खाजहोय और पकेगूलर के सदृश पकिजायँ और नेत्र लालहोयँ उसे अशोथपाक नेत्रका रोग कहिये १०॥

अथ हताधिमंथ नेत्ररोगका लक्षण॥

जिसको नेत्र से दीखे नहीं और उसमें पीड़ा बहुत होय जैसे कमल सूखिजाय ऐसे नेत्र होजायँ उसे हताधिमंथ नेत्र रोग कहिये ११॥

अथ बातपर्याय नेत्ररोगका लक्षण॥

जिसकी भौंह और नेत्रों में बारम्बार पीड़ा बहुत चले उसे बातपर्याय नेत्ररोग कहिये १२॥

अथ शुष्काक्षिपाकरोगका लक्षण॥

जिसके नेत्रमुंदिजायँ और जलें लाल होजायँ और अच्छी

तरह सूझै नहीं और रूखेहोजायँ उसे शुष्काक्षिपाक नेत्र रोग कहिये १३॥ अथ अन्यतोवात नेत्ररोग का लक्षण॥

जिसके कंधे शिर डाढ़ी कान भौंह आंखें इनमें वायुकीपीड़ा बहुत चले उसे अन्यतोबात नेत्ररोग कहिये १४॥

अथ अम्लाध्युषित नेत्ररोग का लक्षण॥

जिसके नेत्र काले और लालहो पकिजायँ और उनमें सूजन होय नेत्रोंमें पानी आवे उसे अम्लाध्युषित नेत्ररोगकहिये १५॥

अथ शिरोत्पात जिसे लौकिक में सबलवायु नेत्रका रोग कहै है तिसका लक्षण॥

जिसकी आंखोंमें पीड़ाहोय अथवा पीड़ा नहीं होय अथवा जिसकी आंखोंकी नसें चारों ओर से तांबेके सदृश लाल होयँ उसे शिरोत्पात नाम सबलवायु नेत्रका रोग कहिये १६॥

अथ शिरोहर्ष नेत्ररोगका लक्षण॥

जो पुरुष अज्ञानतासे सबल वायुका यत्न नहींकरे उसकी आंखों में आंशू बहुतबार २ पड़ाहीकरें और उसे नेत्रोंसे किसी तरह भी दीखे नहीं इसे शिरोहर्ष नेत्ररोग कहिये १७॥

अथ रोगयुक्त नेत्रोंका लक्षण॥

नेत्रों में बहुत पीड़ा होय और ललाई रहै खुजलीहोय और शूल चले तब जानिये इननेत्रोंमें रोग रहैहै गयानहीं १८॥

अथ निरोग नेत्रोंका लक्षण॥

नेत्रमें कुछ भी पीड़ा नहीं रहै और कुछ भी खाज और सूजन होय नहीं और आंशू आदि आवेंनहीं नेत्रोंका अच्छा वर्ण होय और सबवस्तु महीन भी यथार्थ दीखे उसके नेत्रोंकारोग गया जानिये १९ यह परीक्षाहै जबतक नेत्रोंमें रोगरहै तब तक इतनी वस्तु करिये नहीं सो वस्तु लिखते हैं॥ नेत्ररोगवाला सुरमा और काजल आदि लगावे नहीं घृत और कषैली खटाई आदि कुपथ्य और पान आदि गर्म वस्तु गरिष्ठ भोजन

खाय नहीं स्नानकरे नहीं १९ इति समस्त नेत्ररोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ समस्त नेत्ररोगों का यत्न ॥

नेत्रके रोगवालेकोलंघन और लेप और स्वेदकर्म औरशिर के नसकी फस्तखुलावे और जुलाब और आश्चोतन कर्म और इन्हें आदिले और यत्नकरे तो नेत्रों के विकार सबजायँ ॥

अथ आंखैं दुखने आईहोयँ उसका यत्न ॥

जिसकी आंखैं दुखती होयँ उसके ३ दिनतक अंजनादिक कीजे नहीं क्योंकि ३ दिनतक नेत्र कच्चे रहै हैं चौथेदिन पकि जायँ तबनेत्रमें अंजनऔषधकरे तो वे नेत्र तत्काल अच्छेहोयँ १ हेमन्त और शिशिरऋतुमें तो अंजन मध्याह्नमें करिये ग्रीष्म और शरदऋतुमें मध्याह्न के पहिले अंजनकीजे वर्षाऋतुमें बादल नहीं होय तब अंजन कीजे और वसन्तऋतुमें सदाही अंजन कीजे सुरमा आदिका अंजनकरे तो नेत्ररोग कभी भी नहीं होयँ प्रथम तो बाईं आंखि आंजिये पीछे दाहिनी यह संप्रदाय है ॥

अथ आंखैं दूखने आई होयँ उसका लेप ॥

हड़कीछाल। सेंधानोन। गेरू। रसोत ये सब बराबर ले इन्हें जलमें महीनपीस नेत्रों के ऊपर लेपकरे तो सर्वनेत्रों के रोग जायँ १

अथ नेत्रों के अच्छेहोने का दूसरा लेप ॥

लोहे के पात्र में नींबूका रसडाले पीछे उस रसको कुछएक गाढ़ाकरे पीछे नेत्रोंकेऊपरलगावे तो दूखतेनेत्र अच्छेहोयँ २ ॥

अथ नेत्रों की पीड़ाको तत्काल दूर करनेवाला लेप ॥

अफीम १ माशे। फुलाईफिटकरी १ माशे। पठानीलोध १ माशे इन्हें नींबकेरसमेंपीस लोहेकी कराहीमें कुछेकगर्मकरे पीछे नेत्रों के ऊपर लेपकरे तौ नेत्रदुखना तत्काल अच्छाहोय ३ ॥

अथ नेत्रों के अच्छे होनेका और लेप ॥

मुलहठी। गेरू। सेंधानोन। दारुहलदी। रसोत ये सब

बराबर ले इन्हें जलसे महीनपीस नेत्रों के ऊपर लेपकरै तो नेत्र दूखने के सर्वरोग जायँ ४ ॥

अथ नेत्र दूखने आये होयँ तिनके अच्छे होनेकी पोटली ॥

पठानीलोध १ मांशे। फुलाई फिटकरी १ मा०। रसोत १ मा०। मुलहठी १ मा० इन्हें महीनपीस ग्वारकेपट्ठे के रसमें अथवा पोस्तके पानीमें अथवा जलमें १ माशे भरकी पोटली करै पीछे दूखतेहुये नेत्रों के ऊपर बार २ फेरे तो नेत्र अच्छे होयँ ५ ॥

अथ नेत्रों में वायुकरके शूलचलता होय उसके अच्छेहोनेका सेंक ॥

पठानीलोध को महीनपीस कपड़े से छानकर घृतमें भूने पीछे उसको गर्मपानीसे सेंककरै तो नेत्र अच्छेहोयँ ६ ॥

अथ नेत्ररोगके अच्छे करने के वास्ते इसतरह इतने यत्नकरै तो वैद्य ठगावै नहीं सो शार्ङ्गधर वाग्भट्टादिक के मत से लिखते हैं ॥

सेंक १ आश्चोतनकर्म २ पीड़ाबन्धन ३ विड़ालकर्म नाम आंखोंके ऊपर लेपकरना ४ तर्पणनाम नेत्रोंमें घृत रसादिक का डालना ५ पुटपाक ६ अंजन ७ शस्त्रकर्म ८ इसप्रकार नेत्ररोग का यत्नकरिये ॥ अरण्डकेपत्तेकी जड़ बक्कलइन्हें औटाय इनका जलकाढ़ इसजलको बकरीकेदूधमें औटावै वहजल जलिजाय दूधआयरहै तब उसदूधको कुछएक गर्मआंखोंकेऊपर १०० बार तरेड़ादे तो वायुसे दूखतीआंखें अच्छीहोयँ ७ अथवा दूध में थोड़ा सेंधानोन डाल गर्मकर सुहाता २ आंखोंके ऊपर तरेड़ादे तो वायुकीआंखें अच्छीहोयँ ८ अथवा हल्दी। दारुहल्दी। सेंधा-नोन इन्हें दूधमें पकाय इसदूधका आंखोंके ऊपर तरेड़ा दे तो आंखें अच्छीहोयँ ९ ॥

अथ गर्मीसे आंखें दूखने आईहोयँ उसका सेंक ॥

पठानीलोध। मुलहठी इन्हें महीनपीस घृतमें सेंकै पीछे बकरीके दूधमें इन्हेंपकावे फिर इसदूधको आंखोंकेऊपर तरेड़ा

दे तो गर्मीसे दूखती आंखैं अच्छीहोयँ १० और रुधिरके दुष्ट-
पनेसे आंखैंदूखैं उसकाभीयहीयत्नहै ११ अथवात्रिफला। लोध।
मुलहठी। मिश्री। नागरमोथा इन्हें शीतलजलसे महीनपीस
नेत्रोंके ऊपर तरेड़ादे तो रुधिरसे दूखती आंखैं अच्छीहोयँ ॥
अथवा अमलीके पत्तेको कूटकर अफीम और लौंग जवकुटहुई
और फिटकरी आग पर फुलाई हुई इनदवाकी पुटरी बनाकर
जलाप्लुत आंखमें फेरै १२॥

अथ आश्चोतनकी विधि ॥

आश्चोतन कर्मरात्रिमें करिये आंखैंउघारीराखै उनमें ओ-
षधियोंकेरसकी आठबूंदडालिये शीतकालमें गर्मडालिये उष्ण-
कालमें शीतल डालिये वायु की आंखैं दूखैं तो गर्म औषध
डालिये कफ की आंखैं दूखैं तो तीक्ष्ण और गर्म औषध का
रसडालिये १३॥

अथ वायु से आंखैंदूखैं उसका लेप ॥

नींबके पत्तोंका रस पानी डालकाढै उस में पठानीलोध को
पीसगर्मकरै पीछे उसका आंखोंके ऊपरलेपकरै तो वायुके रक्त
पित्तसे दूखती आंखैं अच्छीहोयँ १४॥

अथ रक्त पित्त और वायुसे आंखैंदूखैं उसका यत्न॥

स्त्रीके दूधकी आठबूंद डाले तो गर्मी से दूखती आंखैं
अच्छीहोयँ १५ अथवा वायुसे आंखोंमें सूलेचलें और यत्नसे
आराम नहीं होयँ उसके ललाटकी नसका कुछ रुधिर कढ़ावै
अथवा भौंहके ऊपरदाहदे तो नेत्रोंकेसूलेअच्छेहोयँ १६ अथवा
सहँजनेके पत्तोंकीपीड़ी अथवा नींबकेपत्तोंकीपीड़ी नेत्रोंके ऊपर
बांधे तो कफके नेत्रके सूलेजायँ १७॥

अथ गर्मीसे नेत्रमें सूलेचलैं उसका यत्न ॥

आंवलेको पानीसेपीस उसकी पीड़ीबांधे अथवा बकायनके
पत्तोंकी पीड़ीबांधे तो गर्मीसे उत्पन्न नेत्रोंके सूले जायँ १८
अथवा त्रिफला। लोध इन्हें कांजीके पानीमें पीस पीछे घृतमें

इन्हैं तले फिर इसकी पीड़ी बांधे तो गर्मीसे और कफसे हुये नेत्रोंके रूलेजायँ १९ ॥

अथ नेत्रोंमें रूला और सूजन औरखाजहोय उसका यत्न ॥

सोंठि । नींबकेपत्ते इनमें थोड़ा सैंधानोनमिलाय महीनपीस इनकी पीड़ी नेत्रोंके ऊपर बांधेतो नेत्रोंकी सूजनजाय औररूले ये सबजायँ २० ॥

अथ नेत्रोंकी गुहानीका यत्न ॥

नेत्रोंकी गुहानीको घृतसे सेंक फिर उस गुहानीको शस्त्रसे फोड़ उसके ऊपर हरताल । तगर । सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हैं शहतसेमहीनपीस इनकालेपकरे तौ गुहानीजाय २१ ॥

अथ नेत्ररोगके वास्ते तर्पणाकी विधि ॥

जिसजगह निर्वातस्थान होय तहां सूधा सुवाइये उसके नेत्रोंके ऊपर चौगिर्द उड़दका चून महीनपीस पानीमें उसन उसकी २ अंगुलकी बाटीकीजे फिर उसमें घृत कुछ एक गर्म सुहाता अथवा १०० बार धोया अथवा दूधकीही १०० बार गिनतीकाबोले इतनीबारराखे तो नेत्रोंकेरोग बांकापन बाफणी जातीरहीहोय आंखैं अच्छीतरह उघड़ेंनहीं तिमिर फूलामस्तक पीड़ा वायु रूले येसबरोग तर्पणसे जायँ हैं यह तर्पण बाद्लोंमें उष्णकालमें चिन्तामें श्रममें करिये नहीं इतितर्पणाविधिं २२ ॥

अथ नेत्रोंका अंजन लिखते हैं ॥

शंखकीनाभि । बहेड़ेकीमींगी । हड़कीमींगी । मैनाशिल । पीपल । कूट । खुरासानी बच ये सब बराबरले इन्हैं बकरीकेदूधमें महीनपीस अंजनकरै तो फूला तिमिरमांसकेनेत्रोंमेंवृद्धि नेत्रोंमें कांच आई होय पटल रतौंधी और नेत्रोंके रोगोंको यह अंजन दूरकरैहै—इति चन्द्रोदय गुटिका २३ ॥

अथ लेखनी गुटिका लिखते हैं ॥

कणगच के बीजोंको महीनपीस उसमेंके सूलेके रसकी ब-

हुतसी पुटदे पीछे उसकीगोली करिये फिर उस गोलीकोघिस पानीसे अंजनकरै तौ फूलाको आदिले नेत्रकेसबरोगजायँ २४॥

अथ दन्तवर्त्ति लिखते हैं॥

शूकरका दांत। गौकादांत। बकरीका दांत। घोडेकादांत। गधेका दांत। शंखकी नाभि। अनवेधा मोती। समुद्रका फेन येसब बराबरले इन्हें महीनपीस इनका अंजनकरै तौसबप्रकार के फूलेजायँ २५ अथवा कमलगट्टे। सहँजनेकेबीज। नागकेसर इन्हें महीनपीस अंजनकरे तौ नींदबहुतआतीहो उसे नींद आवे नहीं २६– इति नींदनाशक अंजन॥

अथ रोपणी गुटिका॥

तिलोंकेफूल ८० पीपलकेबीज ६० चमेलीकेफूल ५० मिरच १६ इन्हें महीन पीस गोलीकर राखे पीछे गोलीको पानी में घिस अंजनकरे तौ तिमिरअर्जुनरोग फूला मांसवृद्धि आदिले नेत्रोंकेसबरोगजायँ २७॥ अथ स्नेहकी गुटिका॥

रसोत। दोनोंहलदी। चमेलीकेफूल अथवा नींबकेपत्ते इन्हें महीनपीस गोबरके रससे अंजनकरै तौ रतौंधीजायँ २८ अथवा आंवलेके बीज। बहेडेकेबीज। हडकेबीज इन्हें महीनपीसअंजनकरै तौ नेत्रोंके पानीको और बातरक्तके रोगोंको यहअंजन दूर करै है २९ अथवा नीलाथोथा। सोनामक्खी। सेंधानोन। मिश्री। शंखकीनाभि। मैनशिल। गेरू। समुद्रकाफेन। कालीमिरच ये सब बराबरले इन्हें शहतमें महीनपीस अंजनकरै तौ तिमिरनेत्रफूला कांच इनको यह अंजन दूर करै ३०॥

अथ फूलेके दूर होने का अंजन॥

चीनियाकपूर को बडके दूधमें २ माशेतक अंजनकरै तौ फूलाजाय ३१॥ अथ नींद नाशक अंजन॥

कालीमिरचको महीनपीस घोडेकी लारसे अथवा शहत से अंजनकरै तौ बहुत नींद जातीरहै ३२॥

अथ तन्द्राके दूर होने का अंजन ॥

मूंगा। कालीमिरच। कुटकी। खुरासानीबच। सेंधानोन येसब बराबरले इन्हें बछड़ेके मूत्रमें घिसअंजनकरे तौतंद्राजाय ३३॥

अथ रसांजन गुटिका ॥

रसोत। राल। चमेलीके फूल। मैनशिल। समुद्रफेन। सेंधानोन। गेरू। कालीमिरच ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस शहतसें अंजनकरै तो नेत्रोंकीखाजबाफणी जातीरहीहोय उस को यह अच्छाकरै ३४॥

अथ मोतियाबिन्दु के दूर होनेका अंजन ॥

गिलोयकारस २॥ टं० शहत १ माशे सेंधानोन१माशे इन सबको इकट्ठाकर महीनपीस अंजनकरै तो मोतियाबिंदु और तिमिरधुन्ध आदिले सब रोगजायँ ३५ अथवा साटीकी जड़। स्त्रीके दूधसेंघिस अंजनकरैतो नेत्रोंकी खाजजाय अथवासाटी की जड़को शहतसे घिस अंजनकरै तो नेत्रों से पानी पड़ता बन्द होय अथवा साटीकी जड़को घृतसे रगड़अंजन करै तो फूलाजाय अथवा साटीकीजड़को तेल से घिस अंजन करै तो तिमिरजाय अथवा साटीकी जड़ को कांजी से घिस अंजन करै तो तिमिरजाय ३६॥

अथ नेत्रों में पानीपड़े उसके दूर होनेका अंजन ॥

बबूलके पत्तोंका काढ़ाकर रसकाढ़े पीछे रसको और गाढ़ा करे फिर इसमें शहतमिलाय अंजनकरे तो नेत्रसे पानीपड़ना बन्दहोय ३७ निर्मलीके फलको पानीमेंघिसअंजनकरे तो नेत्र का पानी बन्दहोय ३८॥

अथ नेत्रके निर्मलकरनेका अंजन ॥

निर्मलीके फलको शहतमें घिस इसमें थोड़ाकपूर मिलाय अंजनकरे तो नेत्र निर्मल होयँ ३९॥

अथ जिसके नेत्रमें मोतियाविन्दु या काचआदि से सूझै नहीं उसके अच्छे होनेका अंजन ॥

काले सांपके मांसका घृत और शंखकी नाभि । निर्मली इन्हें महीनपीस नेत्रोंमें अंजनकरे तो मोतियाबिंदु आदिरोग जायँ और इससे दीखनेलगै ४० अथवा मुर्गेके अंडेका छिलका। मैनशिल। काच। शंखकी नाभि। चन्दन। सेंधानोन ये सब बराबरले इन्हें महीन पीस अंजनकरै तो मोतियाबिंदु फूली आदि नेत्रकेरोग जायँ ४१ ॥

अथ नेत्र के सबरोग दूरहोनेका अंजन ॥

कालीमिरच २ माशे पीपल २ माशे समुद्रकाफेन २ माशे सेंधानोन २ माशे सुरमा ३६ माशे इन्हें महीनपीस चित्रानक्षत्र के दिन इसका अंजनकरे तो फूलीखाज काचआदि सब नेत्रके रोगजायँ ४२ अथवा खापरेको महीनपीस उसको जलमेंडुबोय दे पीछे उसका पानीलेताजाय उसेजुदारक्खे बारबारकापानीले और नीचेरहा जो खापरेका चूर्ण उसेले नहीं और उसखापरेके पानीको जुदापात्रमें सुखायदे उसकी पापड़ी करले पीछे उस पापड़ी को त्रिफलेके रसकी ३ पुटदे पीछे इस पापड़ीका दशवां भाग कपूरमिलावे फिर इसको महीनपीस अंजनकरे तो नेत्रों के सबरोग जायँ ४३ ॥

अथ नेत्रके सब रोग दूर होनेका और यत्न ॥

सुरमेको अग्निसे गरमकर त्रिफलेके रसमें ७ बार डुबोवे पीछे स्त्रीके दूधमें इसीतरह ७ बार डुबोवे पीछे गोमूत्रमें इसी तरह बारबार गरमकर सुरमेको डुबोवे फिरस्त्रीके दूधमें ५ बार डुबोवे पीछे इसको महीनपीस अंजनकरे तो नेत्रके सर्व रोग जायँ ४४ ॥ अथ नेत्रकी दृष्टि करनेवाली शलाका ॥

शीशेको अग्निमें गलाय २ त्रिफलेके रसमें १०० बारडुबोवे पीछे इसीतरह जलभांगरे के रसमें ५० बारडुबोवे पीछे इसी

तरह सोंठिके रसमें ५० बारडुबोवे पीछे इसीतरह घृतमें ५० बारडुबोवे पीछे गोमूत्रमें इसीतरह २५ बारडुबोवे फिरइसीतरह शहतमें २५ बार डुबोवे फिर बकरीके दूधमें २५ बारडुबोवेफिर इस शीशेकी शलाकाकरे और शलाकाको नेत्रमेंफेरे तोनेत्रके सब प्रकारके रोगजायँ ४५ ॥

अथ नयनामृतका अंजन ॥

शोधे शीशेको गलाय उसी की बराबर उसमें पारा मिलाय पीछे सुरमा और शीशा पारेकी बराबर मिलाय इन सब का दशवां भाग भीमसेनी कपूरडाले पीछे इन सबको महीनपीस अंजनकरै तो नेत्र के सब रोग जायँ ४६ ॥

अथ सर्प आदिके विषके दूर होनेका अंजन ॥

जमालगोटेकी मींगीले उसमें नींबूके रसकी २१ पुट दे पीछे इसकी गोलीकीजे फिर इसगोलीको मनुष्यकी लारसेंघिसनेत्र में अंजनकरै तो सर्पआदिके विषदूरहोयँ वहमनुष्य मराभी जीवै ४७ ये सब अंजन शार्ङ्गधरमें लिखे हैं ॥

अथ आंखि दूखतीहोय उसके अच्छेहोनेका शाहहजूरी का बताया नुस्खा ॥

अत्तारकी दवा जंगीहड़ ये दोनों औषधि पानीमें घिसआंखों के ऊपर चौगिर्द लेपकरै तो वायु पित्त कफ इनतीनों आज़ारों से किसी विकार से आंखि दूखनीआईहोय तो शीघ्र आराम होय यह नुस्खा अज़मायाहुआ है ४८ ॥

अथवाग्भट्टके मतसे मोतिया विन्दुका यत्न ॥

कच्चे मोतियाबिन्दुका जाला शलाकेसे उतारिये नहीं पक्के का जाला उतार लीजे ४९ ॥

अथपकेमोतियाबिन्दुका लक्षण ॥

नेत्र के तिलके ऊपर दही या मट्ठे समान बूंद आय जाय और उसकोकुछभी दीखै नहीं और उस नेत्रमेंपीडादिककुछभी नहीं होय तब उस नेत्रकाशलाकादिक से जाला उतार और

इतने मनुष्यों का जाला उतारिये नहीं पीनस रोगवाले का कान और नेत्रमें जिसके शूल चले और श्रावण कार्त्तिकऔर चैत्र के महीने में जाला उतारिये नहीं और साधारण काल होय तब जुलाबदे शरीर को शुद्धकरै भोजन कर अच्छेनिर्मल स्थान में बैठावै जहां पवनादिक नहीं होयँ मध्याह्नके पहिले नेत्र के रोग को दूरकरनेवाले प्रवीण वैद्य के निकट नेत्र का जाला शलाका से लिवावै वैद्य है सो रोगी को पल्थी मार बैठावै और रोगीकेपीछे चतुरमनुष्यको बैठावै वहमनुष्यदोनों हाथोंसे रोगी को पकड़ै हलने दे नहीं इसतरह उसको बैठावे पीछे उसकी आंखिमें वैद्य शलाका डाले अत्यन्त चतुरता से उसकी आंखि में शलाका को फेरै शलाका से नेत्र के प्रान्त भाग में जाले को फोड़ सब नेत्रके जाले को दूरकर उसजाले में से नेत्रके तिलके ऊपरकी वहविकारकी बूंदढलपड़ै तबइस मनुष्यको सब वर्ण यथार्थ दीखैं शलाका के फेरनेसे पहलेनेत्र को मुँहकी बाफ से फूंकदे प्रस्वेद युक्त करले और वैद्य अपने अंगूठेसे उसरोगीके नेत्रको मसलकोमल करले पीछे शलाका सेजाला ले वैद्य भी अपना हाथ और तरह हलनेदे नहीं इस विधिसे नेत्रकाजालाले पीछे रोगीको अच्छी बातोंसेप्रसन्नकर फिरउसकोसुलायदे पीछेउसरोगीकीआंखकेऊपर घृतकाफीहा बांधै और उसरोगीको सूधासुलावै ऐसेस्थानमेंजहांपवनचक-चौंधआदि आवैनहीं और रोगीका शिरआदि वा शरीरहिलने नदे और रोगी को छींक खांसी डकारथूकना बहुत पानी का पीना दातून स्नानखेद आदि करनेदे नहीं और उस रोगीको अधोमुख सोने दे नहीं अत्यन्त हलकाभोजन करावे घृतादिक गरिष्ठ वस्तुखाने दे नहीं इसविधिसे ७ दिन करै पीछेकुछएक घृतडालपतला हलका अन्नका हरीरा खवावै पीछे वायुको दूर करनेवाली मिश्री को आदिले खवावै इसीतरह १ मंडल तक

रक्खै कुछ कुपथ्यकरनेदेनहीं पवन तेज औरमहीनवस्तु आदि को देखैनहीं और नेत्रमें शीतलता होय ऐसी दूबआदि वस्तु देखनेदे तो मोतियाबिन्दु आदिले नेत्रकेसबरोगजायँपछिइस के शीतल चश्मा लगावे तो यहरोग कभी इसके होय नहींयह मोतियाबिन्दुका यत्न वागभट्टमें लिखाहै ५० ॥

अथ पांडुरोगके दूर करनेवाला अंजन ॥

हींगको दड़घलके रसमें घिस नेत्रमें अंजनकरैतोपांडुरोग पीलियाजाय ५१ ॥

अथनारायणांजन ॥

तुलसीओर तुलसीकेपत्तोंकारस वरावरले दोनोंको कांसेके पात्रमें डाल दोनों की वरावर स्त्री का दूधडालै पीछे इनतीनों कोगजवेलिकेघोटेंसे २ पहररगड़े फिरकांसेहीके पात्रमें तांवेके घोटेसे दोपहररगड़े पछिइसका अंजनकरे तो नेत्रकाशूल और नेत्रकापाक तत्कालजाय ५२ ॥

अथनयनामृतगुटिका ॥

सोंठि । हडकीछाल । कुलत्थ । खापरा । फिटकरी । माजूफल ये सब बरावरले और भीमसेनी कपूर । कस्तूरी । अनबेधेमोती ये एक औषधके तोलसे आधी २ लेपीछे इन सबको खरल में महीन पीस नींबके रसमें ५ दिनखरलकर पीछे इसकी गोली कर गोली को जलमें घिसि अंजन करे तो तिमिर जाय और इस गोली को स्त्रीके दूध से घिसि अंजन करे तो फूला पटल जाय और शहत से अंजन करे तो नेत्र से जल गिरना बन्द होय गोमूत्र से अंजन करे तो रतौंधी जाय और केले के रस से अंजन करे तो नेत्र की मांसवृद्धि जाय इति नयनामृतबटी ५३ ॥

अथ नेत्रोंकी वाफणी जातीरहीहोय उनके आनेका अंजन ॥

आंधीझाडा अर्थात् अपामार्ग के पत्तों को गोमूत्र में पीस पछि उससे आधा खापरा ले फिर इन दोनोंको खरलमें पीसे

फिर इन दोनों के बीच जस्त का महीन पत्र कर घरे कपड़ मिट्टी कर सुखाय अरने उपले में गजपुट को फूंकदे फिर स्वांग शीतल होने पर काढ़े फिर महीन पीस अंजन करे तो नेत्रकी बाफणी आवे ५४ ॥

अथ शीतला के फूले दूरहोने का अंजन ॥

गधे की दाढ़ को महीन पीस अंजन करे तो शीतला के फूले जायँ ५५ ॥ अथसबलवायु के दूरहोनेका अंजन ॥

आंवलासार गन्धक से मारे तांबे को महीन पीस अंजन करे तो सबल वायु पटल आदि ले नेत्र के सब रोगजायँ ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें हैं ५६ ॥

अथफूला धुन्ध इनके दूर होने का यत्न ॥

चोखा नीलाथोथा ५ टं० फुलाई फिटकड़ी ५ टं० भिगोये पीपल के बीज ५ टं० मिश्री ५ माशे इन्हें महीनपीस कजली कर नेत्र में अंजन करे तो फूला ढलका धुन्ध ये सबजायँ ५७

अथ चंद्रोदय गुटिका ॥

शंखकीनाभि। बहेड़ेकी मींगी। हड़की छाल। मैनशिल। पीपल। मिरच। कूट। खुरासानीबच येसबऔषधबराबरले इन्हें बकरीके दूधमें महीन पीस गोली कर फिर गोली को घिसि अंजन करे तो तिमिर नेत्र के मांसकीवृद्धि पटल कांच रतौंधी फूला ये सब दूर होयँ ५८ ॥

अथ चन्द्रप्रभा गुटिका ॥

हल्दी। नीबकेपत्ते। पीपल। मिरच। वायविडंग। नागरमोथा। हड़कीछाल ये सब बराबरले इन्हें महीन पीस बकरी के मूत्र से ३ दिनखरल करे फिर इसकी गोली कर छाया में सुखाय फिर इस गोलीको गोमूत्र से घिसि अंजनकरे तो तिमिर को दूर करै जल से घिसि अंजनकरे तो नेत्र के कांचको दूर करे शहत से घिसि अंजन करे तो पटल को दूरकरे स्त्री

के दूधसे घिसि अंजन करे तो फूलेको दूर करे इति चन्द्रप्रभा वर्त्ति ५९ ॥

अथ द्वादशामृत हरीतकी ॥

हड़कीछाल १ भाग बहेड़ेकीछाल २ भा० आंवला ४ भा० शतावरि २ टकेभर मुलहठी २ टं० तज २ टं० सेंधानोन ५ टं० पीपल ५ टं० इन सब की बराबर मिश्री ले इन्हें महीन पीस २ टं० शहत और घृतकेसाथ ४९ दिन नित्यखाय तो तिमिर पटलकांचरतौंधी फूला नेत्रसेजलआवे सबलबायुआदि सब नेत्रके रोगों को यह द्वादशामृत हरीतकी दूरकरैहै ६० ॥

अथ त्रिफलादि घृतम् ॥

त्रिफला का रस १ सेर जलभांगरेका रस १ सेर अडूसेका रस १ सेर शतावरि का रस १ सेर बकरी का दूध १ सेर गिलोय का रस १ सेर आंवले का रस १ सेर कमलगट्टे। मुलहठी। त्रिफला। पीपल। दाख। मिश्री। कटेली इनसबका रस ॥ सेरले इनसबमें गौकाघृतपक्का २ सेरडाल मधुरी आंच सेपकावे ये सबजलिजायँ घृतमात्र आयरहै तबइसघृतको २टके भर नित्यखाय तो नेत्रका तिमिरकांच फूला सबलवायु आदि सबरोग जायँ इति महा त्रिफलादि घृतम् ६१ ॥

अथ गरमी के विकार दूर होनेका अंजन और लेपकी विधि ॥

आंखदूखे या सूजनहोय तो आंखमें अंजन वा लेप करनेसे आरामहोय शोधा सुपेदा १० माशे उसके शोधनेकीविधि सुपेदाको महीनपीस चीनी के बासनमें बहुतपानीसे धोवे जब सुपेदा नीचे बैठजाय तब उसकापानी काढ़डाले इसतरह तीन बार करलीजे अत्तारकी अंजरूत औषध ३ माशेले उसके शोधनेकी विधि अंजरूतको महीनपीस फिर जिस स्त्रीके बेटीहोय उसका दूधले और इसमें इतनामिलावे जो ८पहरमें सूखिजाय इसतरह ५ पुटदे फिर कतीरा १ माशे भीमसेनी कपूर ४ रत्ती अत्तारकी निसोत औषध २ माशे सुपेदगोंद १ माशे तोल

माफिक सब औषध इकट्ठाकर गुलाबके जलमें खरलकरे फिर एकजीवकर बेरप्रमाणगोलीबांधे पीछे गुलाबकेजलमें अथवा सादेजलमें घिसि अंजनकरे अथवा लेपकरै तो गरमीके सब विकार दूरहोयँ ६२ इतिगरमीके अंजन लेपकी विधि और नेत्र के सब रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण संख्या नाम यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ कानके रोग सुश्रुतमें २८ लिखे हैं सो लिखते हैं॥

कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिरनाम बधिरपना ३ क्ष्वेड ४ कर्णस्राव ५ कर्णकंडू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण९ चोटलगने से कर्णमें व्रणहोय १० दोषोंसे कर्णमें व्रणहोय ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण १३ वायका कर्णशोथ १४ पित्तकाकर्ण शोथ १५ कफका कर्णशोथ १६ रुधिरका कर्णशोथ १७ वायु का कर्णशोथ १८ पित्तकाकर्णशोथ १९ कफकाकर्णशोथ २० रुधिरका कर्णशोथ २१ वायुका कर्णअर्बुद २२ पित्तकाकर्ण अर्बुद २३ कफकाकर्ण अर्बुद २४ रक्तकाकर्णअर्बुद २५ मांसकाकर्ण अर्बुद २६ मेदका कर्णअर्बुद २७ नसोंका कर्णअर्बुद २८ चरक में कर्णपालीके विषय ४ रोगअधिककहेहैं उत्पात १ उन्मंथक२ दुःखवर्द्धन ३ परिलेहिन ४ ॥

अथ कर्ण शूलका लक्षण ॥

जिसके कानमें वायु घसिजाय और वह कोपको प्राप्तहोय तब कानमें बहुत शूल चलावे उसको कर्णशूल कहिये १॥

अथ कर्णनादका लक्षण॥

जिसके कानके छिद्रमें वायुघसिजाय तब उसपुरुषके कानमें भेरीमृदंगशंखकोआदिलेअनेकशब्दहोयंउसेकर्णनादकहिये२॥

अथ बधिर का लक्षण॥

जिसके कर्णके छिद्रमें वायु कफयुक्त प्रवेशकरिउसमेंबैठरहे तो मनुष्य को बधिरा करदे ३ ॥

अथ बधिरका असाध्यलक्षण ॥

बालक बूढ़ा और बहुत दिनका बधिराहीहोय सो अच्छा होयनहीं ॥

अथ क्ष्वेडकर्ण रोगकालक्षण ॥

जिसके कानमें वायु पित्त कफ घसिजाय औरउसकेकानमें बांसके फाड़ने कासा शब्द होय उसे कर्णक्ष्वेडरोगकहिये ४ ॥

अथ कर्णश्रावका लक्षण ॥

जिसके शिरमेंचोटलगीहोय अथवा जिसकेकानमेंजलपड़ा होय उसके कानसेराधबहाकरे उसे कर्णश्राव रोगकहिये ५ ॥

अथ कर्णकंडूका लक्षण ॥

जिसके कानमें कफसंयुक्त वायु पैठे उस कानमें खाजकरे उसे कर्णकंडू कहिये ६ ॥

अथ कर्णगूथका लक्षण ॥

जिसके कानमेंपित्तकी गरमी घसिजाय कफको शोषिले उसके कानमें मलबहुतश्रवे उसे कर्णगूथकहिये ७ ॥

अथ कर्णप्रतिनादका लक्षण ॥

वह कर्णगूथ पतला पड़िजाय पीछे वहनाक में आय प्राप्त होय उसे कर्णप्रतिनाद कहिये ८ ॥

अथकृमिकर्णकालक्षण ॥

जिसके कानमें बगपतङ्ग कनखजूरा आदि कोई जानवर घसिजाय उसके कानमें फड़फड़ावेऔर उस मनुष्य को बहुत व्याकुल करदे पीड़ाकरे और पीड़ाआदिसबजातीरहें उसेकृमि कर्णरोगकहिये ९ ॥

अथकर्णविद्रधिका लक्षण॥

यह दोप्रकारकी है एकतो कानमें चोटलगिजानेसे व्रणपड़ जायऔर एकदोषसे कानमें व्रणपड़जाय पीछेउसकानसेरुधिर रादआदि सबनिकले और कानमें दाह आदिसबरहें उसेकर्ण विद्रधिकहिये १० ॥

अथ कर्णपाककालक्षण॥

जिसका कानपित्त करके पकिजाय और कानमें काढ़ेकेस-दृश राद निकले उसे कर्णपाककहिये ११॥

अथ पूतिकर्णका लक्षण॥

जिसकेकानमें व्रणपड़े पीछेउसकेकानसे जलगिराकरै और उसमेंरादभीपड़े उसे पूतिकर्णकहिये १२॥

अथवा वायुपित्तकफ रुधिर से जो होय वह उनकेलक्षणसे जानिये १३ और वायु पित्तकफरुधिरके प्रभावसे मशेके रूप कानमें अर्शपैदाहोयहै उसको वातादिक से जानलीजिये १४ और कानमेंवायुपित्त कफ रुधिर मांसमेदनसे ये सातोंही एक अर्बुद नामरोग गांठि रूपहोयहै उसेभी करैहैं उसकाभीलक्षण अर्बुद रोगमें कहाहै सो जानलीजिये सबकानमें २८ रोगहैं चरकके मतसे कानके नीचे ४ रोगहैं वायुकारोग १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४॥

अथ कर्णपालीमें ५ रोगहैं तिनका और परिपोटककालक्षण॥

कानकीलोल कोमलबहुतहोयहै उसेबढ़ायाकरै तबकानकी लोलसूजजाय औरउसमेंपीड़ाहोआवै उसेपरिपोटककहिये १॥

अथ उत्पातकालक्षण॥

कानकी लोलमेंभारीगहना पहिरै उसके संयोगसे अथवा किसीतरहलोलके खींचनेसेऊपर सूजन होआवै दाहऔरपीड़ा होय उसे उत्पातरोगकहिये २॥

अथउन्मन्थककालक्षण॥

जो कानकी पालीनाम लोलको हठसे बढ़ायाचाहैतबवहां वायु कोपकरकफसंयुक्त सूजनकोकरै और वहांखाजहोय उसे उन्मन्थक कहिये ३॥

अथदुःखवर्द्धनकालक्षण॥

जिसके कानकी लोल दुःखसे बींधीगई होय औरवहांदाह

और पीड़ाहोय और पकिजाय उसे दुःखवर्द्धन कहिये ४ ॥

अथपरिलेहिनकालक्षण ॥

जिसकी कानकी लौलके ऊपर कफरुधिरके कोपसे सरसों सदृश फुंसियां होयँ और उसजगह खाज चले और दाहहोय और पकिजाय उसेपरिलेहिन कहिये ५ ॥

अथ कर्णरोगका यत्न ॥

अदरखकारस शहत सेंधानोन तेल ये सब इकट्ठाकरइन्हें गरमकरकानमेंडाले तोकानकीपीड़ा कर्णनाद और बधिरपना और कर्णक्ष्वेड ये सबरोग दूरहोयँ १ अथवा लहसुनकारस । अदरखकारस । वरनाकी जड़कारस । केलेकारस इन सबको इकट्ठा गरमकरि कानमेंडाले तो कानकी पीड़ा आदि कान के रोगजायँ २ ॥

अथ कान के शूल दूरहोनेकायत्न ॥

आकके कोमलपत्तोंको खटाईसे महीनपीस इसकारसकाढ़े इसमें तेल और नोन डालै पीछे इसको थूहरकी लकड़ीमेंभरै फिर उसलकड़ीमें कपड़मिट्टीकरउसको पुटपाककर उसका रस काढ़े पीछे इसरसको थोड़ागरमकर कानमेंडालैतो कानकाशूल जाय ३ अथवाआकके पत्तोंमें घृतलगाय अग्निसे तपायउनका रस काढ़े पीछे इसरसको कुछ गरमकर कानमेंडाले तो शूल जाय ४ अथवा बकरेके मूत्रमें सेंधानोनडाल थोड़ा गरमकर कानमेंडालै तो कानकाशूलजाय ५ अथवा अरलूकीजड़केरस में मधुरी आंचसे तेलकोपकावै जब वहरस जलिजाय तेलमात्र आयरहै तब इसतेलको कानमें डालै तो त्रिदोषका उपजाभी कर्णशूलजाय ६ ॥

अथ वधिरपनेको आदिले सब कानके रोगोंके दूर होनेका तेल ॥

कडुवेतेलमें सोंठि । मिरच । पीपल । कूट । पीपलामूल । अपामार्गका खार । जवाखार । बेलकीजड़का रस । गोमूत्र ये सब मधुरी आंचसे पकावै पीछे जब ये सबजलिजायँ तेलमात्र

रहैतब इस तेलको कानमेंडाले तौ बधिरपना कानमेंशब्दहोय कानबहताहोय इनसबरोगोंको यहदूरकरै ७ इतिविल्वतैलम्॥ अथवाबेलके कच्चेफलोंकारस काढ़ि उसमेंसज्जीकाचूर्णडाल उसकोपीवैतो कानकीपीड़ा बधिरपनादाहइनसबको दूरकरै ८ ॥

अथ कानसे राद बहती होय उसके अच्छे होनेका तेल ॥

आंवलेकेपत्तोंकारस । जासुनके पत्तोंकारस । महुआकेपत्तों का रस । बड़केबक्कलकारस । चमेलीके पत्तोंकारस । इसमेंतेल डाल मधुरी आंचसे पकावे येसब जलजायँ तेलमात्र रहजाय तब इसतेलको कानमेंडालैतो कानबहताअच्छाहोय ९ अथवा रसौंतको स्त्रीकेदूधमें घिसि शहतमिलाय कानमें डालै तोकान बहताबन्दहोय १० अथवा कूट। हींग।बच। दारुहल्दी। सौंफ सोंठि सेंधानोन इन्हेंमहीनपीस बकरेकेमूत्रमें घोलिइसमें तेल डाल मधुरी आंचसे पकावै जब येसबजलिजायँ तेलमात्रआय रहै तब इसतेलको कानमें डालै तोरादबहती बन्दहोय ११ ॥

अथ कानमें व्रण पड़िगया होय उसके दूरहोनेका तेल ॥

मोटीसीपके चूर्णको कडुवेतेलमें पकावे पीछे वहतेलकानमें डालैतो कानकेव्रणअच्छेहोयँ १२ अथवा आंवलासारगन्धक १ टं० भर मैनशिल १ टं० हल्दी १ टं० कडुवा तेल ८ टं० धतूरेके पत्तोंकारस इनसबकोबराबरले इन्हें महीनपीस मधुरी आंचसे पकावै जब सब जलजायँ तेलमात्ररहै तब इसतेलको कानमें डाले तो कानके व्रणअच्छेहोयँ १३ ॥

अथकानमें क्रमि पड़ि गये होयँ उनके दूरकरनेकायत्न ॥

क्रमिके दूरहोने का यत्न जो पीछे लिखाहै उससे क्रमिरोग जाय १४ अथवाबैंगनकी जड़के रसका धुआं सरसोंके तेलके साथ कानमें दे तो कान के क्रमिजायँ १५ औरकानकी सूजन और कानके अर्बुदरोगका यत्न पीछे लिखाहै उससे ये जायँ ये सबयत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं ॥

अथ बधिरपनेके दूरकरने का तेल॥

मूलीकी जड़कारस कडुआतेल शहत येसब बराबरले इन्हें कुछगरमकर कानमेंडालेतो बधिरपनाजाय १६ अथवा मिश्री। इलायची इन्हें महीनपीसकानमेंडाले तोबधिरपनाजाय १७॥

अथकानकी पीड़ाके दूरहोने का तेल॥

सोंठि। पीपल। सैंधानोन। कूट। हींग। बच। लहसुन। तिल कातेल इनको आकके पत्तोंके रसमें मधुरी आंचसे पकावै ये रस आदि सब जलिजायँ तेलमात्र रहै तबइसतेलको कानमें डालै तोकानकी पीड़ादूरहोय १८॥

अथ कानके सब रोगों के दूरहोने का तेल॥

गाढ़ी और मोटी सीपों का चूर्ण। पञ्चाख। हींग। तूंबर। सेंधानोन। कूट। कपासकी मींगी इन्हें पीस इनका काढ़ाकर इसमें कडुआतेल ७ टकाभर डाले और हुलहुलका रस इन सबकीबराबर इसमेंडाले पीछे इसको मधुरीआंचसे पकावै जब रसआदि सबजलिजायँ तेलमात्र आयरहै तब इसतेलकोकान में डाले तो कानकेब्रण रादबधिरपना कानमें शब्दहोय इनसब रोगों को यह दूरकरै १९ अथवा कूकर मांगरेकारस पावभर हरफारेवड़ीका रस ४ पैसेभर लहसनका रस ४ पैसेभर सौंफ २॥ टं० खुरासानीबच २॥ टं० कूट २॥ टं० सौंठि २॥ टं० मिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० बकरीकादूध आधसेर कडुआतेल ५ टके भर येसब इकट्ठाकर मधुरीआंचसे पकावै जबसबजलिजायँ तेलमात्र आयरहै तब इसतेलको कानमें डालै तो बधिरपना कानकी राद और कानके सबरोगजायँ २०॥

अथ कानमें राद बहतीहोय उसके अच्छे होनेकी औषध॥

समुद्रकाफेन। सुपारीकीराख। कत्था इन्हें महीनपीस कान में डालै तो कानकाबहना बन्दहोय २१ येसबयत्न वैद्यरहस्य में हैं॥

अथ कानकी लोल पकिगई होय उसके अच्छेहोने का यत्न ॥

शतावरि। असगंध। दूध। अरंडकीजड़। और कालेतिलोंका तेल इन्हैं मधुरी आंचसे पकावै येसब जलिजायँ तेलमात्रआय रहै तब इस तेलको कानकी लोलमें लगावे तो लोलकी पीड़ा आदिसब मिटैं और कानकी लोलबढ़ै २२॥

अथ परिपोटक अच्छे होनेका तेल ॥

जीवन्ती गणमें तेलपचाय मर्दनकरै तो परिपोटक अच्छे होयँ २३ जोंकोंके लगानेसे उत्पात रोगजाय २४ सुरमा। कलिहारी। बावची। कंकपक्षीकामांस इनमें मधुरीआंचसे तिलोंका तेलपकावै जब रसजलिजाय तेलमात्र आयरहै तबइस तेलको कानकी लोल में लगावे तो उन्मंथक जाय २५ अथवा जामुनके पत्ते। आमके पत्ते। बड़केपत्ते इनका काढ़ाकर इस काढ़े में तेलपकावै फिर इसतेलका मर्दनकरै तो दुःखवर्द्धन रोगजाय २६ अथवा गोबरके उपलेसेसेंके अथवा दूधसे वा गोमूत्रसे कपूरका लेपकरै तो कानकी लोल अच्छीहोय २७ ये सबयत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं इतिकर्णरोगोंकी उत्पत्तिलक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ नासिकारोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संख्या और नाम सहितलिखते हैं ॥

नासिकामें ३४ रोगहैं पीनस १ पूतिनास २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ बहुत छींकआवे ५ छींक आवेनहीं ६ नाकजला करै ७ प्रतिनाह ८ परिश्राव ९ नासाशोष १० प्रतिश्याय ११ चारप्रकारका १५ नासार्बुद सातप्रकारका २२ नासार्श चार प्रकारका २६ नाकशोथ चारप्रकारका ३० नासिकामें रक्तपित्त चार प्रकारका ३४ ॥

अथ पीनसका लक्षण ॥

जिसकी नाकमें कफ करके श्वास अच्छीतरह नहीं आवे और नाकरुकिजाय और सूखीरहै और उसमेंधुआंनिकले और

जिसकी नाकमें सुगन्ध दुर्गन्ध की बास आवे नहीं उसेपीनस कहिये १ ॥

अथ पूतिनासका लक्षण ॥

जिस के गला तालूके मूल की वायु है सो पित्त कफ को दूषित करै और उसके मुँहमें और नासिकामें वह वायु श्वास के मार्ग दुर्गन्ध को काढ़े उसे पूतिनास रोगकहिये २ ॥

अथ नासापाक का लक्षण ॥

जिसकी नाकमें पित्त दूषित होय और नाकमेंफुन्सी करे और उसकोपकावे उसमेंसे रादकाढ़े उसे नासापाककहिये ३॥

अथ पूयरक्त का लक्षण ॥

जिसके ललाटमें किसीतरह से चोट लगै तब उसकेदोष कोपको प्राप्त होयँ और नासिकाके द्वारा राद को लिये रुधिर को निकालैं उसे पूयरक्त रोग कहिये ४ ॥

अथ क्षवथुनाम छींक बहुतआवे उसका लक्षण ॥

जिसकी नाक में पवन दुष्ट होकर नाक के मर्म्मस्थानोंको दूषित करे फिर वह कफसे मिले तब वह बहुत बार छींक को प्रकट करे उसे क्षवथु नाम रोग कहिये ५ ॥

अथ क्षवथुका और लक्षण ॥

जो पुरुष नाक में मिरच को आदि ले औषध डालै अथवा सूर्य की ओर देखे अथवा नाक में सूत तृण आदि डालै तब उसकीनाकमेंछींक बहुतआवें इसेभी क्षवथुनाम रोगकहियेद६॥

अथ क्षवथु भ्रंशका लक्षण ॥

जिसकी नाकमें पित्त करके कफ दग्ध होजाय और उस पुरुष को छींक आवे नहीं इसे क्षवथुभ्रंश रोगकहिये ७॥

अथ दीप्त रोग का लक्षण ॥

जिसकी नाकमें पित्त कुपित्तहोकर नाकमें दाह बहुत करे और नाकमें धुआं सा निकले और उस पवन करके नाकबले उसेदीप्तरोगकहिये ८॥

अथ प्रतिनाहका लक्षण ॥

वायु करके कफ संयुक्त है सो नाकके स्वर को आनेदे नहीं उसे प्रतिनाह रोगकहिये ६ ॥

अथ परिश्राव का लक्षण ॥

जिसकी नाकके स्वर में गाढ़ा । पीला । सुपेदाईको लिये मल श्रवे उसे परिश्राव कहिये १० ॥

अथ नासासंशोष का लक्षण ॥

जिसकी नाक में वायु । पित्त । कफ ये तीनों दुष्टहोयँ और वह महाकष्ट से सांस ले उसे नासासंशोष कहिये ११ ॥

अथ प्रतिश्यायका लक्षण ॥

जिसके पीनस का रोग होय और वह आलस्यकर उसका यत्न करै नहीं तब वह पीनसबढ़ै फिरवह कोप को प्राप्त होय और स्थानों में जाय प्रकटै तब उसके बहुत नाम नजलेआदि पड़ें और वह प्रतिश्यायनामपीनसके अनेकरोगोंकोकरैहै १२॥

अथ पीनसके पूर्वरूप का लक्षण ॥

जिसे छींक आवै और मस्तक भारीरहै अंगजकड़बन्द होजाय और रोमांच को आदिले और उपद्रव होयँ तबजानिये कि इसके पीनस का रोग होगा १३ ॥

अथ वायु के पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाकका मार्ग रुकजाय और जिस्से थोड़ा पतला गरम पानी गिरा करै और गला तालू ओठ ये सूखें और उस की कनपटीदूखें और मुँहका बोल बोंबों पड़िजाय उसे बायुकी पीनस कहिये १४ ॥

अथ पित्तकी पीनसका लक्षण ॥

जिसकी नाक में दाह होय पीलाई लिये गरम २ पानी गिरै और वह मनुष्य कृश होजाय और उसका शरीर गरम रहै और जिसकी नाकसें अग्नि रूप धुआं निकले और

वह वमन भी करै उसे पित्तकी पीनस कहिये १५ ॥

अथ कफकी पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाकमें गाढ़ा सुपेद कफबहुत निकले और उसका शरीर सुपेद होजाय और आंखोंके ऊपर सूजन होय मस्तक भारी रहै और गला तालू ओठ शिर इनमें खाज बहुत होय तब जानिये इसके कफकी पीनसहै १६ ॥

अथ सन्निपातकी पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पीछे कहेहुये सब लक्षण मिलें और वह पीनस बारम्बारहोय और यत्न करने से जाय नहीं और पके भी नहीं उसे सन्निपातकी पीनसजानिये सो असाध्यहै १७ ॥

अथ दुष्ट पीनसका लक्षण ॥

बारम्बार जिसकी नाक झराकरै और सूखजाय और नाक में अच्छीतरह श्वास आवै नहीं नाक रुकजाय और कभी खुलभी जाय और जिसमें सुगन्ध दुर्गन्धका ज्ञानरहैनहीं उसे दुष्टपीनस कहिये १८ ॥

अथ रुधिरसे उपजी पीनसका लक्षण ॥

जिसकी छातीमें चोट लगीहोय उसके रुधिर की पीनस होजाय नाकमें रुधिरपड़ै और उसके पित्तके जो लक्षण पीछे कहे हैं सो होयँ और उसकी आंखैंलाल होयँ उसे रुधिर की पीनस कहिये १९ ॥

अथ पीनसका असाध्य लक्षण ॥

आलस्य करके पीनसका यत्नकरे नहीं तो सब पीनस असाध्य होजायँ २० ॥

अथ पीनसवाले की नाकमें कृमिपड़िजायँ उसका लक्षण ॥

जिसके कान में पीनसकरके सफ़ेद और चिकने छोटे २ कृमि पड़िजायँ और दीखैं नहीं उसके शिरका रोग हो जाय तथा और २ भी रोगको प्रकट करै बधिरपना । नेत्र के रोग

सूजन। मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह कृमि पीनस प्रकट करैहै और नाकमें अर्बुदनाम गांठि ७ प्रकार की सूजन ४ प्रकारकी अर्श नाकमें ४ प्रकारका रक्त पित्त नाकमें ४ प्रकार का होयहै पीछे इनसबकेलक्षण लिखेहैं सो जानलीजिये २१॥

अथ पीनसके कच्चेपनेका लक्षण॥

जिसकाशिर भारीरहै भोजन में अरुचिहोय नाक झड़ा करैधीरे बोलै शरीरक्षीण पड़िजाय बहुतथूकै ये लक्षण होयँ तो कच्चा पीनसजानिये २२॥

अथ पके पीनसका लक्षण॥

जिसकी नाकका कफ गाढ़ा निकले और नाकके छिद्र में भीरहै और वर्ण भी अच्छा होजाय और स्वरभी अच्छा हो और भूख आदि सबलगें उसे पकापीनस कहिये २३॥

अथ नाकके रोगोंका यत्न॥

कालीमिरच। गुड़। हींग ये तीनों मिलाय अनुमान माफिक खायतो पीनसका रोगजाय १ अथवा कायफल। पुष्करमूल। काकड़ासिंगी। सोंठि कालीमिरच। पीपल। कलौंजी इनसबको महीनपीस २॥ टं० चूर्ण अदरखके रसमेंले अथवा इसका काढ़ाले तो पीनस। स्वरभंग। पांडुरोग। सन्निपात। कफ। श्वास। कास इनसबको यह दूरकरै २ अथवा कायफल हींग। मिरच। लाख। इन्द्रयव। कूट। बच। सहँजने की जड़। बायबिड़ंग इनका काढ़ाले तो पीनसजाय ३॥

अथ व्योषादि गुटिका॥

सोंठि। कालीमिरच। पीपल। चित्रक। तालीसपत्र। डांसरा। अर्थात् तंतरीक। अमलबेत। चव्य। जीरा। इलायची। तज। पत्रज ये सबबराबरले महीनपीस इनकीबराबर पुरानागुड़ ले उसमें २॥ टं० भरकीगोलीकरै १ गोली नित्यखाय १० दिन तो पीनसखांसी अरुचि दूरहोय ४॥

अथ पीनस दूरहोनेका तेल ॥

कटेली। दात्यूणी । बच । सहँजनेकी छाल। तुलसीके पत्तों कारस इनसबको तेलमें पकावै पीछे इस तेलकी नासले तो पीनसजाय ५ ॥ इतिव्याघ्रितैलम् ॥

अथवा सहँजनेकी छाल। कटेली । निसोत । सोंठि । मिरच। पीपल। सेंधानोन। बेलके पत्तोंकारस इनसबको तेल में पकावै पीछे इसकी नासले तो पीनसजाय ६॥ इतिशिग्रुतैलम्॥

अथजिसे छींक बहुतआवै उसका यत्न ॥

घृत। गूगल। मोम इनकी नाकमें धूनी दे तो छींक बन्द होय ७ अथवा सोंठि । कूट । पीपल । बेलकीगिरी । दाख इनका काढ़ाकर इसतेल में पकावै पीछेइसकी नासले तो छींक बहुत आवती दूरहोयँ ८ ॥

अथ पीनसकेदूरहोनेका चूर्ण ॥

बायबिड़ंग । सेंधानोन। हींग । गूगल।मैनशिल । खुरासानी बच इन्हेंमहीनपीससूंघे तो पीनसजाय ९ ॥

अथ पीनसके दूरहोनेका तेल ॥

भांगरेकेपत्तोंकारस । सेंधानोन इनमें तेलपकावे फिर इस तेलको सूंघे तो पीनस तत्कालजाय १० ॥

अथ नाकमें अर्शनाममस्साहोय उसके दूरहोने का तेल ॥

धमासा । पीपल। दारुहल्दी। अपामार्गकेबीज। जवाखार। किरमालाकी गिरी ।अथवाबकल । सेंधानोन । इसमेंतेल पकावै और यहतेल नाकके मस्सेके लगावै तो मस्सेदूरहोयँ ११ और नाकके जो रोग कहेहैं उसमें इसकायत्न देखलेनायेसब यत्न भावप्रकाशमेंलिखेहैं ॥ अथवा सोनेके समयअधौटापानी पीवै तो पीनस का रोगजाय १२ अथवा जीरा घृत खांड़ मिलाय खायतो पीनस जाय १३ ॥ इति नासिकाके रोगोंकी उत्पत्तिलक्षण यत्नसम्पूर्णम् ॥

अथ मुखके रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मुखके ७ अङ्गहैं ओठ १ मसूढ़ा २ दांत ३ जीभ ४ तालू ५ गला ६ गलाको आदिले मुखका सर्वाङ्ग ७ जीभका ५ तालूका ६ कंठका १८ सर्व मुखमें फैलता ३ ॥

अथ मुखके रोगोंकी उत्पत्ति ॥

अनूप देशके मांसके खानेसे बहुत दूधकेपीनेसे बहुतदही और बहुत उड़द आदिके खानेसे कोपकोप्राप्तहुये जोबायुपित्त कफसो मुखके रोगोंकोप्रकटकरेहैं १ ॥

अथ ओठके रोगोंकी उत्पत्तिसंख्या॥

ओठके ८ रोगहैं बायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरका ५ मांसका ६ मेदका ७ चोटलगनेका ८ ॥

अथ बायुके ओठरोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ कठोर और खरदरे और गाढ़े औरकालेहोयँ तिनमेंपीड़ा बहुतहोय और फटेबहुत होयँ तो बायुके कोपका ओठरोग जानिये १ ॥

अथ पित्तके कोपके ओठरोगकालक्षण ॥

जिसके ओठोंमें फुन्सियां होयँ और वे फुन्सियां वहनेलगजायँ और उनमें पीड़ाभी चौगिर्द होय और दाहहोय और पकिजायँ और उनकीकान्ति पीली होजाय तबजानिये पित्तके कोपकाओठरोगहै २॥ अथ कफके ओठरोगोंका लक्षण ॥

जिसके ओठ देहके वर्ण सदृशहोयँ और वे श्र्वेंऔरउनमें फुन्सियांहोयँ और पीड़ा नहींहोय खाजआवै औरजिनमेंगाढ़ी कठोर कफ निकले उसे कफके कोपका ओठरोग जानिये ३ ॥

अथ सन्निपातकेकोपके ओठरोगका लक्षण ॥

कभी काले कभीपीले कभी सुपेद होयँ और जिनमें बहुत फुन्सियांहोयँ और सबलक्षण जिनमें मिलें उसे सन्निपातके कोपका ओठरोग जानिये ४ ॥

अथ रुधिरके कोपके ओठरोगकालक्षण ॥

जिसके ओठोंमें फुन्सियांबहुतहोयँ औरजिनमें पीड़ाबहुत होय औरउन फुन्सियों का रंग छुहारेके समान होय और जिनमें रुधिर बहुतपड़े ये लक्षणहोयँ तोरुधिरके कोपका ओठ रोगजानिये ५ ॥

अथ मांसके कोपके ओठ रोगका लक्षण ॥

जिसके ओठकामांस दुष्टहोयउसके ओठभारी और गठीले होजायँ और जिसके रुधिर में जानवर डाले सो जानवर मूर्च्छित होजाय तबजानिये इसकेरुधिरकेकोपकाओठरोगहै ६॥

अथमेदकेकोपके ओठरोगका लक्षण ॥

जिसके ओठोंका रुधिर घृतके अथवा माड़केसमान ओठों की फुन्सियों में निकले और जिनमें खाजहोय और ओठकोमलहोयँ और रुधिर सुपेद पत्थर के समान गाढ़ाश्रवै तबमेद के कोपका ओठरोग जानिये ७ ॥

अथ चोट लगने के ओठरोगका लक्षण ॥

जिसके ओठमें किसी तरह की चोट लगी होय तब उसके ओठ फटिजायँ और उनमें खाजहोय और ओठ मथेसेहोजायँ और उनमें पीड़ा भी होय तब चोट लगनेके कोपका ओठरोग जानिये ८ ॥

अथ ओठोंके रोगोंका यत्न ॥

जिसके ओठोंमें रोगहोय उसका जलौकासे रुधिर कढ़ाइये तो रोग जाय १ अथवा शुद्ध मोम से घृतडाल उसकी बत्तीसे अच्छीतरह सिंकावे तो ओठके रोगजायँ २ अथवा चारप्रकार के स्नेहहैं तेल १ घृत २ मांसका घृत ३ अथवा मांसके मध्य की मींगी ४ इनचारों स्नेहोंमें मोममिलाय इसमें सुहाता सेंक करै तो ओठोंके रोगजायँ ३ अथवा फूलप्रियंगु। त्रिफला। पठानी लोध इन्हें महीन पीस स्नेह में इनका सुहाता ओठोंके सेंक करै अथवा शहतसे खाय तो ओठोंके रोगजायँ ४ ॥

अथ प्रतिसारण विधि ॥

ओठोंके चूर्ण अवलेहअँगुलीसे शनैःशनैः लगावै उसेप्रतिसारण कहिये ॥

अथ ओठों में बहुत व्रण पड़िगये होयँ उसका यत्न ॥

जो यत्न व्रण के अच्छे होनेका पीछे लिखाहै सो करै ५ ॥ इति ओठों के रोगों के लक्षण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ मसूढ़े के रोगों के प्रथमनाम और संख्या ॥

शीतादि १ पुप्पुदन्तट २ दंतवेष्टि ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खलिबर्द्धन ९ अधिमांस १० पंचनाड़ी वायुसे मसूढ़ेकी नस निकले ११ पित्तसेमसूढ़े की नस निकले १२ कफसे मसूढ़ेकी नस निकले १३ सन्निपात से मसूढ़ेकी नसनिकले १४ चोटलगनेसे मसूढ़ेकी नसनिकले १५ दंतविद्रधि १६ ॥

अथ शीतादि मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

कारण विनाही अकस्मात् मसूढ़ेसें व्रणकरके रुधिर निकलै और उस रुधिरमें दुर्गंध बहुतआवै और रुधिर कालाहोय और मसूढ़े कोमलहोयँ और बिखरजायँ आपसमें पकने लगैं इसतरहकफरुधिरके दुष्टपनेसे उपजे इसे शीतादिककहिये १॥

अथ दंतपुप्पुटमसूढ़ेके रोगकालक्षण ॥

दांतों के तीन मसूढ़ेमें सूजन बहुत होजाय इसे दंतवेष्टि पुप्पुटरोग कहिये यह कफ रुधिरके कोपसे होय है २ ॥

अथ दंतवेष्टि रोगका लक्षण ॥

जिसके मसूढ़ेमें रादकोलिये रुधिर निकलै और दांत हलने लगिजायँ उसे दंतवेष्टि रोग कहिये ३ ॥

अथ सौषिर मसूढ़ेके रोगका लक्षण ॥

मसूढ़ेमें सूजन होआवै और उसमें पीड़ाहोय और लारपड़े

खाजहोय इसे सौषिरनाम मसूढ़ेका रोग कहिये यह कफ वायु से उपजै है ४॥ अथ महासौषिररोग का लक्षण॥

उनमसूढ़ोंमें दांतहलनेलगें और तालू बैठजायँ अथवातालू पै छेद पड़िजायँ यह सन्निपातके कोपसे उपजै है इसे महासौषिर कहिये ५॥ अथ परिदर मसूढ़े के रोगका लक्षण॥

जिसकेदांतके मसूढ़े बिखरजायँ और उनमें रुधिरबहैनहीं वह पित्त रुधिरकफ इनकेकोपसे उपजैहै इसेपरिदर कहिये ६॥

अथ उपकुश मसूढ़े के रोग का लक्षण॥

जिसके मसूढ़े में दाह होय और पकिजाय दांत हलनेलगि जायँ मसूढ़े के दाबने से अथवा औषधों के घिसने से रुधिर निकले और उसमें पीड़ा नहीं होय और मसूढ़ेमें दुर्गंधि आवै यहपित्त रुधिरसे उपजैहै इसे उपकुश मसूढ़ेकारोग कहिये ७॥

अथ वैदर्भ मसूढ़े के रोग का लक्षण॥

जिसके मसूढ़ेमें किसीतरहकी चोटलगे अथवा वे घिसजायँ तब उनमें सूजनहोजाय और दांत हिलनेलगें और उनसेंदाह पीड़ा भी होय इसे बिदर्भ मसूढ़े का रोग कहिये ८॥

अथ खलिवर्द्धनमसूढ़े के रोग का लक्षण॥

जिसके मसूढ़ेमें दांत अधिकबढ़ें और वहां पीड़ा बहुतहोय उसे खलिबर्द्धन मसूढ़े का रोग कहिये ९॥

अथ अधिमांस मसूढ़ेके रोगका लक्षण॥

जिसकी नीचेकी डाढ़के अन्तमें सूजनबहुतहोय और उसमें पीड़ाभी बहुतहोय और मुँहसे लारपड़ै यह कफसे उपजैहै इसे अधिमांस मसूढ़े का रोग कहिये १० अथवा मसूढ़े की नसोंमें वायु पित्त कफ सन्निपात और चोट लगने से पांच नसों का रोग कहिये ११॥

अथ दन्तविद्रधि मसूढ़े के रोगका लक्षण॥

दांतके मसूढ़ेमें रुधिर निकले और वहां सूजन बहुत होय

और उसमें दाह और पीड़ाभी होय और राद रुधिर को लिये बहुतश्रवै उसे दन्तविद्रधि मसूढ़े का रोग कहिये १२॥

अथ मसूढ़े के रोगों का और शीतादि मसूढ़ेके रोगका यत्न॥

इसरोगमें मसूढ़े का रुधिर कढ़ाइये पीछे सोंठि। सरसों। त्रिफला इनका काढ़ाकर कुल्लाकरै तो शीतादि मसूढ़े के रोग जायँ १ अथवा हीरा। कसीस। पठानीलोध। पीपल। मैनशिल। फूलप्रियंगु। तेजबल इन्हें बराबरले महीनपीस शहतसे मसूढ़े के लगावै तो शीतादि मसूढ़ेके रोगजायँ २ अथवा तेल वा घृत का कुल्लाकरै तो शीतादि मसूढ़े के रोगजायँ ३॥

अथ दन्त पुप्पुट मसूढ़े का यत्न॥

इसरोगमें मसूढ़ेका रुधिरकढ़ाइये पीछे इसके ऊपर पांचौ नोन जवाखार शहत डाल इसकाकाढ़ाकरै तोयहरोगजाय ४॥

अथ चलदन्त मसूढ़े का यत्न॥

पठानीलोध। पतंग। महुआ। लाख। बेल। सिरसकाबक्कल इन्हें महीनपीस चूर्णकर मसूढ़ेसे मसलै तो चलदंत मसूढ़ेका रोगजाय ५ अथवा नागरमोथा। हड़की छाल। सोंठि। मिरच पीपल। बायबिड़ंग। नींबकेपत्ते इन्हें महीनपीस गोमूत्रमेंगोली करै फिर उसगोलीको छायामें सुखाय सोतेसमय मुँहमें रक्खै तो चलदन्त मसूढ़ेका रोगजाय दांत गाढ़े होयँ ६॥ इतिभद्र-मुस्तादि गुटिका॥

अथवा नीले फूलका कटसैला। धमासा। खैरसार। जामुन का बक्कल। आमकाबक्कल। मुलहठी। कमलगट्टे ये सबबराबर २ टकेभर ले पीछे इन्हें १६ सेर पानीमें औटावे इनका चतुर्थांश राखै पीछे इससे तेल अथवा बकरीकाघृत मधुरीआंचसे पकावै जब रसआदि जलिजायँ तेलमात्ररहै तब इस तेलको अथवा घृतको २ घड़ी मुँहमें रक्खै तो दांत गाढ़ेहोयँ ७॥ इति सहचरादि घृत तेलम्॥

अथ सौपिर मसूढ़े का यत्न ॥

इसरोगमेंमसूढ़ेका रुधिरकढ़ाये पीछे लोध। नागरमोथा। रसोत। शहत इनसबको महीनपीस शहतमें मसूढ़ेके लेपकरै और पीछे दूधकेकुल्लेकरै तो सौषिरमसूढ़ेका रोगजाय ८ ॥

अथ परिदर मसूढ़ेके रोगका यत्न ॥

प्रथम मसूढ़े का रुधिरकाढ़े पीछे सोंठि। सरसों। त्रिफला इनका काढ़ाकर कुल्लेकरै तो परिदर और उपकुशयेदोनों मसूढ़े के रोग जायँ ९ ॥

अथ मसूढ़े में व्रण पड़जायँ उसकायत्न ॥

गूलरकेपत्ते। नोन। शहत। सोंठि। मिरच। पीपल इन्हें औटाय काढ़ाकर और प्रथममसूढ़ेका शस्त्रादिक से रुधिरकाढ़ै पीछे इस काढ़े के कुल्ले करै फिर इसमसूढ़ेके लवण आदिका खार लगावै तो मसूढ़ेकाव्रण अच्छाहोय और उसके कृमिमर जायँ रोग जातारहै १० ॥

अथ खलिवर्द्धन मसूढ़े के रोगका यत्न ॥

इस रोगमें मसूढ़ेकामांस काढ़िडाले फिर शहतके कुल्लेकरै फिर बच। तेजबल। पाढ़। सज्जी। जवाखार। पीपल इन्हें महीनपीसमसूढ़ेकेलगावैतो खलिबर्द्धन मसूढ़ेकारोगजाय ११ ॥

अथ मसूढ़े की नसों में व्रण पांचप्रकारके पड़िगये होयँ उसकायत्न ॥

उनमसूढ़ोंका मांस कुछ शस्त्रसे दूरकरै फिर पटोल अर्थात् परवरकेपत्ते। नींबकेपत्ते। त्रिफलाइनका काढ़ाकर गरमसुहाता कुल्ले कीजै तो मसूढ़ेकी नसोंका व्रणजाय १२ अथवा चमेलीके पत्ते। धतूरे के पत्ते। कटेली। गोखुरूका पंचांग। मंजीठ। लोध खैरसार। मुलहठी इनकाकाढ़ाकर इसकाढ़ेमें मधुरीआंचसे तेलकोपकावै फिर इसतेलके कुल्ले करै तो मसूढ़े केव्रणआदि सब रोगजायँ १३ ॥ इति मसूढ़े के रोगोंका यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ दांतोंके रोगोंका नाम और संख्या लिखते हैं॥

दालन १ कृमिदन्तक २ भंजनक ३ दन्तहर्ष ४ दन्तशर्करा ५ कपालिका ६ श्यावदन्त ७ कराल ८॥

अथ दालननाम दांतके रोगका लक्षण॥

जिसके दांतमें टूटेदांत की पीड़ाहोय वहपीड़ा वायुसेहोय इसे दालननाम दांतका रोग कहिये १॥

अथ कृमिदन्तरोग का लक्षण॥

जिसके दांतमें कालेछिद्र पड़िजायँ दाहहोय और उसमेंसे कुछ रुधिर निकलै और सूजन होय बिनाकारणही वायुकीसी पीड़ाहोय उसे कृमिदन्तरोग कहिये २॥

अथ भंजनकदांतके रोगकालक्षण॥

जिसके दांत टेढ़ेहोयँ टूटजायँ यह कफसे उपजैहै उसेभंजनक नाम दांतका रोग कहिये ३॥

अथ दन्तहर्ष दांतके रोगका लक्षण॥

जिसके शीतलजलादिक से रूखी वस्तुसे शीतल पवनसे खटाईसे दांत खट्टेहोजायँ यह वायु पित्तसे होयहै उसे दन्तहर्ष रोग कहिये ४॥

अथ दन्तशर्करा दांतके रोगका लक्षण॥

जिसके दांतमें मैलरहै मलकोकफ बायु शोषले फिरउसके दांत खरदरेलगें और रेतकीसी तरह खिलजायँ उसे दन्तशर्करा कहिये ५॥

अथ कपालिकानाम दंतके रोगका लक्षण॥

जिसके दांतमाटी के घड़े के कपाल समानहोयँ औरउनमें छिद्रहोयँ और खिलैं और उनमें मैलहोय उसे कपालिकादांत का रोग कहिये ६॥

अथ श्यावदन्तक दांतके रोगका लक्षण॥

जिसकेदांत दुष्ट रुधिरसे मिलकर सब दग्ध होजायँ और

दांतकाले और नीले पड़िजायँ उसे श्यावदन्तक दांत का रोग कहिये ७॥

अथ करालनाम दांतके रोगका लक्षण॥

जिसके दांतोंको वायुहै सोशनैः २ नष्टकर भयंकर करदे इसे कराल दांतोंका रोग कहिये यह रोग यत्न करने से भी अच्छा नहीं होय ८॥

अथ ग्रंथांतरसे हनुमोक्ष दांतके रोगका लक्षण॥

जिसकी डाढ़में वायु कुपितहोकर दांतोंको पकड़े दांतों में तथा डाढ़ में पीड़ाकरे उसे हनुमोक्ष रोग कहिये और उसमें अर्दित रोगके लक्षण मिलैं ९॥

अथ दांतके रोगोंको दूरकरनेवाला लाक्षादि तैलम्॥

लाखकारस ।ऽ। भर तिलोंकातेल ।ऽ। भर गौकादूध ।ऽ। भर पठानीलोध १ टकेभर कायफल १ट० मंजीठ १ ट० कमलगट्टे १ट० कमलकी केसर १ट० रक्तचन्दन १ट० मुलहठी १ट० इनसबका काढ़ाकर फिर इसकाढ़ेमें मधुरी आंचसे तेलपकावे ये सब रसजलजायँ तेलमात्र आयरहै तब इसतेलको मुंहमें १ घड़ी राखै तो दांतके सबरोग जायँ और दांत गाढ़े होयँ १॥ इतिलाक्षादि तैलम्॥

अथवा वायुको दूरकरनेवाला जो तेल उसके कुल्लेकरै तो दांत के रोगजायँ २॥

अथ कृमिदन्त रोगके दूरहोनेका यत्न॥

हींगको थोड़ा गरमकर दांतोंके बीचमें दे तो दांतोंके कृमि जायँ ३ अथवा कागलहरी। नीलकीजड़। कडुवी तूंबीकीजड़ इन्हें महीनपीस दांतोंमें मर्द्दन करै तो कृमिजायँ ४॥

अथ दांतखट्टेरहैं उसका यत्न॥

सांभरनोन। नरकचूर। सोंठि। अकरकरा इन्हें महीनपीस दांतोंमें मर्द्दनकरै तो खट्टेदांत अच्छेहोयँ ५॥

अथ दांतके सबरोग दूरहोनेकी औषध ॥

पांचौनोन । नीलाथोथा । सोंठि । मिरच । पीपल । पीपलामूल । हीराकसीस । माजूफल । वायविडंग इन्हें महीनपीस दांतों में मर्द्दनकरै तो दांतोंके सबरोग जायँ ६ ॥

अथ दांतोंके पुष्ट होनेकी मिस्सी ॥

हीराकसीस । माजूफल । लोहेकाचूर्ण । सोनामक्खी । मजीठ । फुलाई फिटकरी । त्रिफला ये सब बराबरले इन्हें खरलकर महीनपीस कज्जल समान करै फिर १ माशे दो घड़ी दांतोंमें मसलै इसविधिसे ७ दिनकरै तो दांतस्याह और गाढ़ेहोयँ ७॥

अथ दांतोंके सबविकार दूरहोनेकी औषध ॥

फुलाईफिटकरी । नीलाथोथा । तेजबल । पपड़ियाकत्था । पीपलका बक्कल । लाख । सोंठि । मिरच । पीपल । आंवला । हीराकसीस । माजूफल । मंजीठ । रूमीमस्तगी । मोलसिरीका बक्कल । सेंधानोन । दक्षिणी सुपारी ये सबबराबर ले इन्हें कूट कपड़छान कर निरगुण्डीके रसकी २१ पुटदे पीछे मोलसिरी के बक्कलकी २१ पुटदेके एक एक पुटदेके धूपमें सुखावे पीछे उसे महीनपीस सेंधानोन थोड़ामिलावे पीछे इसको दांतों में मर्द्दनकरे तो दांतों के सबरोग जायँ ८ ॥

अथ दांतोंके दूखनेकी और औषध ॥

कूट ५ टं० सोंठि ५ टं० मिरच ५ टं० खुरासानी अजवायन ५ टं० हड़कीछाल ५ टं० कत्था ५ टं० इन्हें महीनपीस दांतोंमें मर्द्दनकरे तो दांत दुखना बन्दहोय ९ ॥

अथ दांत दूखनेकी और औषध ॥

अथवा गंगापारकी तमाखू । अकरकरा । कायफल । वायविड़ंग । सोंठि । मिरच । पीपल । नोन इन्हें महीनपीस दांतों में मर्द्दनकरे तो दांत दुखना बन्दहोय १० इति दांतों के सब रोगों का यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ जीभके रोगोंकी उत्पत्तिनाम और संख्या लिखतेहैं॥

जीभके रोग ५ प्रकारकेहैं वायुका १ पित्तका २ कफका ३ अलास ४ उपजिह्वा ५॥

अथ वायुसे उपजा जो जिह्वाका रोग उसका लक्षण॥

जिसकी जीभ काटिजाय और सूजन आयजाय और हरी होजाय और जीभमें कांटे पड़िजायँ मीठेको आदिले स्वादुका ज्ञान जातारहै ये लक्षणहोयँ तो वायुका जीभरोग जानिये १॥

अथ पित्तके रोगकी जीभका लक्षण॥

जिसकी जीभमें दाहरहै और जिसकावर्ण लाल होय और कांटे पड़िजायँ तब जानिये जीभमें पित्तका रोगहै २॥

अथ कफकी जीभके रोगका लक्षण॥

जिसकी जीभ भारीदीखै और कड़ी होजाय और जीभ में सफ़ेद कांटे पड़ें तो जीभमें कफका रोग जानिये ३॥

अथ अलास जीभके रोगका लक्षण॥

जीभके नीचे बहुत सूजनहोय जीभको और डाढ़ीको लठर करदे हलनेदे नहीं जीभनीचे पकिजाय यहरोग कफ रुधिर से पैदाहोय है इसको अलास कहिये यह असाध्यहै ४॥

अथ उपजिह्वाका लक्षण॥

जीभकी नोकके ऊपर सूजनहोय मानो दूसरी जीभहै और जीभमें लारबहुतपड़े खुजली और दाहहोय इसे उपजिह्वानाम जीभका रोग कहिये ५॥

अथ जीभके रोगोंका यत्न॥

जीभके सब रोगोंको दूरकरनेकेवास्ते रुधिर कढ़ाना योग्य है १ अथवा गिलोय। पीपल। नींबकीछाल। कुटकी इनका काढ़ाकर कुल्लेकरै तो जीभके रोगजायँ २ अथवा ओठोंकायत्न जो पीछेकहाहै उससेभी जीभका रोग अच्छाहोयहै ३ अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। जवाखार। हड़ इन्हें महीनपीसजीभ

में लगावें तो जीभके रोग जायँ ४ अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। जवाखार। हड़कीछाल इनमें तेलकोपकाय इसतेलके कुल्लेकरे तो उपजिह्वा दूरहोय ५ इति जीभके रोगोंके लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ तालूके रोगोंके नाम और संख्या॥

तालूके ९ रोगहैं गलशुण्डी १ तुण्डकेरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ ताल्वर्बुद ५ मांससंघात ६ तालुपुप्पुट ७ तालुशोष ८ तालुपाक ९॥

अथ गलशुण्डी का लक्षण॥

तालूकी जड़से सूजनबढ़ै और वह सूजनकटी खाल सदृश होजाय तब जानिये इसखालमें वायुभरीहै और उसकोप्यास लगै और खांसी श्वासभी होय उसे गलशुण्डीरोगकहिये यह कफरुधिरसे उपजै १॥

अथ तुण्डकेरी का लक्षण॥

तालूकी जड़से उपजी जो सूजन सो दाह और पीड़ा और पाकको लिये उपजै सो कफ रुधिरके दुष्टपने से उपजै है उसे तुण्डकेरीरोग कहिये २॥

अथ ध्रुवरोगका लक्षण॥

जिसके तालूमें ज्वरकोलिये लालसूजन होय उसे ध्रुवरोग कहिये ३॥

अथ कच्छप रोगका लक्षण॥

जिसकेतालूमें सूजन कछुवेके आकार ऊंचीहोय और पीड़ा भी होय यह कफसे उपजैहै उसे कच्छपरोग कहिये ४॥

अथ ताल्वर्बुद रोगका लक्षण॥

जिसके तालूमें कमल के आकार सूजन होय और जिसमें बड़े अंकुरहोयँ और दाहहोय उसे ताल्वर्बुदरोग कहिये ५॥

अथ मांससंघात रोगका लक्षण॥

जिसके तालूमें दुष्टमांस बढ़े और उसमें पीड़ा नहीं होय उसे मांससंघात रोग कहिये ६॥

अथ तालुपुप्पुट रोगका लक्षण ॥

जिसके तालूमें बेरसमान सूजन होय पीड़ा नहींहोय उसे तालुपुप्पुटरोग कहिये ७ ॥

अथ तालुपाकरोगका लक्षण ॥

जिसका तालू गर्मी से बहुत पकिजाय उसे तालुपाक रोग कहिये ८ ॥

अथ तालुके रोगोंका यत्न ॥

जो गलशुंडी रोगहोय उसका चतुर वैद्यहै सो शस्त्र करके विषकाढ़डाले तोगलशुंडीरोग जाय १ अथवा कूट। मिरच। खुरासानीवच। सेंधानोन। पाढ़। नागरमोथा इन्हें महीनपीस गलशुंडीमें मलै तो गलशुंडीरोगजाय २ अथवा पीपल। अतीस। कूट। बच। सोंठि। कालीमिरच। सेंधानोन इन्हें महीन पीस शहत से गलशुंडी में लगावे तो गलशुंडी जाय ३ अथवा पीपल। अतीस। कूट। बच। रास्ना। कुटकी। नींबकी छाल इन्हें जवकुटकर इनका काढ़ा दे तो गलशुंडी तुंडकेरी आदि ले तालुके सबरोग जायँ-४ इतितालुके रोगोंके लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

अथगलेकेरोगोंके लक्षणयत्न नाम और संख्या लिखते हैं ॥

गलेके १८रोग हैं पांचप्रकारकी तो रोहिणीवायुकी १ पित्त की २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ रुधिरकी ५ कंठशालूक ६ अधिजिह्वा ७ बलय ८ बलास ९ एकवृन्द १० वृन्द ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलविद्रधि १४ गलौघ १५ स्वरघ्न १६ मांसतान १७ बिदारी १८ ॥

अथ वायुकी रोहिणीका लक्षण ॥

सबजीभमें बहुत पीड़ाहोय और जीभके सब मांसके अंकुर निकलआवें और उनसे कंठरुकजाय और वायुके सब उपद्रव होजायँ उसे वायुकी रोहिणी कहिये १ ॥

अथ पित्तकी रोहिणीका लक्षण ॥

जिसका गला पकिजाय और गले में दाह और ज्वर होय उसे पित्तकी रोहिणी कहिये २ ॥

अथ कफकी रोहिणी का लक्षण ॥

जिसके गले का सोत कफसे रुकिजाय और गला देरसे पकै और गला भारीहोय उसे कफकी रोहिणी कहिये ३ ॥

अथ सन्निपातकी रोहिणीका लक्षण ॥

औंडा जिसका पाकहोय और उसका वीर्य यत्नसेभी दूर होय नहीं और जिसमें सब लक्षण मिलैं उसे त्रिदोषकी रोहिणी जानिये ४ ॥ अथ रुधिरकी रोहिणीका लक्षण ॥

जिसके गलेमें पीड़ा होआवे और जिसमें पित्तके लक्षण मिलैं उसे रुधिरकी रोहिणी जानिये ५ ॥

अथ कंठशालूकका लक्षण ॥

जिसके गले में वेरकी मींगीप्रमाण कफकी गांठ होजाय और गलेमें खरदरेकांटे पड़िजायँ और उस स्थानमें पीड़ाभी होय उसे कंठशालूक रोहिणी कहिये ६ ॥

अथ अधिजिह्वा रोगका लक्षण ॥

जिसकी जीभकी नोकके ऊपर सूजन होय और रुधिर को लिये कफथूकै और जीभ कफ रुधिरसे लिपीरहै पकीसी होय उसे अधिजिह्वा गलेका रोगकहिये ७ ॥

अथ बलयनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गले में कफ बढ़ै पीछे सूजनको करै अन्न आदि को गले में आनेदे नहीं उसका मार्ग रोकदे उसे बलयगलेका रोग कहिये यह असाध्य है ८ ॥

अथ बलासनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गले में कफवायुबढ़करगलेमें सूजनकरै औरश्वास कफ वायु और पीड़ाको प्रकटकर मर्मस्थान को छेदताहुआ हृदयमें पीड़ाकरै उसेबलास गलेका रोग कहिये ९ ॥

अथ एकवृन्दनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गले में कफ रुधिर दुष्टहोय गले के बीच दाहको

लिये गोल और ऊंची सूजनकरै और वहां खुजली भी चलै और गलापकिजाय और भारी और कोमल होय उसे एकवृन्द गले का रोग कहिये १० ॥

अथ वृन्दनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गले में पित्त और रुधिर कोपकोप्राप्तहोय और वायु संयुक्त गलेमें गोल सूजन को प्रकटकरै बिनापीड़ा गले में दाहको करै और यहरोग तीव्र ज्वरको पैदाकरै इसे वृन्दनाम गलेका रोग कहिये ११ ॥

अथ शतघ्नीनाम गलेके रोगकालक्षण ॥

जिसके गले में मांसके अंकुर गाढ़े २ कड़े २ कंठके रोंकनेवाले बहुत होयँ और उनमें पीड़ाचलै जलैं बहुत उन्हें प्राण का हरनेवाला जानिये मानो कंठमें रुधिरकी लट्ठीडालीहै यह रोग त्रिदोषके कोपसे पैदाहोय है सो असाध्यहै इसका नाम शतघ्नीहै १२॥

अथ गिलायुनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गलेमें आंवलेकी मींगी प्रमाण गांठिहोय और उस में पीड़ा कमहोय और वहगांठि कफ रुधिरसे प्रकटहोय और भोजनकरै तब वह बुरी लगै इसे शस्त्रसे दूरकरै तब यह दूर होय इसे गिलायुनाम गलेका रोगकहिये १३ ॥

अथ गलविद्रधिका लक्षण ॥

जिसके सब गलेमें सूजन होय और उसमें प्राणकी हरने वाली बहुत पीड़ाहोय यहभी त्रिदोष के कोप से पैदाहोय है उसे गलविद्रधि कहिये १४ ॥

अथ गलौघ नाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गलेके मार्गमें सूजन बहुत होय और जिसके गले के मार्गमें पवन जाने से भी रुकिजाय और उसके तीव्रज्वर पैदा होजाय यह कफरुधिरके दुष्टपनेसे पैदाहोयहै इसेगलौघ नाम गलेकारोग कहिये १५ ॥

अथ स्वरघ्ननाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गलेमें कफ दुष्टहोय गले के स्वरको दूरकरै और हुहरामांस लियेजाय और घोंघों बोलै और भोजन अच्छी तरहसे कियाजाय नहीं और यह कफ कंठकी पवनकोबिगाड़ै इसे स्वरघ्न गलेका रोग कहिये १६ ॥

अथ मांसतान गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसकेगलेमें सूजन क्रमसेबढ़ै और सबगलेमें सूजनहोजाय और प्राणों को हरनेवाली पीड़ाहोय यहभी त्रिदोषसे होय है इसे मांसतान गलेकारोग कहिये १७ ॥

अथ विदारीनाम गलेके रोगका लक्षण ॥

जिसके गले में तांबेके वर्ण समान सूजन दाह और पीड़ा को लिये बहुत होय और गला लटकि जाय और पकि जाय जिसमें राद पड़िजाय यह पित्तके कोपसे होय है और वह विदारी गले के पीछे होय जिस करवट सोवे वहां होय उसे विदारी नाम गलेका रोग कहिये १८ ॥

अथ गलेके रोगोंका यत्न ॥

जिसके रोहिणी रोग होय उसके गलेका जलौकाआदि से किसी तरह रुधिर कढ़ावै तो रोहिणी रोग जाय १९ ॥

अथ गलेके सबरोगोंका यत्न ॥

वमनकरना। औषधियोंसे हुक्का पीना। औषधियोंसे कुल्ले करना। नास देना। रुधिर कढ़ाना। नोन का सेंक ये सब गले के रोग को अच्छे हैं २० अथवा स्नेह के कुल्ले करे तो ये सब यत्न वायु के गले के रोग को अच्छे हैं २१ ॥

अथ पित्तके गले के रोग का यत्न ॥

मिश्री। शहत। फूलप्रियंगु इनके काढ़े से पित्तके गले का रोग जाय २२ ॥

अथ कफके गलेके रोगका यत्न॥

घरका धूमस। कुटकी इनके काढ़े से कफ के गले का रोग जाय २३ अथवा कुटकी। सोंठि। पीपल। मिरच। वायविडंग। दात्यूणी। सेंधानोन इनका काढ़ाकर उसमें तेल पकावे फिर इस तेल की नास दे तो कफके सबरोग जायँ २४ अथवा विष्णुक्रान्ता का काढ़ा पीवे तो रोहिणी नाम गलेका रोग जाय २५ अथवा विष्णुक्रान्ता और शंखाहूली इनदोनों को घोट पीवे तो कंठशालूका। तुण्डकेरी। उपजिह्वा। अधिजिह्वा। एकवृन्द। गिलायु ये सब रोगजायँ २६ अथवा शस्त्र क्रिया कर गले का रुधिर कढ़ावे तो गलविद्रधि को आदिले गलेके सब रोगजायँ २७॥

अथ कंठके रोगों का यत्न॥

कंठके रोग रुधिर कढ़ाने और नास देनेसे अच्छे होयँ २८ अथवा दारुहल्दी। नींबकीछाल। इन्द्रयव। हड़कीछाल। तज इनका काढ़ाकर उसमें शहतडाल पीवे तो कंठ के सब रोग जायँ २९ अथवा कुटकी। अतीस। दारुहल्दी। नागरमोथा। इन्द्रयव इनका काढ़ाकर उसमें गोमूत्र डाल पीवे तो कंठ के सब रोगजायँ ३० अथवा हड़कीछालका काढ़ाकर शहतडाल पीवे तो कंठके सब रोगजायँ ३१ अथवा मुनक्का। दाख। कुटकी। सोंठि। मिरच। पीपल। दारुहल्दी। तज। त्रिफला। नागरमोथा। पाढ़। रसोत। मूर्वा। तेजबल। हल्दी इनका काढ़ाकर शहतडाल पीवे अथवा इनके कुल्लेकरे अथवा शहतसे इनकी गोलीबांधे उस गोली को मुँहमें रक्खे तो गला और कंठ के सब रोग जायँ ३२—इति गलेके सब रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्णम्॥

अथ समस्त मुख रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न और संख्या लिखते हैं॥

वायु का रोग १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४॥

अथ वायुके मुख रोगका लक्षण ॥

जिसके मुखमें सर्वत्र छाले होजायँ और उनमें पीड़ा बहुत होय तो वायुका मुखरोग जानिये १ ॥

अथ पित्तके मुख रोगका लक्षण ॥

जिसके मुख में लाल छाले होयँ या दाह को लिये पीले होयँ उसे पित्तका मुख रोग कहिये २ ॥

अथ कफ के मुख रोगका लक्षण ॥

जिसके मुखमें सफ़ेद छाले विना पीड़ाहोयँ और उनमें खुजली चलै उसे कफका रोग कहिये ३ ॥

अथ मुख रोगका असाध्य लक्षण ॥

जिसके ओठमें और मसूढ़े में रुधिर के कोपसे अथवा त्रिदोषके कोपसे छाले होयँ सो असाध्य जानिये ४ ॥

अथ समस्त मुख रोगों का यत्न ॥

मुखमें वायुके छाले होयँ तो नोन फिटकड़ीके कुल्लेकराइये ५ अथवा वायुके दूरकरने वाले तेलके कुल्लोंसे छालेजायँ६॥

अथ पित्तके मुख रोगके छालेका यत्न ॥

मुलहठी । खैरसार इन्हें औटाय इसमें शहत डाल कुल्ले करै तो पित्त के मुख रोग के छाले दूर होयँ ७ अथवा दूधको गर्म कर उसमें थोड़ा घृत शहत डाल कुल्ले करै तो पित्त के मुखरोग के छाले जायँ ८ ॥

अथ कफके मुख रोगके छालेका यत्न ॥

नीलाथोथा । फिटकड़ी । इन्हें महीनपीस छालेमें लगावै और मुँहकी लार डालै तो कफके छाले जायँ ९ ॥

अथ सन्निपात के मुख रोगके छालेका यत्न ॥

इसरोगमें मुँह की नस की फस्त ले तो ये छालेजायँ १० अथवा चमेली के पत्ते । गिलोय । त्रिफला । जवासा । दारुहल्दी । दाख इनका काढ़ा कर उसमें शहत डाल कुल्लेकरे तो

त्रिदोष के मुखरोग के छाले जायँ ११ अथवा कालाजीरा। कूट। इन्द्रयव इन्हें महीन पीस दांतों से उसकारस मुख में ले फिर थूकदे तो त्रिदोषका मुखपाक जाय १२ अथवा पटोल के पत्ते। नींबकीछाल। जामुन के पत्ते। आमके पत्ते। चमेली के पत्ते इनका काढ़ा कर फिर इस के कुल्ले करै तो त्रिदोषके मुखपाक के छालेजायँ १३ अथवा पटोल के पत्ते। त्रिफला। दारुहल्दी इनका काढ़ा कर उस में शहत डाल कुल्लेकरै तो त्रिदोष का मुखपाक जाय १४ अथवा खस। पटोल। नागरमोथा। हड़की छाल। कुटकी। मुलहठी। किरमाला की छाल रक्तचन्दन इनका काढ़ा ले अथवा इनके कुल्ले करै तो त्रिदोष के मुखपाकके छालेजायँ १५ अथवा तिलोंकी डांड़ी। कमलकी जड़। घृत। मिश्री। दूध। शहत इनसबकोइकट्ठाकर कुल्ले करे तो त्रिदोषके मुखपाकके छालेजायँ १६ अथवा हल्दी। नींब के पत्ते। मुलहठी। कमल की जड़ इन्हें तेलमेंपकावे पीछे इस तेलके कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ १७ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं॥

अथ दांतहलते होयँ और उसमें पीड़ाभी होतीहोय उसकी औषध॥

पीपल। सेंधानोन। स्याहजीरा। हड़की छाल। मोचरस इन्हें महीनपीस दांतोंको रगड़े तो दांतहलते बन्दहोयँ और उनकी पीड़ाजाय १८ अथवा नागरमोथा। हड़कीछाल। सोंठि। मिरच। पीपल। बायबिड़ंग। नींबकेपत्ते इन्हें महीनपीसगोमूत्र की ३ पुट दे छायामें सुखाय गोली करे पीछे वह गोली रात को मुखमें धर सोवे पीछे प्रभात उस गोली को थूक दे फिर कुल्ले करे तो दांत के सब रोग जायँ १९ अथवा फिटकड़ी। नीलाथोथा। खैरसार। पपड़ियाकत्था। तेजबल। कच्चीलाख। बंशलोचन। मिरच। आमले। मंजीठ। रूमीमस्तगी। मोलसिरकाबक्कल। सेंधानोन। माजूफल। दक्षिणीसुपारी इन्हेंमहीन

पीस कपड़छानकर इस में निर्गुण्डी के रस की १ पुट दे पीछे चमेली के रसकी १ पुटदे धूपमें सुखायलपीछे महीनपीस दांतों में रगड़े तो दांत गाढ़ होयँ और दांतोंके सब रोग जायँ२०॥

अथ जीभ के रोग की पुनः औषध लिखते हैं ॥

कचनारके बक्कलकाकाढ़ा कर इसमें खैरसार मिलाय कुल्ले करे तो जीभके सब रोग जायँ २१ ॥

अथ गले के सब रोग दूरकरने की गोली ॥

तेजबलापाढ़ा। रसोत। दारुहल्दी। पीपलइन्हें महीनपीस शहतसे गोलीबांधे पीछे गोलीको मुखमें रक्खे तो सबप्रकारके रोग जायँ २२ ॥ अथ मुखपाकके दूरकरने की गोली ॥

खैरसार। जायफल। भीमसेनीकपूर। दक्षिणीसुपारी। तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। कस्तूरी ये सब बराबर ले महीनपीस खैरसार के काढ़ेमें इनकीचनप्रमाण गोलीबांधे फिर इस गोलीको मुहँमें राखे तो जीभ। ओठ। दांत। मुँह। गला। तालू इनके सब रोग जायँ २३ ॥

अथ दूसरी खैरसार की गोली ॥

जायफल। कस्तूरी। भीमसेनी कपूर। सुपारी इनकीबराबर खैरसारले इन सब को महीनपीस गोलीकरे और मुखमें राखै तो मुखके सब रोग जायँ २४ ॥

अथ दांत में रुधिर निकले उसकी औषध ॥

सेंधानोन। खैरसार। कूट। धनियां। मिरच। सोंठि। सपेदभुनाजीरा। भुनानीलाथोथा इन्हें महीन पीस दांतोंको मर्दनकरै तो दांतका रुधिर निकलना बन्दहोय २५ ॥

अथमुखपाककी और औषध ॥

दारुहल्दी। गिलोय। चमेलीके पत्ते। दाख। अजवायन। त्रिफला इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तोमुखपाक जाय २६ ये सब यत्नवैद्यरहस्यमें लिखे हैं ॥

अथ मुखके ऊपर छाया के दूर करनेका यत्न ॥

पठानीलोध। धनियां। खुरासानीबच। गोरोचन। मिरच इन्हें महीनपीस मुखको लेपकरै तो मुँहकी छायाजाय २७ अथवा सरसों। बच। लोध। सेंधानोन इन्हें महीनपीस मुखपै लेपकरै तो मुखकी छायाजाय २८ अथवा रक्तचन्दन। मंजीठ। कूट। लोध। फूलप्रियंगु। बड़केअंकुर। मसूर इन्हें जलसेमहीनपीस मुखकी छायाके लेपकरै तो छायाजाय २९ अथवा जायफल को घिस लेपकरै तो छायाजाय ३० अथवा आकके दूधमेंहल्दी को भिगोय लेपकरै तो मुखकी छायाजाय ३१ अथवा मसूरको दूधमेंपीस इसमें थोड़ाघृत मिलायलेपकरै तो मुखकी छाया जाय और कांतिबढ़ै ३२ अथवा केसर। रक्तचन्दन। लोध। खस। मंजीठ। मुलहठी। पत्रज। कूट। गोरोचन। हल्दी। लाख। दारुहल्दी। नागकेसर। फूलप्रियंगु। बड़केअंकुर। चमेलीकेपत्ते। मोम। सरसों। बच इनकाकाढ़ाकर इसमें मधुरी आंचसे तेल पकावै फिर इसतेलका मर्दनकरै तो मुखकी छायाकील तिल मस्से आदि सब बिकार जायँ ३३ ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे क्षुद्ररोग मस्तक और नेत्रोंके सबरोग कान, नाक, मुख, ओठ, मसूढ़े, दांत, जीभ, तालू, गला, कंठ इनसबरोगोंके भेदसंयुक्त उत्पत्तिल- क्षण यत्न निरूपणं नाम अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

अथ सबस्थावर जंगम के विषमात्र की और इनसे उपजे जो रोग तिनकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संख्यालिखते हैं ॥

प्रथमबिष दोप्रकारकाहै—१स्थावर २ दूसराजंगम स्थावर बिषहै सो दश जगहमें रहै वृक्षकी जड़में १ पत्रमें २ फलमें ३ पुष्पमें ४ छालमें ५ वृक्षके दूधमें ६ वृक्षकेरसमें ७ वृक्षकेगोंदमें ८ धातुमात्र हरतालादिकमें ९ कन्दनाम सिंगीमोहरादिकमें १०

इन दश जगहमें स्थावर बिषरहैहै जंगमबिष १३ जगहमें रहै है मनुष्यादिककी दृष्टिमें १ सर्पादिककी श्वासमें २श्वानशृगालादिककी डाढ़में ३ व्याघ्रादिक के नखोंमें ४ बिषखपरादिकों केमलमें५मूत्रमें ६ बन्दरादिकोंके शुक्रमें ७ सिड़ीजानवर अर्थात् बावलेश्वानशृगालको आदिले तिनकीगुदामें ८सर्पादिकों केहाड़में ९ न्योलामच्छरको आदिलेइनकेपित्तमें १० भौंरादिक के कांटेमें ११ मूषकके दांतमें १२ सिंहादिकों के रोममें १३ ॥

अथ स्थावरविषखानेसे जोरोगहोयहैं सो लिखते हैं ॥

स्थावर बिषके खानेसे ज्वर और हिचकी होय दांत खट्टे होजायँ गला बँध जाय मुखमें फेना आवै छर्दि और अरुचि श्वास मूर्च्छा होय ये जिसमें लक्षण होयँ तब जानिये स्थावर बिष को खाया है १ ॥

अथ वृक्षादिकोंकी जड़ के विषके खानेका लक्षण ॥

वमन और मोहहोय २ ॥

अथवृक्षके पत्रके विषके खानेका लक्षण ॥

जम्हाई बहुत आवै शरीरकांपै श्वासहोय ३ ॥

अथ वृक्षादिकके फल के विषखानेका लक्षण ॥

मुखमेंसूजन और शरीरमें दाहहोय भोजनमात्रमेंद्वेषहोय४॥

अथवृक्षके पुष्पके खानेसे अथवा सूंघनेसे जो रोगहोय उसका लक्षण ॥

छर्दि और अफरा होय मूर्च्छा होय ५ ॥

अथ वृक्षादिक के वक्कल के खाने या लगने के विष का लक्षण ॥

उसके मुखमें दुर्गंधि आवै शरीर कड़ा होजाय मस्तकपीड़ा होय मुखमें कफ बहुत निकलै ६ ॥

अथ वृक्षादिक के दूध के विष के खानेका लक्षण ॥

हृदय दूखै मूर्च्छा होय मुखमें फेना आवै गुदाका बंध छूट जाय जीभ भारी होजाय ७ ॥

अथ हरतालादिक धातुओं के विष खाने का लक्षण ॥

हृदय दूखे मूर्च्छा होय शरीर में दाह लगिजाय और तालू में दाहहोय इसविषसे तत्कालमरै अथवा कालान्तरमें मरै ८ ॥

अथ कन्दविष सींगीमुहरा आदिके खाने आदि का लक्षण ॥

सींगी मुहरादिकके खानेसे मनुष्यादिक तत्काल मरिजायँ हृदय दूखै मूर्च्छा होय शरीरमें दाह होय तालू जले ९ ॥

अथ स्थावर विषमात्र के शुद्धहुये के खाने का गुण ॥

स्थावर विषमात्र रूखा और गरम और तीक्ष्ण है और इसका सूक्ष्म गुण है और स्त्री संग बहुत करावै है और सब शरीर में तत्काल फैलिजाय है और उगिआवै है और तत्काल इसका परिपाक होजाय है येदशगुण स्थावर विषमें हैं १० ॥

अथ स्थावर विषके खानेसे जोरोग उपजैं सो लिखते हैं ॥

बिष के रूखेपने से मल बिगड़े और सब स्थानों के जोड़ को काटै और बिष के सूक्ष्मपने के गुणसे शरीरके अंग २ में वह बिष बँटिजाय और बिषके पराक्रमसे स्त्री संग बहुत करे इस गुण से शरीर के दोषोंको और शरीरकी धातुओंको और शरीरके मल को बिगाड़ और बिष के शीघ्रपने के गुण से शरीरको क्लेशदे इसीकारण से बिषका यत्न अति कठिनहै ११ ॥

अथ बिषके पानीके बुझेहुये शस्त्रके लगनेका लक्षण ॥

बिषके पानीका बुझाहुआ शस्त्र जिसके लगै उसका घाव तत्काल पकि जाय और उस घाव में से रुधिर बहुत निकलै और उसका रुधिर काला होय और जिसमें दुर्गंधि बहुतआवै और जिसका मांस बिखरजाय तृषा लागै ताप दाह मूर्च्छा होय ये लक्षण होयँ तो जानिये कि किसी बैरी ने बिषके पानी के बुझेहुये शस्त्रसे मारा है ॥

अथ बिष देनेवाले के जानने का लक्षण ॥

बिष देनेवाले मनुष्य की वाणी की चेष्टा मुख की कान्ति

औरसी होजाय कोई उससेपूछे तो उसको उत्तरदे नहीं औरही कहे और विषका देनेवाला मोह को प्राप्तहोय बोलाजाय नहीं और बोले तो मूर्खकीसी तरह बोले और अंगुलीसे पृथ्वी को खने और भागिजाय और घरमें से निकलने को करै और इधर उधर वारंवार देखता जाय और उसका चित्त विपरीत होजाय ये सब लक्षण विषके देनेवाले में होयँ हैं सो बुद्धिमान् जानलें १२॥

अथ जंगमविषसर्पादि जिसे काटें उससे उपजा जो रोग उसका सामान्य लक्षण॥

जिसे ऐसे किसी जानवरने काटाहोय उसेनिद्रा और तन्द्रा होय और उसका सबज्ञान जातारहै दाहहोय अंधेरीआवै और उसस्थानमें सूजनहोय और अतीसारहोय ये सबलक्षणहोयँ तो जानिये किसी बिषैले जानवरने काटा है १३॥

अथ भोगीमण्डल नाम जो सर्प उसके काटनेके पृथक् २ लक्षण॥

वायुकी प्रकृतिवाला भोगी पित्तकी प्रकृति वाला मण्डल नाम कफकी प्रकृति वाला राजिलनाम ये सर्पजिसेकाटैंउनका लक्षण लिखतेहैं॥ भोगीसर्प जिसेकाटे उसके दंशकी जगह पीली पड़िजाय और उसके सब वायुके रोग उपजिआवैं और मण्डलनाम सर्प जिसेकाटे उसके काटनेकी जगह पीली पड़ि जाय और कोमल सूजन होय और उसके पित्तके सबरोगहोजायँ॥ और राजिलनाम सर्प जिसेकाटे उसके काटने की जगह में स्थिर सूजन होय और उस स्थान में पीले चिकने झागको लियेगाढ़ा रुधिर निकले और उसके कफके सब रोग हो जायँ १४॥

अथ देशविशेष और कालविशेषमें जो सर्पादिक काटें उनका लक्षण॥

पीपलके स्थानमें देहरेमें मशानमें ड्योढ़ी के निकट चौहटे में सन्ध्याके समय भरणीनक्षत्र और मघानक्षत्रमें और मर्म्म स्थानमें जो सर्पादिक मनुष्यकोकाटैं तो मनुष्यमरजाय १५॥

अथ दर्वीकरनाम सर्प जिसका फन करछीकेसदृशहोय उसकेकाटनेका लक्षण ॥

जिसकाफन हिये के सदृश अथवा छत्र वा कमल अंकुश के सदृश होय और वहसर्प जल्दीचले उसे दर्वीकर सर्पकहिये १६ इतने मनुष्यादिकोंके सर्पादिक काटें तो यत्न कीजेनहीं। अजीर्णवालेको। गर्मी के विकारवाले को। बालकको। बूढ़ेको। भूखे मनुष्यको। घायलको। प्रमेहवालेको। गर्भवाली स्त्रीको। जिसके शरीरमें रुधिर नहींहोवे इनमनुष्यों को सर्पादिक काटें तो असाध्य जानिये १७ अथवा जिसके मुखमें रुधिरकी धार पड़े और जिसकी गुदा और इन्द्रीमें रुधिरकी धारपड़े सो भी असाध्य है १८ ॥

दूसरे विषका लक्षण ॥

स्थावर अथवा जंगम जो बिषहैं सो बहुत दिनों के प्रभाव से औषध से भी बिषहोजायहैं उनका गुण जातारहै उनपुरानी औषधादिकको बिषसे मूर्च्छा व भ्रम वमनादि होजायँ १९ ॥

अथ मूसेके विषका लक्षण ॥

जहां मूसाकाटे उस जगह रुधिर पीला निकले और उस जगह मण्डल पड़जाय और ज्वर अरुचि रोमांच और दाह होय ये लक्षण होयँ तो मूसेकाकाटा जानिये २० ॥

अथ प्राणहर मूसेके विषका लक्षण ॥

जिस मूसेके काटनेसे मूर्च्छाहोय अंगमेंसूजन औरशरीरका वर्ण औरसा होजाय शरीरमें खेद बहुतहोय काटनेकीजगहमें रुधिरबहुतपड़े और ज्वरहोयआवे शिरभारीहोजाय लारबहुत पड़े रुधिर आवे इसमूसे के काटे को असाध्य जानिये २१ ॥

अथ गिरगिटके विषका लक्षण ॥

गिरगिटके काटनेकीजगह सूजनहोय और वहजगहकाली पड़जाय और शरीर के नानावर्ण होजायँ और मोहहोय अती-सार होजाय तबजानिये कि गिरगिटके काटनेका बिषहै २२ ॥

अथ विच्छूके काटने के विषका लक्षण ॥

शरीरमें जहां विच्छूकाटे उसजगह अग्नि लगि जाय और ऊंचाचढ़ै और काटनेकी जगह फटने लगै २३ ॥

अथ विच्छू के काटने का असाध्य लक्षण ॥

जो बिच्छू निपट जहरीहोय और नाकमेंकाटे तो उसजगह अग्नि बहुतजले उसकीजीभ पीडासे थकिजाय और उसजगह का मांस गिरनेलगै ऐसा मनुष्य मरजाय २४ ॥

अथ विषैले मेंढकके काटनेके विषका लक्षण ॥

बिषैला मेंढक जिसेकाटै उसके काटनेकी जगह सूजनहोय और वहां पीड़ाहोय और उसे तृषालगै और नींद बहुत आवै और वमनहोय २५ ॥

अथ विषैली मछलीके काटनेके विषका लक्षण ॥

बिषैली मछली जिसेकाटे उसके शरीरमें दाहलगै और उस जगह सूजन और पीड़ाहोय २६ ॥

अथ विषैली जोंकके काटनेका लक्षण ॥

उसजगह खाज और सूजन और मूर्च्छाहोय तब जानिये कि यह विषैली जोंकके काटनेका जहरहै २७ ॥

अथ विषैली विषखपरीनेकाटाहोय उसका लक्षण ॥

उसजगह दाहहोय और सूजनपीड़ाहोयपसीनाआवै२८ ॥

अथ कनसलाई के काटनेका लक्षण ॥

जिस जगह कनसलाई काटे उस जगह पीड़ाहोय पसीना आवै और दाहहोय २९ ॥

अथ मच्छर के विषका लक्षण ॥

उसजगह खुजलीचलै पीडाहोय औरकुछ सूजनहोय३०॥

अथ वनके मच्छर के काटे का असाध्य लक्षण ॥

जिसे बिषैलामच्छर काटे उस के पित्तसिमान लालचकत्ते

घाव समान गहरे पड़िजायँ और उस जगह पीड़ा बहुत होय यह असाध्य जानिये ३१ ॥

अथ विषैली मक्खी के काटने का लक्षण ॥

जिस जगह विषैली मक्खी अथवा भँवर मक्खी काटे वह जगह काली पड़िजाय दाह होय मूर्च्छा और ज्वर होय और वहां चकत्ते होयँ तो इसका काटा मरजाय ३२ ॥

अथ सिंह बघेरा चीता जिसे काटे उसका लक्षण ॥

जिसे सिंहादिक काटें उसका घाव पके और उसमें राद पड़े और ज्वर हो आवे ३३ ॥

अथ बावलेश्वानके काटेका लक्षण ॥

जिसके मुँहसे लार पड़े और वह श्वान् अन्धा और बहरा होजाय और चौगिर्द दौड़े और उसकी पूँछसूधी होजाय और उसकी डाढ़ और कन्धे और मस्तक दूखै तिस्से उसका मुख नीचेही रहै ऐसा श्वान अथवा स्यार सिंह व्याघ्रादिक भी बावला जानिये ३४ ॥

अथ बावले श्वानादिक जिसे काटैं उसका लक्षण ॥

जिसेबावले श्वानादिक काटैं उसका रुधिरकाला निकले और उसका हृदय शिर बहुत दूखै और ज्वरहोय शरीर जकड़ बन्द होय तृषा लगै और उस जगह खाज और पीड़ा होय शरीरका वर्ण औरसा होजाय शरीर में क्लेश बहुतहोय घुमेर आवै दाहहोय काटनेकी जगहसूजन होय गांठपड़जाय काटने की जगह फटनेलगिजाय और उसजगह फोड़े होयँ ये लक्षण बावले श्वानके काटने के जानिये ३५ ॥

अथ इसका असाध्य लक्षण ॥

जो पुरुष जलमें कांचमें तेलादिमें स्यार और श्वानकोदेखे औरपुकारउठेटेढ़ीचेष्टाकरनेलगिजायऔरडरेवहमरजाय ३६॥

अथ स्थावर विषमात्र का यत्न॥

जो स्थावर विष खाय उसे औषधादिक से वमन कराइये तो स्थावरविष जाय विषमात्रगरमहै इस वास्ते शीतल सब यत्नअच्छेहैं १ अथवा शहत घृत संयुक्त विषके दूरकरनेवाली औषध दीजे तो स्थावर विषजाय २ और स्थावर विषवालेको खटाईमिरच दीजैनहीं ३ औरउसके भोजनमें सांटीचावलकोदों सेंधानोन दीजे ४॥ अथ विषके दूर करने का लेप॥

फूल प्रियंगु। मालकांगनीकीजड़। पानकावक्कल। फूलबीज और सिरसका पंचांगइन्हें गोमूत्रमें महीनपीस लेपकरैतो स्थावर बिषकारोगजाय ५ अथवा पीपल। छड़। लोध। इलायची। कालीमिरच। नेत्रबाला। सोनागेरू इन्हें जलसे महीनपीसलेप करेतो विषजाय ६ येसबयत्न भावप्रकाशमें हैं॥ अथवाचौलाई की जड़को चावलोंके पानीमें पीसपीवे तो स्थावर विषकादोष दूर होय ७॥ अथ जंगम विषका यत्न॥

अथ मृत्युपाश छेदघृत लिखते हैं॥

हड़कीछाल। गोरोचन। कूट। आकके फूल। कमलकीजड़ नरसलकीजड़। बेतकीजड़। तुलसी। इन्द्रयव। मंजीठ। जवासा। शतावरि। सिंघाड़ा इनकाकाढ़ाकर उसमें गौकाघृतपकावे पीछे येसब जलजायँ घृतमात्रआयरहे तबइसघृतमें बराबरकाशहत डालइसका शरीरमें लेपकरै तो विषमात्रका दोषसांपकाकाटना आदि और सब जीवोंका विषदूरहोय इस घृतको खाने में लेप में नासमें दीजे ८ यह भावप्रकाशमें है॥

अथ सर्प के विषकेदूर होनेका यत्न॥

घृत। शहत। मक्खन। पीपल। अदरक। मिरच। सेंधानोन इन सबकोमहीनपीसपीवे तो कालेसांपकाकाटा भीअच्छाहोय९ अथवा सिरसके फूलके रसमें सहँजनेके बीजकी ७ पुटदे पीछे उसका अंजनकरे तो सांपका काटा अच्छाहोय १० अथवासुपेद

सांटीकी जड़ को पुष्यार्कके दिनल्यावे पीछे उसे चावलकेपानी से महीन पीसपीवे तो सांपकाकाटा अच्छाहोय ११ ॥

अथ विच्छूके विषका यत्न ॥

जमालगोटे को घिस बिच्छूके डंकऊपर लगावे तो विषदूर होय १२ अथवा नौसादर। हरताल इन्हें पानीमेंमहीनपीसबिच्छूके डंकपर लेपकरै तो बिच्छूकाविषदूरहोय १३ अथवापलास पापड़ेको आकके दूधमें घिस विच्छूकेडंकमें लगावे तो बिषदूर होय १४ अथवा सिरसके बीजों को बकरीके दूधमेंघिसबिच्छू के डंकमें लगावे तो विषजाय १५ ॥

अथ विच्छूके विष दूरहोनेका मंत्र ॥

ॐआदित्यरथवेगेन विष्णुवाहुवलेनच ॥ सुवर्णपक्षपातेन भूम्यांगच्छमहाविष १ भोपक्षयोगपदाज्ञा श्रीशिवोत्तम प्रभुपदाज्ञा भूम्यांगच्छमहाविष इस मंत्रसे २१ बार डंकके ऊपर झाड़ दीजे तो विच्छूका जहरजाय १ ॥

अथ कनेर के विषके दूरकरनेका यत्न ॥

हल्दीको दूधमें महीन पीस उस में मिश्री मिलायपीवै तो कनेरका बिष उतरे १६ ॥

अथ धतूरे के विषके दूर करनेका यत्न ॥

चौलाई की जड़ अथवा गिलोय इन्हें पीवे अथवा कपास के पंचांगको पीवे तो धतूरेका विषजाय १७॥

अथ आकके विष दूरहोनेका यत्न ॥

हल्दी। तिल। दूब इन्हेंबकरीके दूधमें महीनपीस लेपकरै तो आकका बिषजाय १८ ॥

अथ कोंचके विष दूरहोने का लेप ॥

घृतका मर्दन करे तो कोंचका विषजाय १९ ॥

अथ भिलावे के विषके दूर होनेका लेप ॥

सौबारकेधोयेघृतकामर्द्दनकरै तो भिलावेकाजहरजाय २०॥

अथ मक्खी के विषके दूर होनेका लेप ॥

केसर। तगर। सोंठि इन्हें जलसेमहीनपीस लेपकरै तोमक्खी का विषजाय २१ ॥ अथ भौंरा मक्खीके विषके दूरहोनेका यत्न ॥

सोंठि। कबूतरकीबीट। बिजौरेकारस। हरताल। सेंधानोन इन्हें महीनपीस लेपकरे तो भौंरामक्खीका विषजाय २२ ॥

अथ मूसे के विषके दूर होनेका यत्न ॥

घमसा। मंजीठ। हल्दी। सेंधानोन इन्हें पानीमें महीनपीस लेपकरै तो मूसेका विषजाय २३ ॥

अथ मेंढकके विषदूरहोनेका यत्न ॥

सिरसके वीजोंको थूहरके दूधमें महीनपीस लेपकरै तोमेंढक का विषजाय २४ ॥ अथ कनसलाईके विषकेदूरहोने का लेप ॥

दीपकके तेलका लेपकरे तो कनसलाई का विषजाय २५॥

अथ सर्प के विष दूरहोनेका अंजन ॥

जमालगोटेकी मींगीमें नींबके रसकी ७ पुटदे धूपमें सुखावे इसीतरह लाखके रसकी १ पुटदे पीछे इसका अंजनकरे तो सांपका काटा अच्छा होय २६ ॥

अथ वावला कुत्ता स्यार आदिकाटैं उसका यत्न ॥

यह जानवर जिसजगह काटें उसजगह का रुधिर कढ़ाय डालिये अथवा उसजगह लोहेकीशलाकासे दागदीजे तोकुत्ता स्यार आदिके विष दूरहोयँ २७ अथवा धतूरेका रस १ टं० भर आककादूध १ टं० घृत १ टं० इन्हें महीनपीसलेपकरे तो बावले कुत्तेकाविषजाय २८ अथवा धतूरेके फलकोबीजोंसमेत ले चौलाईकीजड़केरसमें पीस अथवा गोभी और शहतसेपीस पीछे लेपकरे तो बावले कुत्तेका बिषजाय २९ अथवामांसआक का दूध तल गुड़ ये सब बराबर ले पीछे १ टंक नित्य ७ दिन खाय तो इसका बिषजाय ३० अथवा इसमंत्रसे एकसौ आठ १०८ आहुतिदे और जिसको बावलाश्वानकाटेहोय उसेचौहटे

में अथवा नदीकेतीर स्नान कराय आप पवित्र होय इसमंत्रसे एकसौ आठ आहुति दे पीछे डाभसे इसकाझाड़ादे तोउसका बिष उतरे ॥ अथ मंत्र लिख्यते ॥

अलर्काधिपतेयक्षसारमेयगणाधिप। अलर्कजुष्टमेतन्मेनिर्विषंकुरुमाचिरात् स्वाहा इति मंत्रः ॥

अथवागुड़। तेलआकका दूधइनकालेपकरेतो श्वानकाबिष जाय ३१ अथवा कूकरकी बीटका लेपकरे अथवाग्वारके पट्ठे की गिरी सेंधालोन उसके ऊपर ५ दिन बांधे तो श्वान का बिषजाय ३२ अथवा चौलाईकीजड़। तुलसीकेबीजाखुरासानी वच इन्हें चावलकेपानीमें पीस ७ दिनपीवे तोश्वानकाबिषजाय ३३ अथवा चौलाई की जड़का रस और चोखाघृत मिलाय ७ दिन खाय तो श्वान का बिषजाय ३४ अथवा कड़वीतूंबी की जड़ ४ टंक सोंठि ४ टं० मिरच ४ टं० नींबकीनिंबोली ४ टं० शोधा जमालगोटा ६ टं० निसोत ७ टं० इन्हें महीनपीस गुड़में २॥ टं० भरकी गोलीबांधे १ गोलीगरमपानीसे ७ दिन तथा १४ दिन ले तो बावले श्वान का बिष जाय ३५ अथवा कड़वी तूंबी कीजड़। शिंगरफ। शोधा जमालगोटा। मिरच। फुलाया सुहागा ये सब बराबरले इनकी २ रत्ती भरकी गोली चौलाई के रस में बांधे १ गोली गरम पानी से ७दिनले तो श्वानका बिषजाय और जहां श्वानने काटाहोय वहांइसगोली को मूत्र में घिस लगावे तो मंत्र में होय लट गिर पड़े ३६ ॥ इति श्वानादिकके विषकायत्न और स्थावर जंगम बिषमात्रकी उत्पत्ति, लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजेन्द्र श्री सवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्थावरजंगमबिषमात्रकेभेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणंनाम एकोनविंशतितमस्तरंगः १९ ॥

अथस्त्रियोंके प्रदरको आदिले सबरोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्न लिखते हैं ॥

अथ प्रदर रोगकी उत्पत्ति ॥

विरुद्धभोजनसे बहुत मदकेपीनेसे भोजनकेऊपर भोजनकरनेसे अजीर्ण से गर्भके पड़नेसे अति मैथुन करने से सवारीके चढ़नेसे मार्गकेचलनेसे शोचसे अतितीक्ष्णपनेसे भारकेउठाने से चोटकेलगनेसे दिनकेसोनेसे स्त्रियोंके वायु पित्त कफ सन्निपात ये सबकोप्रकोपमासहो प्रदरकेरोगकोपैदाकरैहैं सो प्रदरका रोग चारप्रकारकाहै वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ ॥

अथप्रदरके रोगका सामान्य लक्षण ॥

स्त्रीकी योनिमें नानाप्रकारका रुधिर विनाही ऋतुनिकले और रुधिर निकलते हड़फूटनिहोय और सबशरीरमेंपीड़ाहोय उसे प्रदर रोगकहिये १ ॥

अथवायुके प्रदरका लक्षण॥

उसकी योनिका रुधिर रूखाहोय और झागोंको लियेहोय और मांसके पानी सदृश होय २॥

अथ पित्तके प्रदर रोगका लक्षण ॥

उसकी योनिका रुधिरपीला नीला सुपेदी को लिये और लाल गरम बहुतजाय और शरीरमें दाह होय यह पित्तके प्रदरका लक्षण है ३ ॥

अथ कफके प्रदर रोगका लक्षण ॥

जिसका रुधिर गोंद समान चिकना और गुलाबके जल समान जाय उसे कफका कहिये ४ ॥

अथ सन्निपातके प्रदरका लक्षण ॥

शहत अथवा घृतसमान हरतालके सदृशमस्तककी गूदीके समान मुरदेकीसी दुर्गंधि को लिये जिसका रुधिर जाय तो त्रिदोष का जानिये ५ ॥

अथ रुधिरके बहुत जानेका उपद्रव ॥

रुधिर बहुतजाय तब स्त्रीदुर्बल होजाय श्रमहोयमूर्च्छा और मदहोय तृषा बहुत लगे दाह प्रलापहोय शरीर पीला होय तन्द्रा होय और वायुके और भी रोगहोयँ ६ ॥

अथ प्रदरका असाध्य लक्षण ॥

योनिसेनिरन्तर रुधिरचलाकरे बन्दनहींहोय और तृषालगे दाहऔरशरीरमेंज्वरहोयशरीरदुर्बलहोयउसेअसाध्यजानिये७॥

अथ शुद्धआर्त्तवनाम स्त्रीके धर्मका लक्षण ॥

जो स्त्रीकी योनिका रुधिर महीने के महीने शशाके रुधिर समान निकले और रुधिरमें दाहनहींहोय और रुधिरनिकलते पीड़ा नहींहोय और पांचरात्रि तक निकले और बहुत निकले नहीं और थोड़ाभी निकले नहीं उसे शुद्धस्त्री धर्म्म जानिये ८ और स्त्री धर्म्म १६ दिन रहै है ॥

अथ प्रदर रोगका यत्न ॥

सोंचरनोन । जीरा । मुलहठी । कमलगट्टे इनका काढ़ाकर शहत डालले तो वायुका प्रदररोग जाय १ अथवा मुलहठी २॥ टं० मिश्री २ टं० इन्हेंमहीनपीस चावलकेपानीमेंले तोपित्त का प्रदररोगजाय २ अथवा रसौत २॥ टं० चौलाईकी जड़ का रस २ टं० भर उसमें शहद मिलाय ७ दिन पीवे तो सब प्रकारका प्रदररोगजाय ३ अथवा आसापालेके बक्कलकाकाढ़ा कर उसमें दूधडालपीवे तो बहुत भी प्रदरका रोगजाय ४ अथवा डाभकी जड़को चावलकेपानीसे पीस ३ दिन पीवे तो प्रदररोगजाय ५ अथवा कठूंबर के बक्कलके रसमें शहतडाले अथवा मिश्रीडाले और चावलकापानी डालपीवे तो प्रदररोग जाय ६ अथवा दारुहल्दी । रसौत । चिरायता । अडूसा । नाग-रमोथा । रक्तचन्दन । आकके फूल इनकाकाढ़ाकर उसमें शहत

लाल और सुपेदपीला सबप्रकारका स्त्रीकाप्रदर
डाल पीवे तो
रोगजाय ७ इतिदार्व्यादिक्काथ: ॥

अथवा गूलरके फलोंको सुखायकर उन्हें महीनघीस उसमें
मिश्री शहतडाल १ टं० भरकी गोलीबांधे पीछे इसगोली को
७ दिनखाय तो प्रदररोगजाय ८ ॥

अथ स्त्रियोंके प्रदरका भेद सोमरोग होय है उसका लक्षण ॥

स्त्रियों के बहुत प्रसंगसे शोच से खेदसे जहरके संयोगसे
अतीसारकी भांति स्त्रियोंके अथवा पुरुषकेभी सोमरोग होयहै
बारम्बार मूत्र बहुत उतरे इसकानाम सोमरोग कहिये ॥

अथ सोमरोगका सामान्य लक्षण ॥

सुन्दर स्वरूपवान् स्त्री जो बारम्बार बहुत मूते और वह
दुबलीहोजाय और उसको सुखघड़ी एककासी होयनहीं बहुत
मूतनेसे उसकाशरीर शिथिलहोजाय और मुख और तालू सू-
खाकरें और मूर्च्छाहोय और जँभाईबहुतआवें और प्रलापहोय
उसकी त्वचा सूखी पड़िजाय और भोजनादिक में तृप्तिहोय
नहीं ये लक्षण जिसमेंहोयँ उसे सोमरोग कहिये १ ॥

अथ सोमरोगका यत्न ॥

पक्के केलेमें मिश्रीलगायखाय तो सोम रोगजाय १ अथवा
आंवले के रस में शहत डाल खाय तो सोम रोग जाय २
अथवा उड़दका चून । मुलहठी । बिदारीकंद इन्हें महीनपीस
उसमें बराबरकीमिश्रीमिलाय १ टकेभरदूधसे नित्य १० दिनले
तोसोमरोगजाय ३ ॥

अथ सुपेदप्रदर के जाने का यत्न ॥

आंवलेके ५ टंकबीजोंकोजलमेंभिगोय महीनपीसछानउसमें
शहत मिश्रीमिलाय नित्य १४ दिनपीवेतो सुपेदप्रदरजाय४॥

अथ मूत्रातीसारका लक्षण ॥

सोमरोग बहुतदिनरहै तो मूत्रातीसारहोय इसमूत्रातीसार
में बल जातारहै और मूत्र बहुत उतरै ५ ॥

अथ मूत्रातीसारका यत्न ॥

तालवृक्षकी जड़ । छुहारा । मुलहठी । बिदारीकन्द इन्हें महीनपीस इसमें शहत मिश्रीमिलाय १ टकेभर नित्यखाय तो मूत्रातीसार जाय ६ अथवा पवांड़की जड़को चांवलोंके पानी से पीवे तो मूत्रातीसार जाय ७ अथवा सुपेद मूसली । ताल वृक्षकीजड़ । छुहारा । पक्का केला इन्हें दूध से पीवे तो मूत्रातीसार जाय ॥

अथ प्रदरका और यत्न ॥

मूसेकी मेंगिनी २ टंक इसमें बराबरकी मिश्रीमिलायदूधसे ३ दिनपीवे तोस्त्रीके लाल सुपेद सबतरहके प्रदररोगअच्छेहोयँ ८ अथवा धवईकेफूल । बीजाबोल । मूसेकीमेंगिनी ये सबबराबरले इन्हें महीनपीस मिश्रीमिलाय २ टंकजलसेले तो प्रदरका रोग जाय । इति प्रदररोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

अथ स्त्रियोंकी योनिके रोगकी उत्पत्ति लक्षण संख्या लिखते हैं ॥

स्त्रियों के मिथ्या आहार मिथ्या बिहारकरके वायु पित्त कफ हैं सो दुष्टहोयँ स्त्रीकी योनिके बिषे बीसप्रकारके रोगको उपजावै हैं तिनकेनाम लिखते हैं उदावर्त्ता १ बंध्या २ बिप्लुता ३ परिप्लुता ४ बातला ५ लोहितक्षया ६ दुःप्रजाविनी ७ वामिनी ८ पुत्रघ्नी ९ पित्तला १० अत्यानन्दा ११ कर्णिनी १२ कर्णिका १३ अतिचरणा १४ अनावर्त्तवा १५ असतनी १६ खंडिता १७ अंडिनी १८ महाबिद्धता १९ सूचीवक्रा २० ॥

अथ स्त्रियोंकी योनिका लक्षण ॥

जो स्त्रीधर्म हो तो बड़े कष्टसे झाग को लिये रुधिर छोड़े उसे उदावर्त्त योनि कहिये १ और जो स्त्रीधर्म होय नहीं उसे बंध्या योनि कहिये २ और जिसकी योनिमें नित्यही पीड़ा रहै उसे बिप्लुतायोनिकहिये ३ और जिसस्त्रीके स्त्रीधर्महोते में बहुत पीड़ाहोय उसे परिप्लुता योनि कहिये ४ और जिसकी योनि कठोरहोय औरयोनिमें शूलचले उसे बातलायोनिकहिये५ और

जिसकी योनिमें दाहरहै औररुधिरनिकलाकरै उसेलोहितक्षया योनि कहिये ६ जिसकी योनि श्रवाकरे और कुपितरहै उसे दुःप्रजाविनीयोनिकहिये दुःप्रजाविनी अर्थात्‌उसयोनिमेंसंतति दुःखसे होय ७ जिस स्त्रीकी योनि पवन संयुक्तरुधिरको लिये वीर्य निकले उसे वामिनी योनिकहिये ८ और जिस स्त्रीके गर्भ रहै और फिरजातारहै उसे पुत्रघ्नी योनिकहिये ९ औरजिसकी योनिमें दाहबहुतहोय और पकिजाय और शरीरमें ज्वररहैउसे पित्तलायोनिकहिये १० औरजिसकी योनि मैथुनसे संतोषको प्राप्तनहीं होय उसे अत्यानन्दायोनि कहिये ११ और जिसकी योनिकर्णफूलके आकारहोय और उससेंकफ रुधिरनिकले उसे कर्णिनीयोनिकहिये १२ और जिसयोनिमें वीर्यनहींरहैउसेअति-चरणायोनि कहिये १३ और जिस स्त्रीके बहुत छोटेस्तनहोयँ उसे अस्तनीयोनि कहिये १४ और जिसकी योनि खंडिताहोय औरमैथुनकरतेकुछनीचेलटकिआवेउसेखंडितायोनिकहिये १५ औरजिसकीयोनिकाछिद्र सूक्ष्महोय उसेअंडिनीयोनिकहिये १६ और जिसकामुँह बढ़ाहोय उसे महाविवृता योनि कहिये १७ और जिसका मुँह सुई के समान होय उसे सूचीवक्त्रा योनि कहिये १८॥

अथ योनिकन्द रोगकी उत्पत्ति लक्षण॥

दिनके सोने से अति क्रोधके करनेसे खेदसे अति मैथुनके करनेसे योनि के ऊपर किसी तरह की चोट लगने से अथवा योनिमें नखदान के लगनेसे कफ कुपित होय योनि के विषे योनिकन्दनाम रोगको उपजावै है॥

अथ योनिकन्दरोगका स्वरूप॥

योनिके बीच एकगांठ राद रुधिर को लिये वड़हलके फल समान पीछे कहे हुये कारणों से उपजै उसे बदकहे हैं और योनिकन्द नामभी रोगकहे हैं १ सो योनिकन्दनामरोग चार प्रकारका है वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४॥

अथ वायुके योनिकन्दका लक्षण ॥

उस योनिके बीचकी गांठीरूखीहोय औरउसकावर्णअच्छा नहींहोय और योनिके वर्ण समान होय और उसगांठीका मुख फटा होय उसे वायुका योनिकन्द कहिये १ ॥

अथ पित्तके योनिकन्दका लक्षण ॥

उस योनिकी भीतरीगांठी दाहको लिये लालहोय औरउसे ज्वरहोआवे इसे पित्तका योनिकन्दकाहिये और जिस स्त्री के योनिकन्द रोगहोय उस स्त्रीके स्त्रीधर्म नहीं होय २ ॥

अथ वन्ध्यास्त्रीका यत्न ॥

जिसस्त्री के स्त्रीधर्म होय नहीं वहस्त्री नित्य मछलीकामांस खाय तो स्त्रीधर्महोय ३ अथवा कांजी नित्यखाय अथवा तिल नित्यखाय अथवा उड़द नित्यखाय अथवा दहीनित्यखाय तो उस स्त्रीके स्त्री धर्महोय तब उसका बंध्यापनेका दोषदूरहोय ४ अथवा सांठीके बीज । कड़वीतूंबी । दात्यूणी । पीपल । गुड़ । मेढ़ल । दारूकाझाग । जवाखार । थूहरकादूध इनसबको इकट्ठाकर महीनपीस योनिमें इनकी बत्ती डाले तो स्त्रीके स्त्रीधर्म तत्काल होय और उसके बंध्यापनेका दोष तत्काल दूरहोय ५ अथवा मालकांगनी । राई । विजयसार । खुरासानी बच । इन्हें महीन पीस शीतल जलसे ५ दिन पीवे तो उस स्त्रीके स्त्रीधर्म्म होय और उसका बंध्यापना जाय ६ ॥

अथ बांझस्त्री के पुत्रहोनेका यत्न ॥

खरैटी । गंगेरनकीछाल । महुआ । बड़के अंकुर । नागकेसर ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस गौके दूधमें ५ टंक शहतडाल इसचूर्णको नित्य १५ दिनपीवे तो बंध्यास्त्रीके निश्चय पुत्र होय ७ ॥

अथ स्त्रीधर्म नहीं होय उसका यत्न ॥

कालातिल।सोंठि।मिरच। पीपल।भारंगी। गुड़ इनसबको १टंकभर औटाय इनकाकाढ़ाकर १५ दिन पीवे तो उस स्त्रीके

स्त्रीधर्म निश्चय होय और उसके रुधिरका गुल्म दूरहोय और उस के पुत्रहोय ८ अथवा असगन्धके काढ़े में गौकादूध और घृत मिलाय ऋतुके समय स्त्री प्रभातही ५ दिनपीवे तो स्त्रीके गर्भरहे ९ अथवा सुपेद कटेली की जड़ पुष्य नक्षत्रके दिन उपायकर २॥ ट० भर पीस दूधकेसाथ ऋतुकेसमय ३ दिनस्त्री पीवे तो निश्चय गर्भको धारणकरे १० अथवा कटसेला की जड़ । धवई । बड़केअंकुर । कमलगट्टे इन्हें महीनपीस २॥ ट० ऋतुके समय स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे ११ अथवा पार्श्वपीपल अर्थात् सुपेदपीपलकी जड़ अथवा इसके बीज और सुपेदजीरा और सरफोंका ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस २ ॥ टंक ऋतुकेसमय स्त्री दूधकेसाथ ले तो उसस्त्री के गर्भरहे और निश्चय उसके पुत्रहोय १२ अथवा वाराही-कन्द और कैथा और शिवलिंगी इन्हें महीनपीस ऋतुके समय २॥ टंक दूधके साथ ले तो स्त्री के निश्चय पुत्रहोय १३ येसब यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं अथवा बिजौरे के बीजों को गौके दूधमें पकावे उसमें गौकाघृतमिलावे और उसकी बराबरनाग-केसर मिलाय ऋतुसमय ५ टंक मिश्रीके साथ ७ दिन खाय तो स्त्री गर्भ को धारण करे १४ अथवा अरंड की अंडोली और बिजौरे के बीज इनदोनों को घृत में पीस दूध के साथ ऋतुमें स्त्री ३ दिन पीवै तो स्त्री गर्भ को धारण करे १५ अथवा पीपल । सोंठि । मिरच । नागकेसर इन्हें महीनपीस ऋतुके समय स्त्री घृत के साथ ३ दिनपीवै तो स्त्रीगर्भको धारण करै १६ यह सर्व्वसंग्रहमें लिखा है ॥

अथ गर्भ नहीं रहने की औषध ॥

पीपल । वायविड़ंग । सुहागा ये बराबर ले इन्हें महीनपीस ऋतुके समय स्त्री ५ दिन जलसे ले तो स्त्री के कभी गर्भ भी रहै नहीं १७ अथवा पुराना गुड़ १ट० भरले इसेऔटाय ऋतु

के समय स्त्री नित्य १५ दिन पीवै तो स्त्री कभी भी गर्भ को धारै नहीं १८ अथवा निबौली के तेलके फोहे को स्त्री ऋतुके समययोनिमें ५ दिन देतो स्त्री के कभी गर्भ नहीं रहै १९ यह भावप्रकाश में है ॥

अथ स्त्री की योनिके रोगों का क्रमसे यत्न लिखते है ॥

तगर। कटेली। कूट। सेंधानोन। देवदारु इनका काढ़ाकर इस काढ़े में तेल पकावे पीछे इस तेलकाफोहा योनिमें रक्खैतो स्त्रीकी विप्लुतायोनिका रोगजाय २० वायुकी योनि के रोगोंके दूरकरनेके वास्ते पाढ़ल के पत्तोंको अथवा उसकेबक्कलको सिझाय उससे योनिको पसीनालिवावे और धोया करै तो वायुकी योनिके रोगजायँ २१ अथवा पित्तकीयोनिके रोगोंको दूरकरने के वास्ते तिलों के तेलमें निबौलीको पकाय इसतेलसे योनिको सेंकै तो पित्तकी योनिके रोगजायँ २२ अथवा पित्तको हरने-वाली औषधके घृतसे योनिको सेंकै तो पित्तकी योनिके रोग जायँ २३ अथवा आंवलेके रसमें मिश्रीडाल स्त्री १० दिनपीवै तो स्त्रीकी योनिका दाहजाय २४ अथवा कूकरभांगरेकी जड़को चांवलोंके पानीकेसाथ स्त्री पीवै तो स्त्री की योनिमें रादपड़ती दूरहोय २५ अथवा नींबके पत्ते। किरमालाके पत्ते। खुरासानी बच। अडूसेकेपत्ते। पटोलकेपत्ते इन्हें औटाय इससे योनिको धोवे तो योनिकी दुर्गन्धिजाय २६ और पीपल। मिरच। उड़द। सौंफ। कूट। सेंधानोन इन्हें औटाय इससे योनिको धोवै तो योनिके कफके सबरोग जायँ २७ ॥

अथ योनि संकोचनकी औषध ॥

मूंगकेफूल। खैर। सार। हड़। जायफल। माजूफल। सुपारी इन्हें महीनपीस महीनबस्त्रसे छान स्त्री की योनिमें रक्खै तो स्त्री की योनिसंकीर्णहोय २८ अथवा कौंचकी जड़के काढ़ेसे योनि धोवै तो स्त्री की योनि गाढ़ी होय २९ अथवा भांग को

महीनपीस इसकी पोटलीकर स्त्री योनिमें रक्खे तो योनिमहासंकीर्ण होय ३० अथवा मोचरस को महीनपीस इसकी पोटलीकर स्त्रीयोनिमें रक्खे तोस्त्रीकी योनिसंकोचको प्राप्तहोय ३१ अथवा आंवलेकीजड़।कटसेला। बबूलकीजड़। बेरकीजड़। अडूसेकीजड़। माजूफल इनसबको औटाय इसपानीसे योनिकोधोवै तो योनि संकोचहोय ३२ अथवा दहीसे योनिकोधोवे तो योनि संकोच होय ३३ अथवासपेद फिटकरीको फुलायमाजूफल मिलायमहीनपीस पोटलीकरयोनिमेंधरै तोयोनिसंकोचहोय ३४॥

अथ योनि के सब रोगों के दूरहोनेका फलघृत॥

मजीठ। मुलहठी। कूट। त्रिफला। मिश्री। खरैटी। मेद। असगन्ध। अजमोद। दोनों हल्दी। फूलप्रियंगु। कुटकी। कमलकीजड़। दाख। रक्तचन्दन ये सब धेले २ भरले और गौकाघृत पावभर शतावरिकारस एकसेर ले पीछे इसे मधुरी आंचसेपकावे ये सबजालिजायँ घृतमात्रआयरहे तबइसघृतको पुरुष अथवा स्त्री नित्य १ ट० भर पीवे तो पुरुष जो नपुंसकभी होय तो महाकामी बड़ापराक्रमी पुत्रों को उपजानेवाला इस फलघृतके प्रभावसे होय और स्त्रीजो इस घृतकोखायतो योनि के सबरोग जायँ और उसके घृतके प्रभावसे पुत्रहोयँ दीर्घायु बलवान् बुद्धिमान् होय ३५॥

अथ योनिकन्दका यत्न॥

गेरू। बायबिड़ंग। हल्दी। कायफल इन सबको महीन पीस त्रिफलेके काढ़ेमें शहत मिलाय इसचूर्णको स्त्री योनिमें रक्खे तो स्त्रीका योनिकन्दरोग जाय ३६॥

अथ गर्भिणी स्त्रीके रोगोंका यत्न॥

जिसस्त्री का गर्भ गिरताहोय उसे झाऊकी जड़। अतीस। नागरमोथा। मोचरस। इन्द्रयव इनका काढ़ा करदे तो उसस्त्री का गर्भगिरना बन्दहोय ३७॥

अथ गर्भिणी स्त्रीके ज्वरका यत्न ॥

मुलहठी । रक्तचन्दन । खस । गौरीसर । कमलकीजड़ इन काकाढ़ाकरमिश्रीशहतडालपीवे तोगर्भिणीस्त्रीकाज्वरजाय ३८॥

अथ गर्भिणी स्त्रीकीसंग्रहणी का यत्न ॥

चांवलोंके सत्तूको आम और जामुनके बक्कलके काढ़ेसेलेतो गर्भिणीस्त्रीकी संग्रहणी जाय ३९ अथवा झाऊ वृक्षका बक्कल। अरलूका बक्कल । रक्तचन्दन । खरैटी । धनियां । कुड़ाकीछाल । नागरमोथा । जवासा । पित्तपापड़ा । अतीस इनका काढ़ाकर गर्भिणीस्त्रीले तो अतीसार और संग्रहणीज्वरकोदूरकरैहै ४०॥

अथ स्त्रीके गर्भके गिरने की और गर्भश्रावकी उत्पत्ति लक्षण ॥

बहुत मैथुनके करनेसे मार्गके चलनेसे ज्वरके आनेसे उपवासकेकरनेसे चोटके लगनेसे अजीर्णमें भोजनकरनेसे दौड़ने से बमनके करनेसे जुलाबके लेनेसेतीखी कड़ुवी गर्म रूखीबस्तु के खानेसे विषमआसनके बैठनेसे भयके होनेसे पेटमें शूलके चलने से इत्तनी बस्तुओंसे स्त्री के गर्भका गिरना और गर्भ का श्राव होयहै ४१ ॥

अथ गर्भ के गिरनेका और गर्भश्रावका पूर्वरूप लिखते हैं ॥

स्त्रीके गर्भरहे पीछे चार महीनेमें जो गर्भ गिरैतो उसेगर्भश्राव कहिये और चारमहीनेके उपरांत पांच छः महीनेमें गर्भ गिरै उसे गर्भपात कहिये इस जगह दृष्टांत है जैसे वृक्ष का लगाफल किसीकीचोटलगनेसे गिरपड़ै तैसेही कच्चागर्भ किसी तरहकी चोटलगनेसे गिरपड़ै ४२ ॥

अथ गर्भ श्रवता होय उसके थँभनेका यत्न ॥

कमलकी जड़ । कमलकी नाल। कमलके फूल । मुलहठी इन्हें दूधकेसाथ औटायपीवे तो गर्भश्राव बन्दहोय और यही गर्भिणीस्त्रीकेदाह । मूर्च्छा । छर्दि। अरुचि इनकोदूरकरै ४३ ॥

अथ गर्भपातका उपद्रव॥

स्त्रीके गर्भगिरे तब दाहहोय। शूलहोय। पसली और पीठ में पीड़ा होय। रजोधर्म बहुतहोय। और मूत्र उतरै नहीं ४४ और गर्भस्थानमें जाय उसकेभी यही उपद्रव होयँ ४५॥

अथ गर्भपड़ताहोय उसके थँभनेका यत्न॥

डाभकी जड़। कासकी जड़। अरंडकीजड़। गोखुरू की जड़ इसमें गौका दूध औटाय गर्भिणी स्त्री पीवे तो उसके हृदयआदिका शूलजाय ४६ अथवागोखुरू। मुलहठी। कटेली। मदनबाणके फल इन्हैं गौके घृतमें औटाय स्त्री पीवै तो गर्भ पड़ना बन्दहोय औरस्त्रीकेशरीरकीसबप्रकारकीवेदनाजाय ४७ अथवाकुम्हारकेचाककीमिट्टी। गेरू। चमेली। मंजीठ। धवई केफूल। रसौत। राळइनकाचूर्णकर ५ टंक शहतसे खोले तो स्त्रीकेप्रदरआदिसबरोगजायँ ४८ अथवामृङ्गीअ० भौंराजानवर केघरकीमिट्टी। मंजीठ। लज्जालू। कसेलू। कमलकीजड़ इन्हैं गौके दूधमें औटाय स्त्री पीवेतो गर्भ गिरनाबन्दहोय ४९॥

अथ गर्भिणी स्त्रीके अफराहोयउसका यत्न॥

खुरासानीबच। रसौत। हींग। कालानोन इनसेंदूधऔटावे पीछेपीवे तो स्त्रीका अफरा जाय ५०॥

अथ गर्भिणीस्त्रीके मूत्रउतरैनहीं उसका यत्न॥

डाभकी जड़। दूबकी जड़। कास की जड़ इन्हैं दूधमें औटा-य स्त्री पीवेतो मूत्रउतरे ५१॥

अथ महीनेके महीने येऔषधदे तो स्त्रीका गर्भ गिरेनहीं सो लिखतेहैं॥

मुलहठी। शालवृक्षकेबीज। क्षीरकाकोली। देवदारु। लू-णाख्य अर्थात्लोनियाशाक। कालातिल। राल। पीपल। शता-वरि। कमलकीजड़। जवासा। गौरीसर। रास्ना। दोनों क-टेली। सिंघाड़ा। कसेरू। दाख। मिश्री इन्हैं औटाय महीनेके म-हीने ७ दिन पीवे तो स्त्रीकागर्भ गिरे नहीं और कोई उपद्रव

होय नहीं ५२ ॥ ये सब यत्न सातमहीने तक कीजे ॥

अथ आठवें महीने का यत्न ॥

कैथाकीजड़। कटेलीकी जड़। बेलकी जड़। पटोलकीजड़। सांटीकी जड़ इन्हें दूधमें औटाय पीवे तो गर्भपुष्ट रहै ५३ ॥

अथ नवें मासका यत्न ॥

मुलहठी। जवासा। क्षीरकाकोली। गौरीसर इन्हें धेले २ भरले फिर उसे दूधमें औटायपीवै तो गर्भ पुष्टरहै ५४ ॥

अथ दशयें महीने का यत्न ॥

सोंठि। क्षीरकाकोली इन्हें दूधमें औटाय पीवै अथवा सोंठि मुलहठी। देवदारु। क्षीरकाकोली। कमलगट्टे। मंजीठ इन्हें जलमें औटाय जलसमेत दूधमें औटावे पीछे पानी जलजाय दूधमात्र रहजाय तब इस दूधको पीवे तो स्त्रीका गर्भपुष्ट होय नीरोग्यरहे और उसके किसीतरहका उपद्रव उठे नहीं ५५ ॥

अथ वायु करके गर्भ सूखजाय उसका यत्न ॥

जिस स्त्रीका गर्भ वायुकरके सूखजाय तिस स्त्री का उदर परिपूर्ण होय नहीं खालीरहे तब वह स्त्री पुष्टाई के लिये दूध मांस रस और पुष्टवस्तु खाय और दूधपीवे तब वायु दूर होय गर्भ परिपूर्ण होय ५६ ॥

अथ गर्भके बालक के होनेका महीना लिखते हैं ॥

स्त्री नवेंमहीने अथवा दशवें महीने सन्तानको उपजावै है और कोई स्त्री ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने संतान को उपजावै है और इन महीने उपरांत जो गर्भ रहे वह गर्भ विकारका जानिये और इसगर्भको उदरके रोगोंमेंगिन उसका यत्न कीजे ५७॥

अथ स्त्रीके सुख पूर्वक प्रसव होनेका यत्न ॥

सांपकी कांचली। मरुवे अर्थात् नाजबोय इनदोनोंकी योनि में धूनी देतो स्त्री सुखसे सन्तान जन्मे ५८ अथवा कलिहारी

की जड़को स्त्रीहाथपैरोंमें बांधे तो स्त्रीके तत्कालप्रसूतिहोय ५९ अथवा कूकरभांगरेकी जड़ और पाढ़लकी जड़ को स्त्री हाथ पैरोंमें बांधे तो स्त्रीके तत्काल प्रसूति होय ६० अथवा पोईकी जड़के काढेमें तिलोंका तेल डाल स्त्री गर्भके लेपकरै तो सुखसे तत्काल प्रसूति होय ६१ अथवा पीपल। खुरासानीवच इन्हें जलसे महीनपीस योनिकेलेपकरै तो सुखसे तत्कालप्रसूतिहोय ६२ अथवा अरंडके तेलको स्त्रीकी नाभिकेलेपकरै तो तत्काल प्रसूतिहोय ६३ अथवा बिजौरेकीजड़। महुआ इनदोनोंकोघृत से पीस स्त्री पीवै तो तत्काल प्रसूतिहोय ६४ अथवा साटीकी जड़को स्त्रीकी कटिमें बांधे तो तत्काल प्रसूतिहोय ६५ ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं अथवा अपामार्ग की जड़को। काकलहरी की जड़को कटिमें बांधे तो तत्काल प्रसूतिहोय ६६ ये योग चिन्तामणिमें लिखे हैं॥

अथ सुख से तत्काल प्रसव करनेका मंत्र यंत्र लिखते हैं॥

मुक्ताःपाशाविमुक्ताश्चमुक्ताःसूर्येणरश्मयः।मुक्ताःसर्वभयाद्गर्भएह्येहिमाचिरमाचिरस्वाहा॥इसमंत्रसे जलको ७ बार मंत्रितकरिस्त्रीको पिलावै तो तत्काल प्रसूति होय ६७ अथवा इसयंत्रको स्त्री देखै तो तत्काल प्रसूति होय ६८॥

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ मूढगर्भ की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

जिस स्त्री के शरीरमें वायु कुपित होय तौ उस स्त्रीकी योनिमें और उदर कोखमें शूलकोकरै और मूत्र उतरने दे नहीं और वह दुष्ट पवन गर्भ को योनिमें चारप्रकार करके टेढ़ा करदे सो लिखते हैं॥

अथ गर्भ में दुष्टपवन करके बालक चारप्रकार का अथवा आठ प्रकार का रहै है सो प्रकार लिखते हैं॥

कीलक १ प्रतिखुर २ परिघ ३ बीज ४ ऊर्ध्वबाहु चरण शिर

पसलियों के भेदसे आठ प्रकारसे बालक गर्भमें रहै है १ ॥

अथ कीलकका लक्षण ॥

स्त्रीकीयोनिकेमुखमें कीलासालगिजाय उसेकीलककहिये १ और स्त्री की योनिके मूढ़े हाथ पैर आड़ा आयजाय उसे प्रतिखुर कहिये २ स्त्रीकी योनि के मूढ़ेमें आगिसी लगिजाय उसे परिघ कहिये ३ स्त्री की योनिके मूढ़े में शिर आयअटके उसे बीजक मूढ़ गर्भ कहिये ४ स्त्रीकीयोनिके मूढ़ेमें पेटआयअटके उसेऊर्ध्वबाहुकहिये५ स्त्रीकीयोनिके मूढ़ेमें पसवाड़ाआयअटके उसेचरणशिरकहिये ६ और स्त्रीकी योनिके मूढ़ेका मुखनीचा होय ७ स्त्रीकी योनिके मूढ़ेमें पसवाड़ा पीठआय अटके ८ ऐसे मूढ़ गर्भ आठप्रकारसे होय हैं ॥

अथ मूढ़गर्भका असाध्य लक्षण ॥

जिसगर्भवती स्त्रीका मस्तक सूधारहै नहीं लटका जाय और जिसस्त्रीकी लाज जातीरहै और अंग शीतलहोजायँ और शरीर की नसें नीली होजायँ उस स्त्रीका बालक मरा जानिये और वह स्त्री मरजाय १ ॥

अथवा जिसस्त्रीके गर्भमें बालक माराहोय उस स्त्रीका गर्भ फड़कैनहीं और उसकामुंह कालापीला नसों को लियेहोय और उसकी नाक और मुँहकेश्वासमें मरेकीसी दुर्गंधआवे और पेटमें शूल चले ये लक्षण होयँ उसेजानिये इसके उदरमें मरा बालकहै २ ॥ अथ जिसके पेट में बालक माराहोय उसका कारण ॥

जिस स्त्रीका कोई भाई माता पिता पुत्र स्वामी आदि कोई प्यारा माराहोय अथवा उसका द्रव्यादिक किसी तरहसे जाता रहै अथवा उसकेउदरमें किसी तरहकी चोटलगिजाय तबउस स्त्रीको दुःख उपजे तब उसदुःखके प्रभावसे उसकागर्भ बहुत दुःखीहोय और उसकी कूखमें अनेकरोग पैदाहोयँ तब उसके पेटका बालक पेटमें मरजाय ३ ॥

अथ गर्भिणी स्त्रीका असाध्य लक्षण॥

जिस स्त्रीकी योनिका मुँह मरेबालकसे ढकिजाय और कुक्षिमें शूलचले उस गर्भकी मक्कल्लक संज्ञाहै और पीछेकहेउपद्रव सोभी होयँ ४ ॥

अथ मूढगर्भका यत्न ॥

जिस स्त्रीके गर्भसमय भगके निकट बालक बुरीतरहआय गया होय उसके वास्ते निपट चतुर जिसनेबहुतबालकअच्छी तरह जनायाहोय ऐसी दाईको बुलाइये सो हाथ में घृतलगाय वह हाथ चतुराई से भगमेंडाल बालकको सूधाकर जीवताही तत्काल भगमें से बाहरकाढ़े ५ ॥

अथ गर्भमें बालक मरगयाहोय उसका यत्न ॥

निपट चतुर दाईहोय सो चतुराईसे भगमें पैना छोटानस्तर डाल उसमरेबालकका अंग‌अंगकाटि चतुराई से भगके बाहर सब अंगकाढ़े सो उसमरेबालकको इसतरह भगमेंसे काढ़ैनहीं तो वह गर्भवती स्त्री उसके साथ मरिजाय और मरे बालकको गर्भमेंसे काढ़नेकेपीछे भगको चतुराईसे गर्म पानीसेधोवै और उसीसमय सुहावते गर्मघृत से अथवा तेल से चुपड़े तो भग कोमलरहै और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव होयँ नहीं पीछे कड़वी तूंबी के पत्ते और पठानीलोध ये बराबरले महीनपीस इसका भगमें लेपकरे तो भगज्योंकीत्यों अपनेठिकाने बैठिजाय अथवा पलाश पापड़ा पक्केगूलर का फल इन्हें बराबरले पीछे इन्हें तिलोंके तेलमें महीनपीस भगके लेपकरे तो भगगाढ़ी हो जाय और इसीतरह २१ दिनकरे तो भगमें कोई रोग होयँ नहीं ६ ॥

अथ इसका और यत्न लिखतेहैं ॥

सर्पकी कांचली । कूट । सरसों इन तीनों को महीन पीस, कड़वे तेलसे भगकेधूनीदे तो भगके रोगजायँ ७ अथवा कलिहारीकी ज़ड़को औटाय उस पानीसे हाथों पैरोंमें लेप करै तो भगमेंसे मरे बालकका दोष दूरहोय ८ ॥

अथ मकल्लकरोगकी उत्पत्ति लक्षण ॥

जिस स्त्रीके संतान हुईहोय और वह स्त्री रूखी और बायल अर्थात् वायुकी करनेवाली वस्तुखाय उसस्त्रीको तीक्ष्णद्रव्य । पीपलामूल आदिमिलैंनहीं और वहखायनहीं उसके बायुहै सो नाभिकेनीचे अथवा दोनोंपसलियों में अथवा पेडूमें रुधिर को रोंक वायुकी गांठिकरै है अथवा वहवायुहै सोनाभि और पेडूमें उदर और पक्काशयमें शूलको प्रकटकरै है अथवा वह वायु है सो पेडूमें अफराको करै है और मूत्रको उतरनेदे नहीं उसे वैद्य मकल्लकरोगकहै हैं १॥

अथ मकल्लक रोगका यत्न ॥

जवाखारको गर्म पानीसें पीस जो स्त्री ले तो मकल्लक रोग जाय २ अथवा पीपल। पीपलामूल। मिरच। सोंठि। चित्रक। चव्य। सम्हालू। इलायची। अजमोद। सरसों। सेंकीहींग। पाढ। इन्द्रयव। सपेदजीरा। बकायन। मूर्वाअ० मुरहरी। अतीस। कुटकी। बायबिडंग यहपिप्पल्यादिगणहैं इन्हेंबराबर ले महीनपीस २॥ टं० गर्मपानीसे ले अथवा इनका काढ़ाकर इसमें थोड़ा सेंधानोनडालिलेतो स्त्रीके कफ या वायुके सबरोग जायँ और स्त्रीके गोले शूल उदर के रोग ज्वरको दूर करे और भूख लगावै और आँवको दूरकरै और यह मकल्लक रोग को निश्चयही दूर करै ३ अथवा सोंठि। मिरच। पीपल। तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। धनियां इनसबको महीनपीस २॥ टंक पुराने गुड़सेलेतो मकल्लक रोगजाय ४ और जिसस्त्री के प्रसूति हुई होय उस स्त्रीको युक्ति से आहार विहार करावै और वह इतनी बस्तु करैनहीं खेद मैथुन क्रोध ठंढेमें रहना ये बस्तु करैनहीं मिथ्या आचरणकरै तो उसके सूतिकारोगहोय॥

अथ सूतिकारोगकी उत्पत्ति ॥

मिथ्या आहार करके बहुत क्लेशकरके बिषम आसन करके

अजीर्ण में भोजन करके और जापा अर्थात् सौरि में जो रोग होयहैं सो सर्व भयंकर हैं ॥

अथ प्रसूतिका रोगका लक्षण ॥

अंगोंमें पीड़ा होय ज्वर खांसी होय तृषा बहुत लगै शरीर भारी होय और शरीर में सूजन और पेटमें शूल अतीसारअफरा होय शरीरका बल जातारहै तन्द्रा और अरुचिहोय और इनको आदिले वायु कफके बहुत रोग होयँ और बल मांस अग्नि जाती रहै इन सबरोगोंको सूतिका रोग कहिये १ ॥

अथ सूतिका रोगका यत्न ॥

जो वस्तु वायुको दूरकरै सोसब औषध सूतिकारोगोंकोदूर करै २ अथवा दशमूलका काढ़ा सूतिका रोग को दूर करै ३ अथवागिलोय। सोंठि। सहँजना। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। नेत्रबाला इनका काढ़ा शहतडाल दे तो सूतिकारोग दूरहोय४अथवा देवदारु। खुरासानीवच। कूट। पीपल। सोंठि। चिरायता। जायफल। नागरमोथा। हड़कीछाल। गजपीपल। धमासा। गोखुरू। जवासा। कटेली। गिलोय। कालाजीरा ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकरै और हींग। सेंधानोनकी प्रतिवास दे यह काढ़ादे तो सूतिका रोग। शूल। खांसी। श्वास। ज्वर। मूर्च्छा। मस्तकपीड़ा। तन्द्रा। अतीसार। वमन इन सब रोगों को यह दूरकरैहै ५ इतिदेवदार्वादिकाथः ॥

अथ पंचजीरके पाक लिखते हैं ॥

कालाजीरा। सफेदजीरा। सौंफ। अजवायन। अजमोद। धनियां। मेथी। सोंठि। पीपल। पीपलामूल। चित्रक। झाऊकी जड़का बक्कल। बेरकी मींगी। कूट। कबीला येसब औषध टके२ भरले इन्हें महीनपीस कपड़छानकर पीछे गौके ३ सेर घृतमें मकरोवै पीछे इसचूर्णको ४ सेरगौकेदूधके मावेमें घृतसे मकरोवै चूर्ण का पकाय इसका खेरसावाकरै फिर इसमावेको १०

टकेभर खांड़की चासनीमें डाले पीछे एक टकेभरकी गोलीकर नित्यप्रसूता स्त्री खाय तो सूतिका रोग। ज्वर। क्षयी। श्वास। खांसी। पांडुरोग। क्षीणता। वायुके रोग इनको यह पंचजीरक पाक दूर करे है ६॥ अथ सौभाग्य शुंठीपाक॥

सतुवां सोंठि ।॥ सेर महीनपीस कपड़छानकर ।॥ सेरगौके घृतमें मकरोवें फिर ५ सेर खांड़की चासनीकर इसचासनीमें ये औषध महीनपीस कपडछानकरडाले सोऔषध लिखते हैं॥ धनियां १ ट० सौंफ ५ टंक वायविडंग १ टकेभर सोंठि १ ट० काचीमिरच १ ट० पीपल १ ट० नागकेसर १ ट० नागरमोथा १ ट० येसब औषध महीनपीस इसचासनीमें डाले सार५ टंक अभ्रक ५ टंक इसमेंडाले और मेवा यथारुचिडाल पीछे १टके भरकी गोली बांधे फिर इसगोलीको स्त्रीखाय तो तृषा। छर्दि। ज्वर। दाह। श्वास। खांसी। पांडुरोग। मंदाग्नि इनको यह दूर करे ७॥ इतिसौभाग्यशुंठीपाक॥

अथ स्तन रोगका लक्षण॥

सब शरीर में फैलते जो वायु पित्तकफ दोषसे यह दुष्टहुये स्त्रीके स्तनमें जाय प्राप्तहोयँ हैं उस स्त्रीके स्तन दूधसंयुक्तहोयँ अथवा दूध विनाहोयँ उनमें वे दुष्टहुये गांठि आदिरुधिरकेरोगों को पैदाकरे हैं १॥ अथ स्तन रोगोंका यत्न॥

स्त्रीकेस्तनके ऊपर वैद्यसुजन देखे तो विद्रधि का यत्न जो पीछे लिखाहै सो यत्नकरे तो स्त्रीके स्तनके रोगजायँ १ और स्तनके ऊपर गांठ कच्चीहीहोय तो गांठको दूरकरनेवाली शीतल औषधि लगावे तो स्तन के रोगजायँ २ अथवा जोंकलगाय स्तन का रुधिर कढावे तो स्तनके सब रोगजायँ ३॥

अथ स्तनकी पीड़ाका यत्न॥

गरडुवा की जड़को पानीमें पीसि उसकालेपकरे तो स्तनकी पीड़ाजाय ४ अथवा हल्दी। धतूरेकी जड़। इन्हें जलसेमहीन

पीस लेपकरै तो स्तनकीपीड़ादूरहोय ५ अथवा बाछ कंकोली कीजड़ महीनपीसज़लसेलेपकरै तो स्तनकी पीड़ाजाय ६ अथवा लोहेको गरमकर पानीमेंबुझाय वहपानी स्त्री पीवै तौस्तनरोग जाय ७ ये सबयत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ॥

अथ रांडस्त्री के गर्भ निवारण और गर्भपातनका यत्न ॥

ऋतुकेसमय चौथेदिनतालीस और गेरू २ टं० महीनपीस शीतलजलसे पीवे तो स्त्री बंध्याहोय १ ऋतुकेसमय चौथेदिन पलाशपापड़ेको शहत घृतसे महीनपीस भगमेंलेपकरे तो वह स्त्री गर्भको कभी धारणकरैनहीं २ अथवा गाजरकेबीज कलौंजी इन्हें गुड़केसाथखाय तो स्त्रीकागर्भ गिरपड़ै ३ अथवाचौलाईकी जड़को चावलोंके पानीकेसाथ स्त्री ऋतुके समय ५ दिनपीवे तो वहस्त्री बंध्याहोय ४ अथवाऋतुकेसमय नींबकी जड़को युक्तिसे योनिमें धूनीदे तो स्त्री बंध्याहोय ५ अथवा मेथीदाना ऽ॥ सेर गुड़ ऽ॥ सेर इन्हें पानीसेऔटाय यहजल ५ दिनपीवे और गरडुवाकीजड़ और रालइनकीवत्तीकरयोनिमेंधरे तो रंडास्त्रीकागर्भ पातहोय ६ अथवा कड़वीतूंबी और सांपकी केंचुली सरसों इन्हें कडुवेतेलमेंपीस भगकेधूनीदे तो स्त्रीके गर्भकापातनहोय ७—
इतिस्त्रीके सर्वरोगोंकी उत्पत्ति लक्षण यत्नसम्पूर्णम् ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रन्थे स्त्रीकेप्रदरको आदिले सर्व्वरोगोंके भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम विंशतिस्तरंगः २० ॥

अथ बालकों के रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

प्रथम बालकों के नवग्रह जुदेही हैं इनग्रहोंसे भिन्न हैं सो अपवित्र बालकोंको वे नवग्रह पीड़ाकरै हैं इस कारण से उन नवग्रहोंसे बालककी रक्षाकरनी चाहिये ॥

अथ बालक के नवग्रहोंके नाम ॥

स्कन्दग्रह १ स्कन्दापस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ गन्धपूतना ६ शीतपूतना ७ मुखमंडिका ८ नैग्रमेय ९ ॥

अथ नव ग्रहों की उत्पत्ति ॥

ये नवग्रह स्वामिकार्त्तिक की रक्षा के अर्थ महादेवजी ने उत्पन्न कियेहैं सो इन नवग्रहों का स्वरूप महासुंदरस्त्रीकासाहै और कईएक का स्वरूप सुन्दर पुरुष कासाहै अथवा स्वामि-कार्त्तिकजीका विशाख जिसकानाम सखा अग्निसमान जिसके शरीरकीकांति इन सबको श्रीमहादेवजीने पैदाकिया पीछे ये सबमिल स्वामिकार्त्तिकजीकेसाथ रहनेलगे फिरस्वामिकार्त्तिक जीसे उन सबोंने मिल बिनय किया महाराज हम भूखेहैं खाने केवास्ते कोईआजीविकाबतलाइये तबस्वामिकार्त्तिकजीनेमहा-देवजीसेकहा तब श्रीमहादेवजीने आज्ञादी जो जगत्के बिषय पशु पक्षी को आदिले तिर्य्यग्योनि और मनुष्य रहे हैं और देवता भी रहे हैं वे देवता मनुष्यों को पीड़ित करे हैं और काल पाकर देवता पशु पक्षी को भी पीडित करे हैं उष्ण काल में गरमी करके और बर्षाकालमें शीत पवन करके और शीतकालमें शीत करके और मनुष्यहैं वे नमस्कार जप होमा-दिक करके अच्छेप्रकार देवताओं को प्रसन्नकर भोजनका भोग देहैं और इसतरह जो मनुष्य नहीं करेहैं तिनके बालक को पीड़ाकरो और उन्हेंखाओ ॥

अथ बालग्रह ९ हैं सो बालकों के लेनेका कारण ॥

जिन मनुष्योंके कुलमें देवता पितर ईश्वर ब्राह्मण अतिथि गुरु अतिथिकी पूजादिक नहींकरैं और उन्हें भोजनादिक कुछ नहीं दें और कांसे के फूटे पात्र में जो खाय हैं उनके बालकों को तुम खाओ यह महादेव जीने उन ग्रहोंसे कहा तब उनकी आजीविका हुई १ ॥

अथ बालग्रह जिनबालकों को लगें तिनका लक्षण ॥

जिन बालकों को यह बालग्रह लगे सो बालक क्षण एक में तो उद्वेग को प्राप्त होयँ और क्षण एक में डरने लगि जायँ औ क्षण एक में अपनी धाय को नखों से और दांतों से काटने लगिजायँ और ऊंचा आकाश की ओर देखाकरैं और अपनेदांतोंको चाबाकरैं और कराहाकरैं जँभाई लियाकरैं और भौंह चढ़ायाकरैं ओठ काटा करैं और मुखमें झागआवै और बमन करैं अतीसार युक्तभी होयँ और उनका शरीर क्षीण पड़ि जाय और रात्रिमें जागें और शरीर में सूजन आय जाय और कंठकास्वर घों घों होय औरउसके शरीरमें मछलीकीसीदुर्गंधि होय और जिसका शरीर दुर्बलहोय और गुदामें रुधिर जाय और शरीरकी संज्ञाजाती रहै ये लक्षण जिनबालकों में होयँ उनके बालग्रहलगाजानिये कियेबालग्रहके सामान्यलक्षण हैं ॥

अथ बालग्रह जिसके होय उसका विशेष लक्षण ॥

जिसके अंग शिथिलहोजायँ और शरीरमें रुधिरकी दुर्गंधि आवै और स्तनोंकादूधपीवैनहीं और मुँहटेढ़ाहोजाय औरआधा अंग रहजाय और नेत्रोंमें आंशूरहैं रोवै ठोडीहाथकी मठीबँधी रहै ये लक्षण जिसकेहोयँ तबजानिये किइसेस्कन्दग्रहलगाहै १॥

अथ विशाखग्रह जिसेहोय उसका लक्षण ॥

जिसकी संज्ञा जातीरहै और फिर संज्ञाआयजाय औरकभी हाथ पगों को नचाने लगिजाय और बिनसंज्ञा मल मूत्र करदे और जँभाई बहुत आवै मुखमें झाग आवै तब जानिये कि इसे विशाखग्रह लगा है २॥

अथ शकुनीग्रह जिसे लगाहोय उसका लक्षण ॥

अंगशिथिलरहै भयसेचकितरहाकरै और उसके शरीरमेंमछलीकीसी दुर्गंधिआवै औरशरीरमें व्रणबहुत पड़जाय औरदाह होय ये लक्षणहोयँ तब जानिये कि इसके शकुनीग्रहलगाहै ३ ॥

अथ रेवती ग्रह जिसे लगा होय उसका लक्षण ॥

जिसका मुँह लाल और हरा होय और पीली जिसकी देह होय औरपीड़ाको लिये हाथपैर काले होयँ ऐसा बालकहोयतब जानिये इसके रेवतीग्रहका दोष है ४ ॥

अथ पूतनाग्रह जिसे लगाहोय उसका लक्षण ॥

जिसकाशरीर शिथिलहोय रातदिन सोवैनहीं और उसका मलपतला पडिजाय और उसके शरीरमें कागलकीसी दुर्गन्धि आवै और छर्दिहोय तृषाबहुतलगै ये लक्षणहोयँ तबजानिये कि इसके पूतनाग्रह लगाहै ५ ॥

अथ जिसके गंधपूतना ग्रह लगाहोय उसका लक्षण ॥

वहबालकस्तनकादूधपीवैनहीं अतीसारहोय खांसी हिचकी छर्दिज्वरहोय और शरीरका वर्ण जातारहै औरशरीरसें रुधिर कीसीदुर्गंधिआवै तबजानिये कि इसकोगन्धपूतनाकादोषहै ६ ॥

अथ शीतपूतनाकि दोषका लक्षण ॥

जो बालक रोवाही करै और कांपा करै और जिस की आंत बोलै शरीर शिथिल होजाय और अतीसार बहुतहोय य लक्षण होयँ तो शीतपूतना का दोष जानिये ७ ॥

अथ नैगमेय ग्रहके दोषका लक्षण ॥

जिसकेमुखमें बहुत झागआवै और कांपै बहुत औरऊंचाही देखै और पुकारबहुत और शरीरमें दुर्गंधिआवै संज्ञाजातीरहै तब जानिये कि इसके नैगमेयग्रहका दोषहै ८ और यहीलक्षण डाकिनी के दोषका जानिये ॥

अथ सामान्य ग्रहके दोषोंकायत्न ॥

गोरखमुंडी । खस इनकाकाढ़ाकर इसकाढ़े से बालक को स्नानकरावै १ अथवा हल्दी । चन्दन । कूट इन्हैं पीसशरीरमें लेपकरै तोबालकके सामान्य ग्रहके दोष दूर होयँ २ अथवा सांपकीकेंचुली । लहसुन । सरसों । नींबकेपत्ते । बिलाईकीबीट ।

अथ बालग्रह जिनबालकों को लगें तिनका लक्षण ॥

जिन बालकों को यह बालग्रह लगे सो बालक क्षण एक में तो उद्वेग को प्राप्त होयँ और क्षण एक में डरने लगि जायँ औ क्षण एक में अपनी धाय को नखों से और दांतों से काटने लगिजायँ और ऊंचा आकाश की ओर देखाकरैं और अपनेदांतोंको चाबाकरै और कराहाकरैं जँभाई लियाकरैं और भौंह चढ़ायाकरैं ओठ काटा करैं और मुखमें झागआवैं और वमन करैं अतीसार युक्तभी होयँ और उनका शरीर क्षीण पड़ि जाय और रात्रिमें जागें और शरीर में सूजन आय जाय और कंठकास्वर घों घों होय औरउसके शरीरमें मछलीकीसीदुर्गंधि होय और जिसका शरीर दुर्बलहोय और गुदामें रुधिर जाय और शरीरकी संज्ञाजाती रहै ये लक्षण जिनबालकों में होयँ उनके बालग्रहलगाजानिये कियेबालग्रहके सामान्यलक्षण हैं ॥

अथ बालग्रह जिसके होय उसका विशेष लक्षण ॥

जिसके अंग शिथिलहोजायँ और शरीरमें रुधिरकी दुर्गंधि आवै और स्तनोंकादूधपीवैनहीं और मुँहटेढाहोजाय औरआधा अंग रहजाय और नेत्रोंमें आंसूरहैं रोवै ठोडीहाथकी मूठीबँधी रहै ये लक्षण जिसकेहोयँ तबजानिये किइसेस्कन्दग्रहलगाहै १॥

अथ विशाखग्रह जिसहोय उसका लक्षण ॥

जिसकी संज्ञा जातीरहै और फिर संज्ञाआयजाय औरकभी हाथ पगों को नवाने लगिजाय और बिनसंज्ञा मल मूत्र करदे और जँभाई बहुत आवै मुखमें झाग आवै तब जानिये कि इसे विशाखग्रह लगा है २॥

अथ शकुनीग्रह जिसे लगाहोय उसका लक्षण ॥

अंगशिथिलरहै भयसेचकितरहाकरै और उसकेशरीरमेंमछलीकीसी दुर्गंधिआवै औरशरीरमें व्रणबहुत पड़जायँ औरदाह होय ये लक्षणहोयँ तब जानिये कि इसके शकुनीग्रहलगाहै ३ ॥

अथ रेवती ग्रह जिसे लगा होय उसका लक्षण ॥

जिसका मुँह लाल और हरा होय और पीली जिसकी देह होय औरपीड़ाको लिये हाथपैर काले होयँ ऐसा बालकहोयतब जानिये इसके रेवतीग्रहका दोष है ४ ॥

अथ पूतनाग्रह जिसे लगाहोय उसका लक्षण ॥

जिसकाशरीर शिथिलहोय रातदिन सोवैनहीं और उसका मलपतला पड़िजाय और उसके शरीरमें कागलकीसी दुर्गन्धि आवै और छर्दिहोय तृषाबहुतलगै ये लक्षणहोयँ तबजानिये कि इसके पूतनाग्रह लगाहै ५ ॥

अथ जिसके गंधपूतना ग्रह लगाहोय उसका लक्षण ॥

वहबालकस्तनकादूधपीवैनहीं अतीसारहोय खांसी हिचकी छर्दिज्वरहोय और शरीरका वर्ण जातारहै औरशरीरसें रुधिर कीसीदुर्गंधिआवै तबजानिये कि इसकोगन्धपूतनाकादोषहै ६॥

अथ शीतपूतनाके दोषका लक्षण ॥

जो बालक रोवाही करै और कांपा करै और जिस की आंत बोलै शरीर शिथिल होजाय और अतीसार बहुतहोय ये लक्षण होयँ तो शीतपूतना का दोष जानिये ७॥

अथ नैगमेय ग्रहके दोषका लक्षण ॥

जिसकेमुखसें बहुत झागआवै और कांपै बहुत औरऊंचाही देखै और पुकारैबहुत और शरीरमें दुर्गंधिआवै संज्ञाजातीरहै तब जानिये कि इसके नैगमेयग्रहका दोषहै ८ और यहीलक्षण डाकिनी के दोषका जानिये ॥

अथ सामान्य ग्रहके दोषोंकायत्न ॥

गोरखमुंडी । खस इनकाकाढ़ाकर इसकाढ़े से बालक को स्नानकरावै १ अथवा हल्दी । चन्दन । कूट इन्हें पीसशरीरमें लेपकरै तोबालकके सामान्य ग्रहके दोष दूर होयँ २ अथवा सांपकीकैंचुली । लहसुन । सरसों । नींबकेपत्ते । बिलाईकीबीट ।

बकरेके बाल । मेढ़ेकेसींग । घुड़बच । शहत ये सबपीस इनकी वालक के धूनीदे तो बालकके ग्रहोंके सब दोषजायँ ३ अथवा उतारा आदिसब यत्नकरै तोबालकके ग्रहोंके दोषजायँ ४ ॥

अथ स्कन्दग्रहको आदि ले वालकके ग्रहोंके विशेषयत्न ॥

वायुके दूर करनेवाले वृक्षोंके पत्तोंका काढ़ाकर उसबालक को स्नान करावै तो बालक के ग्रहोंकेदोष दूरहोयँ ५ अथवा सरसों । सांपकीकेंचुली । बच । कागलहरी इन्हेंकूट इसमेंऊंट के और बकरे के वालमिलावै और घृत मिलाय इसकीबालक केधूनीदे तो वालक के ग्रहों के दोष दूर होयँ ६ ॥

अथ स्कंदापस्मारके दोषका यत्न ॥

बेलकीजड़ । सिरसकीजड़ । सुपेददूब । सुपेदसरसों । पाढ़ । सुपेदराई । बावची । कायफल । कसूंभी । बायविड़ंग । सम्हालू । गूलर । खरैटी । चिरपोटण अर्थात् मकोय । बकायन । कालीतुलसी । भारंगी इनका काढ़ा करके पानीसे बालकको स्नानकरावे तो स्कन्दापस्मार बालकके ग्रह दोष जायँ ७ अथवा सौ बकरी । भेड़ । भैंस । घोड़ा । गधा । ऊंट इनसबकेमूतोंमे तेलको पकावे मूत्रजलिजायँ तेलमात्र आयरहे तब इसतेलको बालकके मर्दन करै तो स्कन्दापस्मार वालक के ग्रहका दोष जाय ८ अथवा गोमूत्र । बकरीकामूत्र । मस्तककेश । हाथीकानख । बैल के रोम इनमें घृतमिलाय इसकीधूनीदे तो बालकके स्कन्दापस्मारका दोषजाय ९ अथवा जवासा । मैनसिल । कस्तूरी । कोंचकीजड़ इनकी बालकके धूनीदे वा बालककेबांधे तोबालकका स्कन्दापस्मार ग्रहोंकादोष जाय १० अथवा बालकको चौहटमेंस्नानकरावै तोस्कन्दापस्मार विशाखकादोषजाय ११ ॥

अथ शकुनी ग्रहकेदोष दूरहोनेका यत्न ॥

बेतकी लकड़ी । आमकीजड़ । कैथाकीजड़ इनकेकाढ़ेकेपानी से बालकको स्नानकरावे तो शकुनी ग्रहका दोषजाय १ अथ-

वा झाऊकीजड़। महुआ। खस। गौरीसर। कमलकीजड़। पद्माख। पठानीलोध। फूल प्रियंगु। मजीठ। गेरू इन्हैं जल से महीनपीस इसका उबटनाकरे तो शकुनीग्रहका दोषजाय २ अथवा स्कन्दापस्मार ग्रहकायत्न जो पीछे कहाहै वह शकुनी ग्रहके दोषको दूरकरै है ३ अथवा शतावरि वा इन्द्रायनकी जड़ वा नागदोन वा कटेली वा सहदेई इनकापूजनकर बालक के गलेमें बांधे तो शकुनी ग्रहके दोषदूरहोयँ ४ अथवा तिल। चावल। फूलोंकी माला। हरताल। मैनसिल इनका विधिपूर्वक शकुनी ग्रहको बलिदे और बालकको औषधके जलसे स्नान करावे तो शकुनी ग्रहका दोष दूरहोय ५॥

अथ रेवती ग्रहका यत्न॥

असगंध। मेढ़ासींगी। गौरीसर। साटीकीजड़। सेवतीके फूल। बिदारीकन्द इनका काढ़ाकर इसके पानी से बालकको स्नानकरावै तो बालक के रेवतीग्रह का दोष जाय ६ अथवा बालककी देहमें तेलकामर्दनकरै अथवा कूट। राल। गूगल। खस। हल्दी इनकी बालकके धूनीदे तो रेवतीग्रहका दोषदूर होय ७ अथवा सुगंधित सुपेद फूल। चावलकी खील। दूध। शालि। दही इन्हैं बालकके ऊपर डाल स्नानकरावै और इन्हीं की गोशालामें बलिदे तो बालकके रेवतीग्रहकादोषदूरहोय ८॥

अथ पूतना ग्रहका यत्न॥

नींबकीछाल। बिष्णुक्रान्ता। बनकीछाल इनका काढ़ाकर इसजलसे बालककोस्नानकरावै तो पूतनाग्रहकादोषदूरहोय ९ अथवा नवीन बिदारीकन्द। सुपेददाख। हरताल। मैनसिल। कूट। राल इनकाकाढ़ाकर इनकेरसमें तेल अथवा घृतपकावै पीछे इसतेल अथवा घृतका बालकके मर्दन करै तो पूतना का दोष दूरहोय १०॥

अथ गन्धपूतना ग्रहका यत्न॥

नींबकेपत्ते। पटोलके पत्ते। कटेलीके पत्ते। गिलोयके पत्ते।

अडूसेकेपत्ते। इनकाकाढ़ाकर इसपानीसे बालककोस्नानकरावै तो गन्धपूतना का दोष जाय ११ अथवा पीपल। पीपलामूल। दोनों कटेली इनका काढ़ाकर इसमें गौ का घृत पकावै फिर इसघृतका मर्दनकरै तो बालकके गन्धपूतना का दोष दूरहोय १२ अथवा केसरि। अगर। कपूर। कस्तूरी। चन्दनइन्हेंमहीन पीस बालककी आंखोंके ऊपर लेपकरै तोगन्धपूतनाकादोषदूर होय १३ अथवा कूकरकीबीट। बालककेकेश। बनकी छाल। घृतइन्हें बालकके ऊपर उतारि चौहटे में रक्खै तो गन्धपूतना का दोष दूरहोय १४॥

अथ शीत पूतनाग्रहकायत्न॥

गोमूत्र। बकरीका मूत्र। नागरमोथा। देवदारु। चन्दनको आदिले सबसुगन्धले इनमेंतेल पकावै फिर इसतेलका बालक के मर्दनकरै तो शीतपूतनाके ग्रहका दोष दूरहोय १५ अथवा कुटकी। नींबकीछाल। खैरसार। ढाककीछाल। काहूकीछाल। इनके काढ़ेमें घृतपकावै फिरइसघृतको बालककोखवावैअथवा लेपकरै तो शीतपूतनाका दोषदूरहोय १६ अथवा नींबकेपत्तों की बालककेधूनीदे अथवा बालकके गुंजाकी माला पहिरावै तो शीतपूतना का दोष दूरहोय १७ अथवा नदीकेतटकेऊपर मूंग चावल शीतपूतनाको समर्पणकरै तो शीतपूतना का दोष दूर होय १८॥

अथमुखमारिडकाग्रहकायत्न॥

कैथा। बेल। अरणी। अडूसा। सुपेदअरण्ड। कूटइनके काढ़ेके जलसे बालकको स्नानकरावै तो मुखमारिडकाकादोष जाय १९ अथवाभांगरेके तेल या रसमें तेलपकावै फिरइसते-लका बालककेमर्द्दनकरै तो मुखमारिडकाकादोषजाय २० अथवा राल। कूट इनका काढ़ाकर इनके रसमें घृतपकाय बालकके मर्द्दनकरै तोमुखमारिडकाका दोष दूरहोय २१ अथवा गौ के

स्थान में बलि करै और वहांइसमन्त्रसे स्नानकरावै तो मुख मण्डिका का दोष दूर होय २२॥

अथ स्नानकरानेका मन्त्र॥

अलंकृता कामवती सुभगा कालरूपिणी॥ गोष्ट मध्या लयरता पातु त्वांमुखमण्डिका २३॥

अथ नैगमेयग्रहका यत्न॥

बेलकीजड़कावक्कल। अरणीकीजड़। कणगच अ० कंजाकीजड़। इनके काढ़ेकेपानीसेबालककोस्नानकरावै तो नैगमेयग्रहकादोषजाय २४ अथवा फूलप्रियंगु। जवासा। सौंफ। चित्रकवृक्ष का वक्कल। गुड़हल इनकाकाढ़ाकर इसकाढ़ेकेरसमें तेलपकावै फिर इसतेलके पकतेहीमें गोमूत्र दही और कांजीडाले पीछे और इसतेलको पकावै ये सब जलिजायँ तेलमात्रआयरहै तब इसतेलकोबालकके मर्द्दनकरै तो नैगमेयग्रहका दोष जाय २५ अथवा तिल। चावल। फूलोंकी माला। लड्डूइनको आदिले मिठाई इन्हें बालकके ऊपर ७ बारउतार वृक्षके पास धरै तो नैगमेय ग्रहकादोष दूरहोय २६॥

अथ उतारेका मन्त्र॥

आजाननश्चलाक्षीतु कामरूपीमहयशः। बालम्पलयतोदेव नैगमेयोसिरक्षत २७॥ येसब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं॥ अथवा रावण का बनाया बालतंत्र नाम ग्रन्थहै उसके मन्त्रसे बालकोंकेडाकिनीआदिके अच्छेहोनेका लक्षणलिखतेहैं बालक के जन्महुयेके पीछेपहिलेदिन प्रथममास प्रथमवर्षमें नंदानाम मातृकाको आदिले रावणकी बारहबहिनहैं सो बालककोपीड़ित करैहैं उनके ये लक्षणहैं बालकके ज्वर होय रोवे बहुत अथवा बोलैनहीं उसकेअच्छेहोनेकेवास्ते बलिकहतेहैं नदीके दोनोंतटों की मिट्टीले उसका कोरी सैनकमें पुतला करे और उसके पास चावल और सात सुपेदफूल ध्वजा सात दिये सात गुलगुले

सातपान गन्धधूप मांसदारू ये सब बालकके ऊपर वारि पूर्व दिशाकीओर चौहटेमें मध्याह्नके समय बलिदे और पीपलके पत्तेमस्तक पर धर बालकको स्नानकरावे तो मन्दानाममातृकाका दोष दूरहोय १ इसी प्रकार चारदिन करे और बालक के सरसों। मेढ़केसींग। नींबके पत्ते शिवनिर्माल्य इनकी धूनी दे तो बालक अच्छाहोय २॥

अथउतारे का मंत्र ॥

ओं नमोभगवते रावणाय हन हन मुंच मुंच स्वाहा ३॥

अथ बालकके जन्म से दूसरेदिन दूसरे महीने दूसरेवर्ष शुभदानाम मातृका रावणकी बहिन बालकों के दोषकरै है उसका लक्षण॥

प्रथमज्वर होय नेत्र मिचैं नहीं शरीर कांपाकरै बोले नहीं उसके अच्छेहोनेके वास्ते बलिनाम उतारा लिखते हैं जिससे बालक को सुखहोय॥ सवासेर चावल। दही। मछलीकामांस। मदिरा। तिलकाचूर्ण ये सब सरवेमें धर पश्चिमदिशाकी ओर चौहटेमें तीनदिन संध्यासमय बालकके ऊपर उताराकरै पीछे शालिके जलसे बालकको स्नानकरावे फिर शिवनिर्माल्य। खस। बिलाईके रोम। घृत। दूब इनकी बालक के धूनीदे॥

अथ उतारेकामंत्र॥

ओंरावणाय हन २ मुंच २ हुंफट्स्वाहा॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजन यथाशक्तिकरावैतौशुभदानाममातृकादोष जाय ३१॥

अथ तीसरे दिन तीसरेमास तीसरे वर्ष पूतना नामरावणकी बहिनबालककेदोष करैहै उसका लक्षण॥

प्रथमबालकके ज्वरकरै। शरीरकांपै। बोलैनहीं। पुकाराकरै। आकाशकीओरदेखाकरै। उस बालकके सुखकेवास्ते उतारा लिखतेहैं नदीके वारपारकी मिट्टी ले उसका पुतला बनावै पुतलेको सरवे में धरै उसके मध्य तांबूल। रक्तचन्दन। रक्तपुष्प। सातादिये। सातडब्बी। मांस। सुरा। भात धर दक्षिण

दिशामें तीसरे प्रहरचौहटेमेंबलिदे पीछेशिवनिर्माल्य। गूगल सरसों। नींबकेपत्ते। मेंढ़केसींग। इनकी धूनी ३ दिनदे ॥

अथ उतारेका मंत्र ॥

ॐ नमोरावणाय नमः हन २ मुंच २ त्रासय २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करावै तौ बालक आरामहोय ३२॥

अथ चौथेदिन चौथेमास चौथेवर्ष मुखमाण्डिकानामरावणकी बहिनकेदोषकरनेकालक्षण॥

प्रथमज्वरहोय। कन्धानवैनहीं। नेत्रफटेरहैं। बालकबोलै नहीं। रोयाकरै। सोवे बहुत। हाथकी मुट्ठीबँधरहै उसकेसुख के वास्तेउतारालिखतेहैं॥ नदीके दोनोंतटोंकी मिट्टीले पुतला बनावै उसकेआगे कमलकेफूलधरै गन्ध। ताम्बूल। सफेदफूल चारदिये। तेरहपुये मछलीकामांस। सुरा। छाछ ये सब सरवे में धरै पीछे उत्तर दिशामें तीसरेपहर चौहटेमें धरै तौ बालक कोसुखहोय॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमोरावणाय हन २ मथ २ स्वाहा ॥ चौथेदिनब्राह्मण भोजन करावै तौ बालक अच्छा होय ३३ ॥

अथ पांचवेंदिन पांचवें महीने पांचवें वर्ष पूतना नाम मातृ का रावणकी बहिन के दोष का लक्षण ॥

प्रथमज्वर होय शरीर कांपै और बोलै नहीं हाथकी मुट्ठी खोलैनहीं ॥

अथ उसके अच्छेहोने का उतारा ॥

कुम्हारके चाककी मिट्टीले उसका पुतलाबनावै उसके आगे गन्ध। तांबूल। चावल। सफ़ेदफूल। पांचध्वजा पांचदिया बड़े ईशान दिशामें उतारा धरै पीछे शांतिके जलसे स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य। सांपकी कांचली। घृत। नींबके पत्ते इनकी धूनीदे तौ बालक अच्छा होय॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय नमः चूर्णय २ स्वाहा॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करावै तौ बालकअच्छाहोय ३४॥

अथछठेदिन छठेमहीने छठेवर्षशकुनीनाममातृकारावणकीवहिनकेदोषकालक्षण ॥

प्रथम ज्वरहोय। शरीरकांपै। रातिदिन चैनपडैनहीं। ऊंचा देखै उसके सुखकेवास्ते उतारा ॥ गेहूंकेचूनकापुतलाकरै सुपेद फूल लाल फूल पीलेफूल मदिरामांस १० दिये १० ध्वजा दूध जामुन इनका उतारा अग्निकोण में मध्याह्न समय धरै पीछे शीतलजलसे स्नानकरावै फिर शिवनिर्माल्य। लहसन। गूगल। सरसों। सांपकी कांचली। नींबकेपत्ते घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ऊंनमो रावणाय चूर्णय २ हन २ स्वाहा ॥ तीसरे दिन ब्राह्मणको भोजनकरावै तौ बालक अच्छाहोय ३५ ॥

अथसातवेंदिनसातवेंवर्षशुष्करेवतीनाममातृकारावणकीवहिनउसकेदोषकालक्षण ॥

प्रथमज्वरहोय। गातकांपै। मुट्ठीबँधीरहै। रोवे बहुत। उसके सुखकेवास्तेउतारा ॥ नदीकेतटकी मिट्टीकापुतलाकरै उसके आगेलाल फूल तांबूल लालचावल की खिचड़ी १० दिये मांस दारू १३ ध्वजा पश्चिम दिशासें गांवके बाहर तीसरे पहर उतारा धरै पीछे स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य मेढ़के सींग सरसों खस घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ऊंनमो रावणाय तत्तेजसे हन २ मुंच २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजनकरावै तौ बालक अच्छाहोय ३६ ॥

अथ आठवेंदिन आठवेंमहीने आठवेंवर्ष नाम मातृका रावणकी वहिन उसके दोष का लक्षण ॥

प्रथमज्वर होय । शरीरमें दुर्गन्धिआवै। आहारले नहीं । शरीरकांपै उसके सुखकेवास्ते उतारा॥ लालफूल। पीलीध्वजा। रक्तचन्दन। खीर । मांस। सुरा इनकी वलि प्रभातसमय इस मंत्रसेदे ॥ ऊंनमो रावणाय त्रैलोक्यविद्रावणाय चतुर्दश स्रोक्षणाय ज्वर हन २ ऊंफट्स्वाहा ३७॥

अथनवेंदिननवेंमहीनेनवेंवर्षसूड़िकानाममातृकारावणकीवहिनउसकेदोषकालक्षण ॥

ज्वरहोय । शरीरमें पीड़ाहोय छर्दिहोय । उसके सुखकेलिये उतारा ॥ नदीकेदोनोंतटोंकी मिट्टी का पुतलाकरै सुपेद वस्त्र पहिरावै सुपेद फूल गन्ध तांबूल १३ दिये १३ ध्वजा उत्तर दिशामें गांवकेबाहर उताराकरै पीछेशांतिके जलसेस्नानकरावे गूगल । नींबकेपत्ते । गायकासींग । सरसों । घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमोरावणाय हन २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करावे तौ वालक अच्छाहोय ३८ ॥

अथ दशवेंदिन दशवेंमास दशवें वर्ष क्रियानाम मातृका रावण की वहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वरहोय । शरीरकांपै । रोवे । मलमूत्रकरदे उसकेसुखकेलिये उतारा ॥ नदीके दोनोंतटोंकी मिट्टीकापुतलाकरै पीछेगंधतांबूल रक्त पुष्प रक्तचन्दन ५ ध्वजा ५ दिये पुवा मांस सुरा वायव्य कोणमेंबलिदे पीछे काकविष्ठा गौका सींग बिलाई के रोम नींब के पत्ते घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमोरावणाय चूर्णितहस्ताय मुंच २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करावे तौ बालक अच्छाहोय ३९ ॥

अथ ग्यारहवेंदिन ग्यारहवेंमास ग्यारहवें वर्ष पिपीलिकानाम मातृका रावणकीबहिन उसके दोषका लक्षण ॥

ज्वरहोय आहारले नहीं ॥

अथ उसके सुखकेलिये बलि ॥

गेहूंके आटेका पुतलाकरै उसपुतलेके मुखमें दूधकीधारदे पीछे रक्तचंदन पीलेफूल गन्ध तांबूल ७ दिये ८ बड़े मालपुआ मांस । सुरा पूर्व दिशामें उतारा धरै पीछे शांतिके जलसे स्नान

करावै फिरशिवनिर्माल्य । गूगल । गौकासींग । सांपकीकांचली। घृत इनकी धूनीदे ॥ अथ उतारे का मंत्र ॥

ऊँ नमोरावणाय मुंच २ हन २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण को भोजनकरावै तौ बालक अच्छाहोय ४० ॥

अथ बारहवें दिन बारहवेंमास बारहवेंवर्ष कामुका नाम

मातृका रावणकी बहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वरहोय । हँसै । हाथसेदूरकरै । पुकारै बहुत । श्वासबहुतलै॥

अथ उसके उतारे की विधि ॥

मावेका पुतलाकरै पीछे गंध । तांबूल । सफेदपुष्प । ध्वजा ७ मालपुआ इनकी बलिदे फिर शांतिके जलसे स्नानकरावै पीछे शिवनिर्माल्य । गूगल । सरसों घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ऊँनमो रावणाय मुंच २ हन २ स्वाहा ॥ चौथेदिन ब्राह्मण को भोजनकरावै तौ बालक अच्छाहोय ४१ यह रावण का बनाया कुमारतंत्र चक्रदत्तमें लिखा है ॥

अथ वायुके रोगोंकी उत्पत्ति लक्षण ॥

धायके भारी गरिष्ठ भोजन करने से और उसके वायु पित्त के आजारोंसे बालकके शरीरमें दोषकोपको प्राप्त होय है और ऐसेही कुपथ्यके भोजनसे धाय के स्तनमें प्राप्त होय दूध के द्वारा बालकके वायुके रोगहोयहैं तव वह बालक क्षीण होजाय मुख सफेद होजाय शरीर कृशहोजाय और उस के मल मूत्र कठिनता से उतरै इसको आदिले बायुके औरभी रोगहोय हैं ऐसेही बालक पित्तसे दुष्ट दूधपीवै तौ बालकके पित्तकारोगपैदा होयहै उसबालकके पसीनाआवै मल पतलाजाय शरीर पीला पड़जाय तृषा बहुतलगै शरीर गर्म रहै इसको आदिले पित्तके रोगहोयँ और उसके लारबहुत पड़ै नींदबहुत आवै शीतबहुत रहै शरीर सुन्नहोजाय नेत्र मुँह सब शरीरभारीरहै और ज्वरको

आदिले जो रोगबड़े आदमीके होयहैं वेहीबालक के होय हैं और जो तालुक कंटकको आदिले जो रोग बालकके होयहैं सो बड़े आदमीके कोई भी होयनहीं ॥

अथ तालुक कंटक का लक्षण ॥

तालूके मांसमें बालक के कफकोपकरै तब उसके तालूमें कांटे पड़जायँ और उसका तालू बैठजाय और तालूके बैठनेसे दूधपीवे नहीं मल पतलाजाय तृषा बहुतहोय आंख दूखै कंठ मुँहमें पीड़ाहोय मस्तक उठै नहीं बमन करै १ ॥

अथ महापद्म रोगका लक्षण ॥

बालकके मस्तकमें और गुदामें रोगपैदाहोयँ और वायुपैदा होय और पद्मके वर्णसमान जिसका वर्णहोय सोवे तीनोंदोषों के कोपसेहोयहैं प्रथम वहरोग कनपटियोंसे हृदयमेंआवे पीछे हृदयसे गुदामेंआवे ऐसेही पेडूसे गुदामेंजाय गुदासेफिरहृदय में जाय और हृदय से शिरमें २ ॥

अथ कुकूणक रोगका लक्षण ॥

कुकूणकरोगदुष्टदूधकेपीनेसे बालककेहोयहै उसमेंनेत्र दूखैं नेत्रमेंखाजहोय आंशूबारम्बार बहुतपड़ैं औरवहबालक ललाट नेत्रनाक इन्हें घिसाकरै और धूपकीओर देखैनहीं आंखि खुलै नहीं इसे कुकूणक रोग कहिये ३ ॥

अथ तुण्डि गुदापाकरोगका लक्षण ॥

बालककीगुदा पकिजाय और उसकीनाभिमें पीड़ाहोय उसे तुंडि गुदापाक रोगकहिये ४ ॥

अथ अहिपूतना रोगका लक्षण ॥

बालककी गुदा मलमूत्रसे लिपीरहाकरै अथवाधोवै अथवा कपड़ेसे पोंछै वायुलगै तबखाजहोय और गुदालालरहै औरवह बालक गुदाकोखुजावै तबउसकेफोड़ेहोयँ उसकीगदासेपानीस्रा

झराकरै और उसकी गुदामें भयंकर व्रणहोजायँ उसको अहि पूतना रोगकहिये ५ ॥

अथ अजगल्ली रोगका लक्षण ॥

जिसके शरीर में चिकनी लाल वर्णकी मूंग प्रमाण वहुत सी फुनसियां होजायँ और उनमें पीड़ा नहीं होय वे कफ वायु से उपजेहैं उसको अजगल्लिका कहिये ६ ॥

अथ पारिगर्भिक रोगका लक्षण ॥

जो बालक गर्भिणी स्त्रीका दूधपीवै तौ उसके खांसी आवै अग्निमन्दहोजाय शरीर में दाह और तन्द्रा होय और क्षीण पड़िजाय अरुचिहोय घुमेरआवै और उसकापेटबाढ़िजाय उसे पारिगर्भिक रोग कहिये ७ ॥

अथ बालकके दांतों का रोग लिखते हैं ॥

बालकों के दांत आने के समय ज्वर होय पेट छूट जाय खांसी आवै छर्दिहोय मस्तक और आंख दूखैं रतुवा होय ये लक्षण दांतों के रोगों के जानिये ८ ॥

अथ बालकोंके रोगोंके यत्न ॥

जो बड़े आदमियोंके रोग होय हैं वही बालकोंके होयँ तो जो यत्न बड़े आदमियों का करै वेही बालकों का कीजै और बालक को एक वर्ष तक एक रत्ती प्रमाण औषध दीजै और दूसरे वर्ष से १ माशे दीजै यह मर्य्यादा है और बालक जहां हाथलगाकर रोवै तो वहांरोग जानिये और उसकायत्नकीजै ॥

अथ बालक के ज्वरका विशेष यत्न ॥

नागरमोथा। हड़की छाल। नींबकीछाल। पटोल। इनका काढ़ाकर उसमें शहत डाल बालकको पिलावै तो बालक को सब प्रकारका ज्वरजाय ॥ इति सर्व ज्वरकेऊपर भद्रमुस्तादि क्वाथः ९ ॥

अथ बालक के ज्वरातीसारकायत्न ॥

नागरमोथा। पीपल। अतीस। काकड़ाश्टङ्गी इनका चूर्ण

कर शहत से बालकको चटावै तो बालकका ज्वरातीसारजाय और खांसी वमन को दूरकरै इति चातुर्भद्रादि १० ॥

अथ बालकके अतीसारका यत्न ॥

बेलकीगिरी । धवईके फूल । नेत्रबाला । लोध । गजपीपल इनके काढ़ेमें शहत डालदे तो बालकका अतीसारजाय ११ ॥

अथ बालक के भयंकर अतीसारका और यत्न ॥

मंजीठ । धवईके फूल । लोध । गौरीसर इनकाकाढ़ा शहत डालदे तो बालकका भयंकर भी अतीसार जाय १२ इति समंगादिक्काथः ॥

अथ बालकके आमातीसार का यत्न ॥

वायबिड़ंग । अजमोद । पीपल । इन्हें महीनपीस चावलके पानीसे दे तो आमातीसार जाय १३ इति विड़ंगादिक्काथः ॥

अथ बालकके रक्तातीसारका यत्न ॥

मोचरस । मंजीठ । धवई के फूल । कमल के फूल इन्हें महीन पीस सांठी चावलके माड़मेंदे तो रक्तातीसार जाय १४ ॥

अथ बालकके सबप्रकारके अतीसारका यत्न ॥

सौंठि । अतीस । नागरमोथा । नेत्रबाला । इन्द्रयव इनका क्काथदे तो बालकके सबप्रकारका अतीसार जाय १५ ॥

अथ बालक के मोड़ानिवाही का यत्न ॥

चावल की खील । मुलहठी । महुआ इन्हेंमहीनपीस मिश्री और शहतमें चटावे तो बालककी मोड़ानिवाही जाय १६ ॥

॥ अथ बालकों की संग्रहणी का यत्न ॥

हल्दी । चव्य । देवदारु । कटेली । गजपीपल । पृष्ठिपर्णी । सौंफ इन्हें महीनपीस शहत घृतकेसाथ चटावे तो संग्रहणी और पांडु रोगके ज्वरातीसार को दूरकरै और भूंखलगावे ॥ इतिरजन्यादि चूर्ण १७ ॥ अथ बालक की खांसी का यत्न ॥

नागरमोथा । अतीस । अडूसा । पीपल । काकड़ाशृंगी इन्हें

महीनपीस शहतकेसाथ चटावे तो बालककेपांचप्रकारकीखांसी श्वासजाय ॥ इतिमुस्तादि १८ ॥

अथ खांसी का और यत्न ॥

कटेलीके फूलोंकी केशरको शहतसे चटावे तो बालक की खांसीजाय १९ ॥

अथ खांसी श्वास का यत्न ॥

मुनक्का । दाख । अडूसा । हड़कीछाल । पीपलइन्हें महीनपीस शहत और घृतके साथ चटावे तो बालककी हिचकी और छर्दि जाय २० ॥

अथ बालककी छर्दिका यत्न ॥

आमकीगुठली । और चावलकीखील । सेंधानोन इन्हेंमहीन पीस शहतसे चटावे तो बालककी छर्दिजाय २१ ॥

अथ बालकके दूध गिराने का यत्न ॥

कटेलीके डोंडेकारस । पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठि इन्हेंमहीनपीस शहत घृतसे चटावे तो बालककी छर्दि जाय २२ ॥

अथ बालकके पेटमें अफराहोय और शूल चलै उसका यत्न ॥

सेंधानोन । सोंठि । इलायची । सिंकीहींग । भारंगी इन्हेंमहीन पीस गरमपानीसेले तो बालकका अफरा और शूलजाय २३ ॥

अथ बालकका मूत्र बन्द होगया होय उसका यत्न ॥

पीपल । मिरच । छोटीइलायची । सेंधानोन इन्हें महीनपीस मिश्री और शहतसे चटावे तो मूत्र अच्छीतरहसे उतरै २४ ॥

अथ बालकके लार बहुतपड़ै उसका यत्न ॥

गोरीसर । तिल । लोध इनकाकाढ़ाकर शहतडाल बालकको पिलावे तो बालककी लार पड़ती बन्दहोय २५ ॥

अथ बालकके मुँहमें छाले पड़े होयँ उसका यत्न ॥

पीपलका बक्कल और उसके पत्ते इन्हें महीनपीस शहतमें मिलाय चटावै तो बालक के मुखके छाले अच्छे होयँ २६ ॥

अथ बालककी नाभिमें सूजनहोय उसका यत्न ॥

पीली मट्टी को अग्निसे लालकर दूधसे लगावै तो सूजन अच्छी होय २७ ॥

अथ बालककी नाभि पकगई होय उसका यत्न ॥

हल्दी। लोध। फूलप्रियंगु इन्हें शहतसे महीन पीस नाभि के लेपकरै तो नाभिका पकना अच्छा होय २८ ॥

अथ बालककी गुदा पकगई होय उसका यत्न ॥

रसौत को पानीमें महीनपीस बालककी गुदामें लेपकरै तो गुदा पकती बन्द होय २९ अथवा शंख। मुलहठी। रसौत इनतीनोंको महीनपीस लगावै तो बालककी गुदापकती बन्द होय ३० ॥ अथ बालकके दांत दोहरे आवैं उसका यत्न ॥

धवईके फूल। पीपल इन्हें आंवले के रसमें बालकके मुंह में लगावै तो दांत अच्छीतरह आवैं ३१ और लाक्षादि तैल से बालकके ज्वरादिक सब रोगजायँ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रन्थेबालकोंकेसर्व्व रोगोंकेभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणयत्ननिरूपणंनाम एकविंशतिस्तरङ्गः ॥ २१ ॥

अथ वाजीकरणादिक लिखते हैं ॥

बाजीकरणकहिये जो पुरुष देखनेमें मोटा पुष्टदीखे औरवह नपुंसकहोय स्त्रीकेकामकानहींहोय उसकाभेद ॥ वह नपुंसक पुरुष ७ प्रकारकेहोय हैं उसकी उत्पत्तिलक्षण लिखते हैं ॥ स्त्री से रमणकी इच्छा तो होय और संगहोयनहीं इसकारणसेलिंग उठे नहीं उसे नपुंसक कहिये सो कारण लिखते हैं कड़वी बस्तु खटाई गरमबस्तुनोन इनके बहुतखानेसे नपुंसक होय अथवा शोकसे तथा क्रोधआदिके करनेसे वीर्यका नाशहोय अथवापुत्र स्त्री धन आदिके नाशसे नपुंसक होय अथवा हाथकी लिंग में

किसी तरहकी चोट लगनेसे लिंगकी नसमारीजाय उससे और बहुत ब्रह्मचर्य्यके रहनेसे नपुंसकहोय इन्हें आदिले और भी कारण हैं ॥

अथ नपुंसकपने का यत्न ॥

मधुरीवस्तुको आदिले नानाप्रकारके मनोहर अति स्वाद युक्त जो भोजन तिनसे नपुंसकपनाजाय १ अथवा महासुन्दर जिसका सर्वांग ऐसीस्त्रीके स्पर्शकरनेसे नपुंसकपना जाय २ अथवा महासुन्दरजो स्त्री जिसकीवाणीमधुरमनोहरलगै उससे नपुंसकपनाजाय ३ अथवा तांबूल सुन्दर आसवको पीना उपवनका रहना पुष्टई की औषध दूध मिश्रीके संयोगकी मृगांक चन्द्रोदयको आदिले सातोंधातु दधिसिखरन उड़दये सबबस्तु नपुंसकपनेको दूरकरै हैं ४ अथवा अमरस आदिका भोजन भीमसेनी कपूर कस्तूरीके संयोगकी पानकी बीड़ीको आदिले और भी बस्तुसे नपुंसकपना जाय ५ ॥

अथ गोखुरादि चूर्ण लिखते हैं ॥

गोखुरू । तालमखाना । असगन्ध । शतावरि । सपेदमूसली । कोंचकेबीज । मुलहठी । खरैटी के बीज । गंगेरनकी छाल ये सब बराबरले इन्हें महीनपीस इसमें मिश्री अनुमानमाफिक मिलाय औटाय दूधके साथ ५ टं० रात्रिमें नित्य ले और पथ्यसे रहे तो नपुंसकपना जाय ६ ॥

अथ सुपारीपाक लिखते हैं ॥

दक्षिणीसुपारी ॥ सेरले उसे दोदिन जलमें भिगोवे पीछे उन्हें महीन कतर सुखायले फिर उसका चूर्णकरै और वस्त्रसे छान बराबर घृतसे मकरोय अठगुने दूधमें उसका खेरसावा करै पीछे अठगुनी मिश्रीकीचासनीकर उसमें सुपारीका मावा डाले और ये औषध इसमें मिलावै सो लिखते हैं, इलायची खरैटी । गंगेरनकीछाल । जायफल । लवंग । जावित्री । पत्रज । सोंठि । शतावरि । मूसली । कोंचके बीज । बिदारीकन्द । गो-

खुरू। दाख। सालिबमिश्री। सिंघाड़ा। जीरा। छड़। वंशलोचन। असगंध। केसर। कस्तूरी। कपूर। चन्दन। भीमसेनी कपूर। अगरु ये सब औषध २ टकेभर ले पीछे वैद्य अपनी बुद्धिमाफिकले और मृगांक चन्द्रोदय बंगसार अभ्रक सुगन्ध द्रव्य मेवा अपनी बुद्धिमाफिक इसमेंडाले पीछे १ टके प्रमाण इसका मोदक करै १ मोदक नित्यखाय और पथ्यसे रहै तो निश्चयही नपुंसकपनाजाय॥ इतिरतिवल्लभपुंगीपाक ७॥

अथ आम्रपाक लिखते हैं॥

पक्केमीठे आमका रस १६ सेर उसमें मिश्री ४ सेर डाले और इसमें घृत १ सेर डाले और इसेमिट्टीके बासनमें पकाय गाढ़ाकर चासनी समान करै और चांदी के बासनमेंधरै और इसमें ये औषध डाले सोंठि ८ टके भर मिरच ८ ट० भर पीपल २ टकेभर धनियां २ ट० भर जीरा १ ट० भर चित्रक १ ट० भर पत्रज १ ट० भर दालचीनी १ ट० भर नागकेसर १ ट० भर केसर १ ट० भर इलायची १ ट० भर लवंग १ ट० भर जायफल १ ट० भर कस्तूरी ४ माशे भीमसेनी कपूर १ टंकभर शहत पावभर पीछे इन सबको एक जीव कर अमृतबान में भर रक्खै फिर इसमें से १ टकेभर नित्य खाय तो नपुंसकपनादूरहोय और स्त्रीसेसङ्ग बहुत करावै और संग्रहणी। क्षयी। श्वासका रोग। अरुचि। अम्ल पित्त रक्तपित्त। पांडुरोग यह आम्रपाक इतने रोगों को दूर करै है॥ इति आम्रपाकः ८॥

अथ हथरसआदि किसी तरह से नपुंसक होगयाहोय उसका यत्न॥

देशी गोखुरूका चूर्ण ५ ट० शहत ५ ट० मिलाय बकरी के दूधके साथ २ महीने लेतो नपुंसकपना जाय ९॥

अथ चन्दनादि तेल लिखते हैं॥

रक्तचन्दन। पतंग। अगर। देवदारु। चीढ़। पद्माख।

कपूर। कस्तूरी। केसर। जायफल। जावित्री। लवंग। दोनों इलायची। कंकोल। तज। दालचीनी। पत्रज। नागकेसर। नेत्रबाला। खस। छड़। दारुहल्दी। मूर्वा। कचूर। नागरमोथा। सम्हालू। फूल प्रियंगु। लोहवान। गूगल। लाखनख। राल। धवईकेफूल। कुसुमकेफूल। पीपलामूल। मजीठ। तगर। मोम ये सब औषध चार २ माशेले और इनका मधुरीआंचसेकाढ़ा करे फिर इनका चौथा हिस्सा राखे फिर इसमें मीठातेल पाव भर डाले फिर मधुरी आंचसे पकावेजबकाढ़ेका रसजलिजाय तेलमात्र आयरहै तब छानकर पात्रमें भर रक्खे पीछेइसका शरीरमें मर्द्दन करे तो बूढ़ाभीआदमी तरुणहोय और शरीरके सबरोग जायँ इति चन्दनादितैलं १० ॥

अथ वानरीगुटिका ॥

कौंचके वीज पावभर इन्हैं गौके पावभर दूधमें शनैः २ पकावै फिर इनका छिलका दूरकरै फिर इनका महीनचूर्ण कर दूधमें उसन छोटे २ इसकेबड़ेकर गौके घृतमें तले फिरइससे दूनी मिश्रीकी चासनी करबड़ोंको पागे फिरइनबड़ोंको शहत में डालै पीछे इनमें से नित्य १ टङ्क २ महीने खायतोनपुंसक पनाजाय स्त्रीके संगमेंउसका वीर्य्य देरसे संखलित होय इति वानरीगुटिका ११ ॥

अथ नपुंसकपनेके दूरकरनेका यत्न ॥

अकरकरा। सोंठि। लवंग। केसर। पीपल। जायफल। जावित्री। सुपेद चन्दनयेसब धेले २ भरले और अफीम १ टके भरले फिर इनसबको शहतमें महीनपीस उड़द प्रमाण गोली करे एक गोली रात्रिमें नित्यखाय ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्य देरसे गिरे और नपुंसकपना जाय और बहुतस्त्रियों से भोग करे १२ अथवा बिदारीकंद का चूर्णकर उसचूर्णमें गीलेबिदारी कन्दकेरसकी २१ पुटदेदे सुखाताजाय फिरउसमें मिश्री शहत

औरघृत मिलायनित्य दोटंकखाय अथवाचारमाशेले औरइसके ऊपर मधुर दूध पीवे तोबूढ़ा मनुष्यभी जवानहोय यहवृन्दमें लिखा है १३ अथवा आंवलेका चूर्णकरे फिर इस चूर्णमें गीले आंवले के रसकी २१पुटदे सुखालेफिरइस चूर्णको मिश्री शहत से नित्यदोटंकखाय तो नपुंसकपनाजाय यहचक्रदत्तमें है १४॥

अथ मदन मंजरी गुटिका लिखते हैं॥

सोंठि। मिरच । पीपल इन तीनोंका चार भागकरे पारेका १ भाग और बंगका २ भागकरे इनसबकी बराबरि शतावरि। तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। जायफल। मिरच।पीपल। सोंठि। लवंग। जावित्री इन सबको २ भागले फिर इनसबको महीनपीस मिश्री शहत घृतमें गोली पांचटंकके अनुमानबांधे फिर एक गोली नित्यखाय ऊपरसे दूधपीवे तो बूढ़ाभी जवान होय इतिमदनमंजरीगुटिका १५ यह योगतरंगिणीमेंहै ॥

अथवा अफीम। पारा ये बराबरले पीछे इनदोनोंको धतूरे के बीजके तेलमें ३ दिन खरलकरे पीछे मिश्री और भांगबराबर मिलाय १ रत्तीखाय ऊपरसेदूधपीवे तो वीर्य्यगिरेनहीं और नपुंसकपनाजाय यह सारसंग्रहमें लिखा है १६ अथवा जायफल। अकरकरा।लवंग।सोंठि। केसर। पीपल। कस्तूरी।भीमसेनी कपूर। अभ्रक इनसबकी बराबरअफीमले फिर इनसबको महीनपीस मूंग प्रमाण गोलीकरै फिर १ गोली तथा २ गोली ले तो वीर्य्य गिरै नहीं १७॥

अथ लिंगलेपकी लिंगार्जुन गुटिका लिखते हैं॥

चीनियाकपूर। सुहागा। पारा ये सब बराबरले पीछे इन्हें अगस्तकेरसमें और शहतमें १ दिन खरलकरे फिर लिंगकेलेप करै १ पहरराखै पीछे लिंगकोधोवै फिर स्त्रीसेसंगकरै तो वीर्य्य देरमें गिरै १८॥ अथ लिंगलेपकी पट्टी लिखते हैं॥

सुपेद कनेरकी जड़का बक्कल। अकरकरा। अजमोद। काले

धतूरेके बीज । जायफल इन सबको जलसे महीनपीस मिरच प्रमाण गोली बांधे फिर १ गोली मनुष्यके मूत्रसे घिस लिंगके लेपकरै तो नपुंसकपना जाय वीर्य्य देर से गिरै १६ अथवा शूकरका घृत । शहत इन दोनोंको खरलमें घिस १ महीनेतक लिंगके लेपकरै तो लिंगकी सवकसर मिटै २० अथवा सुपेद कनेर की छाल को दूध में जमाय घृत काढ़े फिर इस घृत में सोहगा । जायफल । जमालगोटा अनुमान माफिक मिलाय लिंगके ७ दिन लेपकरै ऊपर पानबांधे ब्रह्मचर्य्यसे रहैतो नपुंसकपना जाय २१ ॥

अथ नपुंसकपना दूर करने की और औषध ॥

चोपचीनी । सोंठि । मोचरस । दोनों मूसरी । मिरच । वायविड़ंग । सौंफ येसब औषध समान लेकर छान करि पैसाभर चूर्ण आधसेर अधौटादूधके साथलेतो बलबढ़े पुष्टताहोय२२॥

अथ दूसरी औषध ॥

चोपचीनी पांचपैसाभरि । सोंठि । मोचरस । दोनोंमूसली । मिरच । वायविड़ंग । सौंफ ये सब औषध बराबरले कपरछान करि १ सेर अधौटे दूधके साथ ले तो धातु पुष्टहोय बलबहुत बढ़े २३ ॥

अथ तीसरी औषध ॥

शहत दो पैसाभर आधसेर गौके दूधमें मिलायकरपिये तो पुरुषके शक्ति अधिक होय २४ ॥

अथ चौथी औषध ॥

मैदालकड़ी ऽ। भरले कालीबकरीके दूधमें भिजोवे फिर कपरछानकरि ऽ१ गौके दूधमें भिजोय तीन दिनतक सूखने दे तिसपीछे गोखुरू तीनि पैसाभर चीनी खांड़ आधसेर मिलाय करि धरिराखै मात्रा १ पैसाभर ऽ॥ गौकेदूधमें खाय तो पुष्टता होय और नपुंसकता दूरहोय २५ ॥

अथ पांचवीं औषध॥

सुपेद कनेरकी जड़ दो पैसाभरिले महीन कतरि पांचसेर गौके दूधमें औटावै जब दूध ५१२ शेषबचै तब उतारि ठंढाकरि जड़समेत जमायदे फिर दूसरेदिन माखन काढ़िले तिस पीछे सात गरवामंगवावै जायफल सात और नगजावित्रीपैसाभरि ले सातों गरवनमें भरै पेटसेले मूड़पाउँ काटिडालै फिर ५१ भर गौके घीमें खूब खरलकरभूँजै फिर उनकी मैदाको कनेरके घीमें ४ रत्तीप्रमाण गोलीबांधै फिर लिङ्गमें लेपकरै अथवा १५ दिन खायतौ नामर्दमर्द होय॥

अथ छठी औषध॥

मंजीठ ५१ गोखुरू ५१ लभेरे के फल ५१ ले गौके आध सेर दूध में औटावै जब ५१ शेषरहै तब उतारिगोखुरू सुखाय लेय फिर तीनों औषध शेष कपरछानकरिआगेलिखी औषधीमिलावैजायफलपैसाभर और मूसलीदोनों ५।भरशतावरि ५। भरपीपलामूल ५= सोंठि४पैसाभरभांगरा ५। निर्गुंडी ५। ये सब औषध कपरछानकरि आधसेर घी मिलाय तीन तीन पैसाभरि गोलीबांधै और दोनोंसमय एक एक गोली १४दिन खायतौनामर्द मर्दहोय॥

अथ सातवीं औषध॥

केंचुआकी मैदा १ पैसाभर और बीरबहूटीकीमैदा १ पैसा भरकूट १ पैसाभर जंगलीशूकरकी बसाअर्थात्‌चरबी १ पैसा भरअकरकरा १ पैसाभर खुरासानी बच १ पैसाभरले कपड़ा की पट्टीबनायकर मोमजामा फिर असगन्ध १ पैसाभरलेकपड़छानकरिपट्टीमें धरै और सबऔषधीशूकरकीबसामें मिलायसुपारी बचाय १४ दिनतक पट्टीबांधै तौ नामर्द मर्दहोय॥

अथ आठवीं औषध॥

बत्सनाग विष २ पैसाभरजमालगोटा २ पैसाभर सफ़ेद

घोंघची २ पैसाभर सफ़ेद कनेरकीजड़ २ पैसाभरवीरबहूटी२ पैसाभर अकरकरा २ पैसाभरमालकांगुनी ऽ१भरचिमगुदर१ कुचिला २ पैसाभरकेंचुआ ऽ१ भर सरसांड़ा एक खुरासानी अजवायन २ पैसाभर सुहागा २ पैसाभरमैनशिल २पैसाभर लौंग २ पैसाभर जायफल २ पैसाभर दालचीनी २ पैसाभर आककी जड़ २ पैसाभर चमेलीकी जड़ २ पैसाभरचिमगुदर और शूकर सांड़ेका यंत्रमेंतेल निकाले तिसपीछे औषधसब कपड़छानकर बकरीकेदूधमें ३ दिन खरलकरै तिसपीछेयंत्रमें तेलकाढ़ि बंगलापानमें चुपरिलिंगपर सातदिनताई बांधे और स्त्रीभोगसे बचारहै तौ नपुंसकपनादूरहोय॥

अथ नवीं औषध॥

कनेरकीजड़ २ पैसाभर सींगियाविष १ पैसाभर चौराई के बीज १पैसाभर शालम्मिश्री १पैसाभर निर्गुण्डी १पैसाभर ये सबऔषध कपरछानकरि पांचसेरगौके दूधमें औटायजमाय कैमाखनकाढ़िले फिरसुपारीबचायउलटाबंगलापानमें लगाके १४दिनताईंपट्टीबांधे और स्त्रीसेबचारहे तौनामर्द मर्दहोय॥

अथ दशवीं औषध॥

हींग। धतूरेकेबीज। अकरकरा। समुद्रफेन। दालचीनी ये सब औषध बराबरले कपरछान करि ऊंटकटेड़ा के रसमें १४ दिनतक लिंगपर लेपकरै तौ नपुंसकता दूरहोय॥

अथ खानेकी औषध॥

असगन्ध। जावित्री। जायफल। लौंग। दालचीनी येसब औषध बराबरले कालेतिल ऽ। भर शहत ऽ। भरले गोलीबांध २१ दिनखाय तौ नपुंसकता जाय॥

अथ दूसरी औषध॥

अकरकरापैसाभर अफीम अधेलाभर दोनोंमूसली पैसाभर कुलींजन पैसाभरलौंगपैसाभरबहुफली पैसाभरअसगन्धधेला

भर खांड़ ६ पैसाभर सब औषधकपड़छानकर खांड़के सङ्गमें १ पैसाभरकी गोलीबांधे और १४ दिनतक रात्रिमें खाय तो नपुंसकता दूरहोय॥ अथ लेपन॥

तेलिया सुहागा १ टं० कूठ १ टं० मैनशिल १ टं० चमेली के पत्तोंकारस ४टं० तिलकातेल ʃ। भरले इनसबको कपड़छान करि तेलमें औटावै जब तेलमें खरल होजाय तब उतारि रक्खै फिर तेलकी पट्टी ७ दिन बांधे तो नपुंसकताजाय॥

अथ खाने की औषध॥

पोस्त आधसेर माजूफल आधसेर ले १ मनभर पानी में औटावै जबसेर भर शेषरहै तब उतारि आगेलिखीहुई औषध कपड़छानकर मिलावै जायफल १ टकाभर लौंग १ टकाभर तज एक टकाभर बिलारीकन्द ४ टका सेंभलके बीज आधसेर नागकेसरि १ टकाभर सोंठि आधसेर पुरानागुड़ २ सेर गौके दशसेर दूधमें औटावै जब औटते औटते ३ सेर शेषरहै तब गुड़ व खांड़ डारिकै औटावै जबगाढ़ाहोजाय तबउतारि आंवले की बराबर गोलीबनावै और प्रातःकाल डेढ़पैसाभर और संध्या को १ पैसाभर पानी के साथ खाय तो १४ दिनमें नपुंसकता दूर होय॥ अब हस्तक्रिया और कच्चेकुश्ताआदिके खाने और शरदी गर्मी या बहुत मेहनत से जो आदमी नामर्द होगया हो उसके उपाय के लिये तिलालेप अच्छी २ खानेकी पुष्ट औषधों समेत आगेलिखते हैं॥

अथ तिलाहथलस और सुस्ती का॥

दालचीनी १० टंक जायफल १० टंक धतूराजड़पत्ते समेत १० टं० जावित्री १० टं० लौंग १० टं० बीरबहूटी १० टं० मालकांगनी १० टं० जमालगोटा १० टं० संखिया १० टं० तेलिया १०टं० चौहरनीलाल १० टं० शिंगरफ १० टं० पारा १० टं० लोहबान १० टं० अदरखकारस १० टं० चमेली के

भर कनेरकी जड़ १ पैसाभर जमालगोटा १ पैसाभर सबको पीस शीशीमें चढ़ावे पाताल यंत्र करितेल निकालै रत्तीभर लिंगके ऊपरमलै ११ दिन पान बांधै तौ नामर्द मर्द होवे ॥

अथ तिला चौथा ॥

जायफल १ पैसाभर सुहागा तेलिया १ पैसाभर मैनशिल १ पैसाभर चमेलीके पत्तोंकारस ३ सेर मीठातेल आधसेर सब कोमिलाय औटावै जबरस जलजावे और तेलमात्ररहजावै तब तेल शीशीमें भररक्खै लेपकर इन्द्रीपर पानबांधे ११ दिन तौ नामर्द मर्दहोय ॥ अथ पोटली सेंककी नसें जुड़ें ॥

कानकामैल १ पैसाभर हाथीदांतका बुरादा ६ माशे कुल्थी ६ माशे केंचुवे ६ माशे बीरबहूटी ६ माशे अकरकरहा ६ माशे जायफल ६ माशे जावित्री ६ माशे केसर ६ माशे हवासलकी चरबी १ पैसाभर मछलीकाभेजा १ माशेनौसादर १ पैसाभर शेरकीचरबी १ पैसाभर गौकाघी १ पैसाभर इन सबको धेले भरकी पोटलीकर इन्द्रीपर ११ दिन सेंककरै तौ नसैं टूटीहुई फिर जुड़ें और नामर्द मर्द होजाय ॥

अथ लेपवास्तेनामर्दके टूटीनसें जुड़ें ॥

इन्द्रयव । चिर्मिटी । सफ़ेद कनेरकी छाल । मालकांगनी । धतूरेकेबीज । बच । खुरासानी । कटाईकेबीज । गजपीपलइन सबको बराबरले कूट पीसकर लेपकरै तौ इन्द्री परनसैं जुड़ें ॥

अथ लेप ॥

अरंडी १ पैसाभर अफीम ६ माशेअकरकरा ६माशे जायफल ६ माशे दालचीनी ६ माशे बीरबहूटी ६ माशे लौंग ६ माशे इनसबको पीसकूट लेपकरे ७ दिन पानबांधे तौ नामर्द मर्दहोय अथवा चमेलीके पत्तोंकारस निकालके कूठ । सुहागा । और मैनशिल । सबको तिलीकेतेलमें एकत्रकरके औटावै जब रंग बदलजाय तब उतारिले शीशीमेंधरै ४० दिनमलै तौ टूटी

पत्ते १० टं० मैनशिल १० टं० हरताल १० टं० कूठ १० टं० सुहागा १० टं० मीठातेल १० टं० चिमगोदरकीचरबी १० टं० हल्दी १० टं० श्वेतकनेरकी जड़ १० टं० लाल कनेरकी जड़ १० टं० गिडोहे सूखे १० टं० रेंगमाही १० टं० शेरकी चरबी ४० टं० अरंड का तेल १५ टं० मछली का पित्ता १० टंक मुर्ग का पित्ता १० टंक चोखीदारू १॥ टंक गधे का मगज़ और यह न होय तौ गधेके पोतों में जोंक लगाय़के दश टंक रुधिर लेले शूकरकी चरबी १० टंक काष्ठादिक औषधों को कपरछान करै गोलीबांधे फिर उसे आतशीशीशीमें धरकर मुंह पर सींकलगावे कपरौटी करै चपटा अधवर से फोड़े पेंदेमें छेदकरै पेंदेमेंशीशीकी नालिकर फिरतेल निकाल लेय यादितेल न निकलसके तौ गोली दोरत्तीके केसरमें लेपकरै और यदि तेल निकल आवै तौ इन्द्रीपरकी सुपारी और नीचे का जोड़ बचाके तेलमलै ऊपरसे बंगलापान बांधे लंगोटबन्दरहै परहेज़करै खट्टी गर्म चीज़ न खाय तौ सुस्ती दूर होय॥

तिला दूसरा ॥

कपड़ा बाफते का पावगज़ आकके दूधमें भिगोके सुखाके थूहरके दूधमें भिगोवे पांचपैसाभरि घी उसपरलपेटै संबुलज़र्द पीस उसपर लेपकरै बत्तीबनावै लोहेकेगज़परलपेट उसकातेल निकासे वहतेल पानपरलगावैलिंगकेऊपरबांधै नामर्दमर्दहोवै॥

अथ तिला तीसरा ॥

पारा १ पैसाभर संखिया १ पैसाभर मीठातेलिया १ पैसा भर भटकटैया १ पैसाभर हल्दीकाजहर १ पैसाभर नागबच १ पैसाभर संबुल १ पैसाभर हरताल १ पैसाभर चिरमिटी सफेद १ पैसाभर धतूरे के बीज १ पैसाभर बीरबहूटी १ पैसा भर मैनशिल १ पैसाभर शिंगरफ १ पैसाभर लोहवान १ पैसाभर केंचुवा १ पैसाभर मालकांगनी १ पैसाभर कोंचकेबीज १ पैसा

हुई नसें जुड़ैं अथवा मीठातेल। मालकांगनी। छुहारा ये सब बराबरले गर्मकर लेपकरै॥ अथवा गंगेरन। आक। कनेर। पीपर। कूठ। बच और माखनमिलाय लेपकरैतौ नसेंजुड़ें स्थूल होय अथवा अकरकरा २ टंक सफ़ेद कनेरके फूल आधा टंक जायफल १ टंक सफ़ेद गोंद आधाटंक महीनपीस मर्दनकरै तथा महिषीके दूधमें मिलायलेपनकरै तौ नसेंजुड़ैं कठोरहोयँ॥

अथ खानेकी औषध॥

कौंचके बीज और जड़को कूटपीसकर ४ माशे दूधके साथ मिश्री मिलाकर दोनोंसमय कुछ दिनतकसेवनकरै तौ बलवीर्य बहुतहोय सहस्रस्त्रीसे भोगकरै सुखपावै अथवा उर्दकाचून यव काचून गोखुरूकेबीज शतावरिसबको बराबरले दूधमेंमाड़कर घृतमें बड़ीकरै सन्ध्यासमय १ खायऊपरसेदूधमिश्री पीवै ६ मासपर्यंत तौ बूढ़ाभी जवानहोय वीर्यबंधे अथवात्रिफला धव ईकेफूल बराबरलेकर पीस एकरसकी भावनादे ७ दिन धूप में सुखावै सन्ध्याको मिश्रीशहतमें मिलायचाटैऊपरसेदूधपीवै कुछदिन सेवनकरै तौ शतस्त्रीसेभोगकरै कामबंधे भूखलगेपुष्ट होय महाकामी होय अथवाकिवांचकीजड़। तिल। असगन्ध। बिदारीकन्द। सांठी। चावलइनसबको बराबरलेपीस ॥१ दूध मेंपचावैफिर प्रातसमय ५ टंक प्रमाण नित्यखाय औरपरहे-जकरैतौ महाकामीहोय औररातिमें सुख उपजै अथवाबिदारी-कन्द और गोखुरू इनदोनोंको पांचटंकले फिरपीसकै मिश्री दूधकेसाथफांकैतौ बूढ़ाभीजवानहोय महाकामीहोय प्रमेहऔर बिन्दुकुशादभी जायअथवा जायफल। जावित्री। लौंग। केसर। असगन्ध। कालतिल। और अफीम। सबोंको दोदोमाशे ले-खरलकरै और २माशेकी शहतमें गोलीबांधे प्रभातसमय सात दिनतक खाय तौनामर्द मर्दहोय॥ अथवा उरद। यव। अस-गन्धके पांचबीज। शतावरि। तालमखाना। सेंबरकीछाल। सब

समानलेकर जो कोई प्रेमसे दूधसोंखाय तौ शतस्त्रीभोग करै धातु बँधे पर पथ्यसे रहै अथवा यव औरउर्दकाचून ८ पैसाभर दूध और मिश्रीके साथपीवै तौ वीर्य बृद्धिऔर धातुपुष्टहोय अथवा अधेले भर आंवलेको एकरसकी भावनादेकर छायामें सुखावै पीछे शहत और मिश्री से ४ टंक खाइ तौ धातु बँधे महाकामीहोय अथवा अकरकरा ३ टंकतेजबल ३ टंक जावित्री ३ टंक नागकेसर ३ टंक जायफल ३ टंक लौंग ३ टंक इलायचीसमूची ३ टंक सफेद मूसली ३ टंक शर्करा ४ टंक नागरपान २५ ले फिर बड़ेबेर समान पानोंकेसाथ गोलीबांधे प्रातसमयखाय तौ निर्वीर्य्यभी बीर्य्यवान् होय ॥

अथ इन्द्रीसुखगईहोय तिसकी औषध॥

गौकाघृत १ पैसाभर श्वेतकनेर की जड़की छाल ३०टंक भर लौंग ३ टंक मालकांगनी ५ टंक कूठ ५ टंक अजवाइन खुरासानी ५ टंक अकरकरा ५ टंक सफेद गुंजा ५ टंक कुचिला ५ टंक इसबन्द ५ टंक कनकबीज ५ टंक पीपल ५ टंकजायफल ५ टंक जावित्री ५ टंक अफीम ३ टंक कटेरेके बीज १५ टंक मूसलीबीज ५ टंक घृतमें मिलाय कूटराखै सातरोज़ शीशी में भर पातालयंत्र चुआवै फिर ४ रत्ती प्रमाण नित्यखाय तौ अतिकामी होय खट्टा न खाय परहेज़ करै॥

अथ इन्द्री के बांकपन जाने का इलाज ॥

बिनौलेकी मींगी और बकरेकी चरबीमिलाय लेप करै तौ बांकपन जाय और स्थूलहोय अथवा सुहागा। कूठ। मैनशिल बराबरलेकर कपड़छानकर दमड़ीभर चमेलीके पत्तेकारसमीठे तेलमें पकावै फिर कपड़छानकर तेलशीशीमेंरक्खै इन्द्रीलेपन करै अथवामलै तौ एकमासमें बांकपनजातारहैअथवासमुन्दर फल। दारुहलदी। मुलहठी। शहत गधेके पेशाबमें घिसकेमलै तौ बांकपन जाय स्थूलहोय और बढ़े ॥

अथ स्तंभनऔषध ॥

जावित्री। सफेद कनेरकी छाल। समुद्रशोष। खुरासानी अजवायन। अफीम। जायफल। पीपर। चीनी खांड ये सब बराबर लेकर कपड़छानकरि गुड़मेंगोलीबांधे एक टंकप्रमाण गोली १ रातकोखाय तौ १२ घड़ीतक स्तंभन होय दूध पिये तब स्खलित होय॥ अथ दूसरी विधि॥

सफेद कनेरकीछाल २ टंक सफेद कबूतरकी विष्ठा २ टंक ले और २ टंकके प्रमाण शहतमें गोलीबांधे औरपोस्तकेपानी से घिसकर लिंगपर लेपकरै तौ दोघड़ीतक स्तंभन होय तथा तालमखाना। मूसली। शतावरि। बच्च खुरासानी ये सबऔ-षध ५ टंक ले विजया १५ टंक ले घी ४० टंक खांड ३६पैसा भर विजयापीसके बँगलापानके तीनपुट दे फिर खांड़को पाक करि दो टंक प्रमाण गोली बांधे १ संध्यासमयमें खाय तौ काम वृद्धि होय॥ अथ तीसरी विधि॥

चौपाई ॥

एक टंक जो केसरि करै। दोय टंक लौंग ले धरै ॥
तीन टंक जायफल सुलेय। चारिटंक अहिफेनकरेय॥
दो रत्ती कस्तूरी करै। मधुसे बांधि जो गोली धरै॥
टंकटंक गोली परमान। सांझसमय ये खाय सुजान॥
स्तंभनकरकाया बलहोय। दिनदिनरूपसवायो सोय॥
उपजै अग्निक्षुधाअधिकाय। मनसोंमिटैनरतिकीचाय॥

अथ चौथीविधि॥

भांग ६ माशे अफीम ६ माशे पोस्त ६ माशे छुहारा १ तोला बादामकी गिरी एक तोला मोठकीजड़ एक तोला धतूरे के बीज ६ माशे कूटपीस माजूमबनावै ३ माशे खायतौ बंधेज करै अथवा अफीम १ माशे भांग २ माशे शहत २ माशे खांड़ २ माशे पीस गोली धेलाभरकी बनाय खावै और ऊपरसेदूध पीवै तो बंधेज होवै॥ अथ पंचमविधि॥

मूसलीदोनों १ तोला तालमखाने ६ माशे बीजबंध ६ माशे

कनेरकी जड़की छाल ६ माशे गूलरकी छाल ६ माशे गोंदनी की छाल ६ माशे वड़की जटा ६ माशे लसोढ़ा ६ माशे सेलखड़ी ६ माशे सब कूटपीस छानकर पुराने गुड़में गोली बांधे एक माशे भर २ घड़ी पहिले खावै बंधज होवे फिर सेंधानोन से छूटे॥

अथ वन्धेजकी छठीविधि॥

जायफल ३ माशे रूमीमस्तगी ६ माशे लौंग ६ माशे इलायचीके बीज ६ माशे पीसकर शहत में गोलीबांधे बेरप्रमाण खावै तो बंधेज होवे॥

अथ बंधेजकी सप्तमविधि॥

आकके फूल ६ माशे धतूरेके फूल ६ माशे मूसलीकाली १ तोला इसबन्द १० माशे जायफल ६ माशे सबको पीसकर शहत में गोलीबांधे बेरसमान दोघड़ी पहिलेखावै ऊपरसे जलेबी खावै औ दूध पीवे तो बंधेज होवे अथवा उटंगनके बीज पैसा भरि कौंचकी सींगी पैसाभरि निशास्ता पैसाभरि पीसछानपानी से ३ माशे शामको फांके तो स्तम्भनकरै॥

अथ वन्धेजकी अष्टम विधि॥

लौंग। अफ़ीम। भांग। छोटी इलायची। जायफल। जावित्री। कमलगट्टा इन सबोंको महीनकरि पानकेरसमें गोलीबांधे २ माशे प्रमाण खायतो स्तंभनकरै विनाखटाई न छूटै अथवा जिमीक़न्द और तुलसीकीजड़ इनदोनोंको बराबरलेय फिर महीनकरि पानकेरसमें गोलीबांधे बीड़ीके साथखाय तो स्तंभन बहुत करै अथवा दालचीनी और कालेतिल बराबरले फिर महीनकरि शहतमें ७ माशेप्रमाण गोलीबनावै सोतेसमय एक गोली खाय तो मैथुनकेपीछे १ प्रहर इन्द्री प्रबलतारहै अथवा कौंचकीजड़ अंगुलभरकाटि अपने मुखमेंराखै रसचूसे जबतक मुखमेंरहै कभी न छूटै॥ अथ वन्धेजकी नवमीविधि॥

कनेरकी जड़ ३ टंक अफ़ीम १ टंक आदीके रससे इन्द्रीपर

लेपकरै स्तंभनहो पान खाय तब छूटै अथवा खिरनी कि बीज कीमींगी महुआके बीजकी मींगी दोनोंको पानीसेपीस बत्तीसी बनायसुपारीके बीचमेंरक्खै तौ मूत्रस्तम्भनहोय अथवा सफेद कनेरकीजड़ औरत्वचा छाहँमें सुखाइ कपड़छानकरि पांचटंक जायफल तेलिया २॥ टंक अफीमचोखी १ टंक वच्छनागविष १ टंक सबको बड़की जड़के रस में हलकरिके झरबेरी के बेर प्रमाण गोलीबांधे छायामें सुखायधरिराखै फिरगोलीको पोस्त के पानीमें घिसकर लिङ्गपर लेपकरै तो स्तंभन होय ॥

अथ बन्धेजकी दशवीं विधि ॥

चौपाई ॥

जातीफल विजया अरु नाग । मिश्रीमिलहु द्वादश भाग ॥
कुचिला समुद्रशोष के बीज । ऊँट कटाई लौंगहु दीज ॥
पहिले तीन बराबरि चारि । गोली बांधो मधुसे डारि ॥
रही पांच की बांधहु बरी । क्रीड़ा हरि राधासोंकरी ॥

अथवा अद्रकसूखी १ टंक तेजबल १ टंक नकछिकनी १ टंक गुड़ ३ टंक मिलाइ एकत्रकरि २ टंकप्रमाणकी गोली बनावै संध्यासमय खावै ऊपरसे दही बड़े चारिपैसा भरि खावै तो चारिघड़ी के वास्ते स्तंभन होय ॥

अथ बन्धेजकी ग्यारहवीं विधि ॥

कौंचके बीज ५ टंक बंगामूढ़ ५ टंक मिरच ५ टंक इन सबों को बकरीके दूधसों लिंगपर लेपन करै तौ स्तम्भनबहुत करै अथवा चना आधेकच्चे आधे पक्के और चूना दोनों एकत्र करि नींबूकी फांकमें रख अग्निमें पकावै पांचघड़ी पीछै निकाल कर चूसे फिर भोजनकरै तौ सातघड़ी को स्तंभन होय फिर सादा नींबूचूसे तब छूटै ॥

अथ बन्धेजकी बारहवीं विधि ॥

बेलगिरी । सौंफ । और सफेदा तीनोंको एकत्रकरि कूटपीस कपड़छान करि खाय तो जल्दी न छूटै अथवा केसरि १ टंक

लौंग २ टंक जायफल १ टंक कस्तूरी १ टंक सबको एकत्रकरि गोली बनावै फिर एकगोली रतिसे २ घड़ी पहिले खाय तो ६ घड़ी स्तंभन होय ॥

अथ मृतिकामदनशक्तिका बन्धन पर--औषधतेरहवीं ॥

इलायची । केसर । लज । लौंग । जायफल । जावित्री । रूमी-मस्तगी । अकरकरा । नागरमोथा । पीपल । अफीम । चन्दन । कस्तूरी । और कपूर इन सबको एकएक टंक ले पीसशहतमें २ माशे भरकी गोलीबांधे सन्ध्या समय खाय तो बंधेज करै ऊपरसे दूध पीवै यह और भी बहुत गुण करताहै पराक्रमभी इससे नहींघटता ॥

अथ बन्धेजकी चौदहवीं औषध ॥

कपूर १ माशे अफीम ८ मासे केवांचके बीज ८ माशे अकरकरहा ८ माशे लौंग ८ माशे गुजरातीइलायची ८ माशे शोधाबच्छनाग २ माशे मालकांगनी ८माशे शिंगरफशोधा ३ तोला इन सब औषधियोंको १०० पानके रसमें गोली ३ रत्ती प्रमाणकी बनावै रात्रिकोखाय ऊपरसे दूध पीवै यदि इस पर भी गर्मी करै तो घी खाय और ऊपर से दूधपीवै जो धातुइस परभी खलित न होय तो कागजी नींबूसे तुरन्त खलितहोय॥

अथ बच्छनागशोधनक्रिया ॥

बच्छनागका टुकड़ा करै और गाईके गोती में ७ दिनतक भिजो रक्खै परन्तुगोती नित्यनई होय औ पुरानी फेंकदे फिर सातवेंदिन गौकेदूधमें औटावै फिर निकालकर छाहँ में सुखावै तब शुद्धहोय ॥

अथ शिंगरफशोधनविधि ॥

शिंगरफ भेड़केदूधमें डोलयंत्रकरि औटावै तबशुद्धहोयफिर इन दोनोंको ऊपर लिखीहुई स्तंभन औषधिमें मिलावे ॥

अथ बन्धेजकी पन्द्रहवी विधि ॥

जायफल ५ । टंक जावित्री ५ । टंक कनकबीज ५ । टंक मुल-

हठी ५। टंक पारा ५। टंक अकरकरा ५। टंक लौंग ५। टंक अफ़ीम ५। टंक सबकोएकत्रकरि शहतमें गोलीबांधे गुंजाप्रमाण सोतेसमयखायतो १ पहरतकबन्धेजरहै फिरनींबूसेछूटै अथवा लजालू का बीज १ तोला दूधमेंपीसकर गोड़केतलुएमें लेप करैतो निस्सन्देह बंधेजहोय जबधोवै तब छूटै ॥

अथ बन्धेजकी सोलहवीं विधि ।

सफ़ेद घोंघचीका तेल निकालकर पैरोंकेनखों में लगावै तौ सूक्ष्मस्तम्भनहोय और नींबू चूसे अथवा नोनकी डली मुँहमें डाले तबछूटै अथवा शिंगरफ३।माशे अजवाइन खुरासानी३। माशे अफीम ३ माशे जायफल ३ माशे जावित्री ३ माशे अकरकरा १ माशे सबको एकत्रकरि पुराने पानके रससे मटरबराबरि गोलीबांधे फिर रात्रिको सोते समय खायतौ अतिबंधेजकरै फिर नोनसे छूटै ॥

अथ बन्धेजकी सत्रहवीं विधि ॥

दोहा ॥

मुंडी इसबँघ जायफल जावित्री अहिफेन ।
बिजया अजवायन दुनी सातो स्तंभन मैन ॥
पीपर कुमकुम जायफल चन्दन नागर जानि ।
मिर्चअकरकरा कंकोलहो येसबसम करिआनि ॥
द्वादश मास जो खावई अरु मेलै अहिफेन ।
नित्यखाय जो प्रात उठि द्रवै न तत्क्षण मैन ॥

छप्पय ॥

शशि१ केसर दृग २ लौंग राम ३ जातीफल जानत ।
वेद ४ टंक अहिफेन गुंज द्वै मृगमद आनत ॥
सकल पीसि इक ठौर शहत सूं बटी बनावत ।
रती द्वैक परिमाण रसिक संध्या को खावत ॥
बटी एक भुंजत पुरुष अति आनंद तिय होत जस ।
तबलग मनोज मुंचै नहीं जबलग खात न अम्लरस ॥

सोरठा ॥

चतुर गुंज अहिफेन टंक एक हरिवल्लभा ।
रहै थकित है मैन ज्यों बारिद ऋतु शरद में ॥

अथ बन्धेज की अठारहवीं विधि ॥

गीतिका छन्द ॥

विवफल इक टोरि मध्य द्वै टंक पीपरि डारिये ।
लपटाय पट पिंडोर ताको सकलमूंदि सँवारिये ॥
आगि में वह डारिकै मध्यमाहिं आंच पकाइये ।
औषध सँपूरण करि सुचूरण छीन अम्बर छानिये ॥
सम दालचीनी चारुलै फटकरी अर्क रलाइये ।
पुनि आध टङ्क प्रमाण मधुसों वरीसुन्दरि ठानिये ॥
रति आदिसुख जलधोइतासों लिंगलेपन कीजिये ।
हृदय को आनन्द उपजै तियन को सुख दीजिये ॥

अथमाजून बन्धेजपर ॥

केसर १ तोला लौंग १ तोला जावित्री १ तोला अकरकरा १ तोला रूमीमस्तगी १ तोला मूसली दोनों ४ तोला चोपचीनी २ तोला इलायची २ तोला दालचीनी १ तोला पीपल १ तोला हड़ अतीस १ तोला शतावरि २ तोला बेखबलधी २ तोला मदनमस्त ४ तोला लालमिरच अजवाइन खुरासानी १ तोला कबाबचीनी १ तोला अफ़ीम २ तोला पिस्ता ४ तोला बादाम ४ तोला सालमामिश्री ४ तोला चांदीका बरक़ ४ तोला इन सब औषधों को पीसछानकर बराबरकी चीनीकी चासनी कर सबोंको मिलाय माजून बनावे फिर अमृतबानमें भररक्खे संध्यासमय ६ माशे खाय और ऊपरसे दूध पीवे तो अति बंधेजकरै बल न घटे और भी अनेक गुणकरै ॥

अथ माजून दूसरी बंधेजपर ।

दालचीनी १ पैसेभर जायफल १ पैसेभर जावित्री १ पैसेभर लवँग १ पैसेभर गुजराती इलायची १ पैसेभर कस्तूरी १ माशे जेठीमधु १ पैसेभर केशर १ माशे सालममिश्री १ पैसेभर तीखुर ८ पैसेभर गोखुरू ८ पैसेभर बंशलोचन १ पैसेभर शतावरि १ पैसेभर क्रिवांच १ पैसेभर भीमसेनी कपूर ३ माशे बादामकाघी १ पैसेभर भांगकाकाढ़ा ॥ घी गायका ॥ सेर दूध १ सेरभर इनसब औषधोंको इकट्ठा करके मिश्री की चा-

सनीकरि उसमें सब दवाओंको मिलाकरमाजून थालीमेंजमादे औरकतरले फिरसंध्याको १ कतराखाय तो स्तंभनखूबहोय और गरमी कमहोय ॥ अथ तीसरी माजून बन्धेजपर ॥

कस्तूरी १ तोला जावित्री १ तोला कबाबचीनी १ तोला कौंचकेबीज मुंडी और मोथा १ तोला बीजबन्द गोखुरू १ तोला मिर्च सुर्ख्दराज १ तोला केसर १ तोला नागकेसर १ तोला इलायची १ तोला चोपचीनी १ तोला गाजरकेबीज १ तोला मालकांगनी १ तोला सदनमस्त १ तोला समुद्रसोली १ तोला बनफ्साकीजड़ १ तोला कहरवा १ तोला लौंग १ तोलाजौज १ तोला दालचीनी १ तोला उटंगनके बीज १ तोला रूमीमस्तगी १ तोला मोचरस १ तोला स्याहमूसली १ तोलापीपरामूल १ तोला इन्द्रयव १ तोला शतावरि १ तोला अकरकरा १ तोला गुड़तिवर्षा ८ पैसाभरि इन सबको पीसछान गोली गुड़में बांधे जायफल प्रमाणसोतीसमय १ गोलीखाय ऊपरसे दूधपीवे अगर दूध न होय तो शक्करसे गोली खायले अति स्तम्भनकरै॥

बहुत से पुरुषों की धातु लड़कपनमें बहुतसी लाल मिर्च अथवा खटाई खाने अथवा धूपमें रहने या बहुत मेहनत करने के कारण पतली पड़जातीहै और इसकारण से वे स्त्रीप्रसंगमें रमणी को आनन्ददेने के कारण शर्मिन्दः होते हैं और वीर्य जल्दी पतन होने से वे कुछ भी रति का आनन्द नहीं जानते इसकारण कुछ अच्छी २ धातु पुष्टकी औषध भी लिखते हैं॥

अथ धातुपुष्ट को यत्न ॥

अथ धातु पुष्टके लिये मदनमोदकगुटिका ॥ प्रसंग धना गौरी। कूट। गेरू। छड़ीला। अजमोद। त्रिफला। सोंठि। मुल्तानी। बिदारीकन्द। धनियां। मोथा। मोचरस। गजपीपल। और सेमरका मूसरा। कचूर। दोनों मूसली। पीपल। दोनों कटाई। पत्रज। सोंठि। गेहूंका सत। दोनों जीरे। जटा-

मासी। भारंगी। करंजकी मींगी। मुलहठी। कमलगट्टा सिंघारा। काकराशृंगी। नागकेसर। पुष्करमूल। शतावरि। तालीस। लौंग। जायफर। जावित्री। दालचीनी। सुपारी। अगर। दोनोंचन्दन। चीनियांकपूर। भांगरा। निर्गुण्डी। चूक ये सब औषध बराबरले कपरछान करै फिर गौका दूध पांच सेर ले और खोआकरै जब दोसेर शेष रहै तब उतारिले तिस पीछे इतनी औषध और मिलावे लौंग। चिरौंजी। गिरी। छुहारा। बादाम। असगन्ध। दोनोंइलायची। दाख। भांगआधसेर ले पोटली बांध दूधमें डारिकै औटावे पीछे सब औषध मिलाय दो २ पैसाभर की गोली बांधे एकगोली प्रभातखाय तौ धातुपुष्ट होय भूख बहुतबढ़ै क्षीणता मिटजाय॥

अथ धातु पुष्ट की दूसरी विधि॥

अथ कुचिलादि गुटिका धातुपर॥ कुचिला १ पैसाभर सोंठि ५ पैसाभरअकरकरा। जायफल। लौंग। जावित्री। रूमीमस्तगी ये सब औषध धेला २ भरिले कपरछानकर ऽ२ सेर बँगलापान के रसमें खरलकरै पहर ४ तिसपीछे छदाम २ भर की गोली बांधे एकगोली पानकेसाथ खाय तौ धातु पुष्ट होय भूखबढ़ै। उच्चाटमिटै। बलबढ़ै। स्त्री की शक्तिहोय॥

अथ धातु पुष्ट की तीसरी विधि॥

सेंबरके बीज ऽ॥ सेरले दूध ५ सेर में औटावै फिर बीज सुखाय ये औषध डाले जावित्री। जायफर। लौंग। दालचीनी पैसा २ भरिले मूसली दोनों पाव भरिले निर्गुण्डी मुण्डी भारंगी भांगरा ये दो २ पैसाभरले सब कपरछान करदो २ पैसा भर की गोलीबांधे १ गोली सोते समय आधसेर दूधके साथ खाय तौ धातु पुष्टहोय और वृद्धभी तरुणहोय॥

अथ धातु पुष्टकी चौथी विधि॥

अथ माजून धातु पुष्टपर। जायफर। जावित्री। लौंग। रूमी-

मस्तगी। चीनियांकपूर। अकरकरा। दालचीनी। तज। पत्रज अगर। तगर। वंशलोचन। चन्दन। खस। कचूर। असगन्ध। पीपरि। सोंठि। मिर्च। तिल। कौंचकेबीज। सालममिश्री। इलायची। बादाम। अखरोट। छुहारा। कपासकेबीज। मूलीकेबीज तालमखाना। बीजबन्द। गोखुरू। दोनों मूसरी। इन्द्रयव। मुलहठी। नागकेसर। सुगन्धवाला। मोचरस। बिदारीकन्द। कुलींजन। दोनोंजीरे। कासकी जड़। कमलगट्टा। धनियां। शिलाजीत ये सब औषध पैसा २ भरि ले रेहूमछली का तेल १ पैसाभर लोहबानका तेल १ पैसाभर गिरी ७ पैसा भर गौ का घी ऽ१ चीनी खांड़ ऽ२ ये सब औषध कपरछान करिघीमें भूनै खांड़मिलाय आंवले प्रमाण गोलीबांधे १ गोली प्रभात और एकसंध्याको खाय तो बहुत पुष्टता होय॥

अथ धातु पुष्टकी पांचवीं विधि॥

असगंध नागौरी १६ टंक कपरछानकरि आठ टंक भरि घीमें भूनै तिस पीछे घी निचोय ऽ५ दूधमें औटावै फिरआगे लिखी औषध मिलावै सोंठि। तज। पीपरि। मिरच। पत्रज। इलायची। सिंघाड़ा। केलाकी जड़। काकराशृंगी। दोनों चंदन। बंग। शिलाजीत। जायफर। नागकेसर। मोथा। कचूर जावित्री। बंशलोचन। दोनोंजीरे। चीनियांकपूर। सुगंधबाला। अभ्रक। रूमीमस्तगी। सार। कौंचके बीज। तालमखाना। बीजबन्द। कमलगट्टा। तवाखीर। दोनोंमूसली। निगुण्डी। भांगरा। चीनीखांड़ ऽ३ ये सब औषध कपरछान कर उसी दूधमें मिलाय खांड़की चासनी करि दो पैसाभरि के प्रमाण गोली बनावै १ गोली प्रभात खाय तो प्रमेह दूरहोय वीर्यको प्रबाह थँभै और अति पुष्टहोय॥

अथ धातु पुष्टकी छठी विधि॥

चोपचीनी। मुलतानी। सोंठि। मिरच। मोचरस। बाय-

बिड़ंग। सौंफ़ ये सब औषध पैसा २ भरिले कपरछान करि के ऽ१ गौके दूध में औटावै जब आधसेर शेष रहै तब संपूर्ण औषध और ऽ॥ शहत मिलाय टकाभरि की गोली बांधै १ गोली प्रभात खायतौ धातु पुष्टहोय ॥

अथ धातु पुष्टकी सातवीं विधि ॥

असगंध १ पैसाभरि। ब्रह्मदंडी १ पैसाभरि। निर्गुण्डी १ पैसा भरिले खांड़ ऽ। भर मिलाय बकरीके दूध के साथ ७ दिनले तौ धातु बंद होय अथवा बंशलोचन। बिजयसार कीगोंद। खांड़ ये तीनों बराबरले पीवै तौ धातु बन्दहोय ॥

अथ धातुपुष्टकी आठवीं विधि ॥

मोचरस। मिरच। दोनों मूसली। मुलहठी। दोनोंजीरे। असगंध। रूमीमस्तगी। शंखाहूली। इलायची। निर्गुण्डी। गिलोय। उर्दकी दाल। पीपर। भारंगी। लौंग। शतावरि। सोंठि मुंडी। भांगरा। दालचीनी। तज। चिरौंजी। दाख। छुहारा। बीजबन्द। तालमखाना। बिदारीकंद। त्रिफला ये सब औषध पैसा २ भरिले कपरछानकरि ऽ२५ गौके दूधका खोआ करै जब दो सेर शेष रहै तबसब औषध मिलाय पावभरिघी और पाव भरि शहत मिलाय आंवले के प्रमाण गोली बांधै १ गोली प्रातःकाल और १ संध्यासमय खाय तौ धातुकी पुष्टता होय भूख बढ़ै ॥

अथ धातुपुष्ट की नवीं विधि ॥

बिदारीकंद ऽ॥ तुलसी के रसकी तीनपुटदे फिर छाया में सुखाय गौका दूध ऽ५ औटावै जब ऽ२ शेषरहै तबउतारिकै बिदारी कंद और ऽ॥ खांड़ मिलाय सातभाग करि सात दिन खाय तौ धातु बहुत पुष्टहोय और ७ स्त्रीसे भोग करने की शक्तिहोय ॥

अथ धातुपुष्टकी दशवीं विधि ॥

कस्तूरी। केसरि। जावित्री। दालचीनी। अकरकरहा। लौंग असगन्ध। मूलीके बीज। रूमीमस्तगी। मिरच। तज। पत्रज

दोनों मूसली । पीपरि । शालममिश्री । बीजबन्द । गोखुरू । अजमोद । मालकांगनी । समुद्रफेन । समुद्रशोष । गिलोय चीते की छाल । उटंगन के बीज । कोंचकेबीज । इन्द्रयव । इसबंद । पीपलामूल । कमलगट्टा ये सब औषध पैसा २ भरि ले कपरछानकर ऽ१ चीनी खांड़ मिलाय पैसा २ भरि दोनों समय खाय तौ धातु पुष्ट और अधिकहोय और पुरुषके शक्ति भी बढ़ै अथवा चोपचीनी । मोचरस । बायबिड़ंग । सौंफ । गजपीपल । गाजरके बीज । सलगमके बीज । तेजबल । इन्द्रयव । नागकेसर । दोनोंमूसली । सेमर का मूसरा । लसोढ़े के बीज । शालममिश्री । ऊंटकटावाकीजड़ । तालमखाना । दालचीनी । शतावरि । गोखुरू दोनों । भारंगी । भांगरा । चिरौंजी । कमलगट्टा । कोंचकेबीज ये सबऔषध पैसा २ भरिले और गौका दूध ऽ५ औटावे जब सेर भरि रहे तब कपरछान कर सब औषध मिलावे फिर सेर भर खांड़ मिलाय दोपैसाभरिकी गोलीबनाय खाय तौ धातुकी पुष्टता होय बलबहुत बढ़ै ॥

अथवा दोनों गोखुरू । कोंचकेबीज । बीजबन्द । शतावरि विदारीकन्द । तालमखाना । असगंध । अडूसेकीजड़ । उटंगन केबीज । गिलोय । रक्तचन्दन । तज । पत्रज । इलायची । पीपरि त्रिफला । नागकेसरि । सेमरकोमूसरा । ऊंटकटेडेकीजड़ । कुड़ाकीजड़ । ऊंखकीजड़ ये सब औषध पैसा २ भरिले कपरछानकर पांचसेर गौके दूधमें औटावै जब एकसेर शेषरहै तब उसमें तीनसेर खांड़ और सब औषध मिलाय २ पैसाभर की गोली बांधे एकगोली सन्ध्या और एकगोली सबेरे खाय तौ धातुको पुष्टकरै और पराक्रम को बढ़ावै ॥

अथ धातुपुष्टकी ग्यारहवींरीतिं ॥

मूसलीकाली पैसाभरि । मूसलीसपेदपैसाभरि । रत्नज्योति पैसाभरि । अजमोदपैसाभरि । सेमलकामैदा पैसाभरि । शता-

वरि पैसाभरि। मोचरस पैसाभरि। समन्दरसोख पैसाभरि। तालमखाना पैसाभरि। बीजबन्द पैसाभरि। पिस्ताका फूल पैसाभरि। धनियांकेचावल पैसाभरि। दक्षिणीगोखुरूपैसाभरि रूमीमस्तगी पैसाभरि। वंशलोचन पैसाभरि। शालममिश्री पैसाभरि। शकाकुल पैसाभरि। उटंगनके बीज २ माशे। चिरचिरेकीगिरी पैसाभरि। धावे के फूल पैसाभरि। जायफल ३ माशे। इलायची ३माशे। दालचीनी ३ माशे। शीतलचीनी ३माशे। सेलखड़ी ६माशे। चुनियांगोंद ६माशे। कीकरकागोंद ६ माशे। पिस्ता पैसाभरि। अखरोट की गिरी पैसाभरि। नारियलकी गिरी पैसाभरि। बादामकीमींगीपैसाभरि। तरबूज के बीज पैसाभरि। चिरौंजी इनसबऔषधोंको कूटपीस शहतमें माजून पकावे गोली तोलाभरि की बांध खाय तो धातु पुष्ट करै बलकरै और भी गुणकरै॥

अथ धातुपुष्टकी बारहवीं विधि॥

तालकेश्वर २माशे। बंग ३ माशे। दूधी ७ माशे। तिलकूट ९ माशे। पवांरकेबीज ९ माशे। बीजबन्द ९ माशे गोखुरू ९ माशे। सोंठि ८ माशे। मिर्च ९ माशे। गुड़ ५ पैसा भरि। सबको कपरछानिकै गुड़ में गोली बांधै फिर एक गोली नित्य प्रातःकाल खाय और खट्टे मीठेसे परहेज रक्खे तो धातु बहुत पुष्ट होय॥

अथ धातुपुष्टकी तेरहवीं विधि॥

अजवाइनखुरासानी। चीनियांकपूर। जायफल। लौंग। बीजबन्द। अकरकरहा। शिंगरफ। माजूफल। फिटकरी। सुहागा इन सब औषधियोंको बराबरले कपरछान करै परंतु कपूर पीछे से डाले फिर नींबूके रसमें झरबेरीकेबेरकी समान गोली बांधे एक गोली प्रातसमय खाय तो सब धातुव्याधिजाय परहेजकरै गेहूं चने और घी खाय खटाई आदि से परहेजकरै अथवा बादाम। केसर। माजूछोटी। जावित्री। शहत। मीठेतेल

में पीस पिस्ते के फूल और गुड़ में गोली बांधे झरबेरी प्रमाण फिर एक गोली प्रातःकाल खाय खटाई और गरमचीज़ से परहेज़करै तो धातु पुष्ट होय ॥

अथ धातुपुष्टकी चौदहवीं विधि ॥

हनद गूंद और गिलोय बराबरले चूर्ण करि सबेरे गौके घृत और दूध से खाय पथ्य गेहूं औरचनेकी अलोनी रोटीका करै तौ धातुपुष्ट होय अथवा बबूर की फली । दूधी । झरबेर की जड़की छाल । सब समानलेय उसमें चीनी मिलाय२पैसे भर नित्य दूधकेसाथ सबेरेखाय तौ धातुपुष्ट होय अथवातालमखाना । गोखुरू । समुद्रशोख । सुपारीकाफूल। आफू अर्थात् अफ़ीम।पारा।बबूलकागोंद।सेंबरकीछाल।स्याहमूसली।श्वेतमूसली । बीजबन्द । कमलगट्टा ये सबऔषध २टंकभरलेउसमें २१पैसाभरिसिंघाड़ेकाआटा और २६ पैसेभर चीनी मिलाय १ पैसेभरनित्यखायतो धातुपुष्टहोय परहेजकरै अथवातालमखानापैसाभरि । गोखुरूपैसाभरि । शिलाजीत पैसाभरि सबको एकत्रपीस ३ पैसाभरचीनी मिलावै फिर ७ दिनतक धेला २ भरि नित्यखाय और परहेजकरै तो धातु पुष्टहोयसही अथवा तालमखाना ५ पैसेभरितज ५ पैसेभरि चीनीगोंद ५ पैसेभरि सबको पीसराखै फिर उसमें दुगुना शहत मिलाय २ पैसाभरि नित्यदूधके साथ निगलिजाय इसकासेवन २५ दिनतक करै और दूध ६ पैसेभरसे शुरूकरे फिर सेरभरतक नित्य बढ़ावता जाय तो धातु अतिपुष्टहोय ॥ इतिवाजीकरणाधिकार नपुंसकपनेके दूर करनेकी विधिसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रताप सिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रन्थेनपुंसकपनेके दूरकरनेके लक्षणभेदसंयुक्तयत्ननिरूपणं नामद्वाविंशतितमस्तरंगः २२ ॥

अथ शरीर की पुष्टाईका यत्न ॥

बूढ़ेपनेको दूरकरनेकी सातोंधातु सातोंउपधातु औरचन्द्रोदयको आदिले रसकी क्रिया और उनकेखानेकी विधि लिखते हैं ॥ सोना १ रूपा २ तांबा ३ पीतल ४ सीसा ५ रांगा ६ लोहा ७ ॥

अथ मृगांककी विधिलिखते हैं ॥

सोनेका पतलावरक कराय गरमकर तेल और काँजी और मट्ठे में त्रिफलेमें गोमूत्रमें कुलत्थके काढ़ेमें २ बारबुझावे फिर सोनेसे दूनापारा ले और सोनेकेवरकको खटाई के साथखरल करे पीछे उसकागोलाकर फिर उनदोनों की बराबर आँवलासार गन्धक उसगोलेके नीचेऊपरदे सरवेके संपुटमेंधर कपड़मिट्टीदे गजपुटमें फूंकदे इसतरह इसमें ३ पुटदे तबयहमृगांक चोखाहोय १ अथवा सोनेका चोखावरकले उसका सोलहवां हिस्सा उसमें सीसाडाले फिर इनदोनोंको खटाईसे खरलकरे पीछे इसके नीचेऊपर शोधीगन्धकइसकी बराबरदे और सरवे मेंधर उसको कपड़मिट्टीकर गजपुटमें फूंकदे इसतरह सातपुट दे तौ मृगांक चोखाबनै २ अथवा सोनेका वरक मँगायउसकी बराबर उसमें खटाईसे खरलमें पाराचढ़ावे पीछे उसमें कचनारके रसकी १ पुटदे पीछे उसमें अग्निछाल के रस की ३ पुटदे फिर कारिहारीकी जड़के रसकी १ पुटदे पीछे उसमें सोने के वरकसे चौथाहिस्सा मोतीडाले और खरलकरे पीछे उसमें सबकीबराबरले शोधीगन्धक डाले पीछे २ दिनखरलकरे फिर उसकागोलाकर सरवेमें धर कपड़मिट्टी कर गजपुटमें फूंक दे पीछे उसको स्वांगशीतल होनेपरकाढ़ै तौ मृगांकचोखाबनै ३॥

अथ मृगांकमारणकी द्वितीयविधि॥

रांगा १ पैसाभरिसीसा १ पैसाभरिले एकनयेठीकरेमें चूल्हे पर चढ़ाय नीचेबबूलकी लकड़ीजलावे जब येदोनों पिघलजायँ तबउसमें विषखपराकी सूखीजड़केछोटे २ टूकडालताजायऔर

करछीसेचलाताजाय जबवह भस्महोजाय तब एकत्रकरिदाबि रक्खै शीतलहोय तब उतारे और १ रत्तीपानकेसाथ खाय तौ दाहजाय और धातुबढ़ै ॥

अथ मृगांकके खानेकी विधि ॥

१ रत्ती मृगांकले उसमें शहत २॥ टं० मिलाय उसमेंपीपल एकमिलाय खायतो खांसी, श्वास, क्षयी, अरुचि आदिले सब रोगोंको दूर करै २ महीने खाय तो शरीरको पुष्ट करै पथ्य से रहै खटाई आदि खाय नहीं ॥ इति मृगांककी विधि ॥

अथ रूपरसकी विधि लिखते हैं ॥

चांदीका वरक ३ भागले और हरतालकावरक १ भागले पीछे इन दोनोंको खटाई से खरलकरै फिर इनका गोला कर सरवे के संपुट में धर गजपुटमें फूंकदे इसीतरह १४ पुटदे तो रूपरस निपट चोखाबने पीछेएकरत्ती नित्यखाय तो बहुतगुण करे अथवा चांदी के पत्रों के नीचे ऊपर रूपामक्खी बराबर करदे और सरवे के संपुट में फूंकदे तो रूपरस चोखा होय १ रत्ती १ महीने तक खाय तो बहुत गुणकरै ६ ॥

अथ रूपरसकी दूसरी विधि ॥

रूपा २ पैसाभर जस्ता धेलाभर ले लीला थोथा सों शोधै १ पहर नींबूके रसमें शोधे १ पहर गौके माठामें शोधे १ पहर खरगोशकेमूत्रमें शोधे १ पहरफिर तांबेकेपात्रमेंधरके फूंकदेय तौ रूपा सिद्धहोजाय फिर १ रत्ती नित्य आमले के मुरब्बे में खाय तौबहुत गुणकरै ॥ अथ तीसरी विधि ॥

खजूरकारस १० सेर चूना २सेर और १ शंखमँगाय कपर-छानकरै फिरइनतीनोंको मिलाय ४ पहर कपरछानकरैतिसपीछे इनसबको १ शंखकेभीतर भरै तिसमें २ पैसाभर शुद्धरूपा धरै फिरशंखपर ३ कपरौटीकर उसे एक मटुकेकेभीतर थोड़ासा चूना डारि बीचमें लटकावैऔर मटुकेके पेटमेंछेदकर उसमें १ नली

लगावै फिर उसका मुहमूंद कपरौटीकरै और नली के मार्ग से मटुकेके भीतर खजूरका रस डारै और नली का मुंह मूंदि गढ़िल्लाखोद घोड़ेकी लीदमें ८दिन गाड़ि रक्खे तौ रूपासिद्ध होय फिर चावल प्रमाण पानमें प्रात समय खावै दूध और घृतका सेवन अधिककरै तौ भूख लगावै शरीर को पुष्ट करै और भी अनेक गुण करै ॥

अथ चौथी विधि ॥

१ गोह मारि उसमें जितना समाय तितना रांगा भरमूड़ और पूंछ काटि दोनोंमार्गसींदे फिरउसको एककुम्हड़ा मँगाय ऊपर सात कपरौटी कर सुखावै जब वह सूखि जाय तब उसमें गोहभरै और उसके मुँहपर ३ कपरौटी करै और गज-पुटमें कंडा की आंचसे फूंकदेय जब शीतल होय तब निकाले तो सिद्धहोय और १ रत्तीतोलेभर रांगकोबेधे और ५० बर्षकी अवस्थापर खाय तौ बहुतगुणकरै और धातु बढ़ावै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

रांग ६ पैसाभरले ढांककी लकड़ीमेंटांकीदे ऐसाछेदकरैकि जिसमें १ सेर रांगसमाय फिर उसमें नोनबिछावै तिसके ऊपर नकछिकनी बिछाय रांगधरै तिसकेऊपर फिर नोनबिछाय और बज्रमुहाकर उस पथलीमें चारोंओरसे कंडा भर आंच दे जब शीतलहो तब निकालै तौ सिद्धहोय और १ रत्तीतोलेभर रांग को बेधे और खाय तो पूर्ब्बवत् गुणकरै ॥

अथ छठवीं विधि ॥

गन्धक १ पैसाभर सोरा १ पैसाभर गोभीकारस १२टका भरले और प्याले मँगाय उनमें चार २ टका भर गोभीकारस डाले तिसपीछे सोरा और गन्धक ले गोभी के रस में २ पहर खरलकरै फिर उसको प्याले में डारि चूल्हे पर चढ़ायदे और करछासे टालतेजाय जब रसजलजाय तब दूसराप्यालाचढ़ाय

दे फिर तीसरा प्याला चढ़ावै और ऊपर से रस डालताजाय जब पिघलजाय तो भस्म होय और १ रत्ती तोलेभर रांगको बेधे और पूर्ववत् बहुत गुणकरै ॥

अथ सातवीं विधि ॥

पारा और रूपेके ताव दोनों बराबरले फिर इनको तेलमें फिर मट्ठेमें फिर गोमूत्रमें फिर कांजी में फिर कुलथी के काथ में शोधकर त्रिफलाके काथसों शोधे फिर इनको खरल में जब तक पिट्ठीके प्रमाण न होजावै घोटे फिर गन्धक हरताल ये दोनों बराबरले उसमें मिलाय नींबू के रससों घोटे फिर करवे में धरकेकपरौटीकरै आंचदेय रूपासिद्धहोजाय खायतो अनेक गुण करै इति रूपरसकी विधि सम्पूर्ण ॥

अथ तांबेश्वरकी विधि ॥

चोखे तांबेके पत्र गाढ़े कराय तेलमें मट्ठे में त्रिफलेके रस में सातवार शोधिले पीछे उनपत्रोंकी बराबर रूपामक्खीमहीन पीस उनकेनीचे ऊपरदे सरवे में संपुटकर गजपुटमें फूंकदे तो तांबेश्वर चोखाबने पीछे इसे १ रत्ती नित्य १ महीनेतक खाय तो श्वासखांसीको आदिले सर्वरोगजायँ और बहुत गुणकरै ॥

अथ दूसरी विधि ॥

ताम्र ५ तोलाले पत्र कराय प्रथम गोमूत्रमें ७ बार फिर माठामें ७ बार बुझावै तिसपीछे अमलीकेफूल मँगाय १ हांड़ी में भरै तिसके बीचमें परतदे तांबेके पत्रमेंधरै और पानी डारि बारहपहर की आंचदेय तिसपीछे पत्ररोति कढ़ाई में डारि नींबू के रसमें खरलकरै फिर ५ तोलेपारा मँगाय कागजी नींबू के रसमें २ पहरखरलकारि तांबेमें चरायदे तिसपीछे सात तोले गंधक मंगाय नींबूकेरसमें खरलकरि उसकी गोलीबनावै गोली के भीतर तांबा धरै फिर उसकेऊपर नींबूकेरससे ७ कपरौटी करै फिर मटुकीमंगाय मटुकीके ऊपर ७ कपरौटी करके सुखावै

उसमें बालूभर बीचमें यंत्रधरे और बज्रमुहा करि भट्ठी पर चढ़ाय २४ पहर की आंचदे जब शीतलहोय तबउतारे इसकी मात्रा १ रत्तीखाय तो ५ सेरकी भूखहोय शरदी दूरहोयनामर्द मर्दहोय और कास श्वासजाय बात पित्तजाय बात दूरहोय॥

अथ तीसरीविधि॥

तांबा ५ पैसाभरले पत्रकरावे फिर उन्हें तपाय सरसों के तेलमें ७ बार बुझावे नकछिकनीके रसमें ७ बार बुझावे घिकुआरके रसमें ७ बार बुझावे आकके दूधमें ७ बार बुझावे तिस पीछे अमलीके फूलनमें १२ पहर औटावे फिर खटाईकी हांडी में बन्दकर ३ दिन अग्नि करता जाय चौथेदिन रेतवावे और इसतांबेके चूर्ण में २॥ पैसेभर पारा मिलाय कराही में डारि नींबू के रस मे खरल करि पारा चराय दे फिर उसमें १ पैसा भर गन्धक डारि नींबू के रस में गोली बनावे फिर कुम्हार से कटोरासा संपुट बनवाय उसमें चौराई की जड़ पीस के बिछावे तिसपर गदापुरेनाकी जड़ बांटि गोलीकेऊपरलपेटे फिर चौराईकीजड़ पीस संपुटके भीतर बिछावे और उसपर गन्धकडारि भीतर गोला धरे फिर संपुटको बंदकर ऊपरसे ७ कपरौटीकरे और उसे मोटीहांडीमें धरे हांडीपर ७ कपरौटी कर पेंदीमें छेदकर उस में बालूभरे उसबालूके बीचमें तांबे के गोलेको धरि हांडीके मुंहपर परियाधरि बज्रमुहा करे तिसपर भी ७ कपरौटी करे फिर उसे भट्ठीपर चढ़ाय नीचे २४ पहर तक तेजअग्निलगावे जब स्वांग शीतलहोय तबउतारे तो औषध सिद्धहोय फिर उस में अकरकरहा। लौंग। कुटकी मिलाय बँगलापानके रसमें ऐसीगोली बांधे जिस में गोली पीछे २ रत्तीतांबा आवे और एक गोली खाय तो खांसी, कफ, ऊर्ध्वश्वास, आमबात, धातुक्षीणता दूरहोय और कामकी वृद्धिहोय जो इस औषधको नियमकरि खाय तो वृद्धदेह तरुणहो और

देहके बातविकारजायँ नेत्रोंमें ज्योतिबढ़ै और बहुत गुणकरै ॥

अथ चौथीविधि ॥

एकसेर तांबे के पत्रकराय गोमूत्रमें मट्ठा में तेलमें तीन तीन बार बुझावै फिर पारा पावसेर गन्धक पावसेर इनदोनों को घिकुआरिके रसमें एकादिन घोटि तांबे के पत्रोंपर लेपकरै फिर सुखाय दूसरीबार लेपकर हांड़ीमें धर और ऊपरपरिया से मुंहबंद कर हांड़ीको चूल्हेपर चढ़ाय नीचेसे८ पहर अग्नि जलावै जब लालहोजावै तब काढ़िले तौ तांबेश्वर सिद्ध होय १ रत्ती प्रतिदिनपानमेंखाय तौ सर्वरोग जायँ गुणकरै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

तांबेकेपत्र करावे फिर पारा और गन्धक बराबरले नींबू के रसमें घोटि उन तांबेके पत्रोंपर लेपकरै फिर उन्हें संपुटमें धरि ऊपर सात कपरौटी करिबकरी की लेंड़ीकी आंचमें७बार गजपुटदे जबस्वांग शीतलहोयतब निकालेतौ तांबेश्वर सिद्ध होय मात्रा १ रत्तीपानके साथले तौ सर्वरोग जायँ गुणकरै अथवा तांबेश्वररत्तीतीन। तज। पत्रज। खुरासानी बच। नागकेसर। लौंग। जायफल। जावित्री। त्रिकुटा। अकरकरहा। मंजीठ ये औषध चार२माशेले घिकुआरिके रसमें गोलीबांधे अथवा शहत और मिश्रीमें गोली बांधे और प्रतिदिन खाय तौ धातु बढ़ै और कासश्वास, बीसों प्रमेह, आमबात, क्षयी, अजीर्ण, रक्तपित्त, दाह ये सबरोग जायँ औरभी अनेक गुणकरै ॥

अथ छठी विधि ॥

तांबा १ पैसाभर नैनियां गन्धक १ पैसाभर ले डिबिया में धरि कपरौटी करि अरने कंडोंमें दहका दे जब शीतल हो तब निकाल पथरसंगा और मूली दोनों का रस धेला २ भरि डारि खरलकरै फिर आंचदे तौतांबेश्वर सिद्धहोय और जो ये सब औषध बंगमेंडारि खरलकरिफूंकदे तौ बंगेश्वर सिद्धहोय ॥

अथ सातवीं विधि ॥

४ पैसाभरितांबेकी कटोरी बनवाय गर्म करि १०१ बार नींबूके रसमें बुझावै तिसपीछे २ सेर कारे धतूरेके पत्तोंकी २ रोटी बनावै उनमें से एक हँड़ियाकी पेंदी में बिछावै तिसके ऊपर ४ पैसाभर आमलासारगन्धक पीसके धरै तिसकेऊपर वहरोटी औंधावै फिर दूसरी रोटी कटोरीके ऊपरधरि दोनोंका मुखबन्द करदे फिर हँड़िया का मुखबन्दकरि १२ पहर की आंचदे जब स्वांग शीतल होय तबनिकाले तो तांबेश्वरसिद्ध होय मात्रा १ सरसोंकी बराबर पानमें २१ दिनतक खायतो कायाकल्प होय ज्वरजायगुण बहुतकरै ॥

अथ आठवीं विधि ॥

तांबा १ पैसाभर रांगधेलाभर नकछिकनी छदाम भर घरियामें धरि फूंकदे तो तांबाभस्म होजाय फिर उसे पिसी हुई पथरसंगाकीजड़। नकछिकनी समेत पारागन्धक मिलाय घरिया में धरि फूंकदे तो तांबेश्वर सिद्धहोय ॥

अथ नवीं विधि ॥

दोहा ॥

घोरि जँभीरी रङ्ग सों पारा गन्धकदोय।
पत्र लपेटै ताम्रके तासों यह विधिहोय ॥
सरवा मध्ये पत्रधरि कपरौटी करवाय।
तीनबारइमि आंचदे ताम्रभस्महोजाय ॥

अथ दशवीं विधि ॥

प्रथम अधोतर या गजीकी चद्दरले चनेके खेतमें कईदिन तक प्रातःकालफेरे जब उसमें चनोंकी नोनी लग जाय तब उसकी नोनीझारले तिस पीछे सात चुकरिया मँगाय उनमें नोनी भरि बीचमें एक २ पैसा धरै फिर उनके मुंह ठी-कलोंसे बन्दकर ऊपरसे कपरौटीकर सुखावै तिस पीछेगढ़िल्ला खोदि उसमें कंडा भरि बीचमें चुकरिया धरि फूंकदेय जब

अग्नि शीतल होय तब निकाल लेय तौ वह १ रत्ती तोले भर रांगाको बेधे यह सदाशिव का कहा हुआहै इति बंगेश्वरविधि॥

अथ नागेश्वर की विधि ॥

सीसेको गलाय तेल में मट्ठेमें गोमूत्रमें कांजीमें त्रिफले के पानी में आकके दूधमें ७ बार बुझावे पीछेकड़छुलेमें धर चूल्हे पर चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे पीछे सीसेके ऊपर पीपलके छोतरे का चूर्ण और अमलीके छोतरे का चूर्ण सीसेसे चौथाई ले उस सीसे के ऊपर थोड़ा २ डालता जाय और लोहेकी कड़छी के पेंदेसे उसे १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय पीछे इसे जीरे से उसन गजपुट में फूंकदे पीछे इसीतरह जम्भीरी के रसकी १० पुटदे पीछे नागरबेलके पत्तों के रसकी १० पुटदे फिर सीसेके बराबर मैनासिलले उसे कांजी से खरल करै पीछे टिकड़ीबांधि सरवे में धरि गजपुटमें फूंकदे पीछे स्वांगशीतल होनेपर काढ़े इसी तरह ६० पुटदे तो नागेश्वर चोखा होय गुण बहुत करै सब रोगोंको दूर करै खाने की मात्रा १ रत्ती तथा २ रत्ती॥

अथ दूसरी विधि ॥

सीसेको शोध कड़छुलेमें चढ़ावे नीचे अग्नि जलावे केवड़े के घोटेसे १ दिननिरन्तर रगड़ताजाय वह भस्म लालहोय उसकी मात्रा १ रत्ती नित्य २१ दिनखाय तो बहुत गुणकरै॥

॥ अथ तीसरी विधि ॥

सीसा ५ पैसाभर मैनसिल १ पैसा भर छालियागन्धक १ पैसा भर लेकर सीसे के पांच पत्र करावे तिस पीछे दो संपुट मँगाय दोनों औषध महीन पीसकर उनमें बिछावै तिसके ऊपर परत देके सीसे के पत्र धरै फिर ऊपर से और औषधदेऊपर से दूसरा दिया धरि ७ कपरौटी करै फिर उस संपुटको एक अंगीठीमें धरि अरने कंडोंसे गजपुटमें फूंकदे जब शीतलहोय तब निकाले १ रत्ती खाय तो धातु बढ़े भूख बहुत होय ॥

अथ बंगेश्वर की विधि॥

रांगे को गलाय २ तेलमें मट्ठेमें गोमूत्रमें कांजीमें त्रिफले के पानी में सात बार बुझावे और आक के दूधमें सातबार बुझावै पीछे कड़छुले में धर चूल्हेपर चढ़ाय रांगेसे चौथाई पीपलका छोतरा और चौथाई अमली का छोतरा इन्हें महीन पीसरांगके ऊपरडालताजाय और कड़छीके पेंदेसे २ पहरतक रगड़ताजाय तब वह रांगा भस्म होय पीछे रांगेके बराबर हरतालले खटाई से खरलकरै गजपुटमें फूंकदे इसीतरह १० पुट दे तब बंगेश्वर सिद्धहोय गुण बहुतकरै मात्रा १ रत्ती अथवा बंग पावभरले उसकी बराबर पाराले इनको एक जीव कर पत्र करै पीछे एक बड़ा उपला ले उसमें कसेलाका चूर्ण पावभर बिछाय उसके ऊपर रांगेका टुकड़ा धरै फिर ऊपर कसेले का चूर्ण धर आस पास उपले धरै बिना पवन की जगहमें फूंकदे उस रांग के फूले होजायँ यह बहुत गुण करै॥

अथ दूसरी विधि॥

रांग ऽ॥ ले कढ़ाई में पिघलावे तिसपीछे ऽ३ अजवायन और हल्दी ऽ। भरले एकत्रपीस कढ़ाईमें रांगपर बुरकताजाय और ढांककी लकड़ीसे चलाताजाय तौ रांगमरै॥ अथखाने कीविधि॥ ३ तोलेबंग और लौंग। इलायची। जायफल। जावित्री। सोंठि। मिरच। पीपल। तज। पत्रज। नागकेसर ये सब औषधबराबरले १ टंककी गोलीबांधे १ गोली प्रतिदिनखायतौ शुक्रवृद्धिहोय और कृशताहड़फूटन दाह मूत्रकृच्छ्र ज्वरये सबरोगजायँ॥ अथ तीसरी विधि॥

रांगा और पारा बराबरले अग्नि दे तौ रांगा मरै और जो गुणस्वर्ण के खाने से होयँ सो बंगेश्वर करै॥

अथ चौथीविधि॥

रांगा ५ पैसाभर हल्दी १५ पैसाभर दोनों अजवायन १५

पैसाभर ले कपरछानकर रांगेको गरम कर कोरे खपरा में चढ़ाय पिघलावे ऊपरसेथोड़ी २ औषध डालताजाय जबसिद्ध होजाय तब सब समेट एक दीवामें बंदकर कड़ी आंचदे जब शीतल होय तब निकाल फिर लौंग इलायची के अनोपानसे खाय तौ जरानिजाय भूख बढ़े सोंठिसे लेय तौ बातजाय भूख बढ़े और अनेक गुणकरै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

रांगाको लोहे की करछीमें तपाय गौका मट्ठा तिलकातेल और गोमूत्र को बहेड़ेकी कठौती में डारि इक्कीस २ बारबुझावै तिस पीछे गजभर लंबा और गजभर चौड़ा गढ़िल्ला खोद उस में अरनेकंडे भारि ऊपर से पीपलकी छाल बिछाय तिसके ऊपर रांगा धरि पीपलकी छाल धरै फिर और कंडाधरि फूंक देय तो भस्महोय ॥ अथ छठी विधि ॥

टाट बिछावै तिस के ऊपर भांग बिछाय रांगके पत्र धरै इसीभांति कईपरतदेके गजपुटमें फूंकदेय तौ बंग सिद्धहोय ॥

अथ सातवीं विधि ॥

चौपाई ॥

पहिले दूध आक को लावै । तासों ले हरताल पिसावै ॥
रांग पत्रसों वह हरताला । लपिटावै इत उत ततकाला ॥
ता ऊपर पीपलको वकला । सूखो कुटि देय पुनिसकला ॥
धरि सरवा में करि कपरोटी । गजपुट आंच देय पुनिमोटी ॥
सातवार यहि विधि पुट देय । पीपल बकला फिर के लेय ॥
वार वार इमि आंच दिखावै मरै बंग सो कामै आवै ॥

अथ सार की विधि ॥

गजबेलि के लोहे का चूरकराय उसे तेल में मट्ठे में गोमूत्र में कांजीमें सातबार बुझावे पीछे छीलर के रसमें खरल करे गजपुटमें फूंकदे पीछे ग्वारके पट्ठे की तीनपुट दे पीछे आकके दूधकी ७ पुट दे और थूहरके दूधकी ७ पुट दे त्रिफलेके रसकी ७ पुट दे डोड़ाके पत्तेके रसकी ७ पुटदे इसीतरह पुटदेदेभस्म

कर पत्थरके ऊपर पीसे जबतक वह जल ऊपर तिरै तबतक भस्मकरै तो गुण बहुतकरै अथवा गजबेलि के चूरमें नींबूके रसकी और नौसादर की २१ पुटदे गजपुटमें फूंकताजाय और पीसताजाय तो सार चोखा होय और गुण बहुतकरै मात्रा १ रत्ती नित्यखाय तो सर्वरोगको दूर करै ॥

अथ दूसरी विधि ॥

चौपाई ॥

करि सरिया गज वेलि रितावै । ताको चूर्ण तौलि मँगवावै ॥
तो चूरण का द्वादश अंशा । ईगुर डारे विधि औ संशा ॥
घृत कुमारि को डारे नीर । दोय पहर लों घोटै धीर ॥
सरदामधि धरि करि कपरोटी । आंच देय गजपुट की मोटी ॥
फिर फिर घोटै फिर फिर आंच । बार बार इमि करिये सांच ॥
तब लोहा मरिजाय निदान । होय सिद्धि औषध परमान ॥

अथ रसमारण विधि ॥

लोह और चूना ५ पैसाभर । मैनसिल धेलाभर । कसीस धेलाभर ये दोनों औषध सूखी पीसे फिर औषधन के तीन भागकरे एक भाग चुकरिया में पानीडार के डारै फिर लोह और चूना दोनों को लोह के बासनमें डारि लोहके घोटेसे घोटै और औषधिनका पानी डालताजाय इस भांति सातदिनघोटै तिसपीछे सात आंचदे जब शीतलहोयतबउतारै तौसिद्धहोय अनोपानसोंठि १ टकाभर मिश्री १ टका भर ये दोनों औषध मिलायके २१ पुरियाबांधे औरक्षीणधातुपुरुषकोदेऊपरसे १ सेरगौका दूध पिलावै तो धातुवृद्धिहोय ॥

अथ दूसरी विधि ॥

सार २ पैसाभरलेभंगाकेरसमें ७ बारबुझावै फिर मूलीके रसमें ७ बार बुझावै तिसपीछे धेलाभर नवसादरले सार में मिलाय सूखेखरल करै और थोड़ासा पानी गेरि चुकरियाभर के ३ दिनराखै तो सारसिद्ध होय सीसा धातुको १ सेर दूधके अनुमानसे १ रत्ती देय तो धातुबढ़ै ॥ इतिसारविधिः ॥

अथ धातुउपधातुके मारणकीविधि ॥

सोनामक्खी और रूपामक्खी १ अभ्रक २ मैनशिल ३ हरताल ४ पारा ५ खपरिया ६ सुरमा ७ ॥

अथ सोनामक्खीका शोधन ॥

सोनामक्खी ३ भाग सेंधानोन १ भागले इनदोनोंको लोहेकेकरछुलेमें धर बिजौरेके रसमें और जँभीरीकेरसमें जहां तक लोहेकेपत्रलालहोजायँ तबतकपकावेतोसोनामक्खीशुद्धहोय १

अथ सोनामक्खीका मारण ॥

सोनामक्खीको कुलत्थ के काढ़ेमें पीस सरवे के सम्पुट में धर गजपुटमें फूंकदे अथवा तेलमें पीस गजपुटदे अथवामट्ठे में पीस गजपुटदे अथवा बकरी के दूधमें पीस गजपुट दे तो सोनामक्खी मरै इसकी मात्रा १ रत्ती खायतो गुणकरै २॥

अथ अभ्रकशोधन मारण विधि ॥

कालेभोडलकोले अग्निमें तपायदूधमेंबुझावे अथवा चौलाईकेरसमें बुझावे अथवा खटाईमेंबुझावेतबअभ्रकशुद्धहोयपीछे अभ्रकका पृथक् २ पत्रकरउन्हेंकूटमहीनकरसुखायदेपीछेउन्हें कम्बलमें धरे और उसमें भूसीसमेत शालिमिलाय अभ्रकको शालिसमेतमसल २ महीन कम्बलसे पानीकरपृथक् बासनमें बासरकाढ़ै तब यह धान्याभ्रक होय पीछे इसअभ्रकको आकके दूधमें खरलकर इसकी टिकड़ीबांधेपीछे सुखाय आकके पानीमें लपेट कपड़मिट्टी दे विनासरवे गजपुटमें फूंकदे इसीतरह ७ पुटदेऔर इसीतरह थूहरके दूधकी ७ पुटदे इसीप्रकारग्वारके पट्ठे की ७ पुटदे इसीतरह चौलाई के रसकी ७ पुटदे अथवा नागरमोथाकेकाढ़ेकी वा कांजीकी वा चित्रककेकाढ़ेकी वा जँभीरी की वा त्रिफलेकी वा गोमूत्र की इनसबकी सात २ पुटदे तौ अभ्रक बहुतबने औरयहअभ्रकानित्य १रत्ती २ महीनेतकखाय

तो प्रमेहकोआदिले सबरोगजायँ और शरीरको बहुतपुष्टकरै और नपुंसकपनादूरहोय ॥

अथ अभ्रककी दूसरी विधि ॥

सफ़ेदभोडलकी बराबर गुड़ले उसगुड़को पानीमेंघोलेपीछे भोडलके पत्रोंको गाढ़ा २ लेपकरै और उनपत्रोंके ऊपरशोरा भुरकताजायशोरा भोडलसे आधाले और भोडलकीतह करता जाय भोडलकी तहको उपलोंमें फूंकदे वहभोडलखिलजायनि-श्चन्द्रहोय यहभी गुणकरै मात्रा १ रत्तीकी ॥

अथ अभ्रक मारनेकी तीसरीविधि ॥

डेढ़तोले अभ्रकलेकर टाटकी थैलीमें बांधकर खूबमले जब वहमैदासीहोजावै तबउसमेंडेढ़तोला गुड़ और डेढ़तोलाक़लमी शोरा मिलाकर खरल करै फिर उसके चारभाग करै और चारोंकोचारबड़े २ उपलों में खोदकर रक्खै और उनपरएक२ उपला और रक्खै फिर एक गढ़ा हाथभर गहरा खोदकर उस मेंजितनेअरने उपलेआवें भरकर उन चारउपलोंकोरक्खे फिर आंचलगादे जब शीतलहोय तब निकाले इसीप्रकारसे हरदफ़े गुड़ और क़लमीशोरा मिलाकरचारदफे फूंके फिर सिद्धहोजाय तब २ रत्तीप्रमाण मुनासिब औषधियोंके साथखावे तो हरएक बीमारी को आरामकरै ॥ अथ चौथी विधि ॥

श्याम अभ्रकले दूध तेल कांजी औ कुलथी का क्वाथ इनमें इक्कीस २ बार बुझावे फिर शोराको गर्म पानीमें १०१ बार बुझावे फिर खरलकरि टिकियाबांधि सुखावे तिसपीछे टिकिया की बराबर पारादे गजपुटकी आंचदे तो सिद्धहोय जोकच्चारहै तो फिर आंचदे फिर और औषधी के साथ खाय तो शरदी गर्मी के सब बिकारों को दूरकरै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

भुइहर टंक१० और गुड़पुराना ऽ= शोरा ऽ= लेकर पुरा-

नेगुड़ और दोनोंको ऊपरनीचे चढ़ाय । ५ कण्डोंमें फूंकदे जब शीतलहोय तब हौले हौले निकाललेवे ॥ इति अभ्रक विधि ॥

अथ हरतालका शोधन मारण ॥

पीले हरतालका पत्रकर और उसकी पोटली बांधि हांडीमें कांजीभर दोलायंत्रमें १ पहरतक पकाइयेपीछे चनेकी कलीके पानी में पोटलीकर दोलायंत्रसे ४ पहर पकाइये इसीतरह हरतालको पकावे तो हरताल शुद्धहोय ॥

अथ हरतालका मारण ॥

शोधे हरतालको खरलमें महीनपीस दूधके रसमें २ दिन खरलकरै पीछे खरैटी के रसमें २ दिन खरलकरै पीछे इसका गोलाकर छाया में सुखावे फिर छीलेकीराख को हांडीमें दाब २ भरे उसके बीचमें इस हरतालके गोले को धरे पीछे हांडी को चूल्हेपर चढ़ाय नीचे३ दिनतक निरन्तरक्रमसे मन्दमध्य और तेज अग्नि जलावे औरउसकाधुआं निकलनेदे नहीं औरधुआं निकले तोधुवेंको छीलेकीराखसे मूंदताजाय पीछे स्वांगशीतल होनेपर उस हरतालको हांडीमें से काढ़े तबयहहरताल सिद्ध होय सफेदहोय खानेमें मात्रा १ रत्तीखाय तो सबरोग मात्रको यहदूर करै है और भूख बहुत करे ॥ इति हरताल मारणविधि॥

अथवा प्रथम हरतालको इसविधिसे शोधले पीछे इसहरतालको ग्वारकेपट्ठेके रसमें ३ दिन खरलकरे पीछे चूल्हेपर चढ़ावे फिर उसकेनीचे ४ पहर अग्निजलावे फिर स्वांगशीतल होनेपरकाढे औरवह पूरीतोलउतरेनिर्धूमहोय उसेपानमें १ रत्ती खायतो यहकोढ़को दूरकरैहै खानेमें मोठ चनाकी रोटी अलोनी खायतो कोढ़जाय॥ अथ हरताल की दूसरी विधि॥

हरताल २ पैसाभर पारा २ पैसाभरले सूखा खरल करे २ पहर तिसपीछे मंगाके रसमें खरलकरै १२ पहर अर्क के दूध मेंखरलकरै १२ पहरसहिंजनाकेरसमेंखरलकरै १२पहरमकुना

सेहुँड़ के दूधमें खरल करै १२ पहर तिस पीछे माटीकीघरियामें भरि १०१ कपरौटी करिके खूब सुखावै तिसपीछे माथेबराबर गढ़िल्लाखोदउसमेंबहुतसीलकड़ी औरकंडेभरै औरउसकेबीच मेंउसहरतालकेयंत्रकोधरिकर फूंकदे जबशीतलहोजीयतबयुक्ति सेकाढले यंत्रफूटनेनपावे जाड़में पानकेसाथखावै तौ ५ सेरकी भूखकरै गर्मीमेंमक्खनकेसाथखाय तौरात्रिभरमें७स्त्रीभोगकरै॥

अथ तीसरी विधि॥

हरताल ५ पैसाभरले गोमूत्रमें ८ पहर भिजोवे तिसपीछे गोमूत्रमें ३ दिनखरलकरै सेहुँड़के दूधमें खरलकरै ३ दिन सहदेईकेरसमें खरलकरै ३ दिन आकके दूधमें खरलकरै ३ दिन राईके रसमें खरलकरै ३ दिन चिरचिराके रसमें खरलकरै ३ दिन गुवार के रसमें खरलकरै ३ दिन बकरी के दूधमें खरल करै ३ दिन नकछिकनीके रसमें खरलकरै ३ दिन नींबूकेरसमें खरलकरै ३ दिन बड़केदूधमें खरलकरै ३ दिन पीछे चँदियाबांधि सुखावै ७ दिनफिर मोटीहांड़ीमँगाय सातकपरौटीकर सुखाय उसमें पीपलकी लकड़ीकी राख भरै तिसके बीचमें भोडर के २ पत्र मँगाय उनकेबीचमें उस चँदिया को धरिऊपरसे फिर उसीराखको हाथसे दबायभरै फिर हांड़ीके मुखपर परिया धरि के वज्रमुद्राकरै तिसपीछे बड़ेचूल्हेपर चढ़ाय ३२ पहरकीआंच दे प्रथमदीपक कीसी आंच फिर २ पहर तक मशालकी सी आंचदे फिर ४ पहर खिचरीकीसी आंचदे ६ पहर बैंगन की सी आंचदे १२ पहर दीपककीसी आंचकरै ८ पहर तिसपीछे स्वांगशीतल होजाय तब उतारै मात्रा २ चावलभर पानकेसाथ खाय तौ सकल कुष्ठ दूरिहोयँ॥

अथ चौथी विधि॥

हरताल १ पैसाभरले पोटलीबांधि ५ गौकेदूधमें ४ पहर औटावे फिर उसमेंसे काढि हल्दी औरविषमें खरलकरै ४ पहर

नकछिकनीके रसमें खरलकरै ४ पहर भोगीके रसमें खरलकरै ४ पहर पथरचटाकेरसमें खरलकरै ४ पहर भांगराके रसमें खरलकरै और ς५ पीपलकीछाल मँगाय उसकी मैदाकरै फिर उसछालकी घरियाबनावे तिसमें हरतालभर २ घरियोंकेभीतर घरियापर तीन कपरौटीकरै फिर अंगीठीमें कंडाभरि गजपुट की आंचदे जब स्वांग शीतलहोय तबउतारि १रत्तीपानकेसाथ खाय तौ सकल कुष्ठ दूरहोयँ ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

हरताल धेलाभर पाराधेलाभरले नींबूके रसमें खरलकरै ४ पहरतक चँदिया बांधे फिर पीपल की राख मँगाय उसे केलाके रसमें भिजोय १ हांड़ीमें भरे तिसके बीचमें हरतालकीटिकिया धरे ऊपरसे कुम्हारके आंवांकी भांति बन्दकरै और नीचे अग्नि जलावै जबशीतलहोय तबकाढै यंत्र फूटनेनपावे तब सिद्धहोय और इसकी १ रत्ती तोलेभर रांगको वेधे ॥

अथ छठवीं विधि ॥

हरताल १ पैसाभर लेके पुरानेकण्डाको खोलि उसकी घरियाबनाय तिसमें धरे फिर उसपर कुचिलाके पत्तोंका रस निचोवै जो हरेपत्ते न मिलैं तौ सूखेपत्तों को भिगोकर निचोवै तिसपीछे अग्निदेइसभांति आठवारकरै जब सुहागेकीसीखील होजाय तब बन्दकरै तौ हरतालकी शुद्धभस्महोय और १ रत्ती तोलेभर रांगको वेधे ॥ अथ सातवीं विधि ॥

हरताल दो पैसाभर पारा २ पैसाभर ले दोनोंको खरलकरै १ पहर तिसपीछे मूंगाकेरसमें खरलकरै १२ पहर सहँजनेकी जड़के रसमें खरलकरै १२ पहर आमके दूधमें खरलकरै १२ पहर मकुना सेंहुँड़के दूधमेंखरलकरै १२पहर तिसपीछेचँदिया बनाय सुखावे १२ पहर तिसपीछे सरवोंके यंत्रमें धर १०१ कपरौटीकरै फिर खूबसुखायके माथबराबर गाढ़ेल्लाखोद उसमें

वहुतसी लकड़ी और कंडाभरै तिसकेबीचमें यंत्रधरिकुम्हारके आंवांकेसमान बनाय आंचदे जब स्वांग शीतलहोय तबयुक्ति से काढ़े जिसमें यंत्रनफूटै इसकीमात्रा १ रत्तीभरखायतौ भूख बहुतबढ़ै ५५ भोजनकरै और जबतक जीवै तबतक भूंखनघटै ॥

अथ आठवीं विधि ॥

हरताल ६ पैसाभर फिटकरी ६ पैसाभरले सूखी खरलकरै २ पहर तिस पीछे आककेदूधमें खरलकरै ४ पहरफिरचैंदिया बनाय सुखावै ८ पहर तिसपीछे उस चैंदियाको २सरवोंमें धरि ३ कपरौटी चढ़ाय सुखावै औरकमरबराबर गढ़िल्लाखोदआधे में कंडाभर सरवा धरै तिसकेऊपर से और कंडाभरि अग्नि दे ऊपर से ढांपिदे जबस्वांगशीतलहोय तब निकालि उसमें ये औषधकपरछानकरमिलावै लौंग। जायफल। दालचीनी। अकरकरा। कुटकी। जावित्री और अदरखके रसमें २ रत्तीके प्रमाण हरताल पारा इसकी गोलीबांधै १ माशाकी और ४६ दिनखाय तौ सकलकुष्ठ दूरहोयँ और देहकी सूजनजाय धातु पुष्टहोय देहके मंडल मिटिजायँ पथ्य चनाकी रोटीखाय ४६ दिन पर्य्यंत॥

अथ नवीं विधि ॥

हरताल १० टंक महीन पीसे तिसपीछे २५ टंक सीसेको खपरामें चढ़ाय नीचे अग्निजलावै जब पिघलजाय तब उसमें हरतालका चूर्णडारि करछीसे चलावै जब उसमें अग्निउठै तब औटेहुये सरफोंका के पानीसे बुझावै और १ रत्ती अजवायनके साथखाय तौ नामर्द मर्द होय ॥

अथ दशवीं विधि ॥

हरताल २ पैसाभरले घिकुवारिके रसमें खरलकरै ८ पहर सहिंजना की जड़के रसमें खरलकरै ८ पहर फिर गोली बांधि सुखाय १ कागजी नींबूके भीतरधरै और ऊपरसे सातकपरौटी

करै गोलाबनावै तिसपीछे पीपलकी लकड़ीकीराखकराय हांडी मैं भरै तिसके बीचमें गोलाधरि ऊपरसे मुँहतक दाबिकेखूब भरै और हांडीपर ७ कपरौटीकरै फिर हांडीके मुखपर परिया धरि वज्रमुद्राकरै तिसपर २ कपरौटीकरि सुखाय भट्टीपरचढ़ाय आंचदे २४ पहर जब शीतलहोय तब उतारै तौ हरताल सिद्ध होय मात्रा १ रत्तीपानके साथखायतो कायाशुद्धहोय छठयेंदिन खाय तौ आगमजानै सतयेंदिन खायतौ तीनोंलोकदेखे आठवें दिनखायतौ महादेवको आशीर्वादहोय नवेंदिनखायतौ घनदेखै दशवेंदिनखाय तौ हरिणकीसी चौकड़ीफांदे और ग्यारहवेंदिन खाय तौ सिद्धहोय ॥ ॥ अथ ग्यारहवीं विधि ॥

हरताल १ पैसाभरले तांबाकी डिबियामें भरै तिससे ६ पैसा भर बड़ेगोखुरू को रसडारि बन्दकरि ऊपर कपरौटीकरै फिर राखमें गाड़िके ऊपरसे आगिजलावे और प्रातःकालउखारिले फिर उसमें नींबूका रस और आंवलासारगन्धक डारि आगिनदे तौ हरताल मरै ११ ॥ अथ बारहवीं विधि ॥

तावकी हरतालले नींबूकेरसमें ३ दिनराखै चौथेदिनकाढ़ि टिकियाबनाय मटुकाके भीतर पेंदीमेंधरै ऊपरसे सरवाओंधाय उसके चारोंओर फिटकरीबिछावै तिसकेऊपर मटुकाकेमुँहतक बालूभरके नीचे अग्निजलावै जब ऊपरकी बालूगर्महोय तब उतारिले और चाहै जिसकाम में लावै १२ ॥

अथ तेरहवीं विधि—तिजारी के ऊपर ॥

तावकी हरताल १ पैसाभर ले गुवारकेरसमें १ पहरखरल करै फिर हरतालसे चौगुनी फिटकरीले १ चुकरियामें नीचे २ पैसाभर फिटकरी धरै और तिसपै हरताल धरि ऊपरसे फिर २ पैसाभर फिटकरीधरै और उसकामुँह बन्दकरि ऊपरसे कप-रौटीकरै तिसपीछे सवाहाथगहिरा डेढ़हाथचौड़ागाढ़िल्लाखोदे उसमें अरनेकंडेभरि बीचमें चुकरियाधरै तिसकेऊपर औरकंडा

धरिफूंकदे जब बरिके बुझायजाय और शीतलहोजाय तब निकाल इसमेंसे १ रत्तीबताशेमेंखाय तौ तुरन्त तिजारीजाय २ घड़ीपीछे दूधभात खाय और जो सन्निपातवालेकोदेय तौ चावल भर अथवा डेड़चावलभर पान और १ लौंगमें खवावै तौ चैतन्यहोय जो सन्निपातमें बहुतही डूबाहोयतौ पानऔर लौंग के रसमें चटायदेय तौ बोधहोय संदेहनहीं १३ ॥

अथ हरतालके गुण ॥

चौबोला ॥

श्री हरतालगुणौघपतावत चावल एक प्रमाण जो खावै।
पानमेंखात हरै सबव्याधिन दूध औभात जो भोजनपावै ॥
होय जो पुष्ट वने अतिवीरज वीरज राखि समाधिलगावै ।
और गुणन की गम्य नहीं परजान्त यह सबरोग भगावै ॥

अथ चौदहवीं विधि ॥

हरताल २ भाग पारा २ भाग फिटकरी ५ भागलेकर शुद्ध ऋद्धिनाम औषधके रसमें घोलकर संपुटमें वन्दकरगजपुटमें फूंकदे तौ हरतालकीभस्महोय ॥ इतिहरतालमारणविधि १४ ॥

अथ चंद्रोदयकी विधि ॥

सोनेका चोखावरक १ टकेभर और शोधापारा ८ टकेभरले अथवा शिंगरफका निकाला पारा ८ टकेभर शोधाआवलासार गन्धक १६ टकेभर ले फिर तीनोंको खरलमेंडाल नांदणवणि अर्थात् नर्मेके फूलके रससे ३ दिन खरलकरै फिर ग्वारकेपट्ठे के रससे ३ दिनखरलकरै फिर इसकोसुखाय कांचकी आतशी शीशीमें कपड़मिट्टीदे फिरइसेसुखाय इसशीशीमें येसबऔषध सोनेके वरकसमेत भरै फिर शीशीकामुंहबांधदे और बालुकायंत्रमें धर चूल्हेपर चढ़ावै नीचे अग्निजलावै प्रथममन्दमध्य और तेज अग्नि दे इसीतरह ३२ पहरकी आंचदे फिरस्वांग शीतलहोनेपर बालुकायंत्रमेंसे शीशीको काढ़े फिर शीशीमेंसे

चन्द्रोदयको काढ़ डिब्बीमें भररक्खै इसकारंग शिंगरफ सदृश लालहोय पीछे इसमेंसे मात्रा १ रत्तीले और इसमें जायफल। भीमसेनी कर्पूर । समुद्रशोष । लवंग । कस्तूरी यहसब ४माशे मिलाय नित्यखाय तो गुण बहुतकरै ऊपरसे औटाय मिश्री के संयोगसे रुचिमाफिक रात्रिमेंदूधपीवै और मांसआदिपुष्टाईकी वस्तुखाय और खटाई खाय नहीं तो बहुत स्त्रियोंसेसंभोगकरै और नपुंसकपनेको यह चंद्रोदय दूरकरैहै और वीर्यको बंधेज करैहै–इति चंद्रोदयरसकेबनाने और खानेकी विधिसम्पूर्णम्॥

अथ स्वर्ण भस्म ॥

शुद्ध सोना तिसकादूना शुद्धपारा नींबूके रसमेंघोटि गोली करि गोलीके समान गंधक पीस तरेऊपर धरै फिर मिट्टीकेदो सरवा ले एकमें गोलाधरि दूसरा ऊपरसे ढकदे उसपर कप-रौटीकरि बिनुवां कंडा की आंचदे इसे सराव संपुट कहते हैं इसीप्रकार आगिसे निकालि निकालि संपुट करि चौदह बार आंचदेय योंप्रतिआंचमें गंधक देनेसे स्वर्ण भस्म निर्भयहोता है अथवा माशेभर सोनागलाइ माशेभर शीशाडालि उतारि ठंढा करि चूर्णकरै नींबूकेरसमें गोलाबांधे नीचेऊपरगंधकधरि गोलेके समान सराव संपुटकरै फिर गोटाकी आंचदे तौ सोना भस्महो अथवा कचनार के रसमें पारा गंधक समान मिलाय खरलकरै जबकजलीहो तबसोनेके पत्रपरलगावै फिर कचनार की छाल पीसिके उस गोलीपर बहुतसी लपेटै फिरदोघड़िया मिट्टीकी बनाय एकमें धरि दूसरी ऊपरढांपि कसकरकपरौटी करिसुखायबड़ीआंचदे इसीतरह प्रथम कहीरीतिसेतीनिआंच दे जबजिलानेसे न जिये तौउत्तमहै फिरउसकीभस्म जैसेकच-नार विधानमें कही तैसेहीकरै यहकरियारीसेभीमरताहैऐसेही ज्वालामुखी अर्थात् अरणीसे भीमरताहै अथवा मैनशिलसे सिंदूर मलै फिर मदारके दूधमें शतावरिघोटिघोटिसुखावै तब

दशमाशे सोना गलावे जबवहचक्करखाने लगे तबवहमैनशिल सिंदूरका चूर्ण सोनेमें छोड़कर बुकनी देकर तीव्रआंचदे और जबतकवहबुकनी न जारिजाय तबतक आंचदेतारहे इसीप्रकार से बुकनी देदे तीनआंचदे तौ सोनाभस्महोयअथवाकबूतरवा कुक्कुटकी बीट दोनोंकोसोने के पत्रपरलपेटै औरउसीके समान गन्धक चूर्णभीदोनों ओर धरे तबसंपुट करै फिर थोरीसीभूमि खोदि पांचकंडे में फूंकिदे इसीप्रकार नौ आंचदेय दशवींबार बड़ीआंच३०कंडेकीदे इसप्रकारसेसोनाभस्महोताहैपरन्तुऊप-रलिखीहुईविधि करनेके पहिलेवैद्यकोउचितहै किस्वर्णकोकांजी गोमूत्र कुलथी क्काथइन सबमें तीन तीनबार बुझाकर धातुको शुद्ध करले ॥ अथ सुवर्णके शोधन मारने की क्रिया ॥

दोहा ॥

कूटछान कचनार को रस कढ़ाय गलवाय ॥
तीनबार सोनो तहां डारु सुहागो जाय १
वा सोने की तबक करि पारा तबक समान ॥
डारि खल्ल मधि घोटि के गोला करै निदान २
सोना पारा दोयके सम गन्धक जो लेय ॥
गन्धक गोला के तरे अरु ऊपर वह देय ३
तब गोला वामें धरै कपरौटी करवाय ॥
सुखै आंच ग[illegible]ट करै बन के ऊपर लाय ४
तौ सोना या यत्न सों भस्म होय मरि जाय ॥

अथ रस सिंदूर की विधि ॥

इसे हरगौरी रस भी कहे हैं प्रथम पारे को शोधि खरलमें डालहल्दी और ईंट धूमसाऔर नींबूकारस इसमें३ दिनखरल करै तब इसकी सातो कांचली दूरहोय पीछे त्रिफला। कांजी। चित्रक । ग्वार के पट्ठे। सोंठि। मिरच। पीपल इनमें ३ दिन खरल करै पीछे लहसुनके रसमें ३ दिन खरल करै फिर जंभीरी के रसमें ३ दिन खरल करै पीछे हांडी में धर दूसरी हांडीका मुख जोड़ै फिर मुहँको खाम चूल्हे पर चढ़ावै और

ऊपरकी हांड़ीकी पेंदीपर गीला कपड़ारक्खैनीचे अग्निजलावै तबवह पाराऊपरकी हांड़ीकीपेंदीमें जायलगै तबपारेकोकाढ़ले अथवा शिंगरफ का पारा विधिसे काढ़ले पीछे इसपारेकोबांझ ककोड़ेके रसमें खरलकरै पीछे हांड़ीमें बांझककोड़ेका रसडाल उस रस में येवस्तुऔर डाले सरफोंकाकीजड़ और ज़मींकन्द कारस और भांगरेकारस । सांभरनोन । सेंधानोन । औरकांजी ये सबवस्तु हांड़ीमें डाल फिर इसमें डोलकयंत्रकर कपड़ेमें पाराबांध ४ पहरपकायले तबवह पाराशुद्धहोय ॥ इतिपाराशु-द्ध करनेकी विधि ॥

अथवा हजार १००० नींबूकेरसमेंसोंठि । मिरचापीपल । राई । सांभरनोन । चित्रक । हींग ये सब औषध डाल २१ दिन तक इस रसमें पारेको खरल करै तबवहपारा शुद्धहोय शुद्धहुयेपीछे यह शोधापारा ५ टकेभरले और शोधाआंवलासार गन्धक ५ टकेभरले और नौसादर २टं०ले फिटकड़ी २टंकले पीछे इन सब को ३ दिन खरलकरै पीछे आतशीशीशीके७ कपड़मट्टीदे और उस शीशीमें औषधभरै फिर शीशीका मूढ़ा खामदे बालुकायंत्र में शीशीको धर फिर उसको भट्ठीके ऊपर चढ़ावै नीचे क्रमसे मंद मध्य और तेजअग्निजलावै इसीतरह ३२पहरकी अग्निदे पीछे स्वांग शीतल होनेपर बालुकायंत्रमें से शीशीकोकाढ़े फिर शीशीमें से इस रससिंदूरको काढ़ १ रत्तीनित्यपानकेसाथखाय और पथ्य से रहै तो सब रोगोंको जुदा २ अनोपानसे यहदूर करै है और भूंख लगावै और शरीरको पुष्ट करै है इतिहरगौरी रसकी क्रिया ॥

अथवा शिंगरफसे निकाला पारा अथवा यही शोधापारा और आंवलासार गन्धक इनदोनोंकोबराबरले और इन्हेंबड़ की जटाके रसमें १ दिन खरलकर फिरआतशी शीशीकेकपड़ मट्टीदे उसमें यहभरैफिर इसशीशीको पतलीईटसेखामदे और

बालुकायंत्रमें शीशीकोधरै फिर बालुकायंत्रको भट्टीपर चढ़ाय क्रमसे २१ पहर मन्द मध्य और तीक्ष्णआग्निदे पीछे स्वांग शीतल होनेपर यंत्रमें से काढ़ फिर इसशीशीमेंसे काढ़े इसका रंग शिंगरफ़ समानहोय मात्रा १ रत्तीपानमेंखाय तौगुणबहुत करै सब रोगोंको दूरकरै ॥ इति रस सिंदूरकी क्रिया ॥

अथ पारा मारनेकी विधि ॥

पारेको खरलमें डाल गूलरके दूधमें १ पहरखरलकरै पीछे इसकी गोली बांधे फिर गूलरके दूधमें चोखीहींगघिस इसहींग की २ मूसी अर्थात् घरिया बनावै फिर पारेकी गोलीको मूसीमें धर दूसरी मूसीको मुंहजोड़ मूसीको खामदे पीछे सुखाय १ सेर ऊपलेकी भूभलमें पकावै जबवह पारासफेदाखिलजाय तब इसकी भस्महोय यह भस्म सब रोगमात्रको दूरकरै है ॥ इति पारा मारने की क्रिया ॥

अथवा अपामार्गके बीजोंको महीनपीस इसकी २ मूसी बनावै पीछे गूलरके दूधमें पारेको खरलकरै फिर पारेकी गोली बांध यह गोली मूसीमें धरै पारेकी गोलीकेनीचे ऊपरदढ़घल के फूल। बायाबिड़ंग । खैर इनका चूर्णकर मेलै इस मूसीकी गोलीकरै फिर इसगोलीको धवनीसे कोयलेमें धँवावै फिर इस के कपड़मट्टीदे गजपुटमें फूंकदे तब इसकी भस्मपूरी तोल उतरे यह भस्म सब रोगोंको दूरकरै ॥ इति पाराभस्मकी क्रिया ॥

अथ दूसरी विधि ॥

पारा ७ तोला गन्धक ७ तोला सोनामक्खी ७ तोला इन तीनों को इकट्ठे कर नींबूके रसमें खरलकरै तिसपीछे आतशी शीशीमें भर उस शीशीको बालूके यंत्रमें धरि ८ पहर आंच दीजै फिर उतारि के गन्धक २४ माशे राई ७ तोले डालिके ४ दिन खरलकरै फिर दूसरी शीशीमें डालि बालूके यंत्रमें चढ़ाय आंचदे ७ दिन शीतल होय तब उतारे मात्रा १ चावलभर

पान के साथ खाय तौ ⟆५ की भूंखहोय ऐसी विधि से सात शीशीभरे तो सवामनकी भूंखहोय ॥

अथ तीसरी विधि ॥

पारा २ पैसेभर ले स्याह धतूरे के रसमें खरलकरै ३ पहर करिहारीके रसमें खरलकरै ३ पहर तिसपीछे शीशीपर ७ कपरौटीकर औषधि भरिके मुखमूंदि अरनेकंडों से गजपुटमें फूंक दे शीतलहोय तब निकाले इस विधिसे थोड़ी कंडा की आंच अंगीठीमें दे तौ सिद्धहोय गुण बहुतकरै भूंख ⟆५ की लगै और ७ स्त्रीसे भोगकरै ॥ अथ वसन्तमालती रसकी क्रिया ॥

सोनेका वरक १ माशे मोती २ मा० शिंगरफ ३ मा० मिरच ४ मा० सूरतखापरा ८ मा० खापरेको गोमूत्रमें १६ पहर गोलकयंत्रसे पकावै फिर इनसबको खरलमें डाल मक्खनसे खरलकरै जितनामक्खनसोखै तितनामिलावै फिरनींबूके रसमें खरलकरै वह मक्खन सूखजाय इतना खरल करै और इसकी चिकनाई दूरकरै इसप्रमाणचाहे जितनाकरै फिर इसकीगोली कर इसे १ रत्ती २ पीपल और शहत के संयोगसे नित्यखाय तो विषमज्वर आदिले सब रोगोंको दूरकरै और इसे पुष्टाई के संयोगसे खाय तौ शरीरकोपुष्टकरै ॥ इति वसन्तमालतीरसः ॥

अथ शिंगरफ शोधन विधि ॥

नींबूके रसकी ७ पुटदे भेड़के दूधकी ७ पुटदे तौ शिंगरफ शुद्धहोय ॥ अथ शिंगरफ मारण विधि ॥

चोखे शिंगरफकी ४ पैसेभरकी डलीले इसे कड़छुलेमें धर इसडलीकेऊपर नींबूका ⟆। भररससुखावै पीछे शिंगरफके ऊपर प्याजकारस ⟆५ सुखावै पीछे इसडलीको काढ़ और कड़छुलमें धरै इसडलीके नीचे ऊपर ⟆। भर प्याजकी लुगदीदे पकावै इसडलीको जुदी काढ़े पीछे ⟆। भर कुचिला ⟆। भरराई ⟆। मालकांगनी ⟆१प्याज⟆१ घृत⟆१ शहत इनसबको महीनपीस एक

लुगदाकर कड़ाही में धरै और लुगदाकेबीचमें शिंगरफकी डली धरै और इसकेनीचे८ पहर अग्निजलावै तब यहशिंगरफसिद्ध होय तोलमें पूराउतरै रंगलालहोय खाने की मात्रा आध रत्ती की अथवा १ रत्ती पानमेंखाय पथ्यसेरहै तो सबरोगों को यह दूरकरै भूंख बहुत लगावै और नपुंसकपने को दूर करैहै ॥

अथ दूसरी विधि ॥

शिंगरफ ४ पैसाभर पीपल ४ पैसाभर दोनों मिलायखरल करै १ पहर पीछे कालेधनूरेके रसमें खरलकरै २१ पहर तिस पीछे चँदियाबांध तिसके ऊपरधेलाभर बत्सनाग बिष पानीसे पीसके लपेटे फिर उस चँदिया को सुखाय महीन कपरामेंबांधे फिर ऽ५ गौकादूध मँगाय हँड़ियामेंभर उसमेंचँदियाडारे और हँड़ियाके मुखपर परियाधरि उड़दके चूनसे चहूंओर बन्दकर चूल्हेपर चढ़ाय मध्यम आंचकरे ६ पहर तक जब शीतलहोयं तब उतारि दूध पृथ्वीमें गाड़ि दे शिंगरफ निकासले मात्रा ४ रत्ती पानकेसाथ खाय तो देहमें बल बढ़ै सुरखी बढ़ै झोलमिटै भूंख बढ़ै पुरुष शक्तिवान् होय ॥

अथ तीसरी विधि ॥

गोमूत्र ऽ८ कराहीमें चढ़ावै तिसमें बिषका डेलाडारि करछीसे ढोरतेजाय जब गाढ़ाहोयके ऽ। शेषरहे तब उसमें १पैसा भर ईंगुरखरलकरै जैसे गाढ़ाहोताजाय तैसेगोमूत्र डारताजाय जब सब सूखकरगाढ़ाहोजाय तब टिकियाबनाय सरवाकेसंपुट में धरि४कपरौटीकर गजपुटमें फूंकदे जबशीतलहोय तबनिकासले मात्रा १रत्तीपानमेंखायतौपुष्टताऔरसुरखीकरैखांसीजाय॥

अथ चौथी विधि ॥

शिंगरफको थूहड़की पुंगरियामें धरिके१०१ बार रेंड़ी अ० अंडीकीआंचमेंबुझावै तिसपीछे आंवलासारगंधकडारि कुम्हड़ा मेंधरि आवांमेंधरे तौ सिद्धहोय॥ इति शिंगरफमारने की विधि

संपूर्णम् ॥इतिपुष्टाईके सातोंधातु उपधातुके मारनेकीविधिऔर रस चन्द्रोदयको आदिले रसोंके बनानेकी विधि संपूर्णम् ॥

अथ सुम्बलखार मारण विधि ॥

सुम्बलखार २ पैसाभरले गधेकामूत ऽ२ थूहड़का दूध ऽ२ इन दोनों को एक हँड़िया में भरि दोलायंत्रमें सुम्बलखार लटकावे औरमध्यमआंचकरै जबदोनोंकाखार होजाय तबनिकाले तिसपीछे १०१ इन्द्राणीके फलमँगाय एकफलमें भरि दो कपरौटी करै थोड़े से कंडोंमें आंचदे इसभांति प्रत्येक फलमें१०१ आंचदेतो सुम्बल सिद्ध होय १ रत्ती तोलेभर रांगको बेध ॥

अथ पीतर कांसा मारनेकी विधि ॥

दोहा ॥

घोट जँभीरी रंग सों पारा गन्धक दोय ।
पत्र लपेटै दुहुँनके तासों यह विधि होय ॥
सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय ।
तीनवार इमि आंच दे उभय भस्म होजाय ॥

अथ कनक सुन्दर रसः ॥

कालीमिरच । शोधाहुआ शिंगरफ । सुहागा । गन्धक । शुद्धसींगिया विष । शुद्धपीपल । धतूरेकेबीजइनसबोंको खरलमें डालके भांगके रसमें २ पहरघोटै तो कनकसुन्दर नाम यह महारस अति उत्कर्ष संग्रहणीरोगको दूरकरता है और अतीसार मन्दाग्नि इन सबको दूरकरै है ॥

अथ वड़वानल रसः ॥

हरताल१ भाग पारा १ भाग शीशे की भस्म१ भाग शुद्ध गन्धक २ भाग मिरच १६ भाग इनसबको पीसकर१ रत्ती घी केसाथ खायतो विशूची सबप्रकारके शूल प्लीह औरउदररोग दूरहोयँ तथा गुल्म संग्रहणी श्वास खांसी कफबात और मंदाग्निआदि अनेकरोगोंको यहबड़वानल रस दूरकरता है ॥

अथ षह्नि रसः ॥

जावित्री ३ कर्ष मिरच पल १ गंधक कर्ष आधा पाराकर्ष आधा लौंगकर्षआधा रिषकर्षआधा इनसब औषधोंको अमिलीके पत्तोंके रसमेंपीसकर गोली बनावैतोलमें १माशे इसगोली के सेवनसे अग्नि ऐसे बढ़तीहै जैसेकि अग्निकी विद्यासे अग्नि बढ़िजातीहै और शूलआदि समस्तरोगोंको यहवह्निरस दूर करता है ॥

अथ शंखलीरसः ॥

पारा १ भाग गन्धक १ भाग शंखकीभस्म४ भाग कौड़ीकी भस्म ६ भाग मिरच १२ भाग और पारेसे चौथाई सुहागा इन सबको पीसकर ४ माशे घीकेसाथखाय तो क्षयीरोग दूरहोय॥

अथ शंखद्राव रसः ॥

आक सेंहुड़ थूहर अमिली ढांक कालेतिल अपामार्ग गोखुरू कौड़ी शंख इनसबोंकी भस्मसे उत्पन्न खार पारा पांचोंनोनपांचों खार ये सब बराबर ले और सबोंसे तिहाई गन्धक और रेह मट्टी सोरा कसीस नौसादर ये चारों चीजें सब औषधों की बराबर ले और इनसबोंकी कजली करकेनींबूके रसमेंघोटै तिस पीछे नलिका यंत्रमें चढ़ाकर चारपहरकी आंच देकर उसमें से सुईका गलानेवाला जो रस टपके उसको लेले और उसमें से ३ रत्ती या ६ रत्ती नलिकासे दे तौ गुल्म बवासीर प्लीह आदि रोगोंका नाशकरै यहशंखद्राव प्रत्यक्षफलका दिखानेवाला है इस में संदेह नहीं ॥

अथ शीतारि रसः ॥

चौपाई ॥

ताम्र सुहागा गन्धक लीजै। विष पारद हरताल धरीजै ॥
भांग तूतिया दोय मिलाय। ये सब लीजै शुद्ध कराय ॥
घटिका एक ताहि पिसवाय। घोटि करैला रंग मिलाय ॥
जाकोनाम शीत अरि जानि। शंभु शिवासों कहेउबखानि ॥
मिसरी जीरा में सहदेइ। सकल सुयश याको सुनिलेइ ॥
शीतज्वर अति जाय नशाय। इक दोई चौथाई जाय ॥

अथ पंचामृत परपटी रस लिख्यते ॥

दोहा ॥

लोहा अभ्रक पारदै अर्क शुद्ध सब लेह ।
दूनों गंधक सबनि ते लोहपात्र भरिदेह ॥

चौपाई ॥

बदरी काष्ठ आंच मृदु दीजै । सिद्ध जानि पुनि ये विधि कीजै ॥
गोमय ते फिर भूमि लिपाऊ । तामें कदली पत्र बिछाऊ ॥
रस उतारितापर सब नावै । फिर कदली के पत्र उढ़ावै ॥
या विधिसों रस सिद्धप्रमाना । पंचामृत परपटी बखाना ॥
संग्रहणी अतिसार नशाइ । जीर्णज्वर यक्ष्मा मिटि जाइ ॥
प्लीह पांडु ज्वर अर्श नशाइ । अम्ल पित्त अरु अग्नि बढ़ाइ ॥

दोहा ॥

जीरा सेंधव हींगमें संग्रहणी अनुपान ।
केवल जीरा संगमें पांडु रोग में जान ॥
शहत पीपरी संगही जीर्णज्वर मिटजाइ ।
सर्व रोगमें दीजिये बुध हनुमान बताइ ॥

अथ विलासिनी वल्लभ रस लिख्यते ॥

दोहा ॥

गंधक पारौ भाग द्वै कनकबीज सम लेइ ।
काढ़ि धतूरे तेल में शुद्ध सो घोटन देइ ॥
कहेउ विलासिनि वल्लभै याको नाम सुहाय ।
दोय बल्ल मिश्री शहत देत प्रमेह बहाय ॥
करै मनोज प्रकाश अति वीर्यबंध सो होइ ।
हरै मानिनी मानको जो यह सेवै कोइ ॥

अथ हीरा शोधन मारण विधि ॥

कुरथा और कोदों के क्काथको दोलायंत्र में भरि तिसमें भटकटैयाकी जड़की लुगदीमें हीरारखकर कपड़ेमें बांधि तीनदिन सिद्धकरै तब हीरा शुद्ध होय फिर आगमें तपाय खरमूत्रमें २१ बार बुझावे ७४ मत्कुण अर्थात् खटकिरवा और हरताल पीस गोलाकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंचदे मूषायंत्रमें राखि भाथी में फूंकदे फिर अश्वमूत्रमें २१ बार बुझाय हरताल गोलामें धरि फूंकै इसीतरह २१बार अश्वमूत्रमें बुझाय २ फूंकैयह इसप्रकार से भस्महोताहै इसकाचूर्ण सर्वत्र साध्यहै अथवा हींग । सेंधा-

नोन कुरथी के क्वाथमें डारि उसमें यह तपाय २१ बार बुझावै तौ हीरा मरै अथवा मेढक कांसेके पात्रमें मूंदै और उसेडरावै जब वह भयसे मूतै उस मूत्रमें हीरातपाय बहुत बुझावै तो खिलिकर चूर्णहो॥ अथ वैक्रांति शोधन मारण॥

वैक्रांतिनाम कच्चे हीरेकाहै कालाहो वा लाल उसको १४ बार बुझाइ लाल करिकरि हीरेकी तरह शोधे फिरउसे मेढ़ाशिंगी के पंचांगके गोलसें रखिकर मूषायंत्रमें भरि संपुट करि फूंकदे इसीप्रकार से सातबारकरै तौ वैक्रांति भस्महोय इसको हीरेकी जगह दे॥ अथ सर्व रत्न शोधन मारण॥

अच्छेमोती व माणिक्य व मूंगा अरणी रसदे दोलायंत्र में सिद्धकरै एक पहरतौ शुद्धहोय घिकुआरि और चौराई वा स्त्री कादूध इनतीनों में सातसातबार माणिक्यादि तपाय तपाय बुझावै मूंगा मुक्तादि सब क्षणभरेमें वर्णपलटजातेहैं संशयनहीं मूंगा और मोती सोनामक्खी की रीतिसेभी मरते हैं और सब रत्न हीरे की तरह शोधे और मारै॥

अथ शिलाजीत शोधन॥

ग्रीष्मकी तापकरि पर्वत से चुआ शिलाजीत लाय गायका दूध व त्रिफला क्वाथ व भंगरेके रसमें पहरभर घोटि दिनभरि घाममें धरे जब सूखिजाय तब शुद्धहोय अथवा अच्छे शिलाजीतकी शिलाले छोटे छोटे टूककर अति उष्ण जलमें पहरभरि राखे तब उतारिले उसेही क्षारककहते हैं यह सफ़ेद होताजाता है और सब पानी न जरै तौ क्वाथ सम रहता है ये दो प्रकार सार वैद्यजन औषध में देतेहैं कुरैया। पलाश। बकायन। बहेड़ा। अमलतास। मदार। अलसी। सेहुंड़। चिर्चिरा। पाढ़। केला। जमालगोटा। सहिजन। मूली इत्यादि क्षार वृक्ष हैं॥

अथ तूतिया शोधन विधि॥

बिलाई की बीट और तूतिया का दशांश सुहागादे घोरि

मध्यमआंचदे फिर दहीकीपुटदेफूंकै तिसकेउपरांत शहतकीपुट-दे फूंकै तबशुद्धहोय॥ अथ सुरमा शोधन मारण विधि॥

सुरमा चूर्णकरि जंभीरी नींबूकेरसमें घोरि एकदिन घाममें धरे तौ सर्वकार्यलायक होताहै उसीप्रकार से गेरू। कसीस। सुहागा। कौड़ी। शंख। फिटकरी चोक ये सब शुद्धहोयँ॥

अथ मैनशिल शोधन मारण॥

बकरीके मूत्रमें दोलायंत्रमें तीनदिनपकाय बकरीके पित्तेमें सातभावनादे तब मैनशिल शुद्धहोय अथवा अगस्तपत्रके रस में सातभावना दे तौ मैनशिल कार्यसाध्य हो॥

अथ खपरिया शोधन॥

खपरियाले गोमूत्रदेदोलायंत्रमें शुद्धकरै तब कार्य्य साध्यहोय॥

अथ सब धातुनके सत निकालने की विधि॥

लाही। लघुमीना। छगरी पय। सुहागा। मृगशृङ्ग। पीला सरसों। सहिजन। लालगुंजा। गुड़। सेंधव। यव। कटुकाघृत। मधु इनमें जो एक दो न हों तौ चिन्ता नहीं जिस धातुमें चाहे तिसमें दे अंधमुख यंत्रकरि आंचदे तौ सब धातुका सत निकलता है॥ अथ गंधक शोधन विधि॥

लोहेकी कढ़ाई और घी दोनोंको अतितप्तकरि घीकेसमान गंधक चूर्ण छोड़े जब गलै तब चतुर्गुण दूधमें गरमही नाइ कर बुझावे तौ गन्धक शुद्धहो यह सर्वकार्य योग्य है॥

अथ शिंगरफसे पारा निकालने की विधि॥

शिंगरफको नींबू के रस अथवा नीमके पत्तों के रस में १ पहर घोटै फिर उसे डमरूयंत्र करि उतारिले तौ पारा शुद्ध हो पारा उड़ालेनेसे भी शुद्ध होजाताहै और सर्वकार्य कारक होताहै अथ पारेके मुखकरण विधि॥

कालकूट। वच्छनाग। सिंगिया। प्रदीपन। हलाहल। ब्रह्म पुत्र। हरिद्रा। सुक्तक। सौराष्ट्रक ये नवबिष हैं और मदार

सेहुंड़। धतूरा। कारियारी। लालकनेर। घुंघची और अफीम ये सात उपविष हैं इन सब बिषों में मर्दन करने से पारा पक्षहीन होता है और समस्त धातों के भक्षण करनेको समर्थ होता है अथवा त्रिकुटा। दोनों खार। राई। पांचोंनमक। लहसुन। नवसादर और सहँजने की छाल ये सब बराबरि ले चूर्ण करै फिर पारे के समान ले जंभीरीकेरस वा नींबू के रस अथवा कांजीमें गरम करि खरल करै तीन दिन रात तब पारा सब धातुन को खाय और तोल न बढ़े और पारेके मुख होताहै अथवा छरबुन्दा वा वीरबहूटी में तीन दिन घोटै फिर पांचों नोन और नींबू के रसमेंघोटै तब पारेका मुखखुले और धातु भक्षण करै॥ अथ द्वितीय ज्वरांकुश रसः॥

हरिण का सींग चूर्ण करि बराबरि जैतका रस ले माटी के बासन में धरि मुँह मूँदि दो पहर की आंचदे उतारि लेइ फिर आठवां अंश त्रिकुटादे पीसै फिर चारिरत्ती रस ज्वरांकुश पान के रसके साथ दे तौ बातपित्तज्वर नाशहो यह ज्वरांकुश रस सर्व ज्वरोंको हितहै॥

अथ ज्वराररिसः॥

पारा। खपरिया। हरताल। तूतिया। सुहागा और गन्धक ये सब समान शोधि करेले के रस में एकदिन घोटि कर ताम्र पात्र में अर्द्ध अंगुलमोटालेसि पात्रका मुख मूंदि कपरौटीकरि बालूके यंत्र में धरि यंत्र मुख खुला राखि आंच देय जब उस बालू में धान डालनेसे खील होजाय तब जानिये कि रससिद्ध भया जब वह स्वभावसे ठंढाहो तब उसे पात्र से छुड़ाले फिर इस ज्वरारिरसके समान मिरच मिलाय पीसिलेइ और माशे भरिके पानके टूकमें धरि खिलावै तौ ज्वरका नाश करै तीन दिनखानेसे अतिकठिनज्वर अंतरिया तिजारी चातुर्थिक आदिक ज्वरोंको नाशकरै॥

अथ शीतज्वरारि रसः ॥

हरताल । तूतिया । तांबा भस्म । शोधा पारा । गंधकशुद्ध । मैनशिल येसबकर्ष२ भरि लेकरि त्रिफलाके रसमें घोटि गोला बांधि कपरौटी माटीलेसि खूबफूंकिमदारके दूधमें सातभावना दे फिर जमालगोटा की जड़के काढ़ेमें फिर निसोत के काढ़ेमें सात भावनादे तब एक माशे रस और पचासमिरच छःमाशे गुड़ दो तुलसीदल भक्ति पूर्वक तीनदिनखाय इस रसकानाम शीतारिहै और बहुत दुर्लभ है इसमें पथ्य दूध भात दे तो जूड़ी दाह ज्वर तिजारी चातुर्थिक अंतरिया नित्य और ज्वर जनित बिकार सब नाश होयँ ॥

अथ ज्वरघ्न गुटिका ॥

शुद्धपारा १भाग । एलुआ । पीपरि । जंगीहड़ । अकरकरहा । कड़ुआतेल । शोधा हुआ गन्धक । इन्द्रायण ये चारि चारि भागले इन्द्रायणके रसमें घोरि माष प्रमाण गोली बांधे और इसज्वरघ्नी गुटिकाको तरुण ज्वरमें गुर्चके रसकेसाथदेय तो ज्वरजाय ॥

अथ लोकनाथरस ॥

पारा बुभुक्षित धातु भक्षक दो भागले दोनोंको खरलकरि कजली करै और पारे से चौगुणी पारे की भस्म और पारे के समान सुहागा गौ के दूध में घोटे और पारे से अठगुणी शंख की भस्म शुद्ध सबपीसि दोसरवों के भीतरलेसि दोनोंकोसंपुट करि वस्त्र लपेटि माटी लगाइ गजपुटमें फूंकदे जब ठंढाहो तब निकाले खुरचकरि खरलकरै फिर यहरस छःरत्ती ले मिरच के साथ खरलकरै और बातरोगमें घीकेसाथदे और पित्तमेंमक्खन के साथ दे कफरोगमें शहतसे दे अतीसार छर्दि अरुचि ग्रहणी दुर्बलता मन्दाग्नि कास श्वास गुल्म इनरोगोंमें भी शहतयुक्त दे इस लोकनाथपर प्रथम तीनकौर घीभातखाय फिरक्षणभरि बिना तकिये बिछौने खाटपर उताना सोवै तिसकेउपरांत जिस

प्रकार चाहे सोवै और खटाईछोड़ि मधुरदही अच्छा घृत के साथ अन्नखाय और जंगली मृगादि पशु पक्षी आदिका मांस घृतमें अच्छीतरह भूंजिकरि अवश्य खाय और संध्याके समय पक्का अर्द्धावशेष दूधभात भोजनकरै और मूंगकेमोदक अधिक घृतमें बनेहुये खाय भोजनकेसाथ और तिलआंवरा पीसि उबटना लगाइ वा घी मर्द्दनकरि अन्हाइ अथवा उष्णोदकसे कमर तकस्नानकरै तेलको न छुवै और बेल। करेला। मछरी। अमिली। श्रम। स्त्री भोग इत्यादि को त्यागिदे और मद्यअचार हींग सोंठि उर्द मसूर पेठा राई बेर और कांजीतजै औरसम्पन्न न सोवै कांसेमें न खाय ककारादि आमके फल और साग तजै यहलोकनाथरस शुभमुहूर्त्त पूर्णातिथि शुक्लपक्ष बलवान् चन्द्रमा देखि कुमारि जिवाय दानदे दुघटिका साधि भक्षण आरंभ करै इसके खानेपर तपआतीहै तबमिश्री गुर्चकासत बंशलोचन इनसबको मिलाकरि दे कचूर अनार दाख ऊंखकी गँड़ेरीदे तौ रसताप दूरिहो वा धानकी छाल घृतमें भूंजिके चूर्णकर मिश्री मिलाय खिलावै उसीतापमें धनियां और गुर्चकाकाढ़ादे अथवा खसरूखे का काढ़ा मधु मिश्री मिलाकरदे इससे रक्त पित्तकफ कास श्वास स्वरभंग ये सब अच्छे होयँ और भांग भूँजि लोकनाथरससंयुक्त खिलावै रातको नींदनाशमें अतीसारमें संग्रहणी में मन्दाग्निमें ये सब दूरिहोयँ और सोंचर। हड़। पीपरि के साथ खिलावै और गरम पानी पिलावै तो शूल और अजीर्ण दूरि होय और पीपरि और शहत युक्त दे तो पिलही बातरक्त छर्दि अर्श दूर करे और नासास्तु अरण अनारके रसमें दे बेर गिरी मोरपंख की भस्म मिश्री शहत युत खाय तौ छर्दि हिचकी दूरिकरै ये जो भांति भांतिके अनोपान लोकनाथ रसके कहे सो सब पूरे करे इसमेंभी उसीप्रकार देना जैसे मृगांक हेम गर्भ मौक्तिकाक्ष और पंचरत्नादि पोटली का रस इन

सबों में लोक सदृश पथ्य करे तो सम्पूर्ण रोग अच्छे होयँ॥

अथ मृगांक पोटली रस॥

सोनेकावरक यत्न समान बनाय सोनेकेसमान पारामिलाय खरलकरै और कचनाररस वा अरणीरस वा करियाररसमेंघोटे जब गोलाबंधिजाय तब चौथाई सुहागा दे और स्वर्णकादूना मोतीका चूनदे और इनसबकेसमानगन्धकदे फिरसबको खरलकरि गोलाबांधि सूनकपड़ा लपेटे उसपर माटीलेसि सुखाकर सरवा संपुटकरि लोनपूरितमात्रमें संपुटधरै फिरउसकोसुखाय गजपुटमें फूंकिदे फिर ठंढाहोनेपर निकालि सोनेकेप्रमाण पारा और गन्धकले पूर्ववत्रसमें खरलकरि फिरउसीक्रियासेगजपुट में फूंकिदे जब ठंढाहोय तब निकासि दो गुंजारस आठमिरच वा तीनि पीपरिकेसाथदे और औषधिको बिचारिकरि रत्तीभरि घाटिबाढि बिचारकरदे और घी अथवाशहतकेसाथदोषबिचारि करि देनाचाहिये और पथ्यइसमें लोकनाथके सदृशदेनाचाहिये चित्त एकाग्रकरि अति पवित्र हो खायतो श्लेष्मा ग्रहणी कास श्वास। क्षयी। अरुचि यहरस इनसबरोगोंको दूरकरताहै बल हीनको बलवान् करताहै दुर्बल को मोटाकरता है॥

अथ कफ क्षयी पर हेमपोटली रस॥

पारा और पारेकी चौथाई सोना ले खरलकरै जब पीठीहो जाय तबदोनोंसे दूनीगन्धकदे फिरकचनारकेरसमें घोटिगोला करै उसेमूषायंत्रमेंभरि संपुटकरि बस्त्रलपेटि माटीलगाय सुखाय भूधरयंत्रमें फूंकदे अथ भूधरयंत्र॥ एकहाथ लंबा और एकहाथ चौड़ा गढ़ाखोदे उसमें एकछोटासा गढ़ा खोदे उस छोटेसे गढ़े में औषध रख माटीसेदाबि तिसपर बिनुवांकंडों की करसी करि बड़े गढ़ेमें भरि तीनदिन आंचदे जब स्वभावसे शीतलहो तब निकालि समानगंधकले अदरख अथवा चीतेकेरसमें घोटिबड़ी पीली कौड़ीमें भरि औषधका अष्टमांश सुहागा सुहागेका आधा

सिंगिया दोनों को सेंहुड़के दूधमें पीस कौड़ी का मुख बंदकरि फिर मट्टीकेपात्रमें चूनालेसि कौड़ीमें भरि दूसरे दिवस बंदकरि मुद्रितकरि गजपुटमें आंचदे जब ठंढाहो तबनिकालि लोकनाथ की रीतिसे खिलावे और मृगांककी रीतिसे पथ्य दे तीन दिन लोन वर्जित है और जो छर्दिहोय तौ गुर्चकारस वा क्वाथ मधु युक्त दे और कफार्त्तिमें गुड़ अदरख रसयुक्त दे और अतीसारमें भूनी भांगही दोनोंके साथदे कास श्वास ग्रहणी क्षयी और अरुचि इनमें दही और भांगके साथदे यह अग्निदीपन और कफबात नाशन है यह हेमपोटली रसबहुत श्रेष्ठ है ॥

अथ हेम गर्भ रस कासपर ॥

पारा ४ भाग सोना ४ भाग दोनोंकी पीठीकरि द्वादशभाग गंधकदे और तीनोंकी कजलीकरि १६ भाग मोती २४ भाग शंख १ भाग सुहागा ये सर्व एकत्रकरि पक्केनींबूके रसमेंघोटै गोलाबांधि मूसापुटमें धरि मुद्रासाधि सुखाय हाथभर भूं खोदि उसमें धराय हाथभर कंडा भराय फूंकदे जब शीतल परे तब निकालिधरै चारिरत्ती रस मिरच उनतीस गोघृतमें पीसिचांदी व माटी व कांचकेपात्रमें धरि खिलावै औरलोकनाथ रससमान पथ्यबतावे इस यत्नसे कास। श्वास। क्षयी। वात। कफ। ग्रहणी अतीसार वालेकोदेइ यहहेमगर्भ पोटलीइनसबरोगोंकोहरलेय॥

अथ द्वितीय आनन्द भैरव रस ॥

शुद्ध शिंगरफ। सिंगिया। मिरच। सुहागा। पीपर ये सब समान ले महीन चूर्ण करिये यह आनन्द भैरवरस रोगीकाबल देखि रस एक जुवार वा दो गुंजाइन्द्रायन कुरैयाछाल दोनोंदश माशे पीसि रसयुक्त शहत में मिलाय चटावे तौ त्रिदोषजाय व अतीसार दूरहोय और गऊका दही व मटठा व घृत पथ्यभातके साथ खाइ ठंढापानी पिलावे और भांगअच्छी तरह धोयबनाय रातको पिलावे ॥

अथ सन्निपात पर लघु सूचिका भरण ॥

सिंगिया १ पल पारा ४ माशे दोनोंको खरल करि दो परई कांचकी लुक फरीहुई में धरिके मुद्राकरि सुखाय चूल्हेपरचढाय मंद मंद दोपहरकी आंच दे दोनोंजुदाकरि ऊपरके सरवेमेंलगा हुआ धुआरल लेसे छीलजिसपात्रमें पवननजासके ऐसीसूची मुख शीशी में रक्खै फिर उसशीशीसे जितनारस निकले उसे सन्निमूर्च्छितका शिरमुंडाइपछनेदे जो रक्तनिकले उसीघावपर उस रसको अँगुलीसे मले जो रुधिर और रसमें मिलिजाय तौ मूर्च्छितजागै उसीप्रकारसे सांपकाकाटाहुआभी जागै फिरि इसे इसउपचारसे तपआवै तबउसरोगीको मधुर अर्थात् गंडेरी अनार छुहारा दाखादि खिलावै ॥

अथ सन्निपातपर जलबुंद रस ॥

पारेकी भस्म समानगंधक औरचौथाई मैनसिल सोनामक्खी पीपरि। सोंठि। मिर्च ये सबसमानले औरखरलकरि मछली के पित्तमें सातभावना दे इसीप्रकार से मयूर पित्तमें भी सात भावना दे सुखाय दो गुंजा श्वेत मुसलीके रसमें खवावै और पंचकोल अर्थात् पीपर। पिपरामूरि। चव्य। सोंठि। चीता इनके काढेमें भी दे यह जलबुन्दरस सन्निको दूरकरताहै जल ठंढापिये ठंढेजलसे हाथ मुँहधोवे जलका स्पर्शराखे तौ औषध बलपातीहै और सन्निपातको दूरकरती है ॥

अथ सन्निपर पंचवक्त्ररस ॥

शुद्धपारा। सिंगिया। गन्धक। मिरच। सुहागा। पीपर। धतूरेके रसमें १ दिन मर्दनकरै घाममें सुखावै यह पंचवक्त्ररस दुइगुंजासन्निपातमें देय तौ सन्निपात दूरहोय मदार मूलकाथ सोंठि। मिरच। पीपरके साथदे यही अनोपानहै पथ्य दहीभात इसको शहतके साथखाने से कफजनित उपद्रवदूरहोतेहैं और

अदरख और शहतकेसाथदेय तौ अग्निदीपनकरै और यथा-
योग्य घृत मांस खाय तौ अग्नि प्रबलकरै ॥

अथ सन्निपातपर उन्मत्त रस ॥

पारा। गन्धक समभागले और धतूरे के फलके रसमें खरलकरै १ दिन फिर इसमें इसके समान त्रिकुटाडालि पीसे इस उन्मत्त रसका नाश देनेसे सन्निपात दूरि होय ॥

अथ शूल पर नाराच रस ॥

शुद्ध पारा। सुहागा समभागकरि समान मिरच। गंधक। पीपर और सोंठि दो २ भागले खरलकरै फिर सबके समान शुद्ध जमालगोटाले सबको एकत्रकरि खरलकरै और गुंजाभरि देनेसे रेचनहोय यह नाराचरस आध्मान मलविष्टंभ उदावर्त्त ये सब रोग नाश करता है ॥

अथ शूलपर इच्छाभेदी रस ॥

शुद्धशिंगरफ। सुहागा। सोंठि। पीपर कर्ष २ भरि चोख पलभरि जमालगोटा पलभर सबको खरलकरि गोदूधसें तीन गुंजा रेचनार्थ देय इस इच्छाभेदी रससे विष्टम्भ आध्मान ये दूरि होयँ॥ अथ क्षयीपर राजमृगांकरस ॥

पाराकी भस्म ३ भाग सोनेकी भस्म १ भाग तांबेकीभस्म १ भाग मैनसिल शुद्धगंधक हरताल दो २ भाग इन सबको घोटि कौड़ीमेंभरि बकरीके दूधमें सुहागापीस कौड़ीकामुखमूंद माटीके पात्रमें धरि संपुटकरि सुखाय गजपुटमें फूंकिदेय जब सिराय तब खरलकरै इसराजमृगांक रसको ४ गुंजादेइ तौ क्षयी क्षयहोय इसका अनोपान २९ मिरचके साथ अथवा पी-पर और शहतके साथ देय ॥

अथ खराग्नि रस ॥

शुद्ध पारेसे दूनी शुद्ध गंधक खरलकर कज्जलीकरि दोनोंके समान पोलादभस्मले सब घीकुवारके रसमें दोपहर घोटि

बासनमें राखिएरंडपत्र से ढांपि पहरभरिधूपमें धरे उष्णहोय तब नाजकी राशिमें १ दिन १ रातिगाडिके निकारिले फिर खरलकरि बस्त्रमें छानि ले तब जलपर डारे तौ तिरैगी ॥

अथ स्वयमग्नि रस ॥

त्रिकुटा। त्रिफला। इलायची। जायफल। लौंग येसब नव भाग ले फिरसब खरलकरि शहतके साथ दो निष्कखाय यह स्वयमग्नि रस क्षयी और कासको नाशकरता है ॥

अथ श्वासपर सूर्य्यावर्त्त रस ॥

पारेकी आधी गन्धक २ पहर घिकुवारके रसमेंघोटि दोनों समतांबेके पत्रले तिसपर यहकजरी लेपकरे फिर ३ दिनथाली यंत्रमेंपकाय ऐंचले अथवा थालिकायंत्र माटीकी हांडीमें लोन भरितिसपर तांबेका पात्र धरि मुखमूंदि कपरौटी करि फूंकदेय यह सूर्य्यावर्त्त रस पीसि दो गुंजा खवावै तौ श्वासनाशकरै ॥

अथ द्वितीय स्वच्छन्द भैरव रस ॥

शुद्धपारा। मरालोहा। सोनामाखी। गन्धक। हरताल। हड़। अरणी। मेवड़ी। त्रिकुटा। भुनासुहागा। सिंग्रिया ये सब समान मिलाय खरलकरि फिर १ दिनगोरखमुंडीकेरस में खरलकरि दोगुंजा समान गोलीकरे यहस्वच्छन्दभैरवरसवात रोगीकोखिलावै रासना। गुर्च। देवदारु। सोंठि। रंडकीजड़इनका काढा करि गुग्गुलयुक्तगरम उसकेसाथ पिलावै यह अनोपान सुखदायी है ॥

अथ त्रिविक्रमरस अश्मरीपर

मरातांबा। बकरीका दूध समान ले किसी पात्रमें धरि आंचदे दूध उतारिधरै तब तांबेके समान शुद्धपारा गन्धक ले मेवड़ी रसमें १ दिन घोटि गोलीकरि मूषा यंत्रमें धरिबालुका यन्त्रमें आंचदे तब दो गुंजाखिलावै बिजेणकी जड़ को समेवा काढेमें यह रसदे इसरसका नाम त्रिविक्रम है माशेभर सेवन करे तौ पथरीदूरहोय ॥

अथ महाहरतालेश्वर ॥

हरताल। सोनामाखी। मैनसिल। शुद्धपारा। सेंधव। सुहागा ये सब समान खरलकरि पारेसे दूनी गन्धक ले और गन्धक के तुल्य मरा तांवा जंभीरीके रसमें ५ दिनघोटि सराव सम्पुट में धरिकपरौटीकरि भूधरयंत्रमेंफूंकदे इसीप्रकारसे ८ बार फूंके फिर निकारि बिजैसारमें ५ दिनघोटे पूर्ववत् तब ८ पलरसले मरातांवा २ पल मरालोहा ४ पल ये तीनों जंभीरीके रसमें १ दिनघोटिदशगोइंटामेंआंचदे इसभस्मकातीसवांअंशसींघिया दे खरलकरै तब दोमाशे भैंसकेरसमें नित्यखायइसपीछेबकुची का चूर्णदशमाशे मधुयुक्त घी के साथखायतौ सबकुष्ठनाशहोयँ इसका नाम महाहरतालेश्वरहै ॥

पारेकी भस्म। गन्धक। मराहुआ लोहा। ताम्र। गुग्गल। त्रिफला। बकाइन। चीता। शुद्धशिलाजीतइनसबकोसोलहशाणले और कच्चेरेंजकेबीजोंकाचूर्ण चौसठिशाणले औरअभ्रकभस्म भी चौसठिशाणले इनसबओषधोंकोइकट्ठीकरसमानघृतमेंसा-निघृतभांड़मेंभरकररखिछोड़े फिरआठमाशेखिलावे तोसबकुष्ठ दूरकरे इसकुष्टकुठार रससे गलितकुष्ठभी अच्छाहोजाता है॥

अथ उदयादित्यरस॥

शुद्धपारा। दूनी गन्धकले घीगुंवारकेरससें १ दिनमर्दनकरै फिर उसका गोलाबांधि माटीके पात्रमें धरि उसके ऊपर १ कटोरी जो पारेसे तिगुने तांबे की गहरी बनी हो ढकदे और ढकनेसे चारों तरफ राखभर चूल्हेपर चढ़ादे और दोप्रहरकी आंचदे परन्तुइसअन्तरउसतांबेकीकटोरीपर गोबर मिलाहुआ जल छोड़ताजाय अन्तमें तीव्रआंच दे ठंढाकरिउतारिले फिर कठमूलर। चीता। त्रिफला। अमलतास। पत्रविड़ंग। बकुचीके बीज इनकाक्काथकरि इसकी भावनादे २१ दिन घोटे यहउद-यादित्य रस २ गुंजाखिलानेसे बिचर्चिका दाद श्वेतकुष्ठ यह

सबअच्छे होयँ इसका अनोपान खदिरसारकाथ वा गऊ का दूध अथवा त्रिफलेके काथसें तीन शाण बकुचीका चूर्ण मिला देय इसरससे तीनदिनमेंफूट काककुष्ठ और ७ दिनमेंश्वेतकुष्ठ दूर होताहै ॥

अथवा यहलेपलगावे नीलपत्र । गुंजक । कसीस । धतूरा । हंसपद । सूर्यमुखी । छोटी लुनिया ये सब समान भागले जहां फूटाहो तहां लेपकरिदे तौ सात्तदिनमें गलितकुष्ठ अच्छा होय और श्वेत कुष्ठ साध्य अथवा असाध्य कैसाहीहो दूरहोय इसीपर महात्मा लोगोंने और भी लेपकहाहै घुंघुचीओरचीता जलमेंपीसलेपकरे तो श्वेतकुष्ठदूरहोय अथवामैनासिल चिर्चिरा और राख पीस पानीके साथ लेपकरनेसे श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥

अथ कुष्ठपर सर्वेश्वर रस ॥

शुद्धपारा १ पल और गन्धक ४ पलले १ पहर खरलकरै फिर मरातांबा अभ्रक लोह शुद्धइंगुर एक २ पलले औरमरा सोना और चांदी भी एक २ पलले और १ माशे हीरा २ पल हरतालकासतले जंभीरी धतूरा । कसा । सेंहुड़ । मदार । बकाइन । कुचिला । करैर मूल इनसबके रसमें एक २ दिन भावना दे घोटै इसीप्रकार से ७ दिन करै फिर सुखाय कपरौटी करि वालूके यन्त्रमें ३ दिनतक मंद २ आंचदे पकावे इसको निकालि चूर्णकरि एक पल सोंगीया और २ पल पीपलका चूर्णले मिलावे फिरदुइगुंजा शहतके साथखिलावे तो श्वेतकुष्ठ दूरिहोय और इसके ऊपरसे बकुची और देवदारुका चूर्ण कर्षभररिंडी के तेलमें मिलाय चाटै ॥

अथ मेहबद्धरस ॥

मरापारा । कांतीभस्म । लोहभस्म । शिलाजीत । शुद्ध सोंनामाखी । शुद्ध मैनसिल । शुद्ध त्रिकुटा । त्रिफला । झरबेर की गूदी । कैथा और हरदी इन सबका चूर्ण भंगरे के रस में

घोटे जब सूखजाय तब शहत मिलाय चाटेऔर ४ माशे नित्य खाय तौ प्रमेह नाशहोय—और बकाइन के ६ बीजले ४ पैसा भरि चावलका धोवन और आठमाशे घी इन सबको मिलाय पिये तौ दिनी प्रमेह दूरहोय॥

अथ जलोदरपर वन्यरस॥

पारा ४ पल। गंधक आठपल। हरदी। त्रिफला। हड़ इन सबोंको दो २ पलले और निशोथ जैपाल चीता इन सबों को तीन२पलले और त्रिकुटा। जमालगोटेकी जड़। श्वेतजीरा ये आठ २ पलले फिर सब को मिलाय खरलकरै फिर जयंती रस सेंहुड़का दूध भंगरेका रस अथवा काढ़ा और रेंड़ीका तेल इन सबों में क्रमसे सात भावना दे इस महाबन्यरसको ४ माशे मुँहमें धरि गरम पानीसे उतारिजाय फिर जब मल गिरजाय तब संध्याको रोचनहोनेपर मट्ठाभात और सेंधव पथ्यदे और गरमजल पिये तौ सबपेटके रोग दूरहोयँ मूढ़ बालभी जाय॥

अथ विद्याधर रस॥

शुद्ध गंधक। हरताल। सोनामाखी। मरातांबा। मैनसिल। पारा इनसबको समान ले खरलकरै फिर पीपलके क्वाथसेदिन भर खरल कर १ दिन सेंहुड़के दूधमें खरलकरै फिर २ माशे शहत में चाटै तो गुल्म प्लीहा दूरहोय इस रसको खा ऊपर से दूध पिये॥

अथ त्रिनेत्र रस॥

सुहागा। हिरन का सींग। मराहुआ सोना। तांबा और पारा इनको एक दिनतक अदरखके रसमें घोटै फिर गजपुट में फूंकदे इस त्रिनेत्र रसको माशेभरि घृत और शहतमें चाटै और उसके ऊपर सेंधव। जीरा। हींग। घृत और शहत भी चाटै इसप्रकार से महीनेभर नियम करै तो पसली की सब पीड़ाजाय॥

अथ गजकेसरी रस॥

शुद्धपारा दूनी शुद्धगन्धक दोनोंको बलपूर्वक घोटि दोनोंके

तुल्य शुद्धतांबा ले कज्जरीमें मिलाय सम्पुटकरै फिर मिट्टीकेबर-तनमें जोन्नके बीचमें सम्पुटगाड़ि गजपुटकी आंच दे जब ठंढा होजाय तब निकालिले फिर खरलकरि पक्केपानकेरसमें खवावे तौ पेटका शूल दूरहोय और उसीपर भूनीहींग । सोंठ । जीरा । बच । मिरच इसके चूर्णको उष्णोदकके साथ पिये तो असाध्य शूलभी नाशहोय ॥ अथ अग्नितुण्डी रस ॥

शुद्धपारा । विष । गंधक । तीनौंअजमोद । त्रिफला । सज्जी । जवाखार । चीता । सेंधव । जीरा । कालानोन । बायबिड़ंग । गंगा लोन । त्रिकुटा इनसबकेसमान भागले और सबकेसमान कुचि-लाले जंभीरी के रसमें छोटी मिरच सम गोलीबांधि खाय तौ मंदाग्नि दूरहोय ॥ अथ अजीर्ण कंटक रस ॥

पारा । सींघिया । गंधक तीनों शुद्ध और समान ले खरल करि सबके समान मिरचदे भटकटैयाके रसमें भिजोय २१बार घोटि तीनरत्ती भरकी गोली बनाय खाय इसगोलीसे अजीर्ण शांतहोय और शूचिकाजाय ॥

अथ मोप्रान भैरव ॥

मराहुआ पारा और तांबा । हींग । पुष्करमूल । सैंधव । शुद्धगंधक । हरताल । कुटकी सबोंको बराबरले खरलकरै और गदापुरैना । बंदाल । मेवड़ी । चौराई । करुई तोरई इनसबों के रसमें क्रमसे बलपूर्वक घोटै फिरमाशेभर शहतके साथखाय और ऊपरसे निंबादिक क्वाथ पिये तौ कफरोग जाय ॥

अथ वातनाशक रस ॥

शुद्धपारा । शुद्धसोना । शुद्धलोहा । शुद्धहीरा । शुद्धसोना-माखी । शुद्धहरताल । शुद्धसुरमा । शुद्धतूतिया । अफीम ये सम भागले और १ भागमें पांचों नमकले सबको सेहुड़ के दूधमें खरलकरि संपुटमें राखि भूधरयंत्रमें पचावे फिरमाशेभर अद-रख के रसमें खाय तौ सब वायु नाशहोय अथवा पीपरामूलके

काथ में पीपर मिलाय खाय तौ सब दाद बिकार दूरहोय ॥

अथ कनकसुन्दर रस ॥

आठभाग सोने की भस्म और १२ भागपारेकी भस्मले और १२ भागशुद्धगन्धकले २शाण ताम्रभस्मलेऔरअभ्रककी भस्म ४ शाण सोनामाखीकी भ० २ शाण बङ्गकी भ०२ शाण सुरमाकीभ० ३ शाण लोहकीभ० ८ शाण विषकीभ० ३शाण करियारी पलभरि इनसबों को आंवले और जंभीरी के रस में खरलकरि संपुट करि थोरी आंचदे फूंकि फिरि खरलकरै फिर माशेभरि खिलावैतौ सन्निपात दूरहोय और अदरखअथवालहसुनकेरसमें खिलावै तौ कुष्ठ बिसर्प भगंदर ज्वर विष विकार ये सबजायँ ॥

अथ भैरव रस ॥

पारा ३ निष्क गन्धक ३ निष्क इनदोनोंको घोटि कजली करि तांबा चांदी पीतरि बंग पोलाद आदिकोंकर्षकर्षभरिभस्म ले सहिंजनेकी जड़का रस सोंठिका काढा बेलके फलका रस चौराईका रस आदिमें पहरभरिघोटि गोला बांधे फिर इसगोले को दो कांचके प्यालों के नोन पूरित के संपुटमें राखि उसके ऊपर से कपरौटीमिट्टी करै फिर इसको एक मिट्टीके पात्रमेंधरि बालुका यंत्र करि २ पहरकी आंचदे जबठंढाहोय तबनिकालि उसमें एक कर्ष मूंगेकाचूर्ण विष शाणभरिकाले सर्पकेजहरयुक्त एक दिन खरलकरै फिर कांचकी शीशीमेंभरि दोपहरकीआंच दे जबठंढा होय तब निकालिकरि चूर्णकरै फिरतगर। मुसली जटामांसी। चूक। जगन्नाथी। पीपर। नील। नीमकी पत्ती। इलायची। चीता। कटसरैया। सौंफ। बनतोरई। धतूरा। अगस्त। मुण्डी। महुआ। चमेली। मैनफलआदिकेरसमेंअथवा काढ़ेमें एक २ बार घोटि सुखाय राखै फिर इस रसको सन्निपातमें मिरच दो गुंजा जंभीरी अथवा अदरखके रसमें दे यह रस शार्ङ्गधर में लिखा है ॥

अथ ग्रहणी कपाट रस ॥

चांदी । मोती । सोना । लोह इनकी भस्म एक २ भाग ले शुद्धगन्धक २भागशुद्धपारा ३भागले खरलकरै फिर इसको कैथेके रस में खरल कर हिरनके सींग में भरि ३० गोइटाकी आंचदेजब ठण्ढाहो तब निकारिले खरियारेके रसमें ७ बारखरलकरै तिसपीछेचिर्चिरेके रसमें३बारखरलकरैफिरलोधपठानी अतीस । मोथा । धवपुष्प । इन्द्रयव और गुर्च इनकेरसमेंक्रम से तीन २ बार खरलकरै और माशे २ भर शहत और मिरच मिलाय चाटै तौ सब अतीसार संग्रहणी दूरहोयँ और अग्नि दीपन होय ॥

अथ वज्र कपाटरस ॥

पारे और अभ्रककी भस्म । शुद्ध गंधक । जवाखार।सुहागा। अरणी । बीजबोल । खुरासानीवच । इनसबको समान भागले यह रस जंभीरी और भंगरेकेरसमें तीनि २ दिन घोटि गोला करि सुखायलोहेकी कड़ाहीमें धरि ऊपरसे मिट्टीका पात्रढँकि४ घड़ी तकमंद २ आंचदे फिरउसको उतारिकरि उसके समान उसमें अतीस ।मोथारसडालि कैथे औरभांगरेकेरसमें ७ बार घोटै फिर धवपुष्प । इन्द्रयव । मोथा । लोध । बेल और गुर्च इनके रसमें एक २ बारघोटि सुखायले फिरइसरसकोशाणभरिशहतके साथखाय और ऊपरसे चीता । सोंठि । पांगानोन। बेल । सेंधव इन सबका समानभाग चूर्णकरि उष्णजलकेसाथ खायतो ग्रहणी दूरिहोय ॥

अथ मदनकामदेव रस ॥

चांदी । हीरा । सोना । तांबा आदिकी भस्म । पारा गंधक लोहा तीनों शुद्धले इनसातों को क्रमसे बढ़ती भागले औरघीकुवारके रसमें घोटि शीशीमें भरि कपरोटीकर माटीके पात्र में नीचे ऊपर नोनपूरिबीचमें शीशी धरि संपुटकरिचूल्हेपरधरि मंद २ आंच दिनभरजलावे फिर निकारि मदारके दूधमेंखरल

करै फिरअसगंधकाकोली। बिनाभी असगंध। किमाच। मुसली तालमखाना और शतावरिइनके रसमें तीन २ भावनादे फिर कमल की जड़ले कसेरू और कांस इनमें तीन भावना दे और कस्तूरी। त्रिकुटा। कपूर। शीतलचीनी। इलायची। लवंग आदिको पीसे फिर पूर्वचूर्ण जो भावनादिसेसिद्धकियाहैउसका अष्टमांशकस्तूर्यादि चूर्ण युक्तकरिसबके समान शक्कर मिलाय शाण ५ भरि खाय ८ पैसा भर दूध पिये पथ्यमधुर करे इसके खाने से बहुत स्त्री गमनकरै और धातु न घटै॥

अथ कन्दर्पसुन्दर रस॥

पारा। शुद्धहीरा। मोती। चांदी। सोना। कृष्णाभ्रक इन पांचोंकी भस्म कर्ष २ भरिलेकर खैरके काथमें १ दिनघोटैफिर मूंगेकाचूर्ण शुद्धगंधक दोदोकर्ष मिलाय असगंधके रसमें एक दिन घुटाय मृगके सींगमेंभरि कपरौटीकरि थोड़ीआंचमें धरि फूंकदे तिसपर धवफूलकेरस अथवा काथमें भावनादे फिरकाकोली। बिनाआसनमुरेठी। जटामांसी। बरियारा। गुलशकरी ककई। भसींड़। हिंगवट। मुनक्का। पीपर। काबादी। कटिसरैया। बनमूंग। मुग्धपर्णी। फालसा। कसेरू। महुआ। किवांचकेबीज इनसबके रसमें एक एक भावनादे सुखाय खरल करिधरिराखे और इलायची। तज। पत्रज। बंशलोचन। लौंग। अगर। केसर। मोथा। कस्तूरी। पीपर। सुगन्धबाला और कपूर इनका चूर्ण करि शाणभरिलेऔर शाणभरिपूर्वोक्त कंदर्प सुन्दर रस और खांड़आंवला बिदारीकन्द इनसबको मिलाय कर्षभरिघी रातिको बिषयीपुरुष खायदूधपियेतो बहुत स्त्रीके साथभोगकरै औ बीर्य हानि नहो॥

अथ लोहरसायन॥

पारा औरगंधक दोनों को शुद्ध एकएक भागले दोनों को घोटि कजली करै फिर तीनभाग शुद्धपोलाद का चूर्ण ले क-

जलीके साथ पहरभरि घोटै तिसपीछे घीकुवारके रसमें ३ दिन तकघाममें बैठिकरि घोटै फिरघामऔरघोटनेकी गर्मीसे बहुत धुआंउठेगा जब कड़ा हो तब गोलाबांधि रंड पत्र लपेटि तांबे के पात्रमें राखि घाममें तीन दिन गाड़ रक्खे फिर नि-काल घाममें धरि सबुजाके रसकी ३ भावना दे जबसूखिजा-य तब सोंठि। मिरच। पीपर। तीनों के तीन क्वाथकरितीन भावना दे फिर हूसा। गुर्च। चीता इनको एक एक के रसमें तीन २ भावनादे जलसे निकारि लोहपात्रमें धरि त्रिफला में घोटि मेवड़ी। अनारकालिलका। भसींड़। भंगरा। कटसरैया। पलाश। केलेकेवृक्षकारस विजयसारकेरसकाक्वाथ। नील। मुंडी-रस। बबूलफली। फालसा इनसबके रसअथवाक्वाथमें ३ भावना दे फिरबरियारा। शतावरि। गोखुरू। छरहट इनके रसमें तीन २ भावनादे जो सब मिलिजाय फिर प्रभात समय ३ माशेरस घृत और शहतमें खिलावे और ऊपर से पल भरि त्रिफला का क्वाथ पिये यही इसका अनोपानहै और तीनमाशे सेवनकरै तो श्वेत बार न हों और त्वचा पर झरीं न परें और मन्दाग्नि श्वास खांसी पांडु कफ वायुविकार इनसबके अर्थ त्रिफलायुक्त खाय और पीपर और शहतमें देय तो बल सुंद-रता और आयुबढ़ावे और लोह खानेवाला श्वेतकुम्हड़ा तिल का तेल उर्द राई मद्य खटाई ये पदार्थ छोड़दे॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रन्थेसर्वधातुभस्मरसादिनिरू-पणं नाम षट्विंशतिस्तरंगः २६॥

अथ आसव बनाने की विधि लिखते हैं॥

अथ दश मूला सव की विधि॥

शालिपर्णी। पृष्ठिपर्णी। दोनों कटेली। गोखुरू। बेल। अ-रणी। अरलू। खम्हारि। पाढ़ल इनसबकी जड़ ५ टं० चित्रक

२५ ट० भर पुष्करमूल २५ ट० भर लोध २० ट० भर गिलोय २० ट० भर आंवले १६ ट० भर धमासा १२ ट० भर खैरसार १२ ट० भर बिजैसार १२ ट० भर हड़की छाल १२ ट० भर कूट १६ ट० भर मंजीठ १२ ट० भर देवदारु २ ट० भर वायविड़ंग २ ट० भर मुलहठी २ ट० भर भारंगी २ ट० भर कैथ २ ट० भर बहेड़ेकी छाल २ ट० भर सांठीकीजड़ २ ट० भर पद्माक २ ट० भर नागकेसर २ ट० भर नागरमोथा २ ट० भर चव्य २ ट० भर बड़छड़ २ ट० भर फूलप्रियंगु २ ट० भर गौरीसर २ ट० भर कालाजीरा २ ट० भर निसोत २ ट० भर सम्हालू २ ट० भर रासना २ ट० भर पीपल २ ट० भर सुपारी १ ट० भर कचूर १ ट० भर हल्दी २ ट० भर सौंफ २ ट० भर इन्द्रयव २ ट० भर काकड़ासिङ्गी २ ट० भर काकोली २ ट० भर क्षीरकाकोली २ ट० भर ऋद्धि २ ट० भर वृद्धि २ ट० भर मुनक्का दाख ६० ट० भर शहत ३२ ट० भर धवईकेफूल ५ सेर बेरझरी ५ सेर बेलकीछाल १५ सेर इनसबको अठगुनेपानीमें औटाय उसका चौथाहिस्सा रक्खे अथवा इन सबकोजवकुटकर बड़ेमटुकेमेंधरै इसके अनुमान माफ़िकपानी डाले और पानीमें चोखा गुड़ पक्का १ मन मिलावे और खाय अर्थात् घूरेकी जमीनमें इस मटुकि को गाड़दे और मटुके का मुँह ढांकदे २१ दिन पीछे जब इसका जावा उठे तबजावे को और मटुके में भरे दारू काढने के यंत्रसे और बासनमें इस आसवकोकढायले औरउसयंत्रके मुँहपर यहसुगन्धिकी औषध पोटली करडाले खस। चन्दनकाचूर। जायफल। लवंग। दालचीनी। इलायची। पत्रज। केसर। पीपल ये सब औषधदो २ टकेभर लीजै और कस्तूरी ४ माशे इन्हें पीस इसयंत्रके मुँहपर पोटली कर धरै इसीतरह यह आसवबनायले पीछे इसको पुरानाकरि २ ट० भर अनुमान माफ़िक जो मदात्ययके प्रकरण

में इसकेपीनेकी विधिलिखीहै उसके माफिकपीवे तो क्षयीरोग संग्रहणी अरुचि शूल श्वासकास भगन्दर वायुके सब रोगकोढ़ बवासीर प्रमेह मन्दाग्नि उदरके सबरोग पथरी मूत्रकृच्छ्र इन सबको यह दूरकरै और भूखको बढ़ावै और नपुंसकपने को दूरकरै और शरीरको पुष्टकरै और शरीरमें वीर्यको बहुतबढ़ावे इति दशमूलासवकी विधि सम्पूर्ण ॥ और इसीतरह सब आसवदाख अंगूर आदिले बनालेय ॥

अथ मूसली पाक बनाने की विधि ॥

सफेदमूसली पाव भरले कौंचके बीज २॥ टं० बिदारीकन्द २॥टं० गोखुरू २॥ टं० शतावरि २॥ टं० खरैटीके बीज १टं० गंगेरनकी छाल १ टकेभर सोंठि २ टं० भर इन्हें महीन पीसि इनकी बराबर गौके घृतमें इन्हें मकरोय १० सेर दूधमेंपकावे और दूधका खैरा अर्थात् कड़ामावा करे पीछे १ सेर खांड्के लड्डुओं कीसी चासनीकरे पीछे चासनी में यह मावा डाले और यह औषध चासनीमें डाले मिरच २टं० भरपीपल २टं० भर सोंठि २ टकाभर दालचीनी १ टं० भर पत्रज २॥ टं० भरइलायची १ टं० भर नागकेसर २ टं० भर कस्तूरी ४ माशेलवंग १टं० भर जायफल १ टं० भर जावित्री १टं० भर वंशलोचन १ टं० भर इन औषधों को जुदी २ पीस इस चासनीमें डालै और सारबंग अभ्रक मृगांक और हरगौरीरस ये भी अनुमान माफिक चासनी में डाले पीछे इनको एक जीव कर गोली १ टं० भरकी बांधे इसगोलीको नित्य एक प्रभात एक सन्ध्यासमय खायतौ शरीरको पुष्टकरैऔर प्रमेहादिक सबरोगोंको दूरकरैहै — इतिमूसलीपाककीविधिसम्पूर्ण ॥ और इसीतरहसबपाक करले ॥

अथ शिलाजीतके शोधने की विधि ॥

शिलाजीत जो पर्वतका मद उसे लीजे अथवा जिसमें वह

निकलाहो उस पत्थरको ले फिर उस शिलाजीतको गौके दूध में भिगोवे अथवा त्रिफलेके काढ़ेमें भिगोवे अथवा भांगरे के रसमें भिगोवे १ दिन पीछे उस बासनमें उसनखूबमसलेफिर उसको कपड़छानकर धूपमें सुखायले तबवह शुद्ध होयअथवा शिलाजीतके कांकरेको ले उन्हें पीस गरम पानीमें २ पहर रक्खे फिर उसको मसल औरमट्टीके पात्रमें बस्त्रसे छानले पीछे उस पात्रको धूपमें धरे ऊपर का पानी उसकादूसरे पात्र में नितार ले इसीतरह बारम्बार दोमहीने तक करता जाय तब वहशिलाजीत शुद्धहोय अग्निमें निर्धूमहोय और अग्नि में धरने से लिंगोपम खड़ा होजाय शोधा शिलाजीत प्रमेह आदिले बहुत रोगोंको दूरकरैहै और शरीरको पुष्टकरै है इति शिलाजीत शोधनम् ॥

अथ जवाखारको आदिले सम्पूर्ण खारोंके बनाने की विधि ॥

कच्चेजवोंकोकाटि उन्हें सुखाय ले फिर जलाय उसकी राख कर उस राखको बासनमें २ दिनतक भिगोय दीजे पीछे टिकड़ीके कपड़ाबांध उस कपड़ेमें वह राख सबसमेत पानीमेंडालदे जबतक उसमें खारापानी निकले तबतक और पानी डालता जाय पीछे उसपानीको कड़ाही चढ़ाय वह पानी जलादीजेजब उस कड़ाहीमें उस पानीका नोन समान खार जमि जाय इसी तरह सब खार करलीजे इति जवाखारकोआदिले सब खारोंके बनाने की विधि ॥

अथ चनाखारके बनाने की विधि ॥

माहके महीने में चनेकेखेत होयहैं उसखेतके ऊपर महीन कपड़ा २ घड़ी ४ घड़ीके तड़के चतुर आदमी फेरलावे और वही कपड़ा १५ दिनतक फेरै और नित्य उस कपड़ेको सुखाताजाय वहकड़ाहोय तबतकपीछे उसकपड़ेको पानीमेंभिगोय दे कड़ाहीमें और कपड़ेसे वह पानी छानले पीछे कड़ाही में

वह नितरा पानी डाल चासनीसमान गाढ़ाकर बासनमें भर राखे तोवह चोखा चनाखारहोय और वहखट्टा बहुतहोय इति चनाखार बनानेकी विधिसम्पूर्ण ॥

अथस्नेह विधि ॥

स्नेहचारि प्रकारका है घृत १ तेल २ बसा अर्थात् मांस में मिली चरबी ३ और हाड़के भीतरकी मज्जा ४ वैद्यको उचित है कि इनचारोंको सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावे फिर इनमें भी दो भेद हैं स्थावर जंगम २ स्थावर का अर्थ अचर अर्थात् जहां उपजै वहीं स्थिररहे इसप्रकार से स्नेह अनेक प्रकारकेहैं और जंगमका अर्थ चरहै अर्थात् जो श्वास सहित हो इसमें घृत श्रेष्ठहै ॥ अथस्नेहभेद ॥ घी और तेल मिलावै उसे यम कहते हैं और घी तेल और बसा मिलावे उसे त्रिवृत्त कहतेहैं और घी तेल बसा मज्जा संयुक्त हो उसे महान्कहते हैं ॥ अथस्नेहपान ॥ कृमिकेरोगीको घृततीनदिन पिलावे तेल चारदिन बसा पांचदिन मज्जा छहदिन घृतादि स्नेह ७ दिन और फिर अधिक से अधिक पानकरने से आहार होजाता है और औषधसे दृढ़गुण नहीं करता ॥ अथ स्नेहमात्रा प्रकार ॥ वातादि दोष ऋतुकाल जठराग्नि अवस्था और निर्बल सबल सम बल विचार अलमध्य अथवा ज्येष्ठ मात्रा यथोचित रोगी को घृत स्नेहकी मात्रादेना चाहिये और मात्रा और प्राण और विना दोषसमझे और बिनाबलजाने न्यूनाधिक्य मात्रा अकाल वा बिपरीत भोजन और बिहार करने से सूजन अर्श ऊंघना निद्रा असावधानता ये रोगहोते हैं देवना समय घटबढ़ विना रुचिदेशकाल विरुद्धखानेको मिथ्याहार कहते हैं और अकाल परिश्रम करना ऋतुसे विपरीत यथा गरमीमें धूपखाना सरदी में बहुत जलाभ्यास विनावस्त्र इत्यादि को मिथ्या विहार कहते हैं ॥ अथमात्राप्रमाण ॥ दीप्ताग्निवाले को मात्रा घृतादि स्नेह

पलभरिदेनामध्यमाग्नि मनुष्यको ३ कर्षप्रमाण मंदाग्निवाले मनुष्यको दोकर्ष प्रमाण मात्राका देना उचित है और ऋषि घृतादि पानकी सामान्य मात्रा कहते हैं ये तीन प्रकार की हैं प्रथम महती अर्थात् जो आठपहरमें पचै दूसरीमध्यमा अर्थात् जो दिनभरमें पचै तीसरी अल्प अर्थात् जो दो पहरमें पचै इन तीनों मात्राओं में तिलका प्रमाण नहीं जैसा पचै वैसाही देय सब मात्राओं से अल्प सुखदाई है ॥

अथ अल्पादि मात्रागुण ॥

अल्प मात्रा दो कर्ष की अग्निदीप्त करती है और इससे स्त्री प्रसंगकी इच्छा होतीहै और जो थोड़े बातादि कुपित हों उन्हें शांत करतीहै और मध्यममात्रा कर्ष तिनका शरीर पुष्ट धातु वृद्धि भ्रम शांत करतीहै और ज्येष्ठमात्रा पलभरकीहै इस मात्रासे कुष्ठरोग बीस प्रकार का उन्माद भूत प्रेत बाधा और मृगी ये रोगदूर करतीहै दोषोचित अनोपान पित्तकोपमें केवल घृत वायु कोपमें सैंधव संयुक्त घृत और कफ कोपमें सोंठि मिरच पीपरि व सारपीसि घृतमें युक्त करिपियावे और रुखाई उरःक्षत विषार्ति और बात पित्त दोष हीन बुद्धि और सुधि भुलाना इन सबों में घृत अवश्य पिलाना चाहिये और कृमि विकार वायु वृद्धि शरीर कफ और मेद वृद्धि इन सबमें तैलका देना उचित है और जो तैल उसे स्वाभाविक अहितहो तौ अग्नि भी दीप्त करैगा और जो मनुष्य परिश्रम करि दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण शुष्करक्त शरीरपीड़ा भस्मक आक्षेपकादि वायु बलिष्ठ वायु इनमें बसा पिलाना योग्यहै और दुष्ट कोष्ठ क्लेशित वायु पीड़ित और प्रबलाग्नि वाले को मज्जा का पिलाना योग्य है और सर्व शरीर को हित है ॥

अथस्नेह पानसमय ॥

शीतकाल में दिनमें पिलावे उष्णकाल में रातको वात पित्त अधिकवालेको रातको और वात और कफ अधिकवालेकोदिन में पिलावे और घृतादिकर्म विशेषकर नासके कारण मर्दनको कुल्लीको मस्तकमें दाबनेको काल और आंखिमें डालनेको घृत वा तेल वातादि दोष सबलनिर्बल विचार वैद्य युक्तिकरै ॥

अथ स्नेह पानानुपान ॥

घृत उष्णोदकके साथ पिये तेल यूषकेसाथ पिये औरचरबी हाड़ मज्जा मांड़ युक्त पीनेसे सुखदाई होताहै और जिसे स्नेह न भावे उसे अन्नकेसाथदे और बालक बूढ़ासुकुमार दुर्बलमृदु-मायुक्त मनुष्यको गरमी में भातके साथ दे ॥

अथ स्नेहयवागू ॥

तिलको भलेप्रकार कूटि उसमें थोड़े चावलका चून डालि थोड़ा घृत और जल देकर पतला पकाइले तब गुनसुना खाय तो धातुको बहुत उत्पन्नकरै और शरीरको चिकनाकरै ॥

अथ धारोष्णदुग्धविधि ॥

दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाय तसकरै तिससे कि दुग्धदुहातुरन्तगर्म २ पिलावैतौ धातुजल्दपैदाहो औरस्नेह पीनेपर परिश्रम करने वा कफकृतपदार्थ खानेसेस्नेह न पचाहो वा मलावरोध कियाहो तौ उष्णजलसे बमनकरावे तौ अजीर्ण दोष मिटै जो स्नेह अजीर्णकी शंकाहो तो तप्तजल प्यावै जब शुद्ध डकार आवे औरअन्नपर इच्छाकरैतौजाने कि अजीर्णशांत भया और स्नेहजन्य पित्त कोप यत्न पित्त प्रकृतिको स्नेह पान से गरमीहोतीहै औरप्यासविशेषलगतीहै उसे शीतजलपिलावै बमनकरावे तौ प्यास ऊष्मा शांतहोय और स्नेह निषेधअजीर्ण में उदर रोगमें तरुणज्वरमें दुर्बलको अरुचिको अति स्थूलको मूर्च्छामें मदार्तिको वस्तिकर्म भयेको विरेचन भयेको बमनको

परिश्रमीकोगभैगिरीस्त्रीको इनसबको स्नेह न प्यावै स्नेहयोग्य औषधदे और जिसे खेद निकलाहो रेचनकरायाहोय मद्य पीने वालेको मैथुनश्रमीको बालवृद्धको रूक्ष शरीरको रक्तधातु क्षीण को वातार्तीको तिमिररोगीको घृतादि स्नेह पिलाना योग्यहै ॥

अथ स्नेहगुणादिलक्षण ॥

जो स्नेह पानसे गुणभया हो तो शरीरमें वायु शुद्ध करताहै अग्निकोदीपन चिकनाझाड़ासफातन कोमलतेजयुक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेहमें भी मनुष्य ऐसा होजाताहै उपद्रव विना शरीरहलका इन्द्रीनिर्मल जिसके येलक्षणहोयँ उसकोजानो कि स्नेह अच्छाभया और रूखे लक्षण होयँ तो स्नेह पान विपरीति समझना ॥ अथ स्नेह बहुतपीने के उपद्रव ॥

॥ अन्न न भावै मुखसे पानीछूटै मल मार्ग में जलन रहै और मलबहै तन्द्राअतीसारशरीर पांडु येसब अतिस्नेहकेलक्षणहैं ॥

अथस्नेहरूक्ष सूक्षस्निग्ध प्रतीकार ॥

रूक्ष मनुष्यको विना मक्खन निकाला मट्ठा तिलका कल्क यवकासत्तू खिलाय स्निग्ध करै और स्निग्धके समान चावल चनादि खिलाय रूखा करै ॥

अथ स्नेह सेवन गुण ॥

अग्नि दीप्त शुद्धकोष्ठ धातुपुष्ट इन्द्री दृढ जरा रहित बल कांतियुक्त लक्षणहोतेहैं और स्नेहसेवनमें ये बातें मनाहैं श्रम न करै ठंढेपदार्थ तजे मलमूत्र न रोके बहुत न जागे दिनमें न सोवे और कफकृत पदार्थ रूक्षान्न न खाय ॥

अथ स्वेद विधि ॥

स्वेद चारप्रकारका १ ताप २ उष्ण ३ उपनाह ४ द्रवस्वेद तापि और उष्णस्वेद कफकेरोगको दूरकरेहै बालूरेत नोन वस्त्र गरम हाथ टकनी अंगीठी इतने सेंककरै पसीना आवै उसेताप स्वेद कहिये १ लोहकीपीडी ईंट आदिके तपानेसेपसीना आवै

उसे उष्ण स्वेद कहिये २ ताप और उष्ण इनदोनोंके मिलने से जो पसीना आवै उसे उपनाह स्वेद कहिये ३ और शरीर को वस्त्रसे ढांक और शरीरके ऊपर गरमखटाईके पानीसेसींचे अथवा बायुको दूरकरनेवाली ओषधियों का गरमपानी शरीर के ऊपर डाले पसीना बहुत आवै उसे द्रवस्वेद कहिये ४ ये-चारों प्रस्वेद बायुके रोगों को दूरकरै हैं॥

अथ महासाल्वण स्वेद॥

कुलत्थ। उड़द। गेहूं। अलसी। तिल। सरसों। सौंफ। देव-दारु। सम्हालू। जीरा। अरंड। अरंडकीजड़। रास्ना। सह-जनेकी जड़ इनसबको नोनसमेत कांजीसे अथवा किसीखटाई से महीन पीस उसको गरमकर शरीर में जहां वायु भरी होय वहां सेंके तो वायुके सबरोगजायँ — इति महासाल्वणस्वेद॥

इति स्वेद विधिः॥ अथ वमन विधि॥

शरद् बसन्त वर्षा इन ऋतुओं में मनुष्य मात्रकोबमनऔर जुलाबलेना योग्य है जिसकेशरीरमें कफके रोगहोयँ औरहृदय आदि दूखे और विषकादोषहोय और श्लीपद। कोढ़। बिसर्प। प्रमेह। अजीर्ण। भ्रम। श्वास। खांसी। पीनस। मृगी। उन्माद रक्तातीसार। नाक। तालू। ओठ। कान पकिगयेहों। दोजीभ होगईहों। अतीसार होय। पित्त कफके रोगहोयँ। मेद बढ़िगई होय। शिरके रोग होयँ। पसलियां दूखें। तत्काल ज्वरहोय। और अरुचि होय इनसबरोगोंमें बमनकरनायोग्यहै बमनसेये रोगजायँ १ और इतने रोगोंमें बमन करावे नहीं तिमिर के रोगमें। गोले के रोगमें। उदर के रोगमें। दुर्बल और बूढ़ेको। गर्भिणीको। और स्थूलको। चोटलगी होय उसको। मेदवाले को। भूखेको। उदावर्तीको। बायुकेरोगीको। इन्हेंबमनकरावैनहीं॥

अथ बमनकी विधि॥

भेदुड़ी राबड़ी पतलीको पेटभर खवाइये और भेदड़ीमें दूध

मट्ठा दही ये डाल कंठ पर्यन्त खवाइये पीछे सेंधानोन शहतबत्र्व यहखवाय ऊपर गरमपानी पिलाय गलेमें अंगुली डाल वमन करावै २अथवाकुटकीऔरतीखीवस्तुअथवामेढ़लकाचूर्णगरम २ पानीसे ले अथवा फिटकरी तमाकू आदि गरमपानीसे ले तो वमन होय अथवा नींबको आदिले कड़वेद्रव्यसे वमन होयतो यहपीछे कहे सबरोग जायँ और वमन करे पीछे जीभमेंजीरा आदिअच्छीवस्तुलगावैअथवाविजौराआदिअच्छी वस्तुलगावै अतरआदिसुगन्धसूंघियेअच्छे२भोजनकरियेइतिवमनविधिः॥

अथ गंडूषविधि माह॥

गंडूषचारिप्रकारकाहै स्नेहक १ शमन २ शोधन ३ रोपण ४ इसीप्रकारसे कवलभी ४ प्रकारका है॥

अथ स्नेह का गंडूष भेद॥

चिकने और उष्णपदार्थको स्नेहकहतेहैंयहवायुकीप्रबलता में देना चाहिये और ठंढे पदार्थ को शमन कहतेहैं इसे पित्तके विकारमें देनाचाहिये और कडुआ खट्टा और उष्ण पदार्थ शोधन कहतेहैं इसे कफके विकारमें देनाचाहिये और कषाय। कटु। मधुर। तत्तक्रिये पदार्थको रोपणकहते हैं इसे व्रणादि में देनाचाहिये इसीप्रकार से कवलमें भी जानना चाहिये॥

अथ गंडूष कवल रीति॥

गीलाकाढ़ादि मुंह में भरिखूब गुलगुलानेको गंडूष कह तेहैं और कल्क करि मुख में धरि इधरउधर फेरने को कवल कहतेहैं॥

अथ उभय द्रव्य प्रमाण॥

गंडूषमें जो क्वाथ दियाजावै उसके द्रव्य का प्रमाणकोल कोल मात्रहै और कवल कर्ष २ प्रमाण है इन गंडूष और कवलसे योग्या वस्था पांच वर्षके ऊपर है इसको चित्त साव-धान करि रोगोंके निवारणके लिये कपोल गला मुख आदिको कुछ सेंकि तीन वा पांच वा सातवें दोषके नाश पर्य्यन्तगंडूष

करै और जब तक मुखमें कफ न भरि आवे अथवा तीनोंदोष शान्त न होजावें अथवा नेत्र और नाकसे जल न टपकने लगै तब तक गंडूष करै॥

अथ वातरोगस्नेहगंडूष।

मनुष्यको वातकी प्रबलतामें तिलकल्क पानीदूध वा तिलादि स्निग्ध गंडूष देना चाहिये॥

अथ पित्तशमन गंडूष॥

॥ तिल। नीलकमल। घृत। खांड। दूध और शहत आदि को युक्तकरि कुल्ला करनेसे पित्त करिके उत्पन्नहुई जो दाह तिसे दूर करता है॥

अथ व्रणादि पर गंडूष॥

शहत के कुल्ले करनेसे मुखक्षत रसज्ञान चटकना दाह प्यासआदि उपद्रव दूरिहोतेहैं और मुखशुद्ध होताहै ॥

अथ विषादिपर गंडूष॥

घृत वा दूधके कुल्ले करनेसे विषविकार चूनेसेफटा अग्निसे जलामुख अच्छाहोय॥

अथ दांतोंको पुष्टकारकगंडूष॥

जिसमनुष्यके दांतहिलतेहोयँ वह तिलके तेलमें सेंधवमिलाकुल्लेकरे तो दांत हिलना बन्दहोय॥

अथ मुखशोषपरगंडूष॥

जिसमनुष्यका मुखसूखता हो अथवा फीका फीका रहता हो तौ वहकांजीके कुल्ले करनेसे शांतहोय॥

अथ कफ दोष पर गंडूष॥

अदरकके रसमें। सेंधव। त्रिकुटा। राई आदिपीसिमिलाकेरि कुल्लाकरनेसे कफदोष मिटै॥

अथ कफ रक्तपित्तपरगंडूष॥

त्रिफलेके चूर्णको शहतमें डालिकुल्ला करै तो मुखमें कफ रक्तपित्तदोष कदापि न रहै॥

अथ मुखरोगपर गंडूष॥

दारुहरदी। गुर्च। त्रिफला। दाख। चमेली। और जवासा ये समानले क्वाथकरै फिरउसमें उसके छठवें भागकीतुल्यशहत डालिकुल्ले करैतो त्रिदोष मुखपाक जाय॥

विशेष॥

जोद्रव्य गंडूष करनेवालीहै उसको प्रतिसारण और कवल मेंभी देनायोग्यहै॥ अथ कवल विधान॥

केसर। बिजौराकीगूदी। सेंधव। त्रिकुटा इनसबकाकौर बनाय मुखमें बिलोवेतो मुखकीकठोरता और कफबातकीअरुचिदूरहोय॥ अथ प्रतिसारणप्रकार॥

प्रतिसारणसें औषध देनेके ३ प्रकारहैं कल्क १ अवलेह २ और चूर्ण ३ जैसामुख में रोग देखैउसीप्रकारकी औषधले अंगुलीके अग्रभागसेमुखकेभीतरमलै॥

अथ प्रति सारणचूर्ण॥

कूट। दारुहरदी। धवपुष्प। पाढ़ा। कुटकी। हरदी। तेजबल। मोथा। लोध इनका चूर्ण जीभऔर दांतोंकीजड़मेंबार२ मल लारगिरावै तो इससे दांतोंकी पीड़ा रक्तका गिरना मसूढ़ोंकासूजनाऔर दाह ये रोग दूरिहोयँ॥

अथ गंडूषादि हीन ह्रद्धभये से उपद्रवकेलक्षण॥

कफकी न्यूनता अधिक स्वाद और अज्ञान होताहै अन्नसे अरुचि आतियोग से मुख पकना पीस्काहोना मुखशोष ग्लानि आदि उपद्रव होते हैं॥

अथ सम्यक् गंडूष लक्षण॥

मुख व्याधि नाश चित्तप्रसन्न निर्मल मुख लहलका जीभ को स्वाद आदि से सम्यक् गंडूष जानना॥

अथ विरेक नाम जुलाब की विधि॥

प्रथम पुरुषको विधि पूर्वक वमन कराइये पीछे उसेपाचन

द्रव्य दीजे उसके शरीर के कफके रोगजहांतक पचिजायँ और शरद और बसन्त ऋतु में निश्चय जुलाब दीजे और जुलाब लेनेसे निश्चय रोग जाय तब चाहे जिस ऋतुमें जुलाबदे और इतने रोगवाले मनुष्योंको निश्चय यही जुलाबदे तब ये रोग जायँ ॥ अजीर्ण ज्वर होय जिसके शरीरमें मलका संग्रह होय वायुरक्त भगन्दर बवासीर पांडुरोग उदररोग गोला हृद्रोग अरुचि योनि का रोग गरमी का रोग कान नासिका का रोग प्रमेह फोड़ा विशूचिका और नेत्रका रोग शूल शिरकारोग मुख का रोग शोथ मूत्राघात यह रोगवाले मनुष्य जुलाब लें तो ये रोग तत्कालजायँ १ और इतने मनुष्य जुलाब लें नहीं बालक बूढ़ा जिसका शरीर बहुत चिकना होय शस्त्रलगेसे क्षीण पड़ि जाय भयभीत खेद युक्त पिपासित स्थूल पुरुष गर्भिणी स्त्री तत्काल ज्वर चढ़ाहोय सो तत्काल जिसके सन्तति हुई होय ऐसी स्त्री मन्दाग्निवाला मेदक रोगवाला रूखा जिसका शरीर होय इतने पुरुष जुलाब लें नहीं और पित्तकी प्रकृतिवाले को कोमल जुलाब दीजे और कफकी प्रकृतिवाले को मध्यम जुलाब दीजे और वायुकी प्रकृतिवाले को कड़ा जुलाब दीजे तब इन सबको अच्छा होय ॥

॥ अथ मृदु जुलाब लिखते हैं ॥

दाख । दूध । हड़को आदि ले ॥

॥ अथ मध्यम जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत । कुटकी । किरमाला को आदि ले ॥

अथतीक्ष्ण व कड़ा जुलाब लिखते हैं ॥

थूहरका दूध । चोख । दात्यूणी । जमालगोटा और इच्छा भेदीको आदिले ॥ अथ पुनः जुलाब लेनेकी विधि ॥

प्रथम पांच सात दिन तो पुरुष मुंजिस ले सोनामुखी २॥ टं० जीरा १। टं० सौंफ २॥ टं० मुनक्का दाख २॥ टं० गुलाब

के फूल २॥ टं० पाढ़ १० टं० इनसब को तीन पाव पानी में औटाय पावभर रक्खै पीछे इसपानी को छान नित्य ४ दिन पीवे तो उदरका मलपचे और थोड़ा २ निकलाकरै और नित्य चावलकी खिचड़ी घृतसमेत खाय और पांचवें दिन सोनामुखी १० टंक निसोत १० टंक गुलाब १० टं० जीरा २॥ टं० सौंफ५ टंकपाढ़ १० टंक इन्हें औटाय नित्य ४ दिनले और घृतसमेत खिचड़ी खाय तो जुलाब अच्छा उतरै और इससेसबरोगजायँ खट्टाखारा खायनहीं जुलाबमें दस्त ३० आवें तो उत्तम जुलाब जानिये और दस्त २० आवें तो मध्यम जुलाब जानिये और दस्त १० आवें तो हीन जुलाब जानिये ॥

अथ छओंऋतुके पृथक् २ जुलाब लिखते हैं ॥

बसंतऋतु में तो सोनामुखी। निसोत। गुलाबकेफूल। सौंफ। जीरा। खांड़चीनी इनका जुलाब लीजे। ग्रीष्मऋतु में निसोत मिश्री इनदोनोंको बराबर ले जुलाबले तो रोगजायँ शरीर शुद्धहोय २॥ अथ वर्षाकाल का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत। पीपल। दाख। सोंठि। शहत इनके जुलाब ले तो रोग जायँ ३॥

अथ शरदऋतु का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत। धमासा। नागरमोथा। दाख। नेत्रबाला। मुलहठी। चन्दन। सोनामुखी। मिश्री इनका जुलाबलेतो रोगजायँ ४॥

अथ हिमऋतु का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत। चित्रक। पाढ़। चोखीसोनामुखी। वचइनकाजुलाब गरम पानीसेले तो रोगजायँ ५॥

अथ शिशिरऋतुका जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत। पीपल। सोंठि। सेंधानोन। शहत। सोनामुखी इन का जुलाबले तो रोगजायँ ६॥

अथ अभयादि मोदक लिखते हैं ॥

हड़कीछाल । मिरच । सोंठि । बायबिडंग । आमला । पीपल । पीपलामूल । तज । पत्रज । नागरमोथा येसबबराबरले और इन से तिगुनी दात्यूणीले और इनसबसे अठगुणा निसोतले और इनसबसे छःगुणी मिश्रीले और इनसबको महीनपीस शहतमें २॥टंकप्रमाणकी गोलीबांधेपीछे गोलीएकप्रभातहीशीतलजल सेले तो जुलावअच्छा उतरे जबतक बहुत गरमपानी पीवे नहीं तबतक जुलावलगाकरे और इसमें बहुतजुलावलगे तो मनुष्य के ये सब रोगजायँ विषमज्वर । मन्दाग्नि । पांडुरोग । खांसी । भगंदर । प्रमेह । राजयक्ष्मा । नेत्ररोग । बवासीर । कोढ़ । गंड-माला । उदररोग । बायुके रोग । अफरा । मूत्रकृच्छ्र । पथरी । जांघ । कटिकी पीड़ा इन सबरोगोंको यह अभयादिमोदकदूर करे है और जवान करे है ॥ इति अभयादिमोदक १ ॥

अथ जुलाब लेनेवाला इतनीवस्तुकरै सो लिखते हैं ॥

जुलावलगे पीछे शीतल जलसे आंखधोवे अतर सूंघे पान खाय पवनके स्थानमेंरहै नहीं शीतलजलसे नहाय नहीं गरम जलबारम्बार पीवे जबतक पूराजुलावलगै और बीचमें ये नहीं करे तो नाभि और कुक्षि में शूलचलै पीछे मल उतरे नहीं और पवनसरे नहीं पित्ती आदि रोगहोजायँ शरीरभारीरहे दाहऔर अफराहोय घुमेर आवे छर्दिहोय तो पीछे उसको पाचनादि दे शुद्धकरे तो येसव रोगजायँ और भूखलगेशरीर हलकारहै और जुलावबहुतलगै तो मूर्च्छा होय गुदाबाहर निकलिआवे और शूल चलै और अतीसार को आदिले औरभी रोगहोयँ तबउसे शीतल जलसे स्नान करावे और चावल । मिश्री । शहत । शिखरन । दही ये सब खवावे और बकरीका दूध मिश्री डाल पिलावेऔरसांठीकेचावल । मसूरयेखवावे तोबहुतजुलाबथम्है ॥

अथ अच्छा जुलाव होय उसका लक्षण लिखते हैं॥

मनप्रसन्नरहै। वायुसरे। सबइन्द्रियों में बलहोजाये। बुद्धि निर्मलहोय। भूखअच्छीतरह लगै। सबशरीर में बलहोय॥ इति विरेचन नाम जुलावकी विधि सम्पूर्ण॥

अथ छओं ऋतुओं में हड़खानेकी विधि॥

ग्रीष्मऋतुमें १ हड़कीछालका चूर्णकरउसमेंबराबरका गुड़ मिलाय नित्य ६० दिनतकखाय तो रोगहोय नहीं॥ बर्षाऋतु में २ हड़का चूर्णकर सेंधानोनके साथखाय तो रोगनहींहोय॥ और शरदऋतु में मिश्रीके साथ ३ हड़का चूर्णखायतो रोग नहींहोय॥ और हेमन्तऋतुमें ४ हड़का चूर्ण सोंठिके साथ खाय तो रोग नहींहोय॥ और शिशिरऋतुमें ५ हड़का चूर्ण पीपलके साथखायतो रोग होय नहीं॥ और बसन्तऋतुमें ६ हड़काचूर्ण शहतके साथखाय तो रोग होयनहीं॥ इति छओं ऋतुओंमें हड़खानेकी विधि॥

अथ वस्तिकर्म की विधि लिखते हैं॥

वस्तिकर्म नाम पिचकारी की विधि सो जिसरोगीका मल मूत्र वायुके रोग करके रुकगया होय उसके पिचकारी इन्द्रीमें दे और वहपिचकारी जस्तकीनलीलगाय बकरेकेअंडेकीबनैहै॥ अथवा सुवर्णसे आदिले धातुओंकीनली गौके पूछके आकार बनै है सो इसमें औषधोंका जलभर इन्द्रीमें या गुदामें वस्तिकर्म करै तो वायुके सब रोगजायँ॥ सो यह वस्तिकर्म २ प्रकार का है॥ अनुवासन नाम १ निरूहनाम २ तेल घृत आदिक की जिसके पिचकारी दीजै उसे अनुवासन वस्तिकर्म कहिये॥ और निरूहवस्तिका भेद एक उत्तर वस्तिहै १ और अनुवासन का भेद मात्रा वस्तिहै २ उसकी तौल २ टकेभर जलकीहै इतने रोगवाले को अनुवासन वस्तिदीजै नहीं भस्मक केवलवायु का रोग मूर्च्छा। अरुचि। खांसी। श्वास। क्षयी इनरोगवालों

को और भयभीतको अनुवासन वस्ति दीजैनहीं। और इनरोग वाले को अनुवासन वस्ति करावे एकवर्ष से ले छः वर्षतकवाले को छः अंगुल पिचकारीकी वस्तिदीजे और बारह वर्षवालेको आठअंगुलकी और बारह वर्षके उपरान्त बारह अंगुलकीपीछे बुद्धिके अनुमानसेदीजे और पिचकारीके घृतलगायदीजे और वस्तिकर्मसे शरीरमेंबलबढ़ै रोगजाय और शीतकालमेंऔरबसन्तऋतुमें स्नेहकी वस्तिदीजे औरग्रीष्मबर्षा शरदऋतुमेंरात्रि को अनुवासन वस्तिकर्मकरिये औरबहुत चिकनाभोजनकरावै नहीं हलका भोजनकरावे और स्नेहमें सौंफका जल सेंधानोन डालगुदामें वस्तिदीजे गरम पानीमें भोजनकराय और फिराय और मल मूत्रादिक कराय और बायें पसवाड़ेकी तरफ सुवाय और बाईजांघ ऊंचीकर गुदामें स्नेहकी पिचकारीदे औरबायें हाथसे पकड़और दाहनेहाथसेदाबे तबगुदामेंपिचकारीकाजल और स्नेह जाय पड़े और पिचकारीदे तो वह देनेवाला पुरुष और लेनेवालापुरुषइतनी बस्तुकरेनहीं जम्हाई। खांसी। छींक येले नहीं ३० तालीबजावेतहांतकवस्तिकरे अथवामुखसे१०० तककी गिनतीकरै पीछेसबशरीरको पसारसूधासोवे फिर दोनों पावों की अंगुली और अंगूठेको चतुर मनुष्य से खिंचवावे फिर सेजके ऊपर सूधासोवे नींदले इसीतरह करे तो वस्ति वायुके सब रोगोंको दूरकरे और गुदामें लीन्हीं जो वस्ति सोमलसमेत गुदामें से सबमलको और वायुके रोगोंको दूरकरेहै और अनुवासन वस्ति कर्म इस विधि से छः सात आठ नवबारएक २ दिनके अंतरसे करने से सब वायुके रोगोंको दूरकरै है॥ अनुवासन वस्ति कर्म के पीछे निरूहकाहिये और जिसकेमलाशय में अथवा पक्वाशयमें अनुवासन वस्तिचलाने से उसी जगह उसका स्नेह युक्तजल आजाय गुदामें से निकले नहीं पेडूको मसलने से भी तो निरूह वस्ति और कीजै उस औषधकी

बत्तीकर गुदामें चलावे तो वायु सरै और उसकामल निकल जाय और शरीर शुद्धहोय अथवा जुलाबदे काढ़िये ॥

अथ अनुवासन वस्ति के देने का तेल ॥

गिलोय। अरण्डकीजड़। कणगच्चकीजड़। भारंगी। अडूसा। रोहिष। शतावरि। सहँजना। कागलहरी इन्हें टके २ भरले और यव। उड़द। अलसी। बेलकीजड़। कुलत्थ ये सेर २ लीजे इनसब औषधों को ६४ सेर पानी में औटाय इनका चौथाहिस्साराख उसमें मीठातेल ४ सेरपकायलीजे जबरस जलिजाय तेल मात्र आयरहै तब इसेछान १ टकेभर तेल गुदा में दीजे तौ सब वायुके रोग दूरहोयँ॥ इति अनुवासन तैलम् ॥ इति अनुवासनवस्ति विधिः ॥

अथ निरूह वस्ति करने की विधि ॥

निरूह वस्ति तो बहुत प्रकार की हैं और इसके बहुत से कारण हैं और निरूह वस्तिका स्थापन भी नाम है और निरूह वस्ति का अधिक देने का प्रमाण है इतने रोग वाले को निरूहवस्ति दीजिये जिसका शरीर चिकना बहुत रहै और हृदयमें चोटलगी होय शरीर क्षीणहोय। अफरा। छर्दि। हिचकी। बवासीर। श्वास। खांसी। गुदाकी सूजन। अतीसार। बिशूचिका। उदावर्त। बात। रक्त। विषमज्वर। मूर्च्छा। तृषा। उदररोग। अफरा। मूत्रकृच्छ्र। पथरी। चरणरोग। मन्दाग्नि शूल। अम्लपित्त। हृदयकेरोग इनसबरोगोंमें जिसके कोईरोग होय उसको निरूहवस्ति दीहुई इनसब रोगोंको दूरकरैहै और निरूहवस्तिके देनेकीविधि अनुवासनवस्तिकी विधिमें लिखीहै और यह निरूहवस्ति भी दो चार बार एक एक दिनकेअन्तर से पीछे लिखीहै उसीविधिसे दीजे और केवल वायुका विकार होयतो कषैली कड़वी स्नेहसंयुक्तदीजे और पित्तकाबिकारहोय तो दूधसंयुक्तदो वस्तिदीजे औरकफका बिकार होयतो कषैले

कडुवे और मूत्रकोआदिले निरूहवस्ति दीजै और सुकुमारको बालककोबूढ़ेको मृदुवस्तिदीजे ॥

अथ उत्क्लेशन वस्तिविधि ॥

अरंड। महुआ। पीपल। सेंधानोन। वच। झाऊ। रूख कावक्कल इन्हें औटाय इतनीवस्तिदीजै इति उत्क्लेशनवस्ति ॥

अथ दोषहर वस्तिकीविधि लिखते हैं ॥

सौंफ। मुलहठी। बेल। इन्द्रयव। इन्हें कांजीऔरगोमूत्रमें पीसदेतो सर्वदोष जायँ॥ इतिदोषहरवस्ति ॥

अथ लेखनवस्ति लिखतेहैं ॥

त्रिफलेकाकाढ़ा। गोमूत्र। शहत। जवाखार ये दीजे तोदोष जायँ॥ इतिलेखनवस्ति ॥

अथ शोधनवस्ति लिखते हैं ॥

हड़किरमाला आदिलेइनका जुलाब या इनकी पिचकारीदे उसे शोधनवस्ति कहिये ॥

अथ शमनवस्ति लिखते हैं ॥

फूलप्रियंगु। मुलहठी। नागरमोथा। रसौत इन्हें दूध में पीस इनकी पिचकारीदे उसे शमनवस्ति कहिये ॥

अथ बृंहणवस्ति लिखते हैं ॥

पुष्टाईकी औषधियोंआदिका काढ़ाकर उसमें मीठाद्रव्यमिलाय और घृतमांसआदि इनकी पिचकारीदे उसे बृंहणवस्ति कहिये ॥

अथ पिच्छिलवस्ति लिखतेहैं ॥

बेरीकेपत्ते। शतावरि। लहसुवा। मोचरस इन्हेंदूधमें पकायउसमें शहत डाल वस्ति दे उसेपिच्छिलवस्ति कहिये ॥

अथ निरूहवस्तिकी तोलकाप्रमाण लिखतेहैं ॥

प्रथमतो किंचित् सेंधानोन डालै पीछेउसमें ऽ॥ शहतऔर ऽ॥सेरघृत डालै इनतीनों को खूबमथि इसकी पिचकारी पांच

सातवार एकदिनके अन्तरसे चतुराईसे देय यह निरूहवस्तिके तोलका प्रमाणहै ॥ इतिनिरूहमात्र विधि ॥

अथ मधुतैल वस्तिकी विधि लिखते हैं ॥

अरंडकीजड़काकाढ़ाकरउसमेंशहत और मीठातेल १०८० भरडाले और सौंफ १ पैसेभर सेंधानोन अधेलेभर इन्हें पीस पीछे इन्हें मथ और इनकी पिचकारीदे तो मेद। गोला। कृमि फीया। मलकेरोग। उदावर्त इनसबरोगोंको यहवस्तिदूरकरैहै और शरीरमें बलको बढ़ावैहै ॥ इतिमधुतैलकीवस्ति ॥

अथ स्थापन वस्ति ॥

शहत। घृत। दूध। तेल दो दो पैसेभरले इनमें झाऊकेब कलकारस और सेंधानोन अधेलाभर डाले इनसबकोएकजीव करपिचकारीदे उसे स्थापनवस्तिकहिये ॥

अथ सिद्धिवस्ति लिखतेहैं ॥

पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठि। इनकाकाढ़ा कर उसमेंतेल। शहत। सेंधानोन। मुलहठी इन्हें औटाययहभी मिलाय इसकी पिचकारी दे उसे सिद्धिवस्ति कहिये ॥

अथ फलवस्ति लिखते हैं ॥

गुदामें और बाहर घृतलगाय अपनेअंगूठे प्रमाणपुष्टडंडी १२ अंगुलकी आधी गुदामें डाले और इसकीचतुराई से पिचकारी दे उसे फलवस्ति कहिये ॥ और निरूहवस्तिकाभेद उत्तरवस्ति है और वस्तिकर्म करानेवाला गर्मपानी में स्नानकरे और दिनमें सोवे और अजीर्ण और कुछभी कुपथ्यकरे नहीं॥ इति अनुवासन और निरूह वस्तिको आदिले सर्व वस्तिकी विधि संपूर्णम् ॥

अथ हुक्के को आदिले धूमपानकी विधि लिखते हैं ॥

धूमपान छः प्रकारका है ॥ शमन १ बृंहण २ कासहर्त्ता ३ बमनकर्त्ता४ व्रणधूपन५ तीक्ष्ण औषधियोंके धूमपानको शोधन

कहिये ६ ॥ इतने रोगियोंको धूमपान करावे नहीं खेद संयुक्त भयभीत दुःखी दांतकारोगी रात्रिमें जगाहोय तृषितदाहवाला तालूकेरोग उदरके रोग मस्तकके रोग छर्दि अफरा घावकेरोग प्रमेह पांडु इन रोगवालोंको गर्भिणीस्त्री क्षीणपुरुष बालकवृद्ध इनसब पुरुषोंको धूमपान करावेनहीं और धूमपान है सो वायु और कफकेसब रोगोंको दूरकरैहै और सबइंद्रियोंको और मन को प्रसन्न करैहै केशों और दांतोंको पुष्टकरै है और इलायची आदिका धुआंलीजे उसे शमनधूमकहिये १ औरराल आदिका धुआंलीजे उसे बृंहणधूम कहिये २ और तीक्ष्ण औषधियों के धुवेंको रेचनकहिये ३ मिरच आदिकके धुवें को कासघ्नकहिये ४ खालके धुवेंको वमनकर्त्ताकहिये५ नींब वच आदिकाधुवां व्रणादिकके दीजे उसेव्रणधूपन कहिये ६ ॥

अथ अपराजित धूप लिखते हैं ॥

मोरके पंख । नींबकेपत्ते । कटेलीका डोडा । मिरच । हींग । बाड़छड़ । कपास । बकरेकाबाल । सांपकीकांचली । बिलाईकीविष्ठा । हाथीदांत इन्हेंपीस घृतमिलाय धूनी दे तो भूत पिशाच राक्षस प्रेत डाकिनी आदिले सबदोष दूरहोय और ज्वरको दूरकरै ॥

इति अपराजित धूप ॥

अथ माहेश्वर धूप लिखते हैं ॥

हींग । देवदारु । बेलपत्र । गौकाघृत । कुकुटकाहाड़ । सरसों । नींबकेपत्ते । मस्तकके केश । सांपकी कांचली । बिलाईकी विष्ठा । गौकासींग । मैढल । दोनोंकटेली । कपासतुष । बकरेका रोम । चन्दन । मोरपंख । बकरेका मूत्र इन्हें पीस मनुष्य के धूनीदे तोभूत पिशाच राक्षस डाकिनीप्रेत चुड़ेल इन्हें आदिले सबदोष दूरहोयँ और सबप्रकारका ज्वर इसधूपसे दूरहोय २ ॥ इति माहेश्वरधूप इतिहुक्केको आदिले सबधूमकोविधिसंपूर्णम् ॥

अथ रुधिर छुडानेकी विधि लिखते हैं ॥

मनुष्यके शरीरमें वैद्य है सो रुधिरके विकारको भलेप्रकार देख उसका रुधिर ऽ१ सेर तथा ऽ॥ सेर तथा ऽ। सेर तथा ऽ= पाव कढ़ावे और शरद ऋतुमें जो विकारहोय तो थोड़ारुधिर कढ़ावे तो मनुष्यके रुधिरका विकार नहीं होय १ ॥

अथ शुद्ध रुधिरका स्वरूप ॥

रुधिरका मीठारस लालवर्ण होय शीतल और गर्म होय नहीं और भारी चिकना और दुर्गंध को लिये होय और यह रुधिरदग्धहुआ गर्मीकेसब विकारोंकोकरैहै औरशरीरसेंरुधिर दुष्टहोय तब पीड़ा होय शरीर पकिजाय दाहहोय औरशरीरसें चकत्ते पड़िजायँ खाजपड़िजाय तो खटाई औरमिठाईकीबांछा रहै मूर्च्छाआवे शरीर रूखारहै शरीरकीनसेंशिथिलहोजायँ २॥

अथ वायुसे दुष्टहुआ जो रुधिर उसका लक्षण ॥

अरुणरंगहोय। झागआवे। कठोरहोय और जिसकी उतावली सूक्ष्मधारचलैसुईसमानशरीरमें चुभकचलें औरलालहोयँ ये सबलक्षण होयँ तबजानिये कि रुधिर वायुसे दुष्टहुआहै ३ ॥

अथ पित्तसे दुष्टहुये रुधिर का लक्षण ॥

रुधिर पीला हरा नीला काला होय जिसमें दुर्गन्ध बहुत आवे चले नहीं गर्महोय मक्खी और कीड़े खायँ नहीं जिस रुधिरमें ये लक्षण होयँ उसे पित्तसे दुष्टहुआ जानिये ४ ॥

अथ कफसे दुष्टहुये रुधिर का लक्षण ॥

रुधिर शीतल और बहुत चिकनाहोय। गेरूके रंग समान होय मांसकी पोटली सदृशहोय धीरेचलैये लक्षण जिस रुधिर में होयँ उसे कफसे दुष्टहुआ जानिये ५ ॥

अथ सन्निपातसे दुष्टहुये रुधिर का लक्षण ॥

जिसमें ये सब लक्षण मिलैं और कांजी समान रंगहोय उस रुधिर को सन्निपात से दुष्टहुआ जानिये ६ ॥

अथ विषकरके दुष्टहुये रुधिर का लक्षण ॥

जिसका रुधिर काला होय और नाकमें बहुत चलै दुर्गन्ध बहुतआवे कांजीकासा रंगहोय इससे कोढ़हवैआवे सावन की कीड़ीकेसमानजिसकारंगहोय और शरीरमें सूजनऔरदाहहोय शरीर पकिजाय ये लक्षण जिसमेंहोयँ उसेविषकरके दुष्टहुआ जानिये ७ ॥ अथ इतने रोगोंमें रुधिर कढ़ाना योग्यहै सो लिखते हैं ॥

सूजन और शरीरमें दाहहोय अंग फोड़े और फुन्सियों से पकिजाय शरीर का वर्ण लाल होजाय बात रक्त का रोग और ब्याऊआदि रोगहोयँ स्तनका रोगहोय शरीरभारीरहै नेत्रलाल होयँतन्द्रा आवे नासिका मुखके रोग होयँ । फिया । गोला । विसर्प । विद्रधि होय छाले आदि रोग मस्तक पीड़ा उपदंश नाम गर्मी का रोग । रक्त पित्त इन सब रोगोंमें रुधिर कढ़ाना योग्यहै इन सबरोगोंमें सींगी अथवा जोंक लगावे अथवा तूंबी लगावे अथवा शिरा छुड़ावे तब मनुष्य के रोग जायँ ८ ॥

अथ इतने रोगवाले मनुष्यकाफस्त करके रुधिरकढ़ाना योग्यनहीं है सो लिखते हैं ॥

क्षीण पुरुष और विषय बहुतकरे नपुंसक भयभीत गार्भिणी स्त्री प्रसूतीस्त्री पांडुरोगी इनसबको और जुलाब आदिपंचकर्म जिसने नहीं किया होय उसकेबवासीर । सर्वांगशोथ । खांसी । श्वास । छर्दि । इनरोगवाले को औरपसीना युक्त जिसका शरीर होय उसे और १६ वर्षकी अवस्थावाले मनुष्यको और ७० वर्ष के ऊपर अवस्थावाले को इतने मनुष्यको शिरा छुड़ाना योग्य नहीं ६ और इनरोगों में रुधिर कढ़ाने से रोगजाय तो जोंक लगाय के रुधिरकढ़ावे और विषकरकेदुष्टहुआ जो रुधिर उस की शिरा छुड़ाना योग्यहै अथवा पछनादे रुधिर कढ़ाना योग्य है और वायु पित्त कफकरके दुष्टहुये रुधिर को सींगी जोंक तूंबड़ी करि कढ़ाना योग्यहै जोंक तो एकहाथका रुधिर सोखै सींगी तूंबड़ी १२ अंगुल को सोखै पछना एक अंगूठ प्रमाण

को सोखै और शिराशरीर के सर्वांगका सोखै और शीतऋतुमें इतनेरोगोंमें रुधिर कढ़ावे नहीं सो लिखते हैं ॥ क्षुधा मूर्च्छा वाले को नींद भ्रांति मद मल मूत्रकाजिसके वेगहोय इनपुरुषों का रुधिरनहीं कढ़ावे १० और जलौकादिकोंकर जिसकारुधिर नहीं निकला होय तिनके व्रणके मुंहकी कूट। सोंठि। मिरच। पीपल। सेंधानोन इनसे मसले तो रुधिर अच्छीतरह निकले॥ और रुधिर अच्छे समय में कढ़ावे बहुत शीत बहुत धूपनहीं होय भोजन हलकाकराय रुधिरकढ़ावे ॥

अथ रुधिर बहुतनिकलै उसका इन वस्तुओं से यत्न करै तौ थम्हे सो लिखते हैं ॥

लोध। राल। रसौत। यव। गेहूंका आटा। धवकाबक्कल। गेरू। सांपकी कांचली। रेशमीवस्त्रकी राख। साम्हरकीपाल। इन्हेंव्रणके लगावे तो रुधिरथम्हे और भी व्रणका शीतलयत्न करै अथवा शिराछुड़ानेकी नसके ऊपर दाहदे अथवा उस नस के खार लगावै अथवा नसके कषैलीवस्तुसे लेपकरे और बायें अंडकेसूजनहोय तो दाहिनेहाथकीनीचेकी नसकोदग्धकरे और दाहिनेअंडके सूजनहोयतो बायें हाथके अंगूठेकी नीचीनसको दग्धकरै अथवा बायें अंगूठेके सूजनहोयतो दाहिनेहाथकीशि-राछुड़ावे और दाहिने अंडके सूजनहोयतो बायें हाथकी शिरा छुड़ावै तो वहसूजनजाय और बिशूचिका जाय ११ ॥

अथ फस्त छुडानेसे रुधिर निकले तो इतने रोग होयँ ॥

अन्धाहोजाय आधाअंग सुन्नहोजाय तृषाकेरोगहोयँ अन्धेरीआवे मस्तकपीड़ा होय श्वास खांसीहोय हिचकी आवें दाह और पांडुरोग होय और रुधिर बहुतही छूटे तो मनुष्यमरजाय और इसशरीरमें रुधिरकरके जीवन है शरीरकारुधिरजातारहै तो मरणहोय इससे शरीरके रुधिरका तत्काल प्रबन्धकरै और रुधिरछूटे सूजनहोय तो थोड़ा गर्म घृतकर उसको सेंकैतोउस की पीड़ा और सूजन दूरहोय और रुधिर बहुत निकलै तो उस

पुरुषको हरिणकेमांसका अथवा बकरेके मांसका शोरुआ योग्य है अथवा उसमें दूधपीना योग्यहै अथवा साठीकेच्यावलकी खीर खानायोग्यहै जबतक पीड़ा शांतहोय शरीर हलकाहोजाय और मन प्रसन्न होय तबतक यह खाय ॥

अथ रुधिर छुड़ानेका कुपथ्य ॥

मैथुन क्रोध शीतलजलसे स्नान बाहरकी बहुत पवन एकासनबैठना दिनमेंनींद नोन और खट्टीवस्तु कड़वीवस्तु शोचवाद अजीर्णसें भोजन ये सब वस्तु रुधिर छुड़ानेवालाकरै नहीं और जहांतक शरीरसें बलआवे तहांतक कुपथ्यकरे नहीं इतिफस्त आदिकरके रुधिर छुड़ानेकी विधि सम्पूर्णम् ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज महाराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजीबिरचितेअमृतसागरनामग्रंथेसर्वआसवोंकेबनानेकीविधिशिलाजीतशोधने जवाखारकोआदिले खारोंकीविधि चणक खारके शोधनेकी विधिस्नेहविधि स्वेदविधि वस्तिकर्म हुक्केको आदिधूमपानकी विधि रुधिर छुड़ानेकी विधि १० निरूपणं नामसप्तविंशतिस्तरंगः २७ ॥

अथानुभूतावलेह कल्पनामाह ॥

द्रव्यको काथसदृश औटावै फिर विशेषआंचदेइ जबगाढ़ा होय तब अवलेहकहैं कोई कोई लेहभी कहतेहैं इसकीमात्रा ४ मुद्राभरि इसमें चूर्ण से द्विगुण मिश्री लेना चाहिये और गुड़ दूना और द्रव्यादि चौगुने यहरीति सर्वत्रहै जब आंच देनेपर तारबँधे और पानीमें पाककी बूंद न डूबै न घुलै तब सिद्धिजानै और अंगुलीके दबानेसे कुछ दबै तब सुगंधि रसादिडालै अब इसका अनोपानभी लिखतेहैं दूधसे ऊखसेउत्पत्ति वस्तुयूषसे पंचमूल काथसे इनअनोपानसे देना अथवा और कोई रोगोचित अनोपानहो उसकेसाथ देना चाहिये ॥

अथ हिचकी और कासश्वासपर भटकटैयावलेह ॥

भटकटैया ४ सेरले उसेद्रोणभरि जलमें औटावे जबचौथाई रहै तब उसमें चूर्ण डाले गुर्च। चाब। चीता। मोथा। काकड़ासिंगी। त्रिकुटा। जवासा। भारंगी ये सब और कचूर पलपल भरिले चूर्णकरे शक्कर बीस पल घृत ८ पल तेल ८ पल ये सब काढ़ेमें औटावे फिर जबऊपर कहीहुईरीतिके अनुसार अवलेह सिद्धिहो तब ८ पल शहत ४ पल बंशलोचन ४ पल पिपरीका चूर्ण मिलाय उत्तमपात्रमें रखछोड़े इसअवलेहसे हिचकी कास श्वास अशेष नाश करै॥

अथ क्षयादिपर च्यवन प्रसावलेह ॥

सिरस। अग्निमंथ। खंभारी। पाटल। बेल। स्योनाक। बनमूंग। बनउर्दी। गोखुरू। भटकटैया। पीपरि। काकड़ासिंगी। दाख। गुर्च। हड़। नागवलापता लावाकारूसा। ऋद्धि विन्ना। बाराहीकन्द। दधि। याफली। कचूर। तीवकरिष वकयिना। विलाईकन्द। मोथा। पुष्करमूल। काकतुंडी। बनमूंग। बनउर्दी। इलायची। ग्रदाचूर्ण। काकोली। क्षीरकाकोली इनबिन्ना असगंध। कमलगट्टा। महामेदा इन बिना मुरेली। अगर। श्वेत चन्दन इन सब को पल पलभरिले जवकुटकरि ५०० आंवले और चूर्णद्रोणभरिपानी बड़ेपात्रमेंडालि पकावावे जबअष्टमांश शेषरहे तब उतारि आंवरा की गुठली दूरकरे कपड़ामें निचोवे अँवरा स्वरस औरकाढ़ाछानिजुदाधरे फिर आंवलेकी गूदीमल करि सात पल घृतमें भूंजिले तब वह काढ़ा और अर्द्ध तोला खांड़ दे अवलेहसापके तबयहचूर्णडाले पीपरिदोपलबंशलोचनचारिपल तज इलायची पत्रज केसरि चारोंतीनशाणशहत ६ पलदे यह च्यवनप्रास च्यवनऋषिका कहाहुआहै अग्निबलको देखि क्षीण पुरुष खाइ यह एक रसायनहे बालक अथवा वृद्ध जिसकी मंदनाड़ी चलै अँगुरी तरे सूखिगयाहो और हृदयरोग

स्वर क्षीण को खिलावै श्वास कास प्यास वात रक्त । जंघपीर वात पित्त । शुक्रमूत्र दोष । येसब नाशहोयँ । सदास्मृतिबढ़ावै स्त्री को सुखदहोकांतिवर्ण प्रसन्नता उदयहो शरीरजीर्णनहो ॥

अथ रक्तपित्तपर कूष्मांड पाक ॥

कुम्हड़े को छीलकरि १०० टुकड़ेकरै फिरिउसे दूनेपानीमें पचावै जब आधारहै तब उतारिले फिर उन टुकड़ों को बस्त्रमें बांधि निचोड़ धूपमें सुखा गुदनी से गोदै फिर उसे ७ पल घी में तांबे की कड़ाहीमें भूंजै औरउसका निचुड़ाहुआपानीउसीमें डालदेफिर सौ पलखांड़ दे पकाइ सोंठि। पीपरि । जीरा । दोदो पल धनियां।पत्रज।इलायची।मिर्च और चाब येअर्द्धअर्द्धपल ले इनका चूर्ण और घृतका आधा शहत डालि बलानुसाररक्त पित्त । ज्वर । क्षयी । प्यास । कास । श्वास । छर्द्दि आदिरोग वाले पुरुषोंको दे तौ रोग अवश्यजाय ॥

अथार्शपरखंड कूष्मांडावलेह ॥

पेठा और आतमीकंद के छोटे छोटे टुकड़े करि दोनोंको एकत्रकरि उसीरीतिसे अवलेह बनाकरखिलावै तौ अर्शमन्दाग्नि मूढ़बात ये सब रोग अच्छेहोयँ ॥

अथ क्षयीपर अगस्त्यहरीतकी ॥

बड़ीहड़ें १० यव आढ़कभरि दशमूल बीसपलचीता । त्रिफला । लजालू । पाढ़ाबेलि । इन्द्रयव । बच । भिलाबा । अतीस । बिड़ंग । सुगंधबाला इनको पल पल भरिले घृत कुड़व प्रमाण ले और ठंढा होनेपर कुड़वभरि शहतडालै यह अवलेह सर्वार्श को वेगही नाश करताहै औरदुर्गमरोग अतीसार अरुचिग्रहणी पांडु रक्त पित्त कमल पित्त शोथा प्रवाहिका ये सबरोग दूरहोयँ इसका अनोपान छगरी अर्थात् बकरीका दूध व मट्ठा व दही व घी उसीका जो पानी औरऔषध भोजनके पाचनसमयखाय ॥

अथ सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक ॥

अर्द्ध तोला कुरैयाकी छाल द्रोण भरि पानीमें पकावे जब चौथाई रहै तब यह चूर्ण डाले लजालू धवफूल बेलपाढ़ा मोचरस मोथा अतीस इन सबको पल पल भरिले फिरि इसे औटावै और जब कलछीमें लगने लगै तब सिद्धि जानो फिरि इसे बकरीके पय अर्थात् दूधमें अथवा पानी अथवा माड़ केसरमें पीवे तौ सर्वातीसार की घोर वेदना दूर होय सब भांति रक्तबाह सर्वांश प्रबाहिका नाश करै॥

अथ श्वास कास सहित कफज्वरावलेह ॥

श्वास औरकासकेसाथ जोकफज्वरहोय तौमेढ़ासिंगी।पीपल। कायफल और कूट इन चारों को कूटकरि चूर्णकरे उसको वर्ण माक्षिक वा साधारण मधुकेसाथमिलाकरि चाटै तौ श्वासकास केसाथ जो कफज्वर सो नष्ट होय इसमें कुछशङ्का नहीं ॥

अथ श्वासे अवलेह माह ॥

आठतोलेका १ पलइस परिमाणसे एकसौ तोलेभरि बकरी कामूत्र और एकसौपल बहेड़ा इनको मधुके साथ पकावे जब पकि कर चाटने योग्य काढ़ा होय तब उतारिकर धरि रक्खे और प्रातःकालमें चाटाकरै तौ खांसी श्वास और कफ ये रोग बलवान्भीहोगयेहों तौभी तुरंतजातेरहैं और रोगी सुखपावे ॥

अथ आसव कल्पना ॥

उदकादिद्रव्यवस्तुमें औषध देकरि पात्रमेंभरिमुंहमूंदिमास भरि रखने से औषध उत्तम होतीहै इसकानाम आसवअथवा अरिष्टहै इनमेंभेदयहहै कि उदकादि पदार्थमें जो औषधपूर्वोक्त रीति से सिद्धकरै उसे आसव कहते हैं और जो किसी द्रव्य के क्राथमें उसीरीतिसे सिद्धकरै उसे अरिष्टकहतेहैं इसकेखाने की मात्रा ४ रुपये भरि है इसमें जलादि पदार्थ द्रोणभरि दे गुड़ तुलाभरिदे शहत अर्द्धतुलादेनाउचितहैऔर द्रव्यकाचूर्ण गुड़ जितनाहै उसका दशांशदे ॥

अथ सिन्धुमद्यभेदाः ॥

जोकच्चेऊखरसादि मधुर पदार्थमें सिद्धकरे उसे शीतरस सिन्धुकहतेहैंऔर जो पकायके रसमें सिद्धकरे उसे पक्वरस सिन्धुकहते हैं सुरा प्रसन्नादि करि अग्निबलत्रयसे उतारे उसे सुराकहतेहैं सुराके फेनको प्रसन्ना कहते हैं और फेन रहित जो नीचेरहै उसेकादंबरी अथवाघनकहतेहैं जो सुराकेनीचेरहैउसे जगल कहतेहैं और जगलके घनभागको मेदक कहते हैं मेदक पकानेसे जो सारनिकले उसे सुराबीजकहतेहैं और ताड़ अथवा खजूरकारस अग्नियंत्र योग करि वा कच्चाले मद सिद्धकरे उसे बारुणीकहतेहैं कंदमूल फल घृत तैल आदि स्नेह लवण ये सब द्रव्यपदार्थमें अग्नि अथवा यंत्र योगसे मथनकरे उसे सूक्तकहतेहैं और जो विनिष्ट अर्थात् चलितरसलेके खमीरवह खमीर मद्य वा तुरन्त मधुरद्रवमें द्रव्यचूर्ण डालि मास भरकी संधितकरी उसेचुक्रकहते हैं अथवा गुड़ पानी तेल कंदमूल फल इन्हैं पूर्वोक्त रीतिसेकरि मासभरमें सिद्धकरै उसे गुड़सूक्तकहतेहैं इसीप्रकार ऊखरस औरदाखका सूक्तभी होताहै औरयवों को पानीकेसाथ एकदिनतक सन्धित करे उसे तुषाव कहतेहैं और यवघूघरी पानीमें सिझाय एकदिनसंधितराखै उसेसौवीर कहतेहैं और कुरथी अथवा चावल पानीमें सिझावे उसे मांड़ कहतेहैं और उसमांड़में सोंठि। राई। जीरा। हींग। नोनडारि तीनचारदिन संधितराखे उसेकांजीकहतेहैं और मूलीके उबाले हुये पानीमें हींग। सरसों। जीरा सेंधा औरअदरखडालिचारि पांच दिनराखे उसे सण्डाकीयो आसवकहते हैं आसव और अरिष्टबनानेकी यहरीति है॥

अथ रक्तपित्तपर खसासव ॥

खस। सुगंधबाला। कमलपत्र। खंभारी। नीलकमल। पद्माक। मालकांगनी। पठानीलोध। मंजीठ। जवासा। पाढ़ा।

चिरायता। कुटकी। वट। यव। गुलरी। कचूर। पित्तपापड़ा। श्वेतकमल। परवर। कचनार। जामुन। सेमरका गोंद इन सबकोपलपलभरिले फिर चूर्णकरि दाखबीसपलदेइ और धव केफूल १५ पलदोद्रोणजल तोलाभरिशक्कर तोलाभरि शहत। जटामासी और मिर्च इनकाधुवांदे बासनमें सब औषधभरिमहीनाभरतक रक्खे इसेउशीरासव कहतेहैं यहरक्त पित्तकोनाश करता है और पांडु। कुष्ठ। प्रमेह। अर्श। कृमि। सूजन ये दोषभीअच्छेहोयँ॥ अथ क्षयीपर पीपरि आसव॥

पीपरि। मिरच। चाव। हरदी। चीता। मोथा। बिड़ंग। सुपारी। लोध। पाढ़ा। आंवरा। छरीला। खस। सुपेद चन्दन। कूट। लवंग। तगर। जटामासी। दालचीनी। इलायची। तेजपात। पुष्प प्रियंगु। वा गोंदी। नागकेसरि इनसबको आधा आधापलले महीन पीस तीनतोला गुड़सहित दो द्रोण जलमें डाले और दशपल धवपुष्प साठिपल दाख इन सबको मट्टीके पात्रमें एकमास राखै जबजाने कि सब औषधी एकतन होगई तबखिलावे परन्तु अग्निबलदेखिले इसकेखानेसेक्षयी। पिटरोग। दुर्बलता। ग्रहणी। पांडु। अर्श यह पीपरिआसव इन सबरोगों को बहुत शीघ्र दूरिकरता है॥

अथ पांडुपर लोहासव॥

लोहचूर्ण। त्रिकुटा। त्रिफला। अजवायन। विड़ंग। चीता और मोथा इनसबको चारि २ पलले इन सबका चूर्ण करि चौंसठिपल शहत तोलाभरि गुड़ और दो द्रोणजलदे फिर घृत पात्रमें इसे १ मासराखै यह लोहासव पीनेसे पांडु। शरीर फूलन। गुल्म। अर्श। कुष्ठ। पिलही। खाज। श्वास। कास। भगंदर। अरुचि। ग्रहणी हृदि ये सब रोग नाशहोय॥

अथ ज्वरपर कुरैयारिष्ट॥

कुरैयाकीछाल। दाख आधातोला। महुआ। खंभारीकीछाल

दशदश पलले फिर इसे चारिद्रोणपानीमें पचावे जब द्रोण भरि रहै तब उतारिले फिरि उसमें बीसपल धवके फूल और तोलाभरि गुड़ डारिमट्टीके पात्रमें मासभरतक रक्खे यह कुटजारिष्ट सबज्वर दूरिकरि अग्निको तीक्ष्ण करता है॥

अथ विद्रधीपर विडंगारिष्ट॥

विडंग। पीपरामूल। रासन। कुरैयाकीछाल। पाढ़ा। एलवा। बालछड़। और आंवला ये सब पांचपांच पलले इसे आठद्रोण जलमें औटावैजबद्रोणभरिरहै तबउतारिले जब ठंढाहोजायतब तीनसैपलशहत बीसपलधवफूल औरतज। पत्रज। इलायची ये चार २पलले और गोंदी कचनार लोध ये पलपल भरिले और त्रिकुटा आठपलचूर्णकरिडालै फिरिइनको घृतकेपात्रमें एकमासतकभरराखे फिरिजैसा अग्निबलदेखे उसीप्रमाणसे पिलावै तौविद्रधि दूरहोय और प्रमेह। ऊरुस्तम्भ। पथरी। प्रत्यष्ठीला। भगंदर। घण्डमाला। हनुस्तंभ आदि रोग इसविडंगारिष्टसे दूरहोतेहैं॥

अथ प्रमेहपरदेवदारु अरिष्ट॥

अर्द्धतोला देवदारु। रसा। बीसपलमंजीठ। इन्द्रयव। दन्तीन। तगर। दोनोंहल्दी। रासन। बिड़ंग। मोथा। सिरस। बेर। अर्जुन येसबदशदशपलले और अजवाइन। कुरैया। चंदन। गुर्च। कुटकी। चीता ये आठआठ पलले इसको ८ द्रोण पानीमें पचावे जब द्रोणभरि रहै तब उसमें ये। औषध डाले धवपुष्प १६ पल तीनतोला शहत त्रिकुटा २ पल तज पत्रज इलायची ४ पल औ प्रियंगु ४ पलनागकेसर २ पल इनसब कोचूर्णकरि घीकेबर्त्तनमें मासभरिराखे फिर इसेपियेतौ दुर्जय प्रमेहको नाशहो और बातरोग। ग्रहणी। अर्श। मूत्रकृच्छ्र इनको नाश करै यह देवदारु अरिष्ट दाद कुष्ठको भी अच्छाकरताहै॥

अथ कुष्ठपर खदिरारिष्ट॥

खैर अर्द्धतोला देवदारु अर्द्धतोला बकुची १२पल हल्दी २०

पल । त्रिफला २० पलइनको आठद्रोणजलमें पचावैजबद्रोणभरि रहे तबठंढाकरि राखै और नीचे लिखी औषध डाले सहत २ तोला खांड १ तोला । धवफूल २ पल । कंकोल । नागकेसरि । जायफल । लौंग । इलायची । तज । पत्रजये सब पल २ भरिले पीपरि ४ पल इसको कैवरतनमें मासभरि रखिकरपिये तौमहाकुष्ठ । हृद्रोग । पांडु । अर्बुद । गुल्म । ग्रन्थि । कास । पिलहीये सब रोग जायँ यह एक खदिरारिष्ट सबकुष्ठोंको बहुत शीघ्र नाशकरता है ॥

अथ क्षयी पर बबूलारिष्ट ॥

बबूलकी छाल २ तोलाले ४ द्रोण पानीमें पचावै जबद्रोण भरि रहै तब उतारि ठंढाकरि तोलाभरि गुड़दे और १६ पल धवके फूल २ पल पीपरि जायफल शीतलचीनी तज । पत्रज केसरि लौंग और मिरच ये पलपल भरिले फिर इनको पीस मासपर्य्यन्त माटीके पात्रमें राखै इस बबूलारिष्टसे क्षयी । कुष्ठ । अतीसार । प्रमेह । श्वास । कास सब रोग दूरिकरै ॥

अथ रक्तक्षत पर द्राक्षारिष्ट ॥

अर्द्धतोला दाख । दो द्रोण जलमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ठंढाकरि ये औषध डालै गुड़ दोतोला । तज । इलायची । पत्रज । केसर । फूलप्रियंगु अथवा मकरा । मिरच । पीपरि । विडंग ये सबएक २ पल माटीके पात्रमें धरि एकअंग करि बासनके मुखपरमुद्राकरि मासभरिराखै तबपिये तौ उरुक्षतक्षयी कास और गलेके भीतरी रोगदूरिहोयँ यह द्राक्षारिष्ट बलकरै मलशोधे ॥ अथ रोहितारिष्टअर्श पर ॥

हरडासीकुश । १ तोलाले ४ द्रोण पानीमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ठंढाकरि २०० पलगुड़ १६ पल धवके फूल । और सोंठि । पीपरि । पीपरामूल । बच । चीता । पत्रज । इलायची । तज । त्रिफला इन सबको पल पल भरिले फिर चूर्ण करि सब द्रव्योंका बासनमें भरिकरधरै फिर उसे महीनाभरि

पीछे पीवे तो कांचके रोग। ग्रहणी। पांडु। हृदयरोग। पिलही। गुल्म और कुष्ठ और अरुचि आदि रोग इस रोहितारिष्ट से निस्सन्देह दूरिहायँ ॥ अथ क्षयी प्रमेह पर दशमूलारिष्ट ॥

दशमूल पांचपांचपलले चीता और पुष्करमूल पचीसपचीस पलले लोध २० पल। गुर्च २० पल। आंवला १६ पल। जवासा १२ पल। खैर। विजयसार और हड़ आठ आठ पल। कूट। मंजीठ। देवदारु। बिड़ंग। भारंगी। कपित्थ। बहेड़ा। गदापुरैना। चाव। जटामासी। मकरा। सरिवन। कृष्णजीरा। निशोथ। सेवड़ी। कांजी। रासन। पीपरि। सुपारी। कचूर। हरदी। सौंफ। पद्माक। नागकेसर। मोथा। इन्द्रयव। सोंठि। दूनोंकटसरैया। मेद। महामेदा। काकोली ऋद्धि वृद्धि ये सब दोदोपल ले इन सब औषधिन का अठगुनाजल औटावे जब चौथाई रहि जाय तब उतारि माटीकेपात्रमेंधरे फिर दाख आठपलले चौगुने पानीमें औटावे जब चौथाई जलिजाय और तीनचरण रहै तब ठंढाकरि पहिले क्वाथकेसाथ मिलावे और शहतपल ३२ गुड़ ४०० पलधवकेपुष्प ३० पलशीतलचीनी। खस। चन्दन। जायफल। लौंग। तज। इलायची। पत्रज। केसरि। पीपरि इनसबकाचूर्ण दोदोपलले और कस्तूरी ४ माशे इनसबको इकट्ठाकरि उसीमें डारि धरतीखोदिगाड़े उसमें का रसपिये निर्मलीडाले तो रसनिर्मलहोजाय इसके पानकरनेसे ग्रहणी। अरुचि। शूल। श्वास। कास। भगंदर। बातव्याधि। क्षयी। छर्दि। पांडु। कमल। कुष्ठ। अर्श। प्रमेह और मन्दाग्नि। उदररोग। सिकता प्रमेह। पथरी। मूत्रकृच्छ्र। और धातुक्षय ये रोगजायँ दुर्बलमोटाहोय बांझपुत्रजनैयहदशमूलारिष्टतेजधातु बलदेताहै ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजी विरचितेअमृतसागरनामग्रंथे अनुभूतावलेहासवारिष्टकल्पना निरूपणंनाम अष्टाविंशतिस्तरङ्गः ॥

अथ घृत तैल साधना मान॥

कल्कसे चतुर्गुण घृत अथवा तेल और क्वाथादिद्रव्यभी चौगुणीदेना उचितहै इसकीमात्रापलभरिहै जिसद्रव्यका क्वाथ देनाहो तौ चौगुणे जलमें औटावै जब चतुर्थांश रहिजाय तब उसे उतारि छानिले फिरि उसमें घृत तैल आदि सिद्धकरै और कोमल द्रव्यों में चौगुणा जल और कठोर में अठगुणा और अत्यन्त कठोरमें सोलहगुणा जलदेनाचाहिये और जो द्रव्य न अति कोमल होय कठोरहो उसमें अठगुणा जलदेना चाहिये अथवा रुपया भरसे ४ रुपया भर तक सोलह गुणा पानी देकर क्वाथ करै और पलसे कुड़व तक अठगुणा और प्रस्थसे खारी पर्यंत चौगुणादे और जो केवल कल्क पानी घी अथवा तेलमें सिद्ध करै तौ चतुर्थांश कल्कदे यथा सेरभर तेल हो तौ पाव भरि कल्क हो और जो कल्क काढ़े के साथ घी और तेल पकावै तौ घृत और तेलका षष्ठांश कल्कदेना जैसे तीनपावमें आधपाव और जब कल्क रसकेसाथ घी अथवा तेलमें पकावै तौ तैल का अष्टमांश कल्क देना चाहिये यथा सेर भरमें आध-पाव घृत और तैल प्रमाण यही है दूध दही रस मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देइ और कल्क को अच्छीप्रकार पकानेकेकारण जल चौगुणा देना चाहिये और जहां कल्क घृत तेल क्वाथ और फांट ये पांचों होयँ तहां स्नेहादिक के समान देनाचाहिये और जल चौगुणादेना जब सङ्कीर्णी द्रव्यघृत अथवा तैलमें पकानी हो तो जल में द्रव्यपीसि गोली अथवा कल्ककरि चौगुणे पानीमें पचावै और जो केवल काढ़ेमें कहा हो तहां उसी काथ की द्रव्य का कल्क करि घृत अथवा तैलयुक्त वह काढ़ा और चौगुणा पानी देय पकावै और जहां कल्क रहित है तहां केवल द्रव्यवस्तु दूध पानीदेकर पकालेना जब फूलके कल्कमें स्नेह सिद्ध कहैंगे तब चौगुणा जलदेंगे और जब स्नेहसे स्नेह

सिद्ध कहेंगे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्क युत पकालेना चाहिये फिर जब वह स्नेह पाके अंगुलीमें लेके मलने से बत्ती बनजाय और उसे अग्निपर डाले और जलमें चिर्चिराहट का शब्द न करै तब सिद्ध भया जानना तैलकी फेन उठने से सिद्ध जानना और घृत में फेन शान्ति होनेसे सिद्ध जानना जब गन्ध आवै और घृत अथवा तैल निर्मल होजाय और रस उत्पत्ति करै तब घृत अथवा तैल सिद्ध हुआ जानिये स्नेहपाक तीनप्रकारका है मृदु १ मध्य २ और खर ३ जोकल्क मोमवत् रहै तो मृदु जानिये और जो कल्क निरस हो कुछ कोमल रहै तो मध्य जानिये और जो कल्क निरस और कठोर होजाय वह खर है और जो इस प्रमाण से अधिक जलजाय तो समझलेना चाहिये कि स्नेह बिगड़िगया और अकार्थगया जो कच्चा है और उसका सेवन करे तो मन्दाग्नि हो और भारीहो नासलेनेको नस्य हितहै और मध्यम सर्वप्रकार्यसाधक है और खर मर्दनके अर्थ है जहां जैसा चाहे वहां उसीप्रकार का बनाले तैल घृत और गुड़ ये एकदिनमें न साधे दिनान्तर देकरै तो अधिक गुण करै॥

अथ पिलही पर क्षार॥

पीपरि। पीपरामूल। चाव। चीता। सोंठि। सेंधव इनसबको पल पलभरि ले प्रस्थ भर घीमें पचावे और दूध चौगुना ले जब सिद्धहो तो यह घृत प्लीहको नाश करता है विषमज्वर मन्दाग्नि दूरहोय और रुचिकरे॥

अथ संग्रहणी अतीसारपर चांगेरी घृत॥

पिपरि। पीपरामूल। चीता। गजपीपरि। गोखुरू। सोंठि। धनियां। पाढ़। बेलि। अजवायन येसब पलपल भरिले और घृत चौसठपल और चांगेरी अर्थात् छोटीलुनियांका रस २५६ पलदे और २५६ पल दहीके दे फिर मन्द मन्द आंचसे पकावो जब सिद्धहोय तब इस घृत का नाम चांगेरीघृत है इस घृतसे

बात । कफ । ग्रहणी । अर्श दूरिहो पेटफूलना कांचका निकलना मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका ये सब नाशहोयँ ॥

अथ अतीसार पर मसूर घृत ॥

शत पल मसूर ले उसे द्रोण भर जल में उसका क्वाथ करै जब चौथाई रहे तब उसकाढ़े में आठपल बेल्की गूदी दे और प्रस्थभरि घृतदे पचावे उससे सब अतीसार ग्रहणी और बिथरा मल गिरना प्रवाहिका ये सब दूरिहोयँ ॥

अथ रक्त पित्तपर कामदेव घृत ॥

असगंध १०० पल गोखुरू ५० पल शतावरि । बिलाईकंद । बनउर्दी । बरियारा । गुर्च । पीपरि । कारिगुसा । रक्तकमलगट्टा । गदापुरैना । खंभारि पुष्प । कालेउर्द इनसबको दश दश पलले द्रोणभरि जलमें ले पकावे जब चतुर्थांश रहै तब आढ़क भरि घृतदेपचावे किसिदाख । पद्माक । पीपरि । रक्तचन्दन । पत्रज । नागकेसरि । किवांचबीज । खिरभिजी । नीलकमलकाफूल । बिना कमलगट्टा । सरिवन । पिथवन जीवगण पूर्वोक्त जो न मिलै तो केवल बरियारा देना ये सबद्रव्य कर्षकर्ष भरिले और शक्कर २ पलयुक्त करना और आढ़कभरि पौंडाकारस येसबइकट्ठा उसमें पचावे जब केवल घी रहि जाय तब छानि लेरक्त पित्त ऊरुस्तंभ क्षीण कमल बात रक्त हलीमक इनकोहरै सुबर्णहो और स्वरक्षय मूत्रकृच्छ्र उदर पसुरीपीरा को दूरि करै यह घृत बहु रमणी को दे तो बांझ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो यह घृत श्रेष्ठ है बलकर्त्ताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको प्रिय पुष्ट करताहै रसायनहै तेजबल आयु और प्राण बढ़ाताहै कर्ष बढ़ाताहै दुर्बलेंद्रियपुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहैं जैसे सींचनेसे वृक्षतरुणहोताहै उसी प्रकारसे मनुष्यका शरीर भी नवीन होता जाता है यह कामदेवघृत बड़ागुणदायीहै ॥

अथ कल्याणघृत अपस्मारपर ॥

त्रिफला । दूनौं हर्दी । रेणुका । सरिवन । पिथवन । मकरा । बनउर्दी । बनमूंग । देवदारु । एलुवा न मिलै तौ सुगंधवाला । तगर । इन्द्रारुण । जमालगोटेकाबीज । अनार । नागकेसरि । नीलकमल । इलायची । मंजीठ । बिडंग । पद्माक । कूट । मालती अ० चमेलीपुष्प । श्वेतचन्दन । तालीस पत्र । छह्र भटकटैया येसबकर्ष कर्ष प्रमाण पानीमें पीस कल्ककरि चौगुणापानीदे उसपानीमें प्रस्थभरि वह घृत और वह कल्कदेकरपकावै फिर रोगीकोदे तो मिरगी । चित्तभ्रम । ज्वर । क्षयी । वातरक्त । कास । मन्दाग्नि । नाक टपकना । कटिपीडा । तिजारी । चातुर्थिक । मूत्रकृच्छ्र । विसर्पिका । खजुरी । पांडुदोनों विषमें और रोग सब अच्छेहों बांझपुत्रजने भूत राक्षस बाधा सब दूरिहोयँ इस घृत का नाम पानी कल्याण प्रसिद्ध है ॥

अथ वात रक्तपर अमृतादि घृत ॥

गुर्च का कल्क गुर्च का क्वाथ दूधके साथ घृतपचावै इससे वात रक्त और कोढ़ अवश्य दूरि होय ॥

अथ वात कुष्ठादि पर महातिक्तादि घृत ॥

चिरौंजी । अमलतास । अतीस । कुटकी । पाढ़ । मोथा । खस । त्रिफला । पित्तपापड़ा । पटोल । नींब । मंजीठ । पीपरि । पद्माक । कपूर । चन्दन । जवासा । इन्द्रारुन । दोनों हर्दी । गुर्च । सरिवन । पिथवन । मुर्रा । रूसा । शतावरि । त्रायमान अर्थात् सपेदकटेली । इन्द्रजव । मुरैठी । चिरायता इनसबकोकर्ष कर्ष भरिले घी चौगुना दे और घीका दूना आंवलेका रस दे और अठगुना जलदे इस सिद्धघीको सबवात रक्तके विकारमें देइ अठारहों कुष्ठ और रक्तपित्तमें देइ रक्तार्श पाण्डु हृदरोग गुल्म विसर्प प्रदर गंडमाला क्षुद्ररोग ज्वर दूरिकरै इसकानाम महातिक्त है इससे ऊपर कहेहुये सब रोग दूरि होयँ ॥

अथ कुष्ठदाह और खाज पर कसीसादि घृत ॥

कसीस। दोनोंहल्दी। मोथा। हरताल। मैनशिल। कबीला। गंधक। बिड़ंग। गुग्गल। मोम। मिर्च। कूट। तूतिया। पीतसरसों। रसौत। सिंदूर। राल। लालचन्दन। खैर। नींबकापत्ता। करंज। सरिवन। बच। मंजीठ। महुवाछाल। जटामासी। सिरस। लोध। पद्माक। गदापुरैना। हड़ ये सब एक एक कर्षले इन सबका चूर्णकरि तीसपल घृत में साने फिर उसे ताम्रपात्र में भरि सात दिन धूप में धरै इस घी के लगानेसे कुष्ठ दाद खाज विचर्चिका शुक्रदोष विसर्पि शीतला बात पित्तजनित मस्तक के घाव गर्मी नासूर शोथ भगंदर लूता ये सब दूरि हों और घाव अति शुद्धहो पूरिआवै और घाव का चिह्न भी न रहै ॥

अथ घावपर जाती घृत ॥

चंबेली। नींब। परवल तीनों की पत्ती। दूनोंहल्दी। कुटकी। मंजीठ। मुरेठी। मोम। करंज। खस। सरिवन। तूतिया इनसबको समान ले इनकी लुगदी करि घृत में पचावै इस घी के लगाने से घाव नासूर और मर्मस्थान का दुखदायी गम्भीर घाव पीड़ा सब दूरि होयँ ॥

अथ उदररोगपर बिन्दु घृत ॥

चीता। शंखाहूली। हड़। कबीला। दोनों निशोथ। बिदारा। अमिलतास। जमालगोटा। त्रिफला। कटुतरोई। देवदाली अर्थात् बंदाल। नीलकी पत्ती। कौवाठुण्ठी। सेहुँड़ की छीमी। पीपरामूल। बिड़ंग। कुटकी। चोकरा ये सब कर्ष कर्ष भरिले इनका कल्ककरि प्रस्थभरि घी में पचावै ६ पल सेहुँड़का दुग्ध डालै दो पल मदारका दुग्ध डालै यह सिद्ध घृत दे तो गुल्मकुष्ठ अच्छाहोय शूल उदावर्त्त शोथ पेटफूलना भगंदर आठों उदररोग दूरहोयँ और आठबूंद पानीसे वा दूध से वा ऊंटनी के दूध से अथवा कुलथी के काथ से गर्मपानी से

जो बूंद पिये तौ दस्त हों और इस बिन्दुघृत को नाभिपर लेप करनेसे दस्तआते हैं ॥ अथ नेत्रोंपर त्रिफलाघृत ॥

त्रिफले का रस १ प्रस्थ रूसेका १ प्रस्थ भांगरे का १ प्रस्थ बकरीका दूध १ प्रस्थ घी कर्षभर और द्रव्य त्रिफला । पीपरि । दाख । चन्दन । सैंधव । बरियारा । दोनोंकाकोली । बिना असगन्ध । मेदा । बिनामुरैठी । मिर्च । सोंठि । खांड़ । श्वेतकमल । रक्तकमल । गदापुरैना । दोनोंहल्दी । मुरैठी इनका कल्क करि घी में पचावै तौ नक्तांध नकुलांध खाज पिल्लरोग नेत्रश्राव पटल तिमिर नीलबिन्दु ये सब अच्छेहोयँ इस त्रिफलादिघृतको खाइ अथवानासले और यथोचित अनोपानकरै ॥

अथ घावपर गौर्यादिघृत ॥

दोनोंहल्दी । शालिपर्णी । मुर्रा । सरिवन । दोनों चन्दन । मुलेठी । कमलकेसरि । कमलनील । कमलखस । मेदा । बिना मुलेठी । त्रिफला । आम्र । बट । पीपर । पाकरि । गूलरि इनकी छाल सर्व कर्षकर्ष भरिले कल्ककरि प्रस्थ भरि घीमें पचावै यह गौर्यादि घृत बिसर्पिका अगिआसन शीतला कीट बिष क्षत सबको अच्छाकरै ॥ अथ शिरोरोगपर मयूरघृत ॥

बरियारा । मुलेठी । रासन । दशमूल । त्रिफला दो दो पल ले द्रोणभरि जलमें पकावै मयूर मांस बिनाआंत ओझरी पित्तपांव पानीमें गलावै जब चौथाई रहै तब उतारिले फिरइस की बराबरि इस में क्षीरडाले और प्रस्थ भरि घीमें जीवनीगण और काढ़ा सबपचावै इस घृतसे शिररोग मन्याव्यथा पृष्ठिग्रह लकवा कर्ण नाक नेत्र जीभ गला आदि सबरोगोंकोदूरकरै इस घृतको खाय सूंघे मले कानमें डाले और इसका सेवन हेमन्त शिशिर बसन्तआदि ऋतुओंमेंकरै यह बड़ागुणदायकघृतहै ॥

अथ वंध्याको फल घृत ॥

त्रिफला । मुरैठी । कूट । दोनोंहल्दी । कुटकी । बिड़ंग । पी-

परि। मोथा। कायफर। मेदा। महामेदा। बिना मुलेठी। दोनों काकोली। विनाअसगन्ध। सरिवन। पिथवन। मकरा। सौंफ। हींग। रासन। दोनोंचन्दन। चमेलीकेफूल। बंशलोचन। कमल। शक्कर। अजमोद और दतून ये कर्षकर्षभरिले इनकाकल्क करे और जिस गाय के बछड़ेका भी रंग गायकासा हो उसका घृत प्रस्थभरिले और चौगुनादूधदे बिनुवाकंडाकी मंद२आंच दे पचावे और सुन्दर तिथि पुष्यनक्षत्रमें मट्टी या तांबेके पात्र में स्त्री अथवा पुरुष शुभदिनमें पिये तो पुरुष वृषभतुल्यकामी रहै और कैसाही असमर्थहो उसे पुरुषत्व उत्पन्नहो और बांझ के पुत्र होय और जिसस्त्रीके पुत्र मरिजातेहों उसकेभी पुत्रहों और घृतके सेवनसे शतबर्षकी आयु होय इसघृतको भारद्वाज ऋषिने कहाहै वैद्यलोग इसघृतके साथ लक्ष्मणबूटीकी जड़को बिना कहे देते हैं॥ अथ योनि दोषपर त्रिफलादि घृत॥

कटसरैया। गुर्च। गदापुरैना। सिरस। दोनोंहरदी। रासना। मेदा। शतावरि इनका कल्क प्रस्थभरि ४ प्रस्थ घीमें पकावे जबयह सिद्धहोय और स्त्री इसे पानकरे तो सब योनिदोषदूर होयँ और पलितचलित मिश्रितविकृत पित्तयोनि बिभ्रांतखंडयोनि आदि योनिके रोग मिटें और गर्भाटिकै यह फल घृत योनिदोषको बहुत अच्छा है॥

अथ विषपर पंचतिक्त घृत॥

रूसा। नींब। गुर्च। भटकटैया। पटोल इनहीं का काढ़ा और कल्कमें घृत पकाय खाय तौ विषमज्वर जाय और पाण्डु कुष्ठ विसर्प कृमि अर्श येभी दूरहोयँ॥

अथ कुष्ठपर भूनिम्बादि घृत॥

चिरायता। त्रिफला। खस। नींबकी छाल। मोथा। अरूसा। मुलहठी। शालिपर्णी। कुटकी। अतःमणी। रसौत। गिलोय। पीपरि। पद्माक। कचूर। इन्द्रायणके फल। इन्द्रयव।

मूर्वा । पृष्ठिपर्णी । अतीस । हल्दी । शतावरि ये सब औषध धेला धेला भरि ले और इन सब औषधों के दूने आलि के फल ले अठगुने पानीमें काढ़ाकरै फिर काढ़ा घृत में मिलाय अग्निपर चढ़ायदे जब काढ़ा जरिजाय और घृतमात्र शेषरहे तब उतारिले मात्रा पैसा १ भरि प्रातःकाल पिये तौ कुष्ठजाय और उन्माद ज्वर पेटकी ग्रन्थि गल शोथ गंडमाला गलग्रह आदि सब रोग निस्संदेह जायँ ॥

अथ बिंदुघृत ॥

कम्पिल्लत्रिवृतोः समंस्नुहिपयःसर्वैःसमानोरसो धात्र्याः सर्वसमानकंघृतमदस्तुल्यंपयःसैंधवम् । स्वल्पांशंविपचेदिदं विजयतेकर्षप्रमाणंघृतं गुल्मानशूलपरिग्रहादिसहितान्प्लीहोदरंकच्छपम् ॥ अथ टीका ॥

कबीला । निसोत इन दोनों की बराबरि सेहुँड़ का दूध और उतनाही आंवलेकारस और सबोंकीबराबरघी और घीकी बराबरदूध और सेंधानिमक डालकर मन्दअग्निसे औटाकेघृत बनावै तौ यहबिन्दु घृत १ कर्ष प्रमाण खानेसे गुल्म और शूलादि उपद्रव सहित प्लीहोदर और कछुइया को दूरकरताहै॥

अथानुभूत तैलप्रकरण माह ॥

अथ प्रथम लाक्षादि तैल ॥

एक आढ़क अर्थात् तीनसेर और ८ रुपया भरि लाख ले चारि आढ़क पानीमें काढ़ाकरै जब चौथाई रहै तब उतारि ले उसमें प्रस्थ भरि तेलदे (६४ रुपयेका प्रस्थहोताहै) और दही काजल आढ़कभरिदे और सौंफ । असगन्ध । हरदी । देवदारु । कुटकी । मेवड़ी । बीजमुर्रा । कूट । मुरेठी । चन्दन । मोथा । रासन ये कर्ष कर्ष भरिले इनका चूर्णकरि तेलमें मध्यम आंच दे सिद्धकरै इस तैल के लगाने से विषमज्वर नाश हो कास-श्वास नाकबहना शिरपीड़ा पीठजकड़ना बातपित्तज मिरगी

यक्ष राक्षसी उन्माद खाज पेटपीर दुर्गन्ध देह फूटन मिटैग-र्भिणी मलै तौ गर्भपुष्टहो ॥

अथ वायुपर नारायण तैल ॥

असगन्ध । परिया । बेल । पाढ़ा । भटकटैया । दोनोंगोखु-रू । ककई । नींब । सोहनपत्ती । गदापुरैना । गन्धप्रसारिणी । अरणी ये सब द्रव्यदश दश पल ले फिर सबको चारि द्रोण पानीमें पकावै जबएकद्रोणरहे तब एकआढ़कतेलमें शतावरि का रस एक आढ़क देइजो गीलीहोय तौ रस निचोड़कर देइ और जो सूखीहोय तौ काढ़ा करिकेदे और तेलकाचौगुनागऊ का दूधदे तिसमें कल्क दे धीरेधीरेपचावै और कूट । इलायची चन्दन । सुगन्धबाला । जटामासी । छरीला । सेंधानोन । असगन्ध । बरियारा । रासन । सौंफ । देवदारु । शालिपर्णी । बनउर्दी । बनमूंग । तगर ये सब दोदोपललेकर कल्ककरैऔर तेलमें साधिलेइ फिरि उसतेलको नासदेइ शरीरपर मलैपिच-कारी आदि कर्ममें देइ पक्षाघात ठोड़ी जकड़ना गलजकड़ना कूबरा बहिरा लँगड़ा कमर जकड़ना देहका सूखना नपुंसकत्व ये सब अच्छेहोयँ औरज्वर क्षय होयऔर अंड बृद्धि अंत्रवृद्धि दंतरोग शिरोरुज पसुरीपीड़ा पंगत्व गृध्रसी बुद्धिहानि बिषम बातसबदेहकी बाइजायँ और इसतेलके प्रभावसे बंध्याकेपुत्रहो यहतैल मनुष्यघोड़ाहाथी सबकोहितहै जैसेनारायण दुष्टदैत्यों को नाश करते हैं उसी प्रकारसे यहतैलभी दुष्टबातके रोगोंको नाश करताहै इसतैलमें ऊपर जो द्रोणकहाहै वहद्रोण १२ सेर और एकछटांक का होता है ॥

अथ बातपर बरियारा तैल ॥

बरियारा की जड़का क्वाथ । कुरथीक्वाथ । यवक्वाथ । झड़-बेरीक्वाथ । इनसबकोआठआठ सेरले और सेरभरितैलले और जीवनीगण । शतावरि । इन्द्रायन । मंजीठ । कूट । छरीला । तगर

अगर। सेंधव। बच। गदा पुरैना। जटामासी। सरिवन। पिथवन। तेजपात। सौंफ। असगन्ध इनसबकोमिलाकर पचावै गर्भिणी स्त्री और धातुक्षीण पुरुष अतिश्रमी प्रसूती को दे यह तैलराजा और सुखी पुरुषोंके कारण है यह बरियारा तैल सब बात को हरता है॥

अथ प्रसारिणी तैल॥

गन्ध प्रसारिणी १०० पल अर्थात् एकपंसेरीभरले द्रोण भरिजलमेंपचावे जबचौथाईरहे तबउतारिले उसमेंकाढ़ेकेबराबर दही औरतेलदे और तैलकेसमानकांजीऔरतैलकाचौगुना दूध औरतैलका आठवांभाग आगेलिखीहुईसबद्रव्यलें मुरेठी। पीपरामूल। सैंधानोन। चीता। बच। गन्धप्रसारिणी। देवदारु रासना। गजपीपरि। भिलावां। सौंफ। जटामासी। इनसबकाकल्क तैलमेंपचावै यहतैलअतिउत्तमहै बातश्लेष्मरोगकोनाशकरता है और कुबड़ा अंगभंग पंगुआदिकोहितहै औरग्रध्रसीबायुहनुग्रह शिर ग्रीव और कटि इनका जकड़ना दूरकरै और कठिन बातरोग को नाशकरै॥

अथ बायुप्रर माष तैल॥

उर्द। यव। असीं। भटकटैया। केवांच। कुरैया। गोखुरू। स्योनाक इनसातोंको पलपलभरिले फिरइसको चौगुने पानी में पचावै जब चौथाईरहे तबउतारिले और बिनवरकागुदी बेर सनईके बीज। कुरथी इनसबको चौदह चौदह पल ले फिर इसे चौगुने पानी में पचाइ जब चौथाई रहे तबउतारिले और प्रस्थभरि छागमांस चौंसठिपल जलमें पचाइउतारि छानिलेइ तबप्रस्थभरितैलमें सबक्काथ और मांस जसदेकारिपचावै और आगेलिखाहुआ कल्कभी इसकेसाथ पचावै गुर्च। सोंठि। गदा पुरैना। रासना। एरण्ड। पीपरि। बरियारा। गन्धप्रसारिणी। जटामासी। कुटकी ये सब आधा आधा पल घीमें आंचदे उस

तेलमें पकावै इसतेलसे ग्रीवजकड़ना बाहु व्यथा अर्द्धाङ्गसूखना आक्षेप उरुस्तंभ पतानक सर्वाङ्गकंप शीतरस इस माषादि तैलसे ये रोग नाशहोयँ और सब बात विकार दूरिहोयँ ॥

अथ शतावरि तैल ॥

शतावरि। दोनोंबाला अ० सुगंधबाला नेत्रबाला। दोनों पर्णी। एरंड असगन्ध। गोखुरू। बेल। कास। कुरैया। सब डेढ़ २ पलले कल्ककरि चौगुने जलमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारिले फिरिप्रस्थभरि तैल और प्रस्थभरि दूधमें पचावै और एकप्रस्थशतावरिरसप्रस्थभरिपानीपचावै फिरशतावरि। देवदारु। जटामासी। तगर। चन्दन। सौंफ। बरियारा। कूट इलायची। छारछरीला। कमल। ऋद्धि। सिद्धि। बिना बाराही कंठमेदा। बिना मुरेठी। दोदफेकही है इसकारण दुगुनीलेना काकोलीबिना असगन्ध जीवक बिना बाराहीकंद येसब कर्षकर्ष भरिले इसका कल्ककरि गोबरकी आंचमें पचावै इस तैलको माथे में लगाने से पुरुषस्त्रियों में वृषभ तुल्य रहै स्त्री पुत्रजनै और स्त्री के सर्वयोनि विकार नाशहोयँ अंगशूल शिरशूल कमल पांडु गृध्रसी प्लीह शेषप्रमेह दंडापतानक वायु दाह सहित बात रक्त बात पित्त मद कान रुधिर आध्मान रक्त पित्त ये सबदूरि होयँ यह शतावरि तैल कृष्णसे आत्रेयजीने कहा है ॥

अथ अर्श पर कसीस तैल ॥

कसीस। करिहारी। कूट। सोंठि। पीपरि। सेंधव। मैनसिल। कनेर। बायबिडंग। चीता। अडूसा। जमालगोटा। बनतुरई। बीजचोक। हरताल ये सब कर्ष कर्ष भरले इनका कल्ककरि प्रस्थभर तेलमें पकावै और दोपल सेहुंड़का दूध २ पलमदार का दूध और तेलका चौगुना गोमूत्र देकरि अच्छी तरह से पकावै यहतेलखारनाद आचार्यनेकहाहै इसतेलकेलगानेसेबवासीरका मस्सागिरिपड़ताहै और क्षारकर्मकष्टसाहितनहींहोता ॥

अथ वातरक्तपर पिंडतेल॥

मंजीठ। सरिवन। राल। मुरेठी। मोम ये पलपलभरि ले फिर इनको तेलमें पचावै फिर उतारिकर धरि राखै इसतेलके लगाने से वातरक्त निस्सन्देह दूरहोय॥

अथ कंडूपर मदारतेल॥

ग्वारपत्रका रस और हल्दीका कल्क सरसोंकेतेलमें पचावै फिर इसकेलगानेसें खुजली दादविचर्चीआदिसबरोगदूरिहोयँ॥

अथ कुष्ठपर मरिच तेल॥

हरताल। निसोत। रक्तचन्दन। मोथा। मैनासिल। जटामासी। दोनोंहल्दी। देवदारु। इन्द्रायण। कनेर। कूट। मदारकी दूध। गोबरकारस ये सब कर्षकर्ष प्रमाणले और अर्द्धपल संखिया और प्रस्थभरि तैल गोमूत्र दूना जल दूनादेइ मरिचादितैलसे कुष्ठके घाव अच्छेहोयँ और श्वेतरक्त और कृष्ण दागमिटें और खसरासेहुआं कटीला और भैंसही दाद ये सब दूरि होयँ॥

अथ धातुपर त्रिफला तैल॥

नींब। चिरायता। दोनोंहरदी और रक्तचन्दन इनका बना तेल लगानेसे मनुष्य को बहुत गुण करता है॥

अथ पलित पर निम्ब तैल॥

नींबके बीजकी मींगी को भंगरा के रसमें भावना दे फिर रासन रसमें दे फिर उसकातेल निकालि नासले तौ अकाल के पके हुये बाल कालेहों और इसमें दूध भातका पथ्यदे अथवा मुरेठी कच्चे आंवलेकाकल्क चौगुणा दूध चौगुणातेलदे पकावै तिसके उपरांत चौगुणापानी दे पकावै जब केवल तेलरहै तब उतारिलेकर इसका नासले तौ केश सघन होयँ॥

अथ करंजतेल इन्द्रलुप्त पर॥

कंजा। चीता। चमेली और कनेरमें तेल पकाय लगावै तौ बातक्षारा दूरि होय॥

अथ पलितपर नीलकादि तैल ॥

नीलकेतकी । मूलभंगरा । कटसरैया । अर्जुनफूलन का हार। चमेली। कालेतिल। तगर। कमलकासब्बाग। लोहचूर्ण। मालकांगनी । अनारकी छाल । गुर्च । त्रिफला । कमल के जड़की मट्टी इन सबों को कर्ष २ भरिले उसमें त्रिफलेके क्वाथ सहित तैल पचावै और इसमें भंगरेका रसभी डाले जबसिद्ध होय तब उतारिले फिर इसे लगावै तौ बालस्थितहोयँ अकाल पलित अच्छाहो दारुण उपजिह्वकशिरोरोगये सबअच्छेहोयँ॥

अथ पलितपर भृङ्गराज तैल ॥

भंगरे के रसमें लोह चून वा कीट त्रिफला सारिवन इनके कल्क में तेल पचावै इसतैलसे पलित खाज इन्द्रलुप्त ये सब रोग मिटैं ॥

अथ मुख दन्त रोग पर इरिमेदादि तैल ॥

खैरछाल १८० पलकूट करि द्रोणभरि जलमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारिले फिर उसमें आधाआढ़क तैलदेखैर। लौंग। गेरू। अगर। पद्माक। मंजीठ। लोध्र। मुरेठी। लाही। बटकीजड़। मोथा। तज। जायफल। कपूर। कंकोल। खदिरसार पतंग। धवपुष्प। इलायची। और नागकेसरि ये सबकर्ष २ ले इसमें तैलको पचाय लगावै तौ मुखरोग दूरिहोय और मुखका मांस बढ़ना दांत हलना दांतफूटना मुख और कानका विकार दांतोंका ठण्ढाहोना दांत गिरना दंतकृमि दांत फूटना दुर्गंधि रोग तालूरोग ओष्ठ रोग ये सब दूरिहोयँ ॥

अथ कर्णशूलपर हिंगु तैल ॥

सरसोंका तेल ऽ१ महुआकातेल ऽ१अंडीकातेल ऽ१भंगराकारस ऽ॥ गौका घी ऽ॥ ले सबको तेलमें एकत्रकरि चढ़ायदे जबतेल खराहोजाय तबसब औषध गौके ऽ१ दहीमेंसानिकर औटावै जब सिद्धहोय तब लगावै तौ बात जाय और स्त्री की

प्रसूति जाय और देहके सकल रोगजायँ और सब प्रकार का ज्वर जाय और अग्नि बात भी जाय ॥

अथ पंचस्नेही तैल वातपर ॥

सोंठि । पीपरि । मिरच । कूट । अरणीकेपत्तोंकारस । कंजा । अजमोद । त्रिफला । हींग । खुरासानीबच । कायफर । सरसों । बायबिड़ंग । अजवाइन । मोथा । राई । मंजीठ । सुगन्धबाला जटामासी । पपराबीज । पान । गजपीपरि । शतावरि । हल्दी । देवदारु । धनियां । लहसुन । बिष । मैनसिल । निर्मली येसब औषध दोदोपैसेभरिले तिलका तेल ऽ१सरसोंका तेल ऽ१अंडीकातेल ऽ१। गौका घी ऽ१ मालकांगनीका तेल ऽ१। सबतेलोंको एकत्र करिचढ़ावे फिर औषध कपरछानकरि जब तेल खराहोजाय तब उसमें औटावे जब सिद्धहोजाय तब देहमें लगावे तो प्रसूतिजाय अंगकी पीड़ा जाय हाथ पांव और कटिकी पीड़ा उचाट बायु ये सब रोग दूरिहोयँ ॥

अथ अठरंगा तेल भोलापर ॥

सहँजनेकीजड़ । बकाइनकीजड़ । धतूरेकीजड़ । पुराने अंख की जड़ । आककीजड़ । गुरसकरीकीजड़ । कनेरकीजड़ । करिहारीकीजड़ । घोंघचीकी जड़ । नींबकीजड़ । छोटीबड़ीकटेली कीजड़ । अरसीकीजड़ । असगन्ध । महुआ । बिष येसबऔषध पैसा २ भरिले चंदियाबनावे फिर ऽ१ तिलका तेलले आगपर चढ़ावै जबतेलखराहोजाय तब उसमेंचंदियाछोड़देजबऔटते२ चंदिया तेलके ऊपरआय जाय तबहींग । तुम्बर । सोंठि इनको कड़ुवेतेलमें पचावे इसेकानमें डालनेसे पीरदूर होय ॥

अथ बधिरत्वपर बेलतैल ॥

छोटेबेलको गोमूत्रमें कल्ककरि तेल बकरीकादूध पानी सहितपकाइ कानमें डालनेसे बधिरत्वदूरिहोय ॥

अथ कर्ण बहनेपर क्षारतैल ॥

लघुमूलीकाखार। सज्जी। जवाखार। पांचोंनोन। हींग। सहिंजन। सोंठि। देवदारु। बच। कूट। सौंफ। रसौत। पीपरामूल। मोथा। येसबदकर्ष२भरिले इनकाकल्ककरि प्रस्थभरितेल में केलेकारस और बिजोरे के रस सहित पकावे और चौगुणा मधु सुक्तदे इसतैलसे पीबकाकानसे गिरना शब्दहोनापीड़ाबहिरापन कान कीड़ी और कानके सब और मुखरोग दूरहोयँ ॥

अथमधुसुक्त–जंभीरी नींबूकारस प्रस्थभर शहतकुड़वभर और पीपर पलभरि इनसबको इकट्ठाकरि बचकाकाढ़ा अदरक का रस गुड़ इनसबको भी मिश्रितकरि माटीकेपात्रमें राखमूंदि धान्य राशिमें तीन रात्रि रखकरि उसे निकालि ले इसेमधुसुक्त कहतेहैं ॥

अथ पीनसपर पाढ़ादितैल ॥

पाढ़ा। दोनों हल्दी। मुर्रा। पीपर। चमेलीपत्र और दतून इनकेतैलसे दुष्टपीनस अवश्यदूरि होय ॥

अथ नाकरोग पर भटकटैया तैल ॥

भटकटैया। दतूनि। बच। सहिंजन। तुलसी। सोंठि। मिर्च पीपरि। सेंधवइनकेतैलसे नाकसे पीबका गिरना औरभीअनेक नाकके रोगदूरिहोयँ ॥

अथ छिकापर कूठतैल ॥

कूठ। बेल। पीपरि। सोंठि और दाख इनका काढ़ा और कल्ककरि तैलअथवा घृतमें पचायनासले तौछींकरोगदूरहोय ॥

अथ नासार्शपर बृहधूमादि तैल ॥

रसोईके स्थानका करहुआं पीपरि। देवदारु। जवाखार। करंज। सेंधव। चिचड़ाबीजइनकातेल नाकरोगकोबहुतशीघ्रही हर लेताहै ॥

अथ सब कोढ़ोंपर तैल ॥

छमियां सेहुंड़कादूध। मदारकादूध। धतूरे और चीतेकारस भैंसके गोबरकारस। तिलके तेलमें इनसबकोपचावे जबकेवल

तैलरहै तब उसमें चतुर्गुण गोमूत्रदे फिरपचाय जबतैलरहै तब प्रस्थभरि तैलमें गन्धक । भिलावा । चीता । मैनसिल । हरताल । बायबिड़ंग । दोनों अतीस । कटुतुरई । कूट । जटामासी । बच । त्रिकुटा । दारुहल्दी । मुरेठी । सज्जी । जीरा । देवदारु ये सब कर्ष २ भरिले तैलको सिद्धकरै इसतैल के लगाने से सब कुष्ठ नाश होयँ ॥

अथ कनेरका तैल रोम सातनपर ॥

कनेरकीमूल । दंतीकीमूल । निसोत । कटुतुरई । केला क्षार और केलेकापानी इनमें तैलसिद्ध करि लगावै तौ रोम गिरिपरैं ॥

अथ पित्त ज्वरपर तैल ॥

दोहा ॥

हलदी लाख मंजीठ को कलक करे बुध धीर ।
लेयतेल षट गुण बहुरि और दही को मीर ॥
छाडि कलक वा तैलमें डारै वैद्य पचाय ।
तैल लगावै अंग में दाह शीत ज्वर जाय ॥

अथ अन्यलाक्षादि तैल ॥

सज्जी १ पैसाभरि सोंठि १ पैसाभरि उपलोट १ पैसाभरि चोवा १ पैसाभरि पिलवनी १ पैसाभरि लाखपीपरकी ६ पैसा भरि हल्दी ६ पैसाभरि मंजीठ ४ पैसेभरि ये सब औषध कपर छानकरै फिर औषधिन से ६ गुणा मट्ठाले सरसोंकातेलडेढ़सेर ले चूल्हेपर चढ़ावै जब खराहोजाय तब औषध औटावै फिर जबसिद्ध होय तब देहमें लगावै तो शीतज्वर दाहज्वर जाय और स्त्रीका गिरता हुआगर्भ थमि जाय ॥

अथ विजयनारायण तैल ॥

सरसों ५ टं० बायबिड़ङ्ग ५ टं० मंजीठ ५ टं० बच ५ टं० कूट ५ टं० जायफर ५टं० चाव ५ टं० कचूर ५ टं० अजमोद ५ टं पुष्करमूल ५ टं० चन्दनदोनों ५ टं० राई५टं ० माथा ५ टं० कलौंजी ५ टं० चिरायता ५ टं० येसब औषधकपरछान

कर तिलकातेल १ सेर उतारिकर देहमेंलगावे तो झोला बाई और गठिया और तेरहों सन्निपातजायँ ॥

अथ मरिचादिबृहत्तैल ॥

निसोतकी जड़ । दन्तीकीजड़ । आककादूध और पत्तोंका रस । देवदारु । हल्दी । दारुहल्दी । जटामासी । रक्तचन्दन । इन्द्राणीकी जड़ । कनेरकीजड़ । हरताल । मैनशिल । चीतेकी छाल । मुलहठी । बायविडंग । पँवारके बीज । लहसुन । करिकचिहाऊकी जड़ । सिरसकीछाल । सुमान । थूहरको दूध । गिलोय । अमलतास । कंजा । मोथा । खैर । पीपरि । बच । जावित्री । सेवकीजड़ येसबऔषध बराबरले औरऔषधोंसे दूना सरसोंका तेलले और चौगुणागोमूत्र ले प्रथम तेल में गोमूत्र पचावे तिसपीछे पानीमें सब औषधपीस औटावे जब सिद्ध होय तब उतारि लगावे तो २० प्रकारके कोढ़जायँ कानकी पीड़ा और अंगके मण्डल जायँ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेघृततैल साधननाम अष्टविंशतितमस्तरंगः २८ ॥

अथ अनेक रोगोंपर अनुभूत काढ़े ॥

क्वाथ अर्थात् काढ़ा पांचप्रकारकाहै स्वरस अर्थात् अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ ये एकसे एकगुणमें न्यून हैं यथास्वरस अर्थात् अंगरससे लघुकल्क ॥

अथ स्वरसमाह ॥

किसी द्रव्यको उत्तमभूमिसे उखाड़कर बिनापानीडालेकूट कर कपड़ेमें रखकर रसनिचोड़लेय उस रसको स्वरस अर्थात् अंगरस कहते हैं और किसीद्रव्यको सोलहतोले कूटकर उसे द्विगुणजलमें रात्रि दिन भिजोइराखै उसरसकोभी स्वरस कहतेहैं और जो द्रव्यहरी न मिले तो सूखी द्रव्य अठगुणे पा-

नीमें औटै जब चौथाईरहै तबलेले ओदी द्रव्यकारसभारीहोताहै इसकारणसे कार्यमें आधापल लेनाउचितहै और सूखी द्रव्यरातकीभीजीका रसहल्काहै इससे वहपलभरलेनाचाहिये और स्वरस अथवा काढ़ा वा यंत्रका निकालारस इनमें शहत। शकर। गुड़। खांड़। जीरा। नमक। घृत। तेल और चूर्णये सबआठमाशे युक्त करना गुरचका रस शहतयुक्त खानेसे सब प्रमेह नाशहोयँ और आंवलेकारस। हरदीका चूर्ण। शहत मिश्रितकरि खिलानेसे भी प्रमेहनाशहोय ॥

अथ वासास्वरस रक्तपित्तादिपर ॥

रूसकास्वरसशहतमिलायपीनेसे रक्तपित्त नाशहोय। और ज्वर। खांसी। क्षयी। कमल। कफऔरपित्तइनरोगोंकोभीनाशकरै॥

अथ त्रिफलादिस्वरस कमलपर ॥

त्रिफले का रस और शहत । अथवा बड़ी हल्दी का रस और शहत। अथवा नींबका रस और शहत। अथवा गुरच कारस औरशहत युक्त पियेतो कमलरोगनिस्सन्देह नाशहो॥

अथ तुलसी आदि स्वरस विषमज्वरपर ॥

तुलसीका रस। मिरच का चूर्ण । अथवा भूंगाकारस और मिर्चसाथपिये तौ विषमज्वरदूरहोय ॥

अथ जंबादि स्वरस रक्तातीसारपर ॥

जांमुन। आंब। आँवरा इनतीनों की पत्तीकारस शहत घृत और दूधसहित पियेतो दिनीरक्तातीसार दूरिहोय ॥

अथ बबूरादि स्वरस अतीसारपर ॥

बबूर की छालका रस शहत युक्तकरके पिलावै तौ सात भांतिका अतीसार जाय बाकुरेका रस अथवा करौंदका रस। शहतके साथपियेतो अतीसार जाय ॥

अथ अदरकस्वरस अण्डकोश और श्वासपर॥

अदरकका रस और शहत पिये तौ बातांड वृद्धि पचै

श्वास । खांसी । अरुचि । नाकवहना सबरोग मुक्तहोयँ ॥

अथ बीजपूरस्वरस पार्श्वादि शूलपर ॥

बिजोरा नींबूकारस । शहत और जवाखार सहित पिये तौपसुरीका शूल हृदयका शूलपेडूकीपीर कोष्ठबद्धिइनसबरोगों से निर्मुक्तहोय ॥ अथ शतावरिरस पित्तशूलपर ॥

शतावरिकास्वरस शहतकेसाथपियेतौपित्तशूलनाशहोजाय ॥

अथ घीगुंवारस्स प्लीहपर ॥

घीगुंवारका रस हरदीचूर्ण पिये तो पिलही अपची पेटकी गांठि ये सबरोग निस्सन्देह दूरिहोयँ ॥

अथ मुंडीस्वरस गण्डमाला अपचीपर ॥

मुण्डीकीस्वरसको आठतोले पिये तो गण्डमाला अपची और क्यांवल रोगनाशहोयँ ॥

अथ मुंडी स्वरस सूर्य्यावर्त्तादिपर ॥

मुंडीस्वरसकोउष्ण करि मिरचके चूर्ण युक्तकरि सात दिन पीवेतौसूर्यावर्त्त आधासीसीआदिसबरोग निस्सन्देहदूरिहोयँ ॥

अथ उन्मादपर ब्राह्मादि स्वरस ॥

ब्राह्मी । श्वेतकुम्हड़ा । कचूर । कौघांल्ला इनका स्वरसभिन्न भिन्नशहत और कुष्टकेसाथपिये तौ सर्वउन्मादजायँ औरश्वेत कुम्हड़े का रस पुराने गुड़ संयुक्त पीनेसे दुष्टक्रोदवकी उन्माद नाशहोताहै ॥ अथ बरियारे का स्वरस घावपर ॥

शस्त्रके लगे घावमें तुरतही बरियारेकारस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥ अथ पुटपाक स्वरस विधि ॥

पुटपाकका रसलेतेहैं इससे उसकायत्न कहतेहैं कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसकर गोलाबांधि तिसपर एरंड वा अरगद वा जामुनका पत्ता लपेटे फिर कपरौटी करि दो अंगुल मिट्टी लेसै फिर अग्निमें रक्खै तिसके उपरान्तउसे जब लालहोजाय बाहर निकासले फिर उसका रस निचोड़ ले इसरसको पुटपाककह-

तेहैं फिर चारिरुपया भरि रस रुपयाभरि शहत संयुक्त पिये और जो कल्क चूर्ण पललीद्रव्य मिश्रितकरनाहोपुटपाकरसके यथायोग्य देना चाहिये ॥

अथ कुरैया पुटपाक सर्वातीसारपर ॥

चारितोले कुरैयाकीछाल चावलके धोवनमें पीसकर गोला बांधि जामुनके पत्ते लपेटि फिर सूतसेबांधि गेहूंकाआटालपेटि उसपर मिट्टी लगावै फिर उसे गायके गोबर में फूंक दे जब अँगारसा होजाय तब निकासिले फिररसनिचोड़शीतलकरि शहत मिलायपीवै तौ बहुतदिनोंका कठिनअतीसारभीदूरहोय॥

॥ अथ चावल धोवने की क्रिया ॥

चारि रुपयाभरि शुद्धचावल अठगुने पानी में धोइले वही चावल का धोवनसर्वत्र लियागया है ॥

अथ पुनः पुटपाक ॥

अरलू जो करील वा सोहन पाता का पुटपाक अग्निको दीपन करता है जब शहत और मोचरस मिलाय करि दे तब अतीसार दूरहोय ॥

अथ पुनः पुटपाक ॥

वड़। पीपल। गूलर। पाकर। जगन्नाथी पीपल इनकीछाल पानीमें पीस गोलाबांधि श्वेत तीतर का पेटफाड़ि उसकी अंतड़ियोंमें वह गोला रखकर पुटपाककरै फिरपकेपर गोलानिकाल के रसको निचोड़ ले फिर वही रस शहतके साथ दे तौ सब अतीसारजायँ ॥

अथ अन्य पुटपाक ॥

पकेअनार का पुटपाक बनाय तिसका रस शहत मिलाय करदे तौ सब अतीसार दूरिहोयँ ॥

अथ बिजौरा पुटपाक छर्दकी पर ॥

बिजौरा नींबू। जामुन की पत्ती वा जड़के पुटपाकका रस शहतके साथ देयतौ सबप्रकारकी छर्दिदूरहोय ॥

अथ वासा पुटपाक रक्त पित्त कासज्वर पर ॥

अडूसेका पुटपाक रसशहतकेसाथ पीनेसे रक्तपित्त कास छर्दि ज्वर येसबदूरिहोयँ ॥ अथ भटकटैया कास श्वासपर ॥

भटकटैयाके पंचांगका पुटपाक रसपीपरिका चूर्ण डारिकरदे तौ कास श्वास और कफ ये सबदूरि होयँ ॥

अथ विभीतकपुटपाक कास श्वासपर ॥

बहेड़ेके ऊपर घी चुपड़ कर उसके ऊपर आटा लपेटि अंगारपर पुटपाक बनावे फिरउसका छिलका मुखमें रखने से कास श्वास स्वरभंग आदि सबरोगोंको दूरकरै ॥

अथ शुंठी पुटपाक आमातीसार पर ॥

सोंठिको चूर्णकरि उसकीगोली घृतकेसाथ बनावै फिर उसे एरंडपत्रमें लपेटि मन्दाग्निसे पुटपाककरै फिर उसचूर्णको सबेरे शरबतके साथखायतौ आमातीसारकी पीड़ा दूरहोय—अथवा सोंठिके चूर्णको रंडकीजड़के रसमेंसानिपुटपाककरि रसनिकाल शहतकेसाथ खाय तौ आमवातकी पीड़ादूरिहोय ॥

अथ सूरणपुटपाक बवासीरपर ॥

जिमींकन्द इसका पुटपाक बनाकरि नमक और तैलकेसाथ खाय तौ अर्श नाशहोय ॥

अथ हरिण शृङ्गपुटपाक हृदय शूलपर ॥

हरिण के सींग को शराब के पुटपाकमें जलाकर गोघृत में डालकरपिये तौ हृदय शूल निस्सन्देहजाय ॥

अथ क्वाथ माह ॥

चाररुपयाभरि द्रव्य चौसठि रुपयाभरि पानी मिट्टीपात्र में भरि मन्दाग्निमें औटै जब आठरुपया भरि रहै तब उतारि ले फिर कुछ गरम रहै तबपिये इसक्वाथकेचारि नामहैं सृत १ क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४ आहारकारस पकै परवृद्धवैद्य के उपदेशसे द्वै पल काढ़ा पिये क्वाथमें मधु मिश्रीडारनेका प्रमाण

जो बायुप्रधानहो तो मिश्री थोडीदेना पित्तमें अष्टमांश कफमें षोड़शांश शहत वायु में षोड़शांश पित्तमें अष्टमांश और कफ में चौथा अंश देनाचाहिये ॥

अथ जीरादि अनेकवस्तु डालने का प्रमाण ॥

जीरा । गूगल क्षार । सेंधव । शिलाजीत । हींग और त्रिकुटा ये काढ़े में चारि माशेदे और ज़ियादा और कम देनां चाहै तो समय और बलको बिचारिले और दूध घी गुड़ तेल गोमूत्र और स्वरसादि चूर्णादि ये सबबल और समय देखकर दशदशमाशे देनाउचित है ॥

अथ गुर्चादि काढ़ा सर्वज्वरोंपर ॥

गुर्च । धनियां । नींबकी छाल । पद्माक । रक्तचन्दन इस गुर्चादि काथके पीने से सर्वज्वरनाशहोते हैं यहकाथ दीपनहै और दाह । तृष्णा । लार । उबकाई ये सब दूरहोते हैं ॥

अथ गुर्चादि पाचन बातज्वर पर ॥

गुर्च । पीपरामूल । सोंठि इनकाकाढ़ा बातज्वरमें सदैवदेय यह पाचन है ॥

अथ बातज्वरपरकाढ़ा ॥

शालिपर्णी अर्थात् बनउर्दी । बरियारा । रासना । गुर्च । सरिवन इनका काढ़ापिये तो तीव्रबातज्वरजाय अथवाखंभारि । सरिवन । दाख । त्रायमाण । गुर्च इनकाकाढ़ा गुड़डारिकर पिये तो बातज्वरजाय ॥

अथ कटुफलादि पाचन पित्तज्वरपर ॥

कायफल । इन्द्रयव । पाढ़ा । कुटकी । नागरमोथा इनका काढ़ा पित्तज्वरमें दशदिन देय तो पित्तज्वर दूरहोय ॥

अथ पित्तपापरादि काथपित्तज्वरपर ॥

पित्तपापरा । रूसा । कुटकी । चिरायता । जवासा । प्रियंगु दानापीतसरसों सा होताहै इनका काढ़ा चीनीडालकरपियेतौ

तृषा । दाह । रक्त । पित्त । ज्वरयेसब दूरिहोयँ अथवा दाख । हड़ । मोथा । कुटकी । अमलतास । पित्तपापरा इनकाक्काथकरि देय तौ पित्तज्वर । तृष्णा । मूर्च्छा । दाह । रक्त । पित्त इन सब रोगोंको शमन और भेदन करता है ॥

अथ बिजौरापाचक कफज्वर पर ॥

बिजौराकीजड़ । हड़ । सोंठि । पीपरामूल । जवाखारडालि के कफज्वरके बारहेंदिन काढ़ापिये तो जल्दी पाचनकरै अथवा चिरायता । नींब । पीपल । कचूर । शतावरि । गुर्च । भटक-टैया इनकाकाढ़ाभी कफज्वरको नाशकरताहै अथवा पटोल । त्रिफला । कुटकी । कचूर । रूसा । गुर्च इनकेकाढ़ेमें शहत मि-लाकर पीवै तौ कफज्वर नाशहोय ॥

अथ पित्तपापड़ा काथ वातज्वर पर ॥

पित्तपापड़ा । मोथा । गुरच । सोंठि । चिरायता इनऔषधों का काढाकरै फिर इस पंचभद्र काढ़के पीनेसे बात पित्त ज्वर दूरहोय ॥

अथ छोटी भटकटैया काथ वातकफज्वर पर ॥

भटकटैया । सोंठि । पुष्करमूल इनकेकाढ़ेको पीनेसे कफबात ज्वर नाशहोताहै और सन्निपातज्वर में पियेतौ कास श्वास अरुचि इनसबोंको हरताहै और सुपारीकीपीड़ाकोहरताहै ॥

अथ अमलतासादि काथ कफ बात ज्वर पर ॥

अमलतास । पीपरामूल । मोथा । कुटकी इनका काढा बात कफज्वरको बेगही नाशकरताहै और आम और शूलकोशमन करताहै औरगोटागिरावै अग्नि दीपन पाचनकरै ॥

अथामृताष्टक काथ ॥

गुरच । नींब । कुटकी । मोथा । इन्द्रयव । सोंठि । पटोल । रक्त चन्दन इनका काथ और पीपलका चूर्णडारिके पीनेसेपित्तकफ ज्वरनाशहोताहै और उबकाई । अरुचि । हल्लास । दाह । तृषा इनकोभीनिवारण करताहै ॥

अथ भटकटैयादि क्वाथ सबज्वरपर॥

दोनोंभटकटैया। सोंठि। धनियां। देवदारु इनऔषधोंका काढ़ा पाचनहै और सबज्वरोंको हरताहै॥

अथ दशमूल क्वाथ वातकफपर॥

बनउर्दी। बनमूंग। दोनोंभटकटैया। गोखुरू। बेलकीजड़। अग्निमन्थ। सोहनपत्ता। खम्भारी। पाढ़ा इन दशों मूलों का काढ़ा पीपरिके चूर्णकेसाथ पिये तो वातकफज्वर नाशहोय और सन्निपात। ज्वर। सूतिकादोष। मुखसूखना। शीतलअंग। भ्रम। पसीना। श्वास। कासकोनाशकरै औरहृदयशूल पार्श्वपीर तन्द्रा सब मुक्तहोयँ॥ अथान्य हरीतकी क्वाथ सन्निपातज्वरपर॥

हड़। मोथा। धनियां। रक्तचन्दन। पद्माक। रूसा। इन्द्रयव। खस। गुर्च। अमलतास। पाढ़ेकीजड़। कुटकी। पीपरका चूर्ण समेत इनका काढ़ापिये तो सन्निपात ज्वर। तृष्णा। दाह। कास। भ्रम। श्वास। तन्द्राआदि रोगों को नाशकरै यहक्वाथ दीपन और पाचनभी करै है और वायुसे मलमूत्ररोध बमन कंठदोष अरुचिये उपद्रव नाशकरै॥

पुनः भूनिम्ब दशमूल क्वाथ॥

चिरायता। कुटकी। मोथा। धनियां। इन्द्रयव। सोंठि। दशमूल। देवदारु। गजपीपल समेत क्वाथपियेतौ पसुली की पीर। सन्निपात। ज्वर। कास। श्वास। बमन। हिचकी। तन्द्रा। हृदयरोग ये सब नाशहोयँ॥

अथ कायफर क्वाथ कासज्वरपर॥

कायफर। मोथा। भारंगी। धनियां। खस। पित्तपापड़ा। हड़। काकड़ासिंगी। देवदारु और सोंठि इनके काढ़ेको पीने से कासज्वर नाशहोताहै और श्वास कफ और कंठरोग येभी दूरहोयँ॥ अथ अन्यक्वाथ॥

गुर्चकाकाढ़ा पीपरियुक्तपानेसे जीर्णज्वर छूटताहै औरपित्त-

पापड़ेका काथ पीपरियुक्त पीने से पित्तज्वर नाशहोता है और भटकटैयामें पीपलडालकर पियेतो कास। श्वास। पीनस। अरुचि। गलाबेठना। शूल। जीर्ण। कफज्वर। येसबरोग दूरहोते हैं॥

अथ सर्व शीतज्वरों पर भटकटैया क्वाथ॥

भटकटैया। धनियां। सोंठि। गुर्च। मोथा। पद्माक। रक्तचन्दन। चिरायता। पटोल। रूसा। मोचरस। कुटकी। इन्द्रयव। नीम। भारंगी। पित्तपापड़ा इनकाकाथप्रातसमय पीवै तो सर्व शीतज्वर नाशहोयँ॥

अथ विषमज्वर पर मोथा काथ॥

मोथा। भटकटैया। गुर्च। सोंठि। आमला। शहत। पीपरियुक्तपिये तो विषमज्वर नाशहोय॥

अथ नित्य आते ज्वर पर पटोल काथ॥

पटोल। त्रिफला। नींब। दाख। अमिलतास। रूसा इनके काथकोशहत और खांड़युक्त पीनेसेएकाहिकज्वरदूरिहोय॥

अथ तृतीय ज्वर पर गुडूच्यादि काथ॥

गुर्च। धनियां। मोथा। रक्तचन्दन। खस। सोंठि इनका काढ़ा शक्कर और शहत युक्तपिये तो तृतीयज्वर। प्यास। दाह ये सब उपद्रव दूरिहोयँ रोगी अच्छाहोय॥

अथ चतुर्थ ज्वर पर देवदारु काथ॥

देवदारु। हड़। रूसा। शालिपर्णी। सोंठि। आंवरा। इन्द्रयव का काढ़ा मिश्रीयुक्त पीनेसे चातुर्थिक ज्वर जाता है और श्वास कास मन्दाग्नि आदि रोगभी दूरहोते हैं॥

अथ ज्वरातीसारपर गुडूच्यादि काथ॥

गुर्च। धनियां। खस। सोंठि। सुगन्धवाला। पित्तपापरा। बेल। अतीस। पाढ़ा। रक्तचन्दन। करैया। चिरायता। मोथा और इन्द्रयव इन द्रव्योंकाकाढ़ा ठंढाकरि शहत मिश्रीकरिकै पीवै तौ ज्वरातीसार और रक्त पित्त नाशहोय॥

अथान्य काथ ॥

सोंठि । कुरैया । मोथा । गुर्च और अतीस इनके काढ़े को पीनेसे सर्व ज्वरातीसार नाशहोय ॥

अथ धान्य पंचक काथ आमशूलपर ॥

धनियां । सोंठि । वेल । मोथा और खस इनकेकाथसे आम और शूल वेगही दूरहोय यहकाथ ग्राही दीपन और पाचन है अथवा शहत । धनियां औरसोंठिकाक्काथभी दीपन औरपाचन है और जो एरंडकी जड़युक्त करै तौ आमवात्त दूरहोय ॥

अथ आमातीसार पर कुरैयाकाथ ॥

कुरैया की मूल । अतीस । वेल । मोथा । खस इन द्रव्योंका काढ़ा पीने से अतीसार अवश्य नाश होता है ॥

अथ कुटजाष्टककाथ ॥

कुरैया । मूल । अतीस । पाढ़ामूल । धवफूल । लोध । मोथा । हाऊबेर । अनार इनकाकाढ़ा मधु और मोचरस युक्तपिये तौ सब अतीसार जायँ यह काथ दाह रक्त कठिन शूल आदिको भीदूर करता है ॥ अथ अतीसार पर हाऊबेर काथ ॥

हाऊबेर । धवफूल । लोध । लजालू । कुरैया । धनियां । अतीस । मोथा । गुर्च । बेल और सोंठि इनकाकाढ़ा पीनेसे बहुत कालकाभी अतीसार दूर होजाताहै और अरोचक आम शूल आदि को भी हरताहै और पाचन दीपन भी है ॥

अथ बालकों के सर्वातीसारपरकाथ ॥

धवफूल । बेल । लोध । सुगन्धबाला । गजपीपरि इनका काढ़ा मधु युक्त देनेसे अथवा इसका अवलेह बनाकर देने से बालकोंके सर्वातीसारनाशहोते हैं ॥

अथ संग्रहणी पर बनउदी काथ ॥

बनउर्दी । बरियारा । बेल । धनिया और सोंठि इनका काढ़ादेनेसे पेटशूल नाभिशूल सहितवात संग्रहणीकोदूरकरै ॥

अथ चतुर्भद्र क्वाथ ॥

मूर्च्छे। अतीस। सोंठि। मोथा इनका क्वाथ असाध्यतर ग्रहणी को दूरकरता है और दीपन और पाचन भी है॥

अथ सर्वातीसारपर इन्द्रयव क्वाथ ॥

इन्द्रयव। धनियां। पटोल इनका काढ़ा खांड और शहत के साथ खाइ तो छर्दि और अतीसार जायँ अथवा आमकी गुठली वेलका काढ़ा शहत और मिश्री युक्त पीने से सब अतीसार दूर होते हैं॥

अथ कृमि पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला। देवदारु। मोथा। मूसा। करणी। सहिंजन। काथपीपरि। विडङ्गयुक्त पीनेसे कृमिज उपद्रव सब दूरहोयँ॥

अथ कमलपर त्रिफलादि क्वाथ ॥

त्रिफला। गुर्च। कुटकी। नींब। चिरायता। रूसा इनका क्वाथ शहतके साथ पीनेसे कमलऔर पांडुरोगनाशहोतेहैं॥

अथ पांडुपर गदापुरैना क्वाथ ॥

गदापुरैना। हड़। नींब। दारुहल्दी। कुटकी। पटोल। गुर्च। सोंठिइनका काढ़ापिये तो पांडु। कास। उदररोग। श्वास। उदरशूल। सर्वांग सूजन ये सब रोग दूरिहोवँ॥

अथ रक्तपित्तपर रूस क्वाथ ॥

रूसा। दाख। हड़ इसका काढ़ा शहत अथवा मिश्री के साथ पियेतौ रक्त पित्तकी दारुणपीड़ा कास श्वास ये सबरोग नाश होयँ अथवा रूसे का काढ़ा शहतके साथ पिये तौ रक्तपित्त कास श्वास क्षयी कफ पित्त ज्वर ये सब रोग दूरि होयँ॥

अथ कास ज्वर पर रूस क्वाथ॥

रूसा। भटकटैया। गुर्च इनको मधुयुक्त खाने से ज्वर कास मिटै और जो भटकटैया का काढ़ा पीपल के चूर्ण संयुक्त दे तौ खांसी जाय॥

अथ कास श्वासपर क्षुद्रादि क्वाथ ॥

भटकटैया। कुरथी। रूसा। सोंठि। पुष्करमूल यह क्वाथ पीनेसे कास श्वास रोग दूरहोतेहैं ॥

अथ हिक्का पर मेवड़ी क्वाथ ॥

मेवड़ी। कांजी। पीपल। भुनीहींग युक्त पीनेसे पांचो प्रकार की हिचकी जायँ ॥

अथ उवकाई पर बिल्वादि क्वाथ ॥

बेलकी छाल अथवा गुर्चका काढ़ा मधु युक्त पीनेसे त्रिदोष जन्यछर्दि मिटतीहै और जो पित्त पापड़ा और शहतयुक्तपीवै तौ पित्त छर्दि नाशहोय॥

अथ गृध्रसी वायुपर दशमूल क्वाथ ॥

हींग। पुष्करमूलका चूर्ण। दश मूल क्वाथमें युक्तकरि पिये तौ गृध्रसीवायु जाय और जो मेवड़ी क्वाथमें हींग वा एरंडमूल के चूर्ण युक्तपिये तौ गृध्रसी वायु तुरन्त मिटि जाय॥

अथ वायु पर रासनपंचक क्वाथ॥

रासन। गुर्च। देवदारु। सोंठि। रंडमूल इनका काढ़ा पीने से सप्त धातु गत बात सब अंगवायु दूरहोयँ अथवा रासन। गोखुरू। रंड। देवदारु। पुरैना। गुर्च। अमलतास इनकाकाढ़ा करके सोंठि के चूर्णके साथ पीने से जांघ कटि पसुरी और छाती की पीड़ा और भारी आमवात सब मिटैं ॥

अथ संपूर्ण वायु पर महारास्नादि क्वाथ॥

दोभागरासन और सब एक भागमें जवासा। बरियारा रंड। देवदारु। कचूर। बच। रूसा। सोंठि। हड़। चाब। मोथा। गदापुरैना। गर्बविधारा। सौंफ। गोखुरू। असगंध। अतीस। अमलतास। शतावरि। पीपल। इन्द्रयव। धनियां और दोनों भटकटैया इनका काढ़ा सोंठि चूर्ण डाल पाक वा पीपल का चूर्ण वा योगराज गुग्गुल के साथ अथवा अजमोदादि चूर्ण के

साथ अथवा रेंडीकेतेलके संगदेतो सर्वांगकंप । कूबड़ । पक्षाघात । बाहुक । गृध्रसी । आम । पीलपांव । अपतंत्र । अंडवृद्धि । पेट फूलना । जंघपीर । धातुरोग । बंध्या की योनि दुष्टतादि सब दूरिहोयँ यह महारासनादि काथ ब्रह्मानेकहाहै इसमें बहुत मनुष्य सब औषधका दूना रासन लेतेहैं सो अनुचित है ॥

अथ छातीकी पीरपर अरंडे का काथ ॥

रंड । बिजौराकी जड़ । गोखुरू । दोनों भटकटैया । पाषाणभेद । बेलकी लकड़ी इन सब जड़ों का काढ़ा रेंडी का तेल । हींग । जवाखार । सेंधव युक्तपिये तो स्तन पीड़ा कंठ और हृदय की पीड़ा मिटै ॥

अथ बात शूलपर शुंठी काथ ॥

सोंठि । रेंडमूल । इन्द्रयव का काढ़ा । भूनी हींग । कालानिमक युक्त पीनेसे बात शूल दूर होता है ॥

अथ पित्त शूलपर त्रिफला काथ ॥

त्रिफला और अमलतास इनके काढ़ेमें शक्कर शहत युक्तकर पिये तो रक्तपित्त दाहपित्त शूल ये सब रोग जायँ ॥

अथ कफ शूलपर रेंडमूल काथ ॥

रेंडकी जड़ २ पल लेकर १६ पल जलमें काढ़ा करै फिर उसमें जवाखार डालकर पिये तो पार्श्वपीर हृदयपीर कफ जन्य नाश होय ॥

अथ हृदयरोगपर दशमूल काथ ॥

दशमूलका काढ़ा । जवाखार और सैंधवयुक्त पीनेसे हृदय रोग । वायुगोला । कास । श्वासादि सब रोग नाश होयँ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रपर हरीतकी काथ ॥

हड़ । जवासा । अमलतास । पाषाणभेद और गोखुरू इन का काढ़ा शहतयुक्त पीनेसे मल मूत्ररोध दाह सहित सबरोग अच्छे होयँ ॥

अथ मूत्ररोगपर अर्जुन काथ॥

आसगंध। वबूँरि। कारोकी जड़। तीनों कटसरैया। दोनों कुश। कटमूल। गोंदी। शिवलिंगी। अरणीचूरण। हालवारी। पाषाणभेद वा करील। गोखुरू। चिचिरा। कमलपत्र यह परितु श्रेष्ठ गणहै इस क्वाथ के पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात सम्पूर्ण रोग नाश होयँ॥

अथ पथरी शर्करादि पर एला काथ॥

इलायची। मुरैठी। गोखुरू। मेवड़ी। बीजरंड। रूसा। पीपरि। पाषाण भेद इनका काढ़ा शिलाजीत संयुक्तपियेतौ शर्कराप्रमेह मूत्रकृच्छ्र ये रोग नाशहोयँ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र पर गोखुरू काथ॥

गोखुरूके पंचांग का काढ़ा मिश्री शहत संयुक्त पिलावै तो मूत्रकृच्छ्र उष्णवायु ये रोग अच्छेहोयँ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफला काथ॥

त्रिफला। दारुहल्दी। मोथा। देवदारु इनका काढ़ा शहत युक्तपिये तौ प्रमेह नाशहोय॥ पुनः॥ तैसेही कुरैया। त्रिफला। दारुहल्दी। मोथा। ककई इनका काढ़ा शहत के साथ पीने से प्रमेह नाश होता है॥

अथ प्रमेहपर त्रिफला काथ॥

त्रिफला। मोथा। दारुहल्दी। इन्द्रायणि की जड़ इनका काढ़ा हल्दी के चूर्णयुक्त पिये तौ सकल प्रमेह नाशहोयँ॥

अथ प्रदरपर दारुहल्दी काथ॥

दारुहल्दी। रसवत। मोथा। भिलावां। तेल। रूसा। और चिरायता इनका काढ़ा ठंढाकरि मधुसंयुक्त पिये तौ पीत श्वेत कृष्ण लालसहित शूल स्त्रीका उदररोग येसब अच्छेहोयँ॥

अथ नसव्रणादिपर बटादिक क्वाथ॥

बट। पाकर। सवत। सवेर। तुनि। जेठीमधु। चिरौंजी।

लोध। गुलरी। पीपल। धूप। जगन्नाथी पीपरि। पलाश। दोनों तंदुक। जामुनि। आम्र। हड़। कदंब। अर्जुनतरु। भिलावां। कायफल जो द्रव्य इसमें न मिले सो त्यागिदेय यह न्यग्रोधादि गण काथ बहुत ग्राहीहै जो घाव खराब होगयाहो तो अच्छाहोय योनि दोष। दाह। मेद। प्रमेहविष येसबनाश होयँ बेतसको कहीं जगन्नाथीपीपल कहते हैं॥

अथ मेदरोग पर बेल क्वाथ॥

बेल। अरणी। सोहन पात। खंभारि इन सबका काढ़ा शहत के साथ पिये तौ मेददोष मिटै अथवा त्रिफलेका काढ़ा शहत युक्त पियेतो मेददोषजाय अथवा उष्ण जल ठंढाकरि शहत के साथ पिये तौ मेदरोग जाय॥

अथ उदर रोगपर चाव क्वाथ॥

चाब। चीता। सोंठि। देवदारु इनका काढ़ा निशोथ चूर्ण और गोमूत्रके साथ पिये तौ उदररोग दूरिहोय॥

अथ पेटफूलनेपर गदापुरैना क्वाथ॥

गदापुरैना। गुर्च। देवदारु। सोंठि यहकाढ़ा गोमूत्र गुग्गुल युक्तपिये से पेटकी सूजन मिटती है॥

अथ पिलहीपर हरीतकी क्वाथ॥

हड़। अगियाखार इनका काढ़ा जवाखार और पीपरि युक्त पीने से प्लीहा। वायुगोला। यकृत अच्छीहोय रोगितना करिकै स्वैरलेना॥ अथ शोथपर गदापुरैना क्वाथ॥

गदापुरैना। दारुहल्दी। सोंठि। गुर्च। चीता। भारंगी। देवदारु इनके काथसे हाथ पांव उदर छाती मुखकी सूजन ये सबजायँ॥

अथ अंडवृद्धि सूजनपर त्रिफला काथ॥

त्रिफला के काढ़ेमें गोमूत्र संयुक्तकरि पियेसे बातकफजन्य अंडवृद्धि जाय॥

अथ आंत वृद्धिपर रासन क्वाथ ॥

रासन । गुर्च । वरियारा । मुरैठी । गोखुरू । अरंड इनकेकाढ़े मेंरेंड़ीका तेल मिलाकर पीनेसे आंतवृद्धि मिटे ॥

अथ गण्डमाला पर कचनार क्वाथ ॥

कचनार की छालका काढ़ा सोंठि युक्त करिपीवै तौ गण्ड-माला निस्संदेह नाश होय ॥

अथ पीलपांवपर सहोड़ा क्वाथ ॥

सहोड़ेका काढ़ा गोमूत्र युक्तपीवे तौ पीलपांव और मेदद्दोष निस्संदेह नाश होय ॥

अथ अंतर विद्रधिपर गदापूर्णकाथ ॥

गदापुरैना । वरुण इनका काथ पिये तौ भीतर का फोड़ा वा पिड़की अच्छी होय ॥

अथ वरुणादिगण काथ ॥

वरुणपत्र । मौनासिरी वा विजगुरी । आवेल्लि । चिर्चिरा । चीता । दोनोंअरणी । दोनोंसहिंजन । दोनोंभटकटैया । तीनों कटसरैया । अमुर्समेषशृंगी । चिरायता । बनकुंदुरूका मूल वा पालव । करंज । शतावरि इसवरुणादिगण काथसे मेदद्दोष शुद्धहोय और गुल्म । शिरःशूल । अन्तर्विद्रधि । पीनस ये सब दूरिहोयँ मेदाग्निही प्रसिद्ध है ॥

अथ भगन्दरपर खदिरादि काथ ॥

खैर । त्रिफला का काढ़ा । भैंसका घृत । वायविडंगके चूर्ण संयुक्त पिये तौ भगन्दर निस्संदेह अच्छा होय ॥

अथ गर्मीपर पटोलादि काथ ॥

खैर । त्रिफलाका काढ़ा । पटोल । त्रिफला । वच । चिराय-ता काही । रासन । गुग्गुलके साथ इन औषधोंका काथ पिये तौ सब उपदंश दूरहोयँ ॥

अथ रक्तपित्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या ॥

मोथा । इन्द्रयवका प्रमथ्या दोपल ठंढाकरि मिश्रीयुक्त पिये तो रक्तातीसार नाश होय ॥

अथ यवागू विधान माह ॥

सोलहतोले द्रव्य में उसका सोलहगुणा पानी ले फिर आगिपर रखनेसे जब आधाजल रहिजाय तब द्रव्य छानिकर फेंकि देइ जो पानी रहिजाय उसे यवागू कहते हैं इसपानी में रोगी को पथ्य देते हैं इसप्रकार जो शेषपानीरहा तिसमें पथ्य चुरवै जब रस को सोखले तब देते हैं ॥

अथ यूषकविधि माह ॥

सोंठिका कल्क औषध एकपल तिसमें पीपरि पाँचमाशे प्रस्थभरि पानीमें पचाइ तिसमें अन्न खूब गलाइके दे तौ उसे यूषक कहते हैं ॥

अथ सन्निपातपर सप्तमुष्टि यूष ॥

कुरथी । यव । बेर । मूंग । मूलीकीपेंदी जो पत्तों के पास होती हैं ये सब सूखी द्रव्य इनसबका यूष सोंठि धनियायुक्त पीवै तो कफ । वात नाश होय इससप्तमुष्टिक यूषसे सन्निपात ज्वरजाय आमवात जाय कंठ हृदय और मुख ये शुद्धरहैं ॥

अथ पानादि कल्पना ॥

कूटी द्रव्य पलभर चौंसठपल पानीमें औटे जब आधारहिजाय उस पानीको भक्त कहते हैं इसे भोजनसमयदेना थोड़ा थोड़ा करि देइ ॥

अथ ज्वरतृषापर उशीरादि पान ॥

खस । पित्तपापड़ा । सुगन्धवाला । मोथा । सोंठि । रक्तचंदन इन्हैं पकाइ पानी ठंढाकरि देय तो प्यास ज्वरनाशहोय ॥

अथ उष्णोदक ॥

रातिको उष्णोदक पीनेसे कफ । आमवात । मेदा । बस्तिशोधन । दीपन । श्वास । कास ज्वर ये रोग जाते हैं ॥

॥ अथ क्षीरपाक विधि ॥

द्रव्यको अठगुणा दूध और दूधका चौगुणापानी एकत्रकर औटावे जबपानी जलजाय तब दूधपिये तो आमशूलदूरहोय ॥

॥ अथ अन्नप्रकार ॥

अन्नकोयवागू से छगुणा जलदेकर पकावै उसेकृशओरधना कहतेहैं चावल । मूंग । माष । तिल इनका यवागू यह ग्रहणीको बलदेताहै तृप्तकरै वायु नाश करै और पलभरअन्नमें चौगुणा अन्नपकावै उसे विलेपीकहतेहैं यहअन्न तृप्तकरताहै मनप्रसन्न करताहैप्रियहैमधुरहैओ पित्तनाशकहै ॥ अथ पेय ॥ अन्नको चौदह गुणे पानीमें सिद्धकरै पतला मट्ठा न हो जो पियाजाय उसेपय कहते हैं उससे कुछही गाढ़ेको यूष कहते हैं यह यूषहल्का है ग्रहणीको शुद्ध करताहै धातुपुष्ट करताहै बलकरताहै कंठशुद्ध करताहै लघुपाक है और कफहारकहै ॥

॥ अथ भातविधि ॥

चावलसे चौदहगुणा पानीलेकर उसपानीमें चावलोंको पकावै उसका माड़निकाले सो मीठाहै हलका है उसे भक्तमंड कहतेहैं उसीमें सोंठि सेंधव डारिके पियेतो यह शुद्धमंड दीपन पाचनकरै और अष्टगुण माड़ धनियां । त्रिकुटा सैंधव मट्ठा । तेलभी भुनी हींग तक्रयुक्त माड़का अष्टगुण माड़नामहै प्राणदाताहै बस्तिशोधन रक्तबर्धन ज्वरघ्न सब दोष हरण ॥

अथ यवमंड ॥

यवको कूटि भूनिकर चुरवै उसको वाद्यमंड कहते हैं यह कफ पित्त हरताहै कंठको शुद्ध करताहै और रक्त पित्तको नाश करताहै ॥ अथ जालामंड ॥

धानकालावा । कूटीद्रव्य वा भूजेधानकाबनावे इसकोजाला मंड कहते हैं यहकफ और पित्तकोहरताहै ग्राहीहै और तृष्णा और ज्वरको नाश करताहै ॥

अथ अजीर्णसे उत्पन्नहुये ज्वरपर काथ ॥

पीपरि। पीपरामूल। सोंठि। अजवाइनि। बायबिड़ंग। देवदारु और दोनों कटेली इनकाकाढा देनेसे अजीर्णज्वर दूरहोय अथवा पीपरि। पीपरामूल। सोंठि। मिरच। छोटीहड़। लौंग। धनियां। अमलतास और देवदारु इनद्रव्योंका अष्टावशेषकाढ़ादे तौ ज्वरजाय अथवा सोंचरनोन और बकाइनका काढ़ादे तौ ज्वरजाय अथवा पीपरि। पीपरामूल। गिलोय। सोंठि इनको बराबरले इनका काथ करिदे तौ ज्वरजाय अथवा पीपरि। पीपरामूल। सोंठि। अजवाइन। बायबिड़ंग। देवदारु। चब्य। दोनोंकटेली इनसबको बराबरले काथकरिदेतौ ज्वरदूरहोय ॥

अथ सन्निपात पर काढ़ा ॥

भारंगी। मिरच। सोंठि। कूट। अकरकरा। अतीस। बच। कलौंजी। अंतःमनि। चिरायता। अजमोद। अजवाइन। पीपरामूल। काकड़ाशृंगी। दवागूमी। बायबिड़ंग। दोनों कटेली चाब। चित्रक। पाढ़ा। शालिपर्णी। पृष्ठिपर्णी। आककीजड़ ये सब औषध दोदोटंकले फिर उसके तीनभागकरे और एकभाग को अष्टावशेष काथकरि देतौ १३ सान्निपात दूरहोयँ ॥

अथ सन्निपातपर कायफलादि काथ ॥

कायफल। नागरमोथा। बच। पाढ़ा। पुष्करमूल। पित्तपापड़ा। देवदारु। हड़काकाढ़ा। काकराशृंगी। पीपरि। चित्रक। सोंठि। भारंगी। इन्द्रयव। कुटकी। कचूर। धनियां। रोहिष। बेल। खम्भारी। बहेड़ा। दोनों कटेली। गोखुरू। शालिपर्णी। पृष्ठिपर्णी ये सब औषध दो दो टंकले तीनभागकरे एक भागका अष्टावशेष काथदे तौ सन्निपात। कर्णमूल। हिचकी और पित्त ये सब दूरिहोयँ ॥ अथ बातरक्तपर गुडूच्यादि काथ ॥

गुर्च। रंडकीमूल। रूसा इनका काथ रंडके तेलके साथ पिये तौ सर्वांगप्रवर्ती बात रक्त निश्चयकरिके दूरहोयँ अथवा

परवर। त्रिफला। कुटकी। गुर्च। शतावरि इनका काढ़ा पिये तो बातरक्त दाहयुक्त आरामहोय॥

अथ श्वेतदाग जाने का काढ़ा॥

आंवला। खैरसार इनदोनों का काढ़ा बकुचीचूर्णयुक्त थोड़े दिनोंकेभये कुष्ठपर अभ्यास करि पिये और पथ्य यथावत् करे तो श्वेतदाग निस्संदेह मिटिजायँ॥

अथ वातरक्तकुष्ठपर लघुमंजिष्ठादि क्वाथ॥

मंजीठ। त्रिफला। कुटकी। वच। दारुहल्दी। गुर्च। निंब इनकाक्वाथ पिये तो बात। रक्त। कडू। गलितकुष्ठ। रक्त मंडल ये दूर होयँ॥ अथ सर्व कुष्ठ वृद्धि पर मंजिष्ठादि क्वाथ॥

मंजीठ। मोथा। कुरैया। गुर्च इनको कूटकर सोंठि। भारंगी। भटकटैया। बच। नींब। दोनोंहल्दी। त्रिफला। परवर। कटुकी। मूर्वा। वायबिडंग। रासन। चीता। शतावरि। त्रायमाण। पीपरि। इन्द्रयव। रूसा। भांगरा। देवदारु। पाढ़। खदिरसार। रक्तचन्दन। निशोथ। बरुणा। चिरायता। बकुची। अमलतास। सहोरा। बकायन। करंज। अतीस। खस। इन्द्रारुन। जवासा। सारिवा। पित्तपापड़ा येसब द्रव्य समान लेकर काढ़ाकरि पीपरि। गुग्गुल मिश्रितकरि पिये तो अठारहों कोढ़ और वातरक्तपीड़ा। उपदंश। पीलपांव। शून्यवायु। पक्षाघात। मेदादोष। नेत्र रोग यह वृद्धि मंजिष्ठादि क्वाथ इन रोगों को निस्संदेह नाश करता है॥

अथ शिरोशूल नेत्र पर हरीतकी क्वाथ॥

हड़। बहेड़ा। आंवला। भूनिंब अर्थात् चिरायता। हर्दी। निंब। आंबाहल्दी। गुर्च इसकाढ़े में गुड़मिश्रितकरि पिये तो शिरोशूल। भौंह। कान। आधाशीशी। सूर्यावर्त्त। लेवाड़ी। दंतपात। रोग दंत। रतौंधी। पटल। फूली। नेत्ररोग। नेत्रपीड़ा ये सब दूर होयँ॥

अथ नेत्र रोग पर अरूसादि काथ ॥

रूसा । सोंठि । गुर्च । हल्दी । रक्तचन्दन । चीता । चिरायता । नींब । कटुकी । परवर । त्रिफला । नागरमोथा । यव । इन्द्रयव । कुरैया इनकेकाथ से सर्व नेत्ररोग नाशहोयँ स्वर भंग से कंठ खुजलाना । पीनस । श्वास । कलेजेकाघाव जाता रहै अथवा गुर्च । त्रिफलाका काढ़ा । शहत पीपरि संयुक्त ठंढा करि पीने से सर्व नेत्र रोग विनाश होयँ ॥

अथ तक्षकपर पिप्पलादि काथ ॥

पीपर । गूलर पकरिया । बेर । बेतसइनका काढ़ाकरिघाव धोवै तौ उपदंश अर्थात् गर्मी और घावसूजन सबअच्छेहोयँ अथवा औषधपीसके गोलीबनावै तबअठगुणापानीमें डारिका ढाकरै जब चौथाई पानीरहै तब उतारिले उसेप्रमथ्या कहते हैं इसके पानीकीमात्रा दोपलहै ॥

अथ सन्निपात पर अन्य काढ़ा ॥

भारंगी । सोंठि । मिरच । अजमोद । अजवाइन । हींग । पीपलामूल । काकड़ाशृंगी । दूब । मूंगा । बायविडंग । दोनों कटेली । चाब । चीतेकीछाल । पाढ़ा । शालिपर्णी । पृष्ठिपर्णी । मदारकी जड़ ये सब औषध बराबरले तीनभाग करिएक भाग को अष्टावशेष काढ़ा करिदे तौ सन्निपात दूरिहोय ॥

अथ सन्निपात पर चित्रकादि क्वाथ ॥

चित्रक । पीपलामूल । पीपरि । बच । चाब । सोंठि । अतीस । जीरा । पाढ़ । सरसों । मिरच । कायफल । पुष्करमूल । बायबिडंग । दोनोंकटेली । जवासा । अजबाइन । अजमोद । गजपीपरि । मदारकी जड़ । बकाइनकी जड़ । हींग ये सब औषध ढाई २ टंकले तीन भागकरै एकभाग का अष्टावशेष काथकरि देतौ शीतज्वर दूरहोय और तेरहों प्रकार के सन्निपात जायँ ॥

॥ अथ अतीसार पर क्वाढा ॥

धनियां । सोंठि । नागरमोथा । बेलगिरी । मूंजकीजड़ येसब । औषध पैसा २ भरिलेतीनभाग करि एकभागको अष्टाव शेष काथ देतो अतीसार दूरहोय अथवा सोंठि । अजवाइन । अतीस । हींग । नागरमोथा । बेलिगिरी और गिलोय ये सब बराबरले काथ करिदे तो अतीसार जाय ॥

॥ अथ प्रसूति पर काढा ॥

पीपरि । देवदारु । मोथा । अगर । पीपरामूल । कलौंजी । बायबिडंग ये सब दो दो टंकले काढ़ा करिदे तो प्रसूति रोग अच्छाहोय अथवा देवदारु । वच । कूट । लौंग । पीपरि । सोंठि । कायफल । मोथा । चीतेकीछाल । मूंजकीजड़ । कुटकी । धनियां । हड़ । गजपीपरि । जवासा । अतीस । कलौंजी । गोखुरू येसब औषध पैसा २ भरिले तीनभागकरि एकभागको काढ़ा करि २ रत्तीहींग और २ रत्तीसेंधानिमक डारिकरिदे तो प्रसूति जाय ॥

॥ अथ श्वेत कुष्ठपर काढ़ा ॥

आंबकी जड़ २१ पैसाभरि कोंचकी जड़ २१ पैसाभरि बेर कीछाल २१ पैसाभरि मंजीठ २१ पैसाभरि ये सब बरा बरि ले १ पैसा भरिका काढ़ा २१ दिन पीवै और देह में वायु न लगने पावै तो श्वेतकुष्ठ दूरिहोय ॥

॥ अथ ज्वरका क्वाथ ॥

पहले दिनके ज्वरको सातदिन लंघन कराय के देवदारु । धनियां । छोटी बड़ी भटकटैया और सोंठि येसब दो तोलाले-कर सोरहगुणे जलमें काथकरै पीछे जब चौथाई रहिजाय तब मन्दोष्णहोने पर पान कराय दे तो तीन अथवा पांच दिनमें ज्वर नष्ट होजाय ॥

॥ अथ क्रमेण वातपित्त कफज्वरेषु क्वाथ ॥

वातके तापमें गिलोय । सोंठि । मोथा और धमासा जिसे

जवासा भी कहते हैं इनचारों का काथ पीवै और पित्तकेतापमें चिरायता। कुटकी। मोथा। पित्तपापड़ा और जवासा इनपांचोंका काथ पीवै और कफके ज्वरमें सोंठि। अरूसा। नागरमोथा और जवासा इनपांचोंका काथ पीवै और गिलोय। सोंठि और पीपरा-मूल इनतीनों का काथ वात ज्वरको नष्ट करता है। और गि-लोय। पित्तपापड़ा। मोथा। चिरायता इनका काढ़ा पीने से वात पित्त का ज्वर नष्ट होय॥

॥ अथ अन्य काथ॥

दाख। पित्तपापड़ा। स्योनाक जिसे इलरजन अमलतास कहते हैं कुटकी। मोथा। हड़ इनद्रव्यों का काढ़ा मूर्च्छा। राज-यक्ष्मा। पसीना। प्यास। घबड़ावनी और भ्रांति इनसंयुक्त जो पित्त ज्वर इनको नाश करै और जवासा। कगुनी। चिरायता। कुटकी। अरूसा। पित्तपापड़ा इनछओंका काथ तृष्णा। शरीरमें दाह अश्रु पित्तरोग और पित्तका ज्वर इनको नष्ट करै अथवा गिलोय। आंवरा और पित्तपापड़ा इनका काढ़ा पीनेसे पित्त ज्वर अवश्य नष्टहोय॥ अथ अन्यकाथ॥

रक्तचन्दन। पद्माककीत्वचा। धनियां। गिलोय और नींब इनका काथपीनेसे पित्त और कफ से जन्मा जो ज्वर और प्यास वा वमन वा मन्दाग्नि येसब नष्ट होयँ॥

अथ अन्यकाथ॥

दाह के साथ ऐसे ज्वरमें प्यास होय तो सुगन्धबाला। बीरण मूल अर्थात् खस। मोथा। पित्तपापड़ा। सोंठि और रक्तचन्दन इनका काथकरै जब शीतल होजाय तब उसे पिला देतो ज्वरकीतृष्णा नष्टहोय॥

अथ ज्वरमें मुखका कडूपन जानेका काथ॥

कुटकी का काथ करके जिसको बुखार आताहो दे तौ पित्त ज्वर से हुआ जो कडुआ मुख सो जाय।

अथ मुख रोग और खांसीपर काथ॥

कायफल का तृण अर्थात् रामकर्पूर। मोथा। धनियां। काकड़ाशृंगी। बच। हड़ जिसमें पांचरेखा हों भारंगी। पित्त पापड़ा। सोंठि। देवदारु। इनग्यारह औषधों का क्वाथ करके छानले पीछे उसमें चारिमाशे हींगभूनकर उसेपीसिले और दो तोले शहत इनदोनों को क्वाथमें गेरके जो पीले तो खांसी श्वासरोग मुखके रोग और ज्वरका वेग तथाकफकीवृद्धिऔर कण्ठकी पीड़ा ये सब उसकी नष्ट होजायँ॥

अथ बुद्धिभ्रंस पसीना शीत और अनर्थ बोलनेपर काथ॥

पीपरामूल। इन्द्रयव। सेहुंड़ अथवा देवदारु। गुग्गुल। बायबिड़ंग। भारङ्गी। दालचीनी। सोंठि। मिरच। पीपरि। चीता। कायफर। पुष्करमूल। रासन। जैतकेबीज। हड़। दोनों कटहरी। अजवाइन। जटामासी। चिरायता। घुड़बच। चाब औरपाढ़ा इन बीस द्रव्योंका काढ़ा पीने से सकल सन्निपात बुद्धिभ्रंस। पसीना। शीतका लगना। अनर्थकाबोलना। शूल अधोबायु रुकने से पीड़ाके साथ पेटफूलना। हृदयकाविस्फोटक। कफयुक्त वायु और प्रसूति वायुके सबरोग नष्ट होयँ॥

अथ प्रसूता वातव्याधिहरण काथ॥

अर्कमूल। जवासा। चिरायता। देवदारु। रासन। जैतके बीज। सँभालू। घुड़बच। अरणी। सहिंजना। पीपरामूल। पीपल। बच। चीता। सोंठि। अतीस। भांगरा इनसोलहऔषधों का काथदुःसह सन्निपात के ज्वरोंको धनुर्वायुकोदांतोंके बन्धको शीतके असह्यो ऐसेशरीरके कांपनेको कासऔरश्वास को और प्रसूता स्त्रीके बातव्याधिको हरणकरै॥

अथ सकल सन्निपातपर काथ॥

कुटकी। चिरायता। पित्तपापड़ा। गिलोय। कचूर। रासन जैतकेबीज। पीपरि। पुष्करमूल। त्रायंती अर्थात् त्रायमाण

बहुला। भटकटैया। देवदारु। सोंठि। हड़। जवासा और भारंगी इनपन्द्रह औषधीं के क्वाथके पीने से सारे सन्निपात दिनकी नींद रात्रिकाजागना प्यास मुखका सूखना तथादेहका दाह खांसी और सब प्रकारके श्वासके रोग नष्ट होयँ॥

अथ हिचकी प्यास वमन और जलनपर काथ ॥

रक्तचन्दन। खस दोनों। कुटज की छाल। पाढ़ा जिसे पर्वती पपैडू कहैहैं कमल। धनियां। गिलोय। चिरायता। मोथा। सुगन्धबाला। बेलगिरी। अतीस और सोंठि इनका क्वाथ पीनेसे हुचकी। प्यास। वमन। जलन। अन्तमें अरुचि और सब भांतिके अतीसार ये रोग जायँ॥

अथ पंच मूलादि क्वाथमाह॥

लघुपंचमूली। पाढ़ा। मोथा। बरियारा। इन्द्रयव। कुटज की छाल। खस। कुटकी। गिलोय। सोंठि। बेलगिरी इन पन्द्रह औषधों का काढ़ा। वमन। खांसी। श्वास और शूल इनके साथ ज्वरातीसारको दूरकरै॥

अथ शोकातीसार क्वाथ॥

देवदारु। अतीस। पाढ़। विड़ंग। मोथा। मिरच और कुटज कीछाल इनका क्वाथ पीनेसे शोकसे भयाजो अतीसार वहचला जाय अथवा सुगन्धबाला। बेलगिरी। मोथा। धनियां और सोंठि इन पांचोंका क्वाथभी अतीसारको दूरकरताहै अथवा धनियां। सुगन्धबाला। बेलगिरी और मोथा इन पांचों का क्वाथ करके शीतल होय तब पीवै तो अतीसार रोग नष्टहोय॥

अथ श्वासहरण क्वाथ॥

बांसा। हल्दी। पीपरि। गिलोय। भारंगी। रुद्रजटा। सोंठि कटहलीकीजड़ इन आठोंका काढ़ाकरै उसमें पीसीहुई मिरच डालकर पीवैतो श्वासका रोग शान्त होय अथवा सोंठि का काढ़ा भी पीनेसे श्वासरोग शान्त होताहै॥

अथ कासहरण काथ॥

पीपलका चूर्ण मिलायकरि कटेहली की जड़के बकल का काढ़ा पीने से कास का रोग शीघ्रही दूर होता है अथवा सोंठि और भारंगीका काढ़ा पीवे तौ कास और श्वास दोनों रोग दूर होयँ॥

॥ अथ बालातीसारेषु काथः॥

धवईके फूल। लोध। बेलगिरी। मोथा। मंजीठ और सुगंधवाला इन पांचोंका क्राथ वा चटनी पिलाने अथवा चटाने से बालकके अतीसारको दूर करैहै॥

अथ फांटमाह॥

कुटीहुई द्रव्यपलभर एककुड़व पानी मिट्टीके पात्रमें अच्छी तरह तप्तकरि उतारिले फिर उस कुटीहुई द्रव्यको उष्णोदक में डारिढकदे जब ठंढाहोय तब छानिलेइ इसे फांट कहते हैं इस फांटकी मात्रा आठ रुपयेभरि है और मिश्री शहत पुरानागुड़ इसमें उसी प्रकारसे पड़ताहै जिस प्रकारसे काढ़ेमें डालना कहा है॥

अथ पित्तज्वरपर मधुकफांट॥

महुआ। मुरेठी। फालसा। चन्दन। कमलनील। लोध। नागकेसरि। त्रिफला। सारिवन। दाख। लावा। तप्तवारि में डाल मिश्री शहत संयुक्त पिलावै इस फांट वा हेमसे बातपित्त ज्वर। दाह। प्यास। मूर्च्छा। मतिभ्रम। रक्त पित्त। मद ये सब दूर होयँ इस कार्य में कुछ विचार नहीं॥

॥ अथ प्यासपर आमादि फांट॥

आम। जामुनकी कोंपल। बट। डिंगसा और जटा। खस इनका फांटकरि पिये तौ ज्वर। प्यास। छर्दि। अतीसार मूर्च्छा ये सब रोग निस्संदेह दूर होयँ॥

अथ पित्त तृषापर मधुक फांट॥

महुआ। चन्दन। खंभारी। खस। धनियां। सुगंधबाला।

दाख इनकाफांट शक्कर मिलाकरपिये तौ तृष्णा । दाह । मूर्च्छा श्रम ये सब जायें ॥

अथ मंथफांटभेदमाह ॥

द्रव्यको चौगुनाजल मिट्टीके पात्रमें डारिकेमथै उस पानी को छानि दो पल पिये और खजूर । अनार । दाख । तितड़ी । आमिली । आंवला ॥ फालसे इनका मंथ सकल मदनाशक है ॥

अथ वमकाई पर मसूरख्यादि मंथ ॥

मसूरिका । सतूश । शहत । दाड़िमरस इनका मंथ पिलावै तौ सन्निपात जनित छर्दिजाय ॥

अथ तृष्णापर यवमंथ ॥

यवका सत्तू ठंढेपानीमें मथे बहुत गाढ़ा न हो पिये तो तृष्णा दाह रक्तपित्त इन सबको यह दूर करता है ॥

॥ अथ हेममाह ॥

कुटीहुई द्रव्य पलभर छः पल जलमें सांझको भिगोय राखे प्रातसमय निचोड़िकरि छानले इसको हेमकहते हैं और कोई २ शीतकषायभी कहते हैं इसकी मात्रा भी फांटकी तरह दो पल है यह सर्वत्र निश्चय जानो ॥

अथ रक्तपित्त पर आम्रादि हेम ॥

आम्र । जंबू । अर्जुन इनको कूटकरि पानी में भिगोवे फिर उसकाहेम प्रातसमय शहत मिलायकरिपीवे तौ रक्तपित्तजाय ॥

अथ तृष्णापर मरीच्यादि हेम ॥

मिरच । मुरैठी । कठगूलरकी कोंपल । नीलकमल इनका हेमकरि पीने से तृष्णा छर्दि आदिरोग नाश होते हैं ॥

अथ पित्तपर नीलकमलादि हेम ॥

नीलकमल । वरियारा । दाख । महुआ । मुरैठी । खस । पद्माक । खंभारीफल । फालसा यह शीतकषायके पीनेसे हेम वातपित्त ज्वरप्रलाप श्रम छर्दि मोह तन्द्रा येसबरोग दूरहोयें ॥

॥ अथ जीर्णज्वरपर गुडूच्यादि हेम ॥

गुर्चकाहेम पीनेसे जीर्णज्वर नाशहोताहै और बासाअर्थात् रूसाके हेमको पानकरनेसे पित्तज्वर दूरहोता है और कास रक्तनाश होताहै और धनियांका हेम शक्कर डालि पीनेसे अंतर दाह तृषणा मूत्रावरोध ये सब रोग नाश होतेहैं ॥

अथरक्तपित्तपरधनियांहेम ॥

धनियां। आंवला। रूसा। दाख। पित्तपापड़ा इसके हेमसे रक्त पित्तज्वर दाह तृषा कंठशोष येसबरोगनिस्संदेहनाशहोयँ॥

अथकल्कमाह ॥

सूखी द्रव्यको जलमें पीसै ओदीनिर्जल तिसे कल्क और प्रक्षेप कहतेहैं इसकी मात्रा दशमाशेहै कल्कमें मधु। घृत। तेल मात्रा से दूनादेना मिश्री। गुड समानमात्राके प्रतिओद्री पत्ली चौगुणी ॥

अथपांडु पर वर्द्धमान पीपरि ॥

पीपरितीन वा पांच वा सात बढ़ावै और जे पीपरिसे आरंभ करै तैप्रतिदिन बढ़ावै फिरदश दिनतक उतनी प्रतिदिन घटावै इसप्रकार से बीसवें दिन प्रथम दिनकी मात्रा पूरीकरै योंवर्द्ध मान पीपरि सिद्ध करनेसे पांडु बात कास श्वास अरुचि उदर विकार क्षयी कफ बात छाती जकड़ना येसब दूरहोयँ और जो पानी वा दूधके साथ पिया चाहै तो तीन दिनतक दो अथवा तीनतोले दूध लेना फिर कल्क से चौगुणाले ॥

॥ अथ घावपरनिम्बकल्क ॥

नींबपत्रकी लुगदी घावपरलगावै उससेघाव साफहोपूरता है जहांलुगदी लगसकै और जहां लुगदी न लगसकै उसेघाव नहीं कहते वह नासूरहै और उसकी विधि दूसरीहै और खाने से छर्दि सर्वकुष्ठ पित्त क्रम क्रमसे अच्छे हों ॥

॥ अथ गृध्रसीपर बकायदन कल्क ॥

बकायनकी जड़कीछालका कल्कगृध्रसी वायुकोदूरकरता है

और एक लहसुन को पित्थीकरि उसमें तिलका तेल मिश्रित करिखाय तौ तीव्र वात विषमज्वर नाशहोय ॥

अथ वातरोगपर दूसरा कल्क ॥

पक्के लहसुनके जवा छीलकर भीतरके अंकुर निकाल तक्रमें डारि रात्रिभरराखे तो उसकी दुर्गंधजाय फिर तक्र से निकाल पीसकर पंचमांश इस चूर्णको जो आगे कहतेहैं सो डाले वह चूर्णयहहै कालानमक। अजवायन। भूनीहींग। सेंधव। त्रिकुटा। जीरा इन सब को बराबर कूटले यह चूर्ण और लहसुन की लुगदी मिलायकरि दशमाशे खाय तौ अग्नि प्रबलहोय रोगी की शक्ति बिचारि ऋतु अनुसार मात्रा दे अनोपान रेंडकीजड़ की छालकाकाढ़ा सर्वांग व एकान्त बात मृगी उन्माद गठिया गृध्रसी छाती पीठ करिहांव पसुरी कोख पीड़ा और कृमिदोष नाशहोयँ और रोगी को उचित है कि लघुभोजन घाम त्याग अक्रोधजल थोड़ा पिये दूध और गुड़का त्यागकरे और इस औषध का भोगी पथ्य शराबमांस और खटाई खाय ॥

॥ अथ ऊरुस्तंभ पर पीपलादि कल्क ॥

पीपरि। पीपरामूल। भिलावेकी लुगदी शहत से युक्त करि दे तौ गठिया निस्संदेह दूरहोय ॥

अथ परिणाम शूलपर विष्णुक्रान्ता कल्क ॥

विष्णुक्रांता की जड़ का कल्क मिश्री शहत और घी युक्त सात दिन पिये तौ परिणाम शूल जाय पुनः सोंठि। गुड़। तिल दूधमें पीसे इसकल्कसे परिणामशूल मिटै और आमवातजाय॥

अथ रक्तार्शपर चिर्चिरादि कल्क ॥

चिर्चिरा का चावल। चावलके धोवनमें पीसकर पिये से रक्तार्श दूरहोय॥ अथ रक्तातीसार पर बेर कल्क ॥

बेर। मूलकीछाल। तिलका कल्क। शहत और दूधमें पिये से रक्तातीसार निश्चय नाश होय ॥

अथ रक्तक्षयी पर लाहीकल्क॥

एक कर्षलाही। पेठा के रसमें पीसकर पिये से रक्तक्षयी छाती क्षत क्षय निस्सन्देह जाय॥

अथ रक्तप्रदर पर चौराई कल्क॥

चौराई की जड़ चावल के धोवन में पीस कर शहत और रसौतके साथ पिये तौ रक्त प्रदर दूरहोय॥

अथ अतीसार पर अंकोल कल्क॥

अंकोल की मूल की छाल को चावल के धोवन में पीसकर शहत डारि कर पिये तो अतीसार और विष ये दूर होयँ॥

अथ विषपर खिखसा कल्क॥

खिखसा वा सिरस मूल वा बेर मूल का कल्क घीके साथ खाने से विष नाश होय॥

अथ दीपन पाचनपर हरीतकी कल्क॥

हड़। सोंठि। सेंधव। पीपरि का कल्क तीनों दोषों को निस्सन्देह हरताहै॥ पुनः॥ हड़। सोंठि। सेंधवका कल्क दीपन और पाचनहै॥

अथ कृमि पर निसोत कल्क॥

निसोत। पलाश। बांदा। खुरासानी अजवाइन। कबीला। वायविड़ंग इन सबको समान ले मट्ठे के साथ खानेसे कृमि रोग बहुत शीघ्र दूरहोय और नेनू। मिश्री। नागकेसरकेकल्क से रक्तार्शनाश होताहै और मसूड़का काढ़ाहुआ यूष चेलफल इनका कल्क उस यूष के साथ पीनेसे संग्रहणी नाश होयऔर भटकटैया फल का कल्क मट्ठे के साथ पीने से संग्रहणी नाश होती है॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंह जीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेस्वरसादिभेदेनअनुभूत क्राथकल्पनानामैकोनत्रिंशतिस्तरंगः २९॥

अथ नवदुर्गा चूर्ण ॥

अनारदाना ५। जीरास्याह १५ माशे जीरासफ़ेद ३० माशे सोंठि १५ माशे तंतरीक १५ माशे हड़का बकला १५ माशे छोटी हड़ १५ माशे निसोत १५ माशे लाहौरीनोन ३ माशे इन सब औषधों को कूट पीस कपड़ छान करि चूर्ण बनावे फिर नित्य भोजन के पश्चात् तीन माशे खाय तौ मन्दाग्नि जाय और भूंख बढ़ै ॥ अथ दूसरा चूर्ण ॥

पोस्त। हड़। सौंफ। सोंठि। इन सबोंको बराबर ले फिर सौंफ़ और हड़ को घृत में खाली भून ले और फिर उन दोनों को भी मिलाय दो पैसा भरि मिश्री मिलावे फिर दो पैसाभरि नित्य पांच दिन तक ठंढे पानी से खावे तौ आंव लोहू और मरोड़ा सब दूर होयँ॥

अथ तीसरा चूर्ण ॥

हड़। आंवले। चीता। पीपरि। सेंधानोन इनपांचों औषधों को बराबर ले फिर कूट पीस चूर्ण बनावे फंकी गर्म पानी से करै तौ सब उदर विकारों को दूरकरै और पाचन करै भूंख बढ़ावे ॥ अथ बाईका चूर्ण ॥

सोंठि। पीपरि। सनाह। हड़। बहेड़ा। आंवला। चीता। सेंधानमक। सांभर नमक। खारी नमक। काली मिर्च। निसोत। पोदीना। सौंफ। अनारदाना। हींग १ माशे अजवाइन। अजमोद। मेथी। तेलियासुहागा। सिवाय हींगके और सब दवाइयां छःमाशे ले फिर सबको कूट पीस नीबू और अदरक के रसमें गोली बनावे फिर एक तथा दोनित्य खाय तौ वायु के सब विकारों को दूरकरै ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

सोंठि २ माशे सुहागातेलिया २ माशे पीपरि २ माशे काली मिरच २ माशे हड़ ६ माशे पांचोंनोन ५ तोला अजवाइन ६

माशे इन सब औषधों को ले फिर कूट पीस सहंजने के रस में गोली बांधे फिर एक तथा दो नित्यखाय तौ चौंसठ वायु दूरकरै॥

अथ अग्निदीपक चूर्ण॥

पारा १ टंक सुहागा २ टंक गन्धक १ टंक मीठातेलिया ३ टंक शंख ४ टंक कौड़ी जर्द जली हुई ४ टंक सोंठि १ टंक काली मिर्च १ टंक नींबू के रसमें सात पुट देकर मूंग बराबर गोली बांधे फिर नित्यखावै तौ अजीर्ण मंदाग्निको दूरकरै क्षुधा को बढ़ावै और अर्द्धांगशूल विशूचिका इनसबरोगोंको दूरकरै॥

अथ नागरादि चूर्ण॥

सोंठि। मोथा। अजवाइन। जावित्री। तज। पत्रज। श्वेत जीरा। कालाजीरा। पीपरि। कालीमिर्च। जायफल। आंवला चीता। लौंग इनसब औषधों को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै नित्य खाय तौ अनेक गुण करै॥

अथ अमृत चूर्ण॥

हड़। बहेड़ा। आंवला। सोंठि। कालीमिर्च। पीपरि। लौंग जावित्री। वायबिड़ंग। जायफल। सफेद जीरा। धनियां। अजवाइन। अनारदाना। पांचों नोन। इन सब औषधों को बराबरले कूटपीस छान चूर्णबनावै फिरि नित्यखाय तौ बहुत गुण करै॥

अथ ज्वर का चूर्ण॥

आंवले। चीता। हड़। पीपरि और सेंधानमक इन सब को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै गर्म पानी से फंकी करै तौ सब ज्वरों को दूर करै॥

अथ आमवात और शूल का चूर्ण॥

सोंठि। हड़। वायबिड़ंग। सेंधानमक। पीपरि इन सब को कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर टंक प्रमाण खाय तौ तीनदिन में आमवात जाय॥

अथ हिंग्वष्टक चूर्ण॥

हींग १ तोला अजमोद ३ तोले जीरा३ तोले सोंठि ३ तोले

कालीमिर्च ३ तोले पीपरि ३ तोले सेंधानोन १ तोले सांभरनमक १ तोला इनसब औषधों को कूट पीस छानचूर्ण बनावै फिर भोजनके ग्रासमें घृत और चावलकेसाथ खायतो शूल अर्द्धांग और अजीर्ण सब रोगों को दूर करै और भूंख बहुत लगावै ॥

अथ वायुका चूर्ण ॥

सोंठि। मिरच। पीपरि। हड़। सहँजने के बीज। लौंग इन सब औषधों को एकत्रकरै सहँजने के रसमें गोली बेरप्रमाण बांधे फिर नित्यखाय तो चौंसठ वायु और बहत्तर शूलों को दूरकरै ॥

अथ वायुका दूसरा चूर्ण ॥

पीपरि। सौंफ। लौंग। लोटक सज्जी। सोंठि। सेंधानोन इनसब औषधों को तोले तोलेभर लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर नित्यखाय तो वायुको दूरकरै ॥

अथ वायुका तीसरा चूर्ण ॥

लौंग। इलायची। तज। पत्रज। तगर। कंकोल। काला अगर। नागकेसरि। जायफल। सोंठि। जावित्री। सफेदजीरा। स्याहजीरा। सौंफ। पीपरि। मिरच। पुष्करमूल। नरकचूर। हड़। बहेड़ा। आंवला। चीता। तालीस। देवदारु। धनियां। अजवायन। मुरैठी। बंशलोचन। अजमोद। काकड़ाश्रृङ्गी। पीपरामूल। भूनी हींग। मोथा। अतीस। शतावरि इन सब औषधों को तोला तोला भरलेकर पीसछान चूर्ण बनावै उस में बराबरकी मिश्री मिलावै फिर प्रातसमय नित्यखाय तो वायु को दूर करै और भी अनेक गुण करै है ॥

अथ सुदर्शन चूर्ण ॥

हड़। बहेड़ा। आंवला। सोंठि। कालीमिरच्च। पीपरि। हल्दी। दारुहल्दी। गिलोय। कूट। मोथा। जवासा। काकड़ाश्रृंगी। कटहरीकीजड़। पीपरामूल। कचूर। बच। पुष्करमूल। मुलहठी। कुड़ाकीछाल। सौंफ। कमलगट्टा। इन्द्रयव। देवदारु। मंजी

८। पद्माक। खस। तज। गोखुरू। सालिममिश्री। अजवायन। अतीस। वेलगिरी। पत्रज। चीता इन सब औषधों को तोला तोलाभरले पीसकूट छान चूर्णबनावै फिर गरमजलसे फंकीकरै तो सर्वज्वरोंको दूरकरै और सन्निपात अजीर्ण और शूल बिरेचिका भी जाय॥

अथ लवंगादि चूर्ण॥

लौंग। अगर। कपूर। कमलगट्टा। सफ़ेदचन्दन। स्याहजीरा। सफ़ेदजीरा। खस। इलायची। मोथा। जटामासी। तगर। वंशलोचन। पीपरि। कंकोल। कालीमिरच। जायफल। तज। नागकेसर इन सब औषधों को तोला तोलाभरले कूट पीस छान चूर्णबनावै और आधी मिश्री मिलावै फिर ३ माशे नित्य फंकीकरै तो इतने रोगजायँ मन्दाग्नि १ त्रयोदशबायु २ पित्त कफ ३ कंठरोग ४ कास ५ श्वास ६ अतीसार ७ गुल्म ८ प्रमेह९ और संग्रहणी १०॥ अथ भास्कर चूर्ण॥

पीपरि। पीपरामूल। सांभरनोन। सेंधानोन। कालानोन। कचनोन। तनिहारीनोन। सफ़ेदजीरा। स्याहजीरा। बायबिड़ंग। पत्रज। तालीस। चब्य। कालीमिरच। सौंफ। तज। इलायची। अनारदाना इनसब औषधों को ले कूटपीस छान चूर्णबनावै फिर नित्यखाय तौ उदरके सबबिकारोंको दूरकरै औरगरमजल सों फांकै तो अजीर्ण सन्निपातजाय॥

अथ चन्दनादि चूर्ण॥

चन्दन। लौंग। कपूर। अगर। कमलगट्टा। सफ़ेद जीरा। स्याहजीरा। अनारदाना। कालानमक इनसब औषधों को तोले तोलेभरले कूटपीस छान चूर्णबनावै फिर नित्य खाय तौ उदरके सर्वविकारोंको दूरकरै॥

अथ गंगाधर चूर्ण॥

मोथा। सोंठि। इंद्रयव। धवईकेफूल। लोध। मोचरस। पे-

ठेकेबीज। राल। लजालूकी जड़। अतीस। पोस्त इनसब औषधोंको तोला २ भरिले कूटपीसछान चूर्ण बनावे फिर चावलके धोवनके साथ फंकीकरे तो पेटकेरोग अतीसार संग्रहणी दूर होयँ॥

अथ नागकेसरादि चूर्ण॥

नागकेसर। चन्दन। लोध। खस। बेलगिरी। मोथा। इंद्रयव। सोंठि। अतीस। धायकेफूल। सौंफ। तीनबर्षकी आंबकीपुरानी गुठली। जामुनिकी गुठिली। सोंचरनोन। कमलगट्टा। मंजीठ। छोटी इलायची। अनारदाना। तज इनसब औषधोंको तोला तोलाभरिले कूट पीस छान चूर्णकरिके मिश्रीमिलावे फिर चावलके धोवनेसे फांके तो संग्रहणी अर्श बवासीर अतीसार ये सब रोग नाशहोयँ॥

अथ दूसरा चूर्ण॥

चीता। हड़। बहेड़ा। आंवला। बायबिड़ंग। पोलादसार इनसब औषधों को तोला तोलाभरिले कूटपीसछान चूर्णकरै फिर ३ माशे शहतमें ३ माशे चूर्णमिलाय खावे तो भगन्दर बवासीर मन्दाग्नि अरुचि और अनेक रोगोंको दूरकरै॥

अथ पुरुष चूर्ण॥

अकरकरहा। सोंठि। कंकोल। केसर। पीपरि। जायफल। लौंग। चन्दन। अफीम माशे भर या ६ रत्ती और इनसब औषधों को तोले तोले ले चूर्णकरि शहतसों संध्यासमय खाय औ रात्रिको स्त्रीसेवनकरै तो अतिपुष्ट बंधेजहोवे॥

अथ कर्पूरादि चूर्ण॥

कपूर। तज। कंकोल। जावित्री। लौंग। नागकेसरि। सोंठि। कालीमिरच। पीपल इनसब औषधों को तोला तोला भरले पीसकूट छान चूर्ण बनावे मिश्री बराबरकी मिलावै फिर तोला भर नित्यखाय तो श्वास कास गुल्म छर्दि इन सब रोगों को नाश करै॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस। सोंठि। पीपरि। कालीमिरच। वंशलोचन। छोटी इलायची। तज। खस इनसब औषधों को तोलातोलाभरि ले कूट पीसछानचूर्णबनावै बराबर की मिश्री मिलावै फिर जलसों फांके तौ इतने रोगोंकोनाशकरै कास श्वास तप संग्रहणी अतीसार॥

अथ अजवायनादि चूर्ण ॥

अजवायन। तंतरीक। सोंठि। कालीमिरच। पीपरि। अमलवेत। अनारदाना। सोंचरनोन। जीरा। बायविडंग इन सब औषधों को तोला तोलाभरले कूट पीस छानचूर्ण बनावै फिर ३ माशे नित्यखाय तो जिह्वारोग हृदयकारोग इतनेरोग जायँ पार्श्वरोग पसलीकाशूल कुष्ठ कास श्वास संग्रहणी रक्तविकार॥

अथ वाय खांडव चूर्ण ॥

धमासा। जवाखार। सोंठि। कालीमिरच। पीपरि। पेठेके बीज। हड़। बहेड़ा। आंवला। लोध इन सब औषधों को तोले तोलेभरले कूट पीस छान चूर्णबनावै शहतसेखायतौ कंठ के सबरोगजायँ॥

अथ इलायची का चूर्ण ॥

इलायची। लौंग। नागकेसरि। झड़बेरी की मींगी। धान। की खील। तज। नागरमोथा। चंदन। पीपरि। भूनी हींग। गेरू। हड़। नारियल के जटाओंकी राख। तुलसीपत्र इनसब औषधों को एक एक तोला पीस कूट छान चूर्ण बनावै और शहत से चाटै तो त्रिदोषकी छर्दि नाशकरै॥

अथ सरस्वतीचूर्ण ॥

कूट। अजमोद। असगन्ध। सफ़ेदजीरा। स्याहजीरा। सोंठि। पीपरि। कालीमिरच। हल्दी इन सबको एक २ तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै शहतसे चटावै तो बुद्धि निर्मल होय विद्याआवै॥

अथ सिद्धार्थ चूर्ण ॥

सफ़ेद सरसों। वच। भूनीहींग। करंज के बीज। देवदारु

मंजीठ। हड़। बहेड़ा। आंवला। सफेदचमेलीकीछाल। मालकांगनी। तज। सोंठि। कालीमिरच। पीपरि। हींग। सिरसकी छाल। हल्दी। दारुहल्दी इनसब औषधों को एक एक तोला ले कूटपीस छान चूर्ण बनावे गौके मूत्रसे खाय तौ इतने रोग जायँ सन्निपात। आठौज्वर॥

अथ पेटके दुःखका चूर्ण॥

पटोल। हल्दी। वायबिड़ंग। हड़। बहेड़ा। आंवला। कमलगट्टा। नीलकी जड़। निसोत इन सब औषधों को एक एक तोलाले कूटपीस छान चूर्ण बनावे दूधसे फांके तो पेटका दुःख दूरहोय॥

अथ निंबादिकचूर्ण॥

नींबकी कोंप। नींबकी छाल। नींबके फूल। नींबकी जड़। नींबकाठा। हड़। बहेड़ा। आंवला। सोंठि। कालीमिरच। पीपरि। भारंगी। गोखुरू। पुष्करमूल। चीता। बिड़ंग। बिदारीकंद। सारकुस्ता। गिलोयकासत। हल्दी। दारुहल्दी। बावची। कूट। इन्द्रयव इनसबको तोलातोलाभर ले एकत्रकरि बिजयसारकी ७ पुटदे और फिर भंगराके रसकी ७ दे फिरखायतो रक्तपित्त रक्तवायु भगंदर नाड़ीव्रण मुखकारोग और दुःख और भी अनेक रोग दूरकरे॥

भृङ्गादिक चूर्ण॥

काकड़ाशृंगी १ तोला निगन्ध १ तोला त्रिफला ३ तोला खरेटीकीजड़ १ तोला भारङ्गी १ तोला पुष्करमूल १ तोला नोन ५ तोला इन सबको एकत्रकरि कूटपीस छानचूर्ण बनाय फिर गरम जलसों फंकीकरे तो इतनेरोग जायँहड़फूटन पीनस नजलाबायु और शरीरके दुःखोंको दूरकरे॥

अथ पथरीमूत्रकृच्छ्रकाचूर्ण॥

बड़कीजटा। पीपलकीजटी। खस। चीता। पुरानी आँब की गुठिली। जामुनकी गुठिली। चिरौंजी। आलूबुखारा। धौं

कागोंद। महुआ। मुलहठी। लोध। बरनेकीछाल। नींबकीकोंपल। पवाड़कीजड़। हड़। इन्द्रयव। भिलावां इन सबको एकत्रकरि पीस छान चूर्ण बनावै शहतकेसाथखाय तौमूत्रकृच्छ्र और पथरीजाय॥

अथ अग्निमुखचूर्ण॥

चीता। पाढ़ा। लोटकसज्जी। जवाखार। करंजके बीज। समुद्रफेन। इलायची। पद्माक। भारङ्गी। विड़ंग। पुष्करमूल। नरकचूर। दारुहल्दी। निसोत। मोथा। बच। इन्द्रयव। झाउबेर। अनारदाना। त्रिकुटा। भिलावां। अजमोद। अजवाइन। देवदारु। अतीस। हड़। तिलकाखार। सहंजनेकाखार। बावचीकाखार। ढाककाखार। कीटीकुस्ता इनसब औषधोंको तोला २ भरिले एकत्र करि अदरक के रसमें १२ पहर खरल करै फिर दूधकेसाथ फांकेतो गुदाकेसबरोगजायँ भोजन दूधभात करै॥

अथ भगन्दरविजयचूर्ण॥

त्रिकुटा। बच। हींग। पाढ़ा। जवाखार। सज्जी। हल्दी। हड़। चिरायता। इन्द्रयव। चीता। गजपीपरि। नमक। पीपरामूल। विड़ंग। अजमोद। त्रिफला। सफेद जीरा। स्याहजीरा इनसबऔषधोंको एकएकतोलाले एकत्रकरि कूट पीस छान चूर्णकरै फिर ताते पानीकेसाथ खायतौ बायु। शोथ। अर्श। भगन्दर। हृदयशूल। पार्श्वशूल। अरुचि। प्लीह। प्रमेह। कमलबायु। पांडुरोग। आमवात। संग्रहणी। प्रसूति इनसबरोगों कोदूरकरै॥

अथ अतीसारका चूर्ण॥

समुद्रसोख। सांठी। राल। माजू। पत्रज। जायफल। छोटी इलायची। सेलखड़ी। बेलगिरी इनसब औषधों को तोला २ भरले एकत्रकरि कूट पीस छानचूर्ण बनावै फिरपानीसे फंकी करैतौ अतीसारजाय॥

अथसंग्रहणी औरअतीसारकाचूर्ण॥

कालीमिरच। पीपल। तमालपत्र। पीपरामूल। इलायची।

दालचीनी। जायफल। नेत्रबाला। बंशलोचन। चन्दनइनसब को एकत्रकरि तोले तोले भरले कूटपीस छानचूर्ण बनावै फिर २ मांशे नित्यकी फंकीकरै तौ संग्रहणी पुराना ज्वरअतीसारस- ब दूरहोयँ॥

॥ अथ वायुशूलकाचूर्ण ॥

बड़ी हड़ का बक्कल। सोंठि। सनाय। गुजराती। निसोत। पुरानी सौंफ। स्याह नमक इनसब औषधों को पैसा २ भरि ले एकत्रकरि कूटपीस छानि चूर्णकरि तातेपानीसे फंकीकरैतो तत्काल बायुगोलाजाय पथ्य मूंगकी दाल भात या रोटी या खिचड़ीखाय और चीजोंसे परहेजकरै॥

॥ अथ कालचूर्णकीविधि॥

सोंठि १। पीपरि १। कालीमिरच १। सफेदजीरा १। स्याह जीरा १। हींग १। सेंधानमक १। सांभरनमक १। कचनमक १। अमचूर सेर भरि। चूक ऽ। भरि सबको एकत्र करि चूर्ण बनावै खायतौ पाचनशक्ति उत्पन्नकरै॥

॥ अथ शीतज्वरका चूर्ण ॥

पीपरि। सोंठि। गिलोय। पीपरामूल। इनका चूर्ण करि जलसों फंकी करै तो शीतज्वर दूर होय॥

॥ अथ तालीसादिचूर्ण ॥

तालीस। तज। पत्रज। इलायची। नागकेसरि। सोंठि। मिरच। पीपरि। पीपरामूल। सारिवाके बीज। त्रिफला। जाय- फल। जावित्री। पुष्करमूल। चीतेकीछाल। दोनों अजवाइन। असगन्धनागोरी। नागरमोथा। बंशलोचन। दोनोंजीरे। क- लौंजी। धनियां। काकड़ाशृंगी। सार। बंग येसबऔषध दोदो टंकले एकत्रकरि कूट पीसछानि ऽ॥ कच्चीखांड़मिलाय बासन में धर रक्खे फिर टकाभरिमात्राखाय तौ ज्वरजाय पित्तपचि- जाय भूखलगै खांसीजाय और बलबढ़ै पुष्टता होय॥

अथ तुम्बुरुआदिचूर्ण ॥

तुम्बुरु । सोंचरनमक । सारिवा । अजमोद । जवाखार । पीपरि । मिरच । बच इनसब औषधों को तीन तीन टंकले एकत्रकरि पीसकूट कपरछान चूर्णबनावै फिर अधेलाभरि गरम पानी के साथखाय तौ सातप्रकारके ज्वर दूरहोयँ ॥

अथ गुडूच्यादिचूर्ण ॥

गिलोय । तेजबल । अतीस । मोथा । पीपरि । काकड़ाशृंगी । इनको बराबर चूर्णकरि मद्धके साथ दे तौ ज्वर । खांसी । अतीसार ये सब रोगजायँ ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस । ब्रह्मदण्डी । सोचरस । सोंठि । वंशलोचन । गजपीपरि । इलायची । तज येसब औषध टकाटकाभरिले चूर्ण करि ३२टकाभरि खांड़ मिलाय अधेलाभरि खायतौ ज्वरखांसी मस्तकशूल अजीर्ण ये सब रोगजायँ ॥

अथ अतीसारपर चूर्ण ॥

अतीस । गजपीपरि । कुड़ाकीछाल । जायफल । इलायची । मोचरस । बेलगिरी । धायकेफूल । नागरमोथा । काकड़ाशृंगी । सुगंधबाला ये सब औषध दोदो टंकले कपरछानकरि पैसेभरि शहतके साथ खाय तौ अतीसार दूरहोय और शूलजाय रक्त बन्द होय ॥

अथ तेरहोंसन्निपातपर सिद्धार्थचूर्ण ॥

सरसों । बच । कूट । पीपरि । मिरच । सोंठि । कुटकी । कायफर । चीतेकीछाल । बायबिड़ंग । मंजीठ । जीरा । कलौंजी । अजवाइन । अजमोद । भारंगी । पाढ़ा । हींग । जायफल । पीपरामूल ये सब औषध पांचपांच टंकले कूटिछानिकरि गोमूत्र से मर्दनकरै तौ १३ सन्निपात शीत उचाटवायु सर्दी पसेव ये सब दूर होयँ ॥

अथ आमातीसारपरचूर्ण ॥

सेंधानोन । कालानोन । हींग । बच । हड़ । अतीस इनको

बराबरले फिर अधेला भर गरम पानी के साथ लेतौ अती-सार अच्छाहोय ॥ अथ द्वितीयचूर्ण ॥

नागकेसरि । तबाखीर । रक्तचन्दन ये बराबर ले चूर्णकरि शीतल जलकेसाथ खाय तौ अतीसारजाय ॥

अथ हिंग्वष्टकचूर्ण सर्वरोगपर ॥

हींग । दोनों जीरा । कालीमिरच । सोंठि । पीपरि । सेंधा नमक । गजपीपरि । अजमोद ये सब बराबरले अदरकके रस में गोलीबांधे अथवा अदरकके रससे चूर्णखायतौ सर्वरोगजायँ ॥

अथ वृहत्सारिंगवष्टक चूर्ण ॥

हींग । सोंठि । मिरच । पीपरि । पीपरामूल । त्रिफला । अज-वाइन । अजमोद । खुरासानीअजवाइन । कायफर । बच । चीते की छाल । बायबिडंग । रेंडुका । पत्रज । पुष्करमूल । गजपीपरि सेंधानोन । कालानोन । सांभरिनोन । सज्जी । जवाखार । अ-करकरहा । सुहागा भूना ये सब बराबरि पैसा पैसा भर ले कपरछान करि चूककी ३ पुट दे मट्टीके कोरेपात्रमें धरे और २ टंक खायतो ७ प्रकार के शूल जायँ और बायुगोला । हिचकी पेटका भारीपन । खांसी । कफ ये सब रोग जायँ सही ॥

अथ द्वितीय तालीसादि चूर्ण सर्व रोगपर ॥

तालीस । लौंग । पत्रज । पीपरि । पुष्करमूल । बायाबिडंग । जायफर । जावित्री । खैरसार । भारंगी । बच । दोनोंजीरे । कायफर । कुचिला । गजपीपरि । कलौंजी । असगन्ध । मिरच । अकरकरहा । अजवाइन । अजमोद । खुरासानी अजवाइन । भुनीफिटकरी । सोंठि । चिरायता । हींग । कूट । त्रिफला । कुटकी । काकराशृङ्गी । हड छोटी बड़ी । बंग । अभ्रक । सार । सेंधानोन ये सब औषध पैसा २ भरले कपरछानकरि तिस पीछे चारसेर दूध औटावै जब दूध ऽ१ सेर शेषरहै तब दूधमें सब औषध मिलाय दो दो पैसा भर की गोली बांधे १ गोली

प्रातः काल खायतो बलबढ़े पुष्टता होय पुरुषशक्ति अधिकहोय खटाई का परहेज़ करै ॥

अथ मिरचादि चूर्ण सकल प्रमेह पर ॥

मिरच । कंकोल । लौंग । खस । रक्तचन्दन । कमलगट्टा कलौंजी । अगर । नागकेसरि । पीपरि । सोंठि । सोंचर । सुगंधवाला । चीनियांकपूर । जायफर । वंशलोचन । छिकुराकोछाल । तज । पत्रज । केला की जड़ । कोंच के बीज । असगंध । मोचरस । नागरमोथा । सिंघाड़ा । उर्द की दाल धुली । गंगेरन । अंजीर । दोनोंसेमरकामूसरा । शतावरि । दोनोंमूसली । निर्गुण्डी । मुंडी । भांगरा ये सब औषध दो दो टं० ले अभ्रक १० टं० सार १० टं० बंग १० टं० सब औषध कपर छान करि कच्ची खांड़ ऽ१ सेर मिलाय के धरि राखे पांच टं० प्रातःकाल और सन्ध्यासमय खायतो सकल प्रमेह दूरि होय मूत्रको प्रवाह थंभे दाह जाय पुष्टता होय खांसी शूल और बातजाय स्त्री खाय तो पीर दूर होय यह चूर्ण राजाओं के योग्य है ॥

अथ पुष्टि करण चूर्ण ॥

मुलहठी । बिदारीकन्द । तज । लौंग । गोखुरू । गिलोय सफ़ेद मूसरि इन सब औषधों को बराबर ले कूट पीसछान चूर्ण बनावै फिर धेला भर नित्य ऽ॥ सेर दूधकेसाथ खाय तौ पुरुष के सदा बल रहै ॥

अथमधुयष्टी चूर्ण विधि ॥

मुलहठी । गिलोय । त्रिफला । बिदारीकन्द । दोनोंमूसली । नागकेसरि । शतावरि ये सब औषध बराबर ले कपरछानकरि चूर्ण बनावे फिर घृत और शहत मिलाय ४ माशे भरि २५ दिनतक नित्य खाय तौ वृद्ध पुरुष भी ७ स्त्री भोग करै ॥

अथ प्रमेह नाशन चूर्ण ॥

शंखाहूली । इलायची । शिलाजीत ये तीनों बराबरले और

तवाखीर और कच्ची खांड ये दोनों दूनीले फिर सबको एकत्र करि कूट पीसछानि चूर्ण करि धेलाभरि नित्य शीतल जलके साथलेतो प्रमेह दूरि होय॥

॥ अथ खंडादि चूर्ण॥

॥ खांड ऽ॥ मिरच। लौंग। दाख। बदाम। चिरौंजी। तज। पत्रज। इलायची। रक्तचन्दन। पीपरि। दोनों जीरे। सोंठि। धनियां। पीपरामूल। कौंचके बीज। मोथा। वंशलोचन। कसेलगट्टा। तवाखीर। दोनों मूसली। शतावरि ये सब औषध पैसा पैसा भरिले फिर कूट पीसे कपड़छान करि २५ दिनतक नित्यखाय तो सकल प्रमेह दूरिहोयँ और धातुकी पुष्टताहोय॥

॥ अथ असगन्धादि चूर्ण॥

असगन्ध। विधारा। स्याहमूसली। सफेदमूसली। तालमखाना। बिदारीकन्द। बीजबन्द। सेमरकी मुसली। बड़ा गोखुरू ये सब औषध टका टका भरि ले कूट पीस कपड़छान करि चूर्ण बनावै फिर उसमें बंग १० टंक अभ्रक १० टंकसार १० टंक खांड ऽ३ शहत ऽ१ गौका घी ऽ १ गौकादूध ऽ५ ये सब औषध कपड़छान कर दूध से खोआकरे जब दो सेर रहै तब उतारि सब औषध मिलाय २ पैसा भरिकी गोली बांधै फिर एक गोली प्रभात समय खाय तो धातुकी पुष्टता होय देहमें बल बढ़े बात दूरि होय॥

अथ प्रसूतिका चूर्ण॥

देवदारु। अजमोद। वायबिडंग। सोंठि। चित्रक। मिरच सैंधानोन। कालानोन। सौंफ। हल्दी ये सब औषध पैसापैसा भरले ६ पैसा भरि पुराने गुड़ में अधेला भरि की गोली बांधे और दोनों समय खाय तो प्रसूति जाय॥

॥ अथ श्वेतकुष्ठका चूर्ण॥

कठूमरि वा कठिअंजीरको बकला ऽ। भरि बकुची ऽ। भरि

इन तीनों औषधों को एकत्र करि चूर्ण करै फिर पैसा पैसा भरि नित्य दूनों समय पानीके साथ खायतो श्वेत कुष्ठजाय॥

अथ लाही चूर्ण ॥

त्रिजातकव्योषवरारसेन्द्र गन्धाजमोदामिसिवेल्लरात्रयः॥ विल्वानलौजाजिलवंगधान्य गजोपकुल्यामधुकम्बदन्ति ॥ १ ॥ कुबेराहिंग्वाह्वयमोचसारः क्षारोजयासर्वचतुर्थभागाः॥ इदंहिचूर्णंविनिहन्तितूर्णम्प्रसूतिकासंग्रहणीविकारम् ॥ २॥ समस्तरोगान्तकमग्निकर्तृश्राजिष्णुनाकारिसुतकर्षीतम्॥इदम्प्रयोगं बहुधानुभूतं चकारधात्रीकिललकापिलाहीं ३॥ अर्थ॥ त्रिजात अर्थात् तज। पत्रज। इलायची। व्योष अर्थात् सोंठि। मिरच पीपरि। त्रिफला अर्थात् हड़। बहेड़ा आंवला। पारा। गन्धक अजमोद। सौंफ। बायबिडंग। हल्दी। बेलगिरी। चीते की छाल। जीरा। लौंग। धनियां। गजपीपरि। मुलहठी। पांचो नोन अर्थात् सेंधा १ काला २ बिड ३ सामुद्र ४ मर ५ कंजा कीमींगी। हींग। मोचसार। सज्जी। जवाखार और सब औषधों से चौथाई भाग इन सब औषधों को कूटकर चूर्ण बनावै और रोगी को मट्ठा के साथदे तो शीघ्रहीसंग्रहणी रोग दूर होय और सब रोगों का नाशक तथा अग्नि का और कांतिका बढ़ानेवाला है यह प्रयोग बहुत अनुभूतहै और इसको लाही नाम किसी धायने बनायाहै ॥

अथ बृहत् निंबादि चूर्ण ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

हिंगुवाधारा बै सिंधु सोवर्चलै। कज गूंदी मिलै पीपरी मूललै॥
चाव सीते बचा मिर्च जीरामरै। चेतकी सोंठि ह्वीबेर मोदाभरै ॥
सटी पीपरी धान्य लै पुष्करै। अम्लवंतै बिडंगै समै लै भरै॥
चूर्ण सेवै यथाशक्ति भाषै गुनै। अश्मरी अर्शप्लीहा सदा लै हनै॥
आम बंधै बिबंधै औमूलै हरै। पांडु गुल्मै हृदै रोग सोई जरै॥
विसरता आनन अग्नि मंदै महा। कासश्वास सहिकाविनाशी कहा।

दोहा ॥

भोजन प्रथमै घीवसे सेवन करै जो कोय। वात गुल्महा क्षुधाकर त्रिकुटादिकहै सोय॥

अथ त्रिकुटादि चूर्ण॥

दोहा ॥

त्रिकुटहींग अजमोदलै पुनि जीरायुगलेइ। सैंधवनोन मिलायकै चूरणसमकरुसेइ॥

अथ रुचिक्यादि चूर्ण॥

चौपाई ॥

सोंचर सैंधव चित्रक लीजै। त्रिकुट चैल भारंगी दीजै॥
शिवा और युगजीरा आनै। वायविडंग जवाइन जानै॥
अजमोदा उत चूरण करै। मातुलुंग अमली रसपरै॥
तामें गुटिका लेय बनाय। अग्निमन्दअतिदेइ नशाय॥
सकल वदनकी शूल नशावै। पचैअन्न अतिक्षुधा वढ़ावै॥

अथ शुण्ठ्यादि चूर्ण॥

त्रोटक छन्द ॥

शुंठी युग तीनिसुभाग धरै। पीपरि पुनि तामहँ चारिपरै॥
अजमोद जवाइन भागपरै। युगभागसो सैंधव आनिठरै॥
सबचूरणके समडारिशिवा। शुंठ्यादि प्रसिद्धसोनाममवा॥
लोलिम्बसोराजविचारिकहै। मलताप मलापको वेगिदहै॥
उदरेपुनि शूल अनेक टरै। सबवात व्यथा अरुवात हरै॥
निशिवासर भोजन चित्तवसै। नानाविधिभोजनदीपनसै॥

अथ बृहद्वड्वानल चूर्ण॥

दोहा ॥

शुंठी पीपरि चीतलै पुतविडंग मिलाय। कंजकि गूदी हरैई समशर्करा मिलाय॥
अग्निवढ़ावैक्षुधाकरवातगुल्मसबजाय। वड्वानलचूरणकहैउग्रन्थनको मतपाय॥

अथ अमलवेत लवणभास्कर चूर्ण॥

संचलनोन १ पैसाभरि समुद्रनोन १ पैसाभरि सांभरि नोन १ पैसाभरि सेंधानोन १ पैसाभरि पीपरि २ पैसाभरि पीपलामूल २ पैसाभरि स्याह जीरा १ पैसाभरि पत्रज २ पैसाभरि नागकेसरि २ पैसाभरि तालीस २ पैसाभरि कालीमिरच १ पैसाभरि जीरासफेद २ पैसाभरि सोंठि १ पैसाभरि अनारदाना १ पैसाभरि इलायची २ पैसाभरि लौंग १ पैसाभरि दालचीनी ८ मासे जवाखार २ पैसाभरि खुरासानी

अजवाइन २ पैसाभरि कलौंजी २ पैसाभरि त्रिफला ३ पैसा भरि मूली के बीज १ पैसाभरि अमलबेत की गिरीको काढ़ले फिर उसमें और सब दवाइयों को कूटि पीस भरै उसको रीता न रक्खै जबहीं रीता होय उसमें निचोड़ता जाय और प्रात घाम और रात्रिको छायामें सुखावै फिर ३ माशे नित्यखायतौ उदर बिकार सबदूर होय भूंख बहुतलगै अन्नपचै॥

अथ संचलक्रिया॥

संचल ऽ। भरि सेंधा ऽ। भरि व जंगरोनोन ऽ१ सेर सांभर ऽ। भरि आंवला ऽ१ सेर पीस पान और गोमूत्रके साथ हांड़ी में भर चूल्हेपर चढ़ावै नीचे अग्नि दे शीतल होय तब हांड़ी फोड़ फेंके फिर उसे नित्य खाय तौ रोग सत्यही जाय॥

अथ बाईशूलका चूर्ण॥

त्रिकुटा। अजमोद। सेंधा। स्याहजीरा। सफेदजीरा। हींग इन सबोंको एकत्रकरि पीस कूट चूर्ण बनावै और हींगको भून करि मिलावै फिर ४ माशे नित्य भोजनके पहिले ग्रासकेसाथ खाय दूनों और समय घृतखाय तौ बायशूल जाय॥

अथ सामुद्रचूर्ण॥

सेंधानोन। सोंचरनोन। समुद्रनोन। खारीनोन। अजमोद। जवाखार। बायबिड़ंग। हड़। पुष्करमूल। पीपरि। सोंठि। अजवाइन। निसोत इन सब औषधों को बराबरलेकर पीस कूट छानिचूर्ण बनावै फिर एकटंक गरमपानी के साथले तौ गुल्म क्षयीकी आंटी पवनवधवाई इनसबको दूरकरै और भूंख बहुत लगावै॥

अथ पाचकचूर्ण॥

त्रिफला। त्रिकुटा। बायबिड़ंग। लौंग। पीपरि। तज। सुहागा। सुअफूला इतनेनोन तीनोंशोरा। चित्रकइनसबको समानले पीस कूटछान चूर्णबनावै फिर २ माशे भरि नित्यखाय तो हज़म बहुतकरै और भूंख बहुतलगै॥

अथ चित्रादिचूर्ण ॥

खुरासानीअजवाइन । हड़ । बिहारी सोंठि । सतुआ । लौंग । पीपरि । मधुबहेड़ा । आंवला । मिर्च । संचल । सेंधा । जवाखार इन सब को नींबूके रस में तीनपुट दे फिर छायामें सुखाय बेर प्रमाण गोली बांध खाय तो बहुत गुण करै ॥

अथ कंठक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

मिर्च कुलिंजन सम करि राखै । खट्टा मिट्ठा जरा न चाखै ॥
वर्ष एक जो साधै कोय । पिकसम कंठ ताहिकर होय ॥

अथ मन्दाग्निनाशक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

सेंधा सोंचल वायविडंग । त्रिफला त्रिकुटा तुवर लवंग ॥
चित्रकहिंग अजवाइन मानि । जीरे अनारदाने आनि ॥
इन औषध का चूरण करी । तीनि निंबुपुट उसमें धरी ॥
टंकदोय जय प्रातहि खाय । मन्द अग्नि तबहीं मिटिजाय ॥

अथ कंडूनाशन चूर्ण ॥

दोहा ॥

हल्द बावची निम्ब फल अरु आंवलो मिलाय ।
टंक दोय गोमूत्र सन पीवत कंडू जाय ॥

अथ प्लीहाको चूर्ण ॥

सेंधा । सोंचर । जवाखार । हींग । हड़ । पीपरि । अजमोद वायविड़ंग । सज्जी इन सब को एक एक टंकले एकत्र करि चूर्ण बनावै फिर ७ माशे भरि नित्य पांच पैसा भरि गौके घृत के साथ मिलाय करि खाय तो प्लीहरोग जाय ॥

अथ अग्निकर चूर्ण ॥

मीठा चूक ४ पैसाभरि मिश्री पावभरि लौंग ४ पैसाभरि पीपरि १ पैसाभरि कालीमिर्च १ पैसाभरि बड़ी इलायची एक पैसाभरि सब को पीस चूकमें मिलावै फिर इसे करवे में मले और ६ माशेभर खूराकखाय तो इतने रोगजायँ गरमी । चिनग । ज्वर । जर्दी । और भूंख बहुत लगावै ॥

अथ अफरे का चूर्ण ॥

सोंठि का सत १ पैसाभरि पीपल १ पैसाभरि अजमोद ३ टंक अजवाइन १ टंक सेंधा २ टंक हड़ें १४ सब को जुदा जुदा पिसायराखे फिर प्रातसमय ताजेपानीसे पहिले हड़ें और सेंधा मिलाय खाय पीछे सबकोमिलायखाय जो माफकतआवै तो और अधिकखाय और संध्यासमयखिचड़ीखाय तौअफराजाय॥

अथ हड़क्रिया॥

हींग २ टंक संचल २० टं० सेंधा १६ टं० सांभरि १२ टं० चारों पानीमेंमिलावे पहली तयारकरै त्रिकुटासर्व मिलाय पानी में डाले उसका मुंहबांधि चारिदिनतक धूप में सुखावे फिर पाव भरि आंवला डाले फिर तीसरेदिन चूक डाले चूक न डाले तो नींबूका रस डालि फिर सब को हड़ों समेत बांधले फिर हड़ोंको जितने पानीमें डूब जायँ छोड़दे तो हड़ें बनें॥

अथ अपूर्व चूर्ण॥

त्रिफला। त्रिकुटा। हींग। सुहागा। सेंधा। सोंचर। लौंग। चीता सबको बराबरले हींग और सुहागेको भूनले फिर सब को एकत्रकरि सहँजनेकेरसमें गोलीबांधे चनेप्रमाण जबचाहै खाय क्षुधाबढ़ावै और अन्नपचावै॥

अथ ज्वरपर पीपरि चूर्ण॥

पीपरिकोकूटपीसकर शहतकेसाथचाटै तौ ज्वर कासश्वास हिचकी कंठरुज पिलही आदि सकलरोगोंको नाशकरै॥

अथ प्रमेहपर त्रिफला चूर्ण॥

हड़ १ भाग बहेड़ा २ भागआमले ४ भाग इन सबकोकूट पीसचूर्णबनावे और खायतौ इतनेरोग नाशकरै प्रमेह, शोथ विषमज्वर आदिको नाशकरताहै दीपनहै और कफपित्तनाशनहै कुष्ठहरण रसायनहै वहीत्रिफलाशहत घृत युक्तखानेसेनेत्र रोगनाश होतेहैं॥

अथ त्रिकुटा चूर्ण ॥

पीपरि। मिरच। सोंठि। इसे उषण और त्रिकुटा कहते हैं इसकाचूर्णदीपनहै कफ कुष्ठ और पीनस इनसबोंकोनाशकरता है आम अरुचि प्रमेह गुल्म और कंठरोग सबकोदूरकरताहै॥

अथ कफादिपर पंचकोलचूर्ण ॥

पीपरि। चाव। सोंठि। पीपरामूल। चीता इसे पंचकोल कहतेहैं इसकाचूर्ण बनायकर खानेसे पाचन दीपनहोताहै और आनाह।पिलही।गुल्मशूल कफ उदररोग सबकोनाशकरताहै॥

अथ त्रिगन्ध चूर्ण ॥

पत्रज। तज। इलायची इनको त्रिगंध कहते हैं इसकाचूर्ण रूखा और उषणहै यहचूर्ण कुक्षिपित्तकारकहै कांति रुचिकर्त्ता तीक्ष्णहै और विष और कफको नाशकरताहै॥

अथ जीवनीगण ॥

काकोली। क्षीरकाकोली। जीवक। ऋषभक। मेदा। महा-मेदा। जीवन्ती। दूधिया। लताकीछीमी जिसकीतरकारीहोती है। मुरैठी। मूंगफली। उर्दफली। इनका चूर्ण स्थितकारक है भारीदुग्धवर्द्धनीहै धातुपोषकहै धातुशोधकहै स्निग्धठंढीतृषणा रक्त पित्त क्षयी शोष ज्वर दाह बायु इन सबको हरता है॥

अथ विड्सूत्रपर लवणपंचक चूर्ण ॥

सेंधानोन। कालानोन। बिड़नोन खारीनोन। गड़नील सांभरनोन ये पांच क्रमसे जानो इनमें सेंधामुख्यहै जहांकिसी नोनकानाम नलिखाहो वहां सेंधानमक लेनाचाहिये इनकेचूर्ण का पाक मधुरहै मलमूत्र पकाइके गिराताहै चिकना बशकर्त्ता बलहर्त्ता धातुको गर्मकर्त्ता दीपन तीक्ष्ण पित्तकोबढ़ाताहै और गुल्मादि दोखारहैं सज्जीखार और जवाखार सोयेदोनोंअग्नि समान दीप्यमान हैं॥ अथ बृद्धसुदर्शन चूर्ण ॥

त्रिफला। हल्दी। दोनों भटकटैया। कचूर। त्रिकुटा। पी-

परामूल। मुर्रा। गुर्च। जवासा। कुटकी। पित्तपापड़ा। मोथा। त्रायमाण। नेत्रबाला। नींबकीछाल। पुष्करमूल। मुरैठी। कुरैया। अजवाइन। इन्द्रयव। भारंगी। सहँजनकाबिया। भुनी फिटकरी। वच। तज। पद्माक। खस। श्वेतचन्दन। अतीस। बरियारा। वनउर्दी। वनमूंग। वायविडंग। तगर। चीता। देवदारु। चाव। पटोल। जीवन्ती। ऋषभक इनदोनोंके अभाव में बिलाईकन्द लेना लौंग। वंशलोचन। कमलपत्र। काकोली के अभाव में मुलैठी लेना तेजपात। जावित्री। तालीसपत्र इनसब ओषधियोंको समानले चूर्णकरै फिर उसमें सबचूर्णका आधा चिरायताडाले फिरइस वृद्धसुदर्शनचूर्णकेखानेसे त्रिदोष और सर्वज्वर नाश होतेहैं और एकाहिक द्वन्द्वज त्रिदोषमानस आदि सर्वज्वरोंकोदूरकरताहै शीतज्वर जूड़ी अंतरिया तृतीयक चातुर्थिक मोह तन्द्रा भ्रम तृषा कास पांडु हृदयरोगरीढ़पीड़ा कटि पांव जांघ पसली इन अंगनकी पीडाकोनाशकरताहै और जैसे सुदर्शनचक्र दैत्योंको नाशकरताहै उसी प्रकारसे यह वृद्ध सुदर्शन चूर्ण भी सर्व ज्वरोंको नाशकरताहै॥

अथ कासश्वास ज्वर पर त्रिफलादि चूर्ण॥

त्रिफला और पीपरि दोनोंकोकूट पीस चूर्णबनायकर शहत के साथ चाटै तो कासश्वास ज्वरको नाशकरै और अग्नि को प्रबल करै॥

अथ कफज्वर पर कायफलादि चूर्ण॥

कायफल। मोथा। कुटकी। कचूर। काकराशृंगी। पुष्करमूल। इन्द्रायन इनको इकट्ठाकर कूटपीसछान चूर्णबनायशहत और अदरकके रसके साथ चाटैतो ज्वरहरै कंठशुद्धहोय कासश्वास अरुचि ताप शूल छर्दि क्षयी इन सबोंको दूरकरै॥

बालककी खांसी और ज्वरपर काकराशृंगी आदि चूर्ण॥

काकराशृंगी। अतीस। पीपरि इन सबोंको कूट पीस छान मधुसे चटावै तो बालककी खांसी ज्वर छर्दिदूरहोय॥

अथ आमातीसार पर-शुंठ्यादि चूर्ण ॥

सोंठि। अतीस। हींग। मोथा। कुरैया और चीता इनसब दवाओं को ले इकट्ठीकर कूटपीसछान चूर्ण बनाय उष्णपानीके साथ खानेसे आमातीसार दूरहोय ॥

अथ आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण ॥

हरीतकी। सेंधानोन। कालानोन। बच। हींग। इनसब ओषधियोंको ले कूटपीस छान चूर्णकरि ठंढेजलके साथ पिये तौ आमवातातीसार जाय यह चूर्ण ग्राहीहै और अबल अग्निको दीपन करै है ॥ अथ सर्वातीसारपर लघुगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा। इन्द्रयव। बेल। लोध। मोचरस। धौफूल इनसब ओषधियों को ले इकट्ठाकरि कूटपीसछानि चूर्णकरि मट्ठासेगुड़ डारिकर लेतौ सब अतीसार प्रवाहिकवन्दकरै यहलघुगंगाधर चूर्णपरमग्राहीहै ॥ अथअतीसारपर अन्य वृद्धगंगाधरचूर्ण ॥

मोथा। सोंठि। कुरैया। धौफूल। सुगन्धबाला। बेल। मोचरस। पाढ़। इन्द्रयवामधुकटैया। आमकीगिजली। अतीस लजालू इनसब ओषधियोंकोइकट्ठी करि कूटपीस छान चूर्ण बनाय शहत और चावल के धोवनसंयुक्त ले तौ प्रवाहिकसब अतीसार ग्रहणी जलदी आरामहोय यह वृद्धगंगाधरचूर्णसरित प्रवाहको रोंकसक्ताहै और मट्ठा मिरच चूर्ण चीता कालानोनसंगोपनसे ग्रहणी नाशहोय उदररोग प्लीहा मन्दाग्नि गुल्म अर्शइनसबबीमारियोंको अच्छी करताहै ॥

अथ ग्रहणी पर कपित्थाष्टकचूर्ण ॥

पक्काकैथा ८ भाग खांड़ ६ भाग। अनार। अमिली। बेल धौफूल। अजमोद। पीपरि इनसब ओषधियों के तीन २ भाग ले मिरच। श्वेतजीरा। धनियां। पीपरामूल। सुगन्धबाला। अजवाइन। तज। पत्रज। इलायची। नागकेसरि। चीता। सोंठि इनसबोंको एकएक भागले फिर सबको कूटपीस छान

महीन चूर्ण बनावै फिर इसकपित्थाष्टक चूर्ण के खानेसे गले के रोग अतीसार क्षयीगुल्मग्रहणी आदि ये सबरोग अच्छेहोयँ ॥

अथ ग्रहणी पर दाड़िमाष्टक चूर्ण ॥

अनार ८ रु० भर शक्कर ३२ रु० भर तज । पत्रज । इलायची तीनोंमिलाकर ४ रु० भर त्रिकुटा १२रु० भर इनसब ओषधियों कोले एकत्रकरि कूट पीस छानचूर्ण करै इसके खानेसे रोचन दीपनकंठशुद्ध और ज्वर नाशहोताहै और यहचूर्ण ग्राही है ॥

अथ अतीसार पर वृद्ध दाड़िमाष्टक चूर्ण ॥

अनार ८ पल । पीपरि । पीपरामूल । अजवाइन । धनियां श्वेतजीरा । सोंठि येसब पल पल भरले बंशलोचन दशमाशे पत्रज । एला । नागकेसरि इनकोपांचपांचमाशे ले यहदाड़िमाष्टक चूर्ण अतीसार गुल्मसंग्रहणी जलाग्रहमन्दाग्नि और पीनसकासबरोग नाशकरै ॥

अथ सुकुमार लवंगादि चूर्ण ॥

लवंग । शुद्धकपूर । इलायची । नागकेसरि । जायफल । खस । सोंठि । कृष्णजीरा । कृष्णअगर । वंशलोचन।जटामासी नीलकमल । पीपरि । चन्दन । तगर । सुगन्धवाला । कंकोल इनसवओषधियोंको लेकर सबको कूटपीसछानचूर्णकी आधी मिश्रीमिलावै तब यहचूर्ण तयारहोय फिर इसकेखानेसे रोचन और तृप्तिहोतीहै और धातुको पुष्टकरताहै और त्रिदोषकोहरताहै और बलप्रदहै कंठहृदय कास हिचकी पीनस क्षयीतमक श्वास अतीसार उरक्षत प्रमेह अरुचि गुल्म ग्रहणी इनसबको दूरकरता है ॥

अथ जातीफलादि चूर्ण ॥

जायफल । लौंग । इलायची । तज । पत्रज । नाग केसरि। कपूर । चन्दन । तिल । वंशलोचन । तगर । आंवला । तालीसपत्र । पीपरि । हड़ । चीता । कालाजीरा । सोंठि । विडंग । मिर्च सबकेसमान मोथालेना फिर इन सब ओषधियोंको इ-

कट्ठीकर कूटपीस छानचूर्णकरि उसमें चूर्णके समान खांडमि- लायेफिर कर्षप्रमाण खाय तो इसके प्रभाव से ग्रहणी कास श्वास अरुचि क्षयी वात कफनाकटपकना येसवरोगशीघ्रनाश होजातेहैं ॥ अथ अरुचिपरमहाखांडव चूर्ण ॥

मिर्च । नागकेसरि । तालीसपत्र । पांचोंनोन इन सब को समान भागलेना और ग्रन्थि । चित्रक । तज । पीपरि । अमि- ली और जीरा येसबदोदोभागले धनियां । अमलबेत । सोंठि । बड़ी इलायची । बेर । अजमोद । मोथा । इनको तीनतीनभा- गले इनसब औषधोंकी चौथाई अनारले और आधी मिश्री मिलाकर खायतो रोचन दीपनकरै हृदयको बलप्रदहै अती- सार हृदयरोग कण्ठजलन मुखरोग शीतरस पेटफूलना अर्श गुल्म कृमि छर्दि पंचविधि सब श्वासनाशकरै ॥

अथ उदररोगपर नारायणचूर्ण ॥

चीता । त्रिफला । सोंठि । पीपरि । मिर्च । जीरा । हड़ । देवदारु । वच । अजवाइन । ग्रन्थि । सौंफ । असगन्ध । अजमोद । कचूर । धनियां । विड़ंग । कालाजीरा । चूक । पुष्करमूल । दोनों खार । पांचोंनमक । इनसबको समानले और इन्द्रायणदोदो भा- गले निशोत तीनभागले जमालगोटा तीनभाग पीतपुष्प । सें- हुड़मूलचारिभागले फिरइनसबकोएकत्रकरि कूटपीसछानचूर्ण बनावे फिर कठिन कोढ़रोगीको प्रथम पाचन स्वेदनकरि यह चूर्ण रेचनार्थ देइ तो हृदयरोग पांडुरोग कास श्वास भगन्दर मन्दाग्नि ज्वरकुष्ठग्रहणीकंठरुज इनसबरोगोंकोनाशकरताहै ॥

अथअस्य अनोपान ॥ पेटफूलैतो मठासंग गुल्ममेंबेरकाथ संग मलफोरनेमेंदही वाजलअजीर्णमें उष्णोदक पेटरोगमेंअ- म्लाकठोदरादिमें उष्ट्रीदुग्ध अथवा गोतक्रमें वातरोगमें सुरा मण्डमेंदे अर्शमें अनाररसके साथदे दोनोंविषमें घीकेसाथदे यहनारायणचूर्ण दैत्यरूपी दुष्टरोगोंको हननेवालाहै ॥

अथ अजीर्णपर हवुषादि चूर्ण ॥

हाऊबेर । त्रिफला । त्रायमाण । पीपरि । चूक । निशोत । पीत पुष्प । सेंहुड़कीजड़ । कुटकी । बच । नीलकोपत्ती । सेंचर्न । कालानमक इन औषधोंकोलेकर कूटपीसछान चूर्णबनावे फिर इसको उष्णोदक अथवा गोमूत्र । अनारकारस । त्रिफलाका रस वा मांसरस आदि किसीके साथरोगीको जैसाउचित समझेदे तौ अजीर्ण प्लीह गुल्म शोथ अर्श विषमाग्नि हलीमकक-मल पांडुकुष्ठ पेटफूलनाउदररोगआदिसबरोगोंकोदूरकरताहै ॥

अथ शूलादिपर पंचसम चूर्ण ॥

सोंठि । हड़ । पीपरि । निशोत । कालानमक इनसबऔषधोंको समभाग लेकर कूटपीस छान चूर्णबनावे फिर खाय तो बड़ाशूल पेटफूलना जठरसम्बन्धी अर्श आमवातइन सब को दूरकरै ॥

अथ नाराच चूर्ण ॥

पीपरि १० माशे निशोत ४ रुपयेभर खांड़ पलभर इनसब को एकत्रकरि चूर्णबनावे फिर कर्षप्रमाण शहतकेसाथ खाय तौ पेटफूलनाजाय गोटेउदर कफपित्त शूलआदि सबको नाश करे ॥

अथ प्लीहादिपर लवण त्रितयादिचूर्ण ॥

तीनोंलवण । दोनोंखार । सौंफ । सोवाबीज । अजमोद । ममरी । हाऊबेर । दोनों जीरे । मिर्च । पीपरामूल । पीपरि । हुरहुरा । कचूर । मगरैल । सोंठि । चीता । चाव । बिड़ंग । अमलबेत । अनार । इमलीकी छाल । निशोत । जमालगोटा । शतावरि । इंद्रायन । भारंगी । देवदारु । अजवाइन । धनियां । तुंबुरु । पुष्करमूल । बेर । हड़ ये सब समानले कूट पीसछान चूर्णबनावे फिर अदरक और बिजौरेके रसमें भावनादे फिरइसको घी अथवा पुरानी मद्य अथवा उष्णोदकके साथ अथवा बेरके काथ मट्ठा उष्ट्रीपय या दहीके तोड़के साथले तौ यकृत् प्लीह कटिशूल गुदा कोख और हृदयरोग अर्श मन्दाग्नि मल

स्तम्भ गुल्म प्लीह उदररोग हिचकी पेटफूलना श्वास कासइन सबको दूरकरताहै अथवा वैद्य इनका घी बनाकरदे तोभी ये सब रोगजायँ ॥ अथ शूलपर तुंबुरुआदिचूर्ण ॥

तुम्बुरु। तीनोंलवण। अजवाइन। पुष्करमूल। जवाखार। हड़। हींग। बिड़ंग इनसब द्रव्यों को बराबरले और निशोत तीन भागले फिर कूट पीसछान चूर्ण बनावै फिर उष्णोदक अथवा यव क्वाथ के साथ पिये तौ सबशूल गुल्म पेटफूलनाये सबरोग दूरहोयँ॥ अथ मन्दाग्निपर चित्रकादि चूर्ण ॥

चीता। सोंठि। हींग। पीपरि। पीपरामूल। चाव। अजमोद। मिरच इनसबोंको कर्ष २ भरिले और दोनोंखार। सेंधा। काला। पांगा। कटीला। सांभर इनको कोलकोलभरले फिर सबका चूर्णकर बिजौरेके रसमें बांधि धूपमें सुखायले यहचूर्ण गुल्मग्रहणी आमरोगकोहरै अग्निको दीप्तकरै रुचिबढ़ावै और कफको नाशकरै ॥

अथ मन्दाग्निपर अग्निदीपन चूर्ण ॥

सेंधानमक। पीपरामूल। पीपरि। चाव। चीता। सोंठि। हड़ क्रमसेबढ़ाय कूटपीसछान चूर्णकरैजैसे सेंधा १माशे तौ पीपरामूल २माशे फिर इसीप्रकारसे बढ़ाते चलेजाओ इसकेखानेसे सकल मन्दाग्नि नाश होजातीहै ॥

अथ वातादिपर अजमोद चूर्ण ॥

अजमोद। बिड़ंग। सेंधानमक। देवदारु। चीता। पीपरामूल। सौंफ। पीपरि। मिर्च इनसब द्रव्योंको कर्षकर्ष प्रमाणले और हड़ पांचकर्ष बिधारा दशकर्ष सोंठि एककर्ष इनसब औषधनकोले कूटपीसछान चूर्णकरै फिर गुड़मिश्रितकरि उष्णोदकसे पिये अच्छी तरहसे खायतो सूजन दूरहोय आमवात गांठिपीर गृध्रसी वायु कटिपीड़ा पीठ गुदा जांघ पीरतूनी वायु प्रतूनी वायु बिश्वाची कफरोग वायुरोग येसबरोग नाशहोयँ॥

अथ शूलादिपर हिंग्वादि चूर्ण ॥

हींग । पाढ़ा । हड़ । धनियां । अनार । चीता । कचूर । अज़मोद । त्रिकुटा । हाऊबेर । अमलबेत । ममरी । इमलीकीछाल । जीरा । पुष्करमूल । बच । चाव । दोनोंखार । पांचोंनमक इन सब औषधों को ले कूटपीस छान चूर्णबनावै फिर भोजनादि अथवा पुरानी भंगमें खाय तौ बात कफ का गुल्म कोष्ठवद्ध ष्ठीलिका हृदयपेडू पसुरी गुदायोनि आदिके सब शूलोंकोनाश करै और मूत्र कृच्छ्र पेटफूलना पांडु अरुचि हिचकी यकृत्प्लीह श्वासकास गलरोग ग्रहणी अर्श इन पर भी यह चूर्णहै और बिजौरे के रसकी सात भावनादे गोली बांधले इससे बातकफ रोग नाशहोय ॥ अथ अरुचिपर जवानीखांड चूर्ण ॥

अजवाइन । अनार । सोंठि । इमली की छाल । अमलवेत इन सबोंको चारि २ शाणले और मिर्चढाई शाण । पीपरिदश शाण । तज । कालानमक । धनियां । जीरा ये सब दोदोशाण ले और शर्करा ६४ शाण इन सबको कूट पीसछान चूर्णबनावै इस चूर्णमें जो शाण कहाहै वह शाण ४ मासेका होताहै और इस चूर्णके खानेसे पांडु हृदयरोग ग्रहणी छर्दिशोष अतीसार प्लीह पेटफूलना कोष्ठबद्ध अरुचि शूल मंदाग्नि अर्श जीभ रोग गलरोग ये सब नाशहोयँ ॥

अथ अरुचि परतालीसादि चूर्ण ॥

तालीस । मिर्च । सोंठि । पीपरि । बंशलोचन इन औषधों को क्रम २ से १ कर्ष २ कर्ष ३ कर्ष ४ कर्ष ५ कर्षले और इलायची । तज येआधा २ कर्षले खांड़ ३२ कर्षले फिर इनकाचूर्ण बनाय खावै तोपाचन और रोचनकरै और कास । श्वास । ज्वर छर्दि । अतीसार । शोष । पेटफूलना । प्लीह । ग्रहणी । पांडु इनसब को नाश करै ॥ अथ कासक्षयपित्तादिपरसितोपलादि चूर्ण ॥

मिश्री १६ कर्ष वंशलोचन ८ कर्ष पीपरि ४ कर्ष छोटी इला-

यची २ कर्ष तज १ कर्ष इनकाचूर्ण कर शहत घी मिला चाटे तौ श्वास कास क्षयी हाथ पांवका तपना मंदाग्नि जीभ सूखना पसुरी पीड़ा अरुचि ज्वर रक्तपित्त ये सबरोगनाशकरै॥

अथ ग्रहणी गुल्मपर लवणभास्करचूर्ण॥

पांगानमक ८रु० भर कालानमक ५रु० भरि विड़। सेंधा। धनियां। पीपरि। पीपरामूल। कालाजीरा। पत्रज। नागकेसर। तालीस। अमलवेत इन सबोंको दोदो कर्षले मिरच। जीरा। सोंठि कर्ष कर्ष भरिले अनार ४ कर्ष भरिले इलायची और तज पांच माशे इन सबोंको एकत्र करि कूट पीसछानि चूर्ण बनावे फिर इसकी एकशाण मात्रा मद्यमट्ठा अथवा दहीकेतोड़केसाथ दे तौ बात कफ गुल्म ल्लीह पेटरोग छर्दि अर्श ग्रहणी कुष्ठ कोष्ठ-बद्ध भगंदर सूजन शूल श्वासकास आमदोष हृदयरोग मन्दा-ग्नि आदि सबरोगों को दूर करताहै और दीपन पाचनभी है इस चूर्णको श्रीभास्करने प्रथम सब लोगों के हित कहा है॥

अथ वात पित्त कफछर्दिपर एलादि चूर्ण॥

इलायची। प्रियंगु। मोथा। बेरकी मींगी। पीपरि। श्वेत चन्दन। लावा। लवंग। नागकेसर इनसबको एकत्रकरि कूट पीस छानचूर्ण करै फिर इसमें शहत और मिश्रीमिलाय चाटे तौ बात पित्त कफजन्य छर्दि नाशकरै॥

अथ कुष्ठपर निंबचूर्ण॥

नींबके पंचांग का चूर्ण सूक्ष्म पीसकर १५ पल लोहभस्म हड़। चाब। बड़नींब। चीता। भिलावां। बिडंग। खांड़। आंवरा। हल्दी। पीपरि। मिरच। सोंठि। बकुची। अमलतास। गोखुरू इनसब औषधोंको पलपलभरि लेकर कूटपीस छानिचूर्णबनावे फिर उसे भांगरे के रस में भावना दे फिर खैर और आसन सेरभर पानी में काढ़ाकरि अष्टमांश रहनेदे फिर उसमें इसकी भावना दे फिर सुखा चूर्ण रखछोड़े फिर इसे एककर्ष प्रमाण

खैर आसन के काथ अथवा दूध अथवा घी के साथ एकमास पर्यन्त ले तो सब कोढ़ नाश करे यह रसायन है यहचूर्ण सब रोग नाशकरताहै ॥ अथ पुष्टिपर शतावरि चूर्ण ॥

शतावरि । गोखुरू । किमांचकेबीज । मुल्हशकरी । वरियारा । तालमखाना इनसब औषधों को बराबर ले कूटपीस छान चूर्ण बनावे फिर गोदुग्धमें नित्य पिये तो इसके प्रभावसे स्त्री से तृप्ति कभी न हो और जो स्त्री प्रसंग न करे तो बली होय वर्ण श्वेतहोय ॥ अथ पुष्टिपर अश्वगंधादि चूर्ण ॥

नागौरी असगंध ४० तोलाभर विधारा ४० तोलाभरले दुनों को चूर्णकर घृतके बरतनमें रक्खे फिर १० माशे दुग्धमें पिये तो स्त्रीसे कभी तृप्ति न होय ॥

अथ धातु वृद्धिपरनवायसादि चूर्ण ॥

चीता । त्रिफला । मोथा । विडंग । त्रिकुटा इनसबों को समान ले और पोलाद भस्म १।२ इनकाचूर्ण शहत और घृत के साथ चाटै अथवा गोमूत्र या मट्ठाकेसाथ पियेतो पांडुहृद्रोग भगंदर सूजन कोढ़ उदररोग अर्श मन्दाग्नि अरुचि औरकृमि आदि रोगोंको नाशकरै ॥

अथ स्तंभनपर अकरकरादि चूर्ण ॥

अकरकरा । सोंठि । कंकोल । मिरच । केसर । पीपरि । जाय फल । लौंग । श्वेतचन्दन इनको कर्ष कर्ष भरिले फिर कूटपीस करपलभर अफीम दे कपड़छान करले और सबकी बराबरखांड़ मिलावे फिर माशे भर शहत से चाटे तो वीर्यस्तंभनकरै पुरुष स्त्रीकोसुख देताहै कामीपुरुषइसचूर्णको रात्रिसमयसेवनकरै ॥

अथ चंद्रकलाभिधं चूर्णम् ॥

चिरायता । कुटकी । मोथा । इन्द्रयव । सोंठि । मिरच । पीपरि इनकेसमान भागले और इन्द्रयव के वृक्षकी छाल का सोलहवां भागले और चीतेकी छाल के दो भागले फिर कूट

पीसिछान चूर्णबनावै फिर इस चूर्णकी फंकी उससे दूना पुराना गुड़पानीमें मिलाकर फंकीकरै तो पांडुरोग ज्वर अतीसार अरुचि कामला ग्रहणी बायुगोला और प्रमेह ये सब रोग नष्ट होयँ और रोगी सुखीहोय ॥ अथ अन्य चूर्ण ॥

सज्जी। जवाखार। खारीनमक। कालानमक। सेंधानमक। सोंठि। मिर्च। पीपरि। चाव। अजमोद। चीता। पीपरामूल। हींग। जीरा। सौंफ इनसबको समान भागले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसको गरमपानीकेसाथ अथवा झड़बेरीके बेरोंके औटेजलकेसाथ अथवा मट्ठेकेसाथ पीवै तौ हृद्रोग क्षुधाकी मन्दता बायुगोला अर्शसंग्रहणी आदिसब रोग दूरहोयं ॥

॥ अथ अन्य चूर्ण ॥

सज्जी। जवाखार। पीपरामूल। पीपरि। चाव। चीता। सोंठि। मिरच। सेंधानमक। सांभर नमक। खारीनमक। समुद्रनमक। हींग। अजवाइन इनसबकोसमानले कूट पीसछान चूर्णबनावै। फिरइसमें अमलवेतअथवा बिजौरा। नींबूअथवापानी। आमला इनतीनोंमें से किसीएकके रसकी भावना देकेबनाय रक्खे यह चूर्ण अतिदीपन पाचनहै औरकफवादी संग्रहणी और अर्शरोग आदि इन सबोंको नाश करताहै ॥

॥ अथ अन्यचूर्ण ॥

चीता। बच। बेलगिरी। सोंठि इनसबोंको एकत्रकरि कूट पीसिछानि चूर्णबनावै फिर इसचूर्णको तक्रके साथ लेनेसे दुष्ट संग्रहणी दूरहोजातीहै ॥ अथ अन्य चूर्ण ॥

कालानमक। चीता। मिरच। इनके चूर्णकोतक्रकेसाथपीने से संग्रहणी उदररोग बायुगोला अर्शक्षुधाकीमन्दता और प्लीह येसबरोग नाशहोयँ ॥ अथ चिंतामणिचूर्ण ॥

जैतकेबीज। बरियारेकी जड़। पद्माक। काहू। देवदारु। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपरि। बिड़ंग इनसबोंको समान ले

कूटपीस छान चूर्णबनावै फिर इसचूर्ण को विषम मधु घृत के साथखायाकरै तो श्वासरोग और कासरोग दोनोंदूरहोजायँ ॥

अथ अन्यचूर्ण ॥

पीपरि । पीपरामूल । बहेड़े का बक्कल ॥ सोंठि इनकेचूर्ण को माक्षिककेसाथ चाटनेसे खांसीका रोग शांतहोजाय ॥

अथ अन्यचूर्ण ॥

सोंठि । मिरच । पीपरि इन्हें समभाग लेकर चूर्ण करै उसी चूर्णकेसमानगुड़ और दुगुनाघी मिलायके चाटनेसे श्वासका रोगबहुतशीघ्र नष्टहोताहै ॥

अथ अन्यचूर्ण ॥

त्रिफला । गिलोय । चीता । रायसन । बायबिड़ंग । सोंठि । मिरच । पीपरि इनदशों द्रव्योंको बराबरले कूट पीसछानचूर्ण बनावे जितनाचूर्ण होय उसमें उसी हिसाबसे शक्कर घोरकर उस का सेवनकरै तो खांसीका रोगजाय ॥

अथ लोलिंबराजमिद चूर्णम् ॥

सोंठिके पांचभाग । पीपरिके चारिभाग । अजमोदकेतीन भाग । अजवाइनके दोभाग । नमक का एकभाग इन पन्द्रह भागोंके तुल्य हड़लेकर कूटपीस छान चूर्ण बनाय खाय तो पेटकी गुड़गुड़ाहट पेटके शूल आमके रोग वायुगोला और मलके रोग हरै ॥ अथ अमलबेत चूर्ण ॥

संचरलनमक १ पैसाभरि समुद्रनमक १ पैसाभरि सांभरि नमक १ पैसाभरि सेंधानमक १ पैसाभरि पीपरि २ पैसा भरि पीप-रामूल २ पैसा भरि स्याहजीरा २ पैसाभरि पत्रज २ पैसाभरि नागकेसर २ पैसाभरि तिल २ पैसाभरि मिर्च १ पैसाभरि जीरासफेद २ पैसाभरि सोंठि १ पैसाभरि अनारदाना १ पैसा भरि इलायची दोपैसाभरि लौंग १ पैसाभरि दालचीनी २ पैसा भरि जवाखार २ पैसाभरि खुरासानीअजवाइन २ पैसाभरि

कलौंजी २ पैसाभरि त्रिफला ३ पैसाभरि मूलीके बीज १ पैसा भरि अमलवेतकी गिरी काढ़ले इन सब औषधों को कूटपीस गिरी में भरै फिर जितना खाली होताजाय उसमें नींबू नि-चोड़ताजाय कभी खाली न होनेदेवै और जबप्रातघाममें रात्रि कोछांयामें सुखाचुके तब २ मासे खायतो उदरबिकार सर्वही जायँ और भूखलगै और हजम बहुतकरै॥

अथसंचल क्रिया॥

संचल ऽ। भरि सेंधा ऽ। भरि जंगसनमक ऽ१ सेरभरिसांभर ऽ। भरि आमला ऽ१ सेर पीस छान गोमूत्र हांडी भरि चढ़ावै नीचेआंचदे शीतलहोइ तब हांडीफेंकदे खाइरोगजायसही॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रसवाईप्रताप-सिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेअनुभूतचूर्ण कल्पनानामएकोनत्रिंशत्तितमस्तरङ्गः॥

अथ बटी कल्पना माह॥

बटी अर्थात् गोली कईनामोंसे प्रसिद्धहै उनमेंसे कुछयेहैं बटिका। गुटिका। बटी। मोदक। पिंडी औरगुंडी इत्यादियह गोली बिना आगके योगके गुग्गुलसे बँधजातीहैं और शहत से भी बँधतीहैं इन गोलियोंमें मिश्री चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गुल और शहत बराबरदेना द्रव्यबस्तु दूनी देना इसीरीतिको जितने सद्वैद्य हैं सब करते हैं इसके खानेका प्रमाण कर्षमात्रहै अथवा देहबल दोष देखकर जैसा उचितहो खिलावै॥ अथ अर्श पर इन्द्रारुकी गुटिका॥

इन्द्रारुन मोथा। सोंठि। जमालगोटाकीजड़कीछाल। हड़। निसोत। कचूर। बिड़ंग। गोखुरू। चीता। बच इनसबोंको दो दो पलले और जमींकन्दआठपल। निघासचारिपल और भिलावां ४ पल। द्रोणभरि पानीमें औटै जब चौथाई रहै तब उतारिले फिर छान करि उसका तिगुना गुड़ दे पकावै जब

वहपककर नितरिउठै तब उसमें यहचूर्ण डालै ॥ चीता । नि-
सोत । जमालगोटाकीजड़ । बच येसब पल पलभरि । त्रिकु-
टा । इलायची । बड़ालज येतीन तीन पलले इनको पीसछान
कर प्रस्थ भर शहतमें पूर्वोक्त यह चूर्ण युक्त बँधने माफिकहो
तैसामिलावै तब बाहुशालगुड़ासिद्धहोय फिरियह सर्वार्शगुल्म
बातोदर आठबायु नाकटपकना क्षयी पीनस हलीमक पांडु प्र-
मेह ये सब नाशहोयँ ॥

अथ कासपर मरिचादि गुटिका ॥

मिरच । पीपरि । कर्ष कर्षभरि जवाखार पांचमाशेअनार८
कर्ष गुड़ आठकर्षमें चार चार माशेकी गोली बांधे इसगोली
कोमुखमें धरराखे इसके प्रभावसे सब खांसी दूरहोय ॥

अथ श्वासपर गुड़ादि गुटिका ॥

गुड़ । सोंठि । हड़ । मोथाकी गोली जितने गुड़मेंबँधेमाशे
भरकी मुंहमें राखै तौ सब श्वास कास हरे इसी प्रकारसे मुख
में केवल बहेड़ा रखनेसे भी यह रोगजाय ॥

अथप्यासपर आंवलादि वटी ॥

आंवला । कमल । कूटला । बटजटा इन्हें पीस शहतमेंगोली
बांधि मुखमें राखै तौ महातृषा मुखसूखना दूरहोय ॥

अथ सन्निपातपर संजीवनीगुटिका ॥

विड़ंग । सोंठि । पीपरि । हड़ । आंवला । बहेड़ा । बच । गो-
खुरू । भिलावां । शुद्ध सींगिया इन सबको बराबरले गोमूत्रमें
खरल करै फिर घुंघचिल समान गोली बांध अदरक के रसमें
खिलावै जो अजीर्ण होयतौ १ गोली दे जो बिशूचिका होयतौ
दो गोली इसी प्रकार सांपके डसेको सन्निपातमें चारिदेवै इस
बटीका नाम जीवनी अर्थात् मनुष्यको जिवानेवालीहै ॥

अथ पीनसादिपरत्रिकुटादिवटी ।

त्रिकुटा । अमलबेत । बच । तालीसदल । चीता । जीरा ।

इसलीकी छाल इन सत्रोंको कर्ष २ भरिले और तज पत्रज इलायची चार चार माशेले और गुड़ कर्षभरि इसका व्योषादि गुटिका नामहै पीनस श्वास कासको नाश करतीहै रुचिबढ़ावै कंठस्वर शुद्धकरै नाक पकना बंदकरै यदि आम दोष हो तौ सोंठि और गुड़की गोली देना अजीर्णमें गुड़ और पीपरि कृच्छ्र में गुड़ और जीरा और अर्श में गुड़ और हड़की गोली देना॥

अथ अर्शपर बृद्धदारु मोदक ॥

बिधारा। भिलावां। सोंठि पीस गुड़में गोली बांधि देइ तो छओं भांतिके अर्श दूरिकरै ॥

अथअर्शपर सूरनि वटिका ॥

सूखे सूरन का चूर्ण ३२ भाग चीता १६ भाग सोंठि ४ भाग मिरच २ भाग इन सब का चूर्ण करि गुड़ में गोली बांधि खिलावैतो सबअर्श नाश होयँ अथवा सूरन बिधारासोलह २ भागले मुसली ८ भागलेइ चीताभी ८ भागलेइ त्रिफला। बिडंग। सोंठि। पीपरि। भिलावां। पीपरामूल। तालीस ये भिन्न भिन्न चारि २ भागले तज इलायची और मिर्च ये दो दोभाग ले इन सबका चूर्णकरि दूनेगुड़में गोलीबांधि खिलावै तौअग्नि प्रबलहोय अर्श बातकफजन्य ग्रहणी श्वास कास क्षयी प्लीह पीलपद शोथ प्रमेह भगंदरवालोंको श्वेतहोना येसबदूरिहोयँ धातु और बुद्धिप्रबलहोय यह रसायनहै ॥

अथ कामलादि पर मंडूर वटी ॥

त्रिफला। त्रिकुटा। चाब। पीपरामूल। चीता। देवदारु। सोनामक्खी। हल्दी। मोथा। मंजीठ इनको कर्षकर्ष भरिले और मंडूर शोधकरि सबसे दूनाले अष्टगुण गोमूत्रमें पकाइ गोली बांधि मट्ठेके साथ खायतौ कामला पांडु अर्श शोथ प्रमेह कुष्ठ कफरोग गठिया अजीर्ण प्लीह इन सबको नाशकरै ॥

॥ अथ चन्द्रप्रभा गुटिका ॥

कपूर। बच। मोथा। चिरायता। गुर्च। देवदारु। हल्दी। अतीस। दारुहल्दी। पीपरामूल। चीता। धनियां। त्रिफला। वच। विडंग। गजपीपरि। त्रिकुटा। सोनामक्खीभस्म। सज्जीखार। जवाखार। तीनोंनमक। सेंधा। काला और पांगा ये द्रव्य चारि २ माशे निशोत। दात्यूणि। पत्रज। तज। इलायची। बंशलोचन ये सब कर्ष कर्ष भरिले औ लोहेकी भस्म २कर्षले इन सबका चूर्णकरि मिश्री ४ कर्ष गुद्दशिलाजीत ८ कर्ष इनसब कोएकत्रकरि कूटिकर सुन्दर गुटिकाबनावे यह चन्द्रप्रभागुटिका सबरोगोंकेनाशकरै कास प्रमेह कृच्छ्र मूत्राघात पथरी बिड्बंध पेटफूलना शूल इन्द्रीफूलना ग्रन्थि अर्बुद अंडवृद्धि कटिशूल श्वासकास कुष्ठ भेद अन्त्रवृद्धि पांडु कमल भेद सर्वांग खुजरी प्लीह उदररोग भगन्दर दन्तरोग नेत्ररोग स्त्रीके ऋतुरोग पुरुषका धातुरोग मन्दाग्नि अरुचिबात पित्तकफ सबनाशकरै बलकरै धातु बढ़ावे यह रसायनहै १० माशे व १६ माशे अथवा दोष बल बिचारिकरखाय ॥

॥ अथ गुल्मपर कांकायन गुटिका ॥

अजवायन। धनियां। जीरा। मिरच। कृष्णकान्ता। अजमोद। ममरेला। भिन्न भिन्न चार २ शाणपृथक्ले भूजीहींग ६ शाणले दूनोंखार। पांचोंनमक। निशोत येसब आठआठशाण लेइ और दतूनि। कचूर। पुष्करमूल। बिड़ंग। अनार। हड़। चीता। अम्लबेत। सोंठि ये सब सोलहशाणले फिर इसका चूर्णकरै और बिजौराके रसमेंबटी बांधे फिर घृत। दूध। मद्य। नींबूकारस। उष्णोदक इनके साथ कांकायन बनाकर वैद्य पिलावै गुल्मकोनाशकरै बात गुल्मको मद्यमें पित्तगुल्मकोगोक्षीरसंग कफगुल्म को गोमूत्रके साथ त्रिदोष गुल्ममें दशमूल के काथकेसाथ स्त्रीके रक्तगुल्मको उष्ट्रीदुग्ध संगदेइ ॥

अथ वातरोगपर कैशोर गुग्गुल॥

त्रिफला तीनप्रस्थ। गुर्च १ प्रस्थ इन सबको कूटिकर डेढ़ द्रोणजलमें औटावै जब अर्द्धजलरहै तब छानिकर शुद्धगुग्गुल प्रस्थ चारिडालै फिरिलोहपात्रमें लोहेकी करछी से घोटि गुड़ पाकसम गाढ़ाकरि ये औषध डालै आंवला। बहेड़ा। अर्धअर्ध पल गुर्च १ पलत्रिकुटा ६ कर्षबिड़ंग अर्धपल दंतिहानि १ कर्ष निशोत १कर्ष इनसबको गुड़पाकमेंसानि पिण्डबांधि घीकेपात्र में धरै फिर इसकीगोली शाणप्रमाणदे अथवादोष विचारिकर दे और इसका अनुपान तप्तबारि दुग्ध मंजीठ काथ अथवा वैद्य जो उचित समझे उसकेसाथदे तो सब कुष्ठजायँ त्रिदोष जन्य बातरक्तजाइ सबतरहके व्रण गुल्मप्रमेह पिड़िकाप्रमेह उदररोग मन्दाग्नि कास सूजन पांडु आमरोग ये सब रोग इस के खानेसे निस्संदेह नाशहोयँ यहभी एक रसायनहै इसकाअर्थ को कैशोरकऋषिने कहाहै इसकारणसे इसकानाम किशोर गु-ग्गुलहै यह गुग्गुल कांतिप्रदहै और रूसादिकाथकेसाथ खाने से नेत्ररोग दूरहोता है और बरुणादि काथकेसाथ गुल्मरोग दूरिकरै और खदिरादि काथकेसाथ व्रणरोग और कुष्ठ दूरिकरै खट्टी तीक्ष्ण मैथुन श्रम घाम क्रोध इन सबको त्यागकरै और संयम बहुतकरै॥

अथ भगंदरपर त्रिफला गुग्गुल॥

त्रिफलाचूर्ण ३पल पीपरिकाचूर्णपलभर शुद्धगुग्गुल५ पल इनसबको एकत्रकरि गोलीबांधि रोगीको अग्नि बिचारकेदे तो भगन्दर गुल्म शोथ छओं अर्शदूरिहोयँ॥

अथ प्रमेहपर गोक्षुरादि गुग्गुल॥

गोखुरू २८ पल छैगुने पानीमें काढ़ाकरि अर्धशेषरहे फिर सातपल गुग्गुलडालि पकावै जबगुड़ पाकसाहो तब आगेलि-खीहुई द्रव्योंको उसमेंडालै त्रिफला। त्रिकुटा। मोथा। येसातों

पलपलभरिमिलाय पिण्डीकर गोलीबांधे फिर प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात बात रक्त वातरोग शुक्ररोग पथरी इनसबको नाशकरै ॥

अथ कुष्ठपर त्रिफला मोदक ॥

त्रिफला ८ पलभिलावां ४ पल बकुची ५ पल बिड़ंग ४ पल लोहभस्म। निशोत। गुग्गुल। शिलाजीत सब एकएक पल। पुष्करमूळ अर्द्धपल। चीता अर्द्धपल। मिरच २ शाण। सोंठि। पीपरि। मोथा। तज। इलायची। पत्रज। केसरि इनसबकोशाण शाणभरिले फिरिचूर्णकरि सबचूर्णके समान खांड़ले पाककरि चूर्णडाल गोली बनावै गोलीका प्रमाण पलभरिहै फिरि अग्नि बलदेखि रोगीको खिलावै तो सबकुष्ठनाशकरै त्रिदोषसर्वआम रोग भगन्दरप्लीहा गुल्म जिह्वा कंठरोग ग्रीव पीठि येसब रोग नाशहोयँ शरीरकेनीचेके रोगोंमें भोजनान्त औषधदेना मन्दाग्निजनितमें भोजनके मध्यदेइ शिरबन्धीरोगोंमें भोजनान्त देना ॥

अथ गंडमाला पर कचनार गुग्गुल ॥

कचनारकी छाल १० पल त्रिफला ६ पल त्रिकुटा ३ पल वरुण १ पल इलायची। पत्रजकर्षकर्ष भरि इनसबको एकत्रकरि चूर्णकरै फिरसर्व चूर्णसमान गुग्गुलपीस करिन्गु मिलायपिंड बनावै फिर ४ माशेकी गोलीबनाइ रोग और औषधबल देखि रोगीको प्रातसमयदे तो गंडमाला अपची अर्बुद घाव ग्रन्थि कुष्ठ भगंदर आदिसबरोगोंको नाशकरै और इसका अनोपान मुंडीरस अथवा हड़केकाथ अथवा उष्णोदकके साथ है ॥

अथ धातुपुष्टपर माषादि मोदक ॥

माष अर्थात् उर्दकीदालको धोइचूर्ण करिले गोहूंकाचूर्ण यवकीगूदीकाचूर्ण सांठीचाउरकाचूर्ण पिपरीचूर्ण सब पलपल भरिले फिरसब चूर्णका आधाघृतलेकरिभूंजे फिरिचूर्णकेसमान खांड़ले तब सबका दूनाजल डारि मन्दमन्द आंचदै घोटै जब सिद्धहोय तब पलपलभरिके लड्डूबांधि संध्यासमय खायकर

उसके ऊपरसे चारिपल दुग्धपिये फिरक्षार और खटाई दो रस न खाय स्त्री प्रसंग करै तौ वीर्य न द्रवै देहपुष्टरहै ॥

अथ सूरनवटिका ॥

सूखाज़िमींकंद ८ भाग चीतेकीछाल ४ भाग हड़ ५ भाग सोंठि ५ भाग मिरच पीपरि २ भाग गुड़ १४ भागले गोली बनावे गोलीरुचिकी देनेवालीहै और मन्दाग्निबवासीर कब्जियत तथा उदर रोगोंको दूरकरती हैं तैसेही गलि पीलूके फलों के खानेसे ववासीरकृमि संग्रहणी गुल्म ये रोग दूरिहोयँ ॥

अथ आदित्य वटी ॥

चौपाई ॥

बच औ सोंठि हींग विष आनू । जीरा मिर्च चीत तज जान ॥
समकरि भृंग राज रस लीजै । ताहि एक क्षण मर्दन कीजै ॥
चना सरिस गुटिका त्यहि करै । आदित वटी नाम शुभ धरै ॥
बात रोग हिय रोग बहावे । अष्ट शूल अरु गुल्म नशावै ॥
पचै अन्न अति अग्नि बढ़ावै । अर्श मात्रको खोजि घटावै ॥

अथ कासश्वासे गुटिका माह ॥

मोथा। सोंठि। हरीतकी इनतीनों को पीसकरि गोलीबांध और उसेतीनदिनतक मुखमें रक्खाकरै औरसे थूकाकरै तौ श्वासरोग और कासरोग ये दूरिहोयँ ॥

अथलवंगादि गुटिकायाह ॥

लौंग। मिरच। बहेड़ेका बक्कल इनतीनों के समान भाग लेकरि कूट पीसकरि इकट्ठे करले और इनसब के समान खैरसारभी पीसकरिले ले इसके पीछे बबूल की छालको औटाकरि उसका पानी गेर कर उसकी गोली बांधले फिर उसगोली के खानेसे आठघड़ी के पीछे सब प्रकारकी खांसीको दूरकरि रोगी को सुखीकरती है ॥ अथ सन्निपातपर गोली ॥

लौंग। जायफल। जावित्री। तज। पत्रज। जमालगोटा। भुनासुहागा। हड़का छिलका। घृतकी भुनीहुई हींग इनसब औषधों को धेला धेला भरिले फिर कूट पीस कपरछान करि

सहँजने के रसमें गोलीबांधे फिर जो एकगोली गरमपानी के साथखाय तौ दस्तलगै पेटका भारीपन जाय ज्वर और शीत जाय जो इसगोलीको १० बर्ष पर्यन्त खाय तौ कुष्ठभी जाय॥

अथ सन्निपात पर दूसरी गोली ॥

मिरच ५ टं० विष २ टं० इनकोकूटि धेलाभरि बच ५ धेला भरिमोथा इनका कपरछान करि अदरख के रसमें २ पहर पर्यन्त खरलकरि तिसपीछे १ रत्ती प्रमाणगोली बनावै फिर १ गोली देय तौ सन्निपात जाय ॥

अथान्य वटिका ॥

अकरकरहा १ टं० हड़कीछाल १ टं० विष १ टं० मिरच ३ टं० बच ७ टं० वायविडंग ७ टं० बहेड़ेकीछाल ५॥सेर इन सब औषधों को कपरछानकरि ५॥ बहेड़े की छालके रसमें १ रत्तीप्रमाण गोली बांधे फिरि १ गोली दे तौ सन्निपात दूरि होय और बात खांसी गलामाथेका शूल हड़फूटनि ये सबरोग जायँ ॥

अथ दाहयुक्त अतीसारपर गोली ॥

जावित्री । जायफर । नागकसरि । लौंग । अफीम इनसब औषधोंको एक एक टङ्क ले फिरि महीन पीस पानी में एक रत्तीप्रमाण गोली बांधि जीरा और सोंठिके अनोपानसे खवावै तौ अतीसार दूरिहोय और दाहमिटै ॥

अथ अतीसारपर लीलावतीगोली ॥

बच । रूमीमस्तगी । अनारकीकली । बंशलोचन । आम कीगुठिली । लोध । मुलहठी । धायकेफूल । मोचरस । कुड़ेकी छाल । जायफर । बबूरकीकली । माई ये सब औषधधेलाधेला भरिले और इनसबसे दूना खैरले और खैरसाढ़ेतिगुण कुम्हड़ेके बीजले इनसब औषधों को कपरछानकर पोस्तके पानीमें चारिचारिमाशेकी गोलीबांधे फिर १ गोलीचावलके धोवनकेसाथ देतौ सातप्रकारका अतीसार जाय पथ्य दहीऔरभातहै ॥

अथ अजमोदादि गुटिका ॥

अजमोद ऽ। भरि हड़ । बहेड़ा । आंवरा । सोंठि । सुलतानी । बिदारीकन्द । धनियां । मोथा । मोचरस । गजपीपरि । लौंग । जायफर । पीपरि । चीतकीछाल । अनारदाना । भारंगी । कमलगट्टा । मिर्च । दोनोंजीरे । कुटकी । अजवायन । पीपरामूल । रेणुका । बायबिड़ंग । बच । कायफर । पित्तपापड़ा । तिधारा । दतूनियां । कुरुडान्नासार ये सब औषध कपरछान करै तिस पीछे बीसवर्षका पुरानागुड़ ऽ१ सेर भरले पाककरि सब औषध मिलाय दोदो पैसा भरकी गोली बनावे फिरि एकगोली गर्मजलसे प्रात समय खायतो कछुई और पेटका भारीपन जाय और उदर बिकारजाय ॥

अथ अपरअजमोदादि गुटिका पुष्टपर ॥

अजमोद । हड़ । बहेड़ा । आंवला । बिदारीकन्द । सोंठि । धनियां । मोचरस । मोथा । गजपीपरि । लौंग । जायफर । पीपरि । सुलतानी । बिजया । अनारदाना । दोनोंजीरे । चित्रक । भारंगी । कमलगट्टा । कोंचके बीज । मुलहठी । शिलाजीत । काकड़ासिंगी । केसरि । नागकेसरि । पुष्करमूल । शतावरि ये सब औषध बराबर पैसा पैसाभरिले कपरछानकरि तिस पीछे पांचसेर गौकादूध मंगायऔटावे जब एकसेर शेषरहै तब एकसेरखांड़ और सबऔषध मिलाय दो पैसे प्रमाणगोलीबांधे फिर एकगोली नित्यखाय तौ बलबढ़ै पुष्टता अधिकहोय ॥

अथ जमालगोटेकी गोली आमवातपर ॥

जमालगोटा धेलाभरि । सज्जी । सांभरनमक । सोंचरनोन । सेंधानोन । धेलाधेला भरि ले सोंठि ५ टं० गौकादही २ सेर ले इन सब औषधों को कपड़छानकरि दहीडारि आंवरेके प्रमाणगोली बांधे १ गोली प्रभातसमय खाय तौ आमबात

पेटका भारीपन देहके शोथजायँ और दोनों समय खायतौपेट के कृमि जायँ॥

अथ भूखवढनेकीगोली॥

सेंधानमक। हड़। सज्जी। जवाखार। सोंचरनमक। सांभरिनमक। खारीनमक। सोंठि। जीरा। मोथा। अजवायन। पीपरि। मिरच। चीतेकीछाल। अजमोद। वायविडंग। धनियां तिंतिरीक ये सबऔषध पैसा पैसा भरिले कपड़छानकरिचूक के रसमें और अदरखके रस में धेला धेला भरकी गोलीबांधे फिर एक गोली नित्यखाय तौ अन्नवहुतपचै वात दूरिहोय भूखवढै॥

अथ कफ और भूखपर चित्रकादिगोली॥

चीतेकीछाल। पीपरामूल। अजवायन। भुनासोहागा। पांचोंनमक। सोंठि। पीपरि। मिरच। हींग। अजमोद येसव औषध बराबरले कपरछानकरि बिजौरा नींबूके रसमें धेलाधेला भरकी गोली बांधे फिर १ गोली खायतौ कफदूरि होय और भूख वहुतलगै अन्न वहुत पचै॥

अथ मुखपाकपरखैरसार गोली॥

जायफल। कस्तूरी। भीमसेनीकपूरऔर सुपारीइनसबके बराबरखैरसारले फिर इसेमहीन पीसगोली बनाय मुखमें धरै तौ मुखके सवरोग दूरिहोयँ अथवा खैरसार। जायफल। भीमसेनीकपूर। दक्षिणीसुपारी। तज। पत्रज। नागकेसरि। इलायची। कस्तूरी ये सब बराबरिले महीन पीस खैरसारकेकाढेमें चने प्रमाण गोली बनावै एकगोली मुखमें राखै तौजीभ ओठ दांत मुख गला तालू इनसबके रोगदूरिहोयँ॥

अथपाचककीगोली॥

पावभरआककी मुहमूंदीकली पावभरिमिरच। सेंधानमक २ पैसाभरि इनसवको मिलाय महीनपीस झरबेरीके बेरप्रमाण गोली बनावै और १ गोली जलके साथखाय तौ अजीर्ण अफरा आदि उदररोग दूरिहोयँ और भूख बहुतबढै॥

अथ शंखवटी ॥

शंखको सातबार तपायमट्ठामें बुझावे तौ शंखकीभस्महोय फिरि शंखभस्म छटांकभरि सोंठिआधपावजीरासफेद२ ट० भरि चौकिया सुहागा २ ट० भरि पोदीना २ ट० भरि अमलबेत २ ट० भरि जवाखार १ ट० भरि जिरिश्क २ ट० भरि भूनी हींग पैसाभरि सेंधानमक २ ट० भरिकचलोन २ ट० भरि कालानमक २ ट० भरि इनसबको महीनपीस कपरछानकर ऽ॥ सेर सहँजनेकेरसमेंघोटे तिसपीछे ऽ॥ सेरनींबूके रसमेंघोटे फिरझरबेरीके बेरसमान गोलीबनावे और एकगोली प्रातःकालतथा सन्ध्यासमयखाय तौअफराआदि उदररोगसबदूरि होयँ और पाचन होय और भूखकी वृद्धि निस्संदेह होय ॥

अथ गन्धकवटी ॥

शुद्धगन्धक २॥ टं० चित्रक २टं० कालीमिरच २ टं० पीपरि २ टं० जवाखार २ टं० सेंधानमक २ टंक कालानमक १ टं० सांभरि नमक १ टं० इन सबकोपीस नींबूके रसमें ७ दिन खरलकरे तिसपीछे १ टं० प्रमाणगोली बनाय एकगोली जलके साथले तौ अजीर्णशूलआमकादोष बायुगोला अफरा ये सबरोग निस्संदेह तत्काल दूरिहोयँ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीबिरचितेअमृतसागरनामग्रंथेअनुभूतबटी कल्पनानिरूपणं नाम त्रिंशतितमस्तरंगः ३० ॥

अथ लेपन विधान ॥

लेपके तीननामहैं लिप्तलेप और लेपन और सुखलेपदोषघ्न बिषघ्नऔर वर्णप्रदहैं इनकाप्रमाण तीनभांति परहै जोलेप अंगुलभरि मोटाहो वह दोषघ्नकहलाताहै और पौनअंगुलमोटे लेपको बिषघ्नकहतेहैं और अर्द्धांगुल लेपको वर्णप्रद कहतेहैं औरलेपरोगको हरतेहैं औरसूखे कांतिको दूरिकरतेहैं ॥

अथ दोषघ्नलेप ॥

गंदापुरैना । देवदारु । सोंठि । सिर्स । सहिंजन । तुचा इन पांचोंको समभागले कांचीपरपीस सूजनपर लेपकरै तौ सूजन दूरिहोयऔर बहेड़े की मींगीके लेपसेभी दाहपीड़ा दूरिहोय ॥

अथ दशांगलेप ॥

सिरसों । मुरैठी । तगर । लालचन्दन । इलायची । जटामासी । हर्दी । दारुहर्दी । कूट । नेत्रबाला इनदशोंको समभाग चूर्णकरि पंचमांश घृत मिलाय पानीमें पीसि लेपकरै तौ बिसर्प बिषदोष विस्फोटक सूजन दुष्टफोड़ा ये सब नाशहोयँ ॥

अथ विषघ्न लेप ॥

बकरीकेदूधको तिलके साथ पीसकर मक्खन मिलाय लेप करै ॥ अथवा काली मिट्टी और तिलकालेपकरै तौ बिषसम्भव सूजन भिलाव सूजन ये दूरहोयँ ॥

अथ अन्यलेप ॥

करियारी । अतीस । दूधिया । कटुतोरई । मूरी तीनों के बीज पांचों के समान कांजीमें पीसकर कीटदंश और विस्फोटक पर लगावै तौ इनका दोषमिटै ॥

अथ कांतिकारक लेप ॥

रक्तचन्दन । मंजीठ । कूठ । मालकांगनी । बटांकुर । मसूर इनसबको समानले जलमेंपीसि लेपकरै तौ ब्यंगरोगमिटै और कांति बढ़ै अथवा बीजपूर की जड़ घृत मसिल गोमय रस मिलाय लेपकरै तौ कान्तिबढ़ै और ब्यंगरोग दूरहोय ॥

अथ तरुणपिटिकापर लेप ॥

जो तरुण मनुष्य के मुखपर छोटी २ पिरकी उभरती हैं उन को तरुणपिटिका कहते हैं । अथ लेप ॥ लोध और धनियां को पीसि लेपकरै अथवा गोरोचन और मिरच पानी में पीसि लेप करै अथवा सरसों वच लोध और सेंधव ये समभागले जलमें

पीसि लेपकरै तौ मुंहपर तरुणपनकी पिटिका अच्छी होयँ ॥

अथव्यंगरोगपरलेप ॥

अर्जुनकी छाल वा मंजीठ वा श्वेत घोड़ेके नख भस्म आदि में से कोई द्रव्यले शहत संयुक्त लेपकरै तौ व्यंगरोग जाय ॥

अथ मुखपरकी झाई पर लेप ॥

मदारके दूधमें हल्दी को घिसकर लगानेसे बहुत दिन की भी हुई झाई निश्चय दूरहोय ॥

अथ तरुण पिटिका पर लेप ॥

बटका पीलापत्र । चमेली । रक्तचन्दन । कूठ । दारुहल्दी । और लोध इन सबको पीसि लेप करै तौ तरुणपिटिका व्यंग और झाई दूरहोयँ ॥ अथ रूखीपरलेप ॥

पुराने तिल वा उसकी लकड़ी कुकुटबीट दोनों गोमूत्रमें पीसि लेपकरै तौ रूखी दूरहोय ॥ अथवा खैर नींब जामुन तीनों की छाल गोमूत्रमें पीसि लेपकरै तौ रूखी दूरहोय ॥

अथ दारुण रोगपर लेप ॥

चिरौंजी । मुलहठी । कूठ । माष । सेंधव इनसबको समान भागले पीसकर शहत मिलाय लेपकरै तौ दारुणरोगदूरहोय ॥ अथवा खसखसको दूधमें पीसि लेपकरै ॥ अथवा आमकी बिजली औ छोटी हड़ दूधमें पीसि लेपकरै तौ दारुण रोगनाश होय ॥ अथ इन्द्रलुप्त पर लेप ॥

कडुये परवलकी पत्तीके रसको तीनदिन लेपकरै तौ बादखोरादूरहोय ॥ अथवा भटकटैया और शहतलेपकरै ॥ अथवा घुंघची के पत्र वा फूलकारस शहत के साथलेपकरै ॥ अथवा भिलावेंकारस और शहत दोनोंको लेपकरै तौ बादखोरा दूर होय ॥ अथ केशवर्द्धनलेप ॥

गोखुरू और तिलके पुष्प दोनोंको बराबरले चूर्ण कर फिर समान घृत और शहतमें फेंटकर लगावे तौ बारबढ़ै ॥

अथ बालों के उगनेपर लेप॥

हाथीदांतको जलाइ रसौत और बकरी के दूधमें पीसिलेप करै तो जहां बारभी न हों यथा हथेली वहां भी जमें॥

अथ इन्द्रलुप्तपर द्वितीयलेप॥

मुलहठी। कमल। दाख तीनोंको घृत या तिलकातेल और गौकेदूधमें लेपकरैतौ चाट्रखोरा दूरहोय॥ अथवा चतुष्पदचर्म रोम नख सींग और हाड़ इनकीभस्म तिलके तेलकेसाथ लेप करैतौ नष्टबारभीजमें॥ अथ कृष्णकरन लेप॥

इन्द्रायनके बीजकातेल पातालयंत्रसे निकाल सफेदबालों परलगावे तो कालेहों॥ अथवा लोहचूर्ण। भंगरा। त्रिफला। कालीमिट्टी इनसबको चूर्णकरि उष्णारसमेंसानि मासभरिराखि कुछदिनों लेपकरै तौअकालकेश्वेत बालकालेहों॥ अथवा आंवले ३ हड़ २ बहेड़ा १ आमकी बिजुली ५ लोहचूर्ण एककर्षले सबको कड़ाहीमें सूक्ष्मघोटे और उसको दिनराति उसीमें रहने दे और फिरलेपकरै तौ श्वेतकेश कालेहों॥ अथवा त्रिफला। तिलकेपत्ते। लोहेकाचूर्ण और भंगरा सबको समभागले बकरे के मूत्रमें पीसि पकेहुये बालोंपर लेपकरै तो बाल काले होयँ॥ अथवा त्रिफला। लोहकाचूर्ण। अनारकीछाल। कमलकीनाल इनको पांच पलले और भंगरेका रस छः प्रस्थ निचोड़ उसमें पूर्वोक्त द्रव्य एकत्रकरि लोहेकी कड़ाहीमें सूक्ष्मकरि घोटै और एकमास तक उसमें राखे तिसपीछे निकालि बकरीके दूध में पीसि श्वेत बालोंपर लेपकरै और अरण्डके पत्तबांधैफिर रात्रि भर बँधेरहनेदे और प्रभात स्नान समय धोयडालै इसप्रकार से तीनदिन लेप करै तो सफेदबाल काले होयँ॥

अथ लोमशातनप्रकार॥

अथ बाल गिरानेका लेप॥

शंखचूर्ण दोभाग। हरताल एक भाग। मैनशिल अर्द्धभाग।

इन सब दवाइयोंको पानीमें पीस जहां के बाल गिरानेहों वहां लेपकरिदे और बाकी बालोंको कपड़े से दँकदे फिर लेपके पहिले बालदूरकरि उसकी जगहमें यह लेप सातबार करै तब सबबालगिरैं और फिर न होयँ॥ अथवा हरताल। शंखचूर्ण। पलाशक्षार। दो२शाणलेके दराड अथवाआकपत्रके रसमेंपीसि लेपकरै तौ बाल गिरजायँ यह लेप बालगिराने को अच्छा है॥

अथ सफेद कुष्ठपर लेप॥

पीली चमेली। गजपीपरि। कसीस। बिड़ंग। मैनशिल। गोरोचन। सैंधव इनसबको बराबरले गौकेमूत्रमें पीसि लेपकरै तौ सफेद कुष्ठ दूरहोय॥ अथवा काकटोंटी। कूठ। पीपरि। इनसबको समानले खसीके मूत्रमें पीसिलेपकरै तौ श्वेत कुष्ठ दूरहोय॥ अथवा बकुची। अमलबेत। सलाप। कठगूलरी। पीपरि। रसौत। लोहचूर्ण। कालेतिल आठों को समभाग ले गोपित्तमें पीस लेपकरै तौ श्वेत कुष्ठ दूरिहोय॥

अथ सेहुआं लेप॥

आंवरा। राल। जवाखार इनसबको सौबीर अथवाकांजी में पीसि लेपकरे तौ सेहुआं दूरहोय वा दारुहल्दी। मूरीकेबीज हरताल। देवदारु और पान ये सब कर्ष २ भरले और शंख चूर्ण शाणभरले पानीमें पीसि लेपकरै तौ सेहुआं दूर होय॥

अथ नेत्र लेप॥

हड़। सैंधव। गेरू। रसौत। चारोंको समानले पानीमेंपीसि पलकपर लेपकरै तौ सबनेत्ररोगदूरहोयँ अथवा रसौत। सोंठि। मिर्च। पीपरि इनचारों को समानले पानीमें पीसि गोलीबनाइ पलकपर लेपकरै तौ नेत्रकी खुजली और गुहांजनी और छोटी छोटी पिड़का दूरहोयँ॥

अथ खुजलीपर लेप॥

चकौड़केबीज। बकुची। सरसों। तिल। कूठ। हल्दी। दारु-

हलदी। और मोथा इनआठोंकोसमभागले मट्ठेमें पीसिलेपकरै तो खुजली। दाद। विचर्चिका। पांयफूटना आदिरोगदूरहोयँ॥

अथ सूखी खाज पर लेप॥

चाक। बिड़ंग। शिंगरफ। गन्धक। चौकोड़के बीज। कूठ। सिंदूर इन सातोंको समानले नींबके पत्ते धतूरके पत्ते और पान तीनोंका रस निकाल जुदे २ पूर्वोक्त द्रव्य रसमें पीसि लेपकरै तौसूखीखाजदाद बिचर्चिकापदफटना खाज रक्तकुष्ठ ये सब नाशहोयं॥ अथवादूब। छोटीहड़। सेंधव। चकोड़केबीज और कटसरैया इनपांचोंको मिट्टीमें पीसि लेप करै तो खुजली दाद आदि दूरहोयँ॥ अथ रक्तपित्तपरलेप॥

लालचन्दन। खस। मुलहठी। बरियारा। व्याघ्रके केश और कमल ये छवों समभागले पानीमें पीसि लेपकरै तो रक्त संबन्धी शिरकेरोग जायँ॥

अथ उदररोगपरलेप॥

सरसों। हल्दी। कूठ। चकोड़केबीज और तिल ये सबसमानले कडुयेतेलमें पीसिलेपकरै तो शीतपित्त संबन्धीउदररोग दूरहोयँ॥ अथ वात विसर्पपर लेप॥

रासना। नीलकमल। देवदारु। रक्तचन्दन। मुलहठीऔर बरियारा इन सबको बराबरले दूध में पीसि घृत मिलाय लेप करैतौ बात विसर्प दूरहोय॥

अथ पित्त विसर्पपर लेप॥

कमलकीनाल। रक्तचन्दन। पठानीलोध। खस। कमल। कोकाबेली। सरिवन। आंवला। जंगीहड़ ये सब बराबरले पानीमें पीसि लेपकरै तो पित्त विसर्प अवश्य दूरहोय॥

अथ कफ विसर्प परलेप॥

त्रिफला। पद्माक। खस। धवकेफूल। कनेरमूल और जवासा ये सब समले पीसि लेप करै तो कफ विसर्प दूरहोय॥

अथ पित्तवातरक्त पर लेप ॥

सोरफली । नीलकमल । पद्माक । सरसों के फूल इनका चूर्ण करि घृतको सौ बार धोय मिलाय खूबफेंटकरि लेप करै तौ बातरक्तजाय ॥ अथ नाक रक्तस्राव पर लेप ॥

आंवलेको घृत में भूजि कांजीके पानीमें लेपकरैतौ नाकसे रुधिर गिरना बन्दहोय ॥

अथ बातजशिरपीड़ा पर लेप ॥

कूठ । वामुचकुन्द पुष्पकोकांजीके जलमें पीसि रण्डका तेल मिलाय मस्तकपरलेपकरै तौ बातजन्य शिरकी पीड़ा मिटै ॥ अथवा देवदारु । तगर । कूठ । सुगन्धबाला पांचोंकोसमानले कांजीमें पीसि रण्डका तेल मिलाय मस्तक परलेपकरै तौबात सम्भव शिरपीड़ा दूरहोय ॥

अथ पित्तज शिरोरोगपर लेप ॥

आंवला । कसेरू । सुगन्धबाला । कमल । पद्माक । रक्तचन्दन । दूबजड़ । खस । नरकटकी जड़ इन सबको बराबर लेपानीमें पीसि माथेपर लेपकरै तौ पित्तसम्बन्धी औररक्तपित्त सम्बन्धीमस्तक पीड़ा दूरिहोय ॥

अथ कफसम्भव शिरपीड़ापर लेप ॥

मेवड़ीकेबीज । तगर । बालछड़ । मोथा । इलायची । अगर । देवदारु । जटामासी । रासनाऔरएरंडमूल येसब द्रव्यपानीमें पीसि गरमकरिमाथेपरलेपकरैतौ कफसम्बन्धीपीड़ादूरिहोयँ ॥

अथ सूर्यावर्त्त पर लेप ॥

सरिवन । कूठ । मुलहठी । पीपरि । नीलकमल इनसबको कांजीमें पीसि रण्डका तेल मिलाय लेपकरै तौ सूर्यावर्त्त अर्थात् आधाशीशी दूरहोय ॥

अथ शंखक अनन्त बात औरसर्वशिरोरोगपर लेप ॥

छतारी । नीलकमल । दूब । काले तिल और गदापुरैना

पांचों को समानले पानी में पीसि लेपकरै तौ शङ्खक अनंतबात सब शिरपीड़ा मिटै ॥

अथ पित्त शोथपरलेप ॥

मुलहठी। रक्तचन्दन। मुग्गी। नरकटकीजड़। पद्माक। खस। नेत्रबाला। कमल येसब समानले पानीमें पीसिलेपकरै तौपित्त शोथ नाश होय ॥ अथ कफ शोथ पर लेप ॥

पीपरि। पीना। सहिंजने की छाल। बालू वा खांड़ इनसबको गोमूत्रमें पीसि गुनगुना लेपकरै तौ कफशोथ दूरहोय॥

अथ आगंतुक और रक्तशोथपरलेप ॥

हल्दी। दारुहल्दी। रक्त और श्वेतचन्दन। हड़। दूब। गदापुरैना। खस। पद्माक। लोध। गेरू। रसौत ये सब समानभाग ले पानीमें पीसि आगंतुक और रक्तज शोथ पर लेप करै तौ उक्तरोग दूरहोयँ॥

अथ व्रण पकाने पर लेप ॥

सन की जड़। मूरी। सहिंजन के बीज। तिल। सरसों। यव। लोहकीट। अरसी ये आठों समानले पानीमें पीसि लेप करे तौ व्रण पकै॥ अथ व्रण फोरने पर लेप॥

लटजीरा की जड़ चीते की जड़ अथवा छाल। सेहुंड़। मदारकादूध। गुड़। भिलावा। कसीस। सेंधव ये औषध दूध में पीसि व्रण पर लेप करै तौ अवश्य फूटै-अथवा करंज की मींगी। भिलावा। दात्यूणी। मूलकी छाल। चीता। कनेर ये पांचों कबूतर वा कुंज वा गिद्ध आदिकी बीटके समानले लेपकरै तौ फोड़ाफूटै॥ अथवा सज्जी। जवाखार दोनोंकालेपकरै अथवा चोखकी जड़ की छाल ले लेपकरै तौ फोड़ा फूटै॥

अथ व्रणशोधन लेप॥

तिल। सेंधव। मुलहठी। नीबकेपत्ते। हल्दी। दारुहल्दी निशोथ ये सबसमान भागले चूर्ण करि घीमें घेपि फूटे हुये

फोड़े पर लगावै वा इनके कल्क की टिकिया बनाइ घीमें छोड़ जलावै जब टिकिया जलिजाय तब उतारि टिकिया फेंकदे और घी राखि छोड़े इन दोनोंप्रकारसे व्रणशुद्धहोता है ॥

अथ व्रणशोधन पर लेप ॥

नींबकेपत्ते । घृत । मधु । दारुहल्दी । मुलहठी और तिल इन सब को पीसि लेपकरै तौ व्रणशुद्धहोय और पूर आवे ॥

अथ कृमि निवारण लेप ॥

करंज । नींब । बकाइन । तीनोंको घिसि कृमिके स्थान में भरे तौ कृमि मरिजायँ वा लहसुन वा हींग भरे वा हींग और नींबके पत्ते भरे तौ कृमि नाश होयँ ॥

अथ व्रण शोधन रोपण पर लेप ॥

नींब के पत्ते । तिल । दात्यूणीकीजड़ । सेंधव ये सब समान पीसि । शहतयुक्त लेपकरै तो व्रण शुद्ध हो पूरि आवै ॥

अथ पेटपीरपर नाभि लेपन ॥

मैनफल । कुटकी । कांजीमेंपीसि कुछ गरम करि नाभिपर लेपकिये से पेटशूल मिटै ॥

अथ वातविद्रधिपर लेप ॥

सहिंजन की छाल । बकायनके पत्ते । रेंडमूल । यव । गेहूं मूंग येसब बराबरपीसि सुखोष्णलेपकरै तौ विद्रधिदूरिहोय ॥

अथ पित्त विद्रधि पर लेप ॥

लावा । मुलहठीकोशकर और घीमेंलेपकरे अथवा असगन्ध । खस । रक्तचन्दन । दूधमेंपीस लेपकरे तौविद्रधिदूरहोय ॥

अथ कफ विद्रधिपर लेप ॥

ईंट । बालू । लोहा । कीट । गोबर । चारोंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरै तौ कफ विद्रधि दूरहोय ॥

अथ आगन्तुक विद्रधिपर लेप ॥

रक्तचन्दन । मंजीठ । हल्दी । मुलहठी ये सब समानदूध

में पीसि चोट अथवा रुधिर विकारपर लेपकरै तौ अच्छाहोय॥

अथ वात गलगंडपर लेप॥

वेत। और सहिंजने के बीज समानले जल में पीस शीत गर्म प्रदेह संज्ञक लेपकरैतो रोग दूरिहोय इसी प्रकारसे दश-मूलभी पीसि लेपकरै॥

अथ कफ गलगंड पर लेप॥

देवदारु। इन्द्रायन दोनोंको नौ नौ ले लेप करै तौ गण्ड-माला दूरहोय॥

अथ अपचीपर लेप॥

सरसों। नींबके पत्ते। और भिलावां। तीनों को बराबर ले मेषके मूत्रमें लेपकरै तौ अपची जाय॥

अथ गंडमाला अर्बुद गलगंडपर लेप॥

सरसों। और सहिंजने के बीज। सनईके बीज। और अ-रसी। यव। मूलीके बीज। ये सब औषधि समान भागले मट्ठे में पीसि लेपकरै तौ गंडमाला अर्बुद गलगंड ये रोगदूरहोयँ॥

अथ अपबाहुकपर लेप॥

केवल वात पीड़ित कोई अंगअपने स्वाभाविककर्ममें पीड़ा करै तहां के रोम दूर करि घुंघुची पीसि सुखोष्ण लेपकरने से अपबाहुक वायु विस्वाची हाथकी गृध्रसी और जंघाकी वायु संभव पीड़ा दूरहोय॥

अथ पीलपांवपर लेप॥

धतूरा। रंड। मेवड़ी तीनों की पत्ती। गदापुरैना। सहिंजने की छाल। सरसों ये छओ पीसि अति कालके भये पीलपांव पर लेप करै तौ अच्छा होय॥

अथ उपदंशपर लेप॥

कनेरकी जड़ पानीमें पीसि इन्द्रीपर लेप करै तौ उपदंश सम्बन्धी असाध्य पीड़ा दूर होय॥

अथ कुरंडरोगपर लेप ॥

कालाजीरा। हाऊबेर। कूट। रंडमूल। वेरकीछाल ये पांचों समानले कांजीके पानीमें पीसि अंडकोशपर लेपकरे तौ अच्छे हों अथवा त्रिफला कढ़ाई में जलाइ राखकरि शहत में फेंटि लेप करे तौ गर्मी के घाव शीघ्र पूर आवें अथवा रसौत सरसों दोनों समान पीसि शहतमें घेपि उपदंश सम्बन्धी राद बहतेहुये व्रणपर लेपकरे तौ उपदंश दूरिहो॥

अथ अग्निदग्धपर लेप ॥

वंशलोचन। पाकरि। रक्तचन्दन। गेरू। गुर्च ये पांचोंपीसि घीमें मिला जरेपर लगावे अथवा घी को चौराई के क्वाथ में मिला लेपकरे तौ जरेकी ब्यथा दूरि हो अथवा यवकी राख तिलके तेलमें घेपि लगावे तौ दग्ध व्रण पूरि आवे॥

अथ योनि संकीर्ण लेप ॥

पलाशफल। गूलरके फल। तिलके तेलमें पीसि शहत मिलाय योनिमें लेपकरे तौ दृढ़ और संकुचितहोय अथवा माजू कपूरपीसि शहतमें फेंटि लेपकरे तौ गिरीहुई योनि तनिआवे॥

पुरुषकी इंद्री कठोरकरनेका लेप ॥

मिरच। सैंधव। पीपरि। तगर। भटकटैया के फल। लटजीरेके बिया। कालेतिल। कूट। यव। उरद। असगंध ये सब समान पीसि शहत मिश्रितकरि नित्य इन्द्रीपर मलाकरे तौ इन्द्री मोटी होय और स्त्री के स्तनोंपर लगाया करे तौ स्तन कठोर परिजायँ और पुरुषके भुजदंड और कानों पर मलना अच्छाहै अथवा श्वेतफूलका असगंध सैंधव दोनों सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत घृतका चौगुना भेड़का दूध एककरि आंच पर दूध जराइ वा छानि इन्द्रीपर लगावे तौ इन्द्री मोटी हो॥

अथ योनिद्रव लेप ॥

इंदूरनके पत्तोंका रसले पारा रक्तकनेरके सोंटसेघोटि बार-

वार रसडारि जव कजरी पीठी के समान होजाय तब इंद्री पर लेपि स्त्रीप्रसंग करे तौ स्त्री सुखपावे और पहिले वीर्यपातकरे॥

अथ देह दुर्गन्ध निवारण लेप॥

पानोंको हड़ और पानी में पीसि लेप करे तौ दुर्गन्ध दूरहो अथवा भूजीहुई कुरथी। कूट। जटामासी। श्वेत चन्दन को बुरादा। भुंजेचने इन सबको पीसि कपरछानकर धूरा करै तौ दुर्गन्ध दूरि होय॥

अथ वशीकरण लेप॥

वच। कालानोन। कूट। हर्दी। दारुहर्दी। मिरच ये सब समान पानीमें पीसि देहमें लगावेतो अच्छा है॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रन्थेअनुभूतलेपनविधाननिरूपणंनामत्रिंशत्तिस्तरंगः ३०॥

अथ छः ऋतुका वर्णन लिखतेहैं॥

हिमऋतु १ शिशिरऋतु २ बसन्तऋतु ३ ग्रीषमऋतु ४ वर्षाऋतु ५ शरदऋतु ६ ये सबदोदोमहीनेकीहैं॥ अगहन पोष तो हिमऋतु। माघ फाल्गुन शिशिरऋतु। चैत्र बैशाषबसन्त ऋतु। ज्येष्ठआषाढ़ग्रीष्मऋतु। श्रावणभादौंबर्षाऋतु। आश्विन कार्तिक शरदऋतुहैं॥ ६॥

अथ अन्य मतसे लिखते हैं॥

मेष और वृष की संक्रांति ये दोनों ग्रीष्मऋतु हैं १ और मिथुन कर्क की संक्रांति को प्रावृट ऋतु कहिये इस ऋतु में बादलों से अम्बर छाया रहै मरोड़को लिये थोड़ा बरसे भीयह ऋतु वर्षा ऋतुका भेदहै २ सिंह और कन्याकी संक्रांतिको वर्षा ऋतु कहिये ३ तुला और वृश्चिक की संक्रांति को शरद ऋतु कहिये ४ धन और मकर की संक्रांतिको हेमन्तऋतु कहिये ५ कुम्भ और मीन की संक्रांतिको बसन्त ऋतु कहिये॥ ६॥

अथ इनछओं ऋतुमें वायुपित्त कफका संचय प्रकोप और शांतिलिखतेहैं ॥

ग्रीष्मऋतुमें वायुका संचय । वर्षाऋतुमें वायु का कोप । शरद ऋतुमें वायु की शांति १ वर्षा ऋतुमें पित्त का संचय शरदऋतु में पित्तका कोप हिम ऋतुमें पित्तकी शांति २ शिशिरऋतु में कफका संचय वसन्तऋतु में कफका कोप ग्रीष्म ऋतुमें कफकी शांति ३ समय में वायु पित्त कफोंके प्रकोप और शांति आहार विहारसे होय है और ये विना समय आपही शांत होय हैं ॥

अथ वायुकेकोप करनेका आहार विहार लिखतेहैं ॥

यह विनासमय हलकी रूखी बस्तु थोड़ी बस्तु औरअति शीतल वस्तु अतिखेद से संध्या समय मैथुनकरिके शोचभय चिन्तासे और रात्रिके जागने से चोटके लगनेसे अन्नके अजीर्ण होने से धातुके क्षीणपने से और इन्हें आदिले और भी कारणोंसे वायुका कोप होयहै और वायुके कोपको दूरकरनेका यत्न करै तो वायुकी शांति होय ॥

अथ पित्तके कोप करनेका आहार विहार लिखते हैं ॥

कड़वी खट्टी गर्म तीक्ष्ण ये वस्तु बहुत खाय उससे और क्रोधसे धूप को आदिले गर्म बस्तुसे मध्याह्नसमय में क्षुधा और तृषाके रोकने से अन्न के अजीर्ण होने से आधीरातके समय इन कारणों से पित्त है सो कोपको प्राप्त होय है और पित्तके कोप दूर करने के कारणों से पित्तकी शांतिहोय है २ ॥

अथ कफके कोप करने का आहार विहार लिखतेहैं ॥

मीठी चिकनी द्रव्यके खाने से शीतल भोजन के करनेसे दिनके सोने से अग्नि के मन्द होनेसे प्रभात केसमय भोजन करे पीछे खेद आदिले और कारणों से कफ कोपको प्राप्त होय है और कफके कोपको दूरकरनेके कारणों से कफकी शांति होय ३ ॥

अथ हिमऋतुके सेवनका आहार विहार लिखते हैं ॥

नवीन भैंस और गौका घृत मीठागुड़ मीठादही नोन तेल का मर्दन तिल गेहूं उड़द मिश्रीको आदि ले मीठा द्रव्य सोंठि संयुक्त हड़ अग्नि निर्वात स्थान नूतन वस्त्र नवीन स्त्री को आदि ले अच्छीवस्तु । इति हिमऋतुकेआहार विहारादिक १॥

अथ शिशिरऋतुके आहार विहारादिक लिखते हैं ॥

पीपरिसंयुक्त हड़ मिरच अदरख नवीनघृत सेंधानोन बड़े गुड़ दही और हिमऋतु में जो कहे हैं वे सब ॥ इति शिशिर ऋतु की विधिः २॥

अथ वसन्तऋतुके आहार विहार लिखते हैं ॥

वसन्तऋतु में कोपको प्राप्त हुआ जो कफ सो रोगोंको उत्पन्नकर जठराग्निको नाशकरै इसलिये शहत संयुक्त हड़ खाय तो कफ दूरहोय और शरीरमें बल होय और वसन्तऋतु त्र्यूषण पथ्य है और चित्रककाखाना पथ्यहै और कफहारी द्रव्य अच्छे हैं ॥ इति वसन्तऋतु की विधिः ३॥

अथ ग्रीष्मऋतुके आहार विहार लिखते हैं ॥

ग्रीष्मऋतु में सूर्य सर्व प्राणीमात्रका बलहरले हैं इसवास्ते वृक्षादिक की सघनछायाकी सेवायोग्य है गुड़संयुक्त हड़ शीतल जल को आदिले द्रव्य मधुर और हलकाभोजन दाख चिकनी द्रव्य शिखरन सत्तू मिश्री का शर्बत्त शीतलजलमें पैरना खसखाना फुवाराआदि का छुड़ाना कर्पूर चन्दनादिककालेप दिनकासोना खस का पंखा क्षीरका भोजन इन्हें आदिले और भी अच्छी वस्तु येसब इसऋतुमें पथ्य हैं और कड़वी तीक्ष्ण वस्तु नोन खटाई दाहको करनेवाली वस्तु खेद दारू धूपयेकुपथ्यहैं इति ग्रीष्मऋतुविधिः ४॥

अथ वर्षाऋतुके आहार विहार लिखतेहैं ॥

सेंधानोन संयुक्त हड़ । चिकनीद्रव्य । नोन । खटाई । सा-

लिमिश्री। सौंठि। मिरच। पीपरि। पीपलामूल। चित्रक। सेंधानोन इनसंयुक्त दहीका मट्ठा। गर्मपानी। कुयेंका जल। सफेदवस्त्रभ्रमण। हलका भोजन। जुलाब ये इसऋतुमेंपथ्यहैं॥

अथ इसऋतुमें कुपथ्य॥

दिनकासोना खेद धूपमें रहना तालाबका जल दही बन ध्यान मैथुन ये कुपथ्यहैं॥ इति बर्षाऋतुकी विधिः ५॥

अथ शरद ऋतुके आहार विहार लिखतेहैं॥

बर्षाऋतुमें उपजा जो पित्त सो शरदऋतुमें कोप को प्राप्त होय उसके दूर करनेके वास्ते मिश्री संयुक्त हड़कासेवन और मिश्रीको आदिले मीठी वस्तु सांठीचावल मूंग सरोवरका जल औटा दूध येपथ्यहैं औरकुपथ्य तीक्ष्णबस्तुनोन खटाई आसव धूप दूध दिनका सोना पूर्वकी पवन शरदऋतुमें इतनीबस्तु कुपथ्यहैं ऋतु उतरनेमें सातदिन तक उसी ऋतुकी विधिकरे और आठवें दिनसे प्रारम्भवालीऋतुकीविधिकरे॥ इतिछओं ऋतुके आहार बिहारकी विधि सम्पूर्णम् ६॥

अथ दिनचर्या अर्थात् दिनमें जोकरे उसकी विधि लिखतेहैं॥

मनुष्य है सो चार घड़ीके तड़के उठिके अपने इष्टदेवका और देवताका ध्यानकरे पीछे यह चिंतनाकरे कि आज के दिन यह कार्य करना और यह कार्यनहीं करना उसका बिचारकरले पीछे शय्यासे उठि मल मूत्रको त्यागकरे और इनकाबेग रोके नहीं उत्तरदिशाकी ओर मुखकर मलमूत्र दिनमेंकरे और रात्रि में दक्षिण दिशाकीओर मुखकरमलमूत्र करे और मलमूत्रकरती समय बोलेनहीं और मलमूत्रकरे पीछे सूधेवृक्षमौलसरीआदि की अपनेहाथकी कनिष्ठिका अंगुलीसमान पतली और सूधी बारह अंगुलकी दातवनकरे फिरउसको फारकर जीभको शोधे फिर शीतल जलसे १२ कुल्ले करै पीछे शीतलही जलसेमुख धोवे तो मुखके सब रोगजायँ और सेंधानोन आदिउसमेंसोंठि

भुनाजीरा मिलाय महीन पीस नित्यमर्दनकरे तो दांतों में रोग नहीं होय फिरशरीरमें नारायणादि तेलको मर्दनकरे पीछेइसकी चिकनाई दूरकरनेके वास्ते चनेका आटा और कठोरल आदि का उबटनकरे पीछे शरीरमें बलराखि शरीरके बलमाफिक कुश्तीकरे पीछे श्रमदूर कर कुछ एक सुहावते गर्म पानीसे कमर ऊपर से स्नानकरे तो रोग होयनहीं ॥

अथ स्नानकेगुण ॥

स्नान है सो शोच और गर्मी के रोग और हृदय का ताप और रुधिर का कोप शरीरकी दुर्गन्धि इनको दूरकरै है कान्ति और तेजको बढ़ावे है पाप और मनकी ग्लानि को दूर करै है क्षुधा रुचि और बुद्धि धर्मसुख द्रव्य इन सबको बढ़ावेहै शरीरको आनन्ददे है शरीरकी कृशता और मार्गके खेद को दूर करैहै ये स्नानमें गुण हैं और इतने रोगवाला मनुष्य स्नान करेनहीं ॥ नींदसे उपरांत और नींद आवतीहोय और ज्वर और खेद और हिचकीके रोगवाला भोजन करके क्षीण पुरुष कफ और बायु और वमन के रोगवाला स्नान करै नहीं स्नान करे पीछे संध्या बन्दन देवता गो ब्राह्मण आचार्य्य गुरु अतिथि आदि का पूजनकरै पीछे शक्तिमाफिक दानदे फिर मध्याह्नकेसमय बलि बैश्वदेवादिककरि किसी अतिथि को भोजन अपनीशक्ति माफिककरावे पीछे आप कुटुम्ब समेत भोजनकरै प्रथम मधुर और चिकना हितकारी चावल मूंग गेहूं आदि की रोटी घृत संयुक्त चोखी तरकारीके साथ खाय और शनैः २ भोजन करे भोजनमें शीघ्रता करैनहीं और भोजनकेअंतमें मिश्रीकेसंयोग से दूध पीवे भोजनके अन्तमें दहीखायनहीं और भोजनबहुत थोड़ा न खाय और बहुत भी न खाय अपनी रुचि माफिक भोजनकरै और भोजनकरते माता पिता मित्र बैद्य पाककर्त्ता

मोर। चकोर। कुक्कुट। श्वान। बानरइनको बैठाले इनकी दृष्टि अच्छीहै और अगस्त्य १ कुम्भकर्ण २ शनैश्चर ३ बड़वानल ४ भीमसेन ५ इनपांचोंका स्मरणकरेतो भोजन अच्छीतरह पचि जाय और भोजन के उपरान्त सुगंधित फूल की माला इतर अच्छे वस्त्र इनको धारणकरै और पीछे खसकेपंखेआदिसेपवन करावे और शीतल छांयामें रहै और भोजनके उपरान्त २ घड़ी पीछे शीतल और मीठाजल थोड़ा २ पीवे बहुत पीवेनहींबहुत पीवेतौ रोग होय और भोजनके आदिमें जल पीवे तौ अग्निकी मन्दता होय भोजनके अन्तमें पीवे तो बिषका सा गुण करै अ-जीर्णमें जल पीवेतौ अजीर्ण पचिजाय अन्नपचे पीछे जल पीवे तो शरीरमें बलहोय और रात्रिके अन्तमेंजलपीवे तो सबरोग जायँ और भोजनकर बैठिजाय तो शरीरमें भारीपना होय और भोजनकर सूधा सोवे तो बलहोय भोजनकर बायें करवँट सोवे तो आयुर्बल बढ़े और भोजनकर दौड़े तो उसके संग मृत्यु दौड़े है भोजन करे पीछे बायें करवँट २ घड़ी सोवे नींद लेनहीं अथवा भोजन करे पीछे १०० पग चलै अथवा भोजन के अन्त में गौकी छाछपीवे तो गुणकरे अच्छारात्रिका जमाया भैंस अथवा गौका दही उसे वस्त्रमें मथि छानले फिर उसमें मिश्रीका बूरा और मिरच। इलायची। भीमसेनीकपूर को आदिले अनुमान माफिक मिलाय इसशिखरनको पीवे तो शुक्र और बलको ब-ढ़ावे और रुचिकरे और वायु पित्तके रोगको दूरकरै इति शि-खरनकरने की विधिः॥ भैंसकेदहीको छान उसमें सोंठि मिरच पीपरि राई नोन इन्हें महीन पीस मिलाय अनुमान माफिक खायतो कफ वायुको दूरकरै और यहबलको करैहै और शी-तकालके बिषे दहीखाय॥ इति मट्ठाकरने की बिधिः॥

संध्याके समय इतनीबस्तु करैनहीं भोजन १ मैथुन २ निद्रा ३ पढ़ना ४ संध्याके समय भोजन करे तो रोगहोय १ संध्या में

मैथुनकरे तो भयंकरसन्तान होय २ निद्राआवे तो दरिद्रहोय ३ पढ़नेसे आयुर्बलकी क्षयहोय ४ ॥

अथ रात्रिचर्य्या नाम रात्रि में जो आहार विहार करै सो लिखते हैं॥

रात्रिमें चांदकीचांदनीमें सोनेसे कामदेवकी वृद्धिहोयऔर वह चांदनीशरीरके दाहको दूरकरैहै और अँधेरीरात आनंदादिक को दूरकरैहै रात्रिके प्रथम पहरमें भोजनादिक करै पीछे शयनकरै सुन्दर स्थानमें सुंदर यौवनवती स्त्रीसे शक्तिमाफिक संभोगकरै और शक्तिउपरान्त सुन्दर स्त्रियोंसेभी संभोगकरै नहीं॥ संभोगकी आदि में भैंसका अथवा गऊकादूध औटाय मिश्रीकेसंयोगसेपीवे और संभोगकेअन्तमेंभी रुचिमाफिक पीवे तो पुरुषकेजरापनेका रोगकभी होयनहीं॥

अथ ६ वस्तु प्राण को तत्काल हरैहैं सो लिखते हैं॥

सड़ामांस १ वृद्धस्त्री २ धूपकासोना ३ तत्कालकाजमायादही ४ प्रभात समय मैथुन ५ प्रभात समय निद्रा ६ ये छः तत्काल प्राणको हरैहैं॥

अथ छः वस्तु मनुष्य को तत्काल आनन्द दे हैं सो लिखते हैं॥

तत्कालकामांस १ नवीन अन्न २ बालास्त्री ३ क्षीरकाभोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णोदकसे स्नान ६ ये छःवस्तुप्राणीकोतत्काल आनंदित करैहैं॥

अथ छओं ऋतुमें जिस विधि से स्त्री से संभोग करै सो लिखते हैं॥

हिमऋतु १ और शिशिरऋतुमें २ तोअपनी शरीरकी शक्तिमाफिक बारम्वार स्त्रीसे संभोगकरे तो रोगहोय नहीं शरीरमें आनन्दही रहै २ और बसन्त ऋतुमें तीसरे और शरदृऋतु में तीसरे चौथेदिन स्त्री सेवन शक्तिमाफिक करे तो रोगहोयनहीं और वर्षामें पांचवें और ग्रीष्मऋतुमें छठेंया पन्द्रहवेंदिन स्त्रीसे संभोगशक्तिमाफिककरे तो रोगहोयनहीं शीतऋतुमें तो रात्रिमें संभोग कीजे ग्रीष्मऋतुमें दिनमें वर्षाऋतुमेंभी दिनमें और

रात्रिमें जब मेघगाजे और बरसे उस समय स्त्रीसे संभोगहोय तो रोगहोय नहीं शरद्ऋतुमें कामदेव जागे तबकीजे तो रोग होयनहीं ॥ अथ इतनीस्त्रियोंसे संभोग करिये नहीं ॥

रजस्वला स्त्रीसे १ रोगवाली स्त्रीसे २ वृद्धस्त्रीसे ३ जिसस्त्री के कामदेव जगैनहीं उस स्त्रीसे ४ मलीन स्त्रीसे ५ सातमहीने की गर्भिणीसे ६ और जिस स्त्रीकी योनिमें गर्मीकारोग होय उसे ७ इतनी स्त्रियोंसे संभोग कीजैनहीं ॥

अथ और तरह भी मैथुन वर्जन लिखतेहैं ॥

भययुक्त पुरुष १ अधीरपुरुष २ क्षुधित ३ रोगी ४ तृषित५ बालक ६ वृद्ध ७ मलमूत्रआदिकी जिसकेवेग लगिरहाहोय ८ इतने पुरुष मैथुनकरैं नहीं ॥

अथ अति मैथुन से इतने रोग होयँ सो लिखते हैं ॥

शूलचलै १ खांसी आवे २ विषमज्वरहोय ३ क्षीणपड़िजाय और बायुके पक्षाघातादिकरोगहोंय ४ अथमैथुनके उपरान्तस्ना नकरै मिश्रीकेसंयोगकागर्मदूध पीवे मांसादिक मीठा रस खाय आसव पीवे खसके व्यजनसे पवन करावे शयनकरै रात्रि को वहुत जागेनहीं दिनमें बहुतसोवेनहीं और रात्रिकेअन्तमें ५ घड़ीकेतड़के आठ अंजलिप्रमाण शीतलजलपीवे पीछे ४ घड़ी केतड़केउठे इसबिधिसे सदाकरे तोउसपुरुषकेकभीभी रोगहोय नहीं सदा आरोग्यरहे ॥ इति रात्रिचर्य्या की विधिसम्पूर्णम् ॥ ये सब विधि भावप्रकाश और शार्ङ्गधरमें लिखी हैं ॥

अथ मनुष्य के शरीरमेंजो कुछ वायु पित्त कफ सर्व धातु उपधातु और शरीरकी उत्पत्ति और नाश इन्हैं आदिले सव स्वरूप यथार्थ अति संक्षेप से अपनी वुद्धिमाफिक लिखते हैं ॥

मनुष्यके शरीरमें इतनी वस्तुहैं कला ७ आशय ७ धातु ७ उपधातु ७ सातों धातुओं के मल ७ त्वचा ७ दोष ३ देह में मांस हाड़ और मेद इन सब के बांधने की नसैं ९०० हैं और दोसौ दश २१० इसमेंहाड़हैं और कईएक आचार्य्योंके मतसे

२०० हाड़हैं १०७ मर्मस्थान हैं नसैं ७० हैं रसके बहनेवाली धमनी नाड़ी २४ हैं मांसकीपिंडी ५०० हैं स्त्रियोंके मांस की पिंडी ५२० हैं सबसे बड़ी नाड़ी सब शरीर व्यापिनी १६ हैं उन्हें कंडरा कहेहैं इस मनुष्यके शरीरमें १० छिद्रहैं॥ स्त्रीकी देहमें १३ छिद्र हैं॥ स्त्रियों के देह में शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धिके माफ़िक जो कुछहै सो लिखते हैं॥

अथ कला का स्वरूप लिखते हैं॥

धातु और आशय इनके बीच जो झिल्लीहै जिसमें बालक रहैहै उसे कला कहिये सो वह कला ७ प्रकार की है मांस रुधिर मेद इन तीनोंके बीच एकझिल्लीहै १इनके और फिया के बीच में एक झिल्लीहै २ आंतोंकेबीच एक झिल्लीहै ३ एक झिल्ली उदर की अग्निको धारण कररहीहै४ एकझिल्लीवीर्य्यको धारणकर रहीहै ५ इन्हें सातकला कहिये॥

अथ सात आशय लिखते हैं॥

हृदयमें आशय नाम स्थान कफका घर १ हृदयकेनीचेआम का स्थान २ नाभिके ऊपरबाईंओर अग्नि का स्थान ३ अग्नि के ऊपर तिलहै नाभिके नीचे पवनकास्थान ४ पवन के स्थान के नीचे पेड़ूमें मलका स्थान ५ पेड़ूके लगताही कुछ नीचेमूत्र का स्थानहै उसे वस्ति कहिये ६ हृदय के कुछ ऊपर जीवका और रुधिर का स्थान ७ ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषोंके आशय हैं॥ और स्त्री के आशय ३ अधिक हैं एकतो गर्भका स्थान १ दो दूधके स्थान स्तन २॥

अथ सात धातु लिखते हैं॥

रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ शुक्र ७ ये सातों धातु पित्तके तेजकर पची हुई महीने एकमें वीर्य्यको पैदाकरैहैं चौथे २ दिन एक एकधातु पैदाहोयहै जो अन्न पानी खाय सो पित्तके तेजसे पके प्रथम रस पैदाहोय पीछे वह पि-

त्तके तेजसे पकि रस का रुधिर होजाय है इसी तरह सातों धातु जानिलीजे ॥

अथ सात उपधातु लिखतेहैं ॥

जीभका मल नेत्र का कपोल गालका मल येतीनों रसधातु की उपधातुहैं १ रंज कफ पित्त रुधिर की उपधातुहैं २ कानके मलको मांसकी उपधातु जानिये ३ जीभ और दांत के मलको उपधातु जानिये ४ बीसांनखों को हाड़ोंकी उपधातु जानिये ५ नेत्रमें कीचड़ आवे उसे उपधातु जानिये ६ मुख ऊपर चिकना पना और कालापनहोय यहशुक्रकी उपधातु है ७ और स्त्रीके २ धातु और हैं एक तो स्तनोंमें दूध १ और एक स्त्री धर्म २ ये दोनों समयमें होयँ और समयमेंहीं जातेरहें ॥ और औरभी सातों धातु से पैदा होयँ सो लिखते हैं ॥ शुद्ध मांस से पैदा हुआ जो घृत उसे बसा कहिये ३ पसीना ४ दांत ५ केश ६ ओज ७ ये सब शरीर में रहें हैं सो चिकने और शीतल हैं शरीरमें बल और पुष्टताके करने वाले हैं येभी सातों धातु से पैदा होय हैं ॥

अथ सातों त्वचा लिखते हैं ॥

ऊपरकी त्वचा अवभासिनी नाम चिकनीहै और बिभूतिका स्थान १ दूसरी लाल जिसमें तिल पैदा होय है २ तीसरी त्वचा सफ़ेद है उसमें चर्मदल नाम रोगपैदाहोय ३ चौथीत्वचा तांबेकेरंग समानहै उसमें सफ़ेदकोढ़ पैदाहोयहै ४ पांचवीं त्वचा बेदिनीनाम उसमें सबकोढ़ पैदाहोय५ छठीत्वचा रोहिणी नाम उसमें गूमड़ी गंडमालादिक पैदा होय हैं ६ सातवीं त्वचा स्थूल नाम उसमें बिद्रधि रहे है ७ ये सातों त्वचा दो यव के प्रमाण मोटी हैं॥

अथ तीनों दोषों का स्वरूप लिखते हैं ॥

बायु १ पित्त २ कफ ३ इन्हें दोषभी कहिये औरइन्हें मलभी कहिये सो एक एकपांच प्रकारकेहैं येपांचों पृथक् २ स्थानमें

रहैं हैं इनतीनोंमें बायु बलवान्है सो यह वात शरीर में सब वस्तु को बिभागकर सबशरीरमें नसोंकेद्वारा सर्व्वत्र पहुंचाय देहै पित्त और कफ पंगुले हैं यह बायुही इस शरीर में बलवान् होय सब रसादिकोंको सबदेहमें पहुंचावैहै यह बायु रजोगुण मयसूक्ष्म शीतल रूखा औरहलकाहै यह बायुमलके आशयमें १ कोष्ठमें २ अग्निके स्थानमें ३ हृदय ४ कंठ ५ इन में रहै है ये मुख्य स्थान हैं और यह सब शरीरमें रहैहै गुदामें तो इसका अपान नामहै १ नाभिमें इसकासमान नामहै २ हृदयमें प्राण नामहै ३ कंठमें उदान नामहै ४ जो सब शरीर में रहै उसका नाम ब्यानहै ५ इति बायुका स्वरूप ॥

अथ पित्त का स्वरूप ॥

पित्त १ गरमपतला सत्वगुणमय कडुवा है और यह दग्ध हुआखट्टाहोयहै यह पांच स्थानोंमें रहैहै अग्न्याशयमें तिल प्रमाणयह अग्नि स्वरूप होयरहैहै १ त्वचा में यह कांतिका करनेवाला है २ नेत्रोंमें यह रहकर सबको देखने वाला है ३ यकृत् में यह रहकर सब बस्तुको पचायदेहै और खायेरसको रुधिर करदेहै ४ और हृदय में रहता जो पित्त सो बुद्ध्यादिकको करै हैं ५ पाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ ये पित्तके नामहैं ॥

अथ कफका स्वरूप ॥

कफ चिकना पिच्छिल तमोगुणमयहै यह दग्धहुआ खारी होय है आमाशय १ मस्तक २ कंठ ३ हृदय ४ सन्धि ५ येमुख्य स्थानहैं इनमें रहै है और देहमें रहता हुआ देहकीस्थिरताको और सब अंगके कोमलपनेको करै है ॥ क्लेदक १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बक ४ बोधक ५ ये इसके नामहैं ॥

अथ स्नायु अर्थात् नसोंका स्वरूप ॥

अथ मनुष्यदेहमें मांस हाड़ मेद इनके बांधनेके विषयस्नायु नाम नसें कहीहैं ॥

अथ हाडों का स्वरूप ॥

देहके विषय ये आधारहैं देह इनबिना खड़ारहै नहीं और देहमें सार यही हैं ॥

अथ मर्मस्थान का स्वरूप ॥

जीवको धारने वाला मर्मस्थानही है ॥

अथ नसोंका स्वरूप ॥

संधि २ इनसे बंधीहैं और वायु पित्त कफ और ७ धातुओं को भी यही नसें बहे हैं ॥

अथधमनी नाड़ीकास्वरूप ॥

धमनी नाड़ी रस और पवनको बहे है ॥

अथ मांसकीपिंडीका स्वरूप ॥

मांसकी पिंडी शरीरमें बलकोकरैहै और शरीरकोधारणकर रहीहै ॥

अथ कंडराका स्वरूप ॥

सबसे बड़ी नसोंको कंडरा कहिये सो १६ हैं वे देहके सब अंगोंका प्रसारण और संकोच करै हैं ॥

अथ रस रंध्रोंकास्वरूप ॥

नाकमें दो नेत्रोंके दोकानोंके दो हैं लिंग गुदा और मुखके एक २ छिद्रहैं दशवांमस्तकमेंये पुरुषोंके रंध्रहैं और स्त्रियोंके३ अधिकहैं दो स्तनोंमें एकगर्भाशयका औरइसशरीरके रोम२में सूक्ष्म अनंतछिद्रहैं नाभि के पास बाईओर फुःफुस रहैं उदान वायुका जो आधार उसे फुःफुस २ कहिये और प्लीह नाम फियाहै और नाभिके पास दाहिनी ओर यकृतहै और रुधिरके बहनेवाली जो नसें तिनका मूल प्लीह नाम फियाहै और रंजक नाम जो पित्त उसका जो स्थान उसके विषयजोरक्तका स्थान उसे यकृत् कहिये ॥ नाभिके वायें भागके विषयआमाशयके ऊपरजो वह तिलहै सो जलके बहनेवाली जोनसें तिनका मूलहै और वहतिल उसको ढांकदेहै और कूखमें जो दो गोले तिन्हैं

वृक्क कहिये वे दोनों जठरका जो मेद उसे पुष्टकरैहैं और वृषणजो पोतासो बीर्यको लेचलने वाली जोनसैं तिनका आधारहै और यह पुरुषार्थको लेचलनेवालाहै और लिंगगर्भकोदेनेवाला है बीर्यऔरमूत्रकाघरहै और हृदयमन चित्त बुद्धिअहंकार इनकास्थानहै और ओजका घरहै सो औरनाभि है सो जो धमनी को आदिले नसैं तिनका स्थानहै और सबशरीरमें सब नसैं फैलरहीहैं नाभिसे और यहांकी बायुके और सब धातुओंके संयोगसे नाभिकी जो वायुहै सो सब शरीरको पुष्टकरैहै और नाभिकी जो पवनहै सो हृदयके कमलमें जाय उसका स्पर्शकर कण्ठके बाहरजाय और कुछ विष्णुपदका जो अमृत उसे पीने को नासिकाके द्वाराजाताहै पीछेयह नासिकाकी पवन आकाशके अमृतको पीकर फिर मुखनासिका आदिके द्वारावेग करके उदर में आय प्राप्तहोय है फिर यह सम्पूर्ण देहको और जीवको और जठराग्निको पुष्टकरैहै ॥ शरीरकी और हृदयकी प्राणपवनका जो संयोगउसे आयुर्बल कहिये और किसी समय इनदोनोंका संयोगदूर होय उसेमरणकहिये ॥

इसपृथ्वीके बिषे कोई प्राणी अमर नहीं है इसकारण मृत्यु है सो निवारीनहीं जाय वैद्यहै सो रोगकोदूरकरै मनुष्यकेरोग साध्यहै और वह मनुष्य पथ्यादिक नहींकरै तो उस मनुष्यके साध्यरोगही याप्यहोजायँ और वह मनुष्य कुपथ्यकराकरै तो याप्यरोगभी असाध्यहै और वह असाध्यरोग कुपथ्यके करनेवाले मनुष्यको निश्चयमारडाले इसकारण चतुर मनुष्यहैसो रोगोंसे शरीरकी रक्षाकरै कर्मबिपाक के जाननेवाले को धर्म अर्थ काम मोक्ष इनचारोंका साधन कहाहै सो मनुष्यका शरीरहीहै जो पुरुष इसमनुष्य शरीरकोमारै वहसबकोमारैहै और जो इसमनुष्य शरीरकी रक्षाकरै वहसबकी रक्षाकरै सातोंधातु और सातों धातुओंकामल और वायुपित्तकफ ये सबबराबरशरीर

में रहनेसे शरीरको पुष्टकरै हैं और येसब घटे बढे और कुपित हुयेशरीरकानाशकरैहैं ॥ इतिसातोंकलाआदिकाविचारसंपूर्ण॥

अथसृष्टिके उपजानेका कथन लिखतेहैं ॥

इससम्पूर्ण ब्रह्माण्डका कारणइच्छासहितसच्चिदानन्दस्वरूप ऐसाजोब्रह्मपरमात्मा उसकी प्रकृतिनाममायाहै सोवह परमात्माकी मायानित्यहै जैसे सूर्यकी प्रतिच्छायानामप्रकाशहै सो वहपरमात्माकीमायाहै तो जड़ परन्तु चैतन्यजोपरमात्माउसके संयोगसे इसअनित्य संसारको नटकेख्याल की तरह यहमाया करतीभई और इससंसारकी माया जो प्रकृति सो प्रथमबुद्धिको उपजातीहै वहकैसीहै इच्छामयी महत्तत्त्वजिसकारूपपीछेमहत्तत्त्वसेअहंकार उत्पन्नभये पीछे वहअहंकार रजोगुण सत्वगुण तमोगुणमें तीनप्रकारकाहुआ पीछेसत्वगुणरजोगुणसेमिलदश इंद्रियोंकोपैदाकरताहै और मनभीइनदोनोंहीसे पैदा होताहै ॥

अथ दश इंद्रियों का स्वरूप लिखतेहैं ॥

कान १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ येतो पांच ज्ञानेन्द्रिय और वाक् १ हाथ २ पग ३ लिंग ४ गुदा ५ ये पांच कर्म्मेन्द्रिय हैं तमोगुण है सो बहुत सत्वगुण से मिल अहंकारसे पंच तन्मात्राको उत्पन्नकरैहै ॥

अथ पंच तत्मात्रा का स्वरूप ॥

शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ इन्हें तन्मात्रा कहिये पीछे पंचतन्मात्रासे पांच महाभूत उत्पन्न होते हैं शब्द तन्मात्रा से तौआकाश १ स्पर्श तन्मात्रासेवायु २ रूपतन्मात्रासे अग्नि ३ रसतन्मात्रासेजल ४ गन्ध तन्मात्रासेपृथ्वीपैदाहुई ५ ॥

अथ ज्ञानेन्द्रियोंका विषय ॥

कान का विषय शब्द १ त्वचा का विषय स्पर्श २ नेत्रका विषय रूप ३ जिह्वा का विषय स्वाद ४ नासिका का विषय सुगन्धदुर्गन्ध का ग्रहण ५ ॥

अथ कर्मेन्द्रियों का विषय ॥

वाणी का विषय बोलना १ हाथका विषय ग्रहण करना २ पैरों का विषय चलना ३ लिंग का विषय मैथुन ४ गुदा का विषय मल का अच्छी तरह त्याग ५ ॥

अथ प्रकृति नाम लिखत है ॥

महत्तत्त्वनाम महा अहंकार १ पंचतन्मात्रा ५ प्रकृति १७ इन्द्रियां १० मन १ महाभूत ५ ये १६ विकार हैं ये सब मिलें तब २४ तत्त्व होयँ पीछे पांच तत्त्वों का यह शरीररूपी घर बने तब इस घरमें जीवात्मा शुभअशुभ कर्मोंके अधीन मनरूपी दूत के वश हो शरीररूपी घर में आयके बसे पीछे जीव संयुक्त इस शरीर को बुद्धिमान् देही कहै हैं सो यह देही पाप पुण्य सुख दुःखादिकों से व्याप्त हुआ और यही जीवात्मासन से बंधाहुआ अपने किये हुये कर्म बंधन से बंधाहै और काम१ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार ५ दशइन्द्रिय १० बुद्धि१ये सब अज्ञान हुये जीवात्मा के बंधनके अर्थ हैं और जीवात्माको आत्मज्ञान होय तो उसकी मुक्ति होय और जिसमें दुःख उपजे उसे व्याधि कहिये जिसमें सुख उपजे उसे आरोग्य कहिये ॥ इतिसृष्टि की उत्पत्ति ॥

अथ आहार और परिपाक और गर्भकी उत्पत्ति और बालककेपोषणादिकालक्षण ॥

जो भोजनादिक करै सो हृदय की प्राण पवन से प्रेरित प्रथम आमाशयमें जाय प्राप्त होय है तब वही षट् रसकाआहार मधुरपने को और फेन भावको प्राप्तहोय तब फिरवही आहार पचिके पित्तके प्रभावसे कुछ एक पका अम्लपने को प्राप्तहोय है पीछे आहार नाभि की समान नाम पवन से प्रेरितछठी ग्रहणी कलामें प्राप्तहोयहै तबवह आहार कोष्ठ की अग्निसेग्रहणी कलामें पचि कडुवा होजाय है पीछे वही आहार कोष्ठ की अग्नि से पचि रस हो जाय है और वह अच्छे प्रकार पके नहीं

और कच्चा रहै तो उसी आहार का आंव होयहै और कोष्ठ की अग्नि बलवान् होयतो आहार का रस मधुर हो जाय है तब वही मधुर होय चिकनेपने को प्राप्त होय है फिरवही रस भले प्रकार पका हुआ सम्पूर्ण इस शरीर की धातुओं को पुष्ट करैहै तब यहरस अमृत की उपमा को प्राप्त होयहै और यह आहार रस मन्दाग्नि से दग्ध होय तो उदर में कडुवा रस होजाय अथवा खट्टारस होजाय अथवा यही रस विषके स्वभावको प्राप्त होय अथवा यहीरस रोगोंके समूह को शरीर में करदे और शरीर में सूजन करदे और यही आहार का रस इस शरीरमेंसार नाम बलहै और सार हीन होय तो यह मल पतला होजायहै सो अच्छा नहीं और पिये जल के सार को नसों के द्वारावायु शरीरमें पहुँचायदेयहै और इसके निस्सार को पेडूमें प्राप्त कर मूत्र करदेयहै सो वह मूत्र लिंग के द्वारा बाहर निकले है और उस आहार का जो रस सो नाभिको समान पवन से प्रेरित मनुष्य के हृदय में जाय प्राप्तहोय है और पीछे वह रस पित्त करपचे तोलाल रंगहोय फिर वह रस रुधिर होजाय है सो वह रुधिर सब शरीरमें रहे है और वह रुधिरजीवका उत्तम आधार है और वह रुधिर चिकना भारी है और बलवान् मीठा है और वह दग्ध हुआ पित्तकी तरह होयहै एक २ धातु सवा चार २ दिनमें पैदाहोयँ हैं पुरुषके महीनेमें भोजनकिया आहार वीर्य होजायहै और स्त्रियों के भोजन किया आहार १ महीने में स्त्रीधर्मद्वारारज होजायहै फिरस्त्री औरपुरुष दोनोंमिलमैथुन करें तब स्त्रीकी भगकाशुद्ध रुधिरऔर पुरुषका शुद्धवीर्ययेदोनों उससमय मिलि स्त्री के गर्भस्थानमें गर्भहोजायहै पीछे वह भग के द्वारानवें महीनेमें बाहर निकले तब उसेबालक कहिये और उससमय स्त्रीकेरज अधिकहोय तो कन्याहोय और उससमय पुरुषके वीर्यअधिक होय तो पुत्रहोय और उससमय स्त्री और

पुरुष इन दोनोंके रज और वीर्य बराबरहोयँ तो नपुंसक पैदाहोय फिर परमेश्वरकी जैसी इच्छाहोयसोईहोयलिखानियमहोयनहीं॥

अथ बालकको औषधदेनेकी मात्रा लिखते हैं॥

१ महीनेका बालकहोयतो दूध। शहत। मिश्री। घृतकेसाथ १ रत्ती औषधदीजे पीछेजैसे २ बालकबढ़े तैसेही औषधएक वर्षतक बढ़ाताजाय पीछे १ माशे औषध १६ वर्षतक दीजे फिर औषधमात्रा ७० वर्षतक इतनीहीराखिये फिर बालककीतरह औषधकी मात्रा घटाय दीजेयहतो विधिकल्क चूर्णादिककी है और काढ़ाकी तौल इससे चौगुनीजान लीजे और बालकको का जल उबटना स्नानकराया कीजे और महीनेके महीने बालकको वमन करायदीजे और हड़ घिस उसकीघूटीनित्यदे और अन्न का ग्रासपांचवें वर्षदीजे और जुलाब १६ वर्ष के उपरान्त दीजे और मैथुन २० वर्ष उपरान्त कराइये इसविधिसे मनुष्यचले तो उसके कभीरोगहोय नहीं और उसके वृद्धावस्था व्यापेनहीं ३० वर्षतक शरीरका मोटापना रहैहै ४० वर्ष पर्यन्त मनुष्यके बुद्धिका आगमरहैहै ५० वर्ष पर्यन्त त्वचा का गाढ़ापना रहै है ६० वर्ष पर्यन्त नेत्रकी ज्योति अच्छीतरह प्रकाशित रहैहै ७० वर्षपर्यन्त मनुष्यके शरीरमें वीर्यका अधिकपना रहैहै ८० वर्ष पर्यन्त मनुष्यके शरीरमें पराक्रम अधिकरहैहै ९० वर्षपर्यन्त अच्छीतरह ज्ञानरहै १०० वर्षपर्यन्त बोलनेऔर हाथ पगोंमें बल मलमूत्रके त्यागकी संज्ञारहैहै ११० वर्ष पर्यन्त स्मरणमात्र कास्थानरहैहै १२० वर्षपर्यन्त प्राणमात्र शरीरमें रहैहै यह मनुष्य का शरीर नीरोगरहैहै तो आयुर्बल प्रमाण १२० वर्षकाहै इति आहारका परिपाक गर्भकी उत्पत्ति और बालकके पोषणादिक सम्पूर्णम्॥

अथ वायुकी प्रकृति का लक्षण लिखतेहैं॥

छोटे केशहोयँ और शरीरकृश और रूखाहोय वाचाल मन

होय आकाशमें रहनेवाले स्वप्नहोयँ ये लक्षणहोयँतो वायुकीप्रकृति जानिये १॥

अथ पित्तकी प्रकृतिका लक्षण॥

युवा अवस्थामें सफेदबालआवें बुद्धिमान् होय और पसीनाबहुत आवै क्रोधी होय स्वप्नमें तेजदेखे ये लक्षण होयँ तो पित्त की प्रकृति जानिये २॥

अथ कफकी प्रकृति का लक्षण॥

जिसकी गंभीर बुद्धिहोय स्थूलअंग होय चीकनेकेश होयँ बलवान् होय स्वप्नमें जलाशयदेखे ये लक्षण जिसमें होयँ उसे कफकी प्रकृति कहिये ३॥

अथ मेदका लक्षण॥

कफ और तमोगुण अधिक होय तो मूर्च्छाहोय १ औरवायु पित्त रजोगुण अधिकहोय तो घुमेर और भ्रांतिहोय २कफऔर तमोगुण अधिक होय तो भौंरआवे भ्रांतिहोय ३ कफवायु और तमोगुण अधिकहोय तो तन्द्राहोय४और बलजातारहै तोग्लानि होय दुःख और अजीर्ण और खेद इनसे भीग्लानि होय५ बल थके उत्साहनहींहोयउसे आलस्य कहिये६ इसे आदिले बुद्धिमान् पुरुषऔरभीजानलें ७॥इतिशरीरकासंक्षेप निरूपण सम्पूर्णम्॥
इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथ ऋतुवर्णन नामऋतुचर्य्या १ दिनचर्य्या २ रात्रिचर्य्या ३ शारीरक ४ सर्व्वअंग संयुक्तवर्णनं नामैकत्रिंशतिस्तरंगः ३१॥

इत्यमृतसागरं सम्पूर्णम्॥

मुंशी नवल किशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
अप्रैल सन् १८९२ ई०॥